Digitized by Google
Original from Harvard University

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

रामायण ।

सम्पूर्ण क्षेपक तथा तुलसीदासजीका जीवनचरित्र तथा माहात्म्य तथा रामजन्म तिथिपत्र तथा बरवारामायण तथा लवकुशकाण्ड सहित श्लोकार्थ छन्दार्थ गूढार्थ स्तुत्यर्थ इतिहासार्थके जिसमें ३८०० टिप्पणी हैं ।

यह ग्रन्थ

श्रीयुत पंडितज्वालाप्रसादमिश्रजीसे

शुद्ध कराय

वैश्यवंशोत्पन्न—

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई.

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें

छापके प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५२ सन् १८९६ ई०

पुस्तक का रजिस्टरी हक यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है ।

CC-0. Indira Gandhi National Centre for the Arts. Jammu Branch

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ रामपंचायतन ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रस्तावना।

इस समय इस भारतवर्षमें श्रीमत् परमपूज्य श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृत रामायणकी समान भाषामें और कोई ऐसी मनोहारिणी कविता नहींहै कि जिसके पाठ करनेसे बालकोंसे लेकर वृद्ध पर्यन्त अपनी २ ज्ञान शक्तिके अनुसार आनंद प्राप्त करतेहैं और यह कैसे चमत्कारकी बातहै कि जितना २ अभ्यास इस पुस्तकमें करतेजाओ उतनाहीं नवीन अलौकिक आशय प्रतीत होताजाताहै वास्तवमें इस पुस्तकमें चार वेद छैःशास्त्र अठारह पुराणोंका आशय कहीं कहीं गोस्वामी जीने यथावत झलकाया है, जिसको कि बुद्धिमान्लोग यथावत् जानसकतेहैं. और कहीं कहीं ऐसे गूढ आशय कहेहैं कि जिनका विचार अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टिसे हो सकताहै और बहुतसे महात्माओंने इसका टीका भी कियाहै और क्षेपक कथा भी मिलाईहैं परंतु क्षेपक कथाओंके न्यूनाधिकहोनेसे पढनेवालोंकी बुद्धि संशय युक्त रहतीहै मैंने भी इस ग्रन्थ में बाल्यावस्था से परीश्रम कियाहै और बहुतसी प्राचीन लेखकी तथा यन्त्रोंकी छपी पुस्तकैं संग्रह कीहैं किन्तु बहुधा पाठभेद तौ सभीमें पाया जाताहै इस समय श्रीयुत वैश्यकुल कमल दिवाकर सद्गुणाकर गुणिगणमंडलीमंडन श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज, जीने इस पुस्तकके शोधने तथा कठिण कठिण स्थलोंके टीका करने की आज्ञा दी मैंने उसे अंगीकारकर शोधकर इस मनोहारिणी कथाके श्लोकार्थ गूढार्थ स्तुत्यर्थ शंका समाधान और सम्पूर्ण इतिहास यथाक्रम मिश्रित करदियेहैं और क्षेपक कथायें वाल्मीकि, वृहद्रामायण, अग्निवेशकृत रामायण, अवधखण्ड-सत्योपाख्यान, हनुमन्नाटक आदि संस्कृत ग्रंथोंसे आशय लेकर लिखीहैं यह तौ देखनेहीसे विदित होजायगा कि क्षेपक कथा इस्से अधिक किसी पुस्तकमें अद्यपर्यन्त नहीं लिखीगई और कठिन क-

In Public Domain. Chandigarh Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठिन स्थलोंका तिलकभी ऐसा स्पष्ट कर दियाहै कि सरलतासे पाठक गण जिसको समझ सकैंगे यदि इस ग्रंथके पढने से पाठकगण को कुछ भी उपकार होगा तौ मैं अपने परीश्रम को सफलजानूंगा॥

क्षेपक कथाओंके नाम ॥

गंगोत्पत्ति, हनूमानजीका जन्मचरित्र, रावणका श्वेतद्वीपमें मान मर्दनहोना, विश्वावसुका गान, विराध वध, सुग्रीव और वालिका जन्म चरित्र, तालवृक्षकी कथा, हनुमान्‌जीका चारो दिशाओंमें बंदरोंको बुलानेजाना, गज गवाक्ष का सीताकी खोजमें फिरना, बंदरों का समुद्र उल्लंघन विषय अपनी अपनी उडान शक्तिका वर्णन करना, कुंभकर्णका स्वरूप वर्णन, लंका दहन विषे पुरकी व्यवस्था, शुकशारनकोरावण प्रति बंदरोंका कटक दिखलाना व बल वर्णन, सुलोचनाका सती होना, अहिरावणका जन्म चरित्र तथा राम लक्ष्मणको हरले जाना तथा हनुमानजी करके उसका वध, नरांतककी उत्पत्ति, तथा संग्राम और दधिमुख करके उसका वध, विदुमतीका सती होना, सिवाय इसके संस्कृतके कठिन कठिन शब्दोंकी टिप्पणीभी पण्डित कृष्णबिहारी शुक्ल बदर्का निवासीने अत्यंत सरल प्राकृत भाषामें कीहै. संख्या टिप्पणी काण्ड काण्डकी निम्न लिखितहैं ॥

बालकाण्ड १३५६ अयोध्याकाण्ड ७२० आरण्यकाण्ड १८७ किष्किंधाकाण्ड १०७ सुंदरकाण्ड १११ लंकाकाण्ड ७१९ उत्तरकाण्ड ६०० सम्पूर्ण ३८०० ॥

जो जो विषय प्रसंग वशसे इसमें अधिक किये गये हैं वे संक्षेपसे लिखेजाते हैं.

(बालकाण्डमें) प्रथम श्लोकसे मानसरोवर पर्यंत तिलक, रावणका जन्म, विवाह, पिताके निकट कुबेरका अधिक सन्मान देखकर उस्से पुष्पक विमानका छीनना, इंद्रसे युद्ध, राजा बलिके यहां रावणका जाना, और कनककशिपुके कवच न उठनेसे लज्जित होना, और शिवकी तपस्या करना, अहिराणवका जन्म, पाताललोक में अहिरावणका जाना, तपस्या कर कामदेवीको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्नकर राज्य पाना, रावणका राजा दिलीपके पास बल देखने को जाना, और उनका प्रभाव देख घरको भागना, दिलीपका बाण छोडना, मन्दोदरीकी स्तुति करने पर बाणका निवृत्त होना फिर रघु अज दशरथसे हार कर, तपस्या कर यह वरदान मांगना कि "दशरथके वीर्यसे कोई पुत्र नहो" फिर कौशल्याको पिताके यहांसे चुरा लाना, समुद्रमें राघव मच्छको सौंपना ब्रह्माका रावणका रूप धर कौशल्याको राघव मच्छसे लाना, मार्गमें धर देना सुमंत्रका देखना, उसके पिताके पास पहुंचाना, दशरथसे व्याह करना, जानकीका जन्म, जनकको तपस्या करके धनुष पाना और जानकीका उसे उठाना, जनककी, प्रतिज्ञा ब्रह्मस्तुतिका अर्थ, गर्भ स्तुतिका तिलक, रामचन्द्रका वानरके र्ष मचलना, महावीरका बुलाना, रामजीका पतंग उडाना, जयन्तकी स्त्रीका पकडना, दर्शनों की प्रतिज्ञापर छोडना, महावीरका गमन और इतिहास जो चौपाइयों में है उनका स विस्तार वर्णन किया गया है इतनी कथायें बालकाण्डमें और और रामायणोंसे संग्रह कीगई हैं गंगादिक कथा तो पहलेही से विद्यामानथींकी

(अयोध्याकाण्डमें) –प्रथम श्लोकार्थ, विश्वावसु गंधर्वका कैकेयी के पास आनकर गाना, कैकेयी का उसे अपने यहां रहनेको कहना इन्द्रका इसपर बुरा मानना और सरस्वतीको भेज कैकेयीके शिर कलंक लगवाना, शरवन की कथा, और जो इतिहास इस काण्डमें अधिकतासे आये हैं उन्को भारत भागवतादि ग्रन्थों से निकाल कर स्पष्टरीतिसे दिखदिया है इतनी अयोध्याकाण्डमें अधिकता कीगई है॥

(आरण्यकाण्डमें)–श्लोकार्थ, रामचन्द्रके पास जयन्तकी स्त्रीका आना भक्ति वरदान पाकर जाना, और जयन्तका इस बातसे रिसाना; अत्रिकृत स्तुतिका अर्थ, सुतीक्ष्णकृत स्तुतिका अर्थ जटायुकृत स्तुतिका अर्थ, कबन्धका वृत्तान्तादि विषय सविस्तर वर्णन किये हैं॥

(किष्किन्धाकाण्डमें)–श्लोकार्थ, वालि, सुग्रीवका जन्म, वालि,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुग्रीवका विरोध, वालिको मतंग ऋषिका शाप, ताडकी कथा, वालिका वध, रामका प्रवर्षणपरबास, रामकारोष, कपिका त्रास, सुग्रीव का दूतोंको वानरोंके बुलानेको भेजना, सर्व दिशाओंसे वानरों का आना, उन स्थानोंके नाम, तथा सब वानरोंको पृथक् पृथक् जानकीके ढूंढनेको भेजना, महावीरादिका बिलमें प्रवेश, बिलस्थ स्त्रीका वृत्तान्त, सम्पाती का अपने पुत्र रावणको पकडनेका वृत्तान्त कहना, महावीरके जन्मकी कथा, सब वानरोंका अपना २ बल कथन करना, इत्यादि अधिक विषय वर्णन किये गये हैं यह काण्ड तौ ऐसा आजतक छपाही नहीं ॥

(सुन्दरकाण्डमें)–श्लोकार्थ, लंकापुरी जलानेका वृत्तान्त, रावण का यमराज तथा मेघोंको हनुमानजीको मारने तथा लंका बुझा नेको भेजना, हनुमानजीका यमराजको गालमें धरना, देवताओंकी विनय पर यमराजको छोडना इत्यादि प्रसंग अधिक लिखेगये है ॥

(लंकाकाण्डमें)–श्लोकार्थ, शुकका सैन्य दिखाना, महावीरका बलकथन कर ओषधीको जाना, मकरीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त, शापमोचन, हनुमानका भरतसे मिलना तथा कौशल्या सुमित्रासे लक्ष्मणका वृत्तान्त कहना और उनका दुःखित होना, सुलोचनासती, अहिरावण नरान्तकका माराजाना, रावणके युद्धके दिनोंकी संख्या, शिव ब्रह्मा इन्द्र कृत स्तुतियों के अर्थ, इतने विषय इसकाण्डमें अधिक वर्णन किये गये हैं

(उत्तरकाण्डमें)–श्लोकार्थ, महावीरको हारप्रदान, महावीरका उसमें रामनाम नहीं लिखित होनेसे मणियों को तोडना, अपने शरीरके भीतर रामनामांकित अस्थियोंका दिखाना, वेद स्तुति शिवकृत स्तुति, तथा ब्राह्मणकृत शिव स्तुतियों के अर्थ इतने विषय इसमें प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार अधिक वर्णन किये गये हैं ॥

इसबार–रावण वाणासुरका संवाद, महासंकल्प, रामकलेवा, वशिष्ठ जीका रानियों प्रति इतिहास कहना इत्यादी और भी अनेक क्षेपक कथा बढाई गयेहैं

इसके उपरान्त लवकुशकाण्ड तथा तुलसीदासजीका जीवनचरित तथा रामवनवासतिथिपत्र विशेष बढाये गयेहैं–इति प्रस्तावना

संशोधक–पं० ज्वालाप्रसाद महल्लादीनदारपुरा मुरादाबाद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ तुलसीदासकृत रामायणस्य-

विषयानुक्रमणिकाप्रारंभः ।

विषय.	पृष्ठ.
बालकाण्डम् १	
मंगलाचरण	३
गुरुचरण वन्दन	५
सत्संगतिके गुण और महामुनि वाल्मीकिका संक्षिप्त वृत्तांत नोटमें	६
सत्संगतिके गुण और दुष्टजन तथा साधुसमाज गुण स्वभाव लक्षण वन्दन	७
गुसाईंजीका अपने विषयमें लघुता वर्णन तथा रामनाम महिमा	१०
व्यासादि ऋषियोंके प्रमाणपूर्वक ग्रंथका निर्माण	१३
वाल्मीकि-सरस्वती-गुरु-माता-पिता शिव-पार्वती आदिको प्रणाम तथा रजककी स्त्रीका वृत्तान्त	१५
रामनाम माहात्म्य	१६
नाम माहात्म्य	१७
ध्रुव और अजामेलकी कथा नोटमें	२०
राम कथाकी महिमा	२१
सप्तकाण्ड मानससररूप वर्णन	२६
कथा प्रसंग तहां याज्ञवल्क्य और भरद्वाजका संवाद वर्णन	३१
शिव अगस्त्य संवाद वर्णन.....	३२
सतीको सम्भ्रमहोना और श्रीरघुनाथकी परीक्षालेना तथा शिवका सतीको परित्याग करना	३४
(कथा क्षेपक) प्रेमवर्णन.....	३६
ब्रह्मसभाकी कथा नोटमें.....	३८
दक्षयज्ञमें सतीका देह त्यागना और शिवजीका वीरभद्रद्वारा यज्ञ विध्वंस करना	३९
पार्व्वतीका जन्म और तप आदि करना	४०
ब्रह्मगिराहोना.....	४४
सप्तऋषियोंके द्वारा शिवजीका पार्वतीकी परीक्षा लेना....	४५
दक्षसुतन तथा चित्रकेतु और कनककशिपुका वृत्तांत नोटमें	४६
शिवपर कामकी चढाई और शिवद्वारा कामदेवका दग्धहोना	४९
शिवविवाहोत्सव वर्णन	५३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

* अनुक्रमणिका *

शिव पार्वती संवाद वर्णन ६१
राम अवतारहोनेमें जय विजय पार्षदोंकी कथा ६९
जलन्धरकी कथा ७०
नारद शापसे प्रभुका अवतार धारण करना ७६
स्वायम्भुवमनुकी कथा ७८
राजा प्रतापभानुकी कथा..... ८३
कपटमुनिका चरित्र ८५
रावण कुम्भकर्णका जन्म..... ९३
रावणका लंकेशहोना और दिग्विजय करना ९४
[कथाक्षेपक] रावणका श्वेतद्वीप में मान मर्दन होना ९६
वलिराजा और वालिसे मान मर्दनहोना ९७
सहस्राबाहुसे रावणका लडकरहारना ९९
नल कूबरका रावणको शापदेना १००
ब्राह्मणोंसे रावणका दंड लेना और सीताजीकी उत्पत्ति होना (क्षेपक)..... १०१
रावणसे प्रजाको दुःखपाना १०२
पृथ्वीका गोरूपहो ऋषि देवगणोंके साथ ब्रह्माके पासजाना और सब मिलकर परमात्माकी स्तुति करना १०३
प्रसन्नहो श्रीभगवान्का सबको निर्भय दानदेना १०५
[कथा क्षेपक] रावणको राजा दिलीपादिसे वैर करना..... १०६
दशरथराजाका यज्ञ करना और यज्ञकुंडसे पायस लेकर देवदर्शनहोना उसको राजा का रानियोंको देना और रानियों को गर्भधारण करणा १०९
शृंगी ऋषिकी कथा नोटमें १०९
श्रीराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्नका जन्म और बाललीला वर्णन ११०
कौशल्यामाताको श्रीरामका विराट्स्वरूप देखाना ११५
(क्षेपक) सलूकाकी कथा ११७
विश्वामित्रऋषि का अयोध्यामें आगमन और दशरथ राजासे यज्ञरक्षाके अर्थ राम लक्ष्मणको मांगना ११९
ताडकावध लीला तथा अहल्या की कथा नोटमें १२१
मारीच सुबाहु वध वर्णन और जनकपुर गमन तथा अहल्या शाप मोचन १२१
(क्षेपक) गंगोत्पत्ति कथा वर्णन १२३
श्रीरघुनाथका जनकपुरप्रवेश और जनकपुरका वर्णन १३१
बागमें जनकनन्दिनी और श्रीरघुनाथका समागम तथा अन्योन्य छविका वर्णन १३९
श्रीरघुनाथका स्वयंवरमें पधारना १४४
(कथा क्षेपक) रावण बाणासुरका १४८
राजाओंका धनुषके उठानेमें यत्न करना १५१

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मामें जनकका कथन और
क लक्ष्मणजीका कुपितहोना.... १५१
बाभजऋषिकी कथा नोटमें १५३
श्रीरघुवीरका सबराजाओंके देखते
धनुष तोडना १५५
परशुरामका आगमन और रघुना-
थके साथ संवाद १५८
(कथा क्षेपक) रेणुका का पुत्र
सहित मारे जानेकी १६२
राजा जनकके धनुष पानेका
कारण (कथा क्षेपक) १६६
अयोध्याजीमें जनकमहाराजका
दूतोंको भेजना १७१
(कथा क्षेपक) चिठीका वृत्तान्त १७३
दशरथ महाराजका बरात लेकर
जनकपुरमें आना और श्रीर
घुनाथ लक्ष्मण आदि चारों
भाइयोंका विवाह वर्णन १७९
(कथा क्षेपक) महासंकल्प ... १९०
(कथा क्षेपक) विनती वर और
कन्या पक्षकी १९४
(कथा क्षेपक) राम कलेवा १९७
बरातका विदाकरना और श्रीर-
घुवीरका अवधपुरीमें प्रवेश २१३

अयोध्याकाण्डम् २

मंगल श्लोक २२७
श्रीरामसीताके विविध विलास
तथा विश्वावसुका गान करना
और नारदागमन २२८
दशरथ महाराजका श्रीरामके
राज्याभिषेकार्थ मनोरथकरना २३१
देवताओंका मन्थरा और कैके-
यी द्वारा रामराज्याभिषेकमें
विघ्न करना २३४
कद्रू विनताकी कथा नोटमें २३८
कैकेयीको वर प्रदानका कारण
नोटमें २३९
दशरथमहाराजका कैकेयीको को
पभवनमें देख कोपका कारण
पूछना २४१
शिव दधीचि वालिकी कथा नोटमें२२४
राजा हरिश्चन्द्रकी कथा नोटमें २५२
श्रीरघुनाथका मातासे मिल जा-
नकी लक्ष्मण सहित राजासे
मिलकर वनको पधारना.... २५५
गालवनहुषनरेशकी कथा नोटमें२५९
अवधपुरवासीनको त्यागकर भग-
वान्का शृंगवेर पुरमें गुहसे
मिलना २७०
श्रीरघुनाथका सुमंतसारथीको वि-
दाकरना औ गंगाउतरके
प्रयागराजमें भरद्वाजऋषिके
दर्शन करना २७४
भरद्वाजसे विदाहो श्रीरघुनाथका
वाल्मीकिऋषिसे मिलना २८०
श्रीरघुवीरका चित्रकूटमें निवास
करना २९२
सुमंतका दशरथसे मिलाप वर्णन
और विलाप पूर्वक महाराज
दशरथका शरवनके शापकी
कथा कौशल्यासे कहना तथा
राम वियोगमें दशरथ महाराज
का परलोक गमन २९८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ययाति राजाकी कथा नोटमें.... २९८
(कथा क्षेपक) रानियों प्रति वशिष्ठको इतिहास कहना ३०४
वशिष्ठजीका भरतको बुलाना और भरतजीका पिताका देह संस्कारकरना ३०८
देवयानी और शर्मिष्ठाकी कथा नोटमें ३१४
भरतका सकल पुरवासियोंके साथ राम दर्शनकेलिये चित्रकूट को जाना और मार्गमें गुहसे मिलाप होना..... ३२०
प्रयागमें भरद्वाजसे मिलकर चित्रकूटमें श्रीरघुवीरसे मिलाप वर्णन ३३०
राजा अंबरीष और दुर्वासामुनि की कथा नोटमें ३३५
चंद्र, नहुष तथा राजावेणुकी कथा नोटमें ३४०
सहस्रबाहु और त्रिशंकुकी कथा नोटमें ३४१
श्रीभरत और रघुनाथका संवाद ३५५
चित्रकूटमें जनकराजाका मिलाप ३६०
श्रीरघुनाथका भरतको पाँवरी देकर विदा करना ३७९
श्रीभरतजीका अयोध्यामें प्रवेश ३८२

आरण्यकाण्डम् ३

मंगल श्लोक ३८७
जयंतका काकरूपसे रघुनाथकी परीक्षालेना ३८८
रघुवीर[illegible]त्रिऋषिसे मिलाप.... ३८९
(कथा क्षेपक) विराधवध वर्णन और शरभंगऋषि दर्शन ३९४
सुतीक्ष्णऋषिदर्शन तथा अगस्त्य ऋषिसे मिलाप पश्चात् पंचवटी प्रवेश वर्णन ७९
दण्ड कारण्य शाप वर्णन ४०
शूर्पणखा संवाद और उसके नाक कान काटना..... ४०४
खर दषण वध वर्णन..... ४०
रावणका मारीचको मृग बनाकर सीता हरण ४१३
जटायु और रावणका युद्ध..... ४१६
ब्रह्माजीका इन्द्रके द्वारा सीताको पायस भोजनकराना ४१७
श्री रघुनाथका शोक सहित सीताको खोजते जटायुसे मिलाप ४१५
कवन्ध की कथा ४२१
शबरी आश्रम प्रवेश ४२२
वसंतऋतुवर्णन और रघुनाथ नारद संवाद ४२४

किष्किन्धाकाण्डम् ४

मंगल श्लोक ४३३
हनुमान्का और रघुनाथका संवाद ४३४
रघुनाथ और सुग्रीवका मित्रता करना ४३५
वालि सुग्रीवके जन्मकी कथा (क्षे.)४३६
मायावी और वालिकी लडाई वर्णन४३८
[कथाक्षेपक] दुंदुभी दैत्य और वालिका संग्राम..... ४३९
वालिके बलका वर्णन ४४०
[कथा क्षेपक] तालवृक्षकी उत्पत्ति .....

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुग्रीव वालिका युद्ध और भगवान्का वालिकी छातीमें बाणका मारना ४४३
श्रीरघुनाथ वालि संवाद..... ४४४
सुग्रीवको राज्याभिषेक और वर्षाऋतु तथा शरदऋतु वर्णन ४४५
[कथा क्षेपक] सुग्रीवका हनुमान्को बंदर बुलानेके लिये भेजना ४४९
क्रोधित लक्ष्मणजीका किष्किन्धा नगरीमें प्रवेश और तारा सुग्रीवसे मिलाप ४५२
सुग्रीवका रघुनाथसे भेटकरना और सीता ढूंढनेको चारों दिशाओंमें बंदरोंको भेजना (कथा क्षेपक)..... ४५३
वज्रदंड राक्षस वध कथा..... ४५६
बंदरोंका गुहामें प्रवेश ४५७
समुद्र किनारे वानरोंका संपातीसे मिलाप वर्णन..... ४५८
संपातीसुत सुप्रनकी संक्षेप [क्षेपक कथा] ४५९
[कथा क्षेपक] वानरोंका अपनी २ उडानशक्ति वर्णन.... ४६१
श्रीहनुमान् जन्मचरित्र वर्णन.... ४६२

सुन्दरकाण्डम् ५

मंगलाचरण ४६९
जाम्बवन्तके वचनसे हनुमान्जीका समुद्र तरण..... ४७०
मैनाक और हनुमान् संवाद ४७०
[illegible] और हनुमान् संवाद ४७०
हनुमान्का सिंहका राक्षसीको मारना ४७१
लंकाकी शोभा वर्णन..... ४४१
लंकाको जीतकर हनुमान्का पुरीमें प्रवेश ४७२
[कथा क्षेपक] कुम्भकर्णका स्वरूप वर्णन..... ४७७
हनुमान् विभीषण संवाद ४७४
अशोकवाटिका में रावण और सीताका संवाद ४७५
त्रिजटाका स्वप्नदर्शन..... ४७६
हनुमान्जीका मुद्रा गेरना और जानकीजीसे मिलाप होना.... ४[illegible]
हनुमान्जीका अशोकवाटिका विध्वंसन और अक्षकुमारवध ४८
मेघनादके साथ हनुमान्जीका रावणके पास सभामें जाना.... ४८०
हनुमान् रावणका संवाद..... ४८१
हनुमान्का लंका दहन (क्षेपक) ४८३
(क्षे०) जानकीजीका रामप्रति विलाप ४८५
जानकीजीसे मिलकर हनुमान्जीका विदा होना..... ४८६
श्रीरघुनाथसे हनुमान्का मिलाप और जानकी जीकी व्यवस्था वर्णन ४८७
(कथा क्षेपक) लंकावर्णन ४८९
रघुवीरका लंका पयान वर्णन.... ४८९
मंदोदरी रावण संवाद..... ४९१
(कथा क्षेपक) रावणका दरबार करना ४९१
विभीषण रावण संवाद और विभीषण प्रपत्ति ४९३

पुस्तकको राजि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामका समुद्रकी शरणलेना ४९८
रामकटकमें शुक राक्षसका दूत वनकर आगमन ४९९
रघुवीरका समुद्र पर क्रोध करना और समुद्रका रघुनाथकी शरण आना ५०२

लङ्काकाण्डम् ६

मंगलाचरण ५०७
[illegible]काकाण्डका संक्षिप्त वृत्तान्त ५०८
[illegible]द्रवचनसे नल नीलका सेतु [illegible] ५०९
[illegible]मेश्वरस्थापन और माहात्म्य.... ५१०
[illegible]रघुनाथका समुद्र उतरना ५११
[illegible]न्दोदरी रावण संवाद ५१२
[illegible]वणका राक्षसोंसे सलाहकरना ५१२
[illegible]चन्द्रोदयका वर्णन ५१३
रघुनाथका रावणके छत्र मुकुट आदि भंग करना ५१६
[कथा क्षेपक] शुक शारनका रावणके आगे वंदरोंके नाम और संख्या वर्णन ५१७
श्रीरघुवीरका रावणके पास अंगदको भेजना ५२२
अंगदकासभाके वीच पैर रोपना ५३१
रावण मन्दोदरी संवाद ५३२
अंगदवाक्यसुन श्रीरघुनाथका लंकाको वंदरोंसे घेरा देना और संग्राम वर्णन ५३४
मालवंत और रावणका संवाद.... ५३८
मेघनाद युद्ध ५३९
लक्ष्मणजीका मूर्छित होना ५४१
(कथा क्षेपक) हनुमान बल भाषण ५४२
मार्गमें कालनेमि और हनुमान्‌जी का संवाद ५४३
कालनेमिवध तथा कालनेमिकी कथा और मृतसंजीविनी औषध लेकर हनुमान्‌का लंका को जाना तथा अयोध्यामें भरतकाबाण मारकर मूर्छित करना तथा भरत हनुमान् संवाद ५४४
लक्ष्मणजीका मूर्च्छासे उठना .. ५४६
(कथा क्षेपक) धूमाक्षिदिका [illegible] ५४६
रावणको कुंभकर्णका जगाना और युद्ध करना ५४७
कुंभकर्ण वध वर्णन ५५१
मेघनादका युद्धसे श्रीरघुनाथकी सकल सेनाका मूर्छितहोना और गरुडजीके आनेसे सबकी मूर्च्छा दूरहोना ५५३
(कथा क्षेपक) मेघनादको शक्ति और सुलोचनाके पानेकी कथा ५५४
मेघनादका यज्ञकरना ५५५
मेघनादका यज्ञ विध्वंसन और वध वर्णन..... .... ५५७
(क्षेपक) सुलोचनाकी क[illegible] ५५८
[क्षेपक] अहिरावणकी क[illegible] ५५८
(क्षेपक) नरान्तक युद्ध और दधिवल करके उसका वध वर्णन..... ५८२
विंदुमतीका सतीहोना [illegible] ६१४
राम रावण युद्ध .....

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणम् ।

शुद्धतापूर्वकसम्पूर्णक्षेपकसहित

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज "श्रीवेंकटेश्वर" नामक

यंत्रालयमें मुद्रित किया.

बम्बई.

संवत् १९५१ शके १८१६.

पुस्तकको रजिष्टरीसबहक्क यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खाहै ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बालकाण्डम् १

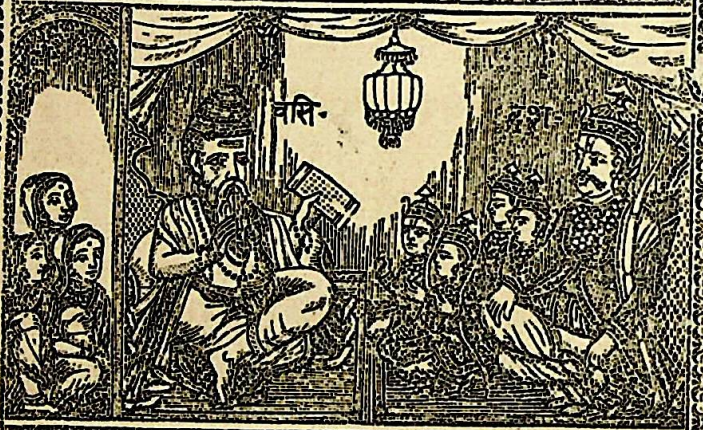

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ गोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणम् ।

बालकाण्डम् ।

दोहा ।

शिवको पाणिग्रहण अरु, दशमुख जन्म महान ।
रामजन्म अरु व्याह यह, बालकाण्डमें जान ॥ १ ॥

श्लोकः—वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ॥ मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भव-

---

श्लोकार्थ—वर्णों और अर्थके समूहों और रसों छन्दों और मंगलोंकेभी करने वाले गणेश सरस्वतीकी मैं वन्दना करताहूं ॥ १ ॥ जो श्रद्धा और विश्वासके रूपहैं जिन दोनोंके विना सिद्ध लोग अपने अंतःकरणमें स्थित ईश्वरको नहीं देखसक्ते ऐसे भवानी शंकरकी मैं वन्दना करताहूं ॥ २ ॥ ज्ञानस्वरूप और नाशरहित शंकररूपी गुरुकी वंदना करताहूं जिनके आश्रितहोके टेढ़ा चन्द्रमाभी सर्वत्र वंदनीयहै ॥ ३ ॥ सीतारामके गुणोंका समूह जो पुण्यका वनहै उसमें विहार करनेवाले वाल्मीकि और महावीरकी मैं वंदना करताहूं ॥ ४ ॥ उत्पत्ति,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥५॥ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेव भाति हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०—जेहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवरबदन ॥
करौ अनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥ १ ॥
मूक होहिँ वाचाल, पंगु चढैं गिरिवर गहन ॥
जासुकृपासुदयाल, द्रवौ सकल कलिमलदहन ॥ २ ॥
नीलसरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिजनयन ॥
करौ सो मम उर धाम, सदा क्षीरसागरशयन ॥ ३ ॥
कुन्दइन्दु सम देह, उमारमण करुणाअयन ॥

पालन, प्रलयकी करनेवाली सब आनंदकी देनेहारी रामचंद्रकी प्यारी श्री जानकी जीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ५ ॥ जिनकी मायाके वशमें सम्पूर्ण संसार ब्रह्मादिक देवता वर्त्तते हैं ॥ जिनकी सत्यतासे यह नाशवान् जगत् सत्यसा प्रतीत होताहै जैसे कि रस्सीके भ्रममें सर्प और भवसागरसे पार होनेकी इच्छा करने वालोंको जिनके चरण नौकारूपी शोभायमानहैं वह सब कारणोंसे परे ईश्वर जिनका राम नाम है तिनको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ६ ॥ अठारह पुराण, चार वेद छःशास्त्रोंका जो सम्मत है वह इस रामायणमें कहाहै कहीं अन्यसे भी अपने अंतःकरणके सुखके निमित्त तुलसीदास रघुनाथकी कथाको भाषामें निबंधकर कोमल विस्तार करते हैं ॥ ७ ॥

१ हाथीकी सूंड तद्वत्। २ मुख। ३ कृपा। ४ घर। ५ गूंगे। ६ वक्ता। ७ गम्भीर

In Public Domain, Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्वकीन्ह करतार ॥
संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ॥ ७ ॥

अस विवेक जब देहि विधाता * तब तजि दोष गुणहिं मनराता ॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई * भलेउ प्रकृति वश चूक भलाई ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं * दलि दुख दोष विमल यश देहीं ॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू * मिटहि न मलिन स्वभाव अभंगू ॥
लखि सुवेष जगवंचक जेऊ * वेष प्रताप पूजियत तेऊ ॥
उघरहिं अन्त न होइ निवाहू * कालनेमि जिमि रावण राहू ॥
किये कुवेष साधु सनमानू * जिमि जग जाम्ववन्त हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू * लोकहु वेद विदित सब काहू ॥
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा * कीचइ मिलइ नीच जल संगा ॥
साधु असाधु सदन शुकसारी * सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई * लिखिय पुराण मंजु मसि सोई ॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता * होइ जलद जगजीवनदाता ॥

दोहा—ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग ॥
होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग ॥ ८ ॥
सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ॥
शशिपोषक शोषक समुझि, जगयश अपयश दीन्ह ॥ ९ ॥
जड़ चेतन जग जीवजे, सकल राममय जानि ॥
वन्दौं सबके पदकमल, सदा जोरि युग पानि ॥ १० ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ॥
वन्दौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥ ११ ॥

आकर चारि लाख चौरासी * जातजीव नभ जल थल वासी ॥
सियाराममय सब जगजानी * करौं प्रणाम जोरि युग पानी ॥

१ संसार। २नाश। ३ आकाश। ४गृह। ५ ओषध। ६ दोनोंहाथ। ७ निशाचर।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानि कृपा करि किंकर मोहू * सब मिलि करहु छाँड़िछलछोहू ॥
निज बुधि बल भरोस मोहिंनाहीं * ताते विनय करउँ सब पाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुण गाहा * लघुमति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकौ अंग उपाऊ * मन अतिरंक मनोरथ राऊ ॥
मति अतिनीच ऊँच रुचि आछी * चहिय अमिय जग जुरै न छाछी ॥
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई * सुनिहहिं बालवचन मन लाई ॥
ज्यों बालक कह तोतरिबाता * सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता ॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी * जे परदूषण भूषण धारी ॥
निजकवित्त केहि लाग न नीका * सरस होइ अथवा अति फीका ॥
जे परभणित सुनत हरषाहीं * ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सर सरि समभाई * जे निज बाढ़ बढ़हिँ जल पाई ॥
सज्जन सुकृत सिन्धु सम कोई * देखि पूर विधु बाढहि जोई ॥

दोहा—भाग छोट अभिलाष बड़, करउँ एक विश्वास ॥
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन, खल करिहैं उपहास ॥१२॥

खल परिहास होत हित मोरा * काक कहहिँ कल कंठ कठोरा ॥
हंसहि बक दादुर चातकही * हँसहिं मलिन खल विमल बतकही
कवित रसिक न रामपद नेहू * तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषा भणित मोरिमति भोरी * हँसिबे योग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी * तिनहिँ कथा सुनि लागिहिफीकी॥
हरि हर पदरति मति न कुतरकी * तिन कहँ मधुर कथा रघुबरकी ॥
रामभक्ति भूषित जिय जानी * सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
कवि न होउँ नहिँ चतुर प्रवीना * सकल कला सब विद्या हीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना * छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा * कवित दोष गुण विविध प्रकारा ॥
कवित्त विवेक एक नहिँ मोरे * सत्य कहौं लिखि कागज कोरे ॥

१कंगाल। २राजा। ३ कविताई। ४ तालाब। ५ नदी। ६समुद्र। ७ पूर्णमासीकाचन्द्रमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—भणित मोर सब गुण रहित, विश्व विदित गुण एक ॥
सो विचारि सुनिहहिँ सुमति, जिनकेविमल[1]विवेक ॥ १३ ॥
यहि महँ रघुपति नाम उदारा * अतिपावन पुराण श्रुति सारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी * उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भणित विचित्र सुकविकृतजोऊ * राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥
विधुवदनी सब भाँति सँवारी * सोह न बसन विना वर नारी ॥
सबगुण रहित कुकविकृतवानी * राम नाम यश अंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही * मधुकर सरस सन्त गुण ग्राही ॥
यदपि कवित गुण एको नाहीं * रामप्रताप प्रगट इहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहि न सुसंग बड़ापन पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुआई * अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई ॥
भणित भदेश[2] वस्तुभालिवरणी * रामकथा जग मंगलकरणी ॥
छं०—मंगल करनि कलि[3]मलहरनि, तुलसी कथा रघुनाथकी ॥
गति कूर[4] कविता सरित[5] की, ज्यों परम पावन पार्थ[6]की ॥
प्रभुसुयश संगति भणित भलि, होइहि सुजन मनभावनी ॥
भव[7] भूति अंग मशान[8] की, सुमिरत सुहावनि पावनी ॥ १ ॥
दोहा—प्रियलागहिंअतिसबहिंमम, भणित रामयश संग ॥
दारु[9] विचार कि करइ कोउ, वन्दिय मलय प्रसंग ॥ १४ ॥
श्याम सुरभि[10] पय[11]विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ॥
गिरा ग्राम सिय राम यश, गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १५ ॥
मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी * अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी
नृप किरीट[11] तरुणी तनु पाई * लहहिं सकल शोभा अधिकाई ॥
तैसहि सुकवि कवित बुध कहहीं * उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं ॥

१निर्मलज्ञान । २फूहर । ३ कलियुगकेपापहरनहारी । ४ टेढ़ी । ५नदी । ६ [illegible]लके-संयोगते । ७ महादेव । ८ काष्ठ । ९ श्यामगाय । १० श्वेतदूध । ११ मुकुट ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भक्तहेतु विधि भवन विहाई * सुमिरत शारद आवत धाई ॥
रामचरित सर विनु अन्हवाये * सो श्रम जाइ न कोटि उपाये ॥
कवि कोविद अस हृदय विचारी * गावहिं हरिगुण कलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृत जन गुणगाना * शिर धुनि गिरा लागि पछिताना ॥
हृदय सिन्धु मति सीप समाना * स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो वरषै वर वारि विचारू * होहिँ कवित मुक्तामणि चारू ॥
दोहा—युक्ति बेधि पुनि पोहिये, रामचरित वर ताग ॥
पहिरहिं सज्जन विमल उर, शोभा अति अनुराग ॥ १६ ॥
जे जनमे कलिकाल कराला * करतब वायस[1] वेष मराला[2] ॥
चलत कुपंथ वेदमग छांड़े * कपट कलेवर कलिमल भांड़े ॥
वंचक[3] भक्त कहाइ रामके * किंकर कंचन कोह कामके ॥
तिनमहँ प्रथम रेख जगमोरी * धूक धर्मध्वज[4] धन्धक धोरी ॥
जो अपने अवगुण सब कहऊं * बाढ़ै कथा पार नहिँ लहऊं ॥
ताते मैं अति अल्प[5] बखाने * थोरेमहँ जानिहहिँ सयाने ॥
समुझि विविधविधि विनती मोरी * कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी[6] ॥
एतेहुपर करिहहिँ जे शंका * मोहिंते अधिक ते जड मतिरंकाँ[7] ॥
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊं * मति अनुरूप राम गुण गाऊँ ॥
कहँ रघुपतिके चरित अपारा * कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उडाहीँ * कहहु तूल केहि लेखे माहीँ ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई * कहत कथा मन अति कदराई ॥
दोहा—शारद शेष महेश विधि, आगम निगम पुरान ॥
नेति नेति कहि जासु गुण, करहिं निरन्तर गान ॥ १७ ॥
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई * तदपि कहे विन रहा नकोई ॥
तहाँ वेद अस कारण राखा * भजन प्रभाव भाँति बहु भाखा ॥
एक अनीहि अरूप अनामा * अज सच्चिदानन्द परधामा ॥

१ कौवा । २ हंस । ३ छली । ४ पाखण्डी । ५ सूक्ष्म । ६ लागि । ७ अल्पबुद्धि । ८ रुई ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्यापक विश्वरूप भगवाना * तेइ धरिदेह चरित कृत नाना ॥
सो केवल भक्तनहित लागी * परम कृपालु प्रणत अनुरागी ॥
जेहि जनपर ममता अरु छोहू * तेहि करुणानिधि कीन्ह नकोहू ॥
गई बहोरि गरीबनिवाजू * सरल सबल साहब रघुराजू ॥
बुधवर्णहिँ हरियश अस जानी * करहिँ पुनीत सफल निजवानी ॥
तेहि बल मैं रघुपति गुणगाथा * कहिहौं नाइ रामपद माथा ॥
मुनिन प्रथम हरि कीरति गाई * तेहिमग चलत सुगम मोहिँभाई ॥
दोहा—अति अपार जे सरितवर, जो नृप सेतु कराहिँ ॥
चढ़ि पिपीलिका परमलघु, बिनुश्रम पारहिजाहिँ ॥ १८ ॥
यहि प्रकार बल मनहि दृढ़ाई * करिहौँ रघुपति कथा सुहाई ॥
व्यासआदि कवि पुंगव नांना * जिन सादर हरिचरित वखाना ॥
चरणकमल वन्दौं सब केरे * पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कविन करौं परणामा * जिन वरणे रघुपति गुणग्रामा ॥
जे प्राकृत कवि परमसयाने * भाषा जिन हरिचरित वखाने ॥
भये जे अहहिँ जे होइहैं आगे * प्रणवउँ सबहि कपट छल त्यागे ॥
होउ प्रसन्न देहु वरदानू * साधु समाज भणित सनमानू ॥
जो प्रबन्ध बुध नहिँ आदरहीँ * सोश्रमवादि बाल कबि करहीँ ॥
कीरतिभणितभूति भलि सोई * सुरसरि सम सबकहँ हितहोई ॥
राम सुकीरति भणित भदेशा * असमंजस अस मोहिँ अँदेशा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सब मेरे * सियनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जियजानी * विमलयशहि अनुहरहु सुबानी ॥
दोहा—सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान ॥
सहजँ वैर बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान ॥ १९ ॥
सोनहोइविनु विमल मति, मोहिं मतिबल अतिथोरि ॥
करहुकृपा हरियश कहौं, पुनि पुनि सबहिँ निहोरि ॥ २० ॥

१चींटी।२बडाई। ३कविताई। ४सम्पत्ति। ५गंगाजी। ६कृपा। ७स्वाभाविकवैर।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवि कोविद रघुवर चरित, मानस मंजु मराल ॥
बालविनय सुनि सुरुचिलखि, मोपर होहु कृपाल ॥ २१ ॥
सो०—वन्दौं मुनिपदकंज, रामायण जिन निर्मयउ ॥
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित ॥ ६ ॥
वन्दौं चारौ वेद, भवबारिधि बोहित सरिस ॥
जिनहिं न सपनेहु खेद, वर्णत रघुपति विशद यश ॥ ७ ॥
वंदौं विधि पद रेणु, भवसागर जिन कीन यह ॥
सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष वारुणी ॥ ८ ॥
दोहा—विबुध विप्र बुध गुरुचरण, वन्दि कहौं करजोरि ॥
होइप्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि ॥ २२ ॥
पुनि वन्दौं शारद सुर सरिता * युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत यक हर अविवेका ॥
गुरु पितु मातु महेश भवानी * प्रणऊँ दीनबन्धु दिन दानी ॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके * हित निरूप सब विधि तुलसीके ॥
कलिविलोकिजगहितहरगिरिजा * शाबरमंत्र जाल जिन सिरिजा ॥
अनमिल आखर अर्थ न जापू * प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला * करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ * वरणौं राम चरित चित भाऊ ॥
भणित मोरि शिवकृपा विभाती * शशिसमाज मिलि मनहुँ सुराती ॥
जो यह कथा सनेह समेता * कहिहैं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥
होइहहिं रामचरण अनुरागी * कलिमल रहित सुमंगल भागी ॥
दोहा—स्वप्नेहु सांचहु मोहिंपर, जो हरि गौरि पसाउ ॥
तो फुरहोउ जो कहहुँ सब, भाषाभणितप्रभाउ ॥ २३ ॥

---

१ संसारसागरके तरनेको नौका समान । २ भ्रम । ३ अमृत । ४ चन्द्रमा । ५ गाय । ६ शोभित । ७ पूर्णमासी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वन्दौं अवधपुरी अतिपावनि * सरयूसरि कलिकलुष नशावनि ॥
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी * ममता जिनपर प्रभुहि नथोरी ॥
सियनिन्दक अघ ओघ नशाये * लोक विशोक बनाइ बसाये ॥
वन्दौं कौशल्या दिशि प्रोची * कीरति जासु सकल जगमाची ॥
प्रगटचो जहँ रघुपति शशि चारू * विश्व सुखद खलकमल तुषारू ॥
दशरथ राउ सहित सब रानी * सुकृत सुमंगल मूरति जानी ॥
करौं प्रणाम कर्म मन वानी * करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥
जिनहिं विरचि बड़भयउविधाता * महिमा अवधि राम पितु माता ॥

सो०—वन्दौं अवध भुआल, सत्य प्रेम जेहि राम पद ॥
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृणइव परिहरेउ ॥ ९ ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू * जाहि रामपद गूढ सनेहू ॥
योग भोग महँ राखेउ गोई * राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरतके चरणा * जासु नेम व्रत जाइ न वरणा ॥
रामचरण पंकज मन जासू * लुब्धे मधुप इव तजै न पासू ॥
वन्दौं लक्ष्मण पद जलजाता * शीतल सुभग भक्त सुखदाता ॥
रघुपति कीरति विमलपताका * दण्डसमान भयो यश जाका ॥
शेषसहस्र शीश जगकारन * जो अवतरेउ भूमिभय टारन ॥
सदासो सानुकूल रह मोपर * कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर ॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी * शूर सुशील भरत अनुगामी ॥

* अयोध्यामें जब श्रीरामचंद्र राजा रहे तब एक रजककी स्त्री बिना पतिकी आज्ञा पिताके भवन चलीगई तीन दिनके उपरान्त जब वह पतिके गृह फिर आई तब उससे रजक बोला कि तू मेरे घरसे जा मैं तुझे घरमें नहीं रक्खूंगा मैं राम नहींहूं कि जो सीता ११ ग्यारह महीना रावणके घर रहीं फिर उसे अपने घरमें रखके रानी बनालिया ऐसा व्यंग्य वचन कहके स्त्रीको निकाल दिया इसको सुन रामचन्द्रजीने सीताको तपोवनको भेज दिया और अयोध्यापुरीमें बसनेसे रजकको सीताकी निन्दाके पापसे क्षमा करके परमधामदिया ॥

१ पूर्वदिशा २ पाला । ३ जनक ४ लोभित ।५ भौंरा ।६ सुमित्रानंदन।७शत्रुहन।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महावीर विनवौं हनुमाना * राम जासु यश आपु बखाना ॥
सो०—वन्दौं पवनकुमार, खल वन पावक ज्ञान घन ॥
जासु हृदय आगार, बसहिँ राम शर चापधर ॥ १० ॥
कपिपति ऋक्ष निशाचर राजा * अंगदादि जे कीश समाजा ॥
वन्दौं सबके चरण सुहाये * अधम शरीर राम जिन पाये ॥
रघुपति चरण उपासक जेते * खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
वन्दौं पद सरोज सब केरे * जे बिनु काम रामके चेरे ॥
शुक सनकादि आदि मुनिनारद * जे मुनिवर विज्ञान विशारद ॥
प्रणऊं सबहि धरणि धरि शीशा * करहु कृपा जन जानि मुनीशा ॥
जनकसुता जगजननि जानकी * अतिशयप्रिय करुणानिधानकी ॥
ताके युगपद कमल मनाऊं * जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक * चरणकमल वन्दौं सबलायक ॥
राजिवनयन धरे धनु शायक * भक्त विपति भंजन सुखदायक ॥
दोहा—गिरा अर्थ जलबीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ॥
वन्दौं सीता राम पद, जिनहिं परम प्रिय खिन्न ॥ २४ ॥
वन्दौं राम नाम रघुबरके * हेतु कृशानु भानु हिमकरके ॥
विधि हरि हर मय वेद प्राणसे * अगुण अनूपम गुणनिधानसे ॥
महामंत्र जो जपत महेशू * काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जान गणराऊ * प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥

* ब्रह्माने सब देवतोंसे कहा कि प्रथम पूज्यपदके योग्य कौनहै सो यह सुन सब देवता आपसमें कलह करनेलगे तब ब्रह्माजी बोले तुम सबसे पृथ्वीकी परीक्रमा करके जो मेरे पास पहले आवेगा उसीको हम प्रथम पूज्य पद देवेंगे यह सुन सब देवता अपने २ वाहन पर चढ़ दौड़े पर गणेशजी मूषक वाहन होनेसे पीछे रहगये और बड़े व्याकुल हुए तब नारदजी उनको मिले और इनके परितापका कारण सुन कहाकि तुम पृथ्वीमें रामका नाम लिखकर प्रदक्षिणा

१ प्रवीण । २ दीन । ३ अग्नि ४ सूर्य्य ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानि आदिकवि नाम प्रतापू * भयउ शुद्धकरि उलटा जापू ॥
*सहस्रनाम सम सुनि शिव वानी * जपि जेई शिव संग भवानी ॥
हर्षे हेतु हेरि हरहीको * किय भूषण तिय भूभण तीको ॥
+नाम प्रभाव जान शिवनीके * कालकूट फल दीन्ह अमीके ॥

करो और ब्रह्माके पास चले जाओ तब गणेशजी वैसाही कर ब्रह्माके निकट गये जब और सब देवभी ब्रह्माके सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवतोंने मिळकै श्रीरामनामकी महिमा समझ गणेशजीको प्रथम पूज्य पद दिया इससे रामनामकी बड़ी महिमा है--

महादेवजीने स्वामिकार्त्तिक और गणेशजी दोनों पुत्रोंसे कहा कि जो पृथ्वीकी परीक्रमा करके पहले मेरे पास आवै उसको हम प्रथम पूज्य पद देवैंगे सो सुन कार्त्तिकेय मोरपर बैठ आगे गये और गणेशजी मूसेपर पीछे रहगये तहां अपनेको हारा मान नारदके उपदेशसे नामकी परीक्रमाकर महादेवजीके पास गये तब शिवजीने ध्यान पूर्वक विचारकर श्रीरामनामकी महिमा स्मरणकर गणेशजीको प्रथम पूज्यपद दिया ॥

* एक समय महादेवजी पाक बनाय थालमें परोस पार्वतीको पुकारा प्रिये आओ भोजन करो तब पार्वती बोलीं कि मैं विष्णुसहस्रनामका पाठकर तव प्रसाद पातीहूं सो अभी पाठ नहीं किया तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! श्रीरामका नाम विष्णुके सहस्रनाम की तुल्यहै सो एकवार रामनाम उच्चारणकर आयकै भोजन करो तब पार्वती जीने वैसाही किया महादेवजी इनके मनकी प्रीति निश्चयपूर्वक और अपने वचन का विश्वास देखकै अति प्रसन्न होय पतिव्रता शिरोमणि किया और ऐसाभी है कि गौरी शंकर अर्द्धांगी स्वरूप तभीसे हुआ ॥

+ जब विष्णुने कच्छपावतार लेकर समुद्रको मथा तब उसमेंसे चौदह रत्न निकले सो सब देवता प्रसन्न होय अपनी २ इच्छाके अनुसार तेरह रत्नको बांटलिया और चौदहवाँ रत्न जो कालकूट अर्थात हलाहल उसके निमित्त सब देवता महादेवजीका स्मरणकर उनसे कहने लगे कि महाराज ! इससे बचाइये नहींतौ यह विष अपनी ज्वाला से तीनों लोकको भस्म करदेगा तब महादेवजीने श्रीराम यह शब्द मुँहसे उच्चारण कर उठायकै विष पीगये उसके प्रतापसे उस विषने अमृतका फल दिया कि अमर होगये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालिसुदास ॥
रामनाम वर वर्ण युग, श्रावण भादौं मास ॥ २५ ॥

अक्षर मधुर मनोहर दोऊ * वर्ण विलोचन जनजिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सबकाहू * लोकलाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके * राम लषण सम प्रिय तुलसीके ॥
वर्णत वरण प्रीति विलगाती * ब्रह्मजीव सम सहज सँघाती ॥
नरनारायण सरिस सुभ्राता * जगपालक विशेष जनत्राता ॥
भक्ति सुतिय कल करण विभूषण * जगहित हेतु विमलविधुपूषण ॥
स्वादु तोष सम सुगति सुधाके * कमठ शेष सम धर वसुधाके ॥
जनमन मंजु कंज मधुकरसे * जीह यशोमति हरि हलधरसे ॥

दोहा—एक छत्र यक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ॥
तुलसी रघुबर नामके, वर्ण विराजत दोउ ॥ २६ ॥

समुझत सरस नाम अरु नामी * प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप द्वौ ईश उपाधी * अकथ अनादि सु सामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू * सुनि गुण भेद समुझिहैं साधू ॥
देखिय रूप नाम आधीना * रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ॥
रूप विशेष नाम बिनुजाने * करतलगत न परहिं पहिंचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे * आवत हृदय सनेह विशेषे ॥
नामरूपगति अकथ कहानी * समुझत सुखद न जात बखानी ॥
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी * उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥

दोहा—राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहसि उजियार ॥ २७ ॥

नाम जीह जपि जागहिं योगी * विरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा * अकथ अनामय नाम नरूपा ॥

---

१ ज्ञान । २ श्रावणमास । ३ भादवँमास । ४ पवित्र । ५ विग्रहपरमदिव्यरूप-रामस्वरूप ६ वैराग्य । ७ छुटजाताहै ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ * नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधकनाम जपहिं लवलाये * होहिं सिद्ध अणिमादिकपाये ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भक्त जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहुँ चतुरन कहँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा ॥
चहुँयुग चहुँश्रुति नाम प्रभाऊ * कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥

दोहा—सकल कामना हीनजे, राम भक्ति रसलीन ॥
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद, तिनहु किये मनमीन ॥ २८ ॥

अगुण सगुण दोउ ब्रह्मस्वरूपा * अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते * किय ज्यहि युग निज वश निजहूते ॥
प्रौढ़[1]सुजनजन जानहिं जनकी * कहहुँ प्रतीति प्रीति रुचिमनकी ॥
एक दारु[2]गत देखिय एकू * पावक युग सम ब्रह्म विवेकू ॥
उभय अगम युग सुगम नामते * कहहुँ नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी * सत चेतन घन आनँदराशी ॥
असप्रभुहृदयअछतअविकारी * सकलजीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपण[3] नाम यतनते * सोउ प्रगटत जिमि मोल रतनते ॥

दोहा—निर्गुण[5] ते इहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार ॥
कहउँ नाम बड़ रामते, निज विचार अनुसार ॥ २९ ॥

राम भक्तहित नरतनु धारी * सहिसंकट किय साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भक्तहोहिं मुद मंगल वासा ॥
राम एक तापस तिय तारी * नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
ऋषिहित राम सुकेत सुताकी * सहितसेन सुत कीन्ह बेबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुराशा * दलैनाम जिमि रवि निशि नाशा ॥
"भंज्यो राम आप भव चापू * भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन * जनमन अमित नाम किय पावन ॥

१ प्रवीण । २ लकड़ी । ३ अग्नि । ४ षड्विकाररहित ५ निर्गुणब्रह्म ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निशिचर निकर दले रघुनंदन * नाम सकल कलिकलुषनिकंदन॥

दोहा—शबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥
नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुणगाथ ॥ ३० ॥

राम सुकण्ठ विभीषण दोऊ * राखे शरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे * लोक वेद वर विरद बिराजे ॥
राम भालु कपि कटक बटोरा * सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं * करहु विचार सुजन मनमाहीं ॥
राम सकुल रण रावण मारा * सीय सहित निजपुर पगुधारा ॥
राजाराम अवध रजधानी * गावत गुण सुर मुनि वर बानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * बिन श्रम प्रबल मोहदल जीती ॥
फिरतसनेह मगन सुख अपने * नाम प्रताप शोच नाहिं सपने" ॥

दोहा—ब्रह्मरामते नाम बड़, वरदायक वरदानि ॥
रामचरित शतकोटिमहँ, लिय महेश जिय जानि ॥ ३१ ॥

नामप्रताप शम्भु अविनाशी * साज अमंगल मंगलराशी ॥
शुक सनकादि सिद्धि मुनि योगी * नामप्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू * जगप्रियहरि हर हरि प्रिय आपू ।
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू * भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू ।
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू * पायउ अचल अनूपम ठामू ॥

*स्वायम्भुवमनु अरु शतरूपा इनके पुत्र राजा उत्तानपादकी दो स्त्री थीं तिसमें बड़ी रानीके पुत्र ध्रुव भए सो एक समय राजाकी छोटी रानी जिस्पर राजाकी अत्यन्त प्रीतिथी उसके पास बैठेथे उस समय ध्रुव जाके पिताकी गोदमें बैठगये तब छोटी रानी ध्रुवको गोदीसे उतार यह कहा कि मेरे पेटसे जन्मलेते तब इस गोदीके अधिकारी होते इस बातको सुन ध्रुव ग्लानिसे अपनी मातासे जाय कहके तप करनेको चले पीछे राजाने ध्रुवको आय बहु-

१रीछा।२बंदर । ३देवता । ४महादेवजी । ५सौलक्षका एककोटि ऐसे एकसौ कोटि।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुमिरि पवनसुत पावन नामू * अपने वश करि राख्यो रामू ॥
अपर अजामिल गज गणिकाऊ * भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई * राम न सकहिं नाम गुणगाई ॥
दोहा—राम नामको कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ॥
जो सुमिरत भये भाग्यते, तुलसी तुलसीदास ॥ ३२ ॥
चहुँयुग तीन काल तिहुँ लोका * भये नाम जपि जीव विशोका ॥
वेद पुराण सन्त मत येहू * सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मख विधि दूजे * द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मलमूलमलीना * पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
नाम कामतरु कालकराला * सुमिरत शमन सकल जगजाला॥
रामनाम कलि अभिमतदाता * हितपरलोक लोक पितु माता ॥
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू * रामनाम अवलम्बन एकू ॥
कालनेमि कलिकपट निधानू * राम सुमति समरथ हनुमानू ॥
दोहा—रामनाम नरकेसरी, कनककशिपु कलिकाल ॥
जापक जन प्रह्लादजिमि, पालहिं दलि सुरसाल ॥ ३३ ॥
भाव कुभाव अनख आलसहू * नाम जपत मंगल दिशिदशहू ॥
सुमिरि सो रामनाम गुणगाथा * करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारहिं सो सब भाँती * जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
रामसुस्वामि कुसेवक मोसे * निजदिशिदेखि दयानिधि पोसे ॥
लोकहुँ वेद सुसाहेब रीती * विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥

त समझाया राज्य देने कहा परन्तु ध्रुव नहीं फिरे वहां नारदने ज्ञान उपदेश दिया सो जप करके ध्रुव अचललोकके अधिकारीहुए—

* अजामिल मरते समय पुत्र नारायणको पुकार मुक्तिको प्राप्त हुआ, गजेन्द्रमोक्ष की कथा प्रसिद्धहै गणिका पिंगलाके यहां आधीरात तक कोई पुरुष न आया तब भगवान्में मनलगा पार हुई ।

१हनोमान। २पापकीजड़। ३ मछली। ४वांछित आनंद व मोक्ष फल दाता हैं।५ सहारा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गनी ग़रीब ग्राम नर नागर * पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकविकुकवि निजमतिअनुसारी* नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला * ईश अंश भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहिं सबन सुबानी * भणित भक्ति मति गति पहिचानी॥
यह प्राकृत महिपाल स्वभाऊ * जानि शिरोमणि कोशलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोते * को जग मन्द मलिन मति मोते ॥
दोहा–शठ सेवककी प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु ॥
उपले किये जलयान जेहि, सचिव सुमति कपि भालु ॥ ३४॥
हमहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ॥
साहेब सीतानाथसे, सेवक तुलसीदास ॥ ३५ ॥
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी * सुनि अघ नरकहु नाकसिकोरी ॥
समुझि सहमि मोहिं अपडर अपने* सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने॥
सुनि अवलोकि सुचितचखुचाही* भक्ति मोरि मति स्वामि सराही ॥
कहत नशाइ होइ अतिनीकी * रीझत राम जानि जनजीकी ॥
लहत न प्रभु चित चूक कियेकी * करत सुरत सौ बार हियेकी ॥
जेहिअघ वधेउ व्याधजिमिबाली * फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली॥
सोइ करतूति विभीषण केरी * स्वप्नेहु सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने * राजसभा रघुवीर वखाने ॥
दोहा–प्रभु तरु तर कपि डार पर, ते किय आप समान ॥
तुलसी कहूँ न रामसे, साहब शीलनिधान ॥ ३६ ॥
राम निकाई रावरी, है सबहीको नीक ॥
जो यह साँचीहै सदा, तौ नीको तुलसीक ॥ ३७ ॥
यहि विधि निज गुण दोष कहि, सबहिँ बहुरि शिरनाय ॥
वरणौं रघुवर विशदयश, सुनिकलिकलुषनशाय ॥ ३८ ॥

१ पत्थर। २ नौका। ३ लागि। ४ हृदयके नेत्र। ५ सुग्रीव। ६ निर्म्मल। ७ पाप।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई * भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥
कहिहौं सोइ सम्बाद बखानी * सुनहु सकल सज्जन सुखमानी ॥
शम्भुकीन्ह यह चरित सुहावा * बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा ॥
सो शिव काकभुशुण्डहि दीन्हा * रामभक्त अधिकारी चीन्हा ॥
तेहिसन याज्ञवल्क्य मुनिपावा * तिन पुनि भरद्वाजप्रतिगावा ॥
ते श्रोता वक्ता समशीला * समदरशी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना * करतलगत[1] आमलक[2] समाना ॥
औरौ जे हरिभक्त सुजाना * कहहिं सुनहिं समुझहिं विधिनाना ॥

दोहा—मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सु शूकरखेत[3] ॥
समुझ नहीं तसु बालपन, तब अति रहेहुँ अचेत ॥ ३९ ॥
श्रोता वक्ता ज्ञाननिधि, कथा रामकी गूढ़ ॥
किमि समुझै यह जीवजड़, कलिमल ग्रसित विमूढ़ ॥४०॥

यदपि कही गुरु बारहिंबारा * समुझिपरी कछु मति अनुसारा ॥
भाषा बन्ध करब मैं सोई * मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बलमोरे * तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरणी * करौं कथा भव सरिता[4] तरणी ॥
बुध[5] विश्राम सकलजनरंजनि[6] * रामकथा कलि कलुष विभंजनि[7] ॥
रामकथा कलि पन्नग भरणी * पुनि विवेक पावक कहँ अरणी[8] ॥
रामकथा कलि कामदगाई * सुजन सजीवन मूरि सुहाई ॥
सोइ वसुधातल[9] सुधातरंगिनि * भवभंजनि भ्रमभेक[10] भुवंगिनि[11] ॥
असुर सेनसम नरक निकंदिनि * साधुविबुध कुलहित गिरि[12] नंदिनि ॥
सन्तसमाज पयोधि[13] रमासी * विश्व भार धर अचल क्षमासी[14] ॥
यमगणमुँहमासि जग यमुनासी * जीवनमुक्ति हेतु जनु काशी ॥

१ हथेली । २ औंरा । ३ बाराहक्षेत्र अयोध्याजीके तीनयोजन सरयू तटपरहै । ४ संसाररूपीनदीको नौकासदृश । ५ ज्ञानी । ६ आनंददाता । ७नाशकर्ता । ८लकडी । ९ पृथ्वी । १० मेढक । ११ सर्पिणि । १२ पार्व्वती । १३ लक्ष्मी । १४ धरती ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामहिँ प्रियपावनि तुलसीसी * तुलसिदास हित हियहुलसीसी ॥
शिव प्रिय मेकल शैलसुतासी * सकल सिद्धिप्रद संपतिरासी ॥
सद्गुणसुरगण अम्ब अदितिसी * रघुबर भक्ति प्रेम परमितिसी ॥
दोहा—रामकथामंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह वन, सिय रघुबीर विहारु ॥ ४१ ॥
रामचरित चिन्तामणि चारू * सन्त सुमति तिय शुभग शृँगारू ॥
जगमंगल गुणग्राम रामके * दानिमुक्ति धन धर्म्म धामके ॥
सद्गुरु ज्ञान विराग योगके * विबुध वैद भव भीम रोगके ॥
जननि जनक सिय राम प्रेमके * बीज सकल व्रत धर्म्म नेमके ॥
शमन पाप सन्ताप शोकके * प्रियपालक परलोक लोकके ॥
सचिव सुभट भूपति विचारके * कुम्भज लोभ उदधि अपारके ॥
काम कोह कलिमलकरिगणके * केहरि[2] शावक जन मन वनके ॥
अतिथिपूज्य प्रीतम पुरारिके * कामदघन दारिद दवारिके ॥
मंत्र महामणि विषयब्यालके * मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
हरण मोहतम दिनकरकरसे[3] * सेवक शालिपाल जलधरसे[4] ॥
अभिमतदानि देवतरुवरसे[6] * सेवतसुलभ सुखद हरि हरसे ॥
सुकवि शरद नभ मनउडुगणसे[7] * राम भक्त जनजीवनधनसे ॥
सकल सुकृत फल भूरिभोगसे * जगहित निरुपधि साधु लोगसे ॥
सेवक मन मानस मरालसे * पावन गंग तरंग मालसे ॥
दोहा—कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दम्भ पाषण्ड ॥
दहन राम गुण ग्राम इमि, ईंधन अनल प्रचण्ड ॥ ४२ ॥
रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद सब काहु ॥
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु ॥ ४३ ॥
कीन्ह प्रश्न जेहि भाँति भवानी * जिहि विधि शंकर कहा बखानी ॥

---

१ हाथी । २ सिंह । ३ सूर्य्यनारायण । ४ धान । ५ मेघ । ६ कल्पवृक्ष । ७ नक्षत्र ।

CC-0. In Public Domain. Chandigarh Archive Trust

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सब हेतु कहब मैं गाई * कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिं होई * जनि आश्चर्य्य करै सुनि सोई ॥
कथा अलौकिकसुनहिंजेज्ञानी * नहिं आश्चर्य्य करहिंअसजानी ॥
रामकथाकी मिति जग नाहीं * अस प्रतीति जिनके मनमाहीं ॥
नाना भाँति राम अवतारा * रामायण शत कोटि अपारा ॥
कल्पभेद हरि चरित सुहाये * भाँति अनेक मुनीशन गाये ॥
करिय न संशय अस उर आनी * सुनिय कथा सादर रतिमानी ॥
दोहा–राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा विस्तार ॥
सुनि आश्चर्य्य न मानिहहिँ, जिनके विमल विचार ॥ ४४॥
इहिविधि सब संशय करि दूरी * शिरधरि गुरु पद पंकज धूरी ॥
पुनि सबही विनवौं करजोरी * करत कथा जेहि लाग न खोरी॥
सादर शिवहि नाइ पदमाथा * वरणौं विशद रामगुण गाथा ॥
सम्बत सोरहसै इकतीसा * करौं कथा हरिपद धरि शीशा ॥
नौमी भौमबार मधुमासा * अवधपुरी यह चरित प्रकाशा ॥
जेहि दिन रामजन्मश्रुतिगावहिं * तीरथसकल तहाँ चलि आवहिं॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा * आय करहिं रघुनायकसेवा ॥
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना * करहिंराम कलकीरति गाना ॥
दोहा–मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु, पावन सरयू नीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दर श्याम शरीर ॥ ४५ ॥
दरश परश मज्जन अरु पाना * हरै पाप कह वेद पुराना ॥
नदीपुनीतअमितमहिमा अति * कहि नसकै शारदाविमलमति ॥
रामधामदापुरी सुहावनि * लोक समस्त विदितजगपावनि ॥
चारिखान जगजीव अपारा * अवध तजे तनु नाहिं संसारा ॥
सबविधि पुरी मनोहर जानी * सकल सिद्धप्रद मंगलखानी ॥
विमलकथा कर कीन्ह अरम्भा * सुनत नशाहिं काममदद्म्भा ॥

१ दुर्लभ । २ प्रीति । ३ निर्मल । ४ सुंदर ५ ज्ञान ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामचरित मानस यह नामा * सुनत श्रवण पाइय विश्रामा ॥
मनकर विषय अनल[1] वन जरई * होइ सुखी जो इहि सर परई ॥
रामचरित मानस मुनिभावन * विरचेउ शम्भु सुहावनपावन ॥
विविधदोष[2] दुख दारिद दावन * कलिकुचालिकलिकलुषनशावन ॥
रचि महेश निज मानसराखा * पाइ सुसमय शिवासन भाखा ॥
ताते रामचरित मानसबर * धरेउनाम हिय हेरि हरषिहर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई * सादर सुनहु सुजन मनलाई ॥
दोहा—जसमानस जेहि विधि भयो, जग प्रचार जेहि हेतु ॥
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा[4] वृषकेतु[5] ॥ ४६ ॥
शम्भुप्रसाद सुमति हिय हुलसी * रामचरित मानस कवि तुलसी ॥
करउँ मनोहर मति अनुहारी * सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू * वेद पुराण उदधि[6] घन[7] साधू ॥
बर्षहिं राम सुयश वरबारी * मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुण जो कहहिं वखानी * सोइ स्वच्छता करै मलहानी ॥
प्रेमभक्ति जो वरणि न जाई * सोइ माधुरता शीतलताई ॥
सोजल सुकृत शालि हित होई * रामभक्ति जगजीवन सोई ॥
मेघा महिगत सो जलपावन * सिमिट श्रवणमग चलेउ सुहावन ॥
भरेउ सुमानस शिथिल थिराना * सुखद शीत रुचि चारु चिराना ॥
दोहा—सुठि सुन्दर सम्वाद वर, विरचेउ बुद्धि विचारि ॥
ते यहि पावन शुभगसर, घाट मनोहर चारि ॥ ४७ ॥
सप्तप्रबन्ध शुभग सोपाना * ज्ञान नयन निरखतमनमाना ॥
रघुपतिमहिमा अगुण अवाधा * बर्णब सोइ वर वारि अगाधा ॥
रामसीययश सलिलसुधासम * उपमा बीचि बिलासमनोरम ॥

१ कान । २ अग्नि । ३ काम, क्रोध, लोभ । ४ पार्वती । ५ महादेव । ६समुद्र ७बादल । ८श्रेष्ठपानी । ९ शिव-पार्वती, कांगभुशुण्डि-गरुड, याज्ञवल्क्य भरद्वाज, गुसाईंजीकेगुरु, अरु गोसाईंजीकासम्वाद ।

In Public Domain, Gharbal Archives, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरइनि सघन चारु चौपाई * युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा * सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥
अर्थ अनूप स्वभाव सुभासा * सोइ पराग मकरन्द सुबासा ॥
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला * ज्ञान विराग विचार मराला ॥
धुनि अवरेव कवित गुणजाती * मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी * कहब ज्ञान विज्ञान विचारी ॥
नवरस जप तप योग विरागा * ते सब जलचर चारु तडागा ॥
सुकृती साधु नाम गुण गाना * तेविचित्र जल विहँग समाना ॥
संत सभा चहुँदिशि अँबराई * श्रद्धाऋतु[1] बसंत समगाई ॥
भक्तिनिरूपण विविध विधाना * क्षमा दया द्रुम[2] लता विताना ॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना * हरिपद रति रस वेद बखाना ॥
औरो कथा अनेक प्रसंगा * तेइ शुक पिक बहुवरण विहंगा[3] ॥
दोहा–पुहुप वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु ॥
माली सुमन[4] सनेह जल, सींचत लोचन चारु ॥ ४८ ॥
जे गावहिं यह चरित सँभारे * ते यहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी * ते सुरवर मानस अधिकारी ॥
अतिखल जे विषयी वक कागा * इहिसरनिकटनजाहिं अभागा ॥
शंबुक भेक[5] शिवार समाना * इहां न विषय कथा रसनाना ॥
तेहि कारण आवत हिय हारे * कामी काक बलाक विचारे ॥
आवत इहिसर अतिकठिनाई * राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला * तिनके वचन व्याघ्र हरि व्याला ॥
गृहकारज नाना जंजाला * तेइ अति दुर्गम शैल विशाला ॥
वन बहु विषय मोह मद माना * नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दोहा–जे श्रद्धा शम्बल[6] रहित, नहिं संतन कर साथ ॥

---

१ अपनीउपासनाअनुकूलवेदसंतगुरुवाक्यकोनिजअनुभवकीएकताकरके.प्रतीति करना । २ वृक्ष । ३ पक्षी । ४ पुष्प । ५ घोंघा । ६ मेढक । ७ सम्पत्ति–घोंघा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिनकहँ मानस अगम अति, जिनहिं न प्रिय रघुनाथ॥४९॥
जोकरि कष्ट जाइ पुनि कोई * जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जडताजाड विषम उर लागा * गयहु न मज्जन पाप अभागा ॥
करिनजाइ सर मज्जन पाना * फिरि आवैं समेत अभिमाना ॥
जो बहोरि कोउ पूछन आवा * सरनिंदा करि ताहि सुनावा ॥
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही * राम कृपाकरि चितवहिँ जेही ॥
सोइ सादर सरमज्जन करहीं * महाघोर त्रयताप न जरहीं ॥
तेनर यह सर तजहिं न काऊ * जिनके रामचरण भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह इहि सर भाई * सो सतसंग करै मन लाई ॥
अस मानस मानसचखुचाही * भइ कविबुद्धि विमलअवगाही ॥
बढ्यो हृदय आनंद उछाहू * उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली शुभग कविता सरितासों * राम विमल यश जल भरितासों ॥
सरयूनाम सुमंगल मूला * लोक वेद मत मंजुलकूला ॥
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि * कलिमल तट तरु मूल निकंदिनि ॥
दोहा–श्रोता त्रिविध समाजपुर, ग्राम नगर दुहुँकूल ॥
संत सभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल ॥ ५० ॥
रामभक्ति सुरसरि तहँ जाई * मिली सुकीरति सरयु सुहाई ॥
सानुज रामसमर[3] यशपावन * मिलेउ महानद शोण सुहावन ॥
युग बिच भक्ति देवधुनि धारा * सोहतिसहितसुविरति विचारा ॥
त्रिविधतापत्रासक त्रिमुहानी * रामस्वरूप सिंधु समुहानी ॥
मानसमूल मिली सुरसरिही * सुनत सुजन मनपावन करिही ॥
बिच बिच कथा विचित्र विभागा * जनु सरि तीर तीर वन बागा ॥
उमा महेश विवाह बराती * ते जलचर अगणित बहुभाँती ॥
रघुबर[4] जन्म अनन्द बधाई * भँवर तरंग मनोहरताई ॥

१ अधिभूत, अध्यात्म, अधिदैव । २ हृदयके नेत्र । ३ संग्राम । ४ सरयू गंगा सरस्वतीजीका संगम ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—बाल चरित चहुँ बंधुके, वनज विपुल बहुरंग ॥
नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर वारिविहंग ॥ ५१ ॥

सीय स्वयम्बर कथा सुहाई * सरित सुहावनि सो छबिछाई ॥
नदी नाव वटु प्रश्न अनेका * केवट कुशल उतर सविवेका ॥
सुनि अनुकथन परस्परहोई * पथिक समाज सोह सरि सोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी * घाट सुबन्ध राम वर वानी ॥
सानुजराम विवाह उछाहू * सोशुभ उमँग सुखद सबकाहू ॥
कहत सुनत हर्षहिं पुलकाहीं * ते सुकृती जन मुदित नहाहीं ॥
राम तिलक हित मंगल साजा * पर्वयोग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति कैकयी केरी * परी जासु फल विपति घनेरी ॥

दोहा—शमन अमित उत्पात सब, भरत चरित जप याग ॥
कलि अघ खल अवगुण कथन, ते जल मल बक काग ॥ ५२ ॥

कीरति सरित छहूँ ऋतु रूरी * समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिम शैलसुता शिवव्याहू * शिशिरसुखदप्रभु जन्म उछाहू ॥
बर्णब राम विवाह समाजू * सो मुद मंगलमय ऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू * पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
वर्षा घोर निशाचर रारी * सुरकुल शालि सुमंगलकारी ॥
राम राज्य सुख विनय बड़ाई * विशद सुखद सोइ शरदसुहाई ॥
सती शिरोमणि सिय गुणगाथा * सोइगुण अमल अनूपम पाथा ॥
भरत स्वभाव सुशीतल ताई * सदा एकरस वरणि नजाई ॥

दोहा—अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परस्पर हास ॥
भायप भलि चहुँ बंधुकी, जल माधुरी सुबास ॥ ५३ ॥

आरति विनय दीनता मोरी * लघुता ललित सुवारि न थोरी ॥
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी * आस पियास मनोमलहारी ॥

---

१ ब्रह्मचर्यसहविद्यार्थी । २ ज्ञानवान् पण्डित । ३ भाइयोंसहित । ४शोभित । ५पवित्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम सुप्रेमहि पोषतपानी * हरत सकल कलिकलुष गलानी ॥
भव श्रव शोषक तोषक तोषा * शमन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
काम क्रोध मद मोह नशावन * विमल विवेक विराग बढ़ावन ॥
सादर मज्जन पान कियेते * मिटत पाप परिताप हियेते ॥
जिन यहिवारि न मानसधोये * तिन कायर कलिकाल विगोये ॥
तृषित[2] निरखि रविकर भववारी * फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी ॥
दोहा—मति अनुहारि[3] सुवारि गुण, गणि गण मन अन्हवाय ॥
सुमिरि भवानी शंकरहि, कह कवि कथा सुहाय ॥ ५४ ॥
अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाय प्रसाद ॥
कहौं युगल मुनिवर्य्य कर, मिलन शुभग सम्वाद ॥ ५५ ॥
भरद्वाज जिमि प्रश्नकिय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय ॥
प्रथम मुख्य सम्वाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ॥ ५६ ॥
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा * जिनहिं रामपद अतिअनुरागा ॥
तापस शम दम दयानिधाना * परमारथ पथ परम सुजाना ॥
माघ मकरगत रवि जब होई * तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी * सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी ॥
पूजहिं माधवपद जलजाता * परशि अक्षयवट हर्षित गाता ॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन * परमरम्य मुनिवर मनभावन ॥
तहाँ होइ मुनि ऋषय समाजा * जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा * कहहिं परस्पर हरि गुण गाहा ॥
दोहा—ब्रह्मनिरूपण धर्म विधि, वर्णहिं तत्त्व विभाग ॥
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग ॥ ५७ ॥
इहिप्रकार भरि मकर नहाहीं * पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं ॥
प्रतिसम्वत अस होइ अनन्दा * मकरमज्जि गवनहिं मुनि वृन्दा ॥

१ लीन । २ पियासे । ३ अनुसार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकवार भरि मकर नहाये * सब मुनीश आश्रमनि सिधाये ॥
याज्ञवल्क्यमुनि परम विवेकी * भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे * अति पुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुयश बखानी * बोले अति पुनीत मृदुवानी ॥
नाथ एक संशय बड़ मोरे * करतल वेद तत्त्व सब तोरे ॥
कहत मोहिं लागत भय लाजा * जो न कहौं बड़ होइ अकाजा ॥
दोहा—सन्त कहहिं अस नीति प्रभु, श्रुति पुराण जो गाव ॥
होइ न विमल[1] विवेक[2] उर, गुरुसन किये दुराव ॥ ५८ ॥
अस विचारि प्रगट्यो निज मोहू * हरहुनाथ करि जन पर छोहू ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा * सन्त पुराण उपनिषद गावा ॥
सन्ततजपत[3] शम्भु अविनाशी * शिव भगवान ज्ञान गुण राशी ॥
आकरचारि[4] जीव जग अहहीं * काशी मरत परमपद लहहीं ॥
सोकि राम महिमा मुनिराया * शिव उपदेश करत करिदाया ॥
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं * कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं ॥
एक राम अवधेश कुमारा * तिनकर चरित विदित[5] संसारा ॥
नारि[6] विरह दुख लहेउ अपारा * भये रोष रण रावण मारा ॥
दोहा—प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ॥
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ॥ ५९ ॥
जैसे मिटै मोह भ्रम भारी * कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई * तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई[7] ॥
रामभक्त तुम मन क्रम वानी * चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
चाहहु सुना राम गुण गूढा * कीन्हेउ प्रश्न मनहु अति मूढा ॥
तात सुनहु सादर मनलाई * कहहुँ रामकी कथा सुहाई ॥
महामोह महिषेश[8] विशाला * रामकथा कालिका कराला ॥

१ निर्म्मल । २ ज्ञान । ३ निरंतर । ४ खानि । ५ प्रकट । ६ नारिश्रीसीताजी ।
७ महिमा । ८ भवानी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामकथा शशि किरण समाना * सन्त चकोर करहिं तेहि पाना ॥
एसे संशय कीन्ह भवानी * महादेव तब कहा बखानी ॥
दोहा–कहौं स्वमति अनुहारि अब, उमा शम्भु सम्वाद ॥
भयउ समय जेहि हेतु यह, सुनि मुनि मिटहिं विषाद ॥ ६० ॥
एक बार त्रेता युग माहीं * शम्भु गये कुम्भजऋषि पाहीं ॥
संग सती जगजननि भवानी * पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी ॥
रामकथा मुनिवर्य्य बखानी * सुनी महेश परम सुख मानी ॥
ऋषि पूंछी हरि भक्ति सुहाई * कही शम्भु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति गुणगाथा * कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
मुनिसन बिदा माँगि त्रिपुरारी * चले भवन संग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा * हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा ॥
पिता वचन तजि राज्यउदासी * दण्डकवन विचरत अविनाशी ॥
दोहा–हृदय विचारत जात हर, केहि विधि दरशन होइ ॥
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सब कोइ ॥ ६१ ॥
सो०–शंकर उर अति क्षोभ, सती न जानहिं मर्म सोइ ॥
तुलसी दरशन लोभ, मनडर लोचन लालची ॥ ११ ॥
रावण मरण मनुज कर यांचा * प्रभु विधिवचन कीन्हचहसाँचा ॥
जोनहिं जाउँ रहै पछितावा * करत विचार न बनत बनावा ॥
यहि विधि भये शोचवश ईशा * ताही समय जाय दशशीशा ॥
लीन्ह नीच मारीचहिसंगा * भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥
करि छल मूढ हरी वैदेही * प्रभु प्रताप उर विदित न तेही ॥
मृगवधि बन्धु सहित हरि आये * आश्रम देखि नयन जल छाये ॥
विरह विकल नरइव रघुराई * खोजत विपिनें फिरत दोउ भाई ॥

---

१ चन्द्र । २ जगत्माता । ३ पृथ्वीकाभार उतारनेको । ४ रावण । ५ सीताजी । ६ कपटमृगमारीच । ७ वन ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाइ उतर अब देहौं काहा * उर उपजा अति दारुण दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा * निज प्रभाव कछु प्रगट जनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता * आगे राम सहित सिय भ्राता ॥
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा * सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना ॥
देखे शिव विधि विष्णु अनेका * अमित प्रभाउ एकते एका ॥
वन्दत चरण करत प्रभु सेवा * विविध वेष देखे सब देवा ॥
दोहा–सती विधात्री इन्दिरा, देखीं अमित अनूप ॥
जेहि जेहि वेष अजादि सुर, तेहि तेहि तनु अनुरूप ॥ ६६ ॥
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते * शक्तिन सहित सकल सुर तेते ॥
जीव चराचर जे संसारा * देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा * रामरूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीता सहित न वेष घनेरे ॥
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मण सीता * देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदयकम्प तनु सुधि कछु नाहीं * नयन मूंदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी * कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा * चली तहाँ जहँ रहे गिरीशा ॥
दोहा–गई समीप महेश तब, हँसि पूछी कुशलात ॥
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सब बात ॥ ६७ ॥
सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ * भयवश शिवसन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं * कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहिनाईं ॥
जो तुम कहा सो मृषा नहोई * मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरिध्याना * सती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥
बहुरि राम मायहि शिरनावा * प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना * हृदय विचारत शम्भु सुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कृत वेषा * शिव उर भयउ विषाद विशेषा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो अब करौं सतीसन प्रीती * मिटै भक्तिपथ होइ अनीती ॥
दोहा–परमप्रेम नहिं जाइ तजि, किये प्रेम बड़ पाप ॥
प्रगट न कहत महेश कछु, हृदय अधिक संताप ॥६८॥
तबहिं शम्भु प्रभुपद शिरनावा * सुमिरत राम हृदय अस आवा ॥
यहि तनु सतिहि भेंट मोहिंनाही * शिवसंकल्प कीन्ह मनमाहीं ॥
अस विचारि शंकर मतिधीरा * चलेभवन सुमिरत रघुबीरा ॥
चलत गगन भइ गिरा सुहाई * जयमहेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
अस प्रण तुमविन करैको आना * रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सती उर शोचू * पूंछा शिवहिं समेत सँकोचूं ॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला * सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
यदपि सती पूछा बहुभाँती * तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥
दोहा–सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ ॥
कीन्ह कपट मैं शंभुसन, नारि सहज जड़ अज्ञ ॥६९॥
सो०–जल पय सरिस विकाय, देखहु प्रीति कि रीति भलि ॥
विलग होत रसजाय, कपट खटाई परतही ॥ १३ ॥

क्षेपक

क्षीरेणात्मगतोदकायहिगुणा दत्ताःपुरातेऽखिलाः
क्षीरेतापमवेक्ष्यतेनपयसा ह्यात्माकृशानौहुतः
गन्तुंपावकमुन्मनास्तदभवद्दृष्ट्वातुमित्रापदम्
युक्तंतेनजलेनशाम्यतिसतांमैत्रीपुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥

अर्थ–जिस समय दूधमें जल मिला तौ उस दूधने अपना सबगुण और रूप जल रूपी मित्रको देदिया, फिर दूधमें ताप देखकर जलने पहले अपना शरीर अग्निमें होम दिया, दूधको आंचपर धरो तौ पहले पानी जलताहै. फिर दूधनेभी मित्र को इस आपत्तिमें देखकर अग्निमें गिरना चाहा, फिर जलके छींटे पाकर अपने मित्रको आया जान ठंढाहो बैठगया सो उचितहीहै सत्पुरुषोंकी मैत्री ऐसीही होतीहै।

इति

१ दुःख । २ भोग । ३ प्रण । ४ गृह-कैलास । ५ आकाश । ६ वाणी । ७लज्जा ।
८ अन्तर्य्यामिन् । ९ दूध ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हृदय शोच समुझत निजकरणी * चिन्ता अमित जाइ नहिं वरणी ॥
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
शंकररुख अवलोकि भवानी *प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी॥
निज अघसमुझिनकछुकहिजाई * तपै अँवां इव उर अधिकाई ॥
सतिहि सशोच जानि वृषकेतू * कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू ॥
वर्णत पंथ विविध इतिहासा * विश्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँपुनि शंभु समुझि प्रण आपन * बैठे वटतर करि कमलासन ॥
शंकर सहज स्वरूप सँभारा * लागि समाधि अखंड अपारा ॥
दोहा–सती बसहिं कैलास तब, अधिक शोच मन माहिं ॥
मर्म्म न कोऊ जान कछु, युगसम दिवस सिराहिं ॥७०॥
नित नव शोच सती उरभारा * कब जैहौं दुखसागर पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना * पुनि पति वचन मृषाकरिजाना ॥
सोफल मोहिं विधाता दीन्हा * जोकछु उचित रहा सो कीन्हा ॥
अब विधि असबूझियनहिंतोहीं * शंकरविमुख जिआवहु मोहीं ॥
कहिनजाइकछु हृदय गलानी * मनमहँ रामहिं सुमिरि सयानी ॥
जोप्रभु दीनदयालु कहावा * आरतहरण वेद यश गावा ॥
तोमैं विनय करौं कर जोरी * छूटै वेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरे शिवचरण सनेहू * मन क्रम सत्य वचन व्रत येहू ॥
दोहा–तौ समदर्शी सुनिय प्रभु, करौ सो वेगि उपाइ ॥
होइ मरण जेहि विनहिं श्रम, दुस्सहविपतिविहाइ ॥ ७१ ॥
यहिविधि दुखित प्रजेशकुमारी * अकथनीय दारुण दुख भारी ॥
बीते सम्बत सहससतासी * तजी समाधि शंभु अविनाशी ॥
रामनाम शिव सुमिरण लागे * जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ शम्भुपद वन्दन कीन्हा * सन्मुख शंकर आसन दीन्हा ॥

१ देखि । २ पाप । ३ एकएकदिन-एकएक युगके समान युग कहिये सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग । ४ बोझसा । ५ असत्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगे कहन हरिकथा रसाला * दक्षप्रजेश भये तेहिकाला ॥
देखा विधि विचारि सबलायक * दक्षहि कीन्ह प्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा * अति अभिमान हृदय तब आवा ॥
नहिं कोउ अस जन्मेउ जग माहीं * प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥
दोहा–दक्षलिये मुनि बोलि तब, करन लगे बड़ याग ॥
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मखभाग ॥ ७२ ॥
किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा * बधुन समेत चले सुर सर्वा ॥
विष्णु विरंचि महेश विहाई * चले सकल सुर यान बनाई ॥
सती विलोकेउ गगनविमाना * जात चले सुन्दर विधि नाना ॥
सुर सुन्दरी करहिं कलगाना * सुनत श्रवण छूटहिं मुनिध्याना ॥
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी * पितायज्ञ सुनिकै हरषानी ॥
जो महेश मोहिं आयसुदेहीं * कछुदिन जाइ रहौं मिसु एहीं ॥
पति परित्याग हृदयदुख भारी * कहै न निज अपराध विचारी ॥
बोली सती मनोहर वानी * भय संकोच प्रेम रस सानी ॥
दोहा–पिता भवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ ॥
तौमैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥ ७३ ॥
कहेउ नीक मोरे मनभावा * यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥
दक्ष सकल निजसुता बुलाई * हमरे वैर तुम्हैं विसराई ॥
*ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना * तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना ॥

* महादेवजी कहतेहैं कि हे सती ! ब्रह्माकी सभामें विष्णु आदि सब देवतोंके साथ हम बैठे रहे सो उससमयमें दक्ष तुम्हारे पिता आये सो उन्हें देख सब देवता उठे परन्तु मैं और मेरे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय उस सभामें हमें शापदिया और कहा यज्ञमें भाग तुमको आजसे न मिलैंगे और तभीसे द्वेषमान मेरी प्रतिष्ठा हीन करनेमें उद्यतरहे इसीकारण अपने यज्ञमें हमें न्योता नहींदिया ॥

१ स्त्रिन । २ छोडकर । ३ विमान । ४ आकाश । ५ देववधू । ६ सुंदरगान । ७ कान । ८ वियोग । ९ बेटी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो बिन बोले जाहु भवानी * रहै न शील सनेह न कानी ॥
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा * जाइय बिनु बोले न सँदेहा ॥
तदपि विरोधमान जहँ कोई * तहाँ गये कल्याण नहोई ॥
भाँति अनेक शम्भु समुझावा * भावीवश न ज्ञान उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये * नाहिं भलिबात हमारे भाये ॥
दोहा—कहि देखा हर यत्न बहु, रहै न दक्षकुमारि ॥
दिये मुख्य गण संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥
पिताभवन जब गई भवानी * दक्षत्रास काहुन सनमानी ॥
सादर भलेहि मिली इक माता * भगिनी[2] मिली बहुत मुसुकाता ॥
दक्ष न कछु पूंछी कुशलाता * सतिहि विलोकि जरे सब गाता ॥
सती जाइ देखेहु तब यागा * कतहुँ न दीख शंभुकर भागा ॥
तब चित चढेउ जो शंकरकहेऊ * प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ ॥
पाछिल दुख नहृदयअसव्यापा * जस यह भयउ महा परितापा[3] ॥
यद्यपि जग दारुण[4] दुख नाना * सबते कठिन जाति अपमाना ॥
समुझिशोचतिहिंभाअतिक्रोधा * बहु विधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥
दोहा—शिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होत प्रबोध[5] ॥
सकल सभहिं हठि हटकि तब, बोलीं वचन सक्रोध ॥ ७५ ॥
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा * कही सुनी जिन शंकरनिंदा ॥
सो फल तुरत लहव सबकाहू * भली भाँति पछिताव पिताहू ॥
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा[6] * सुनिय जहाँ तहँ अस मर्य्यादा[1] ॥
काटिय तासु जीभ जु बसाई * श्रवणमूँदि नहिं चलिय पराई ॥
जगदात्मा महेश पुरारी * जगतजनक[7] सबके हितकारी ॥
पिता मन्दमति निन्दत तेही * दक्षशुक्र सम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू * उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू ॥

१ मर्य्यादा । २ बहिन । ३ अत्यंत दुःख । ४ कठिन । ५ ज्ञान—ढाढस । ६ निंदा । ७ जगत्पिता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असकहि योग अग्नि तनु जारा * भयउ सकल मख हाहाकारा ॥
दोहा–सती मरण सुनि शम्भु गण, लगे करन मख खीश ॥
यज्ञविध्वंस विलोकि भृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश ॥ ७६ ॥
समाचार जब शंकर पाये * वीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञविध्वंस जाय तिन्ह कीन्हा * सकलसुरन्हविधिवत फलदीन्हा ॥
भइ जग विदित दक्ष गति सोई * जस कछु शम्भु विमुखकी होई ॥
यह इतिहास सकल जग जाना * ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
सती मरत हरिसन वरमांगा * जन्म जन्म शिवपद अनुरागा ॥
तेहिकारण हिमगिरि गृहजाई * जन्मी पार्वती तनु पाई ॥
जबते उमा शैलगृह आई * सकल सिद्धि सम्पति तहँ छाई ॥
जहँ तहँ मुनिन सुआश्रमकीन्हे * उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥
दोहा–सदा सुमन फल सहित सब, द्रुम नव नाना जाति ॥
प्रकटीं सुन्दर शैलपर, मणि आकर बहुभाँति ॥ ७७ ॥
सरिता सब पुनीत जल बहई * खग मृग मधुप सुखी सब रहई ॥
सहज वैर सब जीवन त्यागा * गिरिपरसकलकरहिं अनुरागा ॥
सोह शैल गिरिजा गृहआये * जिमि नर राम भक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृहतासू * ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार सब पाये * कौतुक हिमगिरि गेहँ सिधाये ॥
शैलराज बड़ आदर कीन्हा * पदपखारि वर आसन दीन्हा ॥
नारिसहित मुनिपद शिरनावा * चरणसलिल सब भवन सिंचावा ॥
निजसौभाग्य बहुत गिरिवरणा * सुता बोलि मेली मुनिचरणा ॥
दोहा–त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुताके दोष गुण, मुनिवर हृदय विचारि ॥ ७८ ॥
कह मुनि विहँसि गूढ मृदुवानी * सुता तुम्हारि सकलगुणखानी ॥

१ पर्व्वत । २ नदियां । ३ पवित्र-निर्मल । ४ पक्षी । ५ हरिण । ६ भ्रमर । ७ घर । ८ कोमल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन्दरि सहज सुशील सयानी * नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी * होइहि सन्तत पियहि पियारी ॥
सदा अचल इहिकर अहिवाता * इहिते यश पैहहिं पितु माता ॥
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं * इहि सेवत कछु दुर्लभनाहीं ॥
इहिकर नाम सुमिरि संसारा * तिय चढिहहिं पतिव्रत असिधारा ॥
शैल सुलक्षण सुता तुम्हारी * सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी ॥
अगुण अमान मातु पितु हीना * उदासीन सब संशय छीना ॥
दोहा—योगी जटिल अकाम तनु, नग्न अमंगल भेष ॥
अस स्वामी इहिकहँ मिलिहि, परी हस्त असरेख ॥ ७९ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियजानी * दुख दम्पतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहू यह भेद न जाना * दशा एक समुझत बिलगाना ॥
सकल सखी गिरिजागिरिमयना * पुलक शरीर भरे जलनयना ॥
हेय न मृषा देवऋषि भाषा * उमा सो वचन हृदयधरिराखा ॥
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू * मिलन कठिन मनभा संदेहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई * सखिउछंग बैठी पुनि जाई ॥
झूठि नहोइ देवऋषि वानी * शोचहिं दम्पति सखी सयानी ॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ * कहहुनाथ का करिय उपाऊ ॥
दोहा—कह मुनीश हिमवंत सुनु, जो विधि लिखा लिलार ॥
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटन हार ॥ ८० ॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई * होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस बर मैं बरणेउँ तुमपाहीं * मिलिहि उमहिं कछु संशयनाहीं ॥
जे जे वरके दोष बखाने * ते सब शिवपहँ मैं अनुमाने ॥
जो विवाह शंकर सन होई * दोषौ गुण सम कह सब कोई ॥

१ सदैव । २ जिनके नराग नद्वेष नसंशय । ३ वाणी । ४ मातापिता । ५ दुचित्त । ६ गोद । ७ माथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो अहिसेज शयन हरिकरहीं * बुध कछु तिनकहँ दोष न धरहीं ॥
भानु[1] कृशानु[2] सर्व रस खाहीं * तिनकहँ मन्द कहत कोउनाहीं ॥
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं * सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं ॥
समरथ कहँ नहिं दोष गुसांई * रवि पावक सुरसरि की नाईं ॥

दोहा–जो अस ईर्षा करहिं नर, जड़ विवेक अभिमान ॥
परहिं कल्पभरि नरक महँ, जीव कि ईश समान ॥ ८१ ॥

सुरसरि जलकृत वारुणिजाना * कबहुँ न संत करहिं तिहि पाना ॥
सुरसरि मिले सुपावन जैसे * ईश अनीशहिं अन्तर तैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना * इहिविवाह सब विधि कल्याना ॥
दुराराध्यपै[3] अहहिं महेशू * आशुतोष पुनि किये कलेशू ॥
जोतप करै कुमारि तुम्हारी * भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी ॥
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं * इहिकहँ शिव तजि दूसरनाहीं ॥
वरदायक प्रणतारत भंजन * कृपासिंधु सेवक मनरंजन ॥
इच्छितफल बिनु शिवआराधे * लहइ न कोटि योग जप साधे ॥

दोहा–असकहिनारदसुमिरि हरि, गिरिजहिदीन्हअशीश ॥
होइहि सब कल्याण अब, संशय तजहु गिरीश[4] ॥ ८२ ॥

असकहि ब्रह्म भवन मुनिगयऊ * आगिलचरित सुनहुजस भयऊ ॥
पतिहि इकांत पाय कह मयना * नाथ नमैं समुझेउँ मुनिवयना ॥
जो घर वर[5] कुल होइ अनूपा * करिय विवाह सुता अनुरूपा ॥
नतु कन्या बरु रहै कुमारी * कन्त उमा मम प्राणपियारी ॥
जो न मिलिहि वर गिरिजहियोगू * गिरि जड़ सहजकहहिंसबलोगू ॥
सो विचारि पति करहु विवाहू * जेहि न बहोरि होइ उरदाहू ॥
असकहि परी चरण धरिशीशा * बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
बरु पावक[6] प्रगटै शशि[7] माहीं * नारद वचन अन्यथा[8] नाहीं ॥

---

१ सूर्यनारायण । २ अग्नि । ३ दुस्तर जिनकी आराधना । ४ हिमवान् पर्व्वत । ५ दूलह । ६ अग्नि । ७ चन्द्रमा । ८ असत्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–प्रिया शोच परिहरहु सब, सुमिरहु श्रीभगवान ॥
पार्वती जिन निर्म्मयउ, सोइ करिहहिं कल्यान ॥ ८३ ॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू * तौ अस जाय सिखावन देहू ॥
करैसो तप ज्याहि मिलहिं महेशू * आन उपाय न मिटहिं कलेशू ॥
नारद वचन समुझि सबहेतू * सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू ॥
अस विचारि तुम तजि सबशंका * सबहि भांति शंकर अकलंका ॥
सुनि पतिवचन हर्ष मनमाहीं * गई तुरत उठि गिरिजापाहीं ॥
उमहि विलोकि नयन भरिवारी * सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहिवार लेति उरलाई * गदगद कण्ठ न कछु कहिजाई ॥
जगतमातु सर्वज्ञ भवानी * मातु सुखद बोली मृदुवानी ॥
दोहा–सुनहु मातु मैं दीख अस, स्वप्न सुनाऊं तोहिं ॥
सुन्दर गौर सुविप्रवर, अस उपदेशेउ मोहिं ॥ ८४ ॥
करहु जाय तप शैलकुमारी * नारद कहा सो सत्य विचारी ॥
मातु पितहि पुनि यहमतभावा * तपसुखप्रद दुख दोष नशावा ॥
तपबल रचै प्रपंच विधाता * तपबल विष्णु सकलजगत्राता ॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा * तपबल शेष धरहिं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी * करहु जाइ तप अस जियजानी ॥
सुनत वचन विस्मित महतारी * स्वप्न सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥
मातु पितहि बहुविधि समुझाई * चली उमा तपहित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता * भये विकल मुख आव न बाता ॥
दोहा–वेद शिरा मुनि आय तब, सबहिं कहा समुझाइ ॥
पार्वती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ८५ ॥
उरधरि उमा प्राणपति चरणा * जाइ विपिन लागीं तप करणा ॥

---

१ उत्पन्नकिया । २ शिव । ३ अश्रु-जल । ४ अन्तर्यामी । ५ ब्राह्मण ६ सुखदायक । ७ सृष्टि । ८ पालत । ९ वन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिसुकुमारि न तनु तप योगू * पति पद सुमिरि तजेउ सबभोगू ॥
नित नव चरण उपज अनुरागा * बिसरी देह तपहि मन लागा ॥
संवत सहस मूल फल खाये * शाक खाइ शत वर्ष गँवाये ॥
कछु दिन भोजन वारि बतासा * किये कठिन कछु दिन उपवासा ॥
बेल पात महि परे सुखाई * तीनि सहस संवत सो खाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा * उमा नाम तब भयउ अपर्णा ॥
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥

दोहा–भयउ मनोरथ सफल तव, सुनु गिरिराज कुमारि ॥
परिहरि दुसह कलेश सब, अब मिलिहहिँ त्रिपुरारि ॥८६॥

अस तप काहुन कीन्ह भवानी * भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म वर वानी * सत्य सदा सन्तत शुचि जानी ॥
आवैं पिता बुलावन जबहीं * हठ परिहरि घर जायहु तबहीं ॥
मिलहिं तुमहिं जब सप्तऋषीशा * जानेहु तब प्रमाण वागीशा ॥
सुनत गिरा विधि गगनबखानी * पुलकिगात गिरिजा हरषानी ॥
उमाचरित मैं सुन्दर गावा * सुनहु शम्भुकर चरित सुहावा ॥
जबते सती जाय तनु त्यागा * तबते शिव मन भयउ विरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा * जहँ तहँ सुनहिं राम गुणग्रामा ॥

दोहा–चिदानंद सुखधाम शिव, विगत मोह मद काम ॥
विचरहिं महि धरिहृदय हरि, सकल लोक अभिराम ॥८७॥

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना * कतहुँ राम गुण करहिं बखाना ॥
यदपि अकाम तदपि भगवाना * भक्त विरह दुख दुखित सुजाना ॥
येहि विधि गयउ काल बहुबीती * नितनव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा * अविचलहृदय भक्तिकी रेखा ॥

---

१ वपुष । २ आकाशवाणी । ३ त्यागि । ४ वाणी–वचन । ५ आकाश । ६ रहित । ७ पृथ्वी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूप शील निधि तेज विशाला ॥
बहुप्रकार शंकरहि सराहा * तुम विनु अस व्रत को निरवाहा ॥
बहु विधि राम शिवहि समुझावा * पार्वती कर जन्म सुनावा ॥
अति पुनीत गिरिजाकी करणी * विस्तर सहित कृपानिधिवरणी ॥

दोहा–अब विनती मम सुनहु शिव, जो मोपर निज नेहु ॥
जाइ विवाहहु शैलजहि, यह मोहिं माँगे देहु ॥ ८८ ॥

कह शिव यदपि उचित असनाहीं * नाथ वचन पुनि मेटि नजाहीं ॥
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा * परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभुकी वानी * बिनहिंविचारकरिय शुभजानी ॥
तुम सब भाँति परम हितकारी * आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना * भक्ति विवेक धर्मयुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ * अब उर राखेउ जो हम कहेऊ ॥
अन्तर्द्धान भये अस भाषी * शंकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँ आये * बोले प्रभु अस वचन सुहाये ॥

दोहा–पार्वती पहँ जाय तुम, प्रेम परीक्षा लेहु ॥
गिरिहि प्रेरि पठवहु भवन, दूर करहु संदेहु ॥८९॥

सुनि शिववचन परमसुख मानी * चले हर्षि जहँ रहीं भवानी ॥
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी * मूरतिवन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुन शैलकुमारी * करहु कवन कारण तप भारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू * हमसन सत्य मर्म सब कहहू ॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी * बोलीं गूढ़ मनोहर वानी ॥
कहतमर्म मन अति सकुचाई * हँसिहहु सुनि हमारि जडताई ॥
मनहठ परा न सुनै सिखावा * चहत वारिपर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना * विनु पंखन हम चहहिं उडाना ॥

१ पवित्र । २ पार्व्वती । ३ हृदय । ४ गृह । ५ भेद । ६ पानी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखिय मुनि अविवेक हमारा * चाहत पति शंकर अविकारी ॥
दोहा—सुनत वचन विहँसे ऋषय, गिरिसंभव तव देह ॥
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसेहु केहि गेह ॥ ९० ॥
*दक्षसुतन उपदेशिन जाई * तिन फिरि भवन न देखा आई ॥
+चित्रकेतुकर घर उनघाला *×कनककशिपुकर पुनि असहाला ॥

* जब दक्षप्रजापतिने प्रथम बहुतसे पुत्र उत्पन्न करके आज्ञादिया कि सृष्टि करो तब वे सृष्टिके अर्थ तप करनेको गये वहां नारदने उन सबोंको ऐसा ज्ञान दिया कि वे सबके सब विरक्त होय वनमें तप करने लगे दक्षके गृहमें फिर नहीं आये तब दक्षने कन्या उत्पन्न करके सृष्टिको बढ़ाया और नारदजीको शापदिया कि तुम दो घड़ीसे अधिक कहीं न ठहरसकोगे सो हे पार्वती नारदकी शिक्षा सुन घर छोड वे भिखारी हुये ॥

+आगे फिर चित्रकेतु राजाका समाचार सुनो, चित्रकेतु राजाके कोटि स्त्री थीं परन्तु लडका एक नहीं तब किसी मुनिके आशीर्वादसे छोटी रानीके एक पुत्र उत्पन्न भया जब वह लडका वर्षभरका भया तब शेष सब रानियोंने उस लड़केको विष देके मारडाला तब उस मृतक लड़केको राजा गोदमें लिये विलाप करने लगा इतनेमें नारदजी आय राजाको ज्ञान उपदेश करने लगे परन्तु राजाको ज्ञान न हुआ तब नारदजीने उस लड़केका आत्मा बुलाय उससे कहा देखो राजा तुम्हारे शरीर छोड़नेसे अत्यन्त व्याकुल हैं तब वह बोला कौन किसका पुत्र यह असत्य है संसार कर्मानुसार है सुनो पहिले जन्ममें मैंभी राजा था राज्यसे विरक्त हो वनमें जाय भिक्षा मांग हरिभजन करता था एक दिन एक स्त्रीने मुझे गोलागोइठा दिया उसके भीतर चिउँटी थीं अग्निके संस्कारसे सब मरगई सो वोह चिउँटी यह तुम्हारी स्त्री हैं और जिसने मुझे गोलागोइठा दिया सो यह मेरी माता है और मैंने उस पापसे इसके उदरमें जन्म लिया है सो ये कोटि स्त्रियोंने आनिके पूर्व जन्मका बदला लिया यह कह लडका मरगया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड वनमें तप करने को चलागया ॥

× आगे कनककशिपुकी स्त्री कयाधू जब गर्भवती थी तब नारदजीने उसको

१ मूढता । २ विकार रहित । ३ घर । ४ प्रल्हादकापिता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारद शिख जुसुनहिं नरनारी * अवशि भवनतजि होहिंभिखारी ॥
मनकपटी तनु सज्जन चीन्हा * आप सरिस सबहीं चह कीन्हा ॥
तेहिके वचन मानि विश्वासा * तुम चाहहु पति सहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुवेष कपाली * अकुल अगेह दिगम्बर व्याली ॥
कहहु कवन सुख अस वर पाये * भल भूलिहु ठगके बौराये ॥
पंचकहैं शिव सती विवाही * पुनि अब डेरि मराइन ताही ॥

दोहा–अब सुख सोवत शोचनहिं, भीख मांगि भवखाहिं ॥
सहज एकाकिनके भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥११॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा * हम तुम कहँ वर नीक विचारा ॥
अति सुंदर शुचि सुखद सुशीला * गावहिं वेद जासु यश लीला ॥
दूषण रहित सकल गुणराशी * श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी ॥
असवर तुमहिं मिलाउब आनी * सुनतवचनकहविहँसि भवानी ॥
सत्य कहहु गिरि भवत नएहा * हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकौ पुनि पर्षाणते होई * जारेउ सहज न परिहर सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं * बसौ भवन उजरो नहिं डरऊं ॥
गुरुके वचन प्रतीति न जेही * स्वप्नेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दोहा–महादेव अवगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम ॥
जेहिकर मन रम जाहि सन, ताहि ताहि सन काम ॥१२॥

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा * सुनतिउँशिखतुम्हारिधरिशीशा ॥

ज्ञान उपदेश किया सो गर्भहीमें प्रह्लादको ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञानसे विष्णु नृसिंहरूपधर हिरण्यकशिपुका वधकर प्रह्लादको राजतिलक दिया नारदके उपदेशसे दैत्यकुलका नाश भया ॥

---

१ मनको वेग संकल्प विकल्प ताको कपटिलीन। २ मुंडमालजिनकाभूषण। ३ श्मशानवासी। ४ संसार। ५ पवित्र। ६ शोभित। ७ स्वर्ण। ८ पर्वत। ९ घर। १० विश्वास।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अब मैं जन्म शम्भुहित हारा * को गुण दोषहि करै विचारा ॥
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी * रहि नजाइ बिनु किये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं * वर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी * वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू * आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पापरौं कहै जगदम्बा * तुम गृह गवनहु भयउ विलम्बा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी * जयजयजय जगदम्ब भवानी ॥

दोहा–तुम माया भगवान् शिव, सकल जगत पितु मात ॥
नाय चरण शिर मुनि चले, पुनि पुनि हर्षित गात ॥९३॥

जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये * करि विनती गिरिजहिं गृहलाये ॥
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई * कथा उमाकी सकल सुनाई ॥
भये मग्न शिव सुनत सनेहा * हर्षि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तब शम्भुसुजाना * लगे करन रघुनायक ध्याना ॥
तारक असुर भयउ तेहिकाला * भुज प्रताप बल तेज विशाला ॥
ते सब लोक लोकपति जीते * भये देव सुख सम्पति रीते[2] ॥
अजर अमर सो जीति नजाई * हारे सुर करि विविध लराई ॥
तब विरंचि[3] सन जाइ पुकारे * देखे विधि सब देव दुखारे ॥

दोहा–सकल कहा बुझाइ विधि, दनुज निधन तब होइ ॥
शंभु शुक्र सम्भूतसुत, इहि जीतै रण सोइ ॥ ९४ ॥

मोरकहा सुनि करहु उपाई * होइहि ईश्वर करिहि सहाई ॥
सती जो तजी दक्ष मख देहा * जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥
तेइँ तप कीन्ह शंभु पतिलागी * शिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
यदपि अहै असमंजस[4] भारी * तदपि बात इक सुनहु हमारी ॥
पठवहु काम जाइ शिवपाहीं * करै क्षोभ शंकर मनमाहीं ॥

---

१ तमासगीर । २ हीन-खाली । ३ ब्रह्मा । ४ संदेह ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई * करवाउब विवाह बरिआई ॥
यहिविधि भले देव हितहोई * मति अति नीक कहा सब कोई ॥
प्रस्तुति सुरन्ह कीन अतिहेतू * प्रगटयो विषम बाण वृषकेतू ॥
दोहा–सुरन कही निज विपति सब, सुनि मन कीन्ह विचार ॥
शंभु विरोध न कुशल मोहिं, विहँसि कहेउ अस मार[1] ॥ ९५ ॥
तदपि करब मैं काज तुम्हारा * श्रुति[2] कह परम धर्म उपकारा ॥
परहित लागि तजै जो देही * सन्तत[3] संत प्रशंसहिं तेही ॥
असकहि चलेउ सबहिंशिरनाई * सुमन धनुष कर सहित सहाई[4] ॥
चलत मार[5] अस हृदय विचारा * शिव विरोध ध्रुव मरण हमारा ॥
तब आपन प्रभाव विस्तारा * निजवश कीन्ह सकल संसारा ॥
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू[6] * क्षणमहँ मिटेउ सकल श्रुतिसेतू[7] ॥
ब्रह्मचर्य व्रत संयम नाना * धीरज धर्म्म ज्ञान विज्ञाना ॥
सदाचार जप योग विरागा * सभय विवेक कटक सब भागा ॥
छंद–भागे विवेक सहाय सहित सो सुभट संयुग महिमुरे ॥
सदग्रन्थ पर्वत कन्दरन महँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा ॥
दुइमाथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि धनुशरकरधरा ॥
दोहा–जे सजीव जग अचर चर, नारि पुरुष अस नाम ॥
ते निज निज मर्याद तजि, भये सकल वश काम ॥ ९६ ॥
सबके हृदय मदन अभिलाखा * लतँ निहारि नवहिं तरु शाखा[8] ॥
नदी उमगि अंबुधि[9] कहँ धाई * संगम करैं तलाव तलाई ॥
जहँ अस दशा जडनकी वरणी * को कहिसकै सचेतन करणी ॥
पशु पक्षी नभ जल थल चारी * भये कामवश समय बिसारी ॥

---

१ कामदेव । २ वेद । ३ सदैव । ४ वसंतऋतु इत्यादि । ५ कामदेव । ६ वेद मर्यादा । ७ डालें । ८ वृक्ष । ९ समुद्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मदन अन्ध व्याकुल सब लोका* निशिदिन नहिं अवलोकहिं कोका ॥
देव दनुज नर किन्नर व्याला * प्रेत पिशाच भूत वैताला ॥
इनकी दशा न कहेउँ बखानी * सदा कामके चेरे जानी ॥
सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी * तेपि कामवश भये वियोगी ॥
छंद–भये काम वश योगीश तापस पामरनकी को कहे ॥
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखतरहे ॥
अबला[1] विलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं ॥
दुइ दण्ड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं॥४॥
सोरठा–धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज[2] हरे ॥
जेहि राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महँ ॥ १४ ॥
उभय[3] घरी अस कौतुक भयऊ * जबलगि काम शंभुपहँ गयऊ ॥
शिवहि विलोकि ससंकेउमारू * भयउ यथाथित सब संसारू ॥
भये तुरत जगजीव सुखारे * जिमि मद उतरिगये मतवारे ॥
रुद्रहि देखि मदन भयमाना * दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु कहि नहिंजाई* मरणठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा * कुसुमित नवतरु राजविराजा ॥
वन उपवन वाटिका तडागा * परमसुभग सबदिशाविभागा ॥
जहँतहँ जनु उमगत अनुरागा * देखि मुयहु मन मनसिज जागा ॥
छंद–जागेउ मनोभव मुये मन वन सुभगता न परै कही ॥
शीतल सुगंध सुमन्द मारुत[4] मदन अनल सखासही ॥
विकसे सरनि[5] बहुकंज[6] गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा[7] ॥
कलहंस पिक शुक सरस रव करिगाननाचहिंअप्सरा॥ ५ ॥
दोहा–सकल कला कर कोटि विधि, हारेउ सेन समेत ॥

---

१ स्त्री । २ कामदेव । ३ दोघरी । ४ पवन । ५ फूले । ६ तालाब । ७ कमल । ८ भ्रमर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चली न अचल समाधि शिव, कोपेउ हृदय निकेत ॥ ९७ ॥
देखि रसाल विटप वरशाखा *तेहिपर चढेउ मदन मनमाखा ॥
सुमनचाप निज शर सन्धाने * अतिरिसताकि श्रवणलगि ताने ॥
छांड़े विषम विशिख उर लागे * छूटि समाधि शम्भु तब जागे ॥
भयउ ईश मन क्षोभ विशेषी * नयन उघारि सकल दिशि देखी ॥
सौरभ पल्लव मदन विलोका * भयउ कोप कम्पेउ त्रयलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा * चितवत काम भयउ जरिछारा ॥
हाहाकार भयउ जगभारी * डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥
समुझि काम सुख शोचहिं भोगी * भये अकंटक साधक योगी ॥

छंद–योगी अकंटक भये पतिगति सुनतिरति मूर्छितभई ॥
रोदति वदति बहुभाँति करुणा करति शंकर पहँ गई ॥
अति प्रेम करि विनती विविधविधि जोरिकर सन्मुखरही ॥
प्रभु आशुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही ॥

दोहा–अवते रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग ॥
विनु वपु व्यापिहि सबहि पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग ९८
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा * होइहि हरण महा महिभारा ॥
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा * वचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गमनी सुनि शंकर वानी * कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन समाचार जब पाये * ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये ॥
सब सुर विष्णु विरंचि समेता * गये जहाँ शिव कृपानिकेता ॥
पृथकपृथक तिन कीन्ह प्रशंसा * भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु वृषकेतू * कहहु अमर आयहु केहि हेतू ॥
कह विधि तुम प्रभु अन्तर्यामी * तदपि भक्तिभश विनवउँ स्वामी ॥

दोहा–सकल सुरनके हृदय अस, शंकर परम उछाह ॥

१ फूल बाण । २ संदेह-मोह । ३ देखा । ४ नेत्र । ५ प्रद्युम्न । ६ मिथ्या ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निज नयनन देखा चहहिं, नाथ तुम्हार विवाह ॥ ९९ ॥
यह उत्सव देखिय भरि लोचन * सो कछु करिय मदन मद[1]मोचन ॥
कामजारि रति कहँ वरदीन्हा * कृपासिन्धु यह अति भल कीन्हा ॥
सांसतिकरि पुनि करहिं पसाऊ[2] * नाथ प्रभुनकर सहज स्वभाऊ ॥
पार्वती तप कीन्ह अपारा * करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनि विधि[3] वचन समुझि प्रभुवानी * ऐसोइ होउ कहा सुखमानी ॥
तब देवन दुन्दुभी बजाई * बरषि सुमन जय जय सुरसाई ॥
अवसर जानि सप्तऋषि आये * तुरतहिंविधि गिरि भवन पठाये ॥
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी * बोले वचन मधुर छल सानी ॥
दोहा–कहा हमार न सुनेहु तब, नारद कर उपदेश ॥
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश ॥ १०० ॥
सुनि बोली मुसुकाय भवानी * उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी ॥
तुम्हरे जान काम अब जारा * अबलगि शम्भु रहे सविकारा ॥
हमरेजान सदा शिव योगी * अज[6] अनवद्य अकाम अभोगी ॥
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी * प्रीति समेत कर्म्म मन बानी ॥
तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा * करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा ॥
तुम जो कहा हर जारेउ मारा * सो अति बड़ अविवेक[7] तुम्हारा ॥
तात अनल[8]कर सहज स्वभाऊ * हिम[9] तेहि निकट जाइ नहिंकाऊ ॥
गये समीप सो अवशि नशाई * जस मन्मथ[10] महेशकी नाई ॥
दोहा–हिय हर्षे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास ॥
चले भवानिहि नाइ शिर, गये हिमाचल पास ॥ १०१ ॥
सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा * मदनदहनसुनि अति दुखपावा ॥
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना * सुनि हिमवन्त बहुतसुखमाना ॥

---

१ कामदेवके मदकेनाशकर्त्ता महादेव । २ अयोग्यताको दण्डदेकर । ३ कृपा । ४ ब्रह्माजी । ५ कामासक्त । ६ अजन्मा । ७ मूर्खता । ८ अग्नि । ९ पाला । १० काम ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हृदय विचारि शंभु प्रभुताई * सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई * वेगि वेद विधि लगन धराई ॥
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्ही * गहिपद विनय हिमाचल कीन्ही ॥
जाय विधिहि तिन दीन्ह सोपाती * बांचत प्रीति न हृदय समाती ॥
लगन बांचि अज सबहि सुनाई * हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन[1] वृष्टि नभ[2] बाजन बाजे * मंगल कलश दशहुँ दिशि साजे ॥

दोहा—लगे सँवारन सकल सुर[3], वाहन विविध विमान ॥
होहिं शकुन मंगल शुभग, करहिं अप्सरा गान ॥ १०२ ॥

शिवहि शंभुगण करहिं शृँगारा * जटा मुकुट अहिमौर[4] सँवारा ॥
कुंडल कंकण पहिरे व्याला * तनु विभूति पट केहरि[7] छाला ॥
शशि लिलाट सुन्दर शिर गंगा * नयन तीनि उपवीत[5] भुजंगा ॥
गरल[6] कंठ उर नर शिरमाला * अशिव भेष शिवधामकृपाला ॥
करत्रिशूल अरु डमरु विराजा * चले बसहँ चढि बाजहिं बाजा ॥
देखिशिवहि सुरतियमुसकाहीं * वर लायक दुलहिन जगनाहीं ॥
विष्णु विरंचि आदि सुरव्राता * चढि चढि बाहन चले बराता ॥
सुरसमाज सब भाँति अनूपा * नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥

दोहा—विष्णुकहा अस बिहँसि तब, बोलि सकल दिशिराज ॥
विलग विलगहोइ चलहु सब, निजनिजसहितसमाज॥१०३॥

वर अनुहार बरात न भाई * हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
विष्णु वचन सुनि सुर मुसकाने * निज निज सेनसहित विलगाने ॥
मनहींमन महेश मुसकाहीं * हरिके व्यंग्य वचन नाहिं जाहीं ॥
अतिप्रिय वचन सुनतहरिकेरे * भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासन सुनि सब आये* प्रभुपद जलज शीश तिन नाये ॥

---

१ पुष्प । २ आकाश । ३ देवता । ४ बावम्बर । ५ जनेऊ । ६ विष ।
७ बृषभ । ८ योग्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाना वाहन नाना भेखा * बिहँसे शिव समाज जिन देखा ॥
कोउमुखहीन विपुलमुखकाहू * विनुपद कर कोउ बहुपद बाहू ॥
विपुलनयन कोउ नयनविहीना * हृष्टपुष्ट कोउ अति तनुक्षीना ॥

छंद-तनुक्षीण कोउअतिपीन पावन कोउ अपावन गतिधरे ॥
भूषण कराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनु भरे ॥
खर[2] श्वान सुअर शृगाल मूषक भेष अगणितको गनै ॥
बहु जिनिस प्रेत पिशाच योगिनि भाँति वर्णत नहिं बनै ॥

सोरठा-नाचहिँ गावहिँ गीत, परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अति विपरीत, बोलहिँ वचन विचित्र विधि॥१५॥

जस दूलह तस बनी बराता * कौतुक विविध होहिं मग जाता ॥
यहां हिमाचल रचेउ वितान[3] * अतिविचित्र नहिं जाय बखाना ॥
शैलसकलजहँलगि जगमाहीं * लघुविशाल नहिं वरणि सिराहीं ॥
वन सागर सब नदी तलावा * हिमगिरि सबकहँ नेवत पठावा ॥
कामरूप सुन्दर तनुधारी * सहित समाज सहित वरनारी ॥
गे सब तुरत हिमाचल गेहा * गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराये * यथायोग्य जहँ तहँ सब छाये ॥
पुरशोभा अवलोकि सुहाई * लागै लघु विरंचि निपुणाई ॥

छंद-लघुलाग विधिकी निपुणता अवलोकि पुर शोभा सहीं ॥
वन बाग कूप तडाग सरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं ॥

दोहा-जगदम्बा जहँ अवतरी, सो पुर वरणि न जाइ ॥
ऋद्धि सिद्धि सम्पति सकल, नितनूतन अधिकाइ ॥१०४॥

१ रुधिर । २ गर्दभ । ३ विवाहमंडप । ४ करतूति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नगर निकट बरात जब आई * पुर शोभा खरभर अधिकाई ॥
करिबनाव साजि बाहनना ना * चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हरषे सुरसेन निहारी * हरिहि देखि अति भये सुखारी ॥
शिव समाज जब देखनलागे * बिडरि[1] चले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब ले जीव पराने ॥
गये भवन[2] पूंछहिं पितु माता * कहहिं वचन भयकंपित गाता[3] ॥
कहियकहा कहिजाइ न वाता * यमकैधार किधौं बरियाता ॥
वर बौराह बरद असवारा * व्याल कपाल विभूषण छारा ॥
छंद–तनु छार व्याल कपाल भूषण नगन जटिल भयंकरा ॥
सँग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट मुख रजनीचरा ॥
जो जियत रहिहि बरात देखत पुण्यबड़ तिनकर सही ॥
देखहिं सो उमा विवाह घर घर बात अस लरिकन कही ॥
दोहा–समुझि महेश समाज सब, जननि[4] जनक[5] मुसकाहिं ॥
बाल बुझाये विविध विधि, निडर होउ डर नाहिं ॥१०५॥
लै अगवान बरातहि आये * दिये सबहि जनवास सुहाये ॥
मयना[6] शुभ आरती सँवारी * संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह वर पानी * परिछन चलीं हरहि हरषानी ॥
विकट भेष जब रुद्रहि देखा * अबलन उर भय भयउविशेषा ॥
भागि भवन पैठीं अतित्रासा * गये महेश जहाँ जनवासा ॥
मयना हृदय भयो दुखभारी * लीन्ही बोलि गिरीशकुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी * श्याम सरोज नयन भरिवारी ॥
जेहिविधि तुमहिं रूपअसदीना * तेइँ जड वर बाउर कस कीन्हा ॥
छंद–कसकीन्ह वर बौराह विधि जेइँ तुमहिं सुन्दरतादई ॥
जोफल चहिय सुरतरुहि[7] सो बरबश बबूरहि लागई ॥

---

१ तितिरबितिर । २ गृह। ३ वदन। ४ माता। ५ पिता। ६ पार्वतीकीमाता। ७ कल्पवृक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम सहित गिरिते गिरौं पावक जरौं जलनिधि महँ परौं
घरजाउ अपयशहोउ जगजीवत विवाह नहौंकरौं ॥ १० ॥
दोहा–भई विकल अबला सकल, दुखित देखि गिरिनारि ॥
करि विलाप रोदति वदति, सुता सनेह सँभारि ॥ १०६ ॥
नारदकर मैं कहा विगारा * भवन मोर जिन बसत उजारा ॥
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा * बौरे बरहि लागि तपकीन्हा ॥
सांचेहु उनके मोह न माया * उदासीन धन धाम नजाया ॥
परघर घालक लाज न भीरा * बाँझ कि जान प्रसवकी पीरा ॥
जननिहिं विकल विलोकि भवानी * बोलीं युतविवेक मृदुवानी ॥
असविचारि शोचहु मतिमाता * सो नटर जो रचेउ विधाता ॥
कर्म्म लिखा जो बावरनाहू * तौं कत दोष लगाइय काहू ॥
तुमसनमिटहिं कि विधिके अंका * मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥
छंद–जनि लेहु मातु कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं ॥
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं
सुनि उमा वचन विनीत कोमल सकल अबला शोचहीं ॥
बहु भाँति विधिहि लगाइ दूषण नयन वारि विमोचहीं ॥
दोहा–तेहि अवसर नारद ऋषय, औ ऋषि सप्त समेत ॥
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गमने तुरत निकेत ॥ १०७ ॥
तब नारद सबही समुझावा * पूरबकथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु ममवानी * जगदम्बा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि * सदा शंभु अर्द्धगनिवासिनि ॥
जगसंभव पालन लयकारिणि * निज इच्छा लीला वपु धारिणि ॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाइ * नाम सती सुन्दर तनु पाई ॥

१ समुद्र । २ स्त्री । ३ मयना । ४ स्त्री । ५ ज्ञानसंयुक्त कोमलवाणी ६ पर्वतकेभीतरनिवासमें । ७ अजन्मा । ८ संसारकोउत्पन्नकरतीह पालतीहैं संहारकरतीहैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहउँ सती शंकरहि विवाहीं * कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एकबार आवत शिव संगा * देखेउ रघुकुल कमल पतंगा ॥
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा * भ्रम वश वेष सीयकर लीन्हा ॥
छंद–सिय वेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी ॥
हर विरह जाइ वहोरि पितुके यज्ञ योगानल जरी ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुण तप किया ॥
असजानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकरप्रिया ॥ १२ ॥
दोहा–सुनि नारदके वचन तब, सबकर मिटा विषाद ॥
क्षण महँ व्यापेउ सकल पुर, घर घर यह संवाद ॥१०८॥
तब मयना हिमवंत अनन्दे * पुनि पुनि पार्वती पद वन्दे ॥
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने * नगर लोग सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगल गाना * सजे सबहिं हाटकघट नाना ॥
भाँति अनेक भई ज्यवनारा * सूप शास्त्र जस कछु व्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ वखानी * बसहिं भवन जेहि मातुभवानी ॥
सादर बोले सकल बराती * विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥
विविध भांति बैठी जेवनारा * लगे परोसन निपुण सुआरा ॥
नारि वृन्द सुर जेंवत जानी * लगीं देन गारी मृदुवानी ॥
छंद–गारी मधुर स्वर देहिं सुन्दरि व्यंग्य वचन सुनावहीं ॥
भोजन करहिं सुर अतिबिलंब विनोद सुनि सुख पावहीं ॥
जेंवत जो बढ्यो अनन्द सो मुख कोटिहू न परै कह्यो ॥
अचवाइ दीन्हे पान गमने बास जहँ जाको रह्यो ॥ १३ ॥
दोहा–बहुरि मुनिन हिमवन्त कहँ, लग्न जनाई आइ ॥
समय विलोकि विवाहकर, पठये देव बुलाइ ॥ १०९ ॥

---

१ कठिन । २ दुःख । ३ व्यंग्य अर्थात् अपने पुरुष और देवताओंकी स्त्रियोंका संबन्ध ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलि सकल सुर[1] सादर लीन्हे * सबहिं यथोचित आसन दीन्हे ॥
वेदी वेद विधान सँवारी * सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अति दिव्य सुहावा * जाइ न वरणि विरंचि[2] बनावा ॥
बैठे शिव विप्रन शिरनाई * हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥
बहुरि मुनीशन उमा[3] बुलाई * करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहैं * वरणैं छवि अस जग कविकोहैं ॥
जगदम्बिका जानि भववामा * सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ॥
सुन्दरता मर्य्याद भवानी * जाइ न कोटिहु वदन[4] वखानी ॥
छंद–कोटिहु बदन नहिं बनै वर्णत जगजननिशोभामहा ॥
सकुचहिंकहत श्रुति शेष शारद मंदमति तुलसीकहा ॥
छबिखानि मातु भवानि गमनी मध्य मंडपशिवजहाँ ॥
अवलोकिसकहिं न सकुचि पतिपद कमलमनमधुकर[6]रतहाँ ॥
दोहा–मुनि अनुशासन गणपतिहिं, पूजे शंभु भवानि ॥
कोउ सुनि संशय करै जनि, सुर अनादि जिय जानि[10] ॥
जस विवाहकी विधि श्रुतिगाई * महा मुनिन सो सब करवाई ॥
गहि गिरीश कुश कन्या पानी * शिवहि समर्पी जानि भवानी ॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा * हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
वेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं * जय जय जय शंकर सुर करहीं ॥
बाजहिंबाजन विविधविधाना * सुमनवृष्टि नभभै विधिनाना ॥
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू * सकल भुवन[14] भरि रहा उछाहू ॥
दासी दास तुरंग[11] रथ नागा[12] * धेनु[13] बसन मणि वस्तुविभागा ॥
अन्न कनक भाजन भरियाना * दाइज दीन्ह नजाइ बखाना ॥
छंद–दाइजदियोबहुभाँति पुनि करजोरि हिमभूधर कह्यो ॥

---

१ देवता । २ ब्रह्मा । ३ पार्वती । ४ मुख । ५ जगत्माता श्रीपार्वती । ६ भ्रमर । ७ आज्ञा । ८ वेद । ९ चौदहौंलोक । १० आनंद । ११ घोडे । १२ हाथी । १३ गौ ।

CC-0. In Public Domain. Panini Archives, Varanasi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कादेउँ पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो ॥
शिव कृपासागर श्वशुरकर परितोषसबभाँतिनकियो ॥
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरण हियो ॥
दोहा—नाथ उमा ममप्राण सम, गृह किंकरी करेहु ॥
क्षमेहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न वरदेहु ॥ १११ ॥
बहुविधि शंभु सासु समुझाई * गमनी भवन चरण शिरनाई ॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही * लै उछंग सुन्दर शिखदीन्ही ॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा * नारि धर्म्म पतिदेव न दूजा ॥
वचन कहति भरिलोचनवारी * बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी ॥
कतविधिसिरजिनारि जगमाहीं * पराधीन स्वप्नेहु सुख नाहीं ॥
भै अति प्रेम विकल महतारी * धीरज कीन्ह कुसमय विचारी ॥
पुनिपुनिमिलति परतिगहिचरणा * परम प्रेम कछु जाइ न वरणा ॥
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी * जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥
छंद—जननिहिं बहुरि मिलि चलीं उचित अशीश सबकाहूदई ॥
फिरि फिरि विलोकति मातुतन तब सखीलै शिवपहँ गई ॥
याचक सकल सन्तोषि शंकर उमा सह भवनहिं चले ॥
सब अमर हर्षे सुमन बर्षि निशान नभ बाजहिं भले॥१६॥
दोहा—चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अति हेतु ॥
विविध भाँति परितोष करि, बिदा कीन्ह वृषकेतु ॥११२॥
तुरत भवन आयो गिरिराई * सकल शैल सर लिये बुलाई ॥
आदर दान विनय बहु माना * सब कहँ विदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं शम्भु कैलासहिआये * सुरसब निज निज धाँम सिधाये ॥
जगतमातु पितु शम्भुभवानी * तेहि शृंगार न कहौं बखानी ॥
करहिं विविधविधिभोगविलासा * गणनसमेत बसहिं कैलासा ॥

१ गोद । २ माता। ३ भिक्षुक । ४ देवता। ५ नगाडा । ६ समाधान । ७ गृह ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हर गिरिजा विहार नितनयऊ * इहिविधिविपुलकाल चलिगयऊ ॥
तब जन्मे षट्वदन[1] कुमारा * तारक असुर समर जिनमारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * षण्मुख जन्म कर्म जगजाना ॥
छंद–जगजान षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा ॥
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहि कहा ॥
यह उमा शम्भु विवाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं ॥
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥ १७ ॥
दोहा–चरित सिन्धु गिरिजा रमण, वेद न पावहिं पार ॥
वरणै तुलसीदास किमि, अति मतिमन्द गँवार ॥ ११३ ॥
शम्भु चरित सुनि सरस सुहावा * भरद्वाज मुनि अतिसुखपावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढी * नयन नीर रोमावलि ठाढी ॥
प्रेम विवश मुख आव न वानी * दशा देखि हरषे मुनिज्ञानी ॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा * तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा ॥
शिवपदकमल जिनहिं रति[2] नाहीं * रामहिं ते स्वप्नेहु न सुहाहीं ॥
बिनु छल विश्वनाथ पद नेहू * राम भक्त कर लक्षण येहू ॥
शिव सम को रघुपति व्रतधारी * बिनु अघ तजी सती असिनारी ॥
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढाई * को शिवसम रामहिं प्रियभाई ॥
दोहा–प्रथम कहेउँ मैं शिव चरित, बूझा मर्म्म[3] तुम्हार ॥
शुचि सेवक तुम रामके, रहित समस्त विकार ॥ ११४ ॥
मैं जीना तुम्हार गुण शीला * कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला ॥
सुनु मुनि आजु समागमतोरे * कहि नजाइ जससुख मनमोरे ॥
रामचरित अतिअमित मुनीशा * कहिनसकाहिंशतकोटिअहीशा ॥
तदपि यथाश्रुति कहौं वखानी * सुमिरि गिरापति प्रभुधनुपानी ॥
शारद दारु नारि सम स्वामी * रामसूत्र धर अन्तर्यामी ॥

१ कार्त्तिकेय । २ प्रीति । ३ भेद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेहिपर कृपा करहिं जनजानी * कविउर अजिर[1] नचावहिंवानी ॥
प्रणवउँ सोइ कृपालु रघुनाथा * वरणौं विशद[2] जासु गुणगाथा ॥
परमरम्य गिरिवर[3] कैलासू * सदा जहाँ शिव उमा निवासू ॥
दोहा–सिद्ध तपोधन योगि जन, सुर किन्नर मुनि वृन्द[5] ॥
बसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द ॥११५॥
हरि हर विमुख धर्मरत नाहीं * ते नर तहाँ न स्वप्नेहुँ जाहीं ॥
तेहि गिरिपर वट[6] विटप विशाला * नित नूतन[7] सुन्दर सब काला ॥
त्रिविध समीर सुशीतलछाया * शिव विश्राम विटप श्रुति गाया ॥
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ * तरुविलोकि उरअतिसुखभयऊ ॥
निज कर डासि नागरिपु[8]छाला * बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला ॥
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा * भुज प्रलम्ब परिधन[9] मुनिचीरा ॥
तरुण अरुण अंबुज[11]सम चरणा * नखद्युति[12]भक्तहृदयतम[13]हरणा ॥
भुजग[14] भूति भूषण त्रिपुरारी * आनन[15] शरद चन्द्र छबिहारी ॥
दोहा–जटा मुकुट सुरसरित शिर, लोचन नलिन विशाल ॥
नीलकंठलावण्य निधि, सोह बाल विधुभाल ॥ ११६ ॥
बैठे सोह कामरिपु कैसे * धरे शरीर शान्तरस जैसे ॥
पार्व्वती भल अवसर जानी * गईं शम्भु पहँ मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरअतिकीन्हा * वाम भाग आसन हर दीन्हा ॥
बैठीं शिव समीप हरषाई * पूरब जन्म कथा चित आई ॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी * विहँसि उमा बोलीं प्रियवानी ॥
कथा जो सकल लोकहितकारी * सोइ पूंछन चहै शैलकुमारी ॥
विश्वनाथ ममनाथ पुरारी * त्रिभुवन महिमा विदिततुम्हारी ॥
चर अरु अचर नाग नर देवा * सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥

---

१ हृदयरूपीआंगन । २ उज्ज्वल । ३ मनोहर । ४ पर्व्वत ।५ निकाय-झुंड । ६ वरगदका वृक्ष । ७ नितनया । ८ व्याघ्रांबर । ९ विशाल । १० पहिरे । ११ कमल । १२ प्रकाश । १३ अंधकार । १४ सर्प । १५ मुख ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव, सकल *कला +गुण धाम ॥
योग ज्ञान वैराग्य निधि, प्रणत कल्पतरु नाम ॥ ११७ ॥

* गाना, बजाना, नाचना, नाटककरना, चित्रादिलिखना, हीरेकोवेधना, चावल पुष्पादिका रंग निकालना, फूलविछाना, दांतवस्त्र और अंगोंकारंगना, मणियोंकी पृथ्वी रचना, शयन रचना, जलतरंग बजाना, जलताडनकरबजाना, चित्रउतारना, मालागूंथना, मुकुटआदिबनाना, नेपथ्यरचना, कानमेंभूषणधारण, पुष्पोंकीगन्धकातेलबनाना, भूषणयोजन, इन्द्रजाल, वहुरूपियापन रूपभरना, पटागदा काखेलना, रसोईबनाना, पीनेकेपदार्थशर्वतआदिबनाना, सीना वा लक्ष्यभेद करना, सूत्रक्रीडा, वीणाडमरूबजानाकहानीकहना, दूसरेकीबोलीबनाकरबोलना, छलकरना, पुस्तकबांचना, नाटकआख्यायिकादेखना, काव्य चातुरी समस्यापूर्ति, निवारडोरी आदिसेबुनना, तर्ककर्म, बढईकाकार्य, थवईकाकार्य, रत्नपरीक्षा, स्वर्णकारक कार्यजानना, मणियोंकेरूपकाज्ञान, वृक्षोंकीचिकित्सा, मेषकुक्कटादिककायुद्धकाराना, तोतेमैनाकाप्रलाप, वैरीकातिरस्कार, केशधोना, मुट्ठीमेंकीवस्तुवतादेना, म्लेच्छोंकीभाषा और यंत्रका जान्ना, देशभाषाकाज्ञान, फूलोंके वाहनादिबनाना, कठपुतरी नचाना, धारण और वाणीमें प्रवीणता, दूसरेकेचित्तकीवातजान्नी वा मनमेंका, व्य निर्माण करना, अभिधानकोष जानना, छंदकाज्ञान, अनेकउपायोंसेकार्यकी सिद्धिकरना, छलकेयोग, वस्त्रछिपाना, द्यूतविधान, आकर्षणक्रीडा, बालकोंकेखेलजान्ना, विनयसेराजादिकोंकोप्रसन्नकरना, विजयकाविचार वा देवताओंको वशकरना, पुराणइतिहासकाज्ञानहोना यह ६४ चौंसठ कलाहैं.

+गुण यहहैं सत्यबोलना, शुद्धरहना, परायादुःखसहना, क्रोध जीतना, याचककोदानदेना, संतुष्ट रहना, कुटिलताकात्याग, मनमेंनिश्चलता, वाह्यान्द्रियाकोंवशीभूतकरना, स्वधर्ममेंआरूढ, शत्रुमित्रपरसमानदृष्टि, अपराधसहना, लाभमें उदासीनता, सतशास्त्रकाविचार, परमेश्वरकोमानना, तृष्णाकात्याग, आस्तिकता, संग्राममें उत्साह, प्रभावरखना, चतुरता, कर्तव्यका स्मरण, स्वाधीनता, क्रियामें निपुणता, सुन्दरता धैर्यता, कोमलचित्तरखना, बुद्धिका प्रकाश, विजयता, सुंदरस्वभावहोना, सहन शक्ति, पराक्रम, देहमेंबलहोना, सबभोगभोगना, गंभीररहना, चंचलताकात्याग श्रद्धा, यशका कार्यकरना, वडाईकेकार्य, अभिमानकात्याग, यह ३९ गुणहैं.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो मोपर प्रसन्न सुखराशी * जानियसत्य मोहिं निजदासी ॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना * कहि रघुनाथ कथा विधि नाना ॥
जासु भवन सुरतरु तर होई * सह कि दरिद्र जनित दुख सोई ॥
शशिभूषण अस हृदय विचारी * हरहुनाथ मममति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथवादी * कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी ॥
शेष शारदा वेद पुराना * सकल करहिं रघुपति गुणगाना ॥
तुम पुनि राम नाम दिन राती * सादर जपहु अनंग अराती ॥
राम सो अवध नृपति सुतसोई * की अज अगुणअलखगतिकोई ॥
दोहा—जो नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारि विरह मति भोरि ॥
देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमित बुद्धि अति मोरि॥११८॥
जो अनीह व्यापक विभु कोऊ * कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ ॥
अज्ञ जानि रिसि जानि उरधरहू * जेहिविधि मोह मिटै सोइकरहू ॥
मैं वन दीख राम प्रभुताई * अतिभयविकल न तुमहिंसुनाई ॥
तदपि मलिनमन बोध न आवा * सो फल भलीभाँति मैं पावा ॥
अजहूं कछु संशय मन मोरे * करहु कृपा विनवउँ करजोरे ॥
प्रभु तब मोहिं बहु भाँति प्रबोधा * नाथ सो समुझि करहुजनिक्रोधा ॥
तब कर अस विमोह मोहिं नाहीं * राम कथा पर रुचि मन माहीं ॥
कहहु पुनीत रामगुण गाथा * भुजगराज भूषण सुरनाथा ॥
दोहा—बन्दौं पदधरि धरणि शिर, विनय करौं करजोरि ॥
वर्णहु रघुवर विशद यश, श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥११९॥
यदपि योषिताअन अधिकारी * दासी मन क्रम वचन तुम्हारी ॥
गूढ़ौ तत्त्व न साधु दुरावहिं * आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥
अति आरत पूंछौं सुरराया * रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥
प्रथम सो कारण कहहु विचारी * निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी ॥

६ अज्ञान । ७ मूर्ख । ८ दयाकर, प्रीति पूर्वक । ३ चेष्टारहित । ४ [illegible]नी। ५ शेषजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा * बाल चरित पुनि कहहु उदारा ॥
कहहु यथा जानकी विवाहा * राज्य तजा सो दूषण काहा ॥
बन बसि कीन्हेउ चरित अपारा * कहहु नाथ जिमि रावणमारा ॥
राज्य बैठि कीन्ही बहु लीला * सकल कहहु शंकर सुखशीला ॥
दोहा–बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्ह जो अचरज राम ॥
प्रजा सहित रघुवंश मणि, किमि गमने निज धाम ॥ १२० ॥
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्ववखानी * जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा * पुनि सब वर्णहु सहित विभागा ॥
औरौ राम रहस्य अनेका * कहहु नाथ अतिविमलविवेका ॥
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई * सोउ दयालु राखहु जनि गोई ॥
तुम त्रिभुवन गुरु वेद वखाना * आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमाके सहज सुहाये * छलविहीनमुनि शिवमन भाये ॥
हर हिय रामचरित सब आये * प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा * परमानन्द अमित सुखपावा ॥
दोहा–मग्न ध्यान रस दण्ड युग, पुनि मन बाहर कीन्ह ॥
[illegible] रघुपति चरित महेश तब, हर्षित वरणै लीन्ह ॥ १२१ ॥
[illegible]ठौ सत्य जाहि विनुजाने * जिमि भुजंग विनु रजु पहिंचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई * जागे यथा स्वप्न भ्रम जाई ॥
वंदौं बालरूप सोइ रामू * सब विधि सुलभ जपत जेहि नामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी * द्रवौ सो दशरथ अजिर विहारी ॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी * हर्षि सुधा सम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी * तुम समान नाहिं कोउ उपकारी ॥
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा * सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम रघुवीर चरणअनुरागी * कीन्हेउ प्रश्न जगत हितलागी ॥

१ रहस्य [illegible] श्रीरामचन्द्रजीको स्वभाव, [illegible], यह ३९ गुणहैं.
[illegible] गातलीलाहैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–रामकृपाते पार्व्वति, स्वप्नेहु तव मन माहिं ॥
शोक मोह संदेह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ॥ १२२ ॥
तदपि अशंका कीन्हेउ सोई * कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन हरिकथा सुनीनहिं काना * श्रवणरन्ध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन सन्त दरश नहिं देखा * लोचन मोर पंख कर लेखा ॥
ते शिर कटु तूमर सम तूला * जे न नमत हरि गुरु पद मूला ॥
जिनहरिभक्तिहृदय नहिं आनी * जीवत शव समान ते प्रानी ॥
जे नहिं करहिं राम गुण गाना * जीह सु दादुर जीह समाना ॥
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती * सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम करिलीला * सुरहित दनुज विमोहन शीला ॥
दोहा–रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि ॥
सन्त सभा सुर लोक सम, को न सुने असजानि ॥ १२३ ॥
रामकथा सुन्दर करतारी * संशय विहँगे उडावनहारी ॥
रामकथा कलि विटपकुठारी * सादर सुनु गिरिराज कुमारी ॥
रामनाम गुण चरित सुहाये * जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये ॥
यथा अनन्त राम भगवाना * तथा कथा कीरति गुणनाना ॥
तदपि यथाश्रुति जसमतिमोरी * कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई * सुखदसन्त सम्मत मुहिं भाई ॥
एक बात नहिं मोहिं सुहानी * यदपि मोहवश कहेउ भवानी ॥
तुम जो कहा राम कोउ आना * जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनिध्याना ॥
दोहा–कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जो मोह पिशाच ॥
पाषण्डी हरिपद विमुख, जानहिं झूंठ न सांच ॥ १२४ ॥
अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी * काई विषय मुकुर मनलागी ॥

---

१ कानोंकेछेद । २ मृतक । ३ जिह्वा । ४ मेढक । ५ संशयरूपीपक्षी
६ अज्ञान । ७ मूर्ख । ८ दर्पण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म्पट कपटी कुटिल विशेषी * स्वप्नेहु सन्त सभा ॥
पुनि इहिं ते वेद असम्मत वानी * जिनहिं न सूझ लाभनहिंहानी ॥
कहहिं मलिन अरु नयन विहीना * रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
बनानके अगुण न सगुण विवेका * जल्पहिं कल्पित वचन अनेका ॥
राज माया वश जगत भ्रमाहीं * तिनहिं कहत कछु अघटितनाहीं ॥
दोतुल भूत विवश मतवारे * तेनहिं बोलहिं वचन सँभारे ॥
नकृत महा मोह मदपाना * तिनकरकहाकरिय नहिं काना ॥

पुनि प्रअसनिज हृदय विचारि, तजि संशय भज रामपद ॥
भक्ति सुनु गिरिराज कुमारि, भ्रमतमरविकरवचनमम॥ १६ ॥
औरौणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा * गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा ॥
जो ुण अरूप अलख अज जोई * भक्त प्रेम वश सगुण सो होई ॥
तुम गुण रहित सगुण सो कैसे * जल हिम उपल विलग नहिं जैसे ॥
प्रश सुनाम भ्रम तिमिर पतंगा * तिहि किमि कहिय विमोह प्रसंगा ॥
हर सच्चिदानन्द दिनेशा * नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा ॥
श्री प्रकाश रूप भगवाना * नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
हा- विषाद ज्ञान अज्ञाना * जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
र ह्म व्यापक जगजाना * परमानन्द परेश पुराना ॥
ठौ
जोहा-पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रगट परावर नाथ ॥
वंदौकुल मणि मम स्वामि सोइ, कहि शिव नायउ माथ ॥ १२५॥

मंगल्भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी * प्रभु पर मोह धरहिं जडप्रानी ॥
करिआ गगन घन पटल निहारी * झम्पेउ भानु कहैं कुविचारी ॥
चितवतलोचन अंगुलि लाये * प्रकट युगल शशि तेहिके भाये ॥

---

१ परधन परदारामें लीन । २ कहतेहैं आन करतेहैं आन । ३ विशेषकर केसवप्रकारतेंटेढ़ेहैं । ४ निर्गुणब्रह्मका विचार । ५ किन्तुभक्तजननकेहेतुगुणनको ग्रहणकरिकै विग्रहवानहोतहै ताको सगुणकही ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-रामकृपा विषयिक अस मोहा * नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
ये करणे सुर जीव समेता * सकल एकते एक सचेता ॥
तत्कर परम प्रकाशक जोई * राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगतप्रकाश्य प्रकाशक रामू * मायाधीश ज्ञान गुण धामू ॥
नयसु सत्यताते जड माया * भास सत्य इव मोह सहाया ॥
दोहा-रजत सीप महँ भास जिमि, यथा भानुकर वारि ॥
यदपि मृषा तिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकै कोउ टारि १२६
इहिविधि जग हरिआश्रित रहई * यदपि असत्य देत दुख अहई ॥
ज्यों स्वप्ने शिर काटै कोई * बिनुजागे दुख दूरि नहोई ॥
जासु कृपा असभ्रम मिटिजाई * गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा * मति अनुमान निगम असगावा ॥
पदविनु चलै सुनै बिनु काना * कर बिनु कर्म करै विधिनाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी * बिनु वाणी वक्ता बड योगी ॥
तनु बिनु परश नयन विनु देखा * ग्रहैघ्राण बिनु वास अशेषा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी * महिमा जासु जाय नहिं वरणी ॥
दोहा-जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान ॥
सोइ दशरथ सुत भक्तहित, कोशलपति भगवान ॥ १२७ ॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी * जासु नाम बल करौं विशोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी * रघुबर सब उर अन्तर्यामी ॥
विवशहु जासु नाम नर कहहीं * जन्म अनेक संचित अघ दहहीं ॥
सादर सुमिरण जो नर करहीं * भववारिधि गोपद इव तरहीं ॥
रामसो परमातमा भवानी * तहँ भ्रम अतिअविहित तव वानी ॥

---

१ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, ये पांच ज्ञानेंद्रियकेविषयहैं । २ करणकही इंद्रिय श्रवण, त्वक्, नयन, जीभ, नासिका ये ज्ञानइन्द्रिय, पग, गुदा, मुख, हाथ लिंग ये कर्मेन्द्रिय । ३ संसारसागर । ४ अशास्त्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस संशय आनत उर माहीं * ज्ञान विराग सकल गुण जाहीं ॥
सुनि शिवके भ्रम भंजन वचना * मिटिगइ सब कुतर्ककी रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती * दारुण असम्भावना बीती ॥
दोहा–पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि ॥
बोली गिरिजा वचन वर, मनहुँ प्रेमरस सानि ॥ १२८ ॥
शशिकरसम सुनि गिरा तुम्हारी * मिटा मोह शरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ * रामस्वरूप जानि मोहिं परेऊ ॥
नाथ कृपा अब गयउ विषादा * सुखी भइउँ प्रभु चरण प्रसादा ॥
अब मोहिं आपनि किंकरिजानी * यदपि सहजजड़ नारि अयानी ॥
प्रथम जो मैं पूँछा सो कहहू * जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
रामब्रह्म चिन्मय अविनाशी * सर्वरहित सब उर पुर वासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू * मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू ॥
उमा वचन सुनि परम विनीता * रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥
दोहा–हिय हर्षे कामारि तब, शंकर सहज सुजान ॥
बहुविधि उमहिं प्रशंसि पुनि, बोले कृपानिधान ॥ १२९॥
सो०–सुन शुभ कथा भवानि, रामचरित मानस विमल ॥
कहा भुशुण्ड बखानि, सुना विहग नायक गरुड ॥ १७ ॥
सोइ सम्बाद उदार, जेहि विधिभा आगे कहव ॥
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥ १८ ॥
हरिगुण नाम अपार, कथा रूप अगणित अमित ॥
मैं निजमति अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु ॥ १९ ॥
सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये * विपुल विशेद निगमागमें गाये ॥

---

१ जो अपरपदार्थमें अपरपदार्थकी भावना करना । २ शोच । ३ सच्चिदानन्द । ४ निर्मल । ५ वेद पुराण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरि अवतार हेतु जेहि होई * इदमित्थं[1] कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क बुद्धि मन बानी * मत हमार अस सुनहु भवानी ॥
तदपि सन्त मुनि वेद पुराना * जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना ॥
तस मैं सुमुखि सुनावौं तोहीं * समुझि परै जस कारण मोहीं ॥
जब जब होइ धर्मकी हानी * बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइनहिं वरणी * सीदहिं[2] विप्र[3] धेनु[4] सुर[5] धरणी[6] ॥
तब तब प्रभु धरि विविधशरीरा * हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥
दोहा–असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निज श्रुति सेतु ॥
जगविस्तारहिं विशद यश, राम जन्म कर हेतु ॥ १३० ॥
सोइ यश गाइ भक्त भवतरहीं * कृपासिन्धु जन हित तनु धरहीं ॥
राम जन्मके हेतुं[7] अनेका * परम विचित्र[8] एकते एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी * सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरिके प्रिय दोऊ * जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥
विप्र शापते दोनों भाई * तामस असुर देह तिन पाई ॥
कनककशिपुअरुहाटकलोचन * जगतविदित सुरपतिमदमोचन[9] ॥
विजयी समर[10] वीर विख्याता * धरि वराह वपु[11] एक निपाता[12] ॥
होइ नरहरि वपु दूसर मारा * जन प्रह्लाद सुयश विस्तारा ॥
दोहा–भये निशाचर जाइते, महाबीर बलवान ॥
कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुर विजयी जगजान ॥ १३१ ॥
मुक्त न भयउ हते भगवाना * तीन जन्म द्विजवचन प्रमाना ॥
एकवार तिनके हित लागी * धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यप अदिति तहाँ पितु माता * दशरथ कौशल्या विख्याता ॥

---

१ इदमित्थं कही कि जो इतनेही कारण प्रभुके अवतारहैं सो नहीं कहाजाइहै क्योंकि अनेक कारणहैं । २ पीडादेहैं । ३ ब्राह्मण । ४ गौ । ५ देवता ६ भूमि । ७ कारण । ८ सुंदर । ९ इन्द्र । १० युद्ध । ११ शरीर । १२ नाशकिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक कल्प यहि विधि अवतारा * चरित पवित्र किये संसारा ॥
एककल्प सुर देखि दुखारे * समर जलन्धर सन सब हारे ॥
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिप नारी * तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥
दोहा—छलकर टारेउ तासु ब्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥
जब तेहँ जानेउ मर्म सब, शाप कोपकर दीन्ह ॥ १३२ ॥
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना * कौतुकनिधि कृपालु भगवाना ॥
तहां जलंधर रावण भयऊ * रणहति राम परमपद दयऊ ॥
एकजन्म कर कारण एहा * जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी * मुनि सुनु वरणी कविन घनेरी ॥
नारद शाप दीन्ह यक बारा * कल्प एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकितभई सुनि बानी * नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी ॥
कारण कौन शाप मुनि दीन्हा * का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी * मुनि मन मोह सो अचरज भारी ॥
दोहा—बोले विहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ नकोइ ॥
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि क्षण होइ॥ १३३॥
सो०—कहौं राम गुण गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ॥
भव भंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मोह मद ॥ २० ॥
हिमगिरिगुहा एक अतिपावनि * बह समीप सुरसरित सुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा * देखि देवऋषि मन अतिभावा ॥
निरखि शैल सरि विपिन विभागा * भयउ रमापतिपद अनुरागा ॥
सुमिरतहरिहि श्वासगति बांधी * सहज विमलमन लागि समाधी ॥
मुनि गति देखि सुरेश[1] डराना * कामहि बोलि कीन्ह सन्माना ॥
सहित सहाय जाहु ममहेतू * चलेउ हर्षि हिय जलचरकेतू[2] ॥

१ इन्द्र । २ कामदेव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनासीर मन महँ अतित्रासा * चहत देवऋषि ममपुर बासा ॥
जेकामी लोलुप जगमाहीं * कुटिल काक इव सबहिं डराहीं ॥

दोहा—सूख हाड़ ले भाग शठ, श्वान निरखि मृगराज ॥
छीनि लेइ जनि जान जड़, तिमि सुरपतिहि न लाज ॥१३४॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ * निज माया वसन्त निर्मयऊ ॥
कुसुमित विविध विटप बहुरंगा * कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
चली सुहावन त्रिविध बयारी * काम कृशानु बढ़ावन हारी ॥
रम्भादिक सुरनारि नवीना * सकल असमशरकलाप्रबीना ॥
करहिं गान बहु तानतरंगा * बहुविधि क्रीडहिं पाणि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना * कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधिनाना ॥
कामकलाकछु मुनिहि नव्यापी * निजभय डरेउ मनोभव पापी ॥
सीमकिचापि सकै कोउ तासू * बड़ रखवार रमापति जासू ॥

दोहा—सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन ॥
गहेसि जाइ मुनिवर चरण, कहि सुठि आरतवैन ॥१३५॥

भयउ न नारदमन कछु रोषा * कहि प्रियवचन काम परितोषा ॥
नाइचरण शिर आयसु पाई * गयउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुशीलता आपनिकरणी * सुरपतिसभा जाइ सब वरणी ॥
सुनि सबके मन अचरज आवा * मुनिहिं प्रशंसि हरिहि शिरनावा ॥
तब नारद गमने शिवपाहीं * जीतिकाम अहमिति मनमाहीं ॥
मारचरित शंकरहि सुनावा * अतिप्रिय जानि महेश सिखावा ॥
बार बार विनवउँ मुनितोहीं * जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं ॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ * चलेहु प्रसंग दुरायउ तबहूँ ॥

---

१ इन्द्र । २ नारदमुनि । ३ झूंठे-लालची । ४ कुत्ता । ५ सिंह । ६ प्रफुल्लित । ७ वृक्ष । ८ भ्रमर । ९ शीतल-मंद-सुगंध । १० कामाग्नि । ११ काम । १२ दुःखित । १३ आज्ञा । १४ गर्व ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा –शम्भु दीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहि सुहान ॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान ॥ १३६ ॥

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई * करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
शम्भुवचन मुनि मनहिं न भाये * तब विरंचिके लोक सिधाये ॥
" तहँपुनिकछुकदिवसमुनिराया * रहे हृदय अहमिति अधिकाया" ॥
एकबार करतल वर वीणा * गावत हरिगुण गान प्रवीणा ॥
क्षीरसिंधु गमने मुनिनाथा * जहँबसि श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥
हर्षि मिले उठि रमानिकेता * बैठे आसन ऋषिहि समेता ॥
बोले बिहँसि चराचर राया * बहुत दिनन कीन्ही मुनि दाया ॥
काम चरित नारद सब भाषे * यद्यपि प्रथम बरजि शिव राखे ॥
अति प्रचंड रघुपतिकी माया * जेहि नमोह असको जगजाया ॥

दोहा–रूख वदन करि वचन मृदु, बोले श्रीभगवान ॥
तुम्हरे सुमिरणते मिटाहिं, मोह मार मद मान ॥ १३७ ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके * ज्ञान विराग हृदय नाहिं जाके ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रत रति मति धीरा * तुमहिं कि करै मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना * कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
करुणानिधिमन दीख विचारी * उरअंकुरेउ गर्व तरु भारी ॥
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी * प्रण हमार सेवक हितकारी ॥
मुनिकरहित मम कौतुक होई * अवशि उपाय करब मैं सोई ॥
तब नारद हरिपद शिरनाई * चले हृदय अहँमिति अधिकाई ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी * सुनहु कठिन करणी तेहि केरी ॥

दोहा– विरचेउ मगमहँ नगर तेहि, शतयोजन विस्तार ॥
श्रीनिवासपुरते अधिक, रचना विविध प्रकार ॥ १३८ ॥

---

१ ब्रह्मलोक । २ तीक्ष्ण । ३ दयासागर । ४ अभिमान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बसहिं नगर सुंदर नर नारी * जनु बहु मनसिज रति तनु धारी ॥
तेहिपुर बसै शीलनिधि राजा * अगणित हय गज सेन समाजा ॥
शतसुरेशसम विभव विलासा * रूप तेज बल नीति निवासा ॥
विश्वमोहिनी तासु कुमारी * श्रीविमोह जेहि रूप निहारी ॥
सो हरिमाया सब गुणखानी * शोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयम्बर सो नृपबाला * आये तहँ अगणित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ * पुरबासिन सन बूझत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूप गृह आये * करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥
दोहा–आनि देखाई नारदहि, भूपति राजकुमारि ॥
कहहु नाथ गुण दोष सब, इहिकर हृदय विचारि ॥१३९॥

देखिरूप मुनि विरति बिसारी * बडी बार लगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु विलोकि भुलाने * हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो इहि बरै अमर सो होई * समरभूमि तेहि जीत नकोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही * वरै शीलनिधि कन्या जाही ॥
लक्षण सब विचारि उर राखे * कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं * नारद चले शोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ यतन विचारी * जेहि प्रकार मोहिं बरै कुमारी ॥
जप तप कछु नहोइ यहिकाला * हेविधिमिलै कवन विधि बाला ॥
दोहा–इहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूप विशाल ॥
जो विलोकि रीझै कुँवरि, तौ मेलै जयमाल ॥ १४० ॥

हरिसन मांगौं सुन्दरताई * होइहि जात गहेरु अतिभाई ॥
मोरे हित हरि सम नाहिं कोऊ * इहि अवसर सहाय सो होऊ ॥
बहुविधि विनयकीन्ह तेहिकाला * प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥

१ कामदेव । २ कामदेवकी स्त्री । ३ अश्व । ४ सौइन्द्र । ५ ऐश्वर्य । ६ मृत्युतेरहित । ७ संग्राममें । ८ स्थावर-जंगम । ९ विलम्ब । १० कृपाके स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभु विलोकि मुनिनयनजुडाने * होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहि कथा सुनाई * करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ॥
आपन रूप देव प्रभु मोही * आनभांति नाहिं पावहुँ ओही ॥
जेहिविधि नाथ होइ हितमोरा * करौ सो वेगि दास मैं तोरा ॥
निज मायाबल देखि विशाला * हिय हँसि बोले दीनदयाला ॥

दोहा–जेहि विधि होइहि परमाहित, नारद सुनहु तुम्हार ॥
सोइ हम करब न आन कछु, वचन न मृषा हमार॥ १४१॥

कुपथ मांगु रुजे व्याकुल रोगी * वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी ॥
यहिविधिहित तुम्हारमैं ठयऊ * कहिअस अन्तरहित प्रभु भयऊ ॥
माया विवश भये मुनि मूढा * समुझी नाहिं हरि गिरा निगूढा ॥
गमने तुरत तहाँ ऋषिराई * जहाँ स्वयम्वर भूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा * बहु बनाय करि सहित समाजा ॥
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे * मोहिं तजि आन बरिहि नहिं भोरे ॥
मुनिहित कारण कृपानिधाना * दीन्ह कुरूप नजाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा * नारद जानि सबन्हि शिरनावा ॥

दोहा–रहे तहाँ दुइ रुद्रगण, ते जानहिं सब भेउ ॥
विप्र भेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ ॥ १४२ ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई * हृदय रूप अहमिति अधिकाई ॥
तहँ बैठे महेश गण दोऊ * विप्रभेष गति लखै न कोऊ ॥
करहिं कूट नारदहि सुनाई * नीकि दीन्ह हरि सुन्दरताई ॥
रीझिहि राजकुँवरि छबि देखी * इनहिं बरिहि हरि जानि विशेषी ॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराये * हँसहिं शंभुगण अति सचुपाये॥
यदपिसुनहिं मुनि अटपटि बानी * समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी ॥
काहु नलखा सो चरित विशेषी * सो स्वरूप नृप कन्या देखी ॥

१ आंखें । २ हृदय । ३ असत्य । ४ रोग । ५ वाणी ।

In Public Domain, Chanhbai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मर्कट वदन भयंकर देही * देखत हृदय क्रोधभा तेही ॥
दोहा–सखी संग लै कुँवरि तब, चलि जनु राज मराल[2] ॥
देखत फिरै महीप[3] सब, कर सरोज जयमाल ॥ १४३ ॥
जहि दिशि बैठे नारद फूली * सोदिशि तेहि न विलोकेउ भूली ॥
पुनिपुनिमुनिउसकहिंअकुलाहीं * देखि दशा हरगण मुसुकाहीं ॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला * कुँवरि हर्षि मेली जयमाला ॥
दुलहिनि लैगये लक्ष्मिनिवासा * नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥
मुनिअतिविकल मोहमति नाठी * मणि गिरिगई छूटि जनु गांठी ॥
तब हरगण बोले मुसुकाई * निजमुख मुकुर[6] विलोकहु जाई ॥
असकहि दोउ भागे भय भारी * वदन दीख मुनि वाँरि निहारी ॥
भेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा * तिनहिं शाप दीन्हा अति गाढ़ा ॥
दोहा–होहु निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोउ ॥
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥ १४४ ॥
पुनि जल दीख रूप निज पावा * तदपि हृदय सन्तोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं * सर्पदि चले कमलापतिपाहीं ॥
देहौं शाप कि मरिहौं जाई * जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी * संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर वचन सुरसांई * मुनिकहँ चले विकलकी नाईं ॥
सुनतवचन उपजा अतिक्रोधा * मायावश न रहा मनबोधा ॥
परसम्पदा सकहु नहिं देखी * तुम्हरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिन्धु रुद्रहि बौरायहु * सुरन प्रेरि विष पान करायहु ॥
दोहा–असुरसुरा विष शंकरहि, आपु रमा मणि चारु ॥
स्वारथ साधक कुटिल तुम, सदा कपट व्यवहारु ॥ १४५ ॥

---

१ बन्दरके सरीखा मुख । २ हंस । ३ राजा जो स्वयंवरमें आयेथे । ४ करकमल । ५ मोहनेमतिहरली । ६ दर्पण । ७ पानीमें । ८ शीघ्र । ९ वारुणी–मदिरा । १० पवित्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परम स्वतंत्र न शिरपर कोई * भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहिं मन्द मन्दहिं भल करहू * विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू ॥
डहकि डहकि परके सब काहू * अति अशंक मन सदा उछाहू ॥
कर्म्म शुभाशुभ तुमहिंनबाधा * अबलगि तुमहिं न काहू साधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
बंचेहु मोहिं जवन धरि देहा * सोइ तनु धरहु शाप मम येहा ॥
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी * करिहहिं कीश सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी * नारि विरह तुम होहु दुखारी ॥

दोहा—शाप शीश धरि हर्षि हिय, प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥
निज मायाकी प्रबलता, कर्षि कृपानिधिलीन्ह ॥ १४६ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी * नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
तब मुनि अतिसभीतहरिचरणा * गहे पाहि प्रणतारति हरणा ॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला * मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे * कह मुनि पाप मिटहिं किमिमेरे ॥
जपहु जाइ शंकर शतनामा * होइहि हृदय तुरत विश्रामा ॥
कोउ नहिं शिवसमान प्रियमोरे * असप्रतीति त्यागेहु जनि भोरे ॥
जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी * सो न पाव मुनि भक्ति हमारी ॥
अस उरधरि महि विचरहुजाई * अब न तुमहिं माया नियराई ॥

दोहा—बहु विधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतर्द्धान ॥
सत्यलोक नारद चले, करत राम गुण गान ॥ १४७ ॥

हरगण मुनिहि जात पथ देखी * विगत मोह मन हर्ष विशेषी ॥
अति सभीत नारद पहँ आये * गहि पद आरत वचन सुनाये ॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया * बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥

---

१ झांटछांट । २ आनन्द । ३ ठगेहु । ४ सकल । ५ बंदर । ६ निरादर ७ महादेव ८ पृथ्वी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाप अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला ॥
निशिचर जाइ होउ तुम दोऊ * वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
भुजबलविश्व जितबतुमजाहिया * धरिहैं विष्णु मनुजतनु तहिया ॥
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा * होइहहु मुक्त न पुनि संसारा ॥
चले युगल मुनि पद शिरनाई * भये निशाचर कालहि पाई ॥

दोहा—एककल्प इहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार ॥
सुररंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन भूभार ॥ १४८ ॥

इहि विधि जन्म कर्म हरिकेरे * सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं * चारुचरित नानाविधि करहीं ॥
तब तब कथा मुनीशन गाई * परम विचित्र प्रबन्ध बनाई ॥
विविधप्रसंग अनूप बखाने * करहिं न सुनि आश्चर्य सयाने ॥
हरिअनंत हरिकथा अनंता * कहहिंसुनहिंबहुविधिश्रुतिसन्ता ॥
रामचंद्रके चरित सुहाये * कल्पकोटि लगि जाहिं न गाये ॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी * हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु कौतुकी प्रणतहितकारी * सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥

सो०—सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ॥
अस विचारि मन माहिं, भजिय महा मायापतिहि ॥ २१ ॥

अपर हेतु सुनु शैलकुमारी * कहौं विचित्रकथा विस्तारी ॥
जेहि कारण अज अगुण अनूपा * ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा ॥
जो प्रभु विपिन फिरत हम देखा * बन्धु समेत किये मुनि वेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी * सती शरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुँ न छाया मिटत तुम्हारी * तासुचरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा * सो सब कहिहौं मति अनुसारा ॥

---

१ राक्षस । २ संपदा—ऐश्वर्य । ३ बहुत। ४ दानो । ५ देवताओं को आनंददाता ६ पृथ्वीकाबोझा । ७ इतिहास-कथा । ८ दीन । ९ अरण्य ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरद्वाज सुनि शंकरवानी * सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥
लगे बहुरि बरणे वृषकेतू * सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दोहा–सो मैं तुमसन कहौं सब, सुनु मुनीश मन लाइ ॥
राम कथा कलिमल हरणि, मंगल करणि सुहाइ॥ १४९ ॥

स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा * जिनते भै नर सृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्म्म आचरण नीका * अजहुँ गाव श्रुति[2] जिनकी लीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत जासू * ध्रुव हरिभक्त भये सुत तासू ॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत जाही * वेद पुराण प्रशंसत ताही ॥
देवहुती पुनि तासु कुमारी * जो मुनिकर्दमकी प्रियनारी ॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला * जठर[3]धरेउ जेहि कपिलकृपाला ॥
सांख्यशास्त्र जिन प्रगट बखाना * तत्त्वविचार निपुण भगवाना ॥
तेहि मनुराज कीन्ह बहुकाला * प्रभुआयसु बहुविधि प्रतिपाला ॥

सो०–होइ न विषय विराग, भवन बसत भा चौथपन ॥
हृदय बहुत दुख लाग, जन्म गयउ हरिभक्ति बिन॥ २२ ॥

बरवश राज्य सुतहि तब दीन्हा * नारि समेत गमन वन कीन्हा ॥
तीरथवर नैमिष विख्याता * अति पुनीत साधक सिधिदाता ॥
बसहिं तहाँ मुनि सिद्धसमाजा * तहँ हिय हर्षि चले मनुराजा ॥
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा * ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनुमति[4] तीरा * हर्षि नहाने निर्म्मल नीरा[5] ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी * धर्म्मधुरन्धर ऋषि मुनि जानी ॥
जहँ तहँ तीरथ रहे सुहाये * मुनिन सकल सादर करवाये ॥
कुशशरीर[6] मुनिपट[7] परिधाना * सन्तसभा नित सुनहिं पुराना ॥

---

१ महादेवजी । २ वेद । ३ पेट । ४ गोमतीनदी । ५ जल । ६ दूबर । ७ भोजपत्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–*द्वादश अक्षर मन्त्रवर, जपहिं सहित अनुराग ॥
वासुदेवपद[1]पंकरुह, दम्पति[2] मन अति लाग ॥ १५० ॥
करहिं अहार शाक फल कन्दा * सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे * बारि[3] अहार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई * देखिय नयन परम प्रिय सोई ॥
अगुर्ण[4] अखण्ड[5] अनन्त[6] अनादी * जेहि चिंताहिं परमारथ वादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा * चिदानंद निरुपाधि अनूपा[7] ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना * उपजहिं जासु अंशते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं * भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो यह वचन सत्य श्रुतिभाषा * तौ हमार पूजहिं अभिलाषा ॥
दोहा–इहिविधि वीते वर्ष षट[8], सहस बारि आहार ॥
सम्वत सप्तसहस्र पुनि, रहे समीर[9] अधार ॥ १५१ ॥
वर्षसहसदश त्यागेउ सोऊ * ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥
विधि हरि हर तप देखि अपारा * मनु समीप आये बहु बारा ॥
मांगहु वर बहुभाँति लुभाये * परमधीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होय रहे शरीरा * तदपि मनागपि नहिं मन पीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
मांगु मांगु वर भै नभ वानी * परम गँभीर कृपामृत सानी ॥
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई * श्रवणरन्ध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये * मानहुँ अबहिं भवनते आये ॥
दोहा–श्रवण सुधा सम वचन सुनि, पुलक प्रफुल्लित गात ॥
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात ॥ १५२ ॥
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू * विधि हरि हर वन्दित पद रेनू ॥

* ओंनमोभगवते वासुदेवाय, यह मन्त्रहै ।
१ चरणकमल । २ स्त्री–पुरुष । ३ पानी । ४ गुणोंसेरहित । ५ जिसकाखंड नहो । ६ जिसकाअंतनहींहै । ७जिसकीउपमादूसरीनहो।८ छःहजार । ९ वायु ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवत सुलभ सकल सुखदायक * प्रणतपाल सचराचरनायक ॥
जो अनाथ हित हम पर नेहू * तौ प्रसन्न होय यह वर देहू ॥
जोस्वरूप बस शिव मनमाहीं * जेहि कारण मुनि यतन कराहीं ॥
जो भुशुण्डि मनमानस हंसा * सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा॥
देखहिं हम सो रूप भरिलोचन * कृपा करहु प्रणतारतिमोचन ॥
दम्पति वचन परम प्रिय लागे * मृदुल विनीत प्रेमरस पागे ॥
भक्तवछल प्रभु कृपानिधाना * विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥

दोहा–नीलसरोरुह नीलमणि, नील नीरधर श्याम ॥
लाजहिं तनु शोभा निरखि, कोटि कोटि शत काम॥ १५३ ॥

शरदमयंक वदन छबि सीवा * चारुकपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥
अधरअरुण रद सुन्दर नासा * विधुकर निकरविनिन्दक हासा ॥
नवअम्बुज अम्बुक छबि नीकी * चितवन ललित भावतीजीकी ॥
भृकुटि मनोज चाप छबिहारी * तिलक ललाट पटल द्युतिकारी ॥
कुण्डल मकर मुकुटशिरभ्राजा * कुटिलकेश जनु मधुप समाजा ॥
उरश्रीवत्स रुचिर वनमाला * पदिकहार भूषण मणिजाला ॥
केहरि कन्धर चारु जनेऊ * बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकरसरिसशुभगभुजदण्डा * कटि निषंग कर शर कोदण्डा ॥

दोहा–तडितविनिन्दक पीतपट, उदर रेख वर तीनि ॥
नाभि मनोहर लेति जनु, यमुनभँवरछबिछीनि ॥ १५४ ॥

पदराजीव वरणि नाहिं जाहीं * मुनिमन मधुप बसहिं जेहिमाहीं ॥
वामभाग शोभित अनुकूला * आदिशक्ति छविनिधि जगमूला ॥
जासु अंश उपजहिं गुणखानी * अगणित उमा रमा ब्रह्मानी ॥
भृकुटि बिलास जासु जग होई * राम वामदिशि सीता सोई ॥

---

१ भक्तोंके रक्षक । २ कृपाकेस्थान । ३ नीलकमल । ४ शरदपर्णोकेचन्द्रमा समानमुख । ५ सुंदरगाल । ६ ठोढी । ७ शंख । ८ कंठ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छबि समुद्र हरिरूप विलोकी * इकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृप्ति न मानहिं मनु शतरूपा ॥
हर्ष विवश तनु दशा भुलानी * परे दण्डइव गहि पदपानी ॥
शिरपरसे प्रभु निज कर कंजा * तुरत उठाये करुणापुंजा ॥
दोहा–बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहिं जानि ॥
मांगहु वर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि ॥ १५५ ॥
सुनि प्रभुवचन जोरि युगपानी * धरिधीरज बोले मृदुवानी ॥
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे * अब पूरे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बड़ि मनमाहीं * सुगम अगम कहिजात सोनाहीं ॥
तुमहि देत अतिसुगम गुसांई * अगमलागि मोहिं निज कृपणाई ॥
यथा दरिद्र विबुधतरु जाई * बहु सम्पति मांगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जाने सोई * तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अंतर्यामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच विहाय मांगु नृप मोहीं * मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं ॥
दोहा–दानि शिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतभाव ॥
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभुसन कवन दुराव ॥ १५६ ॥
देखिप्रीति सुनि वचन अमोले * एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहँ जाई * नृप तव तनयँ होब मैं आई ॥
शतरूपहिं विलोकि कर जोरे * देवि मांग वर जो रुचि तोरे ॥
जो बर नाथ चतुरनृप माँगा * सोइकृपालुमोहिंआतिप्रियलागा ॥
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई * यदपि भक्त हित तुमहिं सुहाई ॥
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी * ब्रह्म सकल उर अंतर्यामी ॥
अस समुझत मन संशय होई * कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई ॥
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं * जो सुख पावहिं सो गति लहहीं ॥

१ दोनोंहाथ । २ अभिलाष । ३ दरिद्रता । ४ कल्पवृक्ष । ५ ऐश्वर्य । ६ त्याग ७ पुत्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निजचरणसनेहु॥
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु, मोहिं कृपा करि देहु॥ १५७॥
सुनि मृदु[1] गूढ रुचिर वर रचना * कृपासिन्धु बोले मृदु वचना ॥
जो कुछ रुचि तुम्हरे मन माहीं * मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं ॥
मातु विवेक[2] अलौकिक[3] तोरे * कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
वन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी * और एक विनती प्रभु मोरी ॥
सुत विषयक तव पद रति[4] होऊ * मोहिं बरु मूढ कहै किन कोऊ ॥
मणिविनुफणिजिमिजलविनमीना * ममजीवनतिमि तुमहिं अधीना ॥
अस वर मांगि चरण गहिरहेऊ * एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ ॥
अब तुम मम अनुशासन मानी * बसह जाइ सुरपतिरजधानी[5] ॥
सो०–तहँ करि भोग विशाल, तात गय कछु काल पुनि ॥
होइहहु अवध भुआल, तब मैं होब तुम्हार सुत ॥ २३ ॥
इच्छामय नर वेष सँवारे * होइहौं प्रकट निकेत[6] तुम्हारे ॥
अंशन सहित देह धरि ताता * करिहौं चरित भक्त सुखदाता ॥
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी * भव[7] तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥
आदिशक्ति जेहि जग उपजाया * सोउअवतरहि मोरि यह माया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि असकहि कृपानिधाना * अन्तर्द्धान भये भगवाना ॥
दम्पति उरधरि भक्ति कृपाला * तेहि आश्रम निवसे कछु काला ॥
समय पाय तनुतजि अनयासा * जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥
दोहा–यह इतिहास पुनीत अति, उमहिं कहेउ वृषकेतु ॥
भरद्वाज सुन अपर पुनि, रामजन्म कर हेतु ॥ १५८ ॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी * जो गिरिजा प्रति शम्भु बखानी ॥

---

१ कोमल। २ ज्ञान। ३ जोलोकमेंनहींहैं। ४ चरणोंमें प्रीति। ५ इन्द्रपुरी ६ गृह। ७ संसार। ८ वेग्रयास-वैकुण्ठ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विश्व विदित इक केकय देशू * सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू ॥
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना * तेज प्रताप शील बलवाना ॥
तेहिके भये युगल सुत वीरा * सब गुण धाम महारणधीरा ॥
रजधानी जेठे सुत आही * नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहि अरिमर्द्दन नामा * भुजबल अतुल अचलसंग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम सुनीती * सकल दोष छल वर्जित प्रीती ॥
जेठे सुतहि राज्य नृप दीन्हा * हरिहित आपु गमनवन कीन्हा ॥

दोहा—जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश ॥
प्रजापाल अति वेदविधि, कतहुँ नहीं अघलेश ॥१५९॥

नृप हितकारक सचिवसुजाना * नाम धर्मरुचि शुक्र समाना ॥
सचिवसयान बन्धु बलबीरा * आपु प्रतापपुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा * अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन विलोकि राउ हरषाना * अरु बाजे गहगहे निशाना ॥
विजयहेतु कटकाइ बनाई * सुदिन शोधि नृप चल्यो बजाई ॥
जहँ तहँ परी अनेक लड़ाई * जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्तद्वीप भुजबल वश कीन्हा * लैलै दण्ड छाँडि नृप दीन्हा ॥
सकलअवनिमण्डल तेहिकाला * एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दोहा—स्ववश विश्व करि बाहुबल, निज पुर कीन्ह प्रवेश ॥
अर्थ धर्म्म कामादि सुख, सेवहिं सबै नरेश ॥ १६० ॥

भूप प्रतापभानु बल पाई * कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख बर्जित प्रजासुखारी * धर्म्मशील सुन्दर नर नारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपदप्रीती * नृपहित हेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर संत पितर महिदेवा * करैं सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूप धर्म जे वेद बखाने * सकल करैं सादर सुखमाने ॥
दिनप्रति देइ विविधविधि दाना * सुनै शास्त्र वर वेद पुराना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाना वापी कूप तड़ागा * सुमनवाटिका सुन्दर बागा ॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये * सब तीरथन विचित्र बनाये ॥
दोहा–जहँलगि कहे पुराण श्रुति, एक एक सब याग ॥
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥ १६१ ॥

हृदय न कछुफल अनुसंधाना * भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म्म कर्म मन वानी * वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढ़ि वर वाजि वार इकराजा * मृगयाकर सब साज समाजा ॥
विन्ध्याचल गँभीर वन गयऊ * मृगपुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत विपिन नृप दीख वराहू * जनु वन दुरेउ शशिहिं ग्रसि राहू ॥
वडविधु नहिं समात मुखमाहीं * मनहुँ क्रोधवश उगिलत नाहीं ॥
कोल कराल दशन छबि गाई * तनु विशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये * चकित विलोकत कान उठाये ॥
दोहा–नील महीधर शिखर सम, देखि विशाल वराह ॥
चपरि चलेउ हय सुटिक नृप, हाँकि न होइ निवाह ॥ १६२ ॥

आवत देखि अधिक रव वाजी * चला वराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप शर सन्धाना * महिमिलिगयउ विलोकतबाना ॥
तकि तकि तीर महीश चलावा * करिछल सुअर शरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा * रिसवश भूप चलेउ सँगलागा ॥
गयउ दूरि वन गहन वराहू * जहाँ नाहिं गज बाजि निबाहू ॥
अति अकेल बनविपुलकलेशू * तदपि न मृग मग तजे नरेशू ॥
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा * भागि पैठु गिरि गुहा गँभीरा ॥
अगमदेखि नृप अति पछिताई * फिरेउ महावन परेउ भुलाई ॥
दोहा–खेद खिन्न तृषित क्षुधित, राजा वाजि समेत ॥

---

१ चाहा। २ श्रेष्ठघोड़ेपर। ३ शिकारखेलनेको। ४ हरिन। ५ आहट। ६ गम्भीर। ७ सुअर। ८ दुःखित। ९ दुर्बल। १० पियास। ११ भूखा।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खोजत व्याकुल सरित सर, जलबिनु भयउ अचेत ॥ १६३ ॥
फिरत विपिन आश्रम इक देखा * तहँबस नृपति[1] कपटमुनि वेषा ॥
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई * समर सेन तजि गयउ पराई[2] ॥
समय प्रतापभानुकर जानी * आपन अति असमय अनुमानी ॥
गयउ नगृह मन बहुत गलानी[3] * मिला नराजहि नृप अभिमानी ॥
रिसिउर मारि रंक[4] जिमिराजा * विपिन बसै तापसके साजा ॥
तासु समीप[5] गमन नृप कीन्हा * यहप्रतापरवि तेइँ तब चीन्हा ॥
राउतृषित[6] नहिं सो पहिचाना * देखि सुवेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरंगते[7] कीन्ह प्रणामा * परम चतुर न कहेउ निजनामा[8] ॥

दोहा–भूपति तृषित विलोकि तेइँ, सरवर[9] दीन्ह दिखाइ ॥
मज्जन[10] पान समेत हय, कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ १६४ ॥

गैश्रम सकल सुखी नृप भयऊ * निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्तुरैविजानी[11] * पुनि तापस बोला मृदुवानी ॥
को तुम कस वन फिरहु अकेले * सुन्दर युवा जीव पर हेले ॥
चक्रवर्त्तिके लक्षण तोरे * देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अवनीशा * तासु सचिव[12] मैं सुनहु मुनीशा ॥
फिरत अहेरै[13]हि परेउँ भुलाई * बड़े भाग्य देखेउँ पद आई ॥
हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा * जानतहौं कछु भल होनहारा ॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा * योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥

दोहा–निशा[14]घोर गम्भीर वन, पंथ[15] न सूझ सुजान ॥
बसहु आजु अस जानि तुम, जायहु होत बिहान ॥ १६५ ॥
तुलसी जस भवितव्यता[16], तैसिहि मिलै सहाय ॥

---

१ राजा । २ भाग । ३ लज्जा । ४ दलिद्री । ५ निकट । ६ पियासा । ७ घोड़ा ८ अपना । ९ तालाब । १० स्नान । ११ श्रीसूर्यनारायण । १२ मंत्री । १३ शिकारखेलवे । १४ रात्रि । १५ मार्ग । १६ होनहार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपु न आवै ताहि पहँ, ताहि तहाँ लैजाय ॥ १६६ ॥
भलेहिनाथ आयसु धरिशीशा * बाँधि तुरँग तरु बैठ महीशा ॥
नृप सबभाँति प्रशंसेउ ताही * चरणवन्द्य निजभाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई * जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी * नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहि नजान नृप नृपहिसोजाना * भूपसुहृदय सो कपट सयाना ॥
वैरी पुनि क्षत्रिय पुनि राजा * छल बल कीन्ह चहै निज काजा ॥
समुझिराज्यसुखदुखितअराती * अँवा अनलइव जरे सुछाती ॥
सरल[2] वचन नृपके सुनि काना * वैर सँभारि हृदय हरषाना ॥

दोहा–कपट बोरि वाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत ॥
नाम हमार भिखारि अब, निरधन रहित निकेत[3] ॥ १६७ ॥

कह नृप जे विज्ञान निधाना * तुम सारिखे गलित[4] अभिमाना ॥
सदा अपनपौ रहहिं दुराये * सबविधि कुशल कुभेष बनाये ॥
तेहिते कहहिं संत श्रुति टेरे * परम आकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
तुम सम अधन भिखारि अगेहा * होत विरंचि शिवहि सन्देहा ॥
योसिसोसि तवचरण नमामी * मोपर कृपा करिय अब स्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति की देखी * आप विषे विश्वास विशेषी ॥
सब प्रकार राजहिं अपनाई * बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुन सतिभाव कहौं महिपाला * यहाँ बसत बीते बहुकाला ॥

दोहा–अबलगि मोहिं न मिलेउ कोउ, मैं न जनायउँ काहु ॥
लोक मान्यता अनल सम, करि तप कानन दाहु ॥ १६८ ॥

सोरठा–तुलसी देखि सुवेष, भूलैं मूढ़ न चतुर नर ॥
सुन्दर केकी[5] पेख, वचन सुधा[6] सम अशन[7] अहि[8] ॥ २४ ॥

१ मधुरवचन । २ सीधे । ३ स्थान–किन्तुगृह । ४ रहित । ५ मोर । ६ अमृत । ७ भोजन । ८ सर्प ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताते गुप्त रहौं जग माहीं * हरितजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
प्रभुजानत सब विनहिं जनाये * कहहु कवन सिधि लोक रिझाये ॥
तुम शुचि सुमतिपरमप्रियमोरे * प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोहीं * दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं ॥
जिमि जिमि तापस कथै उदासा * तिमि तिमि नृपहि होइ विश्वासा ॥
देखा स्ववश कर्म्म मन वानी * तब बोला तापस बक ध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई * सुनि नृप बोलेउ पद शिरनाई ॥
कहहु नामकर अर्थ बखानी * मोहिं सेवक अति आपन जानी॥

दोहा—आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उत्पति भइ मोरि ॥
नाम एक तनु हेतु त्यहि, देह न धरी बहोरि ॥ १६९ ॥

जनि आश्चर्य करहु मन माहीं * सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तप बलते जग सृजै विधाता * तप बल विष्णु भये परित्राता ॥
तप बल शम्भु करहिं संहारा * तप बल शेष धरैं महि भारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भुआरा * तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा * कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका * करै निरूपण विरति विवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी * कहेसि अमित आश्चर्य बखानी॥
सुनि महीश तापस वश भयऊ * आपन नाम कहन तब लयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोहीं * कीन्हेउ कपट लागु भल मोहीं ॥

सो०—सुनु महीश अस नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ॥
मोहिं तोहिंपर अति प्रीति, परम चतुरता निरखि तव ॥२५॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेशा * सत्यकेतु तव पिता नरेशा ॥
गुरु प्रसाद सब जानौं राजा * कहौं न आपन जानि अकाजा ॥

---

१ दूसरेकिसीसे । २ पवित्र । ३ छिपावों । ४ दूसरी । ५ पुत्र । ६ संसार । ७ रचै । ८ ब्रह्मा । ९ रक्षक । १० नाश । ११ दुर्लभ । १२ प्रीति । १३ उत्पन्न होना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखि तात तव सहज सुधाई * प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई।
उपजिपरी ममता मन मोरे * कहेउँ कथा निज बूझे तोरे।
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं * माँगु जो भूप भाव मन माहीं।
सुनि सुवचन भूपति हरषाना * गहिपद विनय कीन्ह विधि नाना।
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे * चारि पदारथ करतल मोरे।
प्रभुहितथापि प्रसन्न विलोकी * मांगि अगमवर होउँ विशोकी।

दोहा—जरा मरण दुख रहित तनु, समर न जीतै कोउ ॥
एक छत्र रिपु हीन महि, राज्य कल्पशत होउ ॥ १७० ॥

कह तापस नृप ऐसहि होऊ * कारण एक कठिन सुन सोऊ।
कालौ तव पद नाइहि शीशा * एक विप्र कुल छांड़ि महीशा।
तप बल विप्र सदा बरियारा * तिनके कोप नकोउ रखवारा।
जो विप्रन वश करहु नरेशा * तौ तब वश विधि विष्णु महेशा।
चल न ब्रह्मकुल से बरिआई * सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई।
विप्र शाप विनु सुनु महिपाला * तोर नाश नहिं कवनिहुँ काला।
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू * नाथ नहोइ मोर अब नासू।
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना * मोकहँ सर्व्वकाल कल्याना।

दोहा—एवमस्तु कहि कपट मुनि, बोला कुटिल बहोरि ॥
मिलब हमार भुवाल जनि, कहहु तो मोरि न खोरि ॥ १७१ ॥

ताते मैं तोहिं बरजौं राजा * कहे कथा तव परम अकाजा।
छठें श्रवण यह परत कहानी * नाश तुम्हार सत्य मम वानी।
यह प्रकटे अथवा द्विजें शापा * नाश तोर सुनु भानुप्रतापा।
आन उपाय निधन तव नाहीं * जो हरि हर कोपहिं मन माहीं।
सत्यनाथ पद गहि नृप भाषा * द्विज गुरु कोप कहहु को राखा।

१ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, । २ हाथ । ३ बुढ़ापा । ४ युद्ध । ५ पृथ्वी । ६ काल ७ब्राह्मण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राखै गुरु जो कोपविधाता * गुरु विरोध नाहिं कोउ जगत्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे * होइ नाश नाहिं शोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा * प्रभु महिदेव[2] शाप अतिघोरा ॥

दोहा—होहिं विप्र वश कवन विधि, कहहु कृपा करि सोउ ॥
तुम तजि दीनदयालु निज, हितू न देखौं कोउ ॥ १७२ ॥

सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं * कष्टसाध्य पुनि होहिं किनाहीं ॥
अहै एक अति सुगम उपाई * तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई * मोर जाब तव नगर नहोई ॥
आजु लगे अरु जबते भयऊं * काहूके गृह ग्राम न गयऊं ॥
जो न जाब तौ होइ अकाजू * बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीप बोले मृदुवानी * नाथनिगम असनीति वखानी ॥
बड़े सनेह लघुनपर करहीं * गिरि[3] निज शिरन सदा तृणधरहीं॥
जलधि[4] अगाध मौलि[5] बह फेनू * सन्तत[6] धरणि[7] धरत शिररेनू[8] ॥

दोहा—अस कहि गहे नरेश पद, स्वामी होउ कृपालु ॥
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयालु ॥ १७३ ॥

जानि नृपहिं आपनआधीना[9] * बोला तापस कपट प्रवीनौं[10] ॥
सत्य कहौं भूपति सुनु तोही * जगमहँ नाहिं दुर्लभ कछु मोहीं ॥
अवशि काज मैं करिहौं तोरा * मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा ॥
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ * फलै तबहिं जब करिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करउँ रसोई * तुम परसहु मोहिं जान नकोई ॥
अन्नसो जोइ जोइ भोजन करई * सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई * तव वश होय भूप सुनु सोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप येहू * सम्वत[11] भरि संकल्प करेहू ॥

१ रक्षक। २ ब्राह्मण। ३ पर्वत। ४ गहरेसमुद्र। ५ ऊपर। ६ सदा। ७ भूमि ८ रेणुका। ९ वश। १० चतुर। ११ एकवर्ष।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—नितनूतन द्विज सहस्रशत, बरेहु सहित परिवार ॥
मैं तुम्हरे संकल्पलगि, दिनहिं करब जेवनार ॥ १७४ ॥

इहिविधि भूप कष्ट अति थोरे * होइहहिं सकल विप्र वश तोरे ॥
करिहहिं विप्र होम मख सेवा * तेहि प्रसंग सहजहिं वश देवा ॥
और एक तोहिं कहौं लखाऊ * मैं यहि भेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरि आनब मैं करि निज माया ॥
तपबल तेहि करि आपु समाना * रखिहौं इहां वर्ष परमाना ॥
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा * सबविधि तोर सँवारब काजा ॥
गैलिशिबहुत शयन अब कीजै * मोहिं तोहिं भूप भेट दिन तीजै ॥
मैं तप बल तोहिं तुरंग समेता * पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता ॥

दोहा—मैं आउब सोइ वेष धरि, पहिचानेहु तब मोहिं ॥
जब एकांत बुलाइ सब, कथा सुनाऊं तोहिं ॥ १७५ ॥

शयन कीन्ह नृप आयसुमानी * आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई * सोकिमि सोव शोच अधिकाई ॥
कालकेतु निशिचर तहँ आवा * जेहि शूकर होइ नृपहिं भुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा * जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहिके शत[1] सुत अरु दशभाई * खल अति अजय देव दुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर[2] सब मारे * विप्र सन्त सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिल वैर सँभारा * तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥
जेहिरिपुक्षय[3] सोइरचेसि उपाऊ * भावीवश न जान कछु राऊ ॥

दोहा—रिपु तेजस्वी अकेल अति, लघु[4]करि गनिय न ताहु ॥
अजहुँ देत दुख रवि शशिहिं, शिरअवशेषित[5] राहु ॥ १७६ ॥

तापसनृप निज सखहिं निहारी * हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥

---

१ सौलडके । २ संग्राममें । ३ शत्रुकानाश । ४ छोटा । ५ शिररहित किन्तु रुण्डमात्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मित्रहि कहि सब कथा सुनाई * यातुधान बोला सुखपाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा * जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा ॥
परिहरि शोच रहहु तुम सोई * बिनु औषधहिंव्याधिविधिखोई ॥
कुल समेत रिपु मूल बहाई * चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी * चला महा कपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि वाजि समेता * पहुँचायसि सोवतहिं निकेता ॥
नृपहिं नारि पहँ शयन कराई * हयगृहँबांधेसि वाजि बनाई ॥

दोहा—राजाके उपरोहितहिं, हरिले गयउ बहोरि ॥
लैराखेसि गिरि खोह महँ, माया करि मति भोरि ॥ १७७ ॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा * परा जाय तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनुभयउ विहाना * देखि भवन अति अचरजमाना ॥
मुनि महिमा मनमहँ अनुमानी * उठे गवाहिं जेहि जान नरानी ॥
कानन गयउ वाजि चढ़ि तेही * पुर नर नारि न जानेउ केही ॥
गये यामे युग भूपति आवा * घर घर उत्सव बाजु बधावा ॥
उपरोहितहि दीख जब राजा * चकितविलोकिसुमिरिसोइकाजा ॥
युग सम नृपहिं गये दिन तीनी * कपटी मुनि नृपमति हरि लीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा * नृपहि मतो सब कहि समुझावा ॥

दोहा—नृप हर्षे पहिचानि गुरु, भ्रम वश रहा नचेत ॥
बरे तुरत शतसहस वर, विप्र कुटुम्ब समेत ॥ १७८ ॥

उपरोहित जेवनार बनाई * छरस चारि विधि जस श्रुतिगाई ॥
मायामय तेइँ कीन्हि रसोई * व्यंजन बहु गनि सकै न कोई ॥
विविध मृगनकर आमिषराँधा * तेहिमहँ विप्रमांस खल सांधा ॥
भोजन कहँ सब विप्र बुलाये * पदपखारि सादर बैठाये ॥

---

१ निशिचर । २ शिक्षा । ३ दिन । ४ घोडा । ५ घर । ६ रानी । ७ अश्वशाला । ८ निकेत । ९ तडके । १० वन । ११ दोपहर । १२ मांस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परसनलाग जबहिं महिपाला * भइ अकाशवाणी तेहिकाला ॥
विप्रवृन्द उठि उठि गृह जाहू * हैबड़िहानि अन्न जनि खाहू ॥
भयउ रसोई भूसुर[1] मांसू * सब द्विज उठे मानि विश्वासू ॥
भूपविकल मतिमोह भुलानी * भावी वश न आव मुखवानी ॥

दोहा—बोले विप्र सकोप तब, नहिं कुछ कीन्ह विचार ॥
जाइ निशाचर होहु नृप, मूढ़ सहित परिवार ॥ १७९ ॥

क्षत्रि बन्धु तैं विप्र बुलाई * घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा * जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
सम्बत् मध्य नाश तव होऊ * जलदाता न रहहि कुल कोऊ ॥
नृपसुनिशाप विकल अति त्रासा * भइ बहोरि बैरगिरा[2] अकाशा ॥
विप्रहु शाप विचारि न दीन्हा * नाहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चकितविप्र सब सुनि नभवानी * भूप गये जहँ भोजनखानी[4] ॥
तहँ न अशन[3] नाहिं विप्रसुआरा * फिरेउ राउ मन शोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई * त्रसित परेउ अवनी[5] अकुलाई ॥

दोहा—भूपति भावी मिटै नहिं, यद्यपि न दूषण तोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्रशाप अति घोर ॥ १८० ॥

"जो करि कपट छलै जग काहू * देइहि ईश अधमगति वाहू ॥
विप्रवचनसुनि नृप अकुलाना * उठिपुनिविनयकीन्हविधिनाना ॥
पुनि पुनि पदगहिकहेउभुआला * शापअनुग्रह कहहु कृपाला ॥
जब तुम होब निशाचर जाई * ब्रह्मवंश तामस तनु पाई ॥
अजर अमर अतुलित प्रभुताई * जगविख्यात[6] वीर दोउ भाई ॥
होइहि जबहि पराभव चारी * तब तुम सेउब देवपुरारी ॥
शिवप्रसाद वर पाइ बहोरी * होइहैं सब जग प्रभुता तोरी ॥
मिलहिंतोहिं जब सनतकुमारा * तब तुम समुझब शाप हमारा ॥

१ द्विज । २ श्रेष्ठवाणी । ३ रसोइयाँ । ४ भोजन । ५ पृथ्वी । ६ विदित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—तुम पूछब निस्तारनिज, सादर सुनहु नरेश ॥
सब परिवार उधार तब, होइहै मुनि उपदेश ॥ १८१ ॥

असकहि सब महिदेव सिधाये * समाचार पुरलोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं * विरचत हंस काक किय जेहीं ॥
उपरोहितहि भवन पहुँचाई * असुर तापसिहि खबरि जनाई ॥
तेहिखल जहँ तहँ पत्र पठाये * सजि सजि सेन भूप सब आये ॥
घेरिन्हि नगर निशान बजाई * विविध भाँति नित होति लराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करणी * बन्धु समेत परे नृप धरणी ॥
सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा * विप्र शाप किमि होइ असांचा ॥
रिपुहि जीति नृप नगर बसाई * निज निज पुरगे जययश पाई ॥

दोहा—भरद्वाज सुनु जाहि जब, होत विधाता वाम ॥
धूरि मेरु[1] सम जनक[2] यम, ताहि व्याल[3]सम दाम[4] ॥ १८२ ॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भयउ निशाचर सहितसमाजा ॥
दश शिरताहि बीस भुज दण्डा * रावण नाम वीर वरिचण्डा[5] ॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा * भयउ सो कुम्भकर्ण बलधामा ॥
सचिव जोरहा धर्मरुचि जासू * भयउ विमात्र बन्धु लघु तासू ॥
नाम विभीषण जेहि जगजाना * विष्णुभक्त विज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृपकेरे * भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिस अनेका * कुटिल भयंकर विगत विवेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी * वरणि नजाइ विश्व परितापी ॥

दोहा—उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ॥
तदपि महीसुर शापवश, भये सकल अघरूप ॥ १८३ ॥

कीन्ह विविध तप तीनों भाई * परम उग्र[6] सो वरणि न जाई ॥

---

१ पर्वतसम । २ पितावम । ३ सर्प । ४ रस्सी । ५ अतिबली ६ कठिण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गयउ निकट तप देखि विधाता * माँगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि विनती पदगहि दशशीशा * बोलेहु वचन सुनहु जगदीशा ॥
हम काहू कर मरहिं न मारे * वानर मनुज जाति दुइ वारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा * मैं ब्रह्मा मिलि तोहिं वर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुम्भकर्ण पहँ गयऊ * तेहि विलोकि मन विस्मय भयऊ ॥
जो यह खल नित करव अहारा * होइहि सब उजारि संसारा ॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी * मांगेसि नींद मास षटकेरी ॥

दोहा—गयउ विभीषण पास तब, कहा पुत्र वर मांग ॥
तेहि मांगेउ भगवन्तपद, कमल अमल अनुराग ॥ १८४ ॥

तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये * हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मन्दोदरि नामा * परम सुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी * भई सो यातुधान पति रानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई * पुनि दोउ बन्धु विवाहेसि जाई ॥

"दोहा—वैरोचनकी धेवती, बज्रज्वाला जेहि नाम ॥
कुंभकर्णका तासु सँग, कियो व्याह सुख धाम ॥"

गिरि त्रिकूट इकसिन्धु मँझारी * विधिनिर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा * कनकरचितमणि भवन अपारा ॥
भोगवती जस अहिकुलवासा * अमरावति जस शक्रनिवासा ॥
तिनते अधिक रम्य अति बंका * जग विख्यात नाम तेहि लंका ॥

दोहा—खाई सिंधु गँभीर अति, चारिहु दिशि फिर आव ॥
कनक कोट मणि खचित दृढ़, वरणि नजाय बनाव ॥ १८५ ॥
हरिप्रेरित तेहि कल्प जोइ, यातुधान पति होय ॥
शूर प्रतापी अतुल बल, दल समेत बस सोय ॥ १८६ ॥

---

१ ब्रह्मा । २ तुमपर किन्तु पुत्र । ३ संदेह । ४ छःमास । ५ प्रीति । ६ रावण । ७ कठिण । ८ सुवर्ण । ९ इन्द्र । १० परमसुंदररमनकरनेयोग्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहे तहां निशिचर भटभारे * ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहँ रहहिं शक्रके प्रेरे * रक्षककोटि यक्षपति केरे ॥
दशमुख कतहुँ खबरि असि पाई * सेन साजि गढ़ घेरिसि जाई ॥
देखि विकट भट बड़ि कटकाई * यक्ष जीव लै चले पराई ॥
फिरि सब नगर दशानन देखा * गयउ शोच सुख भयउ विशेषा ॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी * कीन्ह तहाँ रावण रजधानी ॥
ज्यहि जस योग बांटि गृहदीन्हे * सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
एक बार कुबेर पहँ धावा * पुष्पकयान जीति लै आवा ॥

दोहा—कौतुकही कैलास तब, लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥
मनहुँ तौलि भट बाहुबल, चला अधिक सुखपाइ ॥ १८७ ॥

सुख सम्पति सुत सेन सहाई * जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई * जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुम्भकर्ण अस भ्राता * ज्यहिकहँ नहिं प्रतिभट जगजाता ॥
करि मदपान सोव षटमासा * जागत होइ तिहूँपुर त्रासा ॥
जो दिनप्रति अहार करु सोई * विश्व वेगि सब चौपट होई ॥
समरधीरनहिं जाइ बखाना * ज्यहिसम अधिक नकोउ बलवाना ॥
वारिदनादं जेठ सुत तासू * भटमहँ प्रथमलीक जगजासू ॥
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई * सुरपुर नितहिं परावन होई ॥

दोहा—कुमुख अकम्पन कुलिशरद, धूम्रकेतु अतिकाय ॥
एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय ॥ १८८ ॥

कामरूप जानहिं सब माया * स्वप्नेहुँ जिनके धर्म न दाया ॥
दशमुख बैठि सभा इकवारा * देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुत समूह जन परिजन नाती * गनैको पार निशाचर जाती ॥

---

१ ज्यहिसमान जगतमें दूसरा योद्धा न जन्मा । २ डर । ३ संसार । ४ मेघ, नाद । ५ अनेक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

सेन विलोकि सहज अभिमानी * बोला वचन क्रोध मद सानी ॥
सुनहु सकल रजनीचर यूथा * हमरे वैरी विबुध वरूथा ॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई * देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥
तिनकर मरण एकविधि होइ * कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विज भोजन मख होम सराधा * सबकर जाइ करहु तुमबाधा ॥

दोहा—क्षुधा क्षीण बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिंआइ ॥
तब मारिहौं कि छांड़िहौं, भलीभांति अपनाइ ॥ १८९ ॥

मेघनाद कह पुनि हँकरावा * दीन्ह सीख बल वैर बढ़ावा ॥
जे सुर समर धीर बलवाना * जिनके लरिवे कर अभिमाना ॥
तिनहिं जीतिरण आनिसि बांधी * उठिसुतपितुअनुशासन साधी ॥
इहिविधि सबहीं आज्ञा दीन्हा * आपुनचलेउ गदा कर लीन्हा ॥
चलत दशानन डोलत अवनी * गर्जत गर्भ श्रवत सुरवनी ॥
रावण आवत सुनेउ सकोहा * देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालनके लोक सिधाये * सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी * देइ देवतन गारि प्रचारी ॥
रण मदमत्त फिरै जगधावा * प्रति भट खोजत कतहुँ नपावा ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा—सप्तद्वीप नव खंड लगि, सप्त पताल अकास ॥
कंपमान धरणी धसत, सरित पतिन्ह मनत्रास ॥ १९० ॥

नारद मिले कहेसि मुसुकाई * देव कहां मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहि नभावा * श्वेतद्वीप तेहि तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ * नारिवृन्द तहँ देखत भयऊ ॥
तिन्हसन कहा पतिन पहँ जाहू * कहेउ कि आव निशाचर नाहू ॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा * ले जैहौं तुमकहँ निज धामा ॥

१ देवता । २ विघ्न । ३ देवतोंकीस्त्रियां । ४ स्त्रियोंकेझुंड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनत वचन यक जरठ[1] रिसानी * धाइ चरण गहि गगन[2] उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धरि झकझोरा * डारेसि सिन्धु[3] मध्य अतिजोरा ॥
दोहा—गयो पताल अचेत है, मरै न विभ्र प्रसाद ॥
सावधान उठि चलेउ पुनि, हिये न हर्ष विषाद ॥ १९१ ॥
जीतेसि नाग नगर सब झारी * गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
वैरोचन सुत आदर दयऊ * कुशल बूझि तब बोलत भयऊ ॥
तुमहू निज शत्रुहि गहि लीजे * चलि महिलोक राज्यनिज कीजे ॥
कहबलि कनककशिपुकेमंडन * पहरि लेहु तुम सुख दुख खंडन ॥
लाग उठावन उठा नकोई * याही पौरुषते जय होई ॥
जिन यह भूषण अंगन धारे * ते भटगे यक क्षणमें मारे ॥
तेहिते भवन जाहु ले प्राना * चला तुरत मनमाहिं लजाना ॥
वामन रावण आवत जाना * किये देवऋषि सन अपमाना ॥
खेलत रहे नगर शिशुनाना * निजबल तिनहिं दीन भगवाना ॥
धाइ धरा तिन पुर लै आये * नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीस बाहु दशकंधर भाई * विधि यह गढनि कहाँकी आई ॥
राखिनिबाँधि खिझावहिं भारी * नाम न कहै सहै वरु मारी ॥
वामन दीख बहुत सकुचाना * तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरन्त निशाचर नाहा * लाज शंक कछु नहिं मनमाहा ॥
दोहा—अति निर्लज्ज दया रहित, हिंसापर अति प्रीति ॥
रामविमुख दशकन्ध शठ, तापर चाहत जीति ॥ १९२ ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता वाम ॥
मणिहुँ कांच होइ जाइ तब, लहै न कौड़ी दाम ॥१९३॥
जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै * दण्ड लेय बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरण फिरै दिन राती * महामलिन मन खल उतपाती ॥

१ बुढ़िया । २ आकाश । ३ समुद्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुरि तुरत पम्पापुर आवा * बालि नाम कपिपति जिहि ठावा ॥
अवलोकसि इक सरवर[1] शोभा * जिहिमन महामुनिन्हकरलोभा ॥
तहाँ कपीश[2] करै निज ध्याना * दशकन्धर[3]हि देखि मुसुकाना ॥
धाइ ठाढ तहँ भा रजनीशा * ठोंकि बाहु गर्जित भुजवीशा ॥
तब रावण बोला करि क्रोधा * बकध्यानी कपि शठ विनबोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउँ धाई * देकपि युद्ध छांड़ि कदराई ॥

दोहा-मोहिं जीते बिनु समर सुनु, वृथा ध्यान तव कीश ॥
कटकटाइ कह रजनिचर, रदन[4]तीनसैबीश ॥ १९४ ॥

तब बाली बोला मुसुकाई * बल तुम्हार ऐसोही भाई ।
रवि अंजलि मैं देउँ सप्रीती * ठाढ़ होहु जायहु मोहिं जीती ।
तबहिं कीशपति मनहिविचारा * शिव वर दीन्ह मरै नहिं मारा ।
दशकंधर घर जाहु विचारी * अजयतुम्हारि सुनी विधिचारी ॥
बहुतभाँति असुरहि समुझावा * कौनिहुँ भाँति बोध नहिं आवा ।
तब सकोप होइ धरा कपीशा * दृढगहि कांख चापि दशशीशा ।
अंजलि दीन्ह रविहि[5] मनवानी * अचई सप्तउदधि[6] करपानी ॥
जपा आदि शंकर मन वानी * तेहि क्षण संध्या वंदि सिरानी ।

दोहा-आवा घरहि कपीश तब, काँख रहा लंकेश ॥
यहि विधि बीते मास *षट्, पावा बहुत कलेश ॥ १९५ ॥

तेइ कलेश वश करै उपाई * तहँ न चलै कछु आतुरताई ।
बहु प्रस्वेद[7] कखरी महँ जामा * अती कुवास तहांभइ धामा ॥
कलमलाइ रिसि दशनन काटा * कचकर जीव मनहुँ भ्रम चाटा ॥
एक दिवश रवि अंजलि साजा * कांखतेनिसरि महाध्वनि गाजा ॥

---

* वाल्मीकिमें लेखहै कि चारघडी कांखमें रहा सो सत्यहै ।

१ तालाव । २ वालि । ३ रावण । ४ दांत । ५ श्रीसूर्यनारायण । ६ सातों सागर । ७ मैल-पसीना । ८ घर ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब पुनि धरि कपीश सोबांधा * लै आये अंगदके सांधा ॥
वीश भुजा दशशीश सुधारा * चरण दोउ पुनि धरि उरपारा ॥
धरि समेटि झूमरि सम कीन्हा * बांधि सेज पर शोभा दीन्हा ॥
अंगद खेलि लात शिर मारा * किलकिलाइ किलकै किलकारा ॥

दोहा-तारा चीन्हेउ रावणहिं, तेहि क्षण दीन्ह छुड़ाइ ॥
जाहु तुरत लंकेश गृह, बहुरि धराहि कपिराइ ॥ १९६ ॥

पुनि रावण आवा तेहि ठाई * सहसवाहु जहँ रास बनाई ॥
जलक्रीडा करहहिं सब नारी * विविध भाँति शोभा अतिभारी ॥
आसरास मंडल जहँ रेवा * सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावण सुखनाना * हर्ष समेत हृदय सुखमाना ॥
तहँ लंकेश जाइ शिव देखा * मनहुँ विरंचि रचे बहु रेखा ॥
तुलसी कमलपत्र सब आना * विल्वपत्र अरु पुष्प प्रमाना ॥
जाके जल क्षोभेउ दशशीशा * पढ़ै मंत्र सुमिरै गौरीशा ॥
निलज अशंक आवपुनि तहँवां * करभुजकेलि सहसभुज जहँवां ॥

दोहा-क्षोभेउ जल भुज बीस बल, बूड़न लगी समाज ॥
सहसबाहु अति क्रोध मन, मोहिं सम आन को आज ॥१९७॥

जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा * जासु विपुल भुज बल जल बाढ़ा ॥
धावा प्रबल महाबल भारी * लंकेश्वर कहँ धरिसि प्रचारी ॥
निरखितिर्यन आचरजबिशाला * बांधिराखि कछु दिन हयशाला ॥
लज्जित दुष्ट मष्ट करि रहई * रिसि उर मारि कष्ट बहु सहई ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी * मारहिंलात हँसैं दै गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना * बहुविधि पूछे नृपति सुजाना ॥
नृत्य करैं रम्भादिक नारी * दशहु माथ दश दीपक बारी ॥
मुनिपुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा * पुनिनलशाप आय तिहि पावा ॥

१ रोंका । २ अत्यंत । ३ हांक देकर । ४ स्त्रिन । ५ घोड़शाला । ६ दिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-मारग जात दीख अति, अनुपम सुन्दरि नारि ॥
चन्दन पुष्प पत्र कर, पूजन चलि त्रिपुरारि ॥ १९८ ॥

देखि उर्वशी मन सकुचानी * तब रावण बोला मृदुवानी।
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा * लज्जा वश तिहि उतर नदीन्हा।
मन मदमत्त विचार न करेऊ * धनपति पुत्र वधू कर धरेऊ।
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई * घाटि कर्म्म कीन्ही पछिताई।
मन पछिताय शोच उर भयऊ * लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ।
विकल उर्वशी अलकहिं आई * नल कूबर सन बात जनाई।
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा * रावण वंश होहु क्षयकारा।
चली शाप लंका कहँ आई * दशकन्धर बैठा जिहिं ठाई।
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा * निरखि दशानन अतिभयकांपा।

दोहा-शापहि अंगीकार करि, मन महँ कीन्ह विचार ॥
दण्ड ऋषिन्हसे लीन्ह नाहिं, रोपेउ लंक भुवार ॥ १९९

दूत चारि पठये ऋषि आश्रम * निरखिविसरिगेमुनिअधिआतम
तिनसन तब पूछहिं मुनि हाला * कहहु कुशल लंकेश भुवाला
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा * कर तुम सन चाहत दशशीशा
मुनि सो वचन महा भय पाई * करहिं विचार विरतिबिसराई
जेहि दरबार नीति नहिं भाई * खल मण्डली जुरी तहँ आई
कछुबिन दिये नहीं गति आछी * घटभरिरुधिर दिये तनुपाछी
दूतन्ह सौंपि कहा मुनिज्ञानी * भूपहिं कहेउ जाइ यह वानी

दोहा-घट उधरत क्षय होइहहु, सहित सकल परिवार ॥
दूत तुरत घट लेगये, लंकापति दरबार ॥ २०० ॥

रावण घट लखि परम हुलासा * तब दूतन मुनि वचनप्रकाशा

१ कुबेरकी पतोहू। २ स्थान। ३ज्ञान-ध्यान-उपासना-जप-तप। ४ लोहू
५ नाश।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनि मुनि शाप उपज उरदाहू * बोला घट ले उत्तरजाहू ॥
यत्न समेत धरणि धरि एहू * जानि न पाव बात यह केहू ॥
लै घट जनकनगर तेगये * गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये ॥
शंभु सभा श्रुति वाद मझारा * प्रथमै रहा जनकते हारा ॥
तेहि रिसते तहँ कुंभ पठावा * जनकराज कर देश सुहावा ॥
हरिइच्छा तहँ परचोदुकाला * विन जलभे सब जीव विहाला ॥
जनकयज्ञ रचन तहँ ठयऊ * चामीकर हल कर्षत भयऊ ॥
प्रगट अवनिते ऋषयकुमारी * कन्या कहि लीन्ही उर धारी ॥

दोहा-चार सखी चारों तरफ, कर मुरछल सुखखान ॥
मध्य विराजत भूमिजा, निमिवंशिनसुखदान ॥ २०१ ॥
पुनि विदेहकी विनयसों, भई जानकी बाल ॥
अंतर्हित सिंहासन, सुख मानो भूपाल ॥ २०२

देखत ताहि सुनयना रानी * कन्या कह लीनी सुखमानी ॥
नाम जानकी परम पुनीता * नारद आइ कहा पुनि सीता ॥
पुनि नारद कह सुनहु नृपाला * विष्णु वरहिं भगवान कृपाला ॥
पुनि नृप सीय पढ़न बैठाई * कछु दिनमें विद्या सब पाई ॥

दोहा-एक समय मिथिलेश अति, शंकरको तप कीन ॥
आय कह्यो शिव मांगु वर, बोले नृपति प्रबीन ॥ २०३ ॥
कह्यो नृपति जो देत वर, जेहि श्रुति नेति बखान ॥
तेहि देखों भरि नयनमें, यह वर देहु न आन ॥ २०४ ॥

सुन शिव एक धनुष तव दयऊ * पूजन करहु मुदित नृप भयऊ ॥
याहीसे पूरे अभिलाषा * भये प्रसन्न भूप जय भाषा ॥
गृह आये प्रभुहित अनुरागे * नित्त नेम करि पूजनलागे ॥
यक दिन सिय सेवा ढिगजाई * लीलहि लीनो धनुष उठाई ॥
देख जनक अति अचरज माना * तेहिक्षण तहाँ कठिनप्रण ठाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो लेई शिव चाप चढ़ाई * सो नृप मम कन्या वर पाई ॥
बहुविधि शिल्पी लिये बुलाई * रंगभूमि सुंदर बनवाई ॥
देश देश प्रति पत्र पठाये * सुनि सुनि भूप अनेकनआये ॥
बन उपबन पुर पंथ निकेता * उतरे निज निज सेनसमेता ॥
कहि सु कथा ऋषि राउ सिधाये * बहुरि दूत लंकापुर आये ॥
चारि ठाँव हारा लंकेशा * देवनको बहु देत कलेशा ॥

इति क्षेपक ॥

रवि शशि पवन वरुण धनुधारी * अग्नि काल यम सब अधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा * हठि सबहीके पंथहि लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहँलगि तनुधारी * दशमुख वशवर्त्ती नर नारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता * नवहिं आइ नित चरणविनीता ॥

दोहा–भुजबल विश्व वश्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र ॥
मण्डलीक महि रावण, राज्य करै निजमंत्र ॥ २०५ ॥
देव यक्ष गन्धर्व नर, किन्नर नागकुमारि ॥
जीति बरीं निज बाहुबल, बहुसुन्दरि वर नारि ॥ २०६ ॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ * सो सब जनु पहिलेकरि रहेऊ ॥
प्रथमहिं जिनकहँ आयसुदीन्हा * तिनके चरित सुनहु जोकीन्हा ॥
देखत भीमरूप सब पापी * निशिचर निकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुर निकाया * नानारूप धरहिं करि माया ॥
ज्यहि विधि होइ धर्म्मनिर्मूला * सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥
ज्यहिज्यहिदेश धेनु द्विज पावहिं * नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं ॥
शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई * वेद विप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप दाना * स्वप्न्यहुँ सुनिय न वेद पुराना ॥

१ सम्पूर्ण पृथ्वीमें । २ निज इच्छासे । ३ भयानक । ४ देवतोंको दुःख देनेवाले । ५ विपरीत । ६ गाय । ७ ब्राह्मण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छं०जप योग विरागा तप मख भागा श्रवण सुनै दशशीशा ॥
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा[2] ॥
अति भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनै नहिं काना ॥
तेहि बहुविधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना॥१८॥
सोरठा–वरणि नजाय अनीति, घोर निशाचर जो कराहिं ॥
हिंसा[3]पर अति प्रीति, तिनके पापहि कवन मिति[4] ॥ २६ ॥
बाढ़े बहु खल चोर जुआरी * जे लम्पट[5] परधन परनारी ॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा * साधुनसों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी * तेजानहु निशिचर सम प्रानी ॥
अतिशय देखि धर्मकी हानी * परम सभीत धरा[6] अकुलानी ॥
गिरि सर सिंधु भार नहिं मोही * जस मोहिं गरुअ एक पर द्रोही ॥
सकल धर्म्म देखहिं विपरीता * कहि नसकैं रावण भयभीता ॥
धेनु[7] रूप धरि हृदय विचारी * गई तहां जहँ सुर मुनि झारी ॥
निज सन्ताप[8] सुनायसि रोई * काहूते कछु काज नहोई ॥
छंद–सुर मुनि गन्धर्वा मिलिकरि सर्वा गये विरंचि[9]के लोका ॥
सँग गोतनु धारी भूमि विचारी परम विकल भय शोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ॥
जाकरि तैं दासी सो अविनाशी[10] हमरो तोर सहाई ॥१९॥
सो०–धरणि धरहु मन धीर, कह विरंचि हरिपद सुमिरि ॥
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण विपति ॥ २७ ॥
बैठे सुर सब करहिं विचारा * कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा ॥
पुर वैकुंठ जान कह कोई * कोइ कह पयनिधि[11] महँ बससोई ॥
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती * प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती ॥

१ कानोंसे । २ बिगाड़दे । ३ हत्या । ४ ठीक । ५ झूठे । ६ पृथ्वी । ७ गौ कास्वरूप । ८ दुःख । ९ ब्रह्मा । १० नाशरहित । ११ क्षीरसमुद्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहिसमाज गिरिजा मैं रह्यऊं * अवसर पाय वचन इक कह्यऊं ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना * प्रेमते प्रकट होहिं मैं जाना ॥
देश काल दिशि विदिशिहुमाहीं * कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं ॥
अगजगमय[3] सब रहित विरागी[4] * प्रेमते प्रभु प्रगटैं जिमि आगी ॥
मोर वचन सबके मनमाना * साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥
दोहा–सुनि विरंचि[5] मन हर्ष तनु, पुलकि नयन बह नीर[6] ॥
अस्तुति करत सजोरि कर, सावधान मतिधीर ॥ २०७ ॥
छं० जयजयसुरनायक जनसुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता ॥
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ॥
जो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ॥ २० ॥
जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा ॥
अविगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा ॥
निशि वासर ध्यावहिं हरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा २१ ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ॥

छन्दार्थ–देवताओंके स्वामी जनोंके सुखदाता दीनोंके पालनेहारे भगव
तुम्हारी जयहो गो ब्राह्मणके हित करनेहारे असुरोंको मारनेवाले लक्ष्मीके प
आपकी जयहो सुर धरणीके पालनेवाले अद्भुत जिनकी करणी और मर्म को
भी जिनका नहीं जानताहै जो स्वभावसेही दयालु तथा दीनोंके अ
कृपा करनेहारे सो हमारे ऊपर अनुग्रहकरो ॥ १ ॥ हे अविनाशी सबके हृ
यमें वास करनेहारे सबमें व्यापक परमानंद रूप अद्वितीय गति इन्द्रियोंसे
पवित्र चरित्रवाले मायारहित और मुकुंद अर्थात् मोक्षदाताहो जिसके वास्ते
रागी अति प्रेमसे मोह त्यागकर रात दिन ध्यान करतेहैं और आपके गुण गा
हे सच्चिदानंद तुम्हारी जयहो ॥ २ ॥ जिसने दूसरेकी सहायता विना सृष्टि उ

१ अचल २ जंगम। ३ व्यापक। ४ रागद्वेषसेरहित। ५विधि। ६ जल। ७ह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति नपूजा ॥
जो भव भय भंजन जनमन रंजन गंजन विपति बरूथा ॥
मनवचक्रमवानीछांडिसयानी शरणसकलसुरयूथा ॥२२॥ ३
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहँ कोउ न जाना ॥
जेहि दीनपियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्रीभगवाना ॥
भववारिध मन्दर सब विधि सुन्दर गुणमंदिर सुखपुंजा ॥
मुनि सिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा ॥ २३॥४

दोहा—जानि सभय सुर भूमि मुनि, वचन समेत सनेह ॥
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरणि शोक सन्देह ॥ २०८ ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा * तुमहिं लागि धरिहौं नर भेशा ॥
अंशनि सहित मनुज अवतारा * लेहौं दिनकर वंश उदारा ॥
*कश्यप अदिति महातप कीन्हा * तिनकहँ मैं पूरब वर दीन्हा ॥
ते दशरथ कौशल्या रूपा * कोशलपुरी प्रगट नर भूपा ॥
तिनके गृह अवतरिहौं जाई * रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ॥

जाकर सत रज तम तीन प्रकारका बनाई सो हपापनाशक! हमारी सुधला हम-तुम्हारी भक्ति और पूजा नहीं जान्नेहैं सो संसारके भय दूर करनेहारेजनोंके मनको आनंद देनेहारे विपत्तिदूर करनेहारे मन वचन कर्म वाणीसे चतुरता छोडके देवता सब आपकी शरणहैं ॥ ३ ॥ सरस्वती शेष सम्पूर्ण ऋषि जिसको कोई नहीं जान्ता जिसको दीन पियारेहैं ऐसा वेद पुकारताहै सो भगवान् हमारे ऊपर कृपाकरो संसारसमुद्रके मथनेको मंदराचल गुणोंके मंदिर सुखके ढेरहो मुनि सिद्ध देवता सब परमभयातुरहो आपके चरणकमलको नमस्कारकरतेहैं॥४॥

* किसीसमय कश्यप अदितिने तपस्याकर विष्णुसे यह वर मांगा कि जब जब आप अवतार लेवें तब तब हमहीं आपके माता पिताहोवें इसलिये प्रत्येक् अवतारमें यही माता पिता हुये यहांभी दशरथ कौशल्यामें इनका अंश दिखलाकर पूर्व वरदानको सिद्धकिया ॥

१ आकाशवाणी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारद वचन सत्य सब करिहौं * परम शक्तिसमेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमि गरुआई * निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मवाणी सुनि काना * तुरत फिरे सुरहृदय जुडाना ॥
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा * अभय भई भरोस जियआवा ॥

दोहा-*निज लोकहि विरंचि गये, देवन्ह इहै सिखाय ॥
वानर तनु धरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय ॥ २०९॥

गये देव सब निज निज धामा * भूमि सहित पाये विश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा * हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा ॥
वनचर[2] देह धरी क्षिति[3] माहीं * अतुलित बल प्रताप[4] तिनपाहीं ॥
गिरि[5] तरु[6] नख आयुध सब बीरा * हरि मारग चितवहिं रणधीरा ॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरिपूरी * रह निज निज अनीकरचि रूरी ॥

अथ क्षेपक ॥

यह सब चरित सुना विबुधारी * अपने मन यों कही विचारी ॥
रहत सकल मम वश रविवंशी * ते का सकिहैं मोहिं विध्वंसी ॥
भये दिलीप भूप जब आई * खबर दूतसे रावण पाई ॥
तुरत चला बल देखन आवा * द्विज लख नृप रानिन बैठावा ॥
पूजत पग प्रगटेसि निज रूपा * भागीं भवन भीरु मणिभूपा ॥

* शंका-सम्पूर्ण देवता तौ ब्रह्मलोकको गयेथे और अब लिखाकि "निज लोकहि विरंचि गये" उत्तर-ब्रह्माजीके दो लोकहैं एक निज लोक, दूसरा सुमेरु पर्वत पर सभास्थान सो देवता सभास्थानमें गयेथे वहांसे ब्रह्मा अपने लोकको गये अथवा ब्रह्माजीने देवतौंको कहाकि तुम वानरका शरीर धारण करो और निजलोकहि अर्थात् अपनेको कहाकि मैंभी अवतारलूंगा सो जाम्बवन्तका अवतार ब्रह्माजीके अंश से हुआ ॥

१ गोरूपपृथ्वी । २ बंदरोंकी । ३ भूमि । ४ ऐश्वर्य ५ पर्व्वत । ६ वृक्ष ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब रावण सरयू तट आयो * अर्चत तंदुल नृपति चलायो ॥
पूछा लोगन ते तब कहेऊ * धेनुहिं हेरि यक मारन चहेऊ ॥
सुमिरत सोइ शालिमें प्रेरे * शत शर ह्वै लागे हरि केरे ॥
सुनिदशमुख मन अचरजआवा * देखा जाय मृतक वन पावा ॥
समुझि प्रताप गयो निज धामा * नृपते बात कही नृपवामा ॥

दोहा-रावण कृत सुनि अवधपति, चंगुल भरि जललीन ॥
पवनमंत्र पढ़ि क्रोधयुत, दक्षिणदिशि तजदीन ॥ २१० ॥
भये विशिख दशलाख लखि, कह नृप लंकहि जाहु ॥
सहित त्रिकूट समुद्र महँ, बोरि फिरहु तेहि नाहु ॥२११ ॥

सोरठा-चले पवनगति मोरि, करन लगे विध्वंस गढ़ ॥
मर्यतनया कर जोरि, दीन दुहाई नृपतिकी ॥ २८ ॥

राजा कोउ रहै ह्याँ नाहीं * लौट गये शर तब नृप पाहीं ॥
पुनि बहु दिन उपरान्त सुहावन * रघुराजा जन्मे जगपावन ॥
मारुतबाण लंक गृह ढाये * मयजा वचन सुनत फिर आये ॥
पुनि अज भये लरनको आवा * बाण प्रेरि गढ लंक पठावा ॥
अतिलँअस्त्रते कटर्क समेता * दीन ताहि पहुँचाय निकेता ॥
तेजवान लखि रहा चुपाई * ता पाछे दशरथ भये आई ॥

दोहा-सुनि रावण निज दूतमुख, मांग पठायो दंड ॥
हरि शर प्रेरे भूप कहँ, जब्यो कपाँट प्रचंड ॥ २१२ ॥

रावण जो पट लेइ उघारी * तौ हम कर देवहिं विनुरारी ॥
मंदिर द्वार गये सब मूंदी * रहा उघार असुरपति खूंदी ॥
टसको पट न भटन मुख मोरे * मिली मार्ग मयजा कर जोरे ॥
तब रावण तप हेत सिधायो * वरहित पितामहा तहँ आयो ॥

१ चावल । २ सिंह । ३ बाण । ४ मन्दोदरी । ५ राजादिलीपकी । ६ पवन ।अग्निबाण । ८ सेना । ९ घर । १० किंवार । ११ लड़ाई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वंरब्रूहि ब्रह्मा कह वानी * सुन रावण बोला सुखमानी ॥
दशरथ नृपति वीर्यते सोई * जगमें पुत्र न प्रगटे कोई ॥
दोहा–सुनि ब्रह्मा दुख मानकर, एवमस्तु उच्चार ॥
गयो भवन दशकंठ तब, मनमहँ कीन विचार ॥ २१३ ॥
तब दशमुख कोशलपुर जाई * कौशल्या हरि ली बरिआई ॥
सहित मंजूषा सागर जाई * राघो मच्छ दिहसि सौंपाई ॥
चतुरानन धर रावण रूपा * लाये मांग सुता सोइ भूपा ॥
वनमेंधरि विधि गये विधिलोका * तहँ सुमंत्र पट खोल विलोका ॥
तब कौशल्या गिरा उचारी * हमहैं कोशल राजकुमारी ॥
नाहिं जाना को वनमें लावा * मुनि सुमंत्र तुरते उठ धावा ॥
लेआये कोशलपुर तामा * रोदन होत रहा नृपधामा ॥
जाय मंजूषा भूपहि दीन्हा * जेहिविधिमिला सो वर्णन कीन्हा ॥
बोले नृप तुम को हो ताता * कहै सुमंत्र सुनिय प्रभु बाता ॥
अवधपुरी दशरथ सुखदानी * ताकर मैं मंत्री सज्ञानी ॥
तब राजा अतिशय सुखपाई * कन्या दशरथको दइ जाई ॥
यह सब रुचिरचरित मैं भाषा * अब सो सुनहु जो बीचहिराखा ॥

इति क्षेपक

अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ * वेदविदित तेहि दशरथ नाऊ ॥
धर्मधुरंधर गुणनिधि ज्ञानी * हृदय भक्ति मति सारंगपानी ॥
दोहा–कौशल्यादिक नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत ॥
पति अनुकूल प्रेम दृढ़, हरिपद कमल विनीत ॥ २१४ ॥
एक बार भूपति मन माहीं * भै गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गये तुरत महिपाला * चरणलागि करि विनय बिशाला ॥
निजदुखसुखनृप गुरुहिं सुनायो * कहिबशिष्ठबहुबिधिसमुझायो ॥

१ ब्रह्मा । २ देखा । ३ वाणी । ४ पवित्र । ५ लज्जा ।

In Public Domain. Gurukul Kangri Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धरहु धीर होइहैं सुतचारी * त्रिभुवन विदित भक्त भयहारी ॥
*शृंगीऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा * पुत्रलागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्ति सहित मुनि आहुतिदीन्हे * प्रगटे अगिनि चारु चरु[1] लीन्हे ॥
जो बशिष्ठ कछु हृदय विचारा * सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हवि बाँटि देहु नृपजाई * यथायोग्य जेहि भाग बनाई ॥

दोहा–तब अदृश्य[2] पावक[3] भये, सकल सभाहि समुझाय ॥
परमानन्द मगन नृप, हर्ष न हृदय समाय ॥ २१५ ॥

गुरुपद वंदि भूप गृह आये * मंजुल मंगल मोद बधाये ॥
तबहिं राउ प्रियनारि बुलाई * कौशल्यादि तहां चलि आई ॥
अर्द्धभाग कौशल्यहिं दीन्हा * उभयभाग[4] आधे कर कीन्हा ॥
कैकेयी कहँ नृप लै दयऊ * रहेउ सो उभयभाग पुनि भयऊ ॥
कौशल्या कैकयी हाथ धरि * दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि॥
इहिविधि गर्भसहित सब नारी * भयउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जादिनते हरि गर्भहि आये * सकललोक सुख संपति छाये ॥
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी * शोभा शील तेजकी खानी ॥
सुख युत कछुक काल चलि गयऊ* जेहि प्रभुप्रगट सो अवसरभयऊ ॥

---

* राजा दशरथकी एक शान्ता कन्यार्था अंग देशके राजा रोमपादनै शान्ता को राजा दशरथसैं मांगलिया दौनोकी मित्रताथी राजाने देदी रोमपादने कन्याकी समान पालन की एक समय अंग देशमें काल पड़ा तब महात्मा औनें कहा यदि विभाण्ड ऋषिके पुत्र ऋष्यशृंग आवैं तौ वर्षा हो परन्तु उनके पिताके डरसे कोई उन्हें न लासका तब वेश्याओंने वहां जानेकी इच्छा की और जिस समय उनके पिता आश्रम पर नहींथे तब यह उनके पासगईं और ऋष्यशृंग उन्हें तपस्वीजान उनके डेरेपर गये तब यह नाव पर चढा छलसै अंग देशमें लाईं. वर्षाहुई, राजाने शान्ता कन्या व्याहदी, पिताभी ज्ञानसै जान चुपरहे तबसे यह वहीं रहे राजा दशरथनै अंग देशसै बुलाया ॥

---

१ हविकापिंड । २ अन्तर्द्धान । ३ अग्नि । ४ दोभाग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–योग लग्न ग्रह बार तिथि, सकल भये अनुकूल ॥
चर अरु अचर हर्ष युत, रामजन्म सुखमूल ॥ २१६ ॥
नवमी तिथि मधुमास[1] पुनीता * शुक्लपक्ष अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्य दिवस अति शीत न घामा * पावन[2]काल लोक विश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि[3] बह बाऊ[4] * हर्षित सुर सन्तन मन चाऊ ॥
बन कुसुमित[5] गिरिगणमणियारा[6] * श्रवहिं सकल सरितामृतधारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना * चले सकल सुर साजि विमाना ॥
गगन विमल संकुल सुर यूथा * गावहिं गुण गन्धर्व बरूथा ॥
वर्षहिं सुमन सु अंजलि साजी * गहगह गगन दुन्दुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा * बहुविधिलावहिं निजनिज सेवा ॥
दोहा–सुर समूह विनती करी, पहुँचे निज निज धाम ॥
जगनिवास प्रभु प्रगटे, अखिल लोक विश्राम ॥ २१७ ॥

छंदचौपय्या ॥

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ॥
हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ॥
भूषणवनमाला नयनविशाला शोभासिंधु खरारी ॥२४॥१॥

छन्दार्थ–वोह दीनदयालु कृपालु कौशल्याके हितकारी प्रगटहुये तब महतारी मुनियोंकाभी मन हरनेहारा अद्भुतरूप देखकर प्रसन्नहुई कैसेहैं प्रभु जिनके मनोहर नयन घनश्याम शरीर चार भुजा शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित भूषण वनमाला चरण तक लंबायमान बडे २ नेत्र शोभाकेसमुद्र राक्षसोंके मारनेहारेहैं ॥१॥

१ चैत्रकामहीना । २ पवित्रकाल । ३ सुगंधित । ४ हवा । ५ वनफूलोंसेप्रफुल्लित । ६ मणियोंकीखानि ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहदुहुँकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधि करौं अनन्ता ॥
माया गुण ज्ञानातीतअमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागर सबगुणआगर ज्याहि गावहिं श्रुतिसंता ॥
सो ममहितलागी जनअनुरागी प्रगटभये श्रीकंता ॥२५॥२॥
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेद कहै ॥
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर नरहै ॥
उपजाजबज्ञाना प्रभुमुसकाना चरितबहुतविधिकीन्हचहै ॥
कहिकथासुनाईमातुबुझाईजेहिप्रकार सुत प्रेमलहै ॥२६॥३॥
माता पुनि बोली सोमति डोली तजहु तात यह रूपा ॥
कीजैशिशुलीला अतिप्रियशीला यहसुख परमअनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदनठाना होइ बालक सुरभूपा ॥
यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकूपा ॥२७॥ ४ ॥

दोहा—विप्र धेनु सुर संतहित, लीन्ह मनुज अवतार ॥
निजइच्छा निर्म्मित तनु, माया गुण गोपार ॥ २१८ ॥

हाथ जोड बोली कि हे अनन्त ? तेरी स्तुति किस प्रकार करूं माया गुण ज्ञानसे परेहो मान रहितहो ऐसा वेद पुराण कहतेहैं दया और गुणोंके समुद्र सबगुणोंमें श्रेष्ठ जिसको वेद और संत गातेहैं सो मेरे कारण प्रेम कर लक्ष्मी पति प्रगटहुये ॥२॥

बहुतसे ब्रह्मांड मायासे निर्मित आपके रोम रोममेंहैं ऐसा वेद कहताहै सो मेरे हृदयमें वासकरताहुआ यह बडा हसी की बातहै इसे सुनकर धीरोंकी मति भी स्थिरनहीं रहती जब कौशल्याको ज्ञान उपजा तौ रामचंद्र हंसे क्योंकि बहुत प्रकारके चरित करना चाहतेथे पूर्वजन्मकी कथा कह माताको समझाया जिस्से पुत्रका प्रेम बढे ॥ ३ ॥ फिर जब यह मति डोली तौ माताने कहा पुत्र यह रूप तजो बाललीला जो परम सुखदायकहै सो करो यह बार्त्ता सुन वे चतुर सुजान देवताओंके राजा बालकहो रोदन करने लगे इस चरित्रको जो गातेहैं वे संसाररूपी कूपमें नहीं पडते अन्तमें नारायणके लोकको जावैंगे ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि शिशु रुदन परमप्रियवानी * सम्भ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित तहँ जहँ धाईं दासी * आनँद मगन सकल पुरवासी ॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना * मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा * चाहत उठन करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मनराजा * कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ गयउ हँकारा * आये द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि नजाई * रूपराशि गुण कहि न सिराई ॥
दोहा–तब नाँदीमुख श्राद्धकरि, जातकर्म सब कीन्ह ॥
हाटक धेनु वसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह ॥ २१९ ॥
ध्वज पताक तोरण पुर छावा * कहि नजाय ज्यहिभाँतिबनावा ॥
सुमनवृष्टि आकाश ते होई * ब्रह्मानंद मगन सब कोई ॥
वृंद वृंद सब चलीं लुगाई * सहजें शृँगार किये उठि धाईं ॥
कनककलश मंगल भरि थारा * गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरती निछावरि करहीं * बार बार शिशु चरणन परहीं ॥
मागध सूत वंदि गुणगायक * पावनगुण गावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू * ज्यहि पावा राखा नाहिं ताहू ॥
मृगमद चन्दन कुंकुम सींचा * मचीसकल बीथिनँबिच कीचा ॥
दोहा–गृह गृह बाज बधाव शुभ, प्रगट भये सुखकन्द ॥
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नरवृन्द ॥ २२० ॥
केकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुंदरसुत जन्मत भइँ सोऊ ॥
वह सुख सम्पति समय समाजा * कहिनसकैं शारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहिभांती * प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी * तदपि बनी सन्ध्या अनुमानी ॥

१ सोना । २ झुंडकेझुंड । ३ स्त्रियां । ४ जोजैसाशृंगारकियेथीशीघ्रतासेवैसेही चलीं । ५ बालकरूपश्रीरामचंद्र परब्रह्मपरमेश्वर । ६ कस्तूरी । ७ हरएकगलीमें।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अगर धूप जनु बहु अँधियारी * उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी ॥
मन्दिरमणि समूह जनु तारा * नृप गृह कलश सो इंदु उदारा ॥
भवन वेदध्वनी अति मुदुवानि * जनुखगमुखरसमयसुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग[2] भुलाना * एकमास[3] तेहि जात न जाना ॥

दोहा—मास[4] दिवसका दिवसभा, मर्म[5] नजानै कोइ ॥
रथ समेत रवि थाकेउ, निशा[6] कौन विधि होइ ॥ २२१ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना * दिनमणिचले करत गुणगाना ॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा * चले भवन वर्णत निज भागा ॥
औरौ एक कहौं निज चोरी * सुनु गिरिजा अति दृढ़ मतितोरी ॥
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ * मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम सुख फूले * बीथिन फिरहिं मगनमन भूले ॥
यह सब चरित जानपै सोई * कृपा रामकी जापर होई ॥
त्यहि अवसर जो ज्यहिविधिआवा * दीन्हभूप जो ज्यहि मनभावा ॥
गज रथ तुरंग हेम[8] गो हीरा * दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥

दोहा—मन सन्तोष सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश ॥
सकल तनय चिरजीवहु, तुलसिदासके ईश ॥ २२२ ॥

कछुक दिवस बीते यहिभांती * जात न जानहिं दिन अरु राती ॥
नामकरणकर अवसर जानी * भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति असभाषा * धरिय नाम जो मुनिगुनिराखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा * मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥
जो आनन्द सिंधु सुखराशी * सींकर[10] ते त्रैलोक्य प्रकाशी ॥

१चन्द्रमा । २ सूर्यनारायण ।३ एकमहीना । ४ वहदिन बढकर एक महीनाके तुल्य होगया । ५ भेद । ६ रात्रि । ७ चरित्र । ८श्रीसूर्य्यनारायण। ९ स्वर्ण १० सींकर अर्थात् एक पानकि बूंदसे तीनों लोक अर्थात् संपूर्ण ब्रह्माण्डको प्रकाश करनेहारा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोसुखधाम राम असनामा * अखिललोकदायक विश्रामा ॥
विश्वभरण पोषण करु जोई * ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरण ते रिपुनाशा * नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥

दोहा–लक्षण धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार ॥
गुरु वशिष्ठ त्यहि राख्यऊ, लक्ष्मण नाम उदार ॥ २२३ ॥

धन्यउ नाम गुरु हृदय विचारी * वेदतत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजन धन सर्वस शिव प्राना * बालकेलि रस तेहि सुख माना ॥
बारेहिते निज हित पतिजानी * लक्ष्मण रामचरण रतिमानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई * प्रभु सेवक जस प्रीति बढ़ाई ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी * निरखहिंछवि जननी तृणतोरी ॥
चारिउ शील रूप गुणधामा * तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदय अनुग्रह इन्दुप्रकाशा * सूचत किरण मनोहरहासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ वरपलना * मातु दुलार करहिं प्रिय ललना ॥

दोहा–व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण विगत विनोद ॥
सो अज प्रेम भक्तिवश, कौशल्याकी गोद ॥ २२४ ॥

कामकोटि छविश्याम शरीरा * नीलकंज वारिद गंभीरा ॥
अरुण चरण पंकज नखजोती * कमलदलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहै * नूपुरध्वनि सुनि मुनिमन मोहै ॥
कटिकिंकिणी उदर त्रयरेखा * नाभि गँभीर जान जेहि देखा ॥
भुजविशाल भूषण युत भूरी * हिय हरिनख शोभा अति रूरी ॥
उर मणिहार पदिककी शोभा * विप्रचरण देखत मन लोभा ॥
कम्बुकंठ अति चिबुक सुहाई * आनन अमित मदन छविछाई ॥
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे * नाशा तिलकको वरणै पारे ॥
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला * अतिप्रिय मधुर सुतोतरि बोला ॥

१ प्रीति । २ माता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीलकमल दोउनयन विशाला * विकटभ्रुकुटि लटकन वर भाला ॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे * बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीतझिंगुलिया तनु पहिराये * जानुपाणि विचरत महिभाये ॥
रूपसकहिंनहिं कहि श्रुति शेषा * सोजाने स्वप्नेहु जिन्ह देखा ॥

दोहा–सुख सन्दोह[1] मोह[2] पर, ज्ञान गिरा[3] गोतीत[4] ॥
दम्पति परम प्रेम वश, करि शिशु चरित पुनीत ॥ २२५ ॥

इहिविधि राम जगत पितु माता * कोशलपुर वासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरणरति मानी * तिनकी यह गति प्रगट भवानी[5] ॥
रघुपतिविमुख[6] यतन करकोरी * कवनसकै भवबन्धन छोरी ॥
जीव चराचर वश करिराखे * सो माया प्रभु सो भय भाखे ॥
भ्रुकुटि विलास नचावै ताही * असप्रभुछांड़ि भजिय कहुकाही ॥
मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई * भजतहिं कृपा करैं रघुराई ॥
इहिविधिशिशुविनोदप्रभुकीन्हा * सकलनगरवासिन्ह सुखदीन्हा ॥
लै उछंग कबहूं हलरावैं * कबहुँ पालने घालि झुलावैं ॥

दोहा–प्रेममगन कौशल्या, निशि दिन जात नजान ॥
सुत सनेह वश मातु सब, बालचरित कर गान ॥ २२६ ॥

एक वार जननी अन्हवाये * करि शृंगार पलँग पौढ़ाये ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना * पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा * आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवाँ चलि आई * भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइ जननी शिशुपहँ भयभीता * देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई * हृदय कम्प मन धीर नहोई ॥
यहाँ वहाँ दुइ बालक देखा * मतिभ्रम मोरि कि आन विशेषा ॥

---

१ आनंदके समुद्र । २ कारण मायासेपरे । ३ वाणी । ४ इन्द्रियनतेपरे । ५ श्रीपार्वती । ६ भक्तिहीन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखि राम जननी अकुलानी * प्रभु हँसि दीन मधुरमुसुकानी ॥

दोहा–दिखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखण्ड ॥
रोम रोम प्रति राजहिं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ॥ २२७ ॥

अगणितरविशशिशिवचतुरानन * बहुगिरि सरितसिंधुमहिकानन ॥
काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ * सो देखा जो सुना नकाऊ ॥
देखी माया सबविधि गाढी * अति सभीत जोरे कर ठाढी ॥
देखा जीव नचावै जाही * देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनुपुलकितमुखवचननआवा * नयनमूंदि चरणन शिरनावा ॥
विस्मयवंत देखि महतारी * भये बहुरि शिशुरूप खरारी ॥
अस्तुतिकरि नजाय भयमाना * जगतपिता मैं सुतकरिजाना ॥
हरिजननिहि बहुविधि समुझाई * यहजनि कतहुँ कहसिसुनुमाई ॥

दोहा–बार बार कौशल्या, विनय करै कर जोरि ॥
अबजनि कबहूं व्यापई, प्रभु मोहिं माया तोरि ॥ २२८ ॥

बालचरितहरि बहुविधि कीन्हा * अति आनँद दासनकहँदीन्हा ॥
कछुककाल बीते सब भाई * बडे भये परिजनसुखदाई ॥
चूडाकरण कीन्ह गुरु आई * विप्रन्ह बहुत दक्षिणा पाई ॥
परममनोहर चरित अपारा * करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम वचन अगोचर जोई * दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई ॥
भोजनकरत बुलावत राजा * नहिं आवहिं तजि बालसमाजा ॥
कौशल्या जब बोलन जाई * ठुमकिठुमकि प्रभु चलहिं पराई ॥
निगमनेति शिव अन्त नपावा * ताहि धरे जननी हठि धावा ॥
धूसर धूरि भरे तनु आये * भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥

---

१ विराट्रूप । २ चन्द्र । ३ ब्रम्हा । ४ पर्व्वत । ५ नदियां । ६ समुद्र । ७ पृथ्वी । ८ वन। ९ चतुर । १० आश्चर्ययुक्त । ११ मूंडन-कर्णवेध। १२ आंगन। १३ नंगोबिनावस्त्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-भोजन करत चपल चित, इत उस अवसर पाइ ॥
भाजि चलें किलकात मुख, दधि ओदन लपटाइ ॥२२९॥

बाल चरित अतिसरल सुहाये * शारद शेष शम्भु श्रुति गाये ॥
जिनकर मन इनसन नहिंराता * तेजगवंचक किये विधाता ॥
भये कुमार[3] जबहिं सब भ्राता * दीन्हि जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई * अल्पकाल विद्या सब पाई ॥
जाकीसहज श्वास श्रुति चारी * सोहरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
विद्या विनय निपुण गुणशीला * खेलहिंखेल सकल नृपलीला ॥
करतल बाण धनुष अति सोहा * देखत रूप चराचर मोहा ॥
जेहि बीथिन विचरहिं सबभाई * थकितहोहिंलखि लोग लुगाई ॥

दोहा-कोशलपुरवासीनर, नारि वृन्द अरु बाल ॥
प्राणहुँते प्रिय लागहीं, सबकहँ राम कृपाल ॥ २३० ॥

अथ क्षेपक ॥

यक दिन एक सलूका आवा * नृपके द्वारे कीश नचावा ॥
देखि राम ठानी मचिलाई * कहेउ मोहिं कपि देउ मँगाई ॥
भूप मँगाय देन बहु लागे * तदपि न लेत रुदत पुनि आगे ॥
तब नृप भाष्यो गुरुते जाई * सुनि वशिष्ठ बोले हरषाई ॥
जेहिहित हठ ठानत सुखदानी * सोकपि[4] और सुनो ममवानी ॥
केशरिपुत्र नाम हनुमाना * पंपापुरमें जिनकर थाना ॥
सो सुग्रीव निकट नृपराई * दूत पठावहु लेहु बुलाई ॥
तुरत भूप भट भूरि[5] पठाये * सकल सुकंठ[6] पास चलि आये ॥

दोहा-कह्यो नृपति संदेश जब, तुरत दिये कपिराय ॥
आये रघुपति ढिग जबै, लीनो हृदय लगाय ॥ २३१ ॥

---

१ भात । २ ठग । ३ आठवर्षसेउपरांतकौमारअवस्थाकहतेहैं । ४ बंदर ५ अनेक । ६ सुग्रीव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहँ जहँ खेलैं राम सुरंगा * तहँ तहँ कपि राखैं निज संगा ॥
यक दिन राम पतंग उड़ाई * देवलोकसों पहुँची जाई ॥
तहँ हरिसुत जयंतकी नारी * अति विचित्र सो चंग निहारी ॥
कियो विचार पतंग जासुकर * सो जन कैसोहै सुंदरवर ॥
पकर लई तब प्रभुने जानी * बोले महावीरसों वानी ॥
किन पकरी यह चंग हमारी * देखहु जाय छुड़ाउ विचारी ॥
तुरत पवनसुत जाय निहारी * देहु छांडि पुनि गिरा उचारी ॥
बोली जासु चंग यह आही * दरशन तासु कीन हम चाही ॥
ताहीते याको हम गहेऊँ * आय पवनसुत प्रभुते कहेऊ ॥
सुनि प्रभुकहा कहो तुम जाई * चित्रकूट महँ देब दिखाई ॥

दोहा-जाय कही हनुमान पुनि, छोड़ दीन सुखपाय ॥
खैंची राम पतंग तब, रहे मोद मन छाय ॥ २३२ ॥

इति क्षेपक ॥

बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई * वनमृगयाँ नित खेलहिं जाई ॥
पावनमृगँ मारहिं जियजानी * दिनप्रति नृपहि देखावहिं आनी ॥
जे मृग राम बाणके मारे * ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखासँग भोजन करहीं * मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥
ज्यहिविधिसुखीहोहिंपुरलोगा * करहिंकृपानिधि सोइ संयोगा ॥
वेद पुराण सुनहिं मनलाई * आपु कहहिं अनुजहि समुझाई ॥
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसुमांगि करहिं पुरकाजा * देखि चरित हर्षहिं मन राजा ॥

दोहा-व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुण नाम नरूप ॥
भक्त हेतु नाना विधिहि, करत चरित्र अनूप ॥ २३३ ॥

१ अपने। २ पतंग। ३ वाणी। ४ पकरा। ५ आनंद। ६ शिकार। ७ हरिण। ८ शरीर। ९ भाई। १० सम्पूर्णकलातेरहित। ११ चेष्टारहित। १२ अजन्मा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सब चरित कहा मैं गाई * आगिल कथा सुनहु मन लाई ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी * बसहिंविपिन शुभ आश्रमजानी ॥
तहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं * अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
गाधितनय मन चिन्ता व्यापी * हरि विनु मरहिं न निशिचर पापी ॥
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा * प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा ॥
यहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई * करि विनती आनौं दोउ भाई ॥
ज्ञान विराग सकलगुणअयना * सोप्रभु मैं देखब भरि नयना ॥

दोहा—बहुविधि करत मनोरथ, जात न लागी वार ॥
करि मज्जन सरयू सलिल, गये भूप दरबार ॥ २३४ ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा * मिलन गयउ लै विप्रसमाजा ॥
करि दण्डवत मुनिहि सनमानी * निज आसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा * मोसम धन्य आजु नहिं दूजा ॥
विविध भांति भोजन करवावा * मुनिवरहृदय हर्ष अति छावा ॥
पुनि चरणन मेले सुतचारी * राम देखि मुनि देह विसारी ॥
भये मगन देखत मुख शोभा * जनु चकोर पूरण शशि लोभा ॥
तब मन हर्ष वचन कह राऊ * मुनि असकृपा कीन्हनहिंकाऊ ॥
केहिकारण आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत नलाउबवारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं * मैं याँचन आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुजँ समेत देहु रघुनाथा * निशिचर वध मैं होब सनाथा ॥

दोहा—देहु भूप मन हर्षित, तजहु मोह अज्ञान ॥
धर्म्मसुशय नृप तुम कहँ, इनकहँ अति कल्यान ॥ २३५ ॥

सुनिराजा अति अप्रियवानी * हृदयकम्पमुखद्युतिकुँभिलानी ॥

१ विश्वामित्र । २ धाम । ३ जल । ४ ब्राह्मण । ५ राजादशरथ । ६ निकाया ७ लक्ष्मणजी । ८ प्रकाश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौथेपन पायउँ सुतचारी[2] * विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी ॥
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा[3] * सर्वस देउँ आजु सहरोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं * सोउ मुनि देउँ निमिष[4] इक माहीं ॥
सबसुत प्रिय मोहिं प्राणकिनाई * रामदेत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा * कहँ सुंदरसुत परम किशोरा ॥
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी * हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब वशिष्ठ बहुबिधि समुझावा * नृप संदेह नाश कहँ पावा ॥
अति आदर दोउ तनय बुलाये * हृदय लाइ बहुभांति सिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ * तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दोहा—सौंपे भूपति ऋषिहि सुत, बहुविधि देइ अशीश ॥
जननी भवन गये प्रभु; चले नाइ पदशीश ॥ २३६ ॥

सो०—पुरुषसिंह दोउ बीर, हर्षि चले मुनि भय हरण ॥
कृपासिंधु मतिधीर, अखिल विश्व कारण करण[5] ॥ २९ ॥

चलत विदा कीने हनुमाना * मिलिहैं वनहिं कहां भगवाना ॥
अरुणनयन उर बाहु विशाला * नीलजलजतनु श्याम तमाला ॥
कटि पटपीत कसे वरभाथा[6] * रुचिर चाप सायक दुहुँहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउभाई * विश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना * मोहिं हित पिता तजे भगवाना ॥
चलेजात मुनि दीन्ह दिखाई * सुनि ताडका क्रोधकरि धाई ॥
एकहि बाण प्राण हरिलीन्हा * दीनजानि त्यहि निजपददीन्हा ॥
तबऋषिनिजनाथहिं जियचीन्हा * विद्यानिधिकहँ विद्या दीन्हा ॥
जाते लागि न क्षुधा पियासा * अतुलितबल तनु तेज प्रकाशा ॥

१ वृद्धापा । २ राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न । ३ खजाना । ४ पल । ५ सम्पूर्ण विश्व । ६ श्रेष्ठतरकस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—आयुध सकल समर्पिकै, प्रभु निज आश्रम आनि ॥
कन्द मूल फल भोजन, दिये भक्तहित जानि ॥ २३७॥

प्रातकहा मुनिसन रघुराई * निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥
होम करन लागे मुनिझारी * आपुरहे मखकी रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर कोही * लै सहाय धावा मुनि द्रोही ॥
बिनुफर बाण राम तेहिमारा * शतयोजन गा सागर पारा ॥
पावकशर सुबाहु पुनि मारा * अनुजनिशाचर कटक सँहारा ॥
मारिअसुर द्विज निर्भयकारी * अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥
तहँपुनि कछुकदिवस रघुराया * रहे कीन विप्रन पर दाया ॥
भक्तिहेतु बहु कथा पुराना * कहैं विप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई * चरित एक प्रभु देखिय जाई ॥
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुल नाथा * हर्षि चले मुनिवरके साथा ॥
आश्रम एक दीख मगमाहीं * खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं ॥
पूछा *मुनिहिं शिला प्रभु देखी * सकलकथाऋषि कही विशेषी ॥

दोहा—गौतमनारी शापवश, उपल देह धरि धीर ॥
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर ॥ २३८ ॥

छंद मात्राविभंगी ॥

परशतपदपावन शोकनशावन प्रगट भई तपपुंजसही ॥
देखतरघुनाथकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही ॥

* किसी समय ब्रह्माने एक कन्या उत्पन्नकर उसका नाम अहल्याधरा जिसको परमसुंदरी देख सब सुर मुनि मोहितहो इच्छा करनेलगे ब्रह्माजी वह कन्या गौतमजीको धरोहरकी नाई सौंपकर चलेगये कुछ काल उपरांत जब फिर ब्रह्माजी आये मुनिसे पूंछा वह कन्या क्याकी मुनिने कहा लीजिये ऐसा कह

१ बला अतिबला द्वौ विद्या जिनते सबशास्त्र उत्पन्न भयेहैं । २ यज्ञ । ३ क्रोधकरके । ४ अग्निबाण । ५ दिन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिप्रेमअधीरा पुलकशरीरा मुखनहिंआवैवचनकही ॥
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही॥२८॥
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपाभक्तिपाई ॥
अतिनिर्मलवाणी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजयरघुराई ॥
मैंनारि अपावनि प्रभुजगपावन रावणरिपुजनसुखदाई ॥
राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिआई ॥२९॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ॥
देखेउँभरिलोचन हरिभवमोचन यहै लाभ शंकर जाना ॥
विनती प्रभु मोरी मैंमति भोरी नाथ न मांगौ वर आना ॥
पदकमलपरागा रसअनुरागा मममनमधुपकरैपाना ॥३०॥
जोहिपद सुरसरिता परमपुनीता प्रगटभई शिव शीशधरी ॥
सोई पदपंकजज्यहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी ॥
इहिभाँतिसिधारी गौतमनारी बार बार हरिचरणपरी ॥

सन्मुख उपस्थित करदी तब पितामहने उनकी जितेन्द्रियतासें सन्तुष्ट होकर वह कन्या उन्हींको प्रदान करदी तब इन्द्रको बड़ा क्षोभ हुआ एक दिन गौतमजी तो घर नहींथे तब इन्द्र गौतमजीका स्वरूप धर द्वारपर पुकार अहल्यासे कहा कि हम कामातुरहैं तब अहल्याने कहा महाराज इस वेलामें आपका ज्ञान कहांगया उत्तरदिया कि तू पतिव्रताहै पतिके वचनको मान तब वह आज्ञाभंग नकरसकी और कार्यकी सिद्धिमें तत्परहुई उसी समय गौतमऋषिने द्वारपर पुकारा पतिका शब्द पुनः सुन चिंतामें होय कोपकर इंद्रसे पूंछा कि सत्य बोल तू कौनहै तब इंद्रने डरकर नाम कहदिया अहल्या इंद्रको छिपाय किवांड खोलनेगई तब ऋषिने पूछा इतनी देर कैसे हुई तब अहल्याने झूंठ बोला ऋषिने ध्यानसे सब चरित जान इन्द्रको शापदिया कि तेरे शरीरमें सहस्र भग होजांयगी और अहल्याको शापदिया कि तू शिलाहो जब रामचंद्र आवेंगे तब पुनः अपने शरीरको प्राप्त होगी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोअतिमनभावासोवरपावागइपतिलोकअनन्दभरी ॥ ३१ ॥

दोहा-अस प्रभु दीनबंधु हरि, कारणरहित कृपाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छांड़ि कपट जंजाल ॥२३९॥

चले राम लक्ष्मण मुनि संगा * गये जहां जगपावनि गंगा ॥
अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामा * बहुप्रकार सुख पायउ रामा ॥
पुनि सुरसरि उत्पति रघुराई * कौशिकसन पूछा शिरनाई ॥

अथ कथा क्षेपक-गंगाजीकीउत्पत्तिकी ॥

कह मुनि प्रभु तव कुल इकराजा * नामसगर तिहुँलोक विराजा ॥
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी * प्रथम केशिनी सुमति पियारी ॥
सबप्रकार सम्पति सुरभ्राजा * सुतविहीन मनविस्मय राजा ॥
एकसमय भामिनि दोउ साथा * गये वन तनय हेतु रघुनाथा ॥
सघन सफल तरु सुन्दर नाना * तहँ भृगुमुनि तपतेज निधाना ॥

दोहा-सहित नारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शतएक ॥
कीन्हे तप बल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक ॥२४०॥

कहि निजदुख प्रणाम नृप कीन्हा * दैअशीश तब मुनि वर दीन्हा ॥
नृपरानीसन मुनि असभाषा * लेहु स्ववर जोजेहि अभिलाषा ॥
सुनि मुनिवचन शीशतिननावा * देहुनाथ जो अति मनभावा ॥
एकहि कह्यो एकसुत होना * दूसरि साठिसहस गुणलोना ॥
हर्षित भयो सुभग वर पाई * पाणिजोरि चरणन शिरनाई ॥
सहित भामिनी अवधहिं आये * हर्ष सहित कछुदिवस गँवाये ॥
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई * नामकेशि असमंजस जाई ॥
सुमति प्रसव यक तुम्बरि सोई * भये सुत प्रकट कहे मुनि जोई ॥
निरखे सुत हरषित सब होई * मंगलचार किये सब कोई ॥

१ गंगाजी । २ दोनों । ३ पुत्र । ४ चिंता । ५ वृक्ष । ६ हाथ । ७ बिन । ८ उत्पन्नकिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हर्ष सहित दिये दान नरेशू * पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू ॥
घृतघट सुन्दर विविध मँगाये * ते सब सुत नृप तिन महँ नाये ॥
दोहा—यहि विधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम ॥
जाइ दिवस निशि हर्ष वश, सुनहु राम घनश्याम ॥२४१॥

पुरजन सब घर घरनि नरेशू * अति आनँद तनु मिटा अँदेशू ।
बालकेलि कर भये कुमारा * लीला करैं अगम संसारा ।
होइँसोकाज सकल मनचीते * यहिसुख बसत बहुतदिन बीते ।
सरयू नदी अवध जो अहई * विमलँ सलिलँ उत्तर तट बहई ।
प्रजालोकके बालक नाना * नित उठि तहां करैं अस्नाना ।
असमंजस तहँ तरनी आनी * तिनहिं चढ़ाइ बोरि निजपानी ।
भये प्रजा सब परम दुखारी * बालक वधँ सुनि सुनहु खरारी ।
सकल गये जहँ बैठ नृपाला * बोले वचन नाइ पद भाला ॥
तुम नृप चहहु प्रजाप्रतिपाला * सुत तुम्हार भा सबकर काला ।
तजब देश सब सुनहु नरेशू * विना तजे नहिं मिटै कलेशू ।
दोहा—तवसुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक वृन्द ॥
तुमकहँ प्राण समान यह, सकल प्रजन कहँ मन्द ॥२४२॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा * सुतहि देशते बाहर कीन्हा ।
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ * गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ ।
बसत हृदय नृपके सो कैसे * मुनिमन मीन सलिल रह जैसे ।
गये प्रजा सबनिजनिजधामा * भये विलोकि मनगुण विश्रामा ।
बहुरिनृपति मनकीन्हविचारा * आइ भयोपन चौथ हमारा ।
हितमंत्री गुरुसुतहु बुलाये * हिमगिरि विन्ध्यमध्य तब आये ।
रुचिर वेदिका एक बनाई * देखत बनइ वरणि नहिं जाई ।

१ रानियाँ । २ आठवर्षके । ३ निर्मल । ४ जल । ५ नाव । ६ अपनेहाथसे ७ नाश । ८ श्रीरामचन्द्र । ९ मस्तकसे ।

In Public Domain. Shambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मख अरम्भ छांड़े तब तुरँगा * वेगवन्त जिमि देखिय उरँगा ॥

दोहा—सुरपति सुन भय दारुणहिं, मनमहँ करि अनुमान ॥
आन तुरँग तब लीन्हेउ, मर्म्म न काहू जान ॥ २४३ ॥

राखे आनि कपिल मुनि पाहीं * कोउ न जान काहुहि गमनाहीं ॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने * ले तुरंग रहे किनहुँ न जाने ॥
तिनसब आय कही नृप पाहीं * महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरंग कोइ जान न कोई * कहा करिय जो आयसुहोई ॥
सुनत वचन नृप विस्मय पाये * सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये ॥
जाहु तुरंग तुम हेरहु जाई * सकल चले चरणन शिरनाई ॥
सुरपति सम देखियसबवीरा * सकल धनुर्द्धर अति रणधीरा ॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई * बलि पशु जीव भये सब आई ॥
सुमनवाटिका उपवन बागा * सरित कूप वापिका तँडागा ॥
नगर गाँव मुनीश थल नाना * गिरिकन्दर कानन अस्थाना ॥

दोहा—इहि विधि खोजेहु तुरँग तिन, आये भूपति पाहिं ॥
चरणन माथहि नाइकहि, खोज अश्वकी नाहिं ॥ २४४ ॥

खोदहु महिसुत करहि पठाये * चले सकल पूरवदिशि आये ॥
तिनकेंकरजिमिकुलिश समाना * योजन भरि खोदहिं बलवाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने * नरनाहन विरंचि सनमाने ॥
शोधत महि पताल सब आये * दिग्गज देखि एक शिरनाये ॥
तिनपूंछा सबकथा सुनाये * बहुरि सकल दक्षिण दिशि आये ॥
इहिविधि पुनि दूसरगजदेखा * अतिउतंगगज विमल विशेषा ॥
ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे * चले सुनत पश्चिम चित दीन्हे ॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही * पुनिउत्तरदिशि शोधहि लीन्ही ॥

---

१ यज्ञ । २ घोडा । ३ सर्प । ४ इन्द्र । ५ फुलवारी । ६ नदी । ७ तलाव ८ वन । ९ ऊंचा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिग्गजश्वेत निरखि सुखपाये * सकलकपिलमुनिपहँपुनिआये ॥
खोजत मही पार नहिं पावा * शोभाचहुँदिशिजलधिसुहावा ॥

दोहा—देखिनि आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास ॥
बोले वचन सकोप करि, भाचह सबकर नाश ॥ २४५ ॥

खोदा महि हम चारिउ कोधा * रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई * इहिसम छली और नहिं कोई ॥
परधन लै पताल पुनि आये * तस्कर मुनिवर भेष बनाये ॥
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं * समुझि देखि लक्षण मन माहीं ॥
कोउकह बक तपकीन्ह अपारा * अहो दुष्ट लै तुरंग हमारा ॥
सुनतवचनमुनि चितवा जबहीं * भये भस्म सब क्षणमें तबहीं ॥
उमावचन जेहि समुझि नबोला * सुधा होइ विष तिक्तमओला ॥
पावकजानि धरहिं कर प्रानी * जरहिंकाहिनहिंअतिअभिमानी ॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं * सुनहु राम ते काहेन मरहीं ॥
क्रोधकियो विनकिये विचारा * भयेसकल तेहिते जरिक्षारा ॥
इहाँ नृपति अंशुमान बुलाये * नहिं आये सब तिनहिं पठाये ॥

दोहा—दीन्ही नृपति अशीश तब, अतिहित बारहिंबार ॥
वेगि फिरहुलै तुरंग सुत, मेरे प्राण अधार ॥ २४६ ॥

चले नाइपद शीश कुमारा * विष्णुभक्त हित कुल उजियारा ॥
जहँ तहँ देखि मुनिनके धामा * पूछि खबरि करि दण्डप्रणामा ॥
पन्नग अहिसन पाइ अशीशा * चहुँदिग्गज कहँ नायउ शीशा ॥
यहिविधि शोधत मगमहँजाता * मिलेगरुड सुमनीकर भ्राता ॥
चरणपरत तब आशिष दयऊ * जरेसकल जेहिविधि सोकहेऊ ॥
सुनतहि वचन सोचभयो भारी * दिये खगेश दिखाय सुवारी ॥

---

१ उज्ज्वलहाथी । २ समुद्र । ३ घोडा । ४ चोर । ५ पार्वती । ६ अमृत । ७ अग्नि । ८ विष । ९ शेषनाग । १० दिक्पाल-हाथी ।

In Public Domain. Gbamkol Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा * क्रमक्रमसबहिंजलांजलिदीन्हा ॥
बहुरि गरुड बोले सुन भ्राता * मैं तोहिं कहौं करिय यक बाता ॥
सो०—करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि महँ ॥
दरशनते अघ जाय, मज्जन कीन्हे परमसुख ॥ २४७ ॥
षष्टिसहस्र तरिहैं येही विधि * गंगा पाय परम पावननिधि ॥
सुनि अस वचन हृदयमनभाये * सहित गरुड मुनिवर पहँआये ॥
तबखगेशमुनि चरणन नायउ * पूरबकथा सकल मुनि गायउ ॥
आयसु देइ तुरंग मुनि दीन्हा * हर्षिहृदय निजअश्वहिचीन्हा ॥
नगर समीप गरुड पहुँचाई * गये भवन निज तब रघुराई ॥
यहाँ तुरँगलै नृप शिरनाई * षष्टिसहस्र मुनि कथा सुनाई ॥
विस्मयहर्षविवश नृप भयऊ * कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुविधि नृपतिराजमुनि कीन्हा * प्रजालोगकहँ अतिसुखदीन्हा ॥
दोहा—अंशुमानहित राज्यदै, निज मन हरिपद लाग ॥
गयउखगरतप काज वन, हृदय अधिक अनुराग ॥ २४८ ॥
तासुत नाम दिलीपनृप भयऊ * वनतप हेतु उतरदिशि गयऊ ॥
वहाँ अगम तप कीन्हनृपाला * भये कालवशगयेकछुकाला ॥
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई * सेवैं सकल नृपति जेहि आई ॥
जुगवतजिहि नित सुरपतिरहहीं * महिमातासुकविकेहिविधिकहहीं ॥
भागीरथ अस सुत भयो जासू * पितुसमप्रीति अधिक उरतासू ॥
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू * आप चले उठि तपके काजू ॥
मनमहँ करत पंथ अनुमाना * सुरसरि आव तजउँ नतु प्राना ॥
निज मन तनु दीन्हेउ निमिदोऊ * फिर निज नगरक नामन लेऊ ॥
सो०—यहि विधि करत विचार, नृप कीन्हे तप प्रबल तब ॥
बीते कछु यक काल, देह तजी कोउ प्रगट नहिं ॥ ३० ॥

---

१ ज्ञान । २ पृथ्वी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेहि सुरसरिलगि तजितनु भूपा * सोतजि मूढ पियहिं जलकूपा ॥
इहां भगीरथ असमन भयऊ * पितु नआव बहुदिन चलिगयऊ ॥
काकुत्स्थनामतनय यक रहेऊ * दीन्हा राजनीति बहु कहेऊ ॥
कहि तब पूर्वकथा सुत पाहीं * दीन्ह अशीश चले नरनाहीं ॥
निकसत नगर शकुन भलपाये * अतिहिनिबिर्डवनजहँ नृप आये ॥
देखि भगीरथ वन सुख पावा * सुरसरि हित तपकहँ मनलावा ॥
एकचरण दोउ भुजा उठाये * रविसन्मुख चितवहिं मनलाये ॥
वर्षसहस बीते यहि भांती * जात न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्रतप अज चलिआये * बोले वचन नृपहिं मन भाये ॥
चहहि नृपति जोले वरदाना * बोले नृप करि अजहिं प्रणामा ॥
जो मांगौं सो जानत अहहू * सो मन मांगन प्रभु किमि कहहू ॥

दोहा—तदपि कहौं प्रभु देहु वर, सब सन्तन कहँ वृद्धि ॥
दूसर मांगौं जोरि कर, गंगा आवहिं निद्धि ॥ २४९ ॥

एवमस्तु कहि पुनिविधिभवही * सुरसरि देहुँ राखि को सकही ॥
छूट जाहि पुनि तुरत रसातल * फिरहिननृपति बहुरिसुनुभूतल ॥
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं * अति दयालु शंकर मनमाहीं ॥
सोइशिव रखहिं देवसरि आजू * उनहिजपे तव होइहै काजू ॥
असकहि विधि अन्तरहितभये * बहुरिभगीरथ शिवपहँ गये ॥
विबुधवर्ष अंगुष्ठ अधारा * बार बार शिव नाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रगटे तब आई * हाथ जोरि नृप विनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कह ईशा * बहुरि रमापति ध्यान करीशा ॥

दोहा—वहां देवसरि शिववचन, सुनि मन कीन्ह विचार ॥
जाउं रसातल शिव सहित, जात न लावौं बार ॥ २५० ॥

१ श्रीगंगाजी । २ कुंवा । ३ सुत । ४ सघन । ५ दारुण । ६ ब्रह्माजी । ७ पातालोक । ८ पृथ्वी-मृत्यलोक ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्तर्यामी शिवहि उपाई * निज शिर जटा सो अगम बनाई
यहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्हीं * सुनिमृदुगिराछांड़िविधिदीन्हीं ॥
छूटे शोर भयउ जग भारी * चकित देव अहि दिग्गज चारी ॥
सुरसरि पुनि हरजटा समानी * वर्ष एक तहँ रहीं भवानी ॥
कौतुक देखि सकल सुर हरषे * कह जय जयति सुमनबहुवरषे ॥
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा * डारिजटा शिव बुन्दुक दीन्हा ॥
तेहिते भई तीनि पुनि धारा * एक गई नभ एक पतारा ॥
गङ्गनभसोइकिभई अघनाशिनि * देवन धरा नाम मन्दाकिनि ॥
दोहा—दूसरि गई पतालमें, नाम प्रभावति हरण दुख ॥

तीसरि भइ गंगा सोई, सब सन्तनको करण सुख ॥२५१॥
जलप्रवाह निरखत नृपति, उर अति भयउ अनन्द ॥
जैसे उमड़त सिन्धु तब, पूर्ण कला लख चन्द ॥ २५२ ॥

आय भगीरथ पुनि शिर नाये * बोली सुरसरि वचन सुहाये ॥
वेगवन्त नृप रथ ले आनू * तुरत तुरँग शुभगति जिमि भानू[1] ॥
तेहिरथचढ़ि नृप चलु मम आगे * चलिहौं मैं तव पाछे लागे ॥
सुनि नृप दिव्य तुरँग रथ आना * चले हृदय सुमिरत भगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहि सुरसरी * देवन मुदित सुमन झरि करी ॥
चलत तेज कछु वरणि न जाई * टूटहिं गिरि[2] तरु[3] शैल सुहाई ॥
करैं कुलाहल विधि बहु भाँती * कमठ[4] नक्र झष[5] व्याल[6] सोमाती ॥
मज्जन[7] करहिं देव तहँ आई * सुनि गति सिद्ध रहे सब छाई ॥

सोरठा—तर्पण कर मन लाय, हर्ष हृदय नहिं जात कहि ॥
दरशनते अघ[8] जाय, तरैं सकल मुनि जन कहैं ॥ ३१ ॥

---

१ सूर्य । २ पर्वत । ३ वृक्ष । ४ कछुआ । ५ मछली । ६ सर्प्प । ७ स्नान । ८ पाप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मज्जन कर हरषाय, सुर अजादि सनकादि ऋषि ॥
पान करत अघ जाय, अस मत सब कोऊ कहैं ॥ ३२ ॥

करै जो मज्जन जप मन लाई * तिनकी महिमा कहिनसिराई।
रथपर जात सोह नृप कैसे * तेजवन्त रवि देखिय जैसे।
लांघत शैलै सुहावन देशा * पाछे सुरसरि अग्र नरेशा।
हरिद्वार समीप जब आये * तीर्थ देखि सुरसरि मनलाये।
तीर्थ निरखि मन भयो सुखभारी * आदिप्रयाग पहुँचि अघहारी।
तहँ मज्जन कीन्हे दुखजाई * बहुरि देवसरि काशी आई।
सो शिवपुरी सहज सुखदाई * वरणि नजाइ मनोहर ताई।
अबसे तीर्थ विविधविध जानी * गई तहाँ किमि कहौं बखानी।
मगलोगन कहँ करत सनाथा * जाइ चली इहिविधि रघुनाथा।

दोहा—मिली जाइ पुनि उदधि महँ, उदधि हृदय सुखमान ॥
लगे कहन भागीरथहि, तुम सम धन्य न आन ॥ २५३ ॥

कीन्हो अस जो करहि नकोई * तप महिमा बल कसनाहिं होई।
सगर सुतनय तरे ततकाला * हर्षवन्त तब भयो नृपाला।
अबलौं रहोहैं कुलमहिं कोऊ * तिनके संग तरे अब सोऊ।
तुम समान नृप और न भयऊ * जगविख्यात अचलयश लयऊ।
सकल सुरन तहँ संग विधाता * नृपसँन आय कही सब बाता।
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ * तुम समान नृप अवर नभयऊ।
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ * सम्मत वेद जनन सुख दयऊ।
गंगासागर सब कोइ कहहीं * अघ उलूक देखत रवि डरहीं।
भागीरथी नाम अरु कहहीं * सुनि सुर सिद्ध नाग यश लहहीं।
असविधिकहिनिजलोकहिआये * जहां भगीरथ आति सुख पाये।

१ पीनेसे। २ पर्व्वत। ३ रास्ता। ४ समुद्र। ५ दूसरे। ६ ब्रह्मा। ७ राज

In Public Domain. Chanbal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छं०—पायो अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइकै ॥
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृपभवन सुख पाइकै ॥
इहि भाँति सुनि गंगा कथा तब राम रुचि चरणन नये ॥
कह दास तुलसी राम लषणहिं महा मुनि आशिष दये ॥ ३५ ॥

दोहा—कौशिक आशिष अमियसम, पाय हर्ष रघुराज ॥
प्रभु संशय सब इमि गई, लवा निरखि जिमि बाज ॥ २५४ ॥
आशिष सुधा समान सुनि, हरषे श्रीरघुनाथ ॥
प्रभु सुख पाइ कहेउ पुनि, वेगि चलिय मुनिनाथ ॥

राम नामते संशय जाई * देह धरे कर यह फल भाई ॥
इति क्षेपक ॥

गाधितनय सब कथा सुनाई * ज्यहिप्रकार सुरसरि महिआई ॥
तब प्रभु ऋषिन्ह समेत नहाये * विविधदान महिदेवन पाये ॥
हर्षि चले मुनिवृन्द सहाया * वेगि विदेहनगर[2] नियराया ॥
पुररम्यता राम जब देखी * हर्षे अनुज समेत विशेषी ॥
वापी कूप सरित सर नाना * सलिल सुधासम मणि सोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा[4] * कूजत कल बहु वरण विहंगा ॥
वरण वरण विकसे जलजाता[5] * त्रिविधसमीर[6] सदा सुखदाता ॥

दोहा—सुमनवाटिका बाग वन, विपुल विहंग निवास ॥
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँ पास ॥ २५५ ॥

बनै न वर्णत नगर निकाई * जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई ॥
चारु बजार विचित्र अटारी * मणिमयविधिजनुस्वकरसँवारी ॥
चौहट सुन्दर गली सुहाई * सन्तत रहहिं सुगन्ध सिचाई ॥
धनिकवणिक बर धनद[7] समाना * बैठे सकल वस्तु ले नाना ॥

१ बटेर । २ जनकपुरी । ३ सिद्धी । ४ भ्रमर । ५ कमल । ६ शीतल-मंद सुगन्ध, वायु । ७ कुबेर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंगलमय मन्दिर सब केरे * चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर नारि शुभग शुचि संता * धर्म्म शील ज्ञानी गुणवंता
अति अनूप जहँ जनकनिवासू * विथकहिं विबुध विलोकि विलासू
होतचकितचित कोट विलोकी * सकल भुवन शोभा जनु रोकी

दोहा—धवल धाम मणि पुरट पटु, सुघटित नाना भाँति ॥
सिय निवास सुन्दर सदन, शोभा किमि कहिजाति ॥२५६॥

शुभगद्वार सब कुलिश[1] कपाटा * भूप भीर नट मागध भाटा
बनी विशाल वाजि गजशाला * हय गज रथ संकुल सबकाला
शूर सचिव सेनप बहुतेरे * नृप गृह सरिस सदन[3] सब केरे
पुरबाहर सर सरित समीपा * उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा
देखि अनूप एक अमराई * सब सुपास सब भाँति सुहाई
कौशिक कहेउ मोर मन माना * इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना
भलेहिनाथ कहि कृपानिकेता * उतरे तहँ मुनि वृन्द समेता
विश्वामित्र महामुनि आये * समाचार मिथिलापति पाये

दोहा—संग सचिव शुचि भूरि भट[6], भूसुर[7] वर गुरु ज्ञाति ॥
चले मिलन मुनिनायकहि, मुदित राउ इहि भाँति ॥२५७॥

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा * दीन्ह अशीश मुदित मुनिनाथा
विप्रवृन्द सब सादर वन्दे * जानि भाग्य बड़ि राउ अनन्दे
कुशल प्रश्न कहि बारहिंबारा * विश्वामित्र नृपहि बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई * गये रहे देखन फुलवाई
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा * लोचन सुखद विश्वचितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये * विश्वामित्र निकट बैठाये
भे सब सुखी देखि दोउ भ्राता * वारिविलोचन पुलकित गाता

---

१ कामदेव । २ वज्रकेकिवाँर । ३ घर । ४ कृपाकेस्थान । ५ पवित्रमंत्री ६ बहुतसेयोद्धा । ७ ब्राह्मण । ८ पास ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूरति मधुर मनोहर देखी * भयउ विदेहु विदेह विशेषी ॥
दोहा—प्रेममगन मन जानि नृप, करि विवेक धरि धीर ॥
बोलेउ मुनिपद नाइ शिर, गदगदगिरा गँभीर ॥ २५८ ॥
कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक * मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहिगावा * उभय भेषधरि की स्वइ आवा ॥
सहज विराग रूप मन मोरा * थकित होत जिमि चंद्र चकोरा ॥
ताते प्रभु पूछौं सदभाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहिं विलोकत अतिअनुरागा * वरवशब्रह्मसुखहिं मन त्यागा ॥
कहमुनिविहँसिकहेउ नृप नीका * वचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
येप्रिय सबहिं जहाँलगि प्राणी * मनमुसुकाहिं राम सुनि वाणी ॥
रघुकुलमणि दशरथके जाये * ममहित लागि नरेश पठाये ॥
दोहा—राम लषण दोउ बन्धु बर, रूप शील बलधाम ॥
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम ॥ २५९ ॥
मुनि तवचरण देखि कह राऊ * कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता * आनँदहूके आनँद दाता ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि * कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू * ब्रह्मजीव इव सहज सनेहू ॥
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू * पुलकगात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पद शीशा * चले लिवाइ नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला * तहाँ वास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब विधि सेवकाई * गयउ राउ गृह विदा कराई ॥
दोहा—ऋषय संग रघुवंशमणि, करि भोजन विश्राम ॥
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवसरहा भरि यामं ॥ २६० ॥

---

१ राजाजनक । २ पुलकितवाणी । ३ प्रीति । ४ पवित्र । ५ राजा । ६ आनंद । ७ पृथ्वीपतिराजा जनक । ८ एकप्रहर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लषण हृदय लालसा विशेषी * जाइ जनकपुर आइय देखी ॥
प्रभुभय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं * प्रकट न कहहिं मनहिंमुसुकाहीं ॥
राम अनुज मनकी गतिजानी * भक्तवछलता हिय हुलसानी ॥
परमविनीत सकुचि मुसुकाई * बोले गुरु अनुशासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं * प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ * नगर देखाइ तुरत लै आऊँ ॥
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती * कस न राम राखहु तुम नीती ॥
धर्म्मसेतु पालक तुम ताता * प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥

दोहा—जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान[1] दोउ भाइ ॥
करहु सफल सबके नयन, सुन्दर वदन दिखाइ ॥ २६१ ॥

मुनि पदकमल वन्दि दोउ भ्राता * चले लोक लोचनसुखदाता ॥
बालक वृन्द देखि अति शोभा * लगे संग लोचन मनलोभा ॥
पीत वसन परिकर कटि भाथा * चारु चाप शर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी * श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरि कन्धर बाहु विशाला * उरअतिरुचिर नागमणिमाला[3] ॥
शुभग[4] श्रवण सरसीरुह लोचन * वदनमयंक तापत्रय मोचन ॥
कानन कनकफूल छबि देहीं * चितवत चित्त चोर जनु लेहीं ॥
चितवनि चारु भ्रुकुटिवरबाँकी * तिलकरेख शोभा जनु चाँकी ॥

दोहा—रुचिरचौतनी[6] शुभग शिर, मेचक[7] कुंचित[8] केश ॥
नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ, शोभा सकल सुदेश ॥ २६२ ॥

देखन नगर भूपसुत आये * समाचार पुरवासिन पाये ॥
धाये धाम[9] काम सब त्यागे * मनहुं रंक[10] निधि[11] लूटन लागे ॥

---

१ सुखकेस्थान । २ सिंहकिशोरकेऐसे । ३ गजमुक्ता । ४ अतिसुंदरकान । ५ छापिदीहै । ६ पगडी । ७ श्यामसचिक्कन । ८ टेढेघुंघुवारेकेश । ९ गृह । १० दलिद्री । ११ भंडार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निरखि सहज सुन्दर दोउभाई * होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥
युवती भवन झरोखनि लागी * निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती * सखि इन कोटिकाम छबिजीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनिमाहीं * शोभाअसि कहुँ सुनियत नाहीं ॥
विष्णुचारिभुज विधि मुखचारी * विकट भेष मुखपंच पुरारी ॥
अपरदेव अस को जग आही * इहिविधि छवि पटंतरिये जाही ॥

दोहा—वय किशोर सुखमासदन, श्याम गौर सुखधाम ॥
अंग अंग पर वारिये, कोटि कोटि शत काम ॥ २६३ ॥

कहहु सखी अस को तनुधारी * जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदुवानी * जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
ये दोउ नृप दशरथके ढोटा * बाल मरालनके कल जोटा ॥
मुनि कौशिक मखके रखवारे * जिन रण अजय निशाचरमारे ॥
श्यामगात कलकंज विलोचन * जो मारीच सुभुजमदमोचन ॥
कौशल्यासुत सो सुखखानी * नाम राम धनु शायक पानी ॥
गौर किशोर भेष वर काछे * कर शर चाप रामके पाछे ॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता * सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दोहा—विप्र काज करि बन्धु दोउ, मग मुनिवधू उधारि ॥
आये देखन चापमख, सुनि हरषीं सब नारि ॥ २६४ ॥

देखि रामछवि सखि यक कहई * योग्य जानकी यह वर अहई ॥
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू * प्रण परिहरि हठि करहि विवाहू ॥
कोउ कह इनहिं भूप पहिचाने * मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तु प्रण राउ नतजई * विधिवश हठि अविवेकहि भजई ॥
कोउ कह जो भल अहै विधाता * सबकहँसुनियउचितफलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि वर एहू * नाहिन आली यह सन्देहू ॥

१ नेत्र । २ स्त्रियाँ । ३ उपमा । ४ पुत्र । ५ बालहंस । ६ अहल्या ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो विधिवश अस बनै सँयोगू * तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे अति आरति ताते * कबहुँक ए आवहिं यहि नाते ॥
दोहा—नाहित हम कहँ सुनहु सखि, इन्हकर दर्शन दूरि ॥
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि ॥ २६५ ॥
बोली अपर कह्यउ सखि नीका * यह विवाह अतिहित सबहीका ॥
कोउ कह शंकरचाप कठोरा * ये श्यामल मृदुगात किशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी * यह सुनि अपर कहैं मृदुवानी ॥
सखि इनकहँ कोउकोउ असकहहीं * बड़प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पदपंकज धूरी * तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥
सोकि रहैं विनु शिव धनु तोरे * यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥
जेहि विरंचि रचि सीय सँवारी * तेहिश्यामलवर रचेउ विचारी ॥
तासु वचन सुनि सब हरषानी * ऐसेइ होउ कहहिं मृदुवानी ॥
दोहा—हिय हरषहिं वर्षहिं सुमनँ, सुमुखि सुलोचनि वृन्द ॥
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द ॥ २६६ ॥
पुर पूरवदिशि गे दोउ भाई * जहाँ धनुष मख भूमि बनाई ॥
अति विस्तार चारु गच ढारी * विमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥
चहुँदिशि कंचनमंच विशाला * रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा * अपर मंच मण्डली विलासा ॥
कछुक ऊंच सब भाँति सुहाई * बैठहिं नगर लोग जहँ आई ॥
तिनके निकट विशाल सुहाये * धवल धाम बहु वरण बनाये ॥
जहँ बैठी देखहिं पुर नारी * यथायोग्य निजकुल अनुहारी ॥
पुरबालक कहि कहि मृदुवचना * सादर प्रभुहिं देखावहिं रचना ॥
दोहा—सब शिशु भिसु इहि प्रेम वश, पराशि मनोहर गात ॥

---

१ सम्बन्ध । २ पूर्व्वजन्म । ३ बहुत । ४ धनुष । ५ कोमल । ६ पापोंसे भरी । ७ पुष्प । ८ राजा । ९ बालक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तनु पुलकहिं अति हर्ष हिय, देखि देखि दोउ भ्रात॥२६७॥

शिशु सब राम प्रेम वश जाने * प्रीति समेत निकेत[1] बखाने ॥
निजनिजरुचि सब लेहिं बुलाई * सहितसनेह जाहिं दोउ भाई ॥
राम दिखावहिं अनुजहिं[2] रचना * कहि मृदु मधुर मनोहर वचना ॥
लवनिमेष महँ भुवन निकाया * रचै जासु अनुशासन माया ॥
भक्तहेतु सोइ दीनदयाला * चितवतचकितधनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं * जानि विलंब त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डरकहँ डर होई * भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई * किये विदा बालक वरिआई ॥

दोहा—सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउभाइ॥
गुरु पदपंकज[3] नाइशिर, बैठे आयसु पाइ ॥ २६८ ॥

निशिप्रवेश मुनि आयसुदीन्हा * सबही संध्या वंदन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी * रुचि रजनी[4] युग याम सिरानी ॥
मुनिवर शयन कीन्ह तबजाई * लगे चरण चापन दोउ भाई ॥
जिनके चरण सरोरुह लागी * करत विविध जप योग विरागी ॥
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते * गुरुपद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा * रघुवर जाइ शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरण लषण उर लाये * सभय सप्रेम परम सुखपाये ॥
पुनि पुयि प्रभुकह सोवहु ताता * पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥

दोहा—उठेलषण निशिविगतसुनि, अरुणशिखा[5] ध्वनि कान ॥
गुरुते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान ॥ २६९ ॥

सकल शौचकरि जाइ नहाये * नित्यनिबाहि गुरुहिं शिरनाये ॥
समय जानि गुरु आयसुपाई * लेन प्रसून[6] चले दोउ भाई ॥

---

१ मन्दिरनकीशोभा । २ भाईलक्ष्मणजी । ३ चरणकमल । ४ रात्रि । ५ मुर्गा । ६ पुष्प ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूप बाग वर देख्यउ जाई * जहँ वसन्तऋतु रहै लुभाई।
लागे विटप मनोहर नाना * वरण वरण वरवेलि वितानाँ।
नवपल्लव फल सुमन सुहाये * निज सम्पति सुरतरुहि लजाये।
चातक कोकिल कीर चकोरा * कूजत विहँग नचत कल मोरा।
मध्यबाग सरँ सुभग सुहावा * मणि सोपान विचित्र बनावा।
विमलसलिल सरसिज बहुरंगा * जल खग कूजत गुंजत भृंगा।

दोहा—बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हर्षे बन्धु समेत ॥
परमरम्य आराम यह, जो रामहिं सुखदेत ॥ २७० ॥

चहुँ दिशि चितै पूंछि मालीगन * लगेलेन दल फूल मुदितमन।
त्यहि अवसर सीता तहँ आई * गिरिजा पूजन जननि पठाई।
संग सखी सब सुभग सयानी * गावहिं गीत मनोहरवानी।
सर समीप गिरिजा गृह सोहा * वरणि नजाय देखि मन मोहा।
मज्जनकरि सर सखी समेता * गई मुदित मन गौरि निकेता।
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा * निज अनुरूप शुभग वर माँगा।
एक सखी सिय संग विहाई * गई रही देखन फुलवाई।
तेइँ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई * प्रेम विवश सीता पहँ आई।

दोहा—तासु दशा देखी सखिन, पुलक गात जल नयन ॥
कहु कारण निज हर्षकर, पूछहिं सब मृदु वयन ॥ २७१ ॥

देखन बाग कुँवर द्वउ आये * वय किशोर सबभाँति सुहाये।
श्याम गौर किमि कहौं बखानी * गिराअनयन नयन विनु वानी।
सुनि हरषीं सब सखी सयानी * सियहिय अति उतकण्ठा जानी।
एक कहहिं नृपसुत ते आली * सुने जे मुनि सँग आये काली।
निज निज रूप मोहनी डारी * कीन्हे स्ववश नगर नर नारी।

---

१ वृक्ष। २ छत्र। ३ नवीनपात। ४ तलाव। ५ पार्वती। ६ ज्याहिकोसुनि कै मिलिवेको अति आतुरता होइ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्णत छबि जह तहँ सब लोगू * अवशि देखिये देखन योगू ॥
तासु वचन अतिसियहि सुहाने * दरशलागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्रकरि प्रिय सखि सोई * प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

दोहा—सुमिरि सीय नारद* वचन, उपजी प्रीति पुनीत॥
चकितविलोकतिसकलदिशि, जनुशिशुमृगीसभीत ॥२७२॥

कंकणकिंकिणि नूपुरध्वनिसुनि * कहतलषणसन राम हृदयगुनि ॥
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही * मनसा विश्व विजय कहँ कीन्ही ॥
असकहिफिरिचितयेत्यहिओरा * सियमुखशशिभयेनयनचकोरा ॥
भये विलोचन चारु अचंचल * मनहुँसकुचिनिमि तजेउदृगंचल ॥
देखि सीय शोभा सुखपावा * हृदय सराहत वचन न आवा ॥
जनु विरंचि सब निज निपुणाई * विरचि विश्वकहँ प्रगट दिखाई ॥
सुन्दरताकहँ सुन्दर करई * छबि गृह दीप शिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी * केहि पटतरिय विदेहकुमारी ॥

दोहा—सिय शोभा हिय वर्णि प्रभु, आपनि दशा विचारि ॥
बोले शुचि मन अनुज सन, वचन समय अनुहारि ॥२७३॥

तात जनकतनया यह सोई * धनुषयज्ञ ज्यहि कारण होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई * करति प्रकाश फिरति फुलवाई ॥
जासुविलोकि अलौकिक शोभा * सहजपुनीत मोर मन क्षोभा ॥

* एक समय जानकीजी गिरिजा पूजनके निमित्त जातीथीं तहाँ मार्गमें नारदजी मिले जानकीजीने दण्डवत्कर कहा कि महाराज देवीकी पूजा करनेको जातीहूं तब नारदजीने प्रसन्न हो आशीर्वाददिया कि हेजानकी ! इसी गिरिजाबारीमें श्रीरामचन्द्र तुम्हारे पति तुमको मिलैंगे तब जानकीजीने पूँछा कि महाराज! हम कैसे चीन्हैंगी तब नारदबोले इस बगीचेमें जिसको देखनेसे तुम्हारा मन प्रसन्नहोजाय और लुभायजाय उसीको जानना कि यह मेरे पतिहैं ॥

१ ब्रह्माके सृष्टिके लोकनविषे ऐसी शोभा नहीं है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सब कारण जान विधाता * फरकहिं शुभग अंग सुनु भ्राता ॥
रघुवंशिनकर सहज स्वभाऊ * मनकुपंथ पग धरैं न काऊ ॥
मोहिं अतिशयप्रतीति जियकेरी * ज्यहिस्वप्नेहु परनारि नहेरी ॥
जिनके लहहिं न रिपुरण पीठी * नहिं लावहिं परतिय मन डीठी ॥
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं * ते नरवर थोरे जग माहीं ॥

दोहा—करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान ॥
मुख सरोज मकरन्द छबि, करत मधुप इव पान ॥ २७४ ॥

चितवतिचकित चहूँदिशिसीता * कहँगये नृपकिशोर मनचीता ॥
जहँ विलोकि मृगशावकनयनी * जनु तहँ बरषकमलसितश्रयनी ॥
लता ओट तब सखिन लखाये * श्यामल गौर किशोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने * हर्षे जनु निजनिधि पहिंचाने ॥
थके नयन रघुपति छबि देखी * पलकनहूं परिहरी निमेखी ॥
अधिकसनेह देह भइभोरी * शरदशशिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचन मगु रामहिं उर आनी * दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन प्रेमवश जानी * कहि न सकहिं कछुमनसकुचानी ॥

दोहा—लता भवनते प्रगटभये, त्यहि अवसर दोउ भाइ ॥
निकसे जनु युग विमलविधु, जलद पटल विलगाइ ॥ २७५ ॥

शोभासींव शुभग दोउ वीरा * नील पीत जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके * गुच्छा बिच बिच कुसुमकलीके ॥
भालतिलक श्रमबिन्दु सुहाये * श्रवणशुभग भूषण छबिछाये ॥
विकट भ्रुकुटि कच घुंघरवारे * नवसरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला * हास बिलास लेत जनु मोला ॥
मुखछबिकहि नजाहि मोहिंपाहीं * जो विलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मणिमाल कम्बु कलग्रीवा * कामकलभकर भुजबल सींवा ॥

१ चित्तविषे आतुर । २ बारनकेपट्टा कौवनकेसेपक्षश्यामसचिक्कन ।

CC-0. Delhi Research Library and Archives, Eland

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुमन समेत बामकर दोना * साँवर कुँवर सखी सुठि लोना ॥
दोहा-केहरि कटि पटपीत धर, सुखमा शील निधान ॥
देखि भानुकुल भूषणहिं, बिसरा सखिन अपान ॥ २७६ ॥
धरि धीरज इक सखी सयानी * सीता सन बोली गहिपानी ॥
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू * भूप किशोर देखिकिनलेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे * सन्मुख दोउ रघुबंश निहारे ॥
नखशिख देखि रामकी शोभा * सुमिरिपिताप्रणमनअति क्षोभा ॥
परवश सखिन लखी जब सीता * भई गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब इहि बिरियाँ काली * असकहि मनबिहँसीइकआली ॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी * भयउ बिलम्ब मातु भयमानी ॥
धरि बड़ धीर राम उर आनी * फिर आपन प्रण पितुवशजानी ॥
दोहा-देखन मिसु मृग विहँगतरु, फिरति बहोरि बहोरि ॥
निरखि निरखि रघुबीर छबि, बाढ़ी प्रीति नथोरि ॥ २७७ ॥
जानिकठिन शिवचाप बिसूरति * चलीराखि उर श्यामलमूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी * सुख सनेह शोभा गुण खानी ॥
परमप्रेममय मृदु मसि कीन्ही * चारु चित्र भीतर लिखि लीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी * बन्दि चरण बोली कर जोरी ॥
जय जय जय गिरिराज किशोरी * जयमहेश मुखचन्द्र चकोरी ॥
जय गजवदन षडानन माता * जगतजननि दामिनि द्युतिगाता ॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना * अमित प्रभाव वेद नहिं जाना ॥
भव[1] भवै[2] विभवै[3] पराभव[4] कारिणि * विश्वविमोहनिस्ववश[5]विहारिणि ॥
दोहा-पतिदेवता सुतीय[6] महँ, मातु प्रथम तव रेख ॥
महिमाअमित न कहिसकहिं, सहसशारदाशेष ॥ २७८ ॥

१ संसार । २ उत्पन्नकरतीहौ । ३ पालनकरतीहौ । ४ नाशकरतीहौ । ५ स्वतंत्र । ६ पतिव्रतास्त्रीनमें ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवत तोहिं सुलभ फलचारी * वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी ॥
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे * सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके * बसहु सदा उरपुर सबहींके ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेही * असकहि चरण गहे वैदेही ॥
विनय प्रेमवश भई भवानी * खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ * बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनुसियसत्य अशीश हमारी * पूजहि मन कामना तुम्हारी ॥
नारदवचन सदा शुचि साँचा * सोवरमिलिहि जाहि मनराँचा ॥

छंदहरिगीतिका ॥

मन जाहि राचो मिलिहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो ॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहिभाँति गौरि अशीश सुनि सियसहित हिय हर्षित अली ॥
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥ ३६॥

सो०-जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष नजाय कहि ॥
मंजुल मंगल मूल, बामअंग फरकन लगे ॥ ३३ ॥

हृदय सराहत सीय लुनाई * गुरु समीप गमने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं * सरल स्वभाव छुआ छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही * पुनि अशीश दोउ भाइन दीन्ही ॥
सफल मनोरथ होइँ तुम्हारे * राम लषण सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
विगत दिवस मुनि आयसुपाई * सन्ध्या करन चले दोउभाई ॥
प्राचीदिशि शशि उग्यउसुहावा * सियमुख सरिस देखि सुख पावा ॥
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं * सीयवदन सम हिमकरनाहीं ॥

१ सुंदरता । २ पूर्वदिशा । ३ चन्द्र ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष, दिन मलीन सकलंक ॥
सिय मुख समता पाव किमि, चन्द्र वापुरो रंक ॥ २७९ ॥

घटै बढ़ै विरहिनि दुखदाई * ग्रसै राहु निज सन्धिहि पाई ॥
कोक शोकप्रद पंकज द्रोही * अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥
वैदेही मुख पटतर दीन्हे * होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सियमुखछबिविधुव्याजबखानी * गुरुपहँ चले निशा वड़ि जानी ॥
करि मुनिचरणसरोज प्रणामा * आयसुपाय कीन्ह विश्रामा ॥
विगतनिशा रघुनायक जागे * बन्धुविलोकि कहन अस लागे ॥
उगेउ अरुण अवलोकहुताता * पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लषण जोरि युग पाणी * प्रभु प्रभाव सूचक मृदुवाणी ॥

दोहा—अरुणोदय सकुचे कुमुद, उडुगण ज्योति मलीन ॥
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन ॥ २८० ॥

नृप सब नखत करहिं उजियारी * टारि नसकहिं चाप तम भारी ॥
कमलकोक मधुकर खगनाना * हरषे सकल निशा अवसाना ॥
ऐसेहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे * होइहैं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु विनुश्रमतमनाशा * दुरे नखत जग तेज प्रकाशा ॥
रविनिज उदय व्याज रघुराया * प्रभुप्रताप सब नृपन दिखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी * प्रगटी धनु विघटन परिपाटी ॥
बन्धुवचनसुनि प्रभु मुसुकाने * होइ शुचि सहज पुनीत अन्हाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आये * चरणसरोज सुभग शिरनाये ॥
सतानन्द तब जनक बुलाये * कौशिक मुनि पहँ तुरत पठाये ॥
जनकविनय तिन आय सुनाई * हर्षे बोलि लिये दोउ भाई ॥

दोहा—सतानन्द पदवन्दि प्रभु, बैठे गुरुपहँ जाइ ॥

---

१ कमल । २ नक्षत्र । ३ राजा । ४ उद्योतकरनेको उदयाचलकीघाटी । ५ नाशहेतु । ६ विश्वामित्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बुलाइ ॥ २८१ ॥
सीय स्वयम्वर देखिय जाई * ईश कनहिधौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यशभाजन सोई * नाथ कृपा तब जापर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनि बरवानी * दीन्ह अशीश सबहि सुखमानी ॥
पुनि मुनिवृन्द समेत कृपाला * देखन चले धनुष मखशाला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई * असुधि सब पुरवासिन पाई ॥
चले सकल गृहकाज विसारी * बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी * शुचि सेवक सब लिये हँकारी ॥
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू * आसन उचित देहु सब काहू ॥

दोहा—कहि मृदु वचन विनीत तिन, बैठारे नर नारि ॥
उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि ॥ २८२ ॥

राजकुँवर त्यहि अवसर आये * मनहु मनोहरता छबि छाये ॥
गुणसागर नागर बरवीरा * सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राजसमाज विराजत रूरे * उडुगण महँ जनु युग विधु पूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी * प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महा रणधीरा * मनहुँ वीररस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहिनिहारी * मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृप वेषा * तिन प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई * नरभूषण लोचन सुखदाई ॥

दोहा—नारि विलोकहिं हरषि हिय, निजनिजरुचि अनुरूप ॥
जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥ २८३ ॥

विदुषन प्रभु विराटमय दीशा * बहु मुख कर पग लोचन शीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे * सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥

---

१ जहांराजालोगोंकेबैठनेकेलियेविचित्ररचनाथी किन्तु स्वयंवरभूमि। २ बूढ़े
३ नक्षत्र। ४ चन्द्र। ५ पण्डितन।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहित विदेह विलोकहिं रानी * शिशु सम प्रीति न जाइ बखानी ॥
योगिन परम तत्त्व मय भासा * सन्त शुद्ध मन सहज प्रकाशा ॥
हरिभक्तन देखेउ दोउ भ्राता * इष्टदेव इव सब सुखदाता ॥
रामहिं चितव भाव ज्यहि सीया * सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहिसक सोऊ * कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥
ज्यहिविधिरहा जाहि जस भाऊ * त्यहितस देख्यहु कोशलराऊ ॥

दोहा—राजत राज समाज महँ, कोशलराज किशोर ॥
सुन्दर श्यामल गौर तनु, विश्वविलोचन चोर ॥ २८४ ॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ * कोटिकाम उपमा लघु सोऊ ॥
शरदचन्द्र निन्दक मुखनीके * नीरज[1] नयन भावते जीके ॥
चितवनि चारु[2] मार मद हरणी * भावत हृदय जाइ नहिं वरणी ॥
कलकपोल[4] श्रुति[5] कुंडल लोला * चिबुक अधर सुन्दर मृदुबोला ॥
कुमुद[6] बन्धुकरनिन्दक हासा * भ्रुकुटी विकट मनोहर नासा ॥
भालविशाल तिलक झलकाहीं * कचँविलोकि अलिअवलिलजाहीं
पीत चौतनी शिरन सुहाई * कुसुमकली बिच बीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा * जनु त्रिभुवन सुखमाकी सीवा ॥

दोहा—कुंजरमणि कंठा कलित, उर तुलसीकी माल ॥
वृषभकन्ध केहरिठवनि, बलनिधि बाहुविशाल ॥ २८५ ॥

कटि तूणीर पीतपट बाँधे * करशर धनुष वाम वर काँधे ॥
पीतयज्ञ उपवीत सुहाई * नख शिख मंजु महाछवि छाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे * इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई * मुनि पदकमल गहे तब जाई ॥
करि विनती निजकथा सुनाई * रंगअवनि[10] सब मुनिहि दिखाई ॥

---

१ कमलनयन । २ पवित्र । ३ सुंदर । ४ गाल । ५ कान । ६ कमल । ७ बाल । ८ भ्रमर । ९ पंक्ति । १० रंगभूमि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहँ जहँ जाहिं कुँवर वर[1] दोऊ * तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ॥
निज निज रुचि रामहिं सब देखा * कोउ नजान कछु मर्म[2] विशेषा॥
भलिरचना नृपसन मुनि कह्यऊ * राजामुदित परमसुख लह्यऊ॥

दोहा–सब मंचनते मंच यक, सुन्दर विशद विशाल॥
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ, बैठारे महिपाल॥ २८६॥

प्रभुहि देखि सब नृप हियहारे * जिमि राकेश[3] उदय भये तारे॥
अस प्रतीति तिनके मन माहीं * राम चापे[4] तोरब शक नाहीं॥
विन भंजेहु भव धनुष विशाला * मेलिहिं सीय राम उर माला॥
अस विचारि गवनहु घर भाई * यश प्रताप बल तेज गँवाई॥
विहँसे अपर भूप सुनि वानी * जे अविवेक अधम अभिमानी॥
तोरेउ धनुष व्याह अवगाहा * विनु तोरे को कुँवरि विवाहा॥
एकवार कालहु किन होई * सिय हित समर जितब हम सोई॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने * धर्म शील हरिभक्त सयाने॥

सो०–सीय बिवाहब राम, गर्व दूर करि नृपन्ह कर॥
जीतिको सक संग्राम, दशरथके रण बाँकुरे॥ ३४॥

वृथा मरहु जनि गाल[5] बजाई * मनमोदक[6] नाहिं भूख बुताई॥
सिख हमार सुनु परम पुनीता * जगदम्बा जानहु जिय सीता॥
जगतपिता रघुपतिहि विचारी * भरिलोचन छबि लेहु निहारी॥
सुन्दर सुखद सकल गुणराशी * ये दोउ बन्धु शम्भु उरवासी॥
सुधा समुद्र समीप विहाई * मृगजल निरखि मरहु कतधाई॥
करहु जाय जाकहँ जोइ भावा * हमतो आजु जन्मफल पावा॥
असकहि भले भूप अनुरागे * रूप अनूप विलोकन लागे॥
देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना * बरषहिं सुमन करहिं कलगाना[8]॥

१ श्रेष्ठ। २ भेद। ३ पूर्णमासीकाचन्द्रमा। ४ धनुष। ५ दुर्लभ। ६ मिथ्या बककर। ७ मनमेंलड्डूखानेसे। ८ मधुरगान।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—जानि सुअवसर सीय तब, पठवा जनक बुलाइ ॥
चतुर सखी सुन्दरि सकल, सादर चलीं लिवाइ ॥ २८७ ॥

सिय शोभा नहिं जाइ बखानी * जगदम्बिका रूप गुण खानी ॥
उपमा सकल मोहिं लघुलागी * प्राकृतनारि अंग अनुरागी ॥
सीय वरणि त्यहि उपमा देई * को कवि कहै अयशको लेई ॥
जो पटतरिय तीयसम सीया * जगअस युवतिकहाँ कमनीया ॥
गिरामुखर तनुअर्द्ध भवानी * रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी ॥
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही * कहिय रमा सम किमि वैदेही ॥
जो छबिसुधा पयोनिधि होई * परमरूप मय कच्छप सोई ॥
शोभा रजु मन्दर शृंगारू * मथै पाणि पंकज निज मारू ॥

दोहा—इहिविधि उपजै लक्षि जब, सुंदरता सुखमूल ॥
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय सम तूल ॥ २८८ ॥

चली संग लै सखी सयानी * गावत गीत मनोहर वानी ॥
सोह नवलतनु सुन्दरिसारी * जगतजननि अतुलित छबिभारी ॥
भूषण सकल सुदेश सुहाये * अंग अंग रचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगुधारी * देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई * वर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणि सरोज सोह जयमाला * औचक चितै सकल महिपाला ॥
सीय चकित चित रामहिंचाहा * भये मोहवश सब नरनाहा ॥
मुनि समीप बैठे दोउ भाई * लगे ललकि लोचन निधिपाई ॥

दोहा—गुरुजन लाज समाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि ॥
लगी विलोकन सखिनतन, रघुवीरहि उरआनि ॥ २८९ ॥

रामरूप अरु सिय छवि देखी * नर नारिन परिहरी निमेखी ॥
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं * विधिसन विनय करहिं मनमाहीं ॥

---

१ शारद-वाक्य चंचल । २ विनदेह । ३ पुष्प । ४ करकमल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरु विधि वेगि जनक जड़ताई * मति हमारि असि देहु सुहाई ॥
बिन विचार प्रणतजि नरनाहू * सीय रामकर करै विवाहू ॥
जगभल कहहिं भाव सब काहू * हठ कीन्हे उर अन्तर दाहू ॥
यह लालसा मगन सब लोगू * बरसाँवरो जानकी योगू ॥

कथा क्षेपक रावण बाणासुरकी ॥

रावण बाणासुर तब आये * देख लोग अतिशय भयपाये ॥
सकल परस्पर करहिं विचारा * अबधौं कहा करास करतारा ॥

कवित्त ॥

याकेदशशीशवीसबाहुडोलैंशैलमनोयाकेएकशीशबाहुदीरघहजारहैं*॥
दोनोलालचंदनकोदीन्हौंहैत्रिपुण्ड्रभालपहरेरुद्राक्षमालछायेतनुछारहैं॥
दोनोअतिबलीभायोदोनोजगजीतिपायोदोनोभयदेतदेखेतनविकरारहैं
दोनोधनुतोरैं ताकोकौनहैउपायहायशोकतैंउधारकोअधारकरतारहै ॥
तब रावण बोल्यो हरषाई * कहाँ सिया सो देहु बताई ॥
धनुष तोर ले जावहुँ अबहीं * बोले बाणासुर अस तबहीं ॥
गुरु धनुधर्यो विचारत नाहीं * मारत काहे गाल वृथाहीं ॥
तव राखत अति गर्व सुरारी * तब रावण सुनि बात उचारी ॥

कवित्त ॥

मेरेभुजदंडनतेदेखिखंडखंडदंडभाजिब्रह्माण्डहूतेकालकीन्हौगौनहै*॥
परमप्रचण्डनवखण्डमेंअखण्डफैलोपेखिकैप्रतापमार्तण्डडोलैमौनहै*॥
देतदेतदण्डधननाथभयेहंडहीनसुनतकोदंडचण्डइन्द्रमानोजौनहै *॥
बाहुकण्डछत्रदंडसोंसुमेरुतोलोजायखीनमुंडमालीकोकोदंडगर्वकौनहै
बाणासुर तब कह्यो रिसाई * हो तुम बड़े असुर अन्याई ॥

कवित्त ॥

जोईभगवानवरदानदातातीनौलोकतीनपाँयपृथ्वीहेतवेषवड़लीन्हौहै ॥
आयेतातपासचीन्होतापैनानिरासकीन्हौदीनोदानलीन्हौउनोमानिरोस

In Public Domain. Chaudhari Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भीनो है * ॥ भाख्योपितुलीजैमोहिंदानीदानद्रव्यतुल्यहौहौपानिदोई पालरेकैतोलि दीन्हो है * ॥ पर्वसर्वरीसजातैंखर्वजससर्वभाखैरं रेतेरो ऐसोगर्वहौंहुं नाहिंकीन्होहै ॥

तब रावण बोला-सवैया ॥

एकहिशीशकीकौनधरीसिगरोजगयौंसरसौंसमसोहै ॥
तौनहींशेषकेवेशशरीरमेंसूक्षमकीन्हैअभूषनजोहै ॥
सोशिववासकियोजेहिशैलसोकौलभयोकरएकहिकोहै ॥
हौंनहिंगर्वकरौंकरैकौनप्रसंशतजाहिहरीरहतोहै ॥

तब बाणासुर बोला-कबित्त ॥

पीनपिनाकपुरारिकोयौंविरच्योविधिलेकरवज्रकोसार है ॥
याकीनजानततैंगुरुतानहिंसीखगनैंगुन्योपूरोगँवार है ॥
आपनोगर्वगँवामनकोधनुतोरनकोशठकीन्हौविचार है ॥
जोबढकैबलतैंबलकैअवलोकतहैसोतोनाऊकोबार है ॥

धनुष तोर तोरहु मद तोरौं * पुरी उठाय वारिनिधि बोरौं ॥
अस कहि धनुष उठावन लागा * उठ्यो न तब कह बाण अभागा ॥

सवैया ॥

करजोकरमेंकैलाशलियोकसकैअबनाकसिकोरत है ॥
दइतालनवीसभुजाझहरायझकैधनुकोझकझोरत है ॥
तिलएकहलैनहलैभूमीरिसपीसकैदांतनतोरत है ॥
मनमेंयहठीकभयोहमरेमदकाकोमहेश नमोरत है ॥

यह कह धनु परदक्षिण करकै * वाणासुर निकस्यो मुद भरकै ॥
तब रावण बोला रिसियाई * जादू यामें परत दिखाई ॥
वैसेइ लेजाऊं सिय अबहीं * भइ अकाश वाणी यह तबहीं ॥
तव कुंभीनासि कन्या जोई * लिये जात मधु दानव सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन रावण बोला दुख पाई * ताको लाऊं अबहिं छुड़ाई ॥
अस कहि तुरत गयो असुरारी * भये सभाके नृपति सुखारी ॥

इति क्षेपक ॥

तब बंदीजन[1] जनक बुलाये * विरदावली[2] कहत चलि आये ॥
कह नृप जाइ कहहु प्रणमोरा * चले भाट हिय हर्ष न थोरा ॥

दोहा-बोले वन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल ॥
प्रण विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ विशाल ॥ २९० ॥

नृपभुजबल विधु शिवधनु राहू * गरुअ कठोर विदित सबकाहू ॥
रावण बाण महाभट भारे * देखि शरासन[3] गँवहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारिको[5] दण्ड कठोरा * राजसमाज आजु जोइ तोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही * बिनहि विचार वरै हठि तेही ॥
सुनिप्रण सकल भूप अभिलाषे * भटमानी अतिशय मनमाषे ॥
परिकर[6] बांधि उठे अकुलाई * चले इष्टदेवन शिरनाई ॥
तमकिताकितकिशिवधनुधरही * उठै नकोटिभाँति बल करहीं ॥
जिनके कछु विचार मनमाहीं * चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दोहा-तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठय न चलहिं लजाय ॥
मनहु पाय भट बाहुबल, अधिक अधिक गरुआय ॥२९१॥

भूपसहसदश एकहि बारा * लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगै न शम्भु शरासन कैसे * कामी वचन सती मन जैसे ॥
सब नृप भये योग उपहासी * जैसे विनु विराग संन्यासी ॥
कीरति विजय वीरता भारी * चले चाप कर सरबस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हियराजा * बैठे निज निज जाइ समाजा ॥

---

१ भाट । २ कुलकी कीर्त्तिगातेहुये । ३ बाणासुर । ४ धनुष । ५ महादेव । ६ पटुका । ७ दशहज़ारराजा ।

In Public Domain, Chandel Archives, Jhansi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नृपन विलोकि जनक अकुलाने * बोले वचन रोष जनु साने ॥
द्वीप द्वीप के भूपतिनाना * आये सुनि हम जो प्रणठाना ॥
देव दनुज धरि मनुजशरीरा * विपुल वीर आये रणधीरा ॥

दोहा—कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय ॥
पावनहार विरंचि जनु, रच्यउ न धनु दमनीय ॥ २९२ ॥

कहहु काहि यह लाभ न भावा * काहु न शंकर चाप चढ़ावा ॥
रहेउ चढ़ाउब तोरब भाई * तिलभरि भूमि न सक्यउ छुड़ाई॥
अब जनि कोउ माषे भटमानी * वीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहुआश निज निज गृहजाहू * लिखा न विधि वैदेहि विवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊँ * कुँवरि कुँवारि रहै काकरऊँ ॥
जो जनत्यउँ विनुभट महि भाई * तौ प्रणकरि करत्यउँ नहसाँई ॥
जनकवचन सुनि सब नर नारी * देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहिलषण कुटिल भई भौंहैं * रदपुट फरकत नयन रिसौंहैं ॥

दोहा—कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनु बाण ॥
नाइ राम पद कमल शिर, बोले गिरा प्रमाण ॥ २९३ ॥

रघुबंशिन महँ जहँ कोउ होई * तेहि समाज अस कहै न कोई ॥
कही जनक जस अनुचितवानी * विद्यमान रघुकुलमणिजानी ॥
सुनहु भानुकुल पंकजभानू * कहौं स्वभाव नकछु अभिमानू ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ * कन्दुकइव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥
काचेघट जिमि डारौं फोरी * सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना * का वापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुककरौं विलोकिय सोऊ ॥
कमलनाल इमि चाप चढावों * शतयोजन प्रमाण लैधावों ॥

---

१ सुंदरता । २ ओष्ठ । ३ यथार्थवचन । ४ अयोग्यवचन । ५ श्रीरामचन्द्र-कोप्रत्यक्षजानकर । ६ गेंदकीतुल्य ७ मूरी । ८ धनुष । ९ कमलकीडंडी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—तोरौं छत्रकदंड जिमि, तव प्रताप बल नाथ ॥
जो न करौं प्रभुपद शपथ, पुनि न धरौं धनु हाथ ॥२९४॥

लषण सकोप वचन जब बोले * डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोक सब भूप डराने * सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने ॥
गुरु रघुपति सब मुनि मनमाहीं * मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषण निवारे * प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभजानी * बोले अतिसनेह मृदु वानी ॥
उठहु राम भंजहु भव चापा * मेटहु तात जनक परितापा ॥
सुनि गुरु वचन चरण शिरनावा * हर्ष विषाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये * ठवनि युवा मृगराज लजाये ॥

दोहा—उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बालपतंग ॥
विकसे सन्त सरोज सब, हर्षे लोचन भृंग ॥ २९५ ॥

नृपनकेरि आशा निशि नाशी * वचन नखत अवलीन प्रकाशी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये विशोक कोक मुनि देवा * बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरुपद वन्दि सहित अनुरागा * राम मुनिनसन आयसु माँगा ॥
सहजहिचले सकल जगस्वामी * मत्तमंजु कुंजर वरगामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी * पुलक पूरि तन भये सुखारी ॥
वन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे * जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे ॥
तौ शिव धनुष मृणाल कि नांई * तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥

दोहा—रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ ॥
सीता मातु सनेह वश, वचन कहै विलखाइ ॥ २९६ ॥

सखि सब कौतुक देखन हारे * जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं * ये बालक अस हठ भल नाहीं ॥

१ दुःख । २ सिंह । ३ बालसूर्य । ४ पंक्तिहाथी । ५ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रावण बाण छुआ नहिं चापा * होर सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुवँर कर देहीं * बाल मराल कि मन्दरलेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी * सखिविधिगति कछुजायनजानी॥
बोली चतुर सखी मृदु वानी * तेजवन्त लघु गणिय नरानी ॥
*कहँकुम्भज[1] कहँ सिंधु अपारा * शोष्यउ सुयश सकल संसारा ॥
रविमंडल देखत लघुलागा * उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ॥

दोहा—मंत्र[2] परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुरसर्व्व ॥
महा मत्त गजराज कहँ, वशकर अंकुश खर्व्व[3] ॥ २९७ ॥

काम कुसुम धनु[4] शायक लीन्हे * सकल भुवन[5] अपने वश कीन्हे ॥
देवि तजिय संशय अस जानी * भंजब धनुष राम सुनु रानी ॥
सखी वचन सुनि भइ परतीती * मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती ॥
तब रामहिं विलोकि वैदेही * सभयहृदयविनवतिज्यहितेही ॥
मनहीमन मनाय अकुलानी * होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सफल आपनि सेवकाई * करि हित हरहु चाप गरुआई ॥
गणनायक वरदायक देवा * आज लगे कीन्ही तव सेवा ॥
बार बार विनती सुनि मोरी * करहु चाप गरुता अति थोरी ॥

* एकसमय किसी चिडियेके तीन बच्चे समुद्र बहा ले गया तब वोह प्रतिदिन अपनी चोंचसे पानी भर भर कर बाहर फेंका करै यही इच्छा कि समुद्रको उलीच डालूंगा अगस्त्यऋषि ने यह समाचार देख उस्से पूंछा तब पक्षीने कारण कहा यह सुन दयासंयुक्तहो ऋषिने कहा यह समुद्र जड निर्दयी है इसका दंड हम करैंगे यह कह चले गये एक दिन समुद्रके किनारे जप पूजा करते थे कि समुद्र लहरसे पूजाकी सामग्री बहाय लेगया तब वोह पक्षीकी बात स्मरण करके तीन अंजलिमें अर्थात् (राघवायनमः, केशवायनमः, वासुदेवायनमः) ऐसा उच्चारणकर पीगये तब वोह बहुत कालतक सूखा पडा रहा फिर देवतोंने कुंभजऋषिसे बहुत निवेदन किया तब लघुशंकाकरके फेर भर दिया ॥

१ अगस्त्यमुनि । २ ओंकार । ३ अत्यन्तछोटा । ४ फूलोंकाधनुषबाण । ५ चौदहोंलोक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—देखि देखि रघुबीर तन, सुर मनाव धरि धीर ॥
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ॥ २९८ ॥

नीके निरखि नयन भरि शोभा * पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनक्षोभा[1] ॥
अहह तात[3] दारुण प्रण ठानी * समझत नहिं कछु लाभ न हानी॥
सचिव[4] सभय सिखदेइ नकोई * बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥
कहँधनुकुलिश[5]हु चाहि कठोरा * कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा ॥
विधि केहिभाँति धरौं उरधीरा * सिरससुमन[7] किमि बेधहि हीरा ॥
सकलसभाकी मतिभइ भोरी * अबमोहिं शंभु चाप गति तोरी ॥
निज जड़ता लोगन पर डारी * होहुहरुअ[8] रघुपतिहि निहारी ॥
अति परताप[9] सीय मनमाहीं * लव निमेष युग सम चलिजाहीं ॥

दोहा—प्रभुहि चितै पुनि चितै महि, राजत लोचन लोल[10] ॥
खेलत मनसिज मीन युग, जनु विधुमंडलडोल ॥ २९९ ॥

गिरा अलिनि मुखपंकज रोकी * प्रगट न लाज निशा अवलोकी ॥
लोचन जलरह लोचन कोना * जैसे परमकृपणकर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बड़िजानी * धरिधीरज प्रतीति उर आनी ॥
तन मन वचन मोरप्रणसाचा * रघुपति पदसरोज मनराचा ॥
तौ भगवान सकल उरवासी * करहिंमोहिं रघुपतिकी दासी ॥
जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू * सोतेहि मिलत न कछु संदेहू ॥
प्रभुतन चितै प्रेमप्रण ठाना * कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहि विलोकि तक्यउधनुकैसे * चितवगरुड लघुव्यालहि जैसे ॥

दोहा—लषण लख्यउ रघुवंशमणि, ताक्यउ हरकोदण्ड ॥
पुलकिगात बोले वचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥ ३०० ॥

दिशकुंजरहु[12] कमठ[13] अहि कोला[14] * धरहुधरणि धरि धीर न डोला ॥

१ नेत्र । २ संदेह । ३ पिता । ४ मंत्री । ५ पण्डित । ६ वज्र । ७ सिरस काफूल । ८ हलका । ९ दुःख । १० पलकलगना । ११ चारोंदिशाकेहाथी । १२ कच्छप । १३ शेषजी । १४ वाराह ।

In Public Domain, Chanibai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम चहहिं शंकरधनु तोरा * होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप राम जब आये * नरनारिन सुर सुकृत मनाये ॥
सबकर संशय अरु अज्ञाना * मन्द महीपनकर अभिमाना ॥
भृगुपति केरि गर्व गरुआई * सुर मुनि बरन केरि कदराई ॥
सियकरशोच जनक परितापा * रानिनकर दारुण दुख दापा ॥
शम्भुचाप बड़ बोहित पाई * चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
राम बाहु बल सिंधु अपारा * चहतपार नहिं कोउकनहारा ॥
दोहा—राम विलोके लोग सब, चित्र लिखेसे देखि ॥
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विशेषि ॥ ३०१ ॥
देखी विपुल विकल वैदेही * निमिष विहात कल्प सम तेही ॥
तृषितवारिविनु जो तनु त्यागा * मुये करै का सुधा तडागा ॥
का वर्षा जब कृषी सुखाने * समय चूक पुनि का पछिताने ॥
अस जियजानि जानकी देखी * प्रभु पुलके लखिप्रीति विशेखी ॥
गुरुहिप्रणाम मनहिंमन कीन्हा * अति लाघव उठाइ धनुलीन्हा ॥
दमक्यउ दामिनिजिमिघनलयऊ* पुनिधनु नभमंडल सम भयऊ ॥
लेत चढावत खैंचत गाढे * काहु न लखा देख सब ठाढे ॥
त्यहि क्षण मध्य राम धनु तोरा * भरचउ भुवन ध्वनि घोर कठोरा ॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

भरि भुवन घोर कठोर रवँ रवि वाजि तजि मारग चले ॥
चिक्करहिं दिग्गज डोलमहि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर सुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं ॥
कोदंड भंज्यउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ॥ ३७ ॥
सो०—शंकर चाप जहाज, सागर रघुवर बाहुबल ॥

---

१ खेती । २ शीघ्रही । ३ बिजुली । ४ शब्द । ५ दिशोंकेहाथी । ६ पृथ्वी । ७ शेषनाग । ८ हारवा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Prayagraj eGangotri

बूड़े सकल समाज, चढ़े जे प्रथमहिं मोहवश ॥ ३५ ॥
प्रभु दोउखंड चाप महि डार * देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौशिकरूप पयोनिधि पावन * प्रेमवारि अवगाह सुहावन ॥
रामरूप राकेश निहारी * बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी ॥
बाजे नभ गहगहे निशाना * देवबधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा * प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा ॥
बरषहिं सुमन रंग बहु माला * गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
रही भुवनभरि जय जय बानी * धनुषभंग ध्वनि जात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी * भंज्यउ राम शम्भुधनु भारी ॥

दोहा—वन्दी मागध सूतगण, विरद बदहिं मतिधीर ॥
करहिं निछावरि लोग सब, हय गज धन मणि चीर ॥ ३०२ ॥

झाँझ मृदंग शंख सहनाई * भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये * जहँ तहँ युवतिन मंगलगाये ॥
सखिनसहित हर्षित अति रानी * सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनकलह्यउ सुख शोच विहाई * परत थक थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीप छबि छूटे ॥
सियहियसुखवरणियकेहिभांती * जनु चातक पाये जल स्वाती ॥
रामहिं लषण विलोकत कैसे * शशिहि चकोर किशोरक जैसे ॥
सतानन्द तब आयसु दीन्हा * सीता गमन रामपहँ कीन्हा ॥

दोहा—संग सखी सुन्दरि चतुरि, गावहिं मंगलचार ॥
गवनी बाल मरालगति, सुखमा अंग अपार ॥ ३०३ ॥

सखिनमध्य सिय सोहति कैसी * छबिगण मध्य महाछबि जैसी ॥
कर सरोज जयमाल सुहाई * विश्व विजय शोभा जनु छाई ॥

१ तरंग । २ आकाश । ३ जोरशोरसे । ४ देवताओंकीस्त्रियाँ । ५ बालहंस । ६ सुंदरता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तनुसकोच मन परम उछाहू * गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाय समीप रामछबि देखी * रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी ॥
चतुरसखी लखि कहा बुझाई * पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई * प्रेम विवश पहिराइ न जाई ॥
सोहत जनु युग जलज सनाला * शशिहि सभीत देत जयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली * सिय जयमाल राम उर मेली ॥

सो०—रघुबर उर जयमाल, देखि देव बरषहिं सुमन ॥
सकुचे सकल भुआल, जनु विलोकि रवि कुमुदगण ॥ ३६ ॥

पुर अरु व्योम बाजने बाजे * खल भये मलिन साधु सब गाजे ॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा * जय जय सब कहि देहिं अशीशा ॥
नाचहिं गावहिं विबुध वधूटी * बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहँ तहँ विप्र वेदध्वनिकरहीं * बन्दी विरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक यश व्यापा * रामबरी सिय भंज्यउ चापा ॥
करहिं आरती पुर नर नारी * देहिं निछावरि वृत्ति बिसारी ॥
सोहत सीय रामकी जोरी * छबि शृंगार मनहुँ इकठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता * करति न चरण परश अतिभीता ॥

दोहा—गौतमतिय गति सुरति करि, नहिं परशति पदपानि ॥
मन बिहँसे रघुवंश मणि, प्रीति अलौकिक जानि ॥ ३०५ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे * कूर कुपूत मूढ़ मन माषे ॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छुड़ाय सीय कह कोऊ * धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई * जीवत हमहिं कुँवरिको बरई ॥
जो विदेह कछु करैं सहाई * जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥

---

१ दोनोंहाथसे । २ कमल । ३ दंडा । ४ शोभा । ५ राजा । ६ अप्सरा । ७ सघनपुष्पोंकीवर्षा । ८ बख्तर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साधु भूप बोले सुनि बानी * राजसमाजहि लाजलजानी ॥
बल प्रताप वीरता बड़ाई * नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ शूरताकि अब कहुँ पाई * अस बुधि तौविधि मुँह मसि लाई॥
दोहा–देखहु रामहिं नयन भरि, तजि ईर्षा मद मोहु ॥
लषण रोष पावक प्रबल, जानि शलभ जनि होहु ॥ ३०६ ॥
वैनतेय बलि जिमि चह कागा * जिमि शश चहहि नागअरि भागा॥
जिमिचह कुशल अकारणकोही * सुखसम्पदा चहहिं शिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपद विमुख परमगति चाहा * तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी * सखी लिवाइ गईं जहँ रानी ॥
रामस्वभाव चले गुरु पाहीं * सिय सनेह वर्णत मन माहीं ॥
रानिन सहित शोच वश सीया * अबधौं विधिहि कहा करणीया ॥
भूप वचन सुनि इत उत तकहीं * लषण राम डर बोलि न सकहीं ॥
दोहा–अरुण नयन भ्रुकुटी कुटिल, चितवत नृपन सकोप ॥
मनहुँ मत्तगजगण निरखि, सिंह किशोरहि चोप ॥ ३०७ ॥
खरभर देखि विकल नर नारी * सब मिलि देहिं महीपन गारी ॥
तेहि अवसर सुनि शिवधनु भंगा * आये भृगुकुल कमलपतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने * बाज झपट जिमि लवालुकाने ॥
गौरशरीर भूति भलि भ्राजा * भालविशाल त्रिपुण्ड्र बिराजा ॥
शीश जटा शशिवर्दन सुहावा * रिसिवश कछुक अरुणहै आवा ॥
भ्रुकुटीकुटिल नयन रिसिराते * सहजहुचितवत मनहुँ रिसाते ॥
वृषभ कन्ध उर बाहु विशाला * चारुजनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनिबसन तूण दुइ बाँधे * धनु शर कर कुठार कल काँधे ॥

१ पतग । २ गरुड । ३ खरगोश । ४ सिंह । ५ परशुराम । ६ बटेर । ७ मस्तक । ८ मुख । ९ लाल । १० भ्रुव । ११ टेढी । १२ बैल । १३ पवित्र सुन्दर । १४ भोजपत्र । १५ तरकश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सन्तभेष करणी कठिन, वरणि न जाइ स्वरूप ॥
धरि मुनि तनु जनु वीररस, आये जहँ सब भूप ॥ ३०८ ॥
देखत भृगुपति वेष कराला * उठे सकल भय विकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निजनामा * लगे करन सब दण्ड प्रणामा ॥
ज्यहि सुभायचितवहिंहितजानी * सो जानै जनु आयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिरनावा * सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी * निज समाज लैगई सयानी ॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई * पदसरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथके ढोटा * दीन्ह अशीष जानि भल जोटा ॥
रामहिं चितय रहे थकि लोचन * रूप अपार मार मद मोचन ॥
दोहा–बहुरि विलोकि विदेहसन, कहहु कहा अति भीर ॥
पूंछत जान अजान जिमि, व्यापेउ कोप शरीर ॥ ३०९ ॥
समाचार कहि जनक सुनाये * ज्यहि कारण महीप सब आये ॥
सुनतवचन फिरि अनत निहारे * देखे चाप खण्ड महि डारे ॥
अति रिसि बोले वचनकठोरा * कहुजड़जनक धनुष क्यहिंतोरा ॥
वगि दिखाउ मूढ़ नत आजू * उलटौं महि जहँ लगि तव राजू ॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हरषे मनमाहीं ॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी * शोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥
मन पछताति सीय महतारी * विधि सँवारि सब बात बिगारी ॥
भृगुपति कर स्वभाव सुनि सीता * अर्द्धनिमेष कल्पसम बीता ॥
दोहा–सभय विलोके लोग सब, जानि जानकी भीर ॥
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्रीरघुबीर ॥ ३१० ॥
नाथ शम्भुधनु भंजनहारा * होइहि कोउ यक दास तुम्हारा ॥
आयसु कहा कहिय किन मोही * सुनि रिसाय बोले मुनिकोही ॥

१ पुत्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवक सो जो करै सेवकाई * अरिकरणी करि करिय लराई ॥
सुनहु राम ज्यहिं शिवधनु तोरा * सहसवाहुसम सो रिपु मोरा ॥
सो विलगाइ विहाइ समाजा * नतु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनिमुनिवचन लषण मुसुकाने * बोले परशु धरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरी लरिकांई * कबहुं नअसरिसि कीन्ह गुसांई ॥
यहि धनुपर ममता केहि हेतू * सुनिरिसाय कह भृगुकुलकेतू ॥

दोहा—रेनृप बालक कालवश, बोलत तोहि न सँभार ॥
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार ॥ ३११ ॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना * सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
काक्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे * देखा राम नयेके भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहिं नदोषू * मुनि विनुकाज करियकत रोषू ॥
बोले चितय परशुकी ओरा * रेशठ सुनेसि प्रभाव न मोरा ॥
बालक जानि वधौं नहिं तोहीं * केवल मुनिजड़ जानेसि मोहीं ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही * विश्वविदित क्षत्रियकुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनुकीन्ही * विपुलबार महिदेवन दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा * परशु विलोकु महीप कुमारा ॥

दोहा—मातु पितहि जनि शोचवश, करसि महीप किशोर ॥
गर्भनके अर्भकदलन, परशु मोर अतिघोर ॥ ३१२ ॥

विहँसि लषण बोल मृदुवानी * अहो मुनीश महा भट मानी ॥
पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा * चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥
यहाँ कुम्हड बतिया कोउनाहीं * जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना * मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुलसमुझि जनेउ विलोकी * जोकछु कहहुँ सहौं रिसिरोंकी ॥

१ शत्रुकीकरणी । २ परशुरामजी । ३ श्रीशिव । ४ हानि । ५ पुराना ६ कोपित । ७ संसार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इनपर न शुराई ॥
वधँ पाप अपकीरति हारे * मारतहू पाँ परिय तुम्हारे ॥
कोटिकुलिशसमवचन तुम्हारा * वृथा धरहु धनु बाण कुठारा ॥
दोहा–जो विलोकि अनुचित कह्यउँ, क्षमहु महा मुनिधीर ॥
सुनि सरोष भृगुवंश मणि, बोले गिरा गँभीर ॥ ३१३ ॥
कौशिक सुनहु मन्दयहबालक * कुटिल कालवशनिजकुलघालक ॥
भानुवंश राकेश कलंकू * निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥
कालकवर होइहि क्षण माहीं * कहौं पुकारि खोरि मोहिंनाहीं ॥
तुम हटकह जो चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषण कहा मुनिसुयशतुम्हारा * तुमहिं अछत को वरणैपारा ॥
अपनेमुख तुम आपनि करणी * बार अनेक भाँति बहु वरणी ॥
नहिंसंतोष तो पुनि कछु कहहू * जनि रिसि रोकि दुसहदुखसहहू॥
वीर वृत्ति तुम धीर अक्षोभा * गारी देत न पावहु शोभा ॥
दोहा–शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ॥
विद्यमान रण पाइ रिपु, कायर कथहिं प्रलापु ॥ ३१४ ॥
तुमतो काल हाँकि जनु लावा * बार बार मोहिं लागि बुलावा ॥
सुनत लषणके वचन कठोरा * परशु सुधारि धर्‍यउ कर घोरा ॥
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू * कटुवादी बालक वध योगू ॥
बाल विलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यह मरणहारभा साँचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू * बाल दोष गुण गणहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरण कोही * आगे अपराधी गुरु द्रोही ॥
उतरदेत छाँडों विनु मारे * केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतु इहि काटि कुठार कठोरे * गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रम थोरे ॥
दोहा–गाधिसुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरिअरे सूझ ॥
अजगव खण्ड्यउ ऊँख जिमि, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ ३१५॥
कहेउ लषण मुनि शीलतुम्हारा * को नहिं जान विदित संसारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Bhuvaneshwari Gangotri

माताहिं * पिताहिं उऋण भयेनीके * गुरुऋण रहा शोच बड जीके ॥
सो जनु हमरे माथे काढा * दिनचलि गये ब्याजबहुबाढा ॥
अब आनिय व्यवहरिया बोली * तुरत देब मैं थैली खोली ॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा * हाहाकहि सब लोग पुकारा ॥
भृगुवर परशु देखावहु मोही * विप्र विचारि बचौं नृप द्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रणगाढे * द्विज देवता घरहिके बाढे ॥
अनुचित कहि सब लोगपुकारे * रघुपति सैनहि लषण निवारे ॥

दोहा- लषण उतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु ॥
बढ़त देखि जलसम वचन, बोले रघुकुल भानु ॥ ३१६ ॥

नाथ करहु बालकपर छोहू * शुद्ध दूध मुख करिय न कोहू ॥
जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना * तौकि बराबर करत अयाना ॥
जोलरिकाकछु अनुचित करहीं * गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
करिय कृपा शिशु सेवक जानी * तुम सम शील धीरमुनि ज्ञानी ॥
राम वचन सुनि कछुक जुडाने * कहिकछु लषण बहुरिमुसुकाने ॥
हँसतदेखिनखशिखरिसिव्यापी * राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
गौर शरीर श्याम मन माहीं * कालकूट मुख पयमुख नाहीं ॥

* परशुरामकी माता रेणुका नहानेको गई वहाँ जलमें मछलियों के क्रीडा करते देखके इच्छाभई कि मैं भी घरजाय पतिके संग ऐसेही क्रीडाकरूं सो कामातुर आयकै जमदग्निसे कहा कि हमें ऐसी इच्छा यह सुन ऋषिको कोप उत्पन्न भया तब तीन बेटे जो और थे उनसे कहा कि इसको मारडालो उन्होंने आज्ञा न मानी तब ऋषिने परशुरामसे कहा कि इन सबको मारडालो परशुरामने पिताकी आज्ञा सुनतेही उठकर फरसेसे माता और भाइयोंका शिर काटडाला तब ऋषि प्रसन्नहोय बोले कि पुत्र वर माँगो तब परशुरामने मांगा कि तीनों भाइन समेत माताको जिलायदीजै ऋषिने प्रसन्न होय चारोंको जिलाय दिया और जमदग्निका शिर एक राजा सहस्राबाहुने काटडाला इस निमित्त सारे पृथ्वीके क्षत्रियोंका शिर इन्होंने काटा॥

१ अग्नि । २ श्रीरामचन्द्रजी । ३ दया । ४ विष । ५ दूधकामुख ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहज टेढ़ अनुहरै न तोही * नीच मीच सम लखै न मोही ॥
दोहा—लषण कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पापकर मूल ॥
जेहि वश जन अनुचित करहिं, चरहिंविश्वप्रतिकूल॥३१७॥
मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया * परिहरि कोप करिय अब दाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने * बैठिय होइहि पाँय पिराने ॥
जो अति प्रिय तो करियउपाई * जोरियकोउ बड़ गुणी बुलाई ॥
बोलत लषणहि जनकडराहीं * मष्टकरहु अनुचित भल नाहीं ॥
थरथर कांपहिं पुर नर नारी * छोट कुमार खोट अति भारी ॥
भृगुपति सुनिसुनि निर्भयवानी * रिसि तनु जरै होय बल हानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा * बचौ विचारि बन्धु लघु तोरा ॥
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे * विषरस भरा कनकघटजैसे ॥
दोहा—सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम ॥
गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरिवाणी वाम ॥ ३१८ ॥
अति विनीत मृदु शीतल वाणी * बोले राम जोरि युगपाणी ॥
सुनहुनाथ तुम सहज सुजाना * बालकवचन करियनहिं काना ॥
बैरे बालक एक स्वभाऊ * इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज विगारा * अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप वध बन्ध गुसांई * मोपर करिय दासकी नांई ॥
कहिय वेगि ज्यहि विधिरिसिजाई * मुनिनायक सोइ करियउपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिसि कैसे * अजहुँ बन्धु तव चितव अनैसे ॥
इहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा * तौमैं कहा कोपकरि कीन्हा ॥
दोहा—गर्भ श्रवहिं अवनीपरनि, सुनि कुठार गति घोर ॥
परशु अछत देखौं जियत, बैरी भूप किशोर ॥ ३१९ ॥

१ अयोग्य । २ टहलुआ । ३ चुपरहु । ४ स्वर्णकलश । ५ ततैया । ६ बन्धन । ७ राजाओंकी रानियोंके । ८ विद्यमान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहै न हाथ दहै रिसि छाती * भाकुठार कुंठित नृपघाती
भयउवामविधि फिन्यउस्वभाऊ * मोरे हृदय कृपा कसकाऊ
आजु दैव दुख दुसह सहावा * सुनि सौमित्रि बिहँसि शिरनावा
बाउ कृपा मूरति अनुकूला * बोलत वचन झरत जनुफूला
जोपै कृपा जरै मुनिगाता * क्रोधभये तनु राखु विधाता
देखु जनक हठि बालक एहू * कीन्ह चहत जड़ यमपुरगेहू
वेगिकरहुकिन आँखिन ओटा * देखत छोट खोट नृप ढोटा
विहँसे लषण कहा मुनि पाहीं * मूँदिय आँखि कतहुँ कोउ नाहीं

दोहा—परशुराम तब रामप्रति, बोले वचन सक्रोध ॥
शम्भु शरासन तोरि शठ, करसि हमार प्रबोध ॥ ३२० ॥

बन्धु कहै कटु सम्मततोरे * तू छल विनय करसि करजोरे
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहिंत छाँड़ु कहाउब रामा
छलतजि करहु समर शिवद्रोही * बन्धु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति तमकि कुठार उठाये * मन मुसुकाहिं राम शिरनाये
गुणहु लषणकर हमपर रोषू * कतहुँ सुधाइहु ते बड़दोषू
टेढ़ जानि शंका सब काहू * वक्र चन्द्रमहि ग्रसै नराहू
राम कहा रिसि तजिय मुनीशा * कर कुठार आगे यह शीशा
ज्यहिरिस जाइ करिय सोइ स्वामी * मोहिं जानि आपन अनुगामी

दोहा—प्रभुहिं सेवकहिं समर कस, तजहु विप्र बर रोष ॥
भेष विलोकि कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोष ॥ ३२१ ॥

देखि कुठार बाण धनुधारी * भैलरिकहि रिस वीर विचारी
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा * वंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा
जो तुम अवत्यउ मुनिकी नाई * पदरज शिर शिशु धरत गुसाई
क्षमहु चूक अनजानत केरी * चहिय विप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरिवरिकसनाथा * कहहु तो कहाँ चरण कहँ माथ

१ खुंटा-गोठिल । २ लक्ष्मण । ३ घर । ४ ढेटेचन्द्रमाको ।

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम मात्र लघु नाम हमारा * परशुसहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे * नवगुण[1] परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुमसन हारे * क्षमहु विप्र अपराध हमारे ॥

दोहा—बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम ॥
बोले भृगुपति सरुष ह्वइ, तुहूं बन्धु सम वाम ॥ ३२२ ॥

निपटहि द्विजकरि जानहु मोहीं * मैं जस विप्र सुनाऊँ तोहीं ॥
चाप श्रुवा शर आहुति जानू * कोप मोर अति घोर कृशानू ॥
समिधसेन चतुरंग सुहाई * महामहीप भय पशु आई ॥
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हे * समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हे ॥
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि विप्रके भोरे ॥
भंज्यउ चाप दाप बड बाढ़ा * अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढ़ा ॥
रामकहा मुनि कहहु विचारी * रिस अतिवड़ि लघुचूक हमारी ॥
छुवतहि टूट पिनाक[2] पुराना * मैं क्यहि हेतु[3] करौं अभिमाना ॥

दोहा—जो हम निदरहिं विप्र वर, सत्य सुनहु भृगुनाथ ॥
तौ असको जगसुभटज्यहि, भयवशनावहिं माथ ॥ ३२३ ॥

देव दनुज भूपति भट नाना * समबल[5] अधिक होउ बलवाना ॥
जो रण हमहिं प्रचारै कोऊ * लरहिं सुखेन काल किनहोऊ ॥
क्षत्रियतनुधरि समर सकाना * कुलकलंक त्यहि पाँवर[6] जाना ॥
कहौं स्वभाव नकुलहिं प्रशंसी * कालहु डरहिं न रण रघुवंशी ॥
विप्रवंशकी असि प्रभुताई * अभय होइ जो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपतिके * उघरे पटल[7] परशुधर मतिके ॥
राम रमापति कर धनु लेहू * खैंचहु चाप मिटै संदेहू ॥

---

१ कोमल, तपस्वी, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रियता, दानकोलेना, तथा देना, सर्वदाता, दयालु किन्तु, जनेऊ । २ धनुष । ३ कारण । ४ योद्धा । ५ बराबर । ६ नीच । ७ परदे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दतचाप आपुहि चढ़ि गयऊ * परशुराम मन विस्मय भयऊ ॥

दोहा-जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात ॥
जोरि पाणि बोले वचन, प्रेम न हृदय समात ॥ ३२४ ॥

जय रघुवंश वनजवन[2] भानू[3] * गहन दनुजकुल दहन कृशानू ॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी * जय मद मोह कोह भ्रमहारी ॥
विनय शील करुणागुणसागर * जयति वचन रचना अतिनागर ॥
सेवकसुखद शुभग सब अंगा * जय शरीर छबि कोटि अनंगा[4] ॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा * जय महेश मनमानसहंसा ॥
अनुचित बहुत कह्यउँ अज्ञाता * क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता ॥
कहि जयजयजयरघुकुलकेतू * भृगुपति गये वनहिं तपहेतू ॥
अपभय कुटिल महीप डराने * उठि उठि कायर गवहि पराने ॥

दोहा-देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभु पर वर्षहिं फूल ॥
हरषे पुर नर नारि सब, मिटा मोह भय शूल ॥ ३२५ ॥

अथ कथाक्षेपक ॥

दोहा-सुनि धनुभंग कथा रुचिर, परशुराम संवाद ॥
भरद्वाज गद्गदहृदय, बाढ़ेउ प्रेम प्रमाद ॥ ३२६ ॥

विविध भांति मुनिवरहि निहोरी * बूझत भये युगल कर जोरी ॥
शिव धनु जनक कवन विधिपावा * केहि कारण पुनि ताहि तोरावा ॥
कथा सो रुचिर कहहु मुनिराई * याज्ञवल्क्य बोले मुसकाई ॥
जानहु तुम सर्वज्ञ विरागी * बूझहु मोहिं जगत हित लागी ॥
अमित अज्ञ इव बहु कृत हेतू * सोधहु मानस प्रेम समेतू ॥
धन्य तात तव प्रीति सुहाई * ईश कृपा सो कहहुँ बुझाई ॥
शिवपद तप कारण अमरारी * गा शिवपुर सब भोग विसारी ॥
करि मज्जन शैलेश्वर जहँवा * बैठा दृढ़ आसन करितहँवा ॥

१ संदेह । २ कमल । ३ सूर्य्य । ४ कामदेव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-संवत रवि शत चलिगये, करत कठिन तप जाहि ॥
दीनदयालु पिनाकपति, प्रकट भये लखि ताहि ॥ ३२७ ॥
रावण तप कीन्हो अति भारी * मे प्रसन्न तब देव पुरारी ॥
निकट जाय मृदु वचन सुनावा * माँगु माँगुवर निजमन भावा ॥
सुनत श्रवण मृदु मंजुल वयना * हिय हर्षेउ खोलेउ निजनयना ॥
जोरि पाणि पद गहि दशशीशा * बोला वचन सुनहु जगदीशा ॥
बसौं लंक मैं अस्त्र विहीना * रहौं सदा वश शोच मलीना ॥
मैं तपकीन नाथ यहि हेतू * देहु अस्त्र मोहिं कृपानिकेतू ॥
विगत शोच सेवौं प्रभु चरणा * होइ दयालु निरखि दुख हरणा ॥
दोहा-आगिल चरित विचार हर, बोले प्रभु गौरीश ॥
लेपिनाक गमनहु भवन, हर्ष सहित दशशीश ॥ ३२८ ॥
सुनि वाणी मृदु मय रसबोरी * दशमुख मोद सहित करजोरी ॥
कहेउ सुनेउ विनती मम स्वामी * प्रभु कृपालु सब अन्तर्य्यामी ॥
मोसन केहिविधि उठिहि पिनाका * कहिय युक्ति जेहि पहुँचै लंका ॥
हँसि कह कृपासिंधु भगवाना * सुनु मम वचन मूढ अज्ञाना ॥
जो पिनाक नहिं सकहि उठाई * तौ कत जितिहै रिपुहि लराई ॥
तबतेइँ कहा सुनिय मम नाथा * ले धरिहौं गढ़ शृंगके माथा ॥
निरखतताहि अरिहि अतिशंका * कोउ रिपुनहिं ताकी गढ लंका ॥
ताते प्रभु मैं करौं ढिठाई * क्षमिय नाथ बालक लरिकाई ॥
दोहा-तुम प्रभु लेहु पिनाक कर, हों तुम कहँ धरि शीश ॥
लै जइहौं गढ लंकपर, धरि जपिहौं गौरीश ॥ ३२९ ॥
एवमस्तु प्रभु कह मुसकाई * पुनि प्रभु कहेउ वचन समुझाई ॥
सुनु प्रमाण तमचर निजहेतू * भूतल कतहुँ धरसि जनि केतू ॥
नतु पुनि कोटि यतन करुधाई * नहिं चलिहौं तजि सो ठौराई ॥
लीन पिनाक आप त्रिपुरारी * तेइँ लीन्हेउ उठाय भयहारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

चलत भये जब तिरहुति आये * तब लघुशंका ताहि लगाये।
विप्र वृद्ध धरि वेष कृपाला * श्रीनिवास प्रकटे तेहि काला।
दशमुख कहेउ सुनहुद्विजज्ञानी * मोतनु लघुशंका बड़िजानी।
रंचक शिवहिलेहु निज शीशा * होई शौच लेहु जगदीशा।

दोहा—लीन विप्र निज शीश शिव, दशमुख शोच प्रवाह ॥
करत लगी अति देर तब, द्विज बोले करि धाह ॥ ३३०

निज शिवलेहु उठहु असुराया * हो पिसिमान भयो निज काया।
अस कहिसोमहितल धरि दयऊ * सो प्रभु द्विज अंतर्हित भयऊ।
शौच क्रिया करि उठा सुरारी * भांति अनेक विनय अनुसारी।
नेकु न निरखेउ शंभु सुजाना * ध्रुव शिव वचन होयनहिं आना।
तब सुरारि लंका कहँ गयऊ * वैजनाथ अति शोभित भयऊ।
तहाँ स्थान किये त्रिपुरारी * अति शुचि ठाम परम सुखकारी।
प्रतिदिन जनक जाहिं कैलासा * पूजाहिं शिवपद हृदय हुलासा।
आवहिं भवन बहुरि जब राजा * करहिंअशन तबसहित समाजा।

दोहा—नाग सिद्धि सुधि राम लिखि, विधि सुत सुत यहि भाँति
कीनी श्री जै देह सुत, हरसेवा दिन राति ॥ ३३१ ॥

मन क्रम वचन चहै नहिं आना * हृदय यहै इच्छहि वरदाना।
शंभु भक्ति दिन दिन अधिकाई * होइ करहि सोइ ईश गुसाँई।
निजपद प्रीति विलोकि अपारा * प्रकटि पिनाक पाणि इकवारा।
गिरिजा युत गिरीश भगवाना * कहा माँगुवर ईश सुजाना।
उग्र वचन सुनि तिरहुति नाथा * कर संपुट करि पद धरि माथा।
रहे सो उर्ध गये यक जामा * अधिक प्रसन्न भये तप धामा।
शशि शेखर निजकरनृप शीशा * परशि उठायो श्रीगौरीशा।
वरंब्रूहि हर कहेउ बहोरी * सुनत जनक बोले कर जोरी।

दोहा—गिरिजेश्वर करुणाअयन, जो मोपर अनुकूल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तौ मोहिं निजपद भक्ति प्रभु, देहु हरण भव शूल ॥ ३३२ ॥
सुनि निःकपट प्रीति अति देखी * शिव सर्वज्ञ कृपालु विशेषी ॥
एवमस्तु नृप तव अभिलाषी * बहुरि कहेव सो जिय महँ राखी॥
भूधर मध्य सघन वन जहँवा * मम अस्थान परम शुचि तहँवा॥
जानत कोउ कोउ महिमा तासू * मोहिं सेयहु तहँ त्यागि दुराशू ॥
यह कहि शंकर आयसु दयऊ * मुदित जनक तहँगमनतभयऊ ॥
आये गृह तेहि निशि करवासा * प्रातहि कहि जय उमा निवासा॥
गमनि सपदि सुरसरित अन्हाई * निवसे सोइ स्थान सोहाई ॥
पूजि पार्थिव वेद विधाना * तिरहुतिपति गृहकीन पयाना ॥
दोहा—ऐतु लोक सार्धे वरष, यहि विधि गयो सिराय ॥
अब्द तासु आर्धे वरष, भूपति भोग विहाय ॥ ३३३ ॥
रहि तेहि धाम कीन तप भारी * नेकु न मन मलीन तपधारी ॥
परम उग्र तप निजपद आशा * जानि कृपानिधि उमा निवासा॥
शक्ति समेत जनकके आगे * प्रकटे देखि भूप अनुरागे ॥
परे लकुट सम गहि पदपानी * वृषभध्वज बहु भाँति बखानी ॥
कर गहि बैठारेउ गौरीशा * वरंब्रूहि बोले सुर ईशा ॥
नृप मन मगन चरण अवलोकी * निरखत प्रभुपद भये विशोकी ॥
माँगु माँगु पुनि शंकर बोले * समुझिजनक हर वैन अमोले ॥
महाधर्मध्वज धीरज हानी * बोले करि संपुट दोउ पानी ॥
दोहा—माँगन योग न मोरकृत, यद्यपि सुनहु पुरारि ॥
तद्यपि मांगौं सकुचतजि, प्रभु निज ओर निहारि ॥ ३३४ ॥
नितनूतन द्विज चरण सनेहू * देइ सुरनाथ बहुरि सुनलेहू ॥
जो प्रभु तव मन मानस हंसा * अमल स्वरूप इन्द्र अवतंसा ॥
प्रणत कल्पतरु सुखमा ऐना * प्रकट सो मैं देखौं निज नयना॥
जनक लालसा जगहित लायक * हेतु समुझि शंकर सुखदायक ॥
एवमस्तु कहि हर संकट हर * अति प्रसन्न होय बहुरि शूलधर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहेउ कि शशिकुलइन्द्रनिदेशा * पूर्ण सदा तव ज्ञान निवेशा।
योग यज्ञ अरु ज्ञान निधाना * तेहि प्रकार तोहिं कहौं प्रमाना।
मम कोदंड लेहि गृह जाहू * पूजेहु सदा समेत उछाहू।

छंद-पूजेहु सदा प्रमुदित जनक यह धनुष हित नर नागरं॥
अइहैं तुम्हारे भवन प्रभु त्रिभुवन धनी सुखसागरं॥
युत शक्ति तोहिं सनाथ करिहहिं सहितपुरजन परिजनं।
तुलसी सराहहिं भाग्य तव ब्रह्मादि कवि सब सुरगनं॥ ३८

सोरठा-यहि विधिदे उपदेश, दीन पिनाक पिनाक धन॥
उमा समेत महेश, गवने पुनि कैलाश तब॥ ३७॥

शिव उपदेश जनक सुनिपाये * करि बहु यतन धनुष ले आये।
जिमि विदेह शंकर धनु पावा * यथा सुमति तव पाहिं सुनावा।
सो धनुखंडि गयो जेहि काजा * सो कारण अब सुन मुनिराजा।
जहँ भवधनुष रहै मुनिराई * जनक वधू प्रतिदिन तहँ जाई।
चहूं पास शुचि चौक बनावहि * बीचरहै कछु दाँव न पावहि।
जग जननी सीता यकबारा * अपने करसों ठौर सँवारा।
जो धनु सकेउ न कोउ भटटारी * विनश्रम वाम पाणि सुकुमारी।
लीन देखि नृप अचरज माना * विधिवश कठिन प्रतिज्ञा ठाना।

दोहा-अब जो तोरे यह धनुष, सुता विवाहौं ताहि॥
खंडि गयो तेहि कारण, प्रभु कौतुक जगमाहि॥ ३३५॥

हरि हर कृपा कहेव सब, बहुरि सुनौ चित लाय॥
जब गमने जमदग्नि सुत, तेहि अवसर मुनिराय॥ ३३६॥

॥ इति क्षेपक ॥

अति गहगहे बाजने बाजे * सबहिं मनोहर मंगल साजे।
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी * करहिं गान कल कोकिलवयनी।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुख विदेह कर वरणि न जाई * जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥
विगतत्रास भइ सीय सुखारी * जनु विधु उदय चकोर कुमारी॥
जनककीन्ह कौशिकहि प्रणामा * प्रभु प्रसाद धनु भंज्यउ रामा ॥
मोहिं कृत्यकृत्य कीन्ह दोउ भाई*अब जो उचित सो कहिय गुसाईं॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना * रहा विवाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ विवाहू * सुर नर नाग विदित सब काहू॥

दोहा—तदपि जाइ तुम करहु अब, यथा वंशव्यवहार ॥
बूझि विप्र कुल वृद्ध गुरु, वेद विदित आचार ॥ ३३७ ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई * आनैं नृप दशरथहिं बुलाई ॥
मुदितराउ कहि भलेहिकृपाला * पठये दूत अवध त्यहिकाला ॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये * आइ सबनि सादर शिरनाये ॥
हाट वाट मन्दिर पुर वासा * नगर सँवारहु चाच्यहु पासा ॥
हरषि चले निज निज गृह आये * पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रच्यहु विचित्र वितान बनाई * शिरधरि वचन चले सचुपाई ॥
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना * जो वितानविधि कुशल सुजाना॥
विधिहि वन्दितिन्हकीन्हअरंभा * विरचे कनक केदली खंभा ॥

दोहा—हरित मणिनके पत्र फल, पद्मरागके फूल ॥
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिके भूल ॥ ३३८ ॥

वेणु हरित मणि मय सब कीन्हे * सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनक कलित अहिबेलि बनाई * लखि नहिं परै सुवर्ण सुहाई ॥
त्यहिके रचि पचि बंध बनाये * बिच बिच मुकता दाम सुहाये ॥
माणिक मरकत कुलिशपिरोजा * चीरकोर पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहु रंग विरंगा * गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा ॥

---

१ चन्द्र । २ कृतार्थ । ३ सेवक । ४ मंडप । ५ केला । ६ सुंदर। ७ बांस ८ पानकीबेलि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरप्रतिमा खम्भन गहि काढी * मंगल द्रव्य लिये सब ठाढी ॥
चौकै भांति अनेक पुराये * सिन्दुर मणिमय सहज सुहाये ॥
दोहा—सौरभ पल्लव शुभग सुठि, किये नीलमणि कोर ॥
हेम बौर मरकत घवरि, लसत पाटमय डोर ॥ ३३९ ॥
रचे रुचिर बर बन्धन वारे * मनहु मनोभव फंद सँवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये * ध्वज पताक पट चमरसुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमय नाना * जाइनवरणि विचित्र विताना ॥
ज्यहि मण्डप दुलहिनि वैदेही * सो बरणै असिमति कबि केही॥
दूलहराम रूपगुण सागर * सो वितान तिहुँ लोक उजागर॥
जनक भवनकी शोभा जैसी * गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी॥
ज्यहितिरहुतित्यहिसमयनिहारी * त्यहिलघुलगे भुवनदशचारी ॥
जो सम्पदा नीच गृह सोहा * सो विलोकि सुरनायकमोहा ॥
दोहा—बसैं नगर ज्यहि लँक्षि करि, कपट नारि वर वेष ॥
त्यहि पुरकी शोभा कहत, सकुच शारदा शेष ॥ ३४० ॥
पहुँचे दूत रामपुर पावन * हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन खबरि जनाई * दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही * मुदित महीप आप उठि लीन्ही॥
वारि विलोचन बांचत पाती * पुलकगात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर करबर चीठी * रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरिधीर पत्रिका बांची * हरषी सभा बात सुनि सांची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई * आये भरत सहित दोउभाई ॥
पूंछत अति सनेह सकुचाई * तात कहाँते पाती आई ॥
दोहा—कुशल प्राणप्रिय बन्धुदोउ, अहहिं कहहु क्यहि देश ॥

---

१ आंबकेपत्ते । २ सोनेकाबौर । ३ छोटी छोटी अंबियोंकागुच्छा । ४ रेशम
५ कामदेव । ६ मिथिलापुरी । ७ लक्ष्मीजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सनेह साने वचन, बाँची *बहुरि नरेश ॥ ३४१ ॥

॥ अथ क्षेपककथा ॥

स्वस्ति श्रीभूपनके भूपा * धर्म्म महीधर ज्ञान स्वरूपा ॥
शीलसीव सुकृतगुणसागर * इन्द्रसभा सब भाँति उजागर ॥
हरिहर कृपापात्र सुखपुंजा * तवयश गिरिसम पटतर गुंजा ॥
लिखौंकाहि सम असजियजानी * प्रभुदशरथ सुप्रीति पहिचानी ॥
पढतहि जनक विनय परिमाना * सपदि समाज समेत पयाना ॥
करव जनकपुर पावन हेतु * व्याह हर्षयुत रघुकुलकेतू ॥
गमनबपुनि दोउ बंधु लिवाई * क्षमा करव पुनि दास ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभु गिरिजेश प्रतापू * श्रीरघुवर मंगलमय आपू ॥

दोहा—तद्यपि शुभ दिन लगनकर, गुन वरना है आज ॥
सेवक मनवांछित सफल, वेगि करिय शिरताज ॥ ३४२ ॥

॥ इति क्षेपक ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिक सनेह समात नगाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देखी * सकलसभासुखलह्यउविशेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे * मधुर मनोहर वचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे * तुम नीके निज नयन निहारे ॥

---

* अनंत श्री महाराज अपराजिताधिराज सकल महाराजानिशिरताज जग लाज को जहाज गरीब नेवाज महिमण्डल महेंद्र सुरेंद्र के उपेंद्र सम करन काज यश जागत जहान केते मान समान प्रतापवान दान मान सन्मान सुजान ज्ञान प्रेम निधान दशरथ भूप भूपेते शील केतु भूपकी जोहार आप अनूप कुशल स्वरूप हैं। यहां आपकी कृपाही कुशल है। भुवन हितकारी मुनिसंग अंग अंग आभा उमंग अनंग आभाभंग करन हार आपके युगुल कुमार आये। हमने लोयन लाहु पाये। रामचंद्रते महिपन मदमोरि महेश धनुतोरि मही कीर्ति छाई। महिजा पाई। साजि वरात आइये, व्याहि ल जाइये। आपका जनकराज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामल गौर धरे धनु भाथा * वय किशोर कौशिकमुनिसाथा ।
पहिचान्यउ तो कहहु स्वभाऊ * प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ ।
जादिनते मुनि गये लिवाई * तबते आजु सांचि सुधि पाई ।
कहहु विदेह कवन विधि जाने * सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने ॥

दोहा—सुनहु महीपति मुकुटमणि, तुम सम धन्य न कोउ ॥
राम लषण जिनके तनय, विश्व विभूषण दोउ ॥ ३४३ ॥

पूंछन योग न तनय तुम्हारे * पुरुष सिंह तिहुँ पुर उजियारे ।
जिनके यश प्रतापके आगे * शशिमलीन रवि शीतल लागे ।
तिनकहँकहियनाथ किमिचीन्हे * देखियरविहिकि दीपक लीन्हे ।
सीय स्वयम्बर भूप अनेका * सिमिटे सुभट एकते एका ।
शम्भु शरासन काहु न टारा * हारे सकल भूप बरियारा ।
तीन लोक महँ जे भटमानी * सबकी शक्ति शम्भु धनु भानी ।
सकैं उठाइ सुरासुर मेरू * सोउहिय हारि गयउ करिफेरू ।
ज्यहि कौतुक शिव शैल उठावा * सोउ त्यहि सभा पराभव पावा ।

दोहा—तहां राम रघुवंश मणि, सुनिय महा महिपाल ॥
भंज्यउ चाप प्रयासविनु, जिमि गज पंकज नाल ॥ ३४४ ॥

सुनि सरोष भृगुनायके[1] आये * बहुत भांति तिन आंखिदिखाये ।
देखि रामबल निजधनु दीन्हा * करि बहु विनय गमन वन कीन्हा ।
राजतराम[2] अतुलबल जैसे * तेजनिधान लषण पुनि तैसे ।
कम्पहिं भूप विलोकत जाके * जिमिगजहरिकिशोरके[3] ताके ।
देव देखि तव बालक दोऊ * अवनि[4] आंखतर आव न कोऊ ।
दूत वचन रचना प्रियलागी * प्रेम प्रताप वीररस पागी ।
सभा समेत राउ अनुरागे * दूतहिं देन निछावर लागे ।
कहि अनीति तेहिं मूंदेउ काना * धर्म विचारि सबहिं सुखमाना ।

१ परशुराम । २ शोभित । ३ सिंहकाबच्चा । ४ पृथ्वी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—तब उठि भूप वशिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ ॥
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ ॥ ३४५ ॥
सुनि बोले मुनि अतिसुख पाई * पुण्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ॥
जिमि सरितासागरमहँ जाहीं * यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमिसुखसम्पतिविनहिंबुलाये * धर्मशील पहँ जाहिं सुभाये ॥
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी * तस पुनीत कौशल्या देवी ॥
सुकृती तुम समान जग माहीं * भयउ नहै कोउ होन्यउ नाहीं ॥
तुमतेअधिक पुण्य बड़ काके * राजन रामसरिस सुत जाके ॥
वीर विनीत धर्मव्रतधारी * गुण सागर बालक वरचारी ॥
तुमकहँ सर्व्वकाल कल्याना * सजहु बरात बजाइ निशाना ॥
दोहा—चल्यहु वेगि सुनि गुरु वचन, भलेहि नाथ शिरनाइ ॥
भूपति गवने भवन तब, दूतहिं बास दिवाइ ॥ ३४६ ॥
राजा सब रनिवास बुलाई * जनकपत्रिका बांचि सुनाई ॥
सुनि सन्देश सकल हरषानी * अपर कथा सब भूप बखानी ॥
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी * मनहुँ शिखिनी सुनि वारिदवानी ॥
मुदित अशीश देहिं गुरुनारी * बारहिंबार मगन महतारी ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती * हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषणकी कीरति करणी * बारहिं बार भूप वर वरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये * रानिन तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनन्द समेता * चले विप्रवर आशिष देता ॥
सो०—याचक लिये हँकारि, दीन्ह निछावरि कोटि विधि ॥
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्त्ति दशरत्थके ॥ ३८ ॥
कहत चले पहिरे पट नाना * हरषि हने गहगहे निशाना ॥
समाचार सब लोगन पाये * लागे घर घर होन वधाये ॥

१ नदियां । २ इच्छा । ३ मोर । ४ बादल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भुवन चारिदश भयउ उछाहू * जनकसुता रघुवीर विवाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे * मग गह गली सँवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई * मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू * छाये परम विचित्र बजारू ॥
कनककलशतोरण मणिजाला * हरद दूब दधि अक्षत माला ॥

दोहा—मंगल मय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ ॥
बीथी सींची चतुर सब, चौके चारु पुराइ ॥ ३४७ ॥

जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि * सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि ॥
विधुवदनी मृगशावकलोचनि * निजस्वरूपरतिमान विमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल वानी * सुनि कलरव कलकंठ लजानी ॥
भूपभवन किमि जाइ वखाना * विश्व विमोहन रचेउ विताना ॥
मंगल द्रव्य मनोहर नाना * गाजत बाजत विपुल निशाना ॥
कतहुँ विरद वन्दी उच्चरहीं * कतहुँ वेदध्वनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता * लैलै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा * मानहुँ उमगिचला चहुँ ओरा ॥

दोहा—शोभा दशरथ भवनकी, को कवि वरणै पार ॥
जहाँ सकल सुर शीशमणि, राम लीन्ह अवतार ॥ ३४८ ॥

भूप भरत पुनि लये बुलाई * हय गय स्यन्दन साजहु जाई ॥
चलहु वेगि रघुवीर बराता * सुनत पुलक पूरे द्वउ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये * आयसुदीन्ह मुदित उठिधाये ॥
रचिरुचि तुरंग साज तिनसाजे * वर्ण वर्ण वरवाजि विराजे ॥
सुभग सकल सुठिचंचल करणी * अस जिमिजरतधरतपगुधरणी ॥

---

१ सोनेकेतारोंसेरचेहुयेवस्त्रकितुचमर । २ सोलहोंशृंगार । ३ चन्द्रमुखी । ४ मृगके बच्चोंके ऐसे नेत्रवाली । ५ दरोगा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानाभाँति न जाहिं बखाने * निदरि पवन जनु चहत उड़ाने ॥
तिन पर छयल भये असवारा * भरत सरिस सब राजकुमारा ॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी * कर शर चाप तूण कटिभारी ॥

दोहा—छैरे छैबीले छयल सब, शूर सुजान नवीन ॥
युग पदचर असवार प्रति, जे असि कला प्रवीन ॥ ३४९ ॥

बाँधे विरद वीर रण गाढे * निकसि भये पुरबाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना * हरषहिंध्वनिसुनिपणवनिशोना ॥
रथ सारथिन विचित्र बनाये * ध्वज पताक मणि भूषण छाये ॥
चमरचारु किंकिणिध्वनि करहीं * भानु यान शोभा अपहरहीं ॥
श्यामकर्ण अगणित हय होते * तेतिन्ह रथन सारथिनजोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं * जिनहि विलोकत मुनिमनमोहैं ॥
जेजलचलहिं थलहिंकी नाई * टाप न बूड़ वेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई * रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दोहा—चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात ॥
होत सगुण सुन्दर सुखद, जो ज्यहि कारज जात ॥ ३५० ॥

कलितकरिवरन परी अँवारी * कहि नजाइ ज्यहिभांतिसँवारी ॥
चले मत्तगज घण्ट विराजे * मनहु सुभग सावन घनँ गाजे ॥
वाहन अपर अनेक विधाना * शिबिका सुभग सुखासन याना ॥
तिन्हचढ़ि चले विप्र वर वृन्दा * जनु तनु धरे सकल श्रुतिछन्दा ॥
मागध सूत वंदि गुणगायक * चले यानचढि जोज्यहिलायक ॥
बैसर ऊंट वृषभ बहु जाती * चले वस्तु भरि अगणितभांती ॥
कोटिन कांवरि चले कहारा * विविध वस्तु को वरणै पारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई * निज निज साज समाज बनाई ॥

---

१ पतले । २ सुन्दर । ३ तरवारचलानेमें चतुर । ४ ढोल । ५ नगारा ६ हाथी । ७ बादल । ८ पालकी । ९ रथ । १० खच्चर । ११ बैल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दोहा—सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक शरीर ॥
कबहि देखिहैं नयन भरि, राम लषण दोउवीर ॥ ३५१ ॥

गरजहिं गजघण्टाध्वनिघोरा * रथ रव बाजि हीस चहुँ ओरा ॥
निदरि घनहिं घूमरहिं निशाना * निजपराव कछु सुनिय न काना ॥
महाभीर भूपतिके द्वारे * रज हुइजाइ पषाण[1] पँवारे ॥
चढीं अटारिन देखहिं नारी * लिये आरती मंगलथारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना * अति अनन्द नहिं जाइ बखाना ॥
तब सुमन्त दुइस्यन्दनसाजी[2] * जोते हयँ[3] रवि निन्दक बाजी ॥
दोउरथ रुचिरँ भूपपहँ आने * नहिं शारद प्रति जाहिं बखाने ॥
राजसमाज एकरथ भ्राजा * दूसर तेज पुंज अति राजा ॥

दोहा—त्याहि रथ रुचिर वशिष्ठ कहँ, हरषि चढ़ाइ नरेश ॥
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि, हर गुरु गौरि गणेश॥ ३५२ ॥

सहित वशिष्ठ सोह नृप कैसे * सुरगुरु[5] संग पुरन्दर[6] जैसे ॥
करि कुलरीति वेद विधि राऊ * देखि सबहि सब भांतिबनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई * चले महीपति शंख बजाई ॥
हरषे बिबुध विलोकि बराता * वरषहिं सुमन सुमंगलदाता ॥
भयउ कोलाहल हय गज गाजे * व्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घण्ट घंटि ध्वनि बराणि नजाई * सरौं करैं पायक फहराई ॥
करहिंविदूषक कौतुक नाना * हास कुशल कलगान सुजाना ॥

दोहा—तुरँग नचावहिं कुँवर बर, अंकनि मृदंग निशान ॥
नागरँनटचितवहिं चाकत, डिगहि न ताल विधान ॥ ३५३॥

बनै न वर्णत बनी बराता * होइँ सगुण सुन्दर शुभदाता ॥

---

१ पत्थर । २ रथ । ३ घोड़े । ४ सुंदर । ५ बृहस्पति । ६ इन्द्र । ७ चतुरनट

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारा चाखे वाम दिशि लेई * मनहु सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा * नकुल दरश सब काहुन पावा ॥
सानुकूल बह त्रिविध बयारी * सघट सबाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरिफिरिदरशदिखावा * सुरभीसन्मुखशिशुहि पिआवा ॥
मृगमालादाहिन दिशि आई * मंगल गण जनु दीन दिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी * श्यामा वाम सुतरु पर देखी ॥
सम्मुख आयउ दधि अरु मीनो * कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥

दोहा—मंगलमय कल्याण मय, अभिमत फल दातार ॥
जनु सब सांचे होन हित, भये सगुण यक बार ॥ ३५४ ॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके * सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके ॥
राम सरिस बर दुलहिनि सीता * समधी दशरथ जनक पुनीता ॥
सुनि अस ब्याह सगुण सब नाचे * अब कीन्हे विरंचि हम सांचे ॥
इहिविधि कीन्ह बरात पयाना * हय गज गाजहिं हनहिं निशाना ॥
आवत जानि भानुकुलकेतू * सरितन जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच बर वास बनाये * सुरपुर सरिस सम्पदा छाये ॥
अशन शयन बरबसन सुहाये * पावहिं सब निज निज मनभाये ॥
नितनूतनलखि सुख अनुकूला * सकल बरातिन मन्दिर भूला ॥

दोहा—आवत जानि बरात बर, सुनि गहगहे निशान ॥
सजि गज रथ पदचर तुरँग, लेन चले अगवान ॥ ३५५ ॥

कनककलश कल कोपरे थारा * भोजनललित अनेक प्रकारा ॥
भरेसुधासम सब पकवाना * भांति भांति नहिंजाहिं बखाना ॥
फल अनेक बरवस्तु सुहाई * हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषण बसन महामणि नाना * खग मृग हय गज बहु विधियाना ॥

---

१ नीलकण्ठ । २ लोखरी । ३ गाय । ४ हरिणोंकी पंक्ति । ५ मछली । ६ पुल । ७ भोजन । ८ नवीन । ९ झारी । १० अमृत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

मंगल सगुण सुगन्ध सुहाये * बहुत भांति महिपालपठाये ॥
दधि चिवरा उपहार अपारा * भरि भरि कांवरि चले कहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता * उर आनन्द पुलक भर गाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना * मुदित बरातिन हने निशाना ॥

दोहा–हरषि परस्पर मिलन हित, कछुक चले बगमेल ॥
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलत विहाय सुवेल ॥ ३५६ ॥

बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं * मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं ॥
वस्तु सकल राखी नृपआगे * विनय कीन्ह तिन्ह अतिअनुरागे ॥
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा * मै बखशीश याचकन दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई * जनवासे कहँ चले लिवाई ॥
वसन विचित्र पांवडे परहीं * नृप दशरथ तापर पगधरहीं ॥
देखि धनद धनमद परिहरहीं * बरषि सुमन सुर जयजयकरहीं ॥
अतिसुन्दर दीन्हाउ जनवासा * जहँ सबकहँ सबभांति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई * कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई * भूप पहुनई करन पठाई ॥

दोहा–सिय आयसु शिर सिद्धिधरि, गईं जहां जनवास ॥
लिये सम्पदा सकल सुख, सुरपुर भोग विलास ॥ ३५७ ॥

निजनिज वास विलोकि वराती * सुरसुखसकलसुलभसबभांती ॥
विभवभेद कछु काहुनजाना * सकलजनककरकरहिंवखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी * हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अति आनन्द समाई ॥
सकुचत कहि नसकत गुरुपाहीं * पितु दरशन लालच मनमाहीं ॥

---

१ राजाजनक । २ फलाहारीवस्तु । ३ कुबेर । ४ सिद्धि ८ प्रकारकी अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, प्रभुत्व ५ सम्पदाकाभेद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विश्वामित्र विनय बड़ि देखी * उपजा उर सन्तोष विशेषी ॥
हरषि बन्धु दोउ हृदयलगाये * पुलक अंग लोचन जल छाये ॥
चले जहां दशरथ जनवासे * मनहुँ सरोवर तक्यउ पियासे ॥

दोहा—भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत ॥
उठे हरषि सुख सिन्धु महँ, चले थाहसी लेत ॥ ३५८ ॥

मुनिहिं दण्डवतकीन्ह महीशा * बार बार पद रज धरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उरलाई * दै अशीश पूंछी कुशलाई ॥
पुनि दंडवत करत दोउभाई * देखि नृपति उरसुख न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेंटे * मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥
पुनि वशिष्ठ पद शिर तिन नाये * प्रेम मुदित मुनिवर उरलाये ॥
विप्र वृन्द वंदे दोउ भाई * मनभावति अशीश तिन्ह पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा * लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता * मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

दोहा—पुरजन परिजन जाति जन, याचक मंत्री मीत ॥
मिले यथा विधि सबहिं प्रभु, परम कृपालु विनीत ॥ ३५९ ॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी * प्रीति कि रीति न जाइ बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुतचारी * जनु धन धर्मादिक तनुधारी ॥
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी * मुदित नगर नरनारि विशेषी ॥
सुमनवरषि सुर हनहिंनिशाना * नाकनटी[1] नाचहिं करिगाना ॥
सतानन्द अरु विप्र सचिवगन * मागध सूत विदुष वन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना * आयसु मांगि चले अगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई * ताते पुर प्रमोद[2] अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं * बढहुदिवसनिशिविधिसनकहँहीं[3] ॥

दोहा—राम सीय शोभा अवधि, सुकृत अवधि दोउ राज ॥

१ अप्सरा । २ आनंद । ३ ब्रह्मा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहँ तहँ पुरजन कहहि अस, मिलि नर नारिसमाज॥ ३६०

जनक सुकृत मूरति वैदेही * दशरथ सुकृतरामधरि देही।
इनसम काहु न शिव आराधे * काहु न इन समान फल साधे।
इनसमकोउनभयउ जगमाही * है नहिं कतहू होन्यहु नाही।
हमसब सकल सुकृतकी राशी * भये जगजन्मि जनकपुरवासी।
जिन जानकी रामछबि देखी * कोसुकृती हमसरिस विशेषी।
पुनि देखत रघुवीर विवाहू * लेब भलीविधि लोचन लाहू।
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी * यह विवाह बड़लाहुसुनयनी।
बड़े भाग्य विधि बात बनाई * नयन अतिथि होइहैं दोउभाई।

दोहा—बारहिं बार सनेह वश, जनक बुलाउब सीय ॥
लेन आइहहिं बन्धु दोउ, कोटि काम कमनीय ॥ ३६१ ॥

विविध भांति होइहि पहुनाई * प्रिय न काहि अस सासुरमाई।
तब तब रामलषणहिंनिहारी * होइहहिं सब पुरलोगसुखारी।
सखि जस राम लषणकर जोटा * तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा।
श्याम गौर सब अंग सुहाये * तेसब कहहिं देखि जे आये।
कहा एक मैं आजु निहारे * जनु विरंचि निजहाथ सँवारे।
भरत राम. एकहि अनुहारी * सहँसा लखि न सकहिं नरनारी॥
लषण शत्रुसूदन इक रूपा * नख शिख ते सब अंग अनूपा॥
मनभावहिंसुख वरणि न जाहीं * उपमाकहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं॥

छंद—उपमानकोउ कह दासतुलसी कतहुँ कविकोविद कहैं ॥
बलविनय विद्या शील शोभा सिन्धु इन सम ये अहैं ॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहि विनय सुनावहीं ॥
ब्याहिय सु चारिउ भाइ इहिपुर हम सुमंगल गावहीं ॥ ३९॥

१ सेवा-पूजा। २ शोभा। ३ नेत्रोंकालाभ। ४ शीघ्र। ५ शत्रुघ्न। ६ पण्डित। ७ समुद्र।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—कहहिं परस्पर नारि, वारि विलोचन पुलक तनु ॥
सखि सब करब पुरारि, पुण्य पयोनिधि भूपदोउ ॥ ३९ ॥

इहिविधि सकलमनोरथकरहीं * आनंदउमँगिउमँगिउर भरहीं ॥
जे नृप सीय स्वयम्बर आये * देखि बन्धु सब तिन सुखपाये ॥
कहत रामयश विशद विशाला * निज निज भवन गये महिपाला॥
गयेबीति कछुदिन यहिभांती * प्रमुदित पुरजन सकलवराती ॥
मंगलमूल लगनदिन आवा * हिमऋतु अगहनमास सुहावा ॥
ग्रह तिथि नखत योगवरवारू * लगनशोधिविधिकीन्ह विचारू ॥
पठैदीन नारद कर सोई * गुणीजनकके गणकन जोई ॥
सुनी सकल लोगन यहबाता * कहहिं ज्योतिषी अहहिं विधाता॥

दोहा—धेनु धूलि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल ॥
विप्रन कह्यउ विदेहसन, जानि समय अनुकूल ॥ ३६२ ॥

उपरोहितहि कह्यउ नरनाहा * अब विलम्ब कर कारण काहा ॥
सतानन्द तब सचिव बुलाये * मंगलकलश साजि सब लाये ॥
शंख निशान पणव बहु बाजे * मंगलकलश सगुण सब साजे ॥
शुभगसुआसिनि गावहिंगीता * करहिं वदध्वनि विप्र पुनीता ॥
लेन चले सादर इहभांति * गये जहां जनवास बराती ॥
कोशलपति कर देखि समाजू * अति लघु लगे तिनहि सुरराजू ॥
भयउ समय अब धारिय पाऊ * यह सुनिपरा निशानन घाऊ ॥
गुरुहि पूंछिकरि कुलविधिराजा * चले संग मुनि साधु समाजा ॥

दोहा—भाग्य विभव अवधेश कर, देखि देव ब्रह्मादि ॥
लगे सराहन सहस मुख, जानि जन्म निज वादि ॥ ३६३ ॥

सुरन सुमंगल अवसर जाना * वरषहिं सुमन बजाइ निशाना ॥

१ निर्म्मल । २ गृह । ३ ज्योतिषी । ४ मंत्री । ५ पुरकीलडकियां । ६ छोटे । ७ इन्द्र । ८ बाजा । ९ वृथा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा * चढ़े विमानन नाना यूथा ॥
प्रेम पुलक तनु हृदय उछाहू * चले विलोकन राम विवाहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे * निजनिज लोक सबहिं लघुलागे ॥
चितवहिं चकितविलोकिवितानाः * रचनासकल अलौकिकनाना ॥
नगर नारि नर रूप निधाना * सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सब सुर नर नारी * भयेनखत जनु विधु उजियारी ॥
विधिहि भयउ आश्चर्य विशेषी * निजकरणी कछु कतहुँ न देखी ॥

दोहा—शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु ॥
हृदय विचारहु धीर धरि, सिय रघुवीर विवाहु ॥ ३६४ ॥

जिनकर नाम लेत जगमाहीं * सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी * ते सिय राम कह्यउ कामारी ॥
इहिविधि शंभु सुरन समुझावा * पुनि आगे वर वसह चलावा ॥
देवन देखेउ दशरथ जाता * महामोदमन पुलकित गाता ॥
साधु समाज संग महिदेवा * जनु तनु धरे करहिंसुरसेवा ॥
सोहत साथ शुभग सुत चारी * जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥
मरकत कनक वरन वर जोरी * देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहिं विलोकि हिय हरषे * नृपहि सराहि सुमन तिन्हवरषे ॥

दोहा—रामरूप नखशिख सुभग, बारहिं बार निहारि ॥
पुलक गात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ॥ ३६५ ॥

केकि कण्ठद्युति श्यामल अंगा * तडितविनिन्दक वसनसुरंगा ॥
ब्याहविभूषण विविध बनाये * मंगलमय सब भांति सुहाये ॥
शरदविमलविधुवदन सुहावन * नयननवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुन्दरताई * कहिनजाय मनहींमन भाई ॥

---

१ ब्रह्मा । २ श्रेष्ठबैल-नन्दी । ३ चारप्रकारकेमोक्ष । ४ नीलमणि । ५ मोर । ६ कांति-प्रकाश । ७ विजुली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बन्धु मनोहर सोहहिं संगा * जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुँवर बरवाजि नचावहिं * वंश प्रशंसक विरुद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर राम विराजे * गति विलोकि खगनायक लाजे ॥
कहि न जाइ सब भांति सुहावा * वाजि भेष जनु कामबनावा ॥

छंद–जनुबाजिभेषबनाइमनसिजरामहितअतिसोहहीं ॥
अपनवय वपु रूप गुण गति सकल भुवन विमोहहीं ॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकतोहिलगे ॥
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे ॥ ४० ॥

दोहा–प्रभु मनसहिं लयलीन मन, चलत वाजि छबिपाव ॥
भूषण उडगणतडित घन, जनु वर वरहि नचाव ॥ ३६६ ॥

ज्यहि बरवाजि राम असवारा * त्यहि शारदहु न वरणै पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे * नयन पंचदश अति प्रिय लागे ॥
हरिहित सहित राम जब जोहे * रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि राम छबि विधि हरषाने * आठहि नयन जानिपछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू * विधिते डेवढ़े लोचन लाहू ॥
रामहि चितव सुरेश सुजाना * गौतमशाप परमहित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं * आजु पुरन्दर सम कोउ नाहीं ॥
मुदित देवगण रामहिं देखी * नृपसमाज दुहुँ हरष विशेषी ॥

छंद हरिगीति ॥

अति हर्ष राज समाज दुहुँ दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी ॥
बरषहिं सुमनसुरहरषि कहि जय जयति जयरघुकुलमनी ॥
इहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥४१॥

१ कामदेव । २ अवस्था । ३ देह । ४ इन्द्र । ५ प्रसन्नयुत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सँवारि ॥
चलीं मुदित परिछनकरन, गजगामिनि वरनारि ॥ ३६७ ॥
विधुवदनी मृगशावकलोचनि * सब निजतनुछबिरतिमदमोचनि ॥
पहिरे वरण वरण वर चीरा * सकल विभूषण सजे शरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये * करहिं गान केलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं * चाल विलोकिकामगजलाजहिं ॥
बाजहिंबाजन विविध प्रकारा * नभ अरु नगर सुमंगल चारा ॥
शची शारदा रमा भवानी * जेसुर तिय शुचिसहजसयानी ॥
कपटनारि वरभेष बनाई * मिलीं सकल रनिवासहि आई ॥
करहिं गान कलमंगल वानी * हरष विवश सब काहु न जानी ॥
छंद—कोजान केहि आनन्द बश सब ब्रह्म वर परिछन चलीं ॥
कलगान मधुर निशान वरषहिं सुमन सुर शोभा भलीं ॥
आनन्द कन्द विलोकिदूलह सकलहिय हर्षित भईं ॥
अम्भोज अम्बक अम्बुउमँगिसुअंगपुलकावलिछईं ॥ ४२ ॥
दोहा—जो सुखभा सिय मातु मन, देखि राम वर भेष ॥
सो न सकहि कहि कल्पशत, सहस शारदा शेष ॥ ३६८ ॥
नयन नीर हठि मंगलजानी * परिछन करहिं मुदित मनरानी ॥
वेदविहित अरु कुलव्यवहारू * कीन्ह भलीविधि सब परिचारू ॥
पंचशब्द ध्वनि मंगलगाना * पट पांवडे परहिं विधि नाना ॥
करि आरती अर्घ्यतिन दीन्हा * राम गमन मंडप तब कीन्हा ॥
दशरथसहित समाज विराजे * विभवविलोकिलोकपति लाजे ॥
समय समय सुर वर्षहिंफूला * शांति पढ़हिं महिसुरे अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई * आपन पर कछु सुनै न काई ॥

---

१ नाशकर्त्ता । २ कोकिल । ३ कमल । ४ नेत्र । ५ जल । ६ तत, वितत, अनघ, घन, सुकिया, । ७ ऐश्वर्य । ८ इन्द्र-वसु । ९ ब्राह्मण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहिविधि राम मंडपहिं आये * अर्घ्यदेइ आसन बैठाये ॥
छंद–बैठारि आसन आरती करि निरखि बर सुखपावहीं ॥
मणि बसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुरवर विप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं ॥
अवलोकिरविकुलकमलरविछविसफलजीवनलेखहीं ॥ ४३ ॥
दोहा–नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरि पाइ ॥
मुदित अशीषहि नाइ शिर, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ३६९ ॥
मिले जनक दशरथ अतिप्रीती * करिवैदिक लौकिक सबरीती ॥
मिलत यथादोउ राजविराजे * उपमा खोजिखोजि कविलाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हियमानी * इन सम यह उपमा उर आनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे * सुमन वरषि यश गावन लागे ॥
जग विरंचि उपजावा जबते * देखे सुने ब्याह बहु तबते ॥
सकलभांति समसाज समाजू * सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा सुनि सुन्दर सांची * प्रीति अलौकिक दुहुँ दिशिमांची॥
देत पांवडे अर्घ्य सुहाये * सादर जनक मण्डपहि ल्याये ॥
छं०–मण्डप विलोकि विचित्ररचना रुचिरता मुनि मनहरे ॥
निजपाणि जनक सुजान सबकहँ आनि सिंहासन धरे ॥
कुलइष्ट सरिस वशिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही ॥
कौशिकहि पूजतपरमप्रीति कि रीति तौ न परैकही ॥ ४४ ॥
दोहा–वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश ॥
दिये दिव्य आसन सबहिं, सबसन लही अशीश ॥ ३७० ॥
बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा * जानि ईश सम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरिकर विनय बड़ाई * कहि निज भाग्य विभवबहुताई ॥

१ वाणी । २ विचित्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजे भूपति सकल बराती * समधी सम सादर सब भांती।
आसन उचित दिये सबकाहू * कहौं कहा मुख एक उछाहू।
सकल बरात जनक सनमानी * दान मान विनती वरवानी।
विधि हरि हर दिशपतिदिनराऊ * जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ॥
कपट विप्रवर भेष बनाये * कौतुक देखहिं अति सचुपाये।
पूजे जनक देवसम जाने * दिये सुआसन बिन पहिंचाने।

छं०—पहिंचानको क्यहि जान सबहि अपान सुधि भोरीभई ॥
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दिये ॥
अवलोकि सरल स्वभाव प्रभुको विबुधमन प्रमुदितभये॥४५॥

दोहा—रामचन्द्र मुख चन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर ॥
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ॥ ३७१ ॥

समय विलोकि वशिष्ठ बुलाये * सादर सतानन्द मुनि आये।
वेगि कुँवरि अब आनहु जाई * चले मुदित मन आयसु पाई।
रानी सुनि उपरोहित वानी * प्रमुदित सखिन समेत सयानी।
विप्रवधू कुलवृद्ध बुलाई * करि कुलरीति सुमंगल गाई।
नारि भेष जे सुरवर वामा * सकल स्वभाय सुन्दरी श्यामा।
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी * बिन पहिचान प्राणते प्यारी।
बार बार सन्मानहि रानी * उमा रमा शारद सम ज्ञानी।
सीय सँवारि समाज बनाई * मुदित मण्डपहि चली लिवाई।

छंद—चलि ल्याइ सीतहि सखीसादर सजिसुमंगलभामिनी ॥
नव सप्त साजे सुन्दरी सबमत्त कुंजरगामिनी ॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर बाजहीं ॥ ४६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सोहत वनिता वृंदमहँ, सहज सुहावनि सीय ॥
छवि ललना गण मध्य जनु, सुखमा[2] अति कमनीय॥ ३७२॥

सिय सुन्दरता वरणि नजाई * लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवत दीख बरातिन सीता * रूपराशि सब भाँति पुनीता ॥
सबहि मनहि मन कीन्ह प्रणामा * देखि राम भये पूरण कामा ॥
हरषे दशरथ सुतन समता * कहि नजाइ उर आनँद जेता ॥
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला * मुनि अशीश ध्वनि मंगल मूला॥
गान निशान कुलाहल भारी * प्रेम प्रमोद नगर नर नारी ॥
इहिविधि सीय मण्डपहि आई * प्रमुदित शान्ति पढ़हिं मुनिराई॥
तेहिअवसर करि विधि व्यवहारू * दुहुँ कुल गुरु सब कीन अचारू॥

छंद—आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं ॥
सुर प्रकट पूजा लेहिं देहिं अशीश अति सुख पावहीं ॥
मधुपर्क[4] मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमें चहैं ॥
भरे कनक कोपर कलश सब कर लिये परिचारकरहैं[5] ॥४७॥
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये ॥
यहिभांति देव पुजाइ सीतहि शुभग सिंहासन दिये ॥
सिय राम अवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै ॥
मन बुद्धि वरवाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥ ४८ ॥

दोहा—होम समय तनु धरि अनल[6], अति हित आहुति लेहिं ॥
विप्र भेषधरि वेद सब, कहि विवाह विधि देहिं ॥ ३७३ ॥

सीयमातु किमिजाइ बखानी * जनकपाटमहिषी जगजानी ॥
सुयश सुकृत सुखसुन्दर ताई * सब सभटि विधि रची बनाई ॥

---

१ स्त्रियोंकेझुण्डमें । २ शोभा । ३ गोघृतमिश्रित-मिश्री । ४ पूगीफल, पान । अक्षत हरिद्रा, रत्नादिअनेकद्रव्य । ५ शुचिसेवक । ६ अग्नि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समय जानि मुनिवरनबुलाई * सुनत सुवासिनि सादरल्याई ॥
जनक बामदिशि सोह सुनयना * हिमगिरिसंग बनी जनु मयना ॥
कनककलश मणि कोपररूरे * शुचि सुगन्ध मंगल जलपूरे ॥
निजकर मुदित राउ अरु रानी * धरे रामके आगे आनी ॥
पढहिं वेद मुनि मंगल वानी * गगन सुमन झरि अवसर जानी॥
वर विलोकि दम्पति अनुरागे * पाँय पुनीत पखारन लागे ॥
छंद–लागे पखारन पाँय पंकज प्रेमतनु पुलकावली ॥
नभ नगर गाननिशानजयध्वनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली ॥
जेपदसरोज मनोजअरिउर सरस देव विराजहीं ॥
जेसुकृत मूरति विमलता मन सकल कलिमलभ्राजहीं॥४९॥
जेपरसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई ॥
मकरन्द जिनको शम्भु शिर शुचिता अवधि सुरवर नई ॥
करि मधुप मन मुनि योगि जन जेहिसेइ अभिमत गतिलहैं॥
तेपद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं॥५०॥
बर कुँवर करतल जोरि शोखोच्चार दोउ कुलगुरुकरैं ॥
भयोपाणिग्रहणविलोकिबिधिसुरमनुजमुनिआनँदभरैं ॥
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलसैं हिये ॥
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण दिये ॥ ५१ ॥

अथ क्षेपक ।

महासङ्कल्पः

* ओं विष्णुः ३ आ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ओं तत्सत् श्री हंसस्य सच्चिदानन्दरूपिणोब्रह्मणोनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भितानिर्वाच्यायोगात्काल कर्म्मस्वभावाविर्भूत महत्तत्त्वोदिताहंकार तृतीयोभूतवियदादिपञ्चकेन्द्रिय देवता निर्म्मिताण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लोके लीलया तन्म-ध्यवर्त्ति भगवतः

१ आकाश । २ पुष्पवृष्टि । ३ राजाजनक और सुनयना । ४ महादेव। ५ वेदकीऋचायें । ६ वसिष्ठऔरशतानंद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीनारायणस्याङ्गनाभिकमलेद्भूतेन सकललोकपितामहेन ब्रह्मणा सृष्टिं कुर्व्वता तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितेन महापुरुषरूपिणा सितवाराहा वतारेण ध्रियमाणायामस्यां भूर्लोकसंज्ञितायांधरित्र्य सप्तद्वीपमण्डितायां क्षीराद्यब्धिद्वि-गुणद्वीपवलयीकृतलक्षयोजनविस्तीर्णे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे स्वर्गस्थिताया शासि-तावतारे गंगादिसरिद्भिः पाविते निखिलजनपावने शौनकादिमुनिकृतनिवशाति नैमिषारण्ये आर्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे अयोध्याख्ये मध्यदेशे श्रीभगवन्मार्त्तण्डकृपा-पात्रकालत्रितयज्ञगर्गवराहाचार्य्यादिगणितायां परार्ध्यादिसंख्यायां श्रीब्रह्मणो द्विती-यपरार्द्धस्य द्वितीययामे तृतीयमहूर्ते श्रीश्वेत वाराहनाम्नि प्रथमकल्पे स्वायम्भुवस्वारोचिषोत्तमतामसरैवतचाक्षुषेति षण्मनूनामतिक्रम्यमाणे सम्प्रति सप्तमे मन्वन्तरे चतुर्णां युगानां मध्ये त्रेतायुगे षष्टयब्दानां मध्ये अमुक-सम्वत्सरे मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ अमुक नक्षत्रे अत्रिगो-त्रोत्पन्नः वृश्चिकराशिजनकवर्म्मा समद्विषीकोहं काश्यपगोत्रस्य काश्यपावत्सनै ध्रुवेति त्रिप्रवरस्य माध्यंदिनीशाखिनो यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजराजेश्वरस्य नाभागवर्म्मणः प्रपौत्राय राजाअजवर्म्मणः पौत्राय राजादशरथवर्म्मणः पुत्राय आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने श्रीरामचंद्रनाम्ने वराय आत्रेयगोत्रस्य आत्रेय श्रातातपसांख्येति त्रिप्रवरस्य माध्यंदिनीशाखिनो यजुर्वेदाध्यायिनः श्री-मद्राजा निमिवर्म्मणः प्रपौत्रीम् मिथिवर्म्मणः पौत्रीम् जनकवर्म्मणः पुत्रीम् आयुष्मतीं श्रीरूपिणीं वरार्थिनीं सीतानाम्नीं कन्यां शक्त्या बहुयौतुकान्वितां समस्तफलप्राप्तिकामः पितॄन् पवित्रीकर्तुं आत्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये देवाग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ अग्निसाक्षिकतया सहधर्माचरणाय तुभ्य महंसम्प्रददे प्रतिगृण्हातु भवान्।

सीतां कन्यामिमां राजन् यथाशक्त्याअलंकृताम् ॥
तुभ्यं काश्यपगोत्राय, दत्तां राम समाश्रय ॥ १ ॥

इति क्षेपक।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहि हरिहि श्री सागरदई ॥
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी विश्व कल कीरति नई ॥
किमि करैं विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति सांवरी ॥
करि होम विधिवत गांठि जोरी होन लागीं भांवरी ॥ ५२ ॥
दोहा–जयध्वनि वन्दी वेदध्वनि, मंगल गान निशान ॥
सुनि हर्षहिं वरषहिं विबुध, सुरतरु सुमनसुजान ॥ ३७४ ॥
कुँवरि कुँवर कल भांवरि देहीं * नयन लाभ सब सादर लेहीं ।
जाइ न वरणि मनोहर जोरी * जो उपमा कछु कहिय सो थोरी ।
राम सीय सुन्दर परिछाहीं * जगमगाहिं मणि खंभन माहीं ।
मनहु मदन रति धरि बहु रूपा * देखहिं राम विवाह अनूपा ।
दरश लालसा सुकुच नथोरी * प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी ।
भये मगन सब देखनहारे * जनक समान अपान बिसारे ।
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी * नेग सहित सब रीति निबेरी ।
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं * शोभाकहि नजात विधिकेहीं ।
अरुणपराग[2] जलजभरि[3] नीके * शशिहि भूषिअहिलोभअमीके[5] ।
बहुरि वशिष्ठ दीन अनुशासन * वर दुलहिनि बैठे इकआसन ।
छंद–बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ॥
तनु पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये ।
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा ॥
केहि भांति वरणि सिरात रसना एकमुख मंगलमहा ॥ ५३ ॥
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु व्याह साज सँवारिकै ॥
माण्डवी श्रुतिकीर्त्ति उर्म्मिला कुँवरि लई हँकारिकै ॥
कुशकेतु[6] कन्या प्रथम जो गुणशील सुख शोभामई ॥

१ कल्पवृक्षकेफूल । २ लालरज । ३ कमल ४ सर्प । ५ अमृत ।
६ जनकजीके छोटे भाईकी पुत्री मांडवी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दई ॥ ५४ ॥
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै ॥
सो जनक दीन्ही व्याहि लषणहि सकल विधि सनमानिकै ॥
ज्यहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सबगुणआगरी ॥
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप शील उजागरी ॥ ५५ ॥
अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं ॥
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर वरण वर सह एक मण्डप राजहीं ॥
जनु जीव अरु चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ॥५६॥
दोहा—मुदित अवधपति सकल सुत, बधुन समेत निहारि ॥
जनु पाये महिपाल मणि, क्रियन सहित फल[2]चारि ॥ ३७५॥
जस रघुवीर व्याह विधि वरणी * सकलकुँवर व्याहे त्यहिकरणी ॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी * रहा कनकमणि मण्डप पूरी ॥
कम्बल[3] बसन विचित्र पटोरे[4] * भांति भांति बहु मोल न थोरे ॥
गज रथ तुरँग दास अरु दासी * धेनु अलंकृत कामदुहासी ॥
वस्तु अनेककरिय किमिलेखा * कहिनजाइ जानहिं जिन देखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने * लीन्हअवधपति सब सुखमाने ॥
दीन्हयाचकन जो ज्यहि भावा * उवरा सो जनवासहिं आवा ॥
तब करजोरि जनक मृदुवानी * बोले सब बरात सनमानी ॥
छंद—सनमानिसकलबरातसादर दानविनयबड़ायकै ॥
प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै ॥
शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुट किये ॥
सुरसाधुचाहतभावसिन्धुकितोषजलअंजलिदिये ॥ ५७ ॥

---

१ भक्ति, तपस्या, सेवा, श्रद्धा । २ मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ । ३ ऊनवस्त्र ।
४ रेशमी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षेपक ॥

कन्यापक्षे शतानंदजी. ॥

श्लोक. ॥

वासो यस्य समस्तजीवननिधौ रत्नाकरे भूषणं
यस्यास्ते हृदि कौस्तुभं सुविमलं यस्यास्ति लक्ष्मीर्वशे।
वाणी यस्य मुखारविन्दविदिता नन्दः सदा नन्दते
तस्मै लोकविभूषणाय भवते किं देयमस्मद्विधैः ॥ १ ॥

भाषार्थः–हे सम्बन्धीजी ! सम्पूर्ण जल वा प्राणियोंके जीवनकास्थान जो समुद्र तिसमें जिनका वासहै, और जिनके वक्षस्थलमें निर्मल कौस्तुभ मणिहै, और जिनके लक्ष्मी वशमेंहै, वाणी जिनकी मुख कमलमेंही प्रकटहै जिनका खङ्ग निरन्तर आनन्द करताहै, ऐसे लोकोंके आभूषण रूप आपको हमारी सदृश (मनुष्य) क्या देसक्तेहैं अर्थात् आपको हम कुछभी देने लायक नहींहैं ॥ १ ॥

वर पक्षे वशिष्ठजी. ॥

धन्यो मेरुगिरिर्यदेकशिखरे ब्रह्मेन्द्ररुद्रादयः
स्वच्छन्दं निवसन्ति स क्षितितले कास्तीति न ज्ञायते।
तां धत्ते भुजगाधिपः स च करे शम्भोरभूत्कंकणं
देवोऽसौ वसति त्वदीयहृदये त्वत्तो महान्नापरः ॥ २ ॥

हे सम्बन्धीजी पहले तौ जिसके एकही शिखरमें ब्रह्मा इंद्र शिव आदि देवता सुखसे रहतेहैं ऐसा सुमेरु पर्वतही धन्यहै । वह इतना बड़ा पर्वत इस पृथ्वीमें कहांहै यह कोई नहीं जानता । और उस पृथ्वीको (जिसमें इतना बड़ा पर्वतहै) शेषजी धारण करतेहैं । वोह शेषजी भी शिवजीके हाथका कंकणहै और वेही शिवजी आपके हृदयमें बास करतेहैं इस कारण आपसे बड़ा और कोईभी नहींहै ॥ २ ॥

इति क्षेपक ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Archives. Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करजोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशलरायसों ॥
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों ॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये ॥
यहराज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये ॥ ५८ ॥
ये दारिका[1] परिचारिका[2] करि पालवी करुणामयी ॥
अपराध क्षमिवो बोलि पठये बहुतहौं ढीठी दयी ॥
पुनि भानुकुल[3]भूषण सकल सन्मान विधि समधी किये ॥
कहिजातनहिंविनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहिये ॥ ५९ ॥
वृन्दारकों[4] गण सुमन बरषहिं राउ जनवासहिं चले ॥
दुन्दुभी ध्वनि[5] वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै ॥
दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कुहवँरल्याइकै[6] ॥ ६० ॥
दो०—पुनि पुनि रामहिचितव सिय, सकुचतिमनसकुचैन ॥
हरति मनोहर मीन छवि, प्रेमपियासे नैन ॥ ३७६ ॥
श्यामशरीर स्वभाय सुहावन * शोभा कोटि मनोजलजावन ॥
जावक[7]युत पदकमल सुहाये * मुनि मन मधुप[8] रहत जहँ छाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती * हरत बालरवि दामिन ज्योती ॥
कलकिंकिणिकटिसूत्र मनोहर * बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
पीत जनेउ महाछबि देई * कर मुद्रिका चोरि चितलेई ॥
सोहत ब्याहसाज सब साजे * उर आयत[9] सब भूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती * दुहुँ आचरन्हलगे मणि मोती ॥
नयनकमल कलकुंडल काना * वदनसकलसौंदर्य्य निधानों[10] ॥

१ लड़कियां २ सेवकिन । ३ राजादशरथ । ४ देवता । ५ थाप । ६ महाउ रसहित । ७ भ्रमर । ८ छातीचौड़ी । ९ छोर । १० स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन्दर भृकुटि मनोहरनासा * भालतिलक शुचि रुचिरनिवासा ।
सोहत मौर मनोहर माथे * मंगलमय मुक्तामणि गाथे ।

छंद—गाथे महामणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।
पुरनारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखि छवि तृणतोरहीं ।
मणिवसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुरसुमनबरषहिंसूतमागधवन्दि सुयशसुनावहीं ॥ ६१ ।

कुहवरहिं आने कुँवर कुँवरि सुआसिनिन्ह सुखपाइ ।
अति प्रीति लौकिक रीतिलागीं करन मंगल गाइ ।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन शारदकहैं ।
रनिवास हास बिलास रसबश जनमको फलसबलहै ॥ ६२ ।

निजपाणिमणिमहँ देखि प्रतिमूरति स्वरूपनिधानकी ।
चालति नभुजबल्ली विलोकति विरहबशभइ जानकी ।
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम नजाइ कहि जानहिं अली ।
वरकुँवरिसुन्दरसकलसखिनलिवाइजनवासहिंचली ॥ ६३ ।

त्यहिसमय सुनिय अशीश जहँतहँ नगर नभ आनँदमहा ।
चिरजियहु जोरी चारु चाच्यउ मुदितमन सबही कहा ।
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभि हनं
चलेहरषिवरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी॥ ६४ ।

दोहा—सहित बधूटिन कुँवर सब, तब आये पितुपास ।
शोभा मंगल मोद भरि, उमग्यउ जनु जनवास ॥ ३७७ ।

पुनि जेवनार भयउ बहुभांती * पठये जनक बुलाइ बराती ।

१ रगं रंगकेअमोलचिन्तामणि । २ अंगुली । ३ स्त्रियोंसमेत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परत पांवडे बसन अनूपा * सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सबके पाँव पखारे * यथायोग्य पीढन बैठारे ॥
धोये जनक अवधपति चरणा * शील सनेह जाहि नहिं वरणा ॥
बहुरि रामपदपंकज धोये * जे हरहृदय कमलमहँ गोये ॥
तीनों भाइ राम सम जानी * धोये चरण जनक निज पानी ॥
आसन उचित सबहिंनृपदीन्हे * बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे * कनक कील मणिपरण सँवारे ॥
दोहा-सूपोदन सुरभीसरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत॥
क्षण महँ सबके परसिगे, चतुर सुआर विनीत ॥ ३७८ ॥
पंच कौर करि जेंवन लागे * गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना * सुधा सरिस नहिं जाहिं वखाना ॥
परुसनलगे सुआर सुजाना * व्यंजन विविध नाम को जाना ॥
चारि भांति भोजन विधिगाई * एक एक विधि वरणि नजाई ॥
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती * एकएकरस अगणित भांती ॥
जेंवत देहिं मधुर ध्वनि गारी * लैलै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समयसुहावन गारि विराजा * हँसतराउ सुनि सहित समाजा ॥
यहि विधि सबही भोजन कीन्हा * आदरसहित आचमनलीन्हा ॥
दोहा-देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज ॥
जनमासे गमने मुदित, सकल भूप शिरताज ॥ ३७९ ॥

अथ क्षेपक ॥

राम कलेवा ॥

छंद ॥

भोर भये अपने कुमारको जनक वेगि बुलवाये ॥

---

१ रसोईदारोंको। २ दाल भात। ३ गोघृत। ४ भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य। ५ खट्टा, मिट्ठा, चरफरा, कषाय, कटु, क्षार,।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनिकै पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू ॥
गमनहु तात तुरति जनवासे जहँ श्री अवध नरेशू ॥
विनय सुनाय राय दशरथसों पाय रजाय सचेतू ॥
आनहु चारिउ राज कुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीश नाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ॥
सखनसमेत मंद हँसि गमनें चढि चढि चपल तुरंगा ॥
कलेनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ॥
मृदु मुसकात वतात परस्पर पहुंचि गये जनवासे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरंगते मिथिलापतिके वारे ॥
चारिहु सुत युत अवधराजको सादर जाय जुहारे ॥
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधिको लखि सखन सहित सतकारे ॥
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहि छिन सानुज निरखि राम छबि सखन सहित सुख माने ॥
लक्ष्मीनिधि मुखदरश पायकै रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि कर जोरि भूपसों कोमल वैन उचारे ॥
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ॥
चारिहु कुँवर बुलाय वेगही बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगरकी जान तयारी सेवक सब सुख पागे ॥
निज निज प्रभुहि सँवारन लागे लै भूषण वर वागे ॥
रघुनंदन शिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बांधी ॥
तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रुचि रुचि पेंजनि साधी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा. ॥

वरण सकै को रामको, अनुपम दूलह भेष ॥
जेहि लखि शिव सनकादिको, रहत न तनुहि सरेष ॥

छंद-इमि सजि अनुज सहित रघुनंदन चारौं राजदुलारे ॥
बढे उमंगन चढे तुरंगन अंगन बसन सँभारे ॥
जे रघुवंशी कुँवर लाडिले प्रभु कहँ प्राणपियारे ॥
चढे तुरंग संग तेउ गमने राम रंग मतवारे ॥
राम वाम दिशि श्री लक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं ॥
चंचल वागे किये तुरंतकी वातैं करत हँसो हैं ॥
जगवंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदनको वाजी ॥
ताको गुण छवि कहँ लौ वरणौं जोहि होत मन राजी ॥
जित रुख पावै तित पहुंचावै छन आवै छन जावै ॥
जिमि जिमि थमि थमि थरकि भूमि पर गतिन ततिन दरशावै॥
फांदत चंचल चारौं चौकडि चपलहुके चख झांपैं ॥
भरत कुँवरको तुरंग रंगीलो वरणि जाय कहु कांपैं ॥
चंपा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये ॥
सब समाजके आगे निरतै मोर कुरंग लजाये ॥
जो कहुँ नेकहु हाथ उठावत कई हाथ उठि जातो ॥
वार वार चुचुकारि दुलारत ताहू पै न जुडातो ॥
लक्खी घोड़ा लषण लालको बांको निपट चलाको ॥
उडि उडि जात वायु मंडलको परत न पग महि ताको ॥
तरफराय उडिजाय परतहै लक्ष्मीनिधि हय पांही ॥
उचित विचार हँसे रघुवंशी रामहु मृदु मुसकाहीं ॥

In Public Domain. Chandigarh Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तकि तुरंगकी चंचलताई लषणकि देखि चढाई ॥
निमिवंशी रघुवंशी सिगरे ठगिसे रहे विकाई ॥
राम आदि जे कुँवर लाडिले तेउ लखि भरे उछा हैं ॥
रीझि रीझि तहँ लषण लालको वारहिं वार सरा हैं ॥
इति मग होत विलास विविध विधि विपुल बाजने बाजे ॥
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढि बैठी दरवाजे ॥
कोउ तिय निरखि वदनकी सुखमा अति सुखमहँ सो पागी॥
भरी सनेह देह सुधि नाहीं राम रूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनुभूला ॥
फूला नैन मैन मन भूला लागि प्रीति को हूला ॥
कोउ घूंघट पट खोलि सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी ॥
देखत दूलह रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा—कोऊ सूरति लखि सांवरी, तोरति तृण सुखपाग ॥
माधुरि मूरतिमें पगीं, निजमूरति सुख त्याग ॥

छंद—कोउ रघुनंदन छवि विलोकिकै बोली सुन सखि वैना ॥
राजकुवँर ये करन कलेऊ जात जनकके ऐना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आपे चारहु बेटा ॥
रंगभीने रघुवंशी छैला दशरथ राज दुल्हेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारो प्यारी जिन भरि नैन निहारे
नतु दरशन दुर्लभ दूलहके रविकुल प्राणपियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्री मिथिलेशकि बेटी ॥
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति जिन जिन भुज भर भेटी ॥
बोली अपर सखी सुन सजनी भली बात बनि आई ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमहुँ चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हैं हँसाई ॥
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भईं प्रेमवश वामा ॥
सुनत जात मुसकात अनुज युत कृपासिंधु श्री रामा ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सँवारे ॥
राजकुंवर रघुवंशिनके तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उतर जाय लहि सिया मातुकी नगर सुवासिन नारी ॥
कंचन कलश सजे शिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर करले कंचन थारी ॥
परछन चली हेतु रघुवरको वहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि राम छबि दृग आनँद जल बाढी ॥
छकितरही वर वदन विलोकित चकित रहीं तहँ ठाढी ॥
राम रूप रँगि गई रँगीली लखि दूलह सुखसारा ॥
तन मन रह्यो सरेख न काहू को करै मंगलचारा ॥
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ॥
परछन अली भली बिध कीन्हो रोकि विलोचन वारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरंगते चारिउ कुँवर उतारे ॥
पाणिपकरि रघुनंदनजीकों भीतर महल सिधारे ॥
जहँ पिकवैनी सब सुख ऐनी बैठ सुनैना रानी ॥
इन्द्रानीकी कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
चंद्रमुखी चहुँ वोर विराजे कोउ कर चमर चलावै ॥
कोउ सखि देखि रामकी शोभा आरति मंगल गावै ॥
तेहि छन तहां गये रघुनंदन मन फंदन वर वेषा ॥
देखत उठी सकल रनिवासैं रह्यौ न तनुहि सरेषा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाँय पखारे ॥
चारि रंगके चारि सिंहासन चारिहु वर बैठारे ॥
लखि छबि ऐना सासु सुनैना एकन पलक तजैना ॥
भूली चैना बोलि सकैना कहत वनैना वैना ॥
तकि जकि रही तनक नहिं डोलै मगन महा मुद माहीं ॥
राम रूप रँगि गई रँगीली आंसु वहे दृग जाहीं ॥
इमि तहँ दशा विलोकि सासुकी राम गुनत मन मांही ॥
काहभयो यह आजु रानिको पूंछत भे सकुचाही ॥
चतुर सखी चित चरचि रामसों बोली मधुरी वानी ॥
यह तुम्हार गुनहै सब लालन और न कछु उर आनी ॥
सुनत वचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी ॥
वार वार बहु लीन वलैया चूमि कपोलन पानी ॥
माधुरि मूरति साँवलि सूरतिकी तृण तोरति रानी ॥
रीझि रीझि तहँ राम रूपपै बिनही मोल विकानी ॥
पुनि कर जोरि रामसों रानी बोली अति मृदु मोई ॥
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारहु राज दुलारे ॥
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निजकर पायँ पखारे ॥
रचना अधिक पदकके पीठन बैठारे सब भाई ॥
कंचन थारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत पवन दुलावै सासू ॥
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसैं वरणि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अंचये सखियन पान खवाये ॥

In Public Domain, Chanbai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बैठे पहरि पोसाक सखन युत विविध सुगंध लगाये ॥
दोहा-राज ऐन सब चैन युत, राजैं राजकुमार ॥
जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखन मार ॥
छंद-तेहि औसर सुधि पाय सखी मुख लक्ष्मीनिधिकी नारी ॥
नाम सिद्धि पर सिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुंदरि नव जोबन मतवारी ॥
रसिकनरीति प्रीति परवीनी रतिहि लजावनहारी ॥
अति गुणवान निधान रूपकी सब विधि सुभगसयानी ॥
लक्ष्मीनिधिकी प्राणपियारी निमिकुलकी महरानी ॥
अलबेली सरहज रघुवरकी बडी सनेह सिंगारी ॥
प्रीतम प्रीति निवाहन हारी रामरूप रिझवारी ॥
चंचल चषन चहूं दिशि चितवति देखनको अतुराई ॥
भरी उमंग संग सखियनलै तुरत राम ढिग आई ॥
वदन चंद अरविंद लियेकर विहँसत मंदर सोहै ॥
राजकुँवरकर पकडि लाडिली बोली तकि तिरछोंहै ॥
यह चित चोर किशोर भूपके बडे चोर तुम प्यारे ॥
सुरति हमारि भुलाय सांवरे सासु समीप सिधारे ॥
उलटी बात कहौ जिन प्यारी आपन दोष दुराई ॥
तुमही रहिउ छिपाय छवीली सुनत हमार अवाई ॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहि न परयो जनाई ॥
भलौ सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जांहि समाई ॥
सुनत रामके वचन लाडिली बोली मृदु मुसकाई ॥
तुमरे घरकी रीति लालजू यहां न चली चलाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सासु सुनैनाके समीप महँ देत जवाब बनैना ॥
पाणि पकर रघुनंदनजीको गइ लेवाय निज ऐना ॥
चारि सिंहासन दैतहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ॥
बारहि बार निहारि वदन छवि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकंठ मालती माला बसननि अतर लगायो ॥
अंचरसौं मुख पोंछि रामको निज कर पान खवायो ॥
ललित लवंग कपूर संगधरि कोउ सखि पान लगावै ॥
कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ि कोउ सखि चमर डुलावै ॥
जे निमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी ॥
राम मिलनकी बाढ़ि लालसा कहि न सकैं सकुचारी ॥
तिन यह सुन्यौ कि सिद्धसदन में आये चारिहु भाई ॥
तुरतहँ पहुंची सबही प्यारी जानि सखै सुखदाई ॥
देखी राजकुँवरि सब आईं राम दरशकी प्यासी ॥
अति सन्मान कियो सबहीको सिद्धि सदन सुखरासी ॥
मणिन मौरपर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहै ॥
राज तियनकी कौन चले है मुनियनको मन मोहै ॥
दोहा—मन लोभा शोभा निरखि, भई विवस सुकुमारि ॥
चकित छकित सबरहगई, तन मन दशा विसारि ॥
छंद—जो तिय मान अनूप रूप निज रही स्वरूप गुमानी ॥
तेहि लखि राम वदनकी सुखमा विनही मोल विकानी ॥
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ॥
तहँ प्यारी गारी रघुवरको देन दिवावन लागी ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कानन सुन्यों काम अति सुंदर की तुमको सोइ जायो ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन तुम हमार ननदोई ॥
एक बात तुमसों हम पूछैं लाल न राखहु गोई ॥
होत व्याह सम्बंध सबनको अपने जातिहिमाही ॥
निज बहिनी शृंगीऋषिको तुम कैसे दियो विवाही ॥
की उनको मुनीश लैभाग्यो की वोई सँगलागी ॥
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ॥
लषण कह्यो यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखिदीना॥
तहै संयोगहोतहै ताको व्याह तौ कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी ॥
भयो हमारा व्याह तुम्हारे विधिगति गनैंको भागी ॥
औरो येक हास उर आवै अचरज है सब काहू ॥
तुमतौहौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारिभौ व्याहू ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकहिको जीती ॥
जाहिर अहै सकल जग माही तुमरे घरकी रीती ॥
अति उदार करतूतिदार सब अवध पुरीकी बामा ॥
खीर खाय पैदा सुत करती पतिकर कछु नाहिं कामा ॥
सखी वचन सुन तब रघुनंदन बोले मृदु मुसकातैं ॥
आपन चाल छिपावहु प्यारी कहहु आनकी बातैं ॥
कोउ नाहिं जन्मे मात पिताविन बँधी वेदकी नीती ॥
तुमरैतौ महिते सब उपजैं अस हमरे नहिं रीती ॥
बोलीचंद्रकला तेहि औसर परम चतुर सुकुमारी ॥
सिद्धि कुँवरिकी लहुरी भगनी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लरिकांईते रह्यो लालजी तुम तपस्विन सँग मांहीं ॥
ये छल छंद फंद कहँ पाये सत्य कहो हम पांही ॥
की मुनि नारिनके सँग सीखे की निज भगिनी पासें ॥
मीठो सीठो स्वाद लालजी विनचाखे नहिं भासें ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहु तौ अबै कुमारी ॥
वर्णहु पुरुष संग की बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखनको सो सब सुने सुनाये ॥
कामिनि कामकला अब सीखन हम तुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कहौ तब सुनहु भरतजी ऐसे तुम न वखानौ ॥
तुमरी तौ गनती साधुनमें लोक बातका जानौ ॥
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी ॥
ऐसी सेवा करौ कामिनी जामें होंय हम राजी ॥
आये ऐन अपूरव योगी असनिज मन गुण लीजै ॥
अधर सुधारसकौं दै भोजन अतिथे पूजन कीजै ॥
एक सखी कहै सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ॥
ऋषि मखराखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधि पाई ॥
इनको सुन्दर देख कामवश तिया ताडका आई ॥
सोकरतूति नभई लालसों मारेहु तेहि खिसियाई ॥
बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ॥
जोकरतूति बनी नहिं उनते सो हमसे भरि लीजै ॥
विन जाने करतूति सबनको तुम्हरे घरभो व्याहू ॥
सोउ पछितावे न रही पियारी अब करियेहु समाहू ॥

In Public Domain, Gharshal Archives, Jhawan

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो मतिकरहु उपाई ॥
वैसिन सेवामें तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई ॥
सुनि वाणी रिपुदवन लालकी बोली कोउ सुकुमारी ॥
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल विचारी ॥
की कहुँ मिली नारि गुण आगर की गणिकन सँगकीन्हो ॥
तीनो भाइन ते तुमरे महँ लखियतु चिह्न नवीनो ॥
रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहि जाने ॥
गणिका नारिनहूंते सौगुण तुम्हैं अधिक हम माने ॥
हमरो तुमरो चिह्न लाड़िली यैकै भांति लखाई ॥
ताते सखी हमारि तुम्हारी चाही अवशि सगाई ॥
सुनि नव उक्ति युक्तिकी वातैं बोली सिधि सुकुमारी ॥
सुनिये रसिक राय रघुनंदन आनंदकंद विहारी ॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूराति देखि तुम्हारी ॥
कैसे बची होंयगी तुमतें अवध पुरीकी नारी ॥
योंकहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुखऐना ॥
ताको हाथ पकरि रघुनंदन बोले अति मृदु वैना ॥

दोहा-जस मर्यादा जगत्की, बांधिदियो करतार ॥
राजा रंक यती सती, करत सोई व्योहार ॥

छंद-अनुचित उचित विचारि लोग सब तहँ तसराखतभाव ॥
तुम तौ अपने कस जानतिहौ सबहीके रस चाव ॥
यह सुनि भरत लखन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अतिभई सुखारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते तुम सबै प्रेमकी मूरति सूरति की बलिहारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिं प्राणहुँते प्यारी ॥
तुमरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भांति पुजै हौं ॥
लोककि लाज बचाय लाड़िली तुम ते विलग न ह्वैहौं ॥
हम सब भाँति तुम्हारे सांवलि तुम सब भाँति हमारी ॥
सत्य सत्य ये सत्य वचन मम मानहु राजकुमारी ॥

दोहा—रघुनंदनके वचन सुनि, खुलगये कपट किंवार ॥
बढ़्यो प्रेम सब तियनके, तनिकहु नहिं संभार ॥

छंद—पुनि धरि धीरज अली भली विधि जोरि पंकरुह पानी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदु बानी ॥
धन्य भाग्य हमरे रघुनंदन हमते बड़ कोउ नाहीं ॥
बूड़त रही जगत सागरमें राखिलीन्ह गहि बाहीं ॥
प्रति उपकार होत नहिं तुमते जस तुम कीन्हे प्यारे ॥
चंद्र समान होय नहिं कबहूँ जुराहिं हजारन तारे ॥
जेहि जेहि योनि करम वश हमको जनम विधाता देही ॥
तहँ तहँ रसिक राय रघुनंदन तुमहीं मिलहु सनेही ॥
वरु विधि कोटिन करै यातना या तनु छनु छनु छूटै ॥
हमरी तुमरी लगन लाडिले कौनो जन्म न टूटै ॥
सुनि बानी करुणारस सानी रघुवर अंतरजानी ॥
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी ॥
सबसों विदा मांगि रघुनंदन अनुज सहित पगधारे ॥
निकसे मानहु सिद्धि महलते चारिचंद्रछबि वारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—विदा सासुसे होय पुनि, आये सब जनवास ॥
बढ़त छिनाहिं छिन जनकपुर, आनँद परम हुलास ॥

इति क्षेपक ॥

नितनूतन मंगल पुरमाहीं * निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं ॥
बड़े भोर भूपति मणि जागे * याचक गुणगण गावन लागे ॥
देखि कुँवर वर वधुन समेता * किमिकहिजात मोदमन जेता ॥
प्रातक्रियाकरि गे गुरु पाहीं * महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा करजोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा * भयउ आजु मम पूरणकाजा ॥
अब सब विप्र बुलाइ गुँसाई * देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई * पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥

दोहा—वामदेव अरु देवऋषि, बाल्मीकि जाबालि ॥
आये मुनिवर निकर तब, कौशिकादि तपशालि ॥ ३८० ॥

दण्डप्रणाम सबहिं नृप कीन्हा * पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥
चारिलक्ष वरधेनु मँगाई * कामसुरभि सम शील सुहाई ॥
सब विधि सकल अलंकृतकीन्ही * मुदित महीप ऋषिनकहँदीन्ही ॥
करत विनय बहु विधि नरनाहू * लह्यउ आजु जग जीवन लाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा * लिये बोलि पुनि याचकवृन्दा ॥
कनकबसनमणि हयगजस्यंदन * दिये बूझि रुचि रविकुलनंदन ॥
चले पढ़त गावत गुण गाथा * जयजयजय दिनकरकुलनाथा ॥
इहि विधि राम विवाहउछाहू * सकैं न वरणि सहसमुख जाहू ॥

दोहा—बार बार कौशिक चरण, शीश नाइ कह राउ ॥
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपा कटाक्ष प्रभाउ ॥ ३८१ ॥

जनक सनेह शील करतूती * नृप सब भाँति सराह विभूती ॥
दिन उठि विदा अवधपतिमांगा * राखहिं सहित जनक अनुरागा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

नितनूतन आदर अधिकाई * दिनप्रति सहस भाँति पहुनाई ॥
नितनव नगर अनन्द उछाहू * दशरथ गवन सोहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते इहि भांती * जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक सतानन्द तब जाई * कही विदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दशरथ कहँ आयसु देहू * यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये * कहिजयजीव शीश तिननाये ॥

दोहा—अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव ॥
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्र सभासद राव ॥ ३८२ ॥

पुरवासिन सुनि चली बराता * पूंछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्यगवनसुनि सब विलखाने * मनहुँ सांझ सरसिज सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सीध चला बहुभाँती ॥
विविध भाँति मेवा पकवाना * भोजन साज नजाइ बखाना ॥
भरि भरि बसहँ[1] अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरंग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु शीशा ॥
मत्त सहसदश सिंधुर[2] साजे * जिनहिं देखि दिशिकुंजर लाजे ॥
कनकवसनमणि भरिभरियाना * महिषी[3] धेनु वस्तु विधिनाना ॥

दोहा—दायज अमित न सकिय कहि, दीन्ह विदेह बहोरि ॥
जो अवलोकत लोकपति, लोकसम्पदा थोरि ॥ ३८३ ॥

सब समाज इहिभाँति बनाई * जनक अवधपुर दीन्हपठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सबरानी * विकल मीनगण जनु लघु पानी ॥
पुनि पुनि सीय गोदकरलेहीं * देइ अशीश सिखावन. देहीं ॥
होइहहुसंतत[4] पियहि पियारी * चिर अहिवात[5] अशीश हमारी ॥
सासु श्वशुर गुरु सेवा करहू * पतिरुखलखि आयसु[6] अनुसरहू ॥

१ बैल । २ हाथी । ३ भैंसी । ४ निरन्तर । ५ सुहाग । ६ आज्ञा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिसनेहवश सखी सयानी * नारि धर्म सिखवहिं मृदुवानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाई * रानिन बार बार उरलाई ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी * कहहिं विरंचि रची कतनारी ॥

दोहा—त्यहि अवसर भाइन सहित, राम भानुकुल केतु ॥
चले जनक मन्दिर मुदित, विदा करावन हेतु ॥ ३८४ ॥

चारिउ भाइ स्वभाय सुहाये * नगर नारि नर देखन धाये ॥
कोउकह चलन चहतहहिं आजू * कीन्ह विदेह विदाकर साजू ॥
लेहु नयनभरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥
कोजानै केहि सुकृत सयानी * नयन अतिथि कीन्हेविधि आनी ॥
मरण शील जिमि पाव पियूषा * सुरतरु लहै जन्मकर भूखा ॥
पाव नारकी हरिपद जैसे * इनकर दरशन हमकहँ तैसे ॥
निरखि राम शोभा उर धरहू * निजमन फणि मूरति मणिकरहू ॥
इहिविधि सबहि नयन फल देता * गये कुँवर सब राजनिकेता ॥

दोहा—रूपसिंधु सब बन्धु लखि, हरषि उठीं रनिवासु ॥
करहिं निछावर आरती, महामुदित मन सासु ॥ ३८५ ॥

देखि रामछबि अति अनुरागीं * प्रेमविवश पुनि पुनि पदलागीं ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई * सहज सनेह वरणि किमि जाई ॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये * छरस अशन अतिहेतु जिवाये ॥
बोले राम सुअवसर जानी * शील सनेह सकुचमय वानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये * विदा होन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू * बालक जानि करब नित नेहू ॥
सुनतवचन विलख्यउरनिवासू * बोलिनसकहिं प्रेमवश सासू ॥

१कोमलवचन । २ हृदय । ३ पुण्य । ४ अमृत । ५ कल्पवृक्ष । ६ राजाजन कजीकेगृह । ७ षटरसभोजन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हृदय लगाइ कुँवरिसब लीन्ही * पतिनसौंपि विनती अतिकीन्ही ॥
छंद–करिविनय सिय रामहिं समर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहै ॥
बलिजाउँ तात सुजान तुम कहँ विदितगतिसबकीअहै ॥
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राणप्रिय सिय जानिवी ॥
तुलसीसुशीलसनेहलखि निजकिंकरीकरिमानवी ॥ ६५ ॥
सो०–तुम परिपूरण काम, ज्ञान शिरोमणि भाव प्रिय ॥
जन गुणगाहक राम, दोषदलन करुणायतन ॥ ३९ ॥
असकहि रही चरणगहि रानी * प्रेमपंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी वरवानी * बहुविधि राम सासु सनमानी ॥
राम विदा मांगत करजोरी * कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ अशीश बहुरि शिरनाई * भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उरआनी * भई सनेह शिथिल सब रानी ॥
पुनि धीरजधरि कुँवरि हँकारी * वार वार भेंटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरमिलहिं वहोरी * बढ़ी परस्पर प्रीति नथोरी ॥
पुनि पुनि मिलति सखिनविलगाई * बालवत्स जनु धेनु लवाई ॥
दोहा–प्रेम विवश नर नारि सब, सखिन सहित रनिवास ॥
मानहुँ कीन्ह विदेहपुर, करुणा विरह निवास ॥ ३८६ ॥
शुकशारिकं जानकी जिआये * कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥
व्याकुल कहहिं कहाँ वैदेही * सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये विकलखगमृगइहिभांती * मनुज दशा कैसे कहि जाती ॥
बन्धु समेत जनक तब आये * प्रेम उमँगि लोचनजल छाये ॥
सीय विलोकि धीरता भागी * रहे कहावत परम विरागी ॥
लीन्ह राउ उरलाइ जानकी * मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥

१ सेवकिन । २ कृपाकेस्थान । ३ वाणी । ४ पुनि पुनि । ५ आपसमें । ६ तोता और मैना । ७ सोना । ८ पक्षी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समुझावत सब सचिव सयाने * कीन्ह विचार अनवसर जाने ॥
वारहि वार सुता उर लाई * सजि सुन्दर पालकी मँगाई ॥

दोहा–प्रेम विवश परिवार सब, जानि सुलग्न नरेश ॥
कुँवरि चढ़ाई पालकी, सुमिरे सिद्ध गणेश ॥ ३८७ ॥

वहुविधि भूपसुता समुझाई * नारि धर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे * शुचिसेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीयचलत व्याकुल पुरवासी * होहिं शकुन शुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा * संग चले पहुँचावन राजा ॥
रथ गज वाजि बरातिन साजे * सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे * दान मान परिपूरण कीन्हे ॥
चरण सरोज धूरि धरि शीशा * मुदित महीपति पाइ अशीशा॥
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना * मंगलमूल शकुन भये नाना ॥

दोहा–सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरागान ॥
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निशान ॥ ३८८॥

नृप करि विनय महाजन फेरे * सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण वसन वाजि गज दीन्हे * प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार विरदावलि भाखी * फिरे सकल रामहि उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कौशलपति कहहीं * जनक प्रेमवश फिरा नचहहीं ॥
पुनि कह भूपति वचन सुहाये * फिरिय महीप दूरि बड़ि आये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े * प्रेमप्रवाह विलोचन बाढ़े ॥
तब विदेह बोले करजोरी * वचनसनेह सुधा जनु बोरी ॥
करौं कवनविधि विनयसुहाई * महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई ॥

दोहा–कोशलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति ॥
मिलन परस्पर विनय अति, प्रीति न हृदय समाति ॥ ३८९॥

मुनिमण्डली जनक शिरनावा * आशिरवाद सबहिसन पावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सादर पुनि भेटे जामाता * रूपशील गुणनिधि सब भ्राता ॥
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये * बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं क्याहि भाँति प्रशंसा * मुनि महेश मनमानस हंसा ॥
कराहिं योग योगी जेहि लागी * कोह[1] मोह ममता मद[2] त्यागी ॥
व्यापकब्रह्म अलखअविनाशी * चिदानन्द निर्गुण गुणराशी ॥
मनसमेतज्यहि जान न वानी * तरकिनसकहिं सकल अनुमानी ॥
महिमा निगम[3] नेति करिकहहीं * जो तिहुँकाल एकरस रहहीं ॥

दोहा—नयन विषय मोकहँ भयउ, सो समस्त सुखमूल ॥
सबहिं लाभ जगजीव कहँ, भये ईश अनुकूल ॥ ३९० ॥

सबहि भाँति मोहिं दीन बड़ाई * निजजनजानि लीन्ह अपनाई ॥
होइ सहसदश शारद शेषा * करहिंकल्प कोटिक भरि लेखा ॥
मोरभाग्य राउर गुणगाथा * कहिनसिराहिं सुनिय रघुनाथा ॥
मैं कछु कहौं एक बलमोरे * तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार मांगों कर जोरे * मन परिहरै चरण जनि भोरे ॥
सुनि वर[5] वचन प्रेमजनु पोषे * पूरण काम राम परितोषे ॥
करिवरविनय श्वशुरसनमाने * पितु कौशिक वशिष्ठ सम जाने ॥
विनतीबहुरि भरतसन कीन्ही * मिलिसुप्रेम पुनि आशिषदीन्ही ॥

दोहा—मिले लषण रिपुसूदनहिं, दीन अशीश महीश ॥
भये परस्पर प्रेमवश, फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ ३९१ ॥

बार बार करि विनय बड़ाई * रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौशिकपद जाई * चरण रेणु शिर नयनन लाई ॥
सुनिय मुनीश दरशफलतोरे * अगम[6]मनकछु प्रतीति मनमोरे ॥
जोसुखसुयश लोकपतिचहहीं * करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी * सबविधि तव दर्शन अनुगामी ॥

१ क्रोध । २ गर्व्व । ३ वेद । ४ प्रसन्न । ५ श्रेष्ठवाणी । ६ दुर्लभ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीन्हविनय पुनिपुनिशिरनाई * फिरे महीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई * मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहिंनिरखि ग्राम नर नारी * पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥

दोहा–बीच बीच बरवास करि, मग लोगन सुख देत ॥
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आय जनेत ॥ ३९२ ॥

हने निशान पणव[1] बहु बाजे * भेरि शंख ध्वनि हय[2] गय[3] गाजे ॥
झांझ मृदंग डिमडिमी सुहाई * सरसराग बाजै सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि[4]वराता * मुदित सकल पुलकावलिगाता ॥
निज निज सुन्दर सदनसँवारे * हाट वाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजासिंचाई[5] * जहँ तहँ चौके चारु पुराई ॥
बना बजार न जात बखाना * तोरण केतु पताक विताना ॥
सुफलपुंगिफल कदलि रसाला * रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरणी * मणिमय आलवाल[6] कलकरणी ॥

दोहा–विविध भाँति मंगल कलस, गृह गृह रचे सँवारि ॥
सुर ब्रह्मादि सिहाहिँ सब, रघुबरपुरी निहारि ॥ ३९३ ॥

भूपभवन त्यहि अवसरसोहा * रचना देखि मदनमन मोहा ॥
मंगल शकुन मनोहरताई * ऋधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सबसहजसुहाये * तनु धरि धरि दशरथ गृह आये ॥
देखन हेतु राम वैदेही * कहहु लालसा[7] होइ नकेही ॥
यूथ यूथ मिलि चलीं सुवासिनि * निजछबिनिदरहिंमदनविलासिनि ॥
सकल सुमंगल सजे आरती * गावहिं जनु बहु वेष भारती[8] ॥
भूपति भवन कुलाहल होई * जाइ न वरणि समय सुख सोई ॥
कौशल्यादि राम महतारी * प्रेम विवश तनु दशा बिसारी ॥

---

१ ढोल । २ घोड़े । ३ हाथी । ४ सुनी । ५ केसरआदिसुगन्धितचीजें । थलहा । ७ इच्छा । ८ रति । ९ सरस्वती ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–दिये दान विप्रन विपुल, पूजि गणेश पुरारि ॥
प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥ ३९४ ॥
प्रेमप्रमोद विवश सब माता * चलहिं न चरण शिथिल सब गाता ॥
रामदरश हित अति अनुरागीं * परिछन साज सजन सबलागीं ॥
विविध विधान बाजने बाजे * मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला * पान पुंगिफल मंगलमूला ॥
अक्षत अंकुर[1] रोचन लाजा[2] * मंजुलमंजरि तुलसि बिराजा ॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये * मदन शकुन जनु नीड[3] बनाये ॥
शकुन सुगंध नजाहिं बखानी * मंगल सकल सजाहिं सब रानी ॥
रची आरती विविध विधाना * मुदितकराहिं कल मंगल गाना ॥
दोहा–कनकथार भरि मंगलहिं, कमलकरनलिये मात ॥
चलीं मुदित परिछन करन, पुलक पल्लवितगात ॥ ३९५ ॥
धूप धूम नभ मेचक[4] भयऊ * सावन घन घमंड जनु छयऊ ॥
सुरतरु सुमन माल सुर वर्षहिं * मनहुवलाक[5] अवलिमनकर्षहिं ॥
मंजुल मणिमय वन्दनवारा * मनहुँ पाकरिपु[6] चाप सँवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिं अटन्हपरभामिनि * चारुचपल जनु दमकहिं दामिनि ॥
दुन्दुभिध्वनि घन गरजहिं घोरा * याचक चातक दादुर[7] मोरा ॥
शुचि गन्ध बहु वरषहिं बारी * सुखी सकल लखि पुर नर नारी ॥
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा * पुरप्रवेश रघुकुल मणि कीन्हा ॥
सुमिरिशंभु गिरिजा गण राजा * मुदित महीपति सहित समाजा ॥
दोहा–होहिं शकुन बरषहिं सुमन, सुरदुन्दुभी बजाइ ॥
विबुध वधू नाचहिं मुदित, मंजुलमंगल गाइ ॥ ३९६ ॥
मागध सूत वन्दि नट नागर[8] * गावहिं यश तिहुँलोक उजागर ॥

---

१ मूंग । २ रोरी । ३ घर । ४ श्याम । ५ बकुला । ६ इन्द्रधनुष । ७ मेढक । ८ पवित्र । ९ प्रवीण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जयध्वनि विमल वेदवर वानी * दशदिशि सुनिय सुमंगल खानी ॥
विपुल बाजने बाजन लागे * नभसुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरणि नजाहीं * महामुदित मन सुख न समाहीं ॥
पुरवासिन तब राउ जुहारे * देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मणिगण चीरा * वारि विलोचन पुलक शरीरा ॥
आरति करहिं मुदितपुरनारी * हरषहिं निरखि कुँवरवर चारी ॥
शिविका[1] सुभग उघारि उघारी * देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

दोहा—इहिविधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ॥
मुदित मातु परिछनि करहिं, बधुन समेत कुमार॥ ३९७ ॥

करहिं आरती बारहिंबारा * प्रेम प्रमोद लहै को पारा ॥
भूषण मणि पट नानाजाती * करहिं निछावरि अगणित भांती ॥
वधुन समेत देखि सुत चारी * परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय रामछवि देखी * मुदितसफल जगजीवन लेखी ॥
सखीसीयमुख पुनिपुनिचाही * गायनकर निज सुकृत सराही ॥
वरषहिंसुमन क्षणहिंक्षण देवा * नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चाऱ्यउ जोरी * शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहि निपट लघु लागी * इकटक रहि रूप अनुरागी ॥

दोहा—निगम नीति कुलरीति करि, अरघ पाँवड़े देत ॥
बधुन सहित सुत परछि सब, चलींलिवाय निकेत[2]॥ ३९८॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये * जनु मैनोज[3] निजहाथ बनाये ॥
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे * सादर पाँय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि * पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिंबार आरती करहीं * व्यजन[4] चारु चामर[5] शिर ढरहीं ॥
वस्तु अनेक निछावरिहोहीं * भरी प्रमोद[6] मातु सब सोहीं ॥

१ पालकी । २ स्थानको । ३ काम । ४ पंखे । ५ मुरछल । ६ आनंदित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावा परमताव जनु योगी * अमृतलहि जनु संतत रोगी[1] ॥
जन्मरंक[2] जनु पारस पावा * अन्धहि लोचन[3] लाभ सुहावा ॥
मूकवदन[4] जस शारद छाई * मानहुँ समरशूर जय पाई ॥

दोहा—यहि सुखते शतकोटि गुण, पावहिँ मातु[5] अनंद ॥
भाइन सहित विवाहि घर, आये रघुकुल चंद ॥ ३९९ ॥
लोकरीति जननी[5] करहिं, वर दुलहिनि सकुचाहिं ॥
मोद विनोद विलोकि बड़, राम मनहिं मुसुकाहिं ॥४००॥

देव पितर पूजे विधिनीकी * पूजी सकल वासना जीकी ॥
सबहिंवन्दि मांगहिं वरदाना * भाइन सहित राम कल्याना ॥
अन्तरहित सुर आशिष देहीं * मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपतिबोलि बरातिन्ह लीन्हे * यान[6] वसन मणि भूषणदीन्हे ॥
आयसुपाइ राखि उर रामहिं *मुदित गये सब निज निज धामहिं ॥
पुर नर नारि सकल पहिराये * घरघर बाजहिं अनँद बधाये ॥
याचकजन याचहिं ज्वइजोई * प्रमुदित राउ देइँ स्वइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियां नाना * पूरण किये दान सनमाना ॥

दोहा—देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुण गणनाथ ॥
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गमन कीन्ह नरनाथ ॥४०१॥

जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा * लोक वेद विधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी * सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पायँपखारि सकल अन्हवाये * पूजि भलीविधि भूप ज्यँवाये ॥
आदर दान प्रेम परितोषे * देत अशीश चले मन तोषे[7] ॥
बहुविधिकीन्ह गाधिसुतपूजा[8] * नाथ मोहिं सम धन्य नदूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी[9] * रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी ॥

---

१ सदाकारोगी । २ जन्मकादलिद्री । ३ आंखैं । ४ गूंगा । ५ माता । ६ विमान । ७ मनमेंसन्तुष्टहोकर । ८ विश्वामित्र । ९ बहुत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भीतर भवन दीन्ह वरबासू * मन जुगवत रह नृप रनिवासू ॥
पूजे गुरु पद कमल बहोरी * कीन्ह विनय मन प्रीति नथोरी ॥
दोहा—बधुन समेत कुमार सब, रानिन सहित महीश ॥
पुनि पुनि वन्दत गुरुचरण, देत अशीश मुनीश ॥ ४०२ ॥
विनय कीन्ह उरअतिअनुरागे * सुत सम्पदा राखि सब आगे ॥
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा * आशिर्वाद वहुत विधि दीन्हा ॥
उरधरि रामहि सीय समेता * हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता ॥
विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई * चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्ही * रुचिविचारि पहिरावन दीन्ही ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं * रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥
प्रियपाहुने पूज्य जे जाने * भूपति भलीभाँति सनमाने ॥
देव देखि रघुवीर विवाहू * वरखि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥
दोहा—चले निशान बजाइ सुर, निज निज पुर सुखपाइ ॥
कहत परस्पर रामयश, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ४०३ ॥
सब विधि सँमदि मुदित नरनाहू * रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहां पगुधारे * सहित वधूटिन कुँवर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता * को कहिसकै भयउ सुखजेता ॥
वधू सप्रेम गोद बैठारी * बार बार हिय हरषि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू * सबके उर आनन्द बिलासू ॥
कह्यहुभूप जिमि भयउ विवाहू * सुनि सुनि हरष होत सबकाहू ॥
जनकराज गुण शील बड़ाई * प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुविधिभूप भाट जिमि वरणी * रानी सब प्रमुदित सुनि करणी ॥
दोहा—सुतन समेत नहाइ नृप, बोलि लिये गुरुज्ञाति ॥
भोजन किये अनेक विधि, घरी पांच गइ राति ॥ ४०४ ॥

---

१ उत्साह । २ सन्मान । ३ परमानन्द । ४ जातिकेलोगोंको ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

मगलगान करहिं वरभामिनि * भइ सुखमूल मनोहर यामिनि ॥
अँचै पान सब काहुन पाये * स्रग सुगन्ध भूषित छबिछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई * निज निज भवन चले शिरनाई ॥
प्रेम[1] प्रमोद[2] विनोद[3] बड़ाई * समय समाज मनोहरताई ॥
कहिनसकहिं श्रुति शारद शेषू * वेद विरंचि महेश गणेशू ॥
सोमैं कहौं कवन विधि वरणी * भूमि नाग शिर धरैं कि धरणी ॥
नृपसबभाँति सबहि सनमानी * कहि मृदु वचन बुलाई रानी ॥
वधूलरिकिनी परघर आई * राख्यहुनयन पलककी नाई ॥

दोहा-लरिका श्रमित उनींद वश, शयन करावहु जाइ ॥
असकहि गे विश्राम गृह, रामचरण चितलाइ ॥ ४०५ ॥

भूप वचन सुनि सहजसुहाये * जडितकनकमणि पलँगडसाये ॥
सुभग सुरभि पयफेनसमाना * कोमल ललित सुपेती नाना ॥
उपवरहन वर वरणि नजाहीं * स्रगसुगन्ध[5] माणि मन्दिरमाहीं ॥
रत्नदीप सुठि चारु चँदोवा * कहत न बनै जान जेहिजोवा ॥
सेज रुचिर राचि राम उठाये * प्रेम समेत पलँग पौढाये ॥
आज्ञा पुनि पुनि भाइनदीन्ही * निज निज सेज शयन तिनकीन्ही ॥
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता * कहहिं सप्रेम वचन सबमाता ॥
मारग जात भयावनि भारी * क्यहि विधि तात ताडकामारी ॥

दोहा-घोर निशाचर विकट भट, समर गनै नहिं काहु ॥
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु ॥ ४०६ ॥

मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारे * ईश[7] अनेक करँवरे टारे ॥
मख रखवारी करिदोउ भाई * गुरुप्रसाद सब विद्यापाई ॥
मुनि तियतरी लगत पगधूरी * कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥

---

१ स्नेह । २ आनन्द । ३ लीला । ४ तकिया । ५ चन्दन-केसर आदि । ६ महादेव । ७ विघ्न ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कमठपीठ पवि कूट कठोरा * नृपसमाज महँ शिवधनु तोरा ॥
विश्वविजययश जानकिपाई * आये भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे * केवल कौशिक कृपा सुधारे ॥
आजु सफल जग जन्महमारे * देखितात विधु वदन तुम्हारे ॥
जेदिनगये तुमहिं विनु देखे * तेविरंचि जनि पारहिं लेखे ॥

दोहा—राम प्रतोषीं मातु सब, कहि विनीत वर वयन ॥
सुमिरि शंभु गुरु विप्रपद, किये नींदवश नयन ॥ ४०७ ॥

नींदहु वदन सोह सुठि लोना * मनहुँ सांझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरण नारी * देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरीविराजति राजति रजनी * रानी कहहिं विलोकहु सजनी ॥
सुन्दर बन्धुन्ह सासुलै सोई * फणिपति जनु शिरमणि उर गोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे * अरुणचूडे बर बोलन लागे ॥
वंदी मागध गुणगण गाये * पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
वन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता * पाइ अशीश मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर वदन निहारे * भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दोहा—कीन्ह शौच सब सहज शुचि, सरित पुनीत नहाइ ॥
प्रातक्रिया करि तात पहँ, आये चाऱ्यउ भाइ ॥ ४०८ ॥

भूप विलोकि लिये उरलाई * बैठे हर्षि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुडानी * लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि वशिष्ठ मुनिकौशिकआये * सुभग आसनन मुनि बैठाये ॥
सुतनसमेत पूजि पद लागे * निरखि राम दोउ उर अनुरागे ॥
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा * सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥
मुनिमनअगम गाधिसुतकरणी * मुदितवशिष्ठविपुलविधिवरणी ॥

१ सन्तुष्टकिया । २ कमल । ३ शोभा । ४ रात्रि । ५ मुर्गे । ६ पिताके-समीप । ७ विश्वामित्र । ८ सुन्दर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले वामदेव सब सांची * कीरतिकलित लोक तिहुँ मोंची ॥
सुनि आनन्द भयउ सब काहू * राम लषण उर अधिक उछाहू ॥
दोहा-मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस इहि भांति ॥
उमँगी अवध अनंदभरि, अधिक अधिक अधिकाति ॥ ४०९ ॥
सुदिन साधि करकंकण छोरे * मंगल मोदँ विनोदँ न थोरे ॥
नितनवँसुख सुर देखि सिहाहीं * अवधजन्मयाँचहिं विधिपाहीं ॥
विश्वामित्र चलन नित चहहीं * राम सप्रेम विनय वश रहहीं ॥
दिन दिन सहुणभूपतिभाऊ * देखि सराह महामुनि राऊ ॥
मांगत विदा राउ अनुरागे * सुतन समेत ठाढ़ भये आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी * मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहूँ * दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥
असकहि राउ सहितसुतरानी * पय्यउचरण मुखआव न वानी ॥
दीन्ह अशीश विप्र बहु भांती * चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई * आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥
दोहा-रामरूप भूपतिभगति, व्याह उछाह अनन्द ॥
जात सराहत मनहिंमन, मुदित गाधिकुलचन्द ॥ ४१० ॥
वामदेव रघुकुल गुरुज्ञानी * बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥
सुनिसुनिसुयशमनहिंमन राऊ * वर्णत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ * सुतन समेत नृपति गृह गयऊ ॥
जहँ तहँ राम व्याह सब गावा * सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥
आये व्याहि राम घर जबते * बसे अनन्द अवध सब तबते ॥
प्रभुविवाह जस भयउ उछाहा * सकहिं न वरणि गिरा अहिनाहा ॥
कविकुल जीवन पावन जानी * राम सीययश मंगलखानी ॥

---

१ विख्यात । २ दिन । ३ आनन्द । ४ क्रीड़ा । ५ नवीन । ६ मांगते । ७ दया । ८ विश्वामित्र । ९ सरस्वती । १० शेषनाग ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यहिते मैं कछु कहा बखानी * करण पुनीत हेतु निज बानी ॥

हरिगीतिका छंद ॥

निज गिरा पावन करन कारण रामयश तुलसी कह्यो ॥
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवने लह्यो ॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ॥
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥ ६६ ॥
सुनि गाय कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही ॥
नित प्रीति अनुपम सुनत हरिगुण भक्ति अनुपम तेलही ॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई ॥
यह जानि तुलसीदास मन क्रम वचन हरिगुण गावई॥६७॥

दोहा—कठिनकालमल ग्रसित तनु, साधन कछुक नहोइ ॥
यह विचारि विश्वास करि, हरि सुमिरे बुधि सोइ ॥ ४१ ॥

सो०—मन हरिपद अनुराग, करहु त्यागि नाना कपट ॥
महामोह निशि जाग, सोवत बीते कालबहु ॥ ४० ॥

सिय रघुवीर विवाह, जे स[illegible] गावहिं सुनहिं ॥
तिनकहँ सदा उछाह, [illegible] रामयश ॥ ४१ ॥

वही

इति श्रीतुलसीदास[illegible]मराज श्रीकृ[illegible]रतमानसे सकलक
लिकलुषविध्वंसने, विमल[illegible] विज्ञानसन्तोषसं
पादनोनामबालकाण्डःप्रथ[illegible]सोपानः ॥ १ ॥

इति बालकाण्ड समाप्त ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इदं तुलसीकृतरामायणे
बालकाण्डं मुम्बय्यां खेमराज
श्रीकृष्णदासइत्यनेन स्वकीये
"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रायन्त्रा-
लयेंऽकितम् ।

मुदित ग
ती * बहुरि गा। ...या बखानी
* वर्णत आपन ...
* सुतन
सगन

। ८ विश्वा...

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

अयोध्याकाण्डम् ।

जिसमें

श्रीरामचन्द्रका वनोवास, दशरथ महाराजको राम विरहमें प्राण त्यागना, भरतको ममानेसे घर आना तथा चित्रकूटमें राम मिलाप इत्यादि अद्भुत कथा वर्णित हैं ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छापकर प्रगट की ।

बंबई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अयोध्याकाण्डम् २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

226

श्रीः ॥

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ रामायणे अयोध्याकाण्डम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्लोक–वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥ सोयम्भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ॥ शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु मां ॥ १ ॥ प्रसन्नतां यो नगतोभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ॥ मुखाम्बुजं श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मंजुलमंगलप्रदम् ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

श्लोकार्थ–जिनके बाईं ओर पार्वती मस्तकमें गंगा माथेपर बालचंद्रमा गलेमें विष हृदयमें सर्पराज सो यह विभूतिसे भूषित देवताओंमें श्रेष्ठ सबके स्वामी सर्वरूपमय सर्वगत अर्थात् सबसे भिन्न और कल्याणरूप चंद्रमाके समान श्वेतवर्ण श्रीशंकर सर्वदा मेरी रक्षाकरैं ॥ १ ॥ जो राज्य प्राप्त होनेसे प्रसन्न और वनवासके दुःखसे मलीन नहीं हुई ऐसी रामचंद्रके मुखाम्बुजकी श्री मुझे सुंदर मंगल देनेवालीहो ॥ २ ॥ नील कमलके समान जिनके कोमल मंजुल अंगहैं जिनके वामभागमें श्रीजानकी जी विराजमानहैं हाथोंमें धनुषबाण धारण कियेहैं ऐसे रघुवंशनाथ रामको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

दोहा–श्रीगुरुचरण सरोजरज, निज मन मुकुर सुधारि ॥
वरणौं रघुबर विमलयश, जो दायक फल चारि ॥ १ ॥
जब ते राम ब्याहि घर आये * नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी * सुकृत मेघ वरषहिं सुखवारी ॥
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई * उमँगिअवधअम्बुधिकहँआई ॥
मणिगण पुर नर नारि सुजाती * शुचि अमोलसुन्दरसबभांती ॥
कहिनजाइ कछु नगर विभूती * जनु इतनी विरंचि करतूती ॥
सब विधि सब पुरलोगसुखारी * रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली * फलित विलोकि मनोरथ बेली ॥
रामरूप गुण शील स्वभाऊ * प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ ॥

दोहा–सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश ॥
आज अछत युवराज पद, रामहिं देहिं नरेश ॥ २ ॥
"यक दिन विश्वावसु तहां, कियो गान गंधर्व ॥
सुनि प्रसन्नह्वै स्वपुर तेहि, कह्यो रहन हित सर्व ॥ १ ॥
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन, मैं न सकत रहि अन्त ॥
कह्यो कैकयी बसत है, हमरे बल सुर कन्त ॥ २ ॥
हमरे आवत रिस करत, अस तुम गये मुटाय ॥
पठइ पत्रिका बाँच कर, सुनि वृष रहे चुपाय ॥ ३ ॥
मनमें समुझे कैकयी, लिख पठये वच वंक ॥
हमरउ लागी घात तब, हमहू देब कलंक ॥ ४ ॥
लिख पठयो विश्वावसुहि, करचो कहै नृप जोय ॥
विदा करैं तब आइयो, समझ बूझ तुम सोय ॥ ५ ॥

१ निर्मलयश।२अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष। ३ पर्वत।४अयोध्यारूपी समुद्र।५प्रसन्न।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्ष अठारहकी सिया, सत्ताइसके राम ॥
कीनी मन अभिलाष तब, करनो है सुर काम ॥ ६ ॥"

अति आनंद अवध पुरवासी * भ्रातन सहित देखि सुखरासी ॥
एकबार जानकी समेता * बैठे प्रभु निज रुचिरनिकेता ॥
भुजप्रलंब उर नयन विशाला * पीत वसन तनु श्याम तमाला ॥
कोटि मनोज[1] देखि छबिमोहा * सीता कर चामर बर सोहा ॥
त्यहिअवसर मुनिनारद आये * सुरहित लागि विरंचि[2] पठाये ॥
तेज पुंज[3] करतल[4] शुभ वीणा * हरि गुण गण गावतलवलीना ॥
देखि राम सहसा[5] उठि धाये * करन[6] दंडवत मुनि उर लाये ॥
सादर निज आसन बैठारे * जनकसुता तब चरण पखारे ॥
त्यहिचरणोदक भवनसिंचावा * जगपावन हरि शीश चढावा ॥
सुनुमुनि विषयनिरत[7] जेप्राणी * हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिन कहँ सतसंगति जब होई * करहिं कृपा जापर प्रभु सोई ॥
ता कहँ मुनि नाहिनभवआगे * ज्यहि विनुहेतु संत प्रिय लागे ॥
ताते नारद मैं बडभागी * यद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥

दोहा—सुनि प्रभु वचन मधुरप्रिय, करि विचार मुनि धीर ॥
परम कृपालु लोकहित, कसन कहो रघुवीर ॥ ३ ॥

कह मुनि तव महिमा रघुराया * मैं जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
वचन कह्यो प्राकृत की नांई * यामें नहिं कछु घट्यहु गुसाईं ॥
प्रभु यह तुमहिं सदा बनिआई * निज लघुता जन केरि बडाई ॥
सहजस्वभाव प्रणतअनुरागी * नरतनुधर्यउदासहित लागी ॥
माया गुण गो ज्ञान अतीता * अजित नाम सो दासन्ह जीता ॥
ज्यहिप्रभुसम अतिशय कोउनाहीं * व्यापक अज समान सबमाहीं ॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा * अस्तन पान लागि सोइरोवा ॥

---

१ कोटिकामदेव । २ ब्रह्मा । ३ निधान। ४ हाथ । ५ शीघ्र । ६ लीन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम रूप वपु वर्ण न भेदा * अविगत अकल नेति कह वेदा ॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई * दशरथ सुत कहि गाइय सोई ॥
जप तप योग यज्ञ व्रत दाना * विमल विराग ज्ञान विज्ञाना ॥
करहिं यत्न मुनि पावहिं कोई * देखा प्रगट भक्त वश सोई ॥
हठ वश शठ बहुसाधन करहीं * भक्ति हीन भवसिंधु न तरहीं ॥
दोहा–जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
मम हिय पंकज भृंग इव, वसहु राम नर रूप ॥ ४ ॥
ब्रह्म भवन मैं रह्यों कृपाला * गावत तव गुण दीनदयाला ॥
असि इच्छा उपजी मनमाहीं * देख्यों चरण बहुत दिन नाहीं ॥
यद्यपि प्रभु सर्वत्र समाना * सगुण रूप मोरे मन माना ॥
अवधचलतविरंचि मोहिंजाना * कीन्हींविनय लगि मम काना ॥
प्रभु जानत सब अंतर्यामी * भक्त वछल विनती यह स्वामी ॥
ज्यहिहितलीन मनुजअवतारा * नाथ ताहि अब करिय सँभारा ॥
सुनत वचन रघुपति मुसुकाने * मुनि अजहूं विरंचि भय माने ॥
कहेहु तात ब्रह्महिं समुझाई * कछु दिन गये देखि हैं आई ॥
बार बार चरणन शिरनाई * ब्रह्मानंद न हृदय समाई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद * चले करत गुण गान विशारद ॥
तब रघुपति सीताहि समुझाई * पूर्व कथा सब हेतु सुनाई ॥
सुरहित लागि सोकरियउपाई * जइये वन परिहरि ठकुराई ॥
दोहा–जग संभव स्थिति प्रलय, जाकी भ्रुकुटि विलास ॥
सो प्रभु यत्न विचारत, केहि विधि निशिचरनाश ॥ ५ ॥
एकसमय सबसहित समाजा * राजसभा रघुराज[1] विराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू * राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृपसबरहहिं कृपा अभिलाषे * लोकप[2] रहहिं प्रीति रुख राखे ॥

१ महाराजदशरथ । २ लोक- १४अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल, भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यलोकादिके अध्यक्ष।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं * भूरि भाग्य दशरथ सम नाहीं ॥
मंगल मूल राम सुत जासू * जोकछु कहिय थोर सब तासू ॥
राउ स्वभाव मुकुरकर लीन्हा * वदन विलोकि मुकुटसम कीन्हा ॥
श्रवण समीप भये सितकेशा * मनहुँ चौथ पन अस उपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहँ देहू * जीवन जन्म सफल करि लेहू ॥

दोहा–अस विचारि उर आनि नृप, सुदिन सुअवसरपाइ ॥
तनु पुलकित मन मुदित अति, गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥६॥

कहेउ भुआल सुनिय मुनिनायक * भयेराम सबविधि सबलायक ॥
सेवक सचिव सकलपुरवासी * जे हमरे अरि मित्र उदासी ॥
सबहिरामप्रिय ज्यहि विधि मोहीं * प्रभुअशीश जनु तनुधरिसोहीं ॥
विप्र सहित परिवार गुसाईं * करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं * ते जनु सकल विभव वशकरहीं ॥
मोहिं समान अरु भयउनदूजे * सब पायउँ प्रभु पदरज पूजे ॥
अब अभिलाष एक मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू * कहेउ नरेश रजायसु देहू ॥

दोहा–राउर राजन नाम यश, सब अभिमत दातार ॥
फल अनुगामी महिप मणि, मन अभिलाष तुम्हार ॥ ७ ॥

सब विधि गुरुप्रसन्न जिय जानी * बोल्यउराउ बिहँसि मृदुवानी ॥
नाथ राम करिये युवराजू * कहिय कृपा करि करिय समाजू ॥
मोहिं अछत अस होउ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभु प्रसाद शिव सबै निवाहीं * इहै लालसा यक मन माहीं ॥
पुनि न शोच तनु रहैकिजाऊ * ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दशरथवचनसुहाये * मंगल मूल मोद अति पाये ॥
सुनुनृपजासु विमुख पछिताही * जासुभजनविनु जरैनिनजाही ॥

१ पाताल, मृत्यु, स्वर्ग । २ भूत भविष्य, वर्तमान । ३ तीनिउँ ताप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भये तुम्हार तनय सो स्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दोहा–वेगि विलम्ब न करिय नृप, साजिय सबै समाज ॥
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज ॥ ८ ॥

मुदित महीपति मन्दिर आये * सेवक सचिव सुमन्त बुलाये ॥
कहि जयजीव शीशतिननाये * भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिं कहेउगुरुआजू * रामहिं राज देहू युवराजू ॥
जो पांचहिं मत लागै नीका * करहु हर्षि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय वानी * अभिमत बिरव परेउ जनुपानी ॥
विनती सचिव करहिं करजोरी * जियहु जगतपतिवरषकरोरी ॥
जगमंगल भलकाज विचारा * वेगहिं नाथ न लाइय बारा ॥
नृपहिं मोदसुनि सचिव सुभाषा * बढ़त विटपजनु लही सुशाखा ॥

दोहा–कहेउ भूप मुनिराज कर, जो जो आयसु होइ ॥
राम राज्य अभिषेक हित, वेगि करहु सोइ सोइ ॥ ९ ॥

हरषि मुनीश कहेउ मृदुवानी * आनहु सकल सुतीरथपानी ॥
औषध मूल फूल फल नाना * कहे नाम गणि मंगल जाना ॥
चौमर चर्म्म बसन बहुभांती * रोम पाँट पट अगणित जाती ॥
मणिगण मंगल वस्तु अनेका * जो जग योग भूप अभिषेका ॥
वेद विहित कहि सकल विधाना * कहेउ रचेहुपुर विविध विताना ॥
पर्नस रसाल पुंगिफल केरा * रोपहु बीथिन पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजु मणि चौके चारू * कहेउ बनावन वेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरुकुल देवा * सब विधि करहु भूमिसुर सेवा ॥

दोहा–ध्वज पताक तोरण कलश, सजहु तुरँग रथ नाग ॥

---

१ सेवक । २ प्रसन्नचित्त । ३ जयजीवकही सर्वजीवनके पालनकर्त्ता । ४ वांछित । ५ चमर । ६ मृगसिंहचर्म । ७-दुशाला, बनात इत्यादि । ८ कटहर । ९ आंब । १० सुपारी । ११ ब्राह्मण ।

In Public Domain, Gharbar Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिर धरि मुनिवर वचन सब, निज निज काजहिं लाग॥१०॥

जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा * सो जनुकाज प्रथम तेइँ कीन्हा ॥
विप्र साधु सुर पूजत राजा * करत राम हित मंगल काजा ॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा * बाजु गहागहे अवध बधावा ॥
राम सीय तनु शकुन जनाये * फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत आगमन सूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी * सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरतसरिस प्रियको जगमाहीं * यहै शकुन फल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धु शोच दिन राती * अंडन्हकमठ हृदय ज्यहिभांती ॥

दोहा—त्यहि अवसर मंगल परम, सुनि हरषेउ रनिवास ॥
शोभित लखि विधु बढ़त जनु, वारिधि बीचि विलास ॥११॥

प्रथमजाइ ज्यहि वचन सुनावा * भूषण बसन भूरि तिन्ह पावा ॥
प्रेम पुलकि तनु मन अनुरागी * मंगल साज सजन सब लागी ॥
चौके चारु सुमित्रा पूरी * मणिमयविविध भांति अतिरूरी ॥
आनँद मगन राम महतारी * दिये दान बहु विप्र हँकारी ॥
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा * कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहिविधिहोइ राम कल्याना * देहु दयाकरि सो वरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल वयनी * विधुवदनी मृगशावकनयनी ॥

दोहा—रामराज अभिषेक सुनि, हिय हरषीं वर नारि ॥
लगीं सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि ॥१२॥

तब नरनाह वशिष्ठ बुलाये * राम धाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा * द्वार आइ नायउ पद माथा ॥
सादर अर्घ्य देइ गृह आने * षोडश भांति पूजि सनमाने ॥
गहे चरण सिय सहित बहोरी * बोले राम कमल कर जोरी ॥

---

१ गम्भीर । २ चिन्ता । ३ चन्द्रवदनी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवक सदन स्वामि आगमनू * मंगल मूल अमंगल दमनू ।
यदपि उचित असबोलि सप्रीती * पठइयनाथ काज असनीती ।
प्रभुता तजि प्रभु कीन्हसनेहू * भयउ पुनीत आज मम गेहू ।
आयसु होय सो करिय गुसांई * सेवक लहै स्वामि सेवकाई ॥
दोहा—सुनि सनेहसाने वचन, मुनि रघुवरहि प्रशंस ॥
राम कसन तुम कहहु अस, हंसवंश अवतंस ॥ १३ ॥
वरणि राम गुण शील स्वभाऊ * बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ।
भूप सजेउ अभिषेक समाजू * चाहत देन तुमहिं युवराजू ।
राम करहु सब संयम आजू * जो विधि कुशल निबाहै काजू ।
गुरु सिख देइ राउ पहँ गयऊ * राम हृदय अस विस्मय भयऊ ।
जनमें एक संग सब भाई * भोजन शयन केलि लरिकाई ।
कर्णवेध उपवीत विवाहा * संग संग सब भयउ उछाहा ।
विमल वंश यह अनुचित एका * अनुजविहाय बड़ेहिअभिषेका ।
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई * हरेहु भरत मनकी कुटिलाई ।
दोहा—स्यहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनंद ॥
सनमाने प्रियवचन कहि, रविकुल कैरवचंद ॥ १४ ॥
बाजहिंबाजन विविध विधाना * पुर प्रमोद नहिं जाइवखाना ।
भरतआगमन सकल मनावहिं * आवहिं वेगि नयन फल पावहिं ।
हाट वाट घर गली अथाई * कहहिं परस्पर लोग लुगाई ।
कालिलगन भल केतिकबारा * पूजहि विधि अभिलाष हमारा ।
कनक सिंहासन सीय समेता * बैठहिं राम होइ चित चेता ।
सकल कहहिंकबहोइहिकाली * विघ्न मनावहिं देव कुचाली ।
तिनहिंसोहात न अवध वधावा * चोराहे चांदनि राति न भावा ।
शारद बोलि विनय सुर करहीं * बारहिं बार पायँ लै परहीं ।

१ नाशकर्त्ता । २ घर । ३ आज्ञा । ४ सूर्यवंश । ५ भूषण । ६ चिन्ता ।
७ यज्ञोपवीत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–विपति हमारि विलोकि बड़ि, मातु करियसोइआज ॥
राम जाहिं वन राज तजि, होइ सकल सुरकाज ॥ १५ ॥

सुनिसुरविनय ठाढि पछिताती * भयउ सरोज विपिन हिमराती ॥
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी * मातु हितों नहिं थोरिउ खोरी ॥
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ * तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ ॥
जीवकर्मवश दुख सुख भागी * जायइ अवध देव हित लागी ॥
बार बार गहि चरण सकोची * चली विचारि विबुध मति पोची ॥
ऊंच निवास नीच करतूती * देखि न सकहि पराइ विभूती ॥
आगिल काज विचारि बहोरी * करिहै चाह कुशल कविमोरी ॥
हरषि हृदय दशरथ पुर आई * जनु ग्रह दशा दुसह दुखदाई ॥

दोहा–नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि कैकयी केरि ॥
अयश पिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥ १६ ॥

देखि मन्थरा नगर बनावा * मंगल मंजुल बाजु वधावा ॥
पूंछिसि लोगन्ह काह उछाहू * रामतिलक सुनि भा उर दाहू ॥
करै विचार कुबुद्धि कुजाती * होइ अकाज कवन विधि राती ॥
देखिलागु मधु कुटिल किराती * जिमिगँवतकै लेउँ क्याहि भांती ॥
भरतमातु पहँ गइ विलखानी * का अनमनि हँसि हँसिकह रानी॥
उतर न देइ सो लेइ उसांसू * नारि चरित करि ढारति आंसू ॥
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे * दीन्ह लषण सिख अस मन मोरे ॥
तबहुँ न बोलिचेरिबड़िपापिनि * छांड़ैश्वास कारि जनु सांपिनि ॥

दोहा–सभय रानि कह कहसि किन, कुशल राम महिपाल ॥
भरत लषण रिपुदमनसुनि, भा कुवरी उर शाल ॥ १७ ॥

कत शिषदेहि हमहिं कोउमाई * गालकरव कहि कर बल पाई ॥
रामहिंछांड़ि कुशल केहि आजू * जाहि नरेश देत युवराजू ॥

१ सम्पदा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाकौशल्याहि विधि अतिदाहिन * देखत गर्व रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सब शोभा * जो अवलोकि मोर मन क्षोभा ॥
पूत विदेश न शोच तुम्हारे * जानतिहौ वश नाहि हमारे ॥
नींद बहुत प्रियसेज तुराई * लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनिप्रियवचन कुटिलमनजानी * झुकीरानि तब मन अरगानी ॥
पुनिअसकबहुँ कहसि घरफोरी * तौ धरि जीहैं कढावौं तोरी ॥

दोहा—काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ॥
तिय विशेष पुनि चेरि कहि, भरत मातु मुसुकानि ॥१८॥

प्रियवादिनि शिष दीन्हउतोहीं * स्वप्नेहु तोपर कोप न मोहीं ॥
सुदिन सुमंगलदायक सोई * तोर कहा फुर जादिन होई ॥
ज्येठ स्वामि सेवकलघु भाई * यह दिनकर कुलरीति सदाई ॥
राम तिलक जो सांचेहु काली * मांगु देउँ मन भावत आली ॥
कौशल्या सम सब महतारी * रामहिं सहज स्वभाव पियारी ॥
मोपर करहिं सनेह विशेषा * मैं करि प्रीति परीक्षा देखी ॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू * होहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्राणते अधिक राम सिय मोरे * तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे ॥

दोहा—भरत शपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव ॥
हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥ १९ ॥

एकहिवार आश सब पूजी * अब कछु कहब जीह करि दूजी ॥
फोरे योग कपार अभागा * भलौ कहत दुख रौरेहु लागा ॥
कहइ झूंठ फुर बात बनाई * सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई ॥
हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती * नाहिंतो मौन रहब दिनराती ॥
करिकुरूप विधि परवशकीन्हा * वाचा शाल हमैं तिन्ह दीन्हा ॥

१ नृपति-दशरथ। २ रजाई। ३ सिमिटिकै चुपैह्व रही। ४ जिह्वा। ५ छोटा। ६ सन्देह—शोक।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोउ नृप होउ हमें का हानी * चेरि छांडि अब होब कि रानी ॥
जारैं योग स्वभाव हमारा * अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
ताते कछुक बात अनुसारी * क्षमब देबि बड चूंक हमारी ॥

दोहा–गूढ कपट प्रिय वचन सुनि, तीय अधर बुधि रानि ॥
सुर मायावश वैरिणिहि, सुहृद जानि पतिआनि ॥ २० ॥

सादर पुनि पुनि पूंछति ओही * शबरी नाद मृगी जनु मोही ॥
तस मतिफिरी अहैजसभावी * रहैसी चेरि घात भलि फावी ॥
तुम पूंछहु मैं कहत डराऊं * धरेहु मोर घरफोरी नाऊं ॥
सजिप्रतीतिगढ़िबहुविधि छोली * अवधसाढसाती जनु बोली ॥
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी * रामहिं तुम प्रिय सो फुरवानी ॥
रहे प्रथम अब सो दिनबीते * समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुल पोषनि हारा * विनु जल जारि करै सो क्षारा ॥
जर तुम्हारि चह सवतिउपारी * रूंधहुकरि उपाइ वरवारी ॥

दोहा–तुमहिं न शोच सुहाग बल, निज वश जानहु राव ॥
मन मलीन मुहँ मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव ॥ २१ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी * बीच पाइ निज काज सँवारी ॥
पठये भरत भूप ननिऔरे * राम मातु मत जानव रौरे ॥
सेवहिंसकल सवति मोहिं नीके * गर्वित भरत मातु बल पीके ॥
शाल तुम्हार कौशिलहिमाई * चतुर कपट नाहिं परत लखाई ॥
राजहिं तुम पर प्रीति विशेषी * सवति स्वभाव सकै नहिं देखी ॥
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई * राम तिलक हित लगनधराई ॥
इहिकुल उचित रामकहँ टीका * सबहि सुहाइ मोहिंसुठि नीका ॥
आगिलबात समुझि डरमोहीं * दैव देव फल सो फिरि ओहीं ॥

दोहा–रचिपचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपट प्रबोध ॥

१ अधीर। २ मित्र। ३ किरातनी। ४ हर्षितहोते भई। ५ शनैश्चरकी दशा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

कहेसि कथा शतसौतिकर, जाते बढ़ै विरोध ॥ २२ ॥

भावी वश प्रतीति उर आई * पूछिरानि निज शपथ दिवाई ॥
का पूंछहु तुम अजहुँ नजाना * हितअनाहित निजपशुपहिचाना ॥
भये पाख दिन सजतसमाजू * तुम सुधि पायहु मोसनआजू ॥
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे * सत्य कहे नाहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई * तौविधि देइहि मोहिं सजाई ॥
रामहिंतिलक कालिजोभयऊ * तुमकहँ विपतिबीज विधिबयऊ ॥
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी * भामिनि भइउ दूधकी माखी ॥
जोसुत सहित करहु सेवकाई * तौघर रहहु न आन उपाई ॥

दोहा—*कद्रू विनताहि दीन दुख, तुमहि कौशला देव ॥
भरत वन्दि गृह सेइहैं, राम लषण कर नेव ॥ २३ ॥

केकयसुता सुनत कटु वानी * कहि न सकै कछु सहमि सुखानी ॥
तनु पसेव[1] केदलि[2] जनु कांपी * कुबरी दशन[3] जीह तब चापी ॥
काहि कहि कोटिककपटकहानी * धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
कीन्ह्यसिकठिन पढाय कुपाठू * जिमि न नवै फिरि उकठा काठू ॥
फिरा कर्म प्रिय लागु कुचाली * बकिहि[4] सराहत मनहुँ मराली ॥
सुन मंथरा बात फुर तोरी * दहिन आंख नित फरकत मोरी ॥
दिन प्रति देखौं राति कुसपना * कहौं न तोहिं मोह वश अपना ॥

* कश्यप मुनिकी दो स्त्री, तिसमें सर्पकी माता कद्रू और पक्षीकी माता विनता सो कद्रूने विनतासे पूंछा कि सूर्यके घोड़ेकी पूंछ कौन रंगकीहै विनताने उत्तर दिया कि उज्ज्वल कद्रू बोली नहीं श्याम रंगकीहै इसमें दोनोंने प्रतिउत्तर करके यह बात ठहराई कि इसमें जो हारे सोदासी बनके रहै यह निश्चय करने के निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रू की आज्ञानुसार सर्प जायकै घोड़ोंकी पूंछमें लिपटगये तब कद्रूने छलसे विनताको दिखलादिया कि देखो पूंछका रंग काला है विनता लज्जितहोय दासभाव अंगीकारकर सेवामें रहने लगी.

१ तनुमें पसीना चलाहै । २ केला । ३ दांत । ४ बकुली ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काह कहौं सखि शुद्ध स्वभाऊ * दहिन बाम नहिं जानौं काऊ ॥
दोहा–अपने चलत न आजुलगि, अनभल काहुक कीन्ह ॥
केहि अघ एकहि बार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ॥ २४ ॥
नैहर जन्म भरब बरु जाई * जियत न करब सवति सेवकाई ॥
अरि वश दैव जिआवै जाही * मरण नीक त्यहि जियब न चाही ॥
दीन वचन कह बहुविधिरानी * सुनि कुवरी तिय माया ठानी ॥
असकसकहहु मानि मन ऊना * सुख सुहाग तुम कहँ दिन दूना ॥
जोराउर अस अनभल ताका * सो पाइहि यह फल परिपाका ॥
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि * भूंख न बासर नींद न यामिनि ॥
पूछा गुणिन्ह रेख तिन खांची * भरत भुवाल होब यह सांची ॥
भामिनि करहु तौ कहौं उपाऊ * हैं तुम्हरे सेवा वश राऊ ॥
दोहा–परौं कूप तव वचन लागि, सकौं पूत पति त्यागि ॥
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हित लागि ॥ २५ ॥
कुबरी करी कुबलि कैकेयी * कपट छुरी उर पाहन टेयी ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे * चरै हरित तृण बलि पशु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
*कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं * स्वामिनि कह्यहु कथामोहिंपाहीं ॥

* एक समय दैत्योंनें लड़ाई करकै इंद्रको पराजय किया तब इंद्र राजा दशरथके पास आ इन्हें दैत्योंपर चढा लेगये तहां कैकेयीभी गई रही युद्धमें दशरथके रथका चक्रावलंब टूटगया कैकेयी यह देख रथपरसे उतर अपनी भुजापर चक्रका आधार करलिया जब दशरथ महाराजने दैत्योंको पराजयकर जयपाई तब कैकेयी बोली कि महाराज रथमेंसे उतरियो तब ज्योंही महाराज उतरे और कैकेयीने हाथ खींचलिया कि रथ टूटपडा यह समाचार देख दशरथने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायतासे हुई दो वरदान जो तू मांगे सो हम देवैं तब कैकेयी बोली महाराज यह दोनों वरदान मेरा थाती रख छोडिये जब मुझे कार्य होगा तब मांग लूंगी

१ शत्रुकेवश । २ दृढकरिकै । ३ दिन । ४ रात्रि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दुइ बरदान भूप सन थाती * मांगहु आजु जुडावहु छाती ॥
सुतहिं राज रामहिं वनवासू * देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम शपथ जब करई * तब मांग्यहु जेहि वचन न टरई ॥
होइ अकाज आज निशिबीते * वचन मोर प्रिय मानहु जीते ॥

दोहा—बड़ कुघात करि पातकिनि, कहेसि कोप गृह जाहु ॥
काज सँवारहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥ २६ ॥

कुबरिहि रानि प्राण सम जानी * बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा * बहे जात कर भयसि अधारा ॥
जो विधि पुरव मनोरथ काली * करौं तोहिं चखपूतरि आली ॥
बहु विधि चेरिहि आदर देयी * कोप भवन गवनी कैकेयी ॥
विपति बीज वर्षाऋतु चेरी * भुइँ भइ कुमति कैकयी केरी ॥
पाइ कपट जल अंकुर जामा * वर द्वउदल फल दुख परिणामा ॥
कोप समाज साज सजि सोई * राज्य करत त्यहि कुमति विगोई ॥
राउर नगर कोलाहल होई * यह कुचाल कछु जान न कोई ॥

दोहा—प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजि सुमंगलचार ॥
इक प्रविशहिं इक निकसही, भीर भूप दरबार ॥ २७ ॥

बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं * मिलि दश पांच राम पहँ जाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी * बूझहिं कुशल क्षेम मृदुवानी ॥
फिरहिं भवन प्रभु आयसुपाई * करत परस्पर राम बडाई ॥
को रघुवीर सरिस संसारा * शील सनेह निबाहन हारा ॥
ज्यहि ज्यहि योनि कर्मवश भ्रमहीं * तहँ तहँ ईश देहिं यह हमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सिय नाहू * देउ ईश यह ओर निबाहू ॥

१ भरत । २ आनंद । ३ सौगंध-कसम । ४ शीघ्र । ५ आंखकी पुतली ।
६ फल । ७ प्रसन्नचित्त ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस अभिलाष नगर सबकाहू * केकयसुता हृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नशाई * रहै न नीच मते चतुराई ॥

दोहा–सांझ समय सानन्द नृप, गये कैकयी गेह ॥
गमन निठुरता निकट किय, जनु धरि देह सनेह ॥ २८ ॥

कोप भवन सुनि सकुचे राऊ * भय वश आगे परे न पाऊ ॥
सुरपति[1] बसै बाहुबल जाके * नरपतिरहहिं[2] सकल रुखताके ॥
सो सुनि तिय रिसि गये सुखाई * देखहु काम प्रताप बडाई ॥
शूल कुलिश असि अँगवनिहारे * ते रतिनाथ[3] सुमन[4] शर मारे ॥
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ * देखि दशा दुख दारुण भयऊ ॥
भूमि शयन पट मोट पुराना * दिये डारि तब भूषण नाना ॥
कुमतिहि कस कुरूपता फावी * अनअहिवात[5] सूच जनुभावी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदुवानी * प्राणप्रिया केहिहेतु रिसानी ॥

छंद–केहि हेतु रानि रिसानि परसतपाणिपतिहिनिवारई ॥
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि विषम भांति निहारई ॥
दोउ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ॥
तुलसी नृपति भवितव्यता[7] वश काम कौतुक लेखई ॥ १ ॥

सो०–बार बार कह राव, सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ॥
कारण मोंहि सुनाव, गजगामिनि निज कोपकर ॥ १ ॥

अनहिततोरप्रियाकेहि कीन्हा * केहिदुइशिरकेहियमचहलीन्हा ॥
कहु क्यहि रंकहि करौं नरेशू * कहु क्यहि नृपहि निकारौंदेशू ॥
सकौं तोर अरि अमरहु[9] मारी * कहा कीट वपुरे नर नारी ॥

---

१ इन्द्र । २ राजा । ३ कामदेव । ४ पुष्पबाण । ५ अशोभित । ६ विधवापन । ७ भवितव्यता । ८ दरिद्रीको । ९ देवता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानसि मोर स्वभाव वरोरू * तुम मुख मम दृगचन्द्रचकोरू
प्रिया प्राण सुत सर्बस मोरे * परिजन प्रजा सकल वश तोरे
जो कछु कहौं कपटकरि तोहीं * भामिनि राम शपथशत मोहीं
विहँसि मांगु मनभावति बाता * भूषण साजु मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू * वेगि प्रिया परिहरहु कुवेषू

दोहा–यह सुनिमनगुणिशपथबड़ि, विहँसिउठीमतिमन्द ॥
भूषण सजति विलोकि मृग, मनहुँ किरातिनि फन्द ॥२९॥

पुनि कह राउ सुहृदजियजानी * प्रेमपुलकि मृदुमंजुल वानी
भामिनि भयउ तोरमनभावा * घर घर बजत अनन्द बधावा
रामहिं देउँ कालि युवराजू * सजहु सुलोचनि मंगल साजू
दलकिउठी सुनि वचन कठोरा * जनु छुइ गयउ पाक वरतोरा
ऐसी पीर बिहँसि तेहि गोई * चोर नारि जिमि प्रगट नरोई
लखी न भूप कपट चतुराई * कोटि कुटिल मति गुरूपढाई
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू * नारि चरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी * बोली विहँसि नयन मुखमोरी

दोहा–मांगु मांगु पैकहहु पिय, कबहूं देहु न लेहु ॥
देन कह्यउ बरदान दुइ, त्यउ पावत सन्देहु ॥ ३०॥

जान्यउँ मर्म्म राउ हँसि कहई * तुमहिंकोहाव परमप्रिय अहई
थातीराखि न माँग्यउ काऊ * विसरि गयो मम भोर स्वभाऊ
झूंठहि दोष हमहिं जनि देहू * दुइके चारि मांगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई * प्राण जाइँ बरु वचन न जाई
नाहिं असत्यसम पातकपुंजा * गिरिसम होहिं कि कोटिक गुंजा

१ श्रेष्ठऊरु किन्तु श्रेष्ठजंघावाली। २ छिपाई। ३ अथाह। ४ भेद। ५ रत्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य मूल सब सुकृत सुहाई * वेद पुराण विदित मुनि गाई ॥
त्यहिपर रामशपथ करवाई * सुकृतसनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसिबोली * कुमति विहंग कुलह जनु खोली॥

दोहा–भूप मनोरथ शुभग वन, सुख सुविहंग समाज ॥
भिल्लिनि जनु छांड़न चहत, वचन भयंकर बाज ॥ ३१ ॥

सुनहु प्राणपति भावति जीका * देहु एक बर भरतहिं टीका ॥
दूसर बर मांगौं करजोरी * नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
तापस वेष विशेष उदासी * चौदह वर्ष राम वनवासी ॥
सुनि तिय वचन भूप उरशोकू * शशि[3]करछुवतविकलजिमिकोकू[4] ॥
गये सहमि कछु कहि नहि आवा* जनुशंचान बन झपट्यउ लावा[5] ॥
विवरणभयउ निपट महिपालू * दामिनि हनेउ मनहु तरुतालू ॥
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन * तनुधरि शोच लागु जनु शोचन॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूला * फरत करिणि[6] जनुहतेउ समूला ॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी * दीन्हासि अचल विपति कै नेयी ॥

दोहा–कवने अवसर का भयउ, गयउ नारि विश्वास ॥
योग सिद्ध फल समय जिमि, यतिहि अविद्या नाश॥ ३२॥

इहि विधि राउ मनहिं मन दहई * देखि कुभांति कुमति असकहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं * आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि शरसम लाग तुम्हारे * काहेन बोलहु वचन सँभारे ॥
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं * सत्यसिन्धु तुम रघुकुल माहीं ॥
देन कह्यउ बर अब जनिदेहू * तजहु सत्य जग अपयश लेहू ॥
सत्य सराहि कह्यउ बर देना * जान्यहु लेइहि मांगि चबेना ॥

---

१ मर्यादा । २ किरण । ३ चकई-चकवा तथा कोकनद कमल । ४ बाज ।
५ बटेर । ६ हथिनी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवि*दधीचि÷बलि+जोकछुभाषा* तनु धन तजेउ वचन प्रणराखा॥
अति कटु वचन कहति कैकेयी* मानहुँ लोन जरे पर देयी॥

* राजाशिवि जब ९२ यज्ञ करचुके और आगे फिर आरंभ किया तब इंद्र को भय हुआ कि अब यह आठ यज्ञ कर मेरा पद लैलेंगे यह शोच अग्निको कपोत और आप बाज बन उसके मारनेको चला तब वोह भागाहुआ राजाकी शरणमें गया राजाने उसका वचन सुन बाजको देख यज्ञशालामें अपनी गोदामें छिपालिया और बाजको निवारण किया बाज बोला महाराज आप यह क्या अनर्थ करतेहैं कि मेरा आहार छीनलिया मैं भूखमें शरीरको छोड़ आपको पापका भागी करूंगा तब राजाने कहा इसे तो नहीं देंगे इसके पलटेमें जो मांगो सोदेंगे बहुत झगडेके उपरान्त यह बात ठहरीकि राजा आपने शरीरका मांस कबूतर की बराबर तौलदे तौ मैं कबूतरको छोडदूं इसबातसे राजा प्रसन्न होय तुलामें एक ओर कबूतरको बैठाय दूसरी ओर अपने शरीरका मांस काटकै चढाने लगे जब सब शरीरका मांस काटकाटकै चढाय दिया और वोह बराबर न हुआ तो जभी राजा गलेपर खड्ग चलानेको तैयार हुआ तौ त्योंही विष्णुने अपना दर्शन दे कृतार्थ कर मुक्तिदी.

+ जब वृत्रासुरके कष्टसे इंद्र देवोंके समेत अतिदुःखी होय विष्णुके पास गये तब उन्होंने उत्तर दिया कि राजर्षि दधीचिजी नैमिषारण्यमें तपस्या करतेहैं उनका हाड तुम लोग लेआओ तब उस हाडसे शस्त्र बने उससे यह दैत्य पराजय होगा तब इंद्रने सब देवोंके समेत दधीचिऋषिके पास जाय निवेदन किया तब ऋषिने अपनी अस्थि देवताओंको दे प्रसन्नतासे शरीर छोड़ा इन्द्रने अस्थि ले वज्र बनाय दैत्योंको पराजय किया।

+ जब राजा बलि त्रिलोकीके अधीश्वर हुये तब इंद्र व्याकुल हो विष्णुके पास गये तब भगवान्ने कहा धीरज धरो तुम्हारा राज्य हम दिवादेंगे ऐसा कह अदितिसे जन्मले वामन रूप धारणकर राजा बलिके यज्ञमें गये और राजाको वचनबंधकर तीनचरण पृथ्वी दान मांगी बलिने जल हाथमें ले संकल्प करदी तब वामनजीने विराट्रूप धारणकर दो पगमें ब्रह्मलोकपर्यन्त नाप लिया पुनि राजासे कहा अब एक चरण जो शेष रहा सो लाइये तब राजाने कहा मेरी पीठ नाप लीजिये महाराज इनसे प्रसन्नहो बोले कि वर मांगो राजा बलिने यही वर मांगा कि आपका वामनरूप मेरे द्वारपर खड़ा रहै,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–धर्म्म धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ॥
शिर धुनि लीन्ह उसास अति, मारेसि मोहिं कुदाउ ॥ ३३ ॥
आगे दीख जराति रिसि भारी * मनहुँ रोष तरवार उघारी ॥
मूढ़ कुबुद्धि धार निठुराई * धरि कुबरी जनु सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवन लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती * वाणी विनय न ताहि सुहाती ॥
मोरे भरत राम दोउ आंखी * सत्य कहौं करि शंकर साखी ॥
प्रिया वचन कस कहसि कुभांती * रीति प्रतीति प्रीति करिघाती ॥
अवशि दूत मैं पठउब प्राता * ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिनसाधि सब साज सजाई * देहौं भरतहिं राज्य बजाई ॥
दोहा–लोभ न रामहिं राज्य कर, बहुत भरत पर प्रीति ॥
मैं बड़ छोट विचार करि, करत रहेउँ नृप नीति ॥ ३४ ॥
राम शपथ शत कहौं स्वभाऊ * राम मातु मोहिं कहा न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूंछे * ताते पऱ्यउ मनोरथ छूंछे ॥
रिसि परिहरि अब मंगल साजू * कछु दिन गये भरत युवराजू ॥
एकहि बात मोहिं दुख लागा * वर दूसर असमंजस मांगा ॥
अजहूं हृदय दहत त्यहि आंचा * रिसि परिहास कि सांचहु सांचा ॥
कहु तजि रोष राम अपराधू * सब कोउ कहत राम सुठि साधू ॥
तुँमहु सराहसि करसि सनेहू * अब सुनि मोहिं परम सन्देहू ॥
जासु स्वभाव अरिहु अनुकूला * सोकिमि करहि मातु प्रतिकूला॥
दोहा–प्रिया हास्य रिसि परिहरहु, मांगु विचारि विवेक ॥
ज्यहि देखों अब नयन भरि, भरत राज्यअभिषेक ॥ ३५ ॥
जियै मीन बरु वारि विहीना * मणि बिनु फणिक जियै दुखदीना॥
कहौं स्वभाव न छल मन माहीं * जीवन मोर राम बिनु नाहीं ॥

१ हँसी । २ शत्रु । ३ सर्प ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समुझि देखु तैं प्रिया प्रबीना * जीवन दशरथ राम अधीना।
सुनि मृदुवचन कुमति अति जरई * मनहुँ अनल आहुति घृत परई।
कहहु करहु किन कोटि उपाया * इहां न लागिहि राउर माया।
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं * मोहिं न बहु पैरपंच सोहाहीं।
राम साधु तुमसाधु सुजाना * राम मातु तुम भलि पहिंचाना।
जस कौशला मोर भलताका * तस फल देउँ उन्हैं करि शाका।

दोहा–होत प्रात मुनि वेष धरि, जो न राम वन जाहिं ॥
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मन माहिं॥ ३६॥

असकहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी * मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी।
पाप पहार प्रगट भइ सोई * भरी क्रोध जल जाइ न जोई।
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा * भवँर कूबरी वचन प्रचारा।
ढाहति भूप रूप तरु मूला * चली विपति वारिधि अनुकूला।
लखी नरेश बात सब सांची * तियमिसु मीच शीश पर नाची।
गहि कर विनय कीन्ह बैठारी * जनि दिनकर कुल होसि कुठारी।
मांगु माथ अबहीं देउँ तोहीं * राम विरह जनि मारासि मोहीं।
राखु रामकहँ ज्यहित्यहिभांती * नाहिंतजरिहि जन्म भरि छाती।

दोहा–देखी व्याधि असाध्यनृप, परचउ धरणि धुनि माथ ॥
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥ ३७॥

व्याकुल राउ शिथिल सब गाता * करिणि कल्पतरु मनुहुँनिपाता॥
कण्ठ सूख मुख आव नवानी * जिमि पाठीन दीन बिनु पानी॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी * मर्म पाछि जनु माहुरदेयी॥
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ * मांगु मांगु केहिके बल कहेऊ॥
दुइ कि होइ इक संग भुआलू * हँसब ठठाइ फुलाउब गालू॥
दानि कहाउब अरु कृपणाई * चाहिय क्षेम कुशल रौताई॥

१ अग्नि। २ छलछन्द। ३ दुःखितवचन। ४ हथिनी। ५ पढिनामछली।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छांडहु वचन कि धीरज धरहू * जनि अबलाइव करुणा करहू ॥
तनु तिय तनय धाम धन धरणी * सत्यसिंधु कहँ तृणसम वरणी ॥
दीन दान फिर माँगहु राजा * परिहरि लोक वेदकी लाजा ॥

दोहा-मर्म वचन सुनि राउ कह, कछुक दोष नहिं तोर ॥
लाग्यउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर ॥ ३८ ॥

चहत न भरत भूपपद [1]भोरे * विधि वश कुमति बसी उर[2]तोरे ॥
सो सब मोर पाप परिणामू * कछु न बसाइ भयो विधि बामू ॥
सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई * सब गुण धाम राम प्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई * होइहै तिहुँपुर राम बड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ * मुयउ मेटि नाहिं जाइहि काऊ ॥
अब तोहिं नीक लागु करसोई * लोचन ओट बैठु मुख[4]गोई ॥
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी * तौलौं जनि कछु कहसि बहोरी ॥
फिर पछितैहसि अन्त अभागी * मारसि गाय नाहरू लागी ॥

दोहा-परचउ राउ कहि कोटि विधि, काहे करसि निदान ॥
कपट चतुर नहिं कहति कछु, जागति मनहुँ मशान ॥ ३९ ॥

राम राम रटि विकलभुआलू * जनु विनु पंख विहंग विहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई * रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥
उदय करहु जनि रवि रवि कुलगुर * अवध विलोकि शूल होइहि उर ॥
भूप प्रीति कैकयि निठुराई * उभय अवधि विधि रचीबनाई ॥
विलपत नृपहि भयउ भिनुसारा * वीणा वेणु शंख ध्वनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक * सुनत नृपहि लागत जनु शायक ॥
मंगल कलश सोहाइ न कैसे * सहगामिनी विभूषण जैसे ॥
त्यहि निशि नींद परीनाहिं काहू * राम दरश लालसा उछाहू ॥
कबहिं उदय रविहोहि विहाना * देखब नयनन कृपानिधाना ॥

---

१ भूलिहकर । २ फल । ३ आँखोंकी आड । ४ मुख छिपाकर ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गज आरूढ़ राम सिय संगा * शोभातनु शतकोटि अनंगा
करत मनोरथ रैनि सिरानी * प्रात प्रकट जागे मुनिज्ञानी
दोहा-द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदय रवि देखि ॥
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेषि ॥ ४०
पिछले पहर भूप नित जागा * आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई * कीजिय काज रजायसु पाई
गे सुमन्त नृप मन्दिर माहीं * देखि भयानक जात डराहीं
धाइ खाइ जनु जात न हेरा * मानहुँ विपति विषाद बसेरा
पूछत कोउ न उतर कछु देई * गे ज्यहि भवन भूप कैकेयी
कहि जयजीव बैठि शिरनाई * देखि भूप गति गयउ सुखाई
शोक विकल विवरण महि परेऊ * मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकहि नहिं पूंछी * बोली अशुभ भरी शुभ छूछी
दोहा-परी न राजहिं नींद निशि, मर्म्म जानु जगदीश ॥
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश ॥ ४१
आनहु रामहिं वेगि बुलाई * समाचार तब पूछहु आई
चल्य उसुमन्त राउरुख जानी * लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी
शोच विवश महि परै न पाऊ * रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे * पूंछहिं सकल देखि मनमारे
समाधान मन कर सबहीका * गये जहाँ दिनकर कुल टीका
राम सुमंतहि आवत देखा * आदर कीन्ह पिता सम लेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई * रघुकुल दीपहि चले लिवाई
राम कुभांति सचिव सँग जाहीं * देखि लोग जह तहँ विलखाहीं
दोहा-जाइ दीख रघुवंश मणि, नरपति निपट कुसाज ॥
सहमि परचउ लखि सिंहनिहिं, मनहुँ वृद्धगजराज ॥ ४२

१ दुःखितहोतेहैं । २ बूढ़ाहाथी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सूखे अधर जरे सब अंगा * मानहुँ दिनमणि हीन भुजंगा ॥
सरुष समीप देखि कैकेयी * मानहुँ मृत्यु घरी गनि लेई ॥
करुणामय रघुनाथ स्वभाऊ * प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समय विचारी * पूछा मधुर वचन महतारी ॥
मोहि कहु मातु तात दुखकारण * करिय यत्न ज्यहि होइ निवारण ॥
सुनहु राम सब कारण एहू * राजहिं तुम पर बहुत सनेहू ॥
देन कह्यउ मोहिं दुइ वरदाना * माँगेउँ जो कछु मोहिंसुहाना ॥
सो सुनि भयउ भूपउर शोचू * छाँडि न सकहि तुम्हार सँकोचू ॥

दोहा–सुत सनेह इत वचन उत, संकट पर्‍यउ नरेश ॥
सकहु तो आयसु शीश धरि, मेटहु कठिन कलेश ॥४३॥

निधरक बैठि कहत कटुवानी * सुनत कठिनता अतिअकुलानी ॥
जीभकमान वचन शरजाना * मनहुँ भूप मृदुलक्ष्य समाना ॥
जनु कठोरपन धरे शरीरा * सीख धनुष विद्या वरवीरा ॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई * बैठी जनु तनु धरि निठुराई ॥
मनमुसुकाहि भानुकुलभानू * राम सहज आनन्द निधानू ॥
बोले वचन विगत सब दूषण * मृदु मंजुल जनु वाग्विभूषण ॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी * जो पितु मातु वचन अनुरागी ॥
तनय मातु पितु पोषणहारा * दुर्लभ जननी यह संसारा ॥

दोहा–मुनिगण मिलन विशेषवन, सबहि भाँति भलमोर ॥
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर ॥४४॥

भरत प्राणप्रिय पावहिंराजू * विधिसबविधिमोहिं सन्मुखआजू ॥
जो नजाहुँ वन ऐस्यहु काजा * प्रथम गणिय मोहिमूढसमाजा ॥
सेवहिं रंड कल्पतरु त्यागी * परिहरि अमिय लेहिं विष मांगी ॥

१ ओष्ठ । २ पिता । ३ निशाना । ४ रहित । ५ निर्मल । ६ सरस्वती ।
७ शृंगार । ८ अमृत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

तेउ न पाइ अससमयचुकाहीं * देखु विचारि मातु मन माहीं ॥
अम्ब एक दुख मोहिं विशेखा * निपट विकल नरनायक देखी ॥
थोरेहि बात पिताहि दुखभारी * होतप्रतीति न मोहिं महतारी ॥
राउ धीर गुण उदधि अगाधू * भामोते कछु बड़ अपराधू ॥
ताते मोहि न कहत कछुराऊ * मोरशपथ तोहिं कहु सतिभाऊ ॥

दोहा–सहज सरल रघुवर वचन, कुमति कुटिल करि जान ॥
चले जोंक जिमि वक्र गति, यद्यपि सलिल समान ॥४५॥

रहँसी रानि राम रुख पाई * बोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हारि भरतकै आना * हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योगे नाहिं ताता * जननी जनक बन्धुसुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछु कहहू * तुम पितु मातु वचन रत अहहू ॥
पिताहि बुझाय कहो बलि सोई * चौथे पन अघ अयश न होई ॥
तुमसम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे * उचित न तासु निरादर कीन्हे ॥
लागहिं कुमुख वचन शुभ कैसे * मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातु वचन सब भाये * जिमि सुरसरितसलिलसुहाये ॥

दोहा–गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवटलीन्ह ॥
सचिव राम आगमन कहि, विनयसमयसमकीन्ह ॥ ४६ ॥

जब नृप अँकनि राम पगुधारे * धारि धीरज तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे * चरण परत नृप राम निहारे ॥
लिये सनेह विकल उर लाई * गैमणि फणिक बहुरि जिमिपाई ॥
रामहिं चितै रहे नरनाहू * चला विलोचन वारि प्रवाहू ॥
शोक विकल कछु कहै न पारा * हृदय लगावत बारहिं बारा ॥
विधिहि मनाव राउ मन माहीं * ज्यहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥

१शील, शांति, शूरता, दया, उदारता, वैराग्य, ज्ञान, इत्यादिगुणोंके समुद्र हैं। २ पानी। ३ हृदयमें हर्षितभई। ४ सुमंतके वचन सुनिकर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुमिरि महेशहि कहहिं निहोरी * विनती सुनहु सदाशिव मोरी ॥
आशुतोष तुम औढर दानी * आरत हरहु दीन जन जानी ॥
दोहा-तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ॥
वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शील सनेहु ॥ ४७ ॥
अयश होहु वरु सुयश नशाऊं * नरक परों बरु सुरपुर जाऊं ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं * लोचन ओट राम जनि होहीं ॥
असमन गुणत राउ नहिं बोला * पीपर पात सरिस मन डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमवश जानी * पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी ॥
देश काल अवसर अनुसारी * बोले वचन विनीत विचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * अनुचित क्षमब जानि लरिकाई॥
अति लघुवात लागि दुखपावा * काहेन मोहिं कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गुसाँइहि पूछेउँ माता * सुनि प्रसंग भा शीतल गाता ॥
दोहा-मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात ॥
आयसु देइय हर्षि हिय, कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४८ ॥
धन्य जन्म जगतीतल तासू * पितहि प्रमोद चरित सुन जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके * प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके ॥
आयसु पालि जन्म फल पाई * ऐहौं वेगहि होहु रजाई ॥
बिदा मातुसन आवौं मांगी * चलिहौं वनहि बहुरि पग लागी ॥
अस कहि राम गमन तब कीन्हा * भूप शोकवश उत्तर न दीन्हा ॥
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी * छुवत चढी जनु सब तनु बीछी ॥
सुनि भये विकल सकल नरनारी * वेलि विटप जनु लागु दवारी ॥
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई * बड विषाद नहिं धीरज होई ॥
दोहा-मुख सूखहिं लोचन श्रवहिं, शोक न हृदयसमाय ॥
मानहुँ करुणारस कटक, उतरा अवध बजाय ॥ ४९ ॥
भलि बनाइ विधि बात बिगारी * जहँ तहँ देहिं कैकयिहि गारी ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहि पापिनिहिं बूझिका परेऊ * छाय भवन पर पावक धरेऊ
निज कर नयन काढ़ि चहदीखा * डारि सुधा विष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघुवंश वेणु वन आगी
पल्लव बैठि पेड इन काटा * सुखमहँ शोक ठाट इन ठाटा
सदा राम इहि प्राण समाना * कारण कवन कुटिल पन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि स्वभाऊ * सब विधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहिजाई * जानि नजाइ नारि गति भाई

दोहा—का नहिं पावक जरि सकै, का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ॥

का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ।
का सुनाइ विधि काह सुनावा * का [illegible]नक बन्धुसुखदाता॥
एक कहै भल भूप न कीन्हा * वर विचु वचन रत अहहू॥
जोहठि भयउ सकल दुख भाजन * अबला विअयश न द्वैगाजन
एक धर्म परमिति पहिचाने * नृपहिं दोष नहिं [illegible]हिं सयाने
शिवि दधीचि हरिचन्द * कहानी * एक एक सन [illegible]कहहिं बखानी

* एक समय वशिष्ठजीने विश्वामित्रसे राजा हरिश्चन्द्रकी बडाई की; कि रघु
ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्रने राजाकी परीक्षाके अर्थ तपबलसे ह
राजासे राज्यभंडार सब संकल्प लेलिया और प्रातःकाल जायके कहाकि
पने रात्रिको राज्य हमें संकल्प करादिया परन्तु उसकी दक्षिणा दीजिये
राज्य छोडिये यह सुन राजाने विनती किया कि महाराज मेरे पास कुछ
इससे यह ऋण रहैगा हम उद्योग करके भरदेवैंगे ऐसा कह स्त्री पुत्रको
ज्यछोड काशीको चले वाटमें विश्वामित्र ब्राह्मणका रूप धरके जो जो
पोषणार्थ किसी उद्योगसे इनको मिले सो भोजनकी वेला अपनेको मांगते
सप्रकार कष्ट सहते २ राजा काशीमें आये तब विश्वामित्रने कहा महाराज
दक्षिणा दीजिये तब राजाने स्त्री पुत्रको एक ब्राह्मणके हाथ बेचडाला
ले विश्वामित्रको दिया शेष जो रहा उसके निमित्त आप मशानके अधिकार

१ अग्नि। २ डार। ३ शीशा। ४ स्त्री।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत कर सम्मत कहहीं * एक उदास मौन है रहहीं ॥
कागन मूंद कररद गहि जीहा * एक कहहिं यह बातअलीहा ॥
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे * भरत राम कहँ प्राणपियारे ॥

दोहा—चन्द्र श्रवै वरु अनल कण, सुधा होइ विषतूल ॥
स्वप्नेहु कबहुँ न करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥ ५१ ॥

एक विधातहि दूषण देहीं * सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं ॥
खरभर नगर शोच सब काहू * दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
असमंजस कुल मान जठेरी * जे प्रिय परम कैकयी केरी ॥
रघुपति पितहि प्रशील सराही * वचन बाण सम लागहिं ताही ॥
देश काल अवसर अनुसारी * सदा कहहु यह सब जग जाना ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * केहि अपराध आजु वन देहू ॥
कहिहु लघुवात लागि अवरेशू * प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या पाँइहि गहि विगारा * तुम ज्यहि लागि वज्र उर मारा ॥

दोहा—सीय कि पिय सँग परिहरिहि, लषण कि रहिहहिं धाम॥

करहिंको प्रतिनिधि किया तब उस मशानाधिकारीने राजाहरिश्चंद्रको मशान यह कर लेनेको नियत किया वहां रहकै अपने स्वामीका काम धर्मपूर्वक चंदनौं फिर विश्वामित्रने राजा हरिश्चंद्रके पुत्रको सर्प बन डसा तब उस मु- की माता जलानेके लिये मशानघाट पर आई तब राजाने कहा यहां जो कर नियतहै सो दोगी तब फूकन पाओगी तब स्त्री रोकै बोली कि महाराज मैं तुम्हारी भार्य्याहूं और यह पुत्रहै दैवकी विपरीततासे इस दशाको प्राप्तहुईहूं अब मेरे पास एक कौडाभी नहीं हम कहांसे देवैं इस बातको सुन राजा हरिश्चंद्रने कहा मैं धर्मका निरादर नहीं करूंगा इससे विना करदिये फूकने नहीं पावोगी तब राणी दुःखितहो अपने तनुका वस्त्र उतारनेके लिये हाथ बढानेलगी कि त्रिलोकी कां- पगई इतनेमें देवताओं सहित विष्णुभगवान् आगये और कुँवर रोहिताश्वको जि- वाय अयोध्याके राज्यपर पुनः स्थापितकिया अन्तमें सबको मुक्तिदी ॥

१ दशन । २ जीभ । ३ मिथ्या । ४ पुण्य । ५ पीडा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत कि भूजब राजपुर, नृपाकि जियहिं विनुराम ॥
असविचारि जिय छांडहुकोहू * शोक कलंक कोटि जनिहो
भरतहि अवशि देहु युवराजू * कानन कौन रामकर काज
नाहिन राम राज्यकरभूखे * धर्म धुरीण विषयरस रूखे
गुरुगृह बसहिं रामतजिगेहू * नृपसन असवर दूसर लेहू
रामसरिस सुत कानन योगू * कहाकहहिं सुनि तुम कहँ लोगू
जौन मानिहौ कहे हमारे * नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जोपरिहाँस कीन कछुहोई * तौ कहि प्रगट जनावहु सोई
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई * [illegible] विधि शोक कलंकनशाई
छंद-ज्यहिभाँति शोक कलंकजाइ [illegible]
हठि फेरु रामहिं जातवन ज[illegible]
जिमिभानुविनुदिनप्राणविनुतनु [illegible]
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझुरी जिय[illegible]
सो०-सखिनसिखावनदीन्ह, सुनतमधुरपरिणाम हित ॥
तेइँकछुकाननकीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ २ ॥
उतर न देइ दुसह रिसरूखी * मृगिहिचितव जनु बाघिनि[illegible]
व्याधि असाधि जानितिनत्यागी * चलींकहति मतिमन्द [illegible]
राज्य करत इहि दैव बिगोई * कीन्ह्यसि अस जस करै नकोई
इहिविधि विलपहिं पुर नरनारी * देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा * कवनराम विनु जीवन आसा
विकल वियोग प्रजा अकुलानी * जिमि जलचरगण सूखत पानी
अति विषाद वश लोग लुगाई * गये मातु पहँ रामगुसाई
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ * हृदय शोच जनि राखहिं राऊ

१ राज्यकरहिंगे अर्थात् न करहिंगे। २ क्रोध। ३ किला। ४ वस्त्र
५ धर्मकीध्वजाकोधारणकरनेवाले। ६ हँसी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू * तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके * प्राण प्राणके जीवन जीके ॥
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं * मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं ॥
दोहा-यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ ॥
मानि मातुके नात बलि, सुरति विसरि जनि जाइ ॥५८॥

अथ क्षेपक ॥

शुक्र सोम रवि धनद यमादिक * रक्षा करहिं तुम्हारि अनादिक ॥
राम दण्डकारण्य निवासी * तुमहिं देहिं ये सब सुख रासी ॥
अग्नि वायु अरु धूम पुनीता * ऋषि मुखच्युत सब मंत्र विनीता॥
तुमहिं आचमन करत सदाहीं * रक्षा करहिं राम बलि जाहीं ॥
सर्व लोक प्रभु सब जगकारी * विधि ऋषिगण सब जे असुरारी ॥
वनवासी रघुनंदन तोहीं * पालहिं कृपा करहिं यह मोहीं ॥
ऋतु सागर श्रुति द्वीपरु लोका * दिशा आदि तुमकाहिं विशोका॥
करहिं राम अरु नानामंगल * देहिं बहुरि तव मिटहिं अमंगल॥
यह कहि सुत शिर अक्षत शेषा * जननी करि कीन्हौं शुभ वेषा ॥
चंदनादि सब गंध लगाये * राम माथमहँ अति मन भाये ॥
दोहा-बांध औषधी भुजनमें, देवी देव मनाय ॥
विदा किये रघुवंश मणि, दशा कही नहिं जाय ॥

इति क्षेपक ॥

देव पितर सब तुमहिं गुसाईं * राखहिं नयन पलककी नाईं ॥
अवंधिअम्बु[1] प्रिय परिजन[2] मीना * तुम करुणाकर धर्मधुरीना ॥
अस विचारि सोइ करहु उपाई * सबहि जियत जेहि भेटहु आई ॥
जाहु सुखेन वनहिं बलि जाऊं * करि अनाथ जन परिजन[3] गाऊं ॥
सबकर आजु सुकृत फल बीता * भये कराल काल विपरीता ॥
यहिविधि विलपि चरण लपटानी * परम अभागिनि आपुहिजानी ॥

१ अवधि जो चौदह वर्षकी सोई पानी । २ और प्रियबन्धु मछलीहैं। ३ कुटुंब ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दारुण दुसह दाह उर व्यापा * वरणि नजाइ विलाप कलापा ॥
राम उठाय मातु उर लावा * कहि मृदुवचन बहुत समुझावा ॥
दोहा-समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय ॥
जाइ सासु पग कमल युग, वन्दि बैठि शिरनाय ॥ ५९ ॥
दीन्ह अशीश सासु मृदुवानी * अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नमित मुख शोचति सीता * रूपराशि पति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत वन जीवननाथा * कवन सुकृत सन होइहि साथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राणा * विधि करतब कछुजात नजाना ॥
वारु चरण नख लेखति धरणी * नूपुर[1] मुखर मधुर कवि वरणी ॥
मनहुँ प्रेम वश विनती करहीं * हमहिं सीयपद जनिपरिहरहीं ॥
पुनि विलोचन मोचति वारी * बोली देखि राम महतारी ॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी * सासु श्वशुर परिजनहिं पियारी ॥
दोहा-पिता जनक भूपाल मणि, श्वशुर भानुकुल भान ॥
पति रविकुलकैरवविपिन, विधु गुण रूप निधान ॥ ६० ॥
मैं पुनि पुत्र वधू प्रिय पाई * रूप राशि गुण शील सुहाई ॥
नयन पुतरि इव प्रीति वढाई * राखहुँ प्राण जानकिहि लाई ॥
कल्पवेलिजिमिबहुविधि लाली * सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयउ विधि वामा * जानि न जाइ काह परिणामा ॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा * सिय नदीनपगु अवनि कठोरा ॥
जिवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊं * दीप बाति नहिं टारन कहेऊं ॥
सोसियचहति चलन वन साथा * आयसु काह होय रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरण रस रसिक चकोरी * रविरुखनयन सकै किमि जोरी ॥
दोहा-करि केहरि निशिचर चरहिं, दुष्ट जन्तु वन भूरि ॥
विष वाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवन मूरि ॥ ६१ ॥
वन हित कोल किरातकिशोरी * रची विरंचि विषय रस भोरी ॥

१ पायल । २ पुत्री किन्तु षोडश वर्षकी आयु । ३ अज्ञान ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाहन कृमि जिमि कठिन स्वभाऊ* तिनहिं कलेश न कानन काऊ ॥
की तापस तिय कानन योगू * जिन तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय वन वसिहि तात क्यहिभांती* चित्रलिखित कपि देखि डराती ॥
सुरसरि सुभग वनज वनचारी * डावर योग कि हंसकुमारी ॥
अस विचारि जस आयसु होई * मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जो सिय भवनरहै कह अम्बा * मो कहँ होय प्राण अवलम्बा ॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय वानी * शील सनेह सुधा जनु सानी ॥

दोहा–कहि प्रियवचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष ॥
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगट विपिन गुणदोष ॥ ६२ ॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं * बोले समय समुझि मनमाहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू * आनभाँति जिय जनि कछुधरहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू * वचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई * सबविधि भामिनि भवन भलाई ॥
यहिते अधिक धर्म्मनहिं दूजा * सादर सासु श्वशुर पदपूजा ॥
जबजब मातु करिहि सुधि मोरी * होइहि प्रेम विकल मति भोरी ॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी * सुन्दरि समुझायहु मृदुवानी ॥
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं * सुमुखि मातुहित राखौं तोहीं ॥

दोहा–गुरु श्रुति सम्मत धर्म फल, पाइय विनहिं कलेश ॥
हठ वश सब संकट सहे, गालव *नहुष नरेश ॥ ६३ ॥

* गालवऋषिने जब विद्यापढ विश्वामित्रसे कहाकि दक्षिणामांगो तब विश्वामित्र बोले कि दक्षिणा न लेंगे इसपर गालवने प्रत्युत्तर कर हठकिया तब विश्वामित्रने इनको हठीजान सहस्र श्यामैककर्ण घोड़े मांगे यह सुन गालवऋषि घोड़ेकी खोजमेंचले ढूंढते ढूंढते तीन राजाओंके यहां दो दो सौ घोड़े मिले परन्तु उन राजाओंने कहा कि हमारे पुत्र नहीं है इस्से पुत्रके पलटे में घोड़ा

१ पत्थरकेकीड़े ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैं पुनि करि प्रमाण पितुवानी * वेगिफिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नाहिं लागिहि बारा * सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जो हठ करहु प्रेमवश बामा * तौ तुम दुख पाउब परिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी * घोर घाम हिम वारि बयारी ॥
कुशकंटक मग कंकर नाना * चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥
चरण कमल मृदुमंजु तुम्हारे * मारग अगम भूमि धर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे * अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ बृकें केहरि नागा * करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥
दोहा—भूमिशयन वलकल बसन, अशन कंद फल मूल ॥
तेकिसदा सबदिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥ ६४॥
नर अहार रजनीचर करहीं * कपट भेष वन फिरहिं धरहीं ॥
लागै अति पहारकर पानी * विपिन विपति नहिं जात बखानी ॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा * निशिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आये * मृगलोचनि तुम भीरु स्वभाये ॥
हंसगमनि तुम नाहिं वन योगू * सुनि अपयश देहहिं मोहिंलोगू ॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली * जियकी लवने पयोधि मराली ॥
नव रसाल बनविहरण शीला * सोहकि कोकिल विपिनकरीला ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी * चन्द्र वदनि दुख कानन भारी ॥

देंगे फिर गालवने ययाति राजाके पास जाय एक कन्यामांगी उस कन्याको वरथा कि चाहै जिस्से पुत्र उत्पन्न करले परन्तु वोह क्वाँरीही बनीरहै वोह कन्या लेजाय तीनों राजाओंको पुत्र उत्पन्न कराय छः सौ घोड़े लैकै शेषके लिये निराशहोय विश्वामित्रके पास जाय निवेदन किया तब विश्वामित्रने दोसौ घोड़ेकी कीमत एक पुत्र जान उस कन्यामें दो पुत्र उत्पन्न किये और छःसौ घोड़े ले गालव को आशीर्वाददे बिदा किया ॥

१ अंत । २ जूती । ३ रीछ । ४ भेड़िये । ५ सर्प-हाथी । ६ भोजपत्र । ७ भोजन । ८ राक्षस । ९ लवणसमुद्र । १० हंसिनी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख, जो न करें हित मानि॥
सो पछिताइ अघाइ उर, अवशि होइ हित हानि ॥ ६५ ॥

सुनि मृदुवचन मनोहर पियके * लोचन नलिन भरे जल सियके ॥
शीतल सिख दाहक भइ कैसे * चकइहि शरद चांदनी जैसे ॥
उतर न आव विकल वैदेही * तजन चहत मोहिं परम सनेही ॥
वरबस रोकि विलोचन वारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासु पद कह कर जोरी * क्षमव मातु बड़ अविनय मोरी ॥
दीन प्राणपति मोहिंसिख सोई * जेहि विधि मोर परमहित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं * पियवियोग सम दुख जगनाहीं ॥
यहिविधि सिय सासुहि समुझाई * कहति पतिहि वर विनय सुनाई ॥
अस कहि सिय रघुपति पदलागी * बोली वचन प्रेम रस पागी ॥

दोहा–प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान ॥
तुम विनु रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान॥६६॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु श्वशुर गुरु सुजन सुहाई * सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते * पिय बिनु तियहि तरणि ते ताते ॥
तन धन धाम धरणि पुरराजू * पति विहीन सब शोक समाजू ॥
भोग रोग सम भूषण भारू * यमयातना सरिस संसारू ॥
प्राणनाथ तुम विनु जग माहीं * मो कहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी विनु वारी * तैसहि नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे * शरद विमल विधु वदन निहारे ॥

---

१ जब शरीरको त्याग जीवि धर्म्मराजके पास जाताहै तो विनदेह दुःख सुख कौन भोगे इसलिये अंगुष्ठ प्रमाण शरीर धर्मराजके यहां तैयार रहताहै उसीको यमयातना कहतेहैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–खग मृग परिजन नगर वन, बलकल वसन दुकूल ॥
नाथ साथ सुर सदन सम, पर्णशाल सुखमूल ॥ ६७ ॥

वनदेवी वनदेव उदारा * करिहैं सासु श्वशुर सम सारा ॥
कुश किशलय साथरी सुहाई * प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कन्द मूल फल अमिय अहारू * अवध सहस सुख सरिस पहारू ॥
क्षणक्षण प्रभुपद कमल विलोकी * रहिहौं मुदितादिवस जिमिकोकी ॥
वन दुख नाथ कहेउँ बहुतेरे * भय विषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु वियोग लवलेश समाना * सबमिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जियजानि सुजान शिरोमनि * लेइय संग मोहिं छांड़ियजनि ॥
विनती बहुत करौं का स्वामी * करुणामय उर अन्तर्यामी ॥

दोहा–राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत जानिये प्रान ॥
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेह निधान ॥ ६८ ॥

मोहिं मग चलत न होइहि हारी * क्षण क्षण चरण सरोज निहारी ॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं * मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥
पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं * करिहौं वायु मुदित मन माहीं ॥
श्रमकण सहित श्याम तनु देखे * का दुख समय प्राणपति पेखे ॥
सम महि तृण तरु पल्लव डासी * पाँय पलोटिहि सब निशि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही * लागिहि ताप बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहिं चितवन हारा * सिंह बधुहि जिमि शशक सियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू * तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू ॥

दोहा–ऐसहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान ॥
तौ प्रभु विषम वियोग दुख, सहिहैं पामर प्रान ॥ ६९ ॥

असकहि सीय विकल भइ भारी * वचन वियोग न सकी सँभारी ॥
देखि दशा रघुपति जिय जाना * हठराखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानु कुल नाथा * परिहरि शोच चलहु वन साथा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाहिं विषाद कर अवसर आजू * वेगि करहु वन गमन समाजू ॥
कहि प्रिय वचन प्रियहि समुझाई * लगे मातु पद आशिष पाई ॥
वेगि प्रजा दुख मेटब आई * जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दशाविधि बहुरि कि मोरी * देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई * जननी जियत वदन विधु जोई ॥

दोहा—बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुवर तात ॥
कबहुँ बुलाय लगाय उर, हरषि निरखिहौं गात ॥ ७० ॥

लखि सनेह व्याकुल महतारी * वचन न आव विकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह विधिनाना * समय सनेह नजाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पगलागी * सुनिय मातु मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव वन दीन्हा * मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ॥
तजब क्षोभ जनि छांड़ब छोहू * कर्म्म कठिन कछु दोष न मोहू ॥
सुनिसिय वचन सासु अकुलानी * दशा कवन विधि कहौं वखानी ॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही * धरि धीरज उर आशिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा * जबलगि गंग यमुन जलधारा ॥

दोहा—सीतहि सासु अशीष सिख, दीन्ह अनेक प्रकार ॥
चली नाइ पदपद्म शिर, अतिहित बारहिं बार ॥ ७१ ॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये * व्याकुल विलखि वदन उठि धाये ॥
कम्प पुलक तनु नयन सनीरा * गहे चरण अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े * मीन दीन जनु जल ते काढ़े ॥
शोच हृदय विधिका होनहारा * सब सुख सुकृत सिरान हमारा ॥
मोकहँ काह कहब रघुनाथा * रखिहैं भवन कि लेहहिं साथा ॥
राम विलोकि बन्धु कर जोरे * देह गेह सब तृण सम तोरे ॥
बोले वचन राम नय नागर * शील सनेह सरल सुखसागर ॥
तात प्रेमवश जनि कदराहू * समुझि हृदय परिणाम उछाहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—मातु पिता गुरु स्वामि सिख, शिरधरि करहिसुभाय ॥
लहेउ लाभ तिन जन्मके, नतरु जन्म जग जाय॥ ७२ ॥
अस जिय जानि सुनहु सिखभाई * करो मातु पितु पद सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं * राव वृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं वन जाउँ तुमहिं लै साथा * होइहि सब विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा * सब कहँ परै दुसह दुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू * नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी * सो नृप अवशि नरक अधिकारी॥
रहहु तात असनीति विचारी * सुनत लषण भये व्याकुल भारी ॥
सियरे वचन सूखि गे कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे ॥
दोहा—उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ॥
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तौ कहा बसाइ ॥ ७३ ॥
दीन्ह मोहिं सिख नीक गुसांई * लागत अगम अपनि कदराई ॥
नरवर धीर धर्म्मधुर धारी * निगम नीति केते अधिकारी ॥
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला * मन्दर मेरु कि लेइँ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानौं काहू * कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई * प्रीति प्रतीति निगम निज गाई ॥
मोरे सब एक तुम स्वामी * दीनबन्धु उर अन्तर्यामी ॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही * कीरति भूति सुगति प्रियजाही ॥
मन क्रम वचन चरणरति होई * कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई ॥
दोहा—करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदुवचन विनीत ॥
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥ ७४ ॥
मांगहु विदा मातु सन जाई * आवहु वेगि चलहु वन भाई ॥

१ सेवा । २ ठंढे । ३ पाला । ४ कमल । ५ श्रेष्ठ । ६ मन्दराचल पर्वत इत्यादि । ७ हंस । ८ सम्पदा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुदित भये सुनि रघुवरवानी * भयउ लाभबड़ मिटी गलानी ॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये * मनहुँ अन्ध फिरि लोचनपाये ॥
जाइ जननि पद नायउ माथा * मन रघुनन्दन जानकि साथा ॥
पूछेउ मातु मलिन मन देखी * लषण कहेउ सब कथा विशेषी ॥
गई सहमि सुनि वचन कठोरा * मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथ आजू * ये सनेह वश करब अकाजू ॥
मांगत बिदा समय सकुचाहीं * जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं ॥

दोहा—समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुशील स्वभाव ॥
नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिनि कीन्ह कुदाव ॥७५॥

धीरज धन्यउ कुअवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुवानी ॥
तात तुम्हार मातु वैदेही * पिता राम सब भांति सनेही ॥
अवध तहां जहँ राम निवासू * तहाँ दिवस जहँ भानु प्रकाशू ॥
जोपै राम सीय वन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं * सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥
राम प्राण प्रिय जीवन जीके * स्वारथ रहित सखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँते * मानहिं सकल रामके नाते ॥
अस जिय जानि संग वन जाहू * लेहु तात जगजीवन लाहू ॥

दोहा—भूरिभाग्य भाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ ॥
जो तुम्हरे मन छांड़ि छल, कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७६॥

पुत्रवती युवती जग सोई * रघुवर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बांझ भलि वादि बियानी * रामविमुख सुततें हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग्य राम वन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फल सुत येहू * राम सीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू * जनि स्वप्नेहु इनके वश होहू ॥
सकल प्रकार विकार विहाई * मन क्रम वचन कर्यहु सेवकाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम कहँ वन सब भांति सुपासू * सँग पितु मातु राम सियजासू ॥
ज्यहि न राम वन लहहिं कलेशू * सुत सोइ कर्यहु मोर उपदेशू ॥
छं०—उपदेश यहि जेहि तात तुम ते राम सिय सुख पावहीं ॥
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई ॥
रति[1] होउ अविरल[2] अमल[3] सिय रघुवीर पद नित नित नई ॥ ३ ॥
सो०—मातु चरण शिर नाइ, चले तुरत शंकित हिये ॥
बागुरु[4] विषम तुराइ, मनहुँ भागु मृग[5] भाग वश ॥ ३ ॥
चले लषण जहँ जानकिनाथा * भे मन मुदित पाइ प्रिय साथा ॥
वन्दि रामसिय चरण सुहाये * चले संग नृप मन्दिर आये ॥
कहहिं परस्पर पुर नर नारी * भलि बनाइ विधि बात बिगारी ॥
तनु कृश मन दुख वदन मलीना * विकल मनहुँ माखी मधु छीना ॥
करमींजहिं शिरधुनि पछिताहीं * जनु विनु पंख विहँग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा * वरणि नजाइ विषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय वचन राम पगु धारे ॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी * व्याकुल भयउ भूमिपति[6] भारी ॥
दोहा—सांय सहित सुत शुभग दोउ, देखि देखि अकुलाइ ॥
बारहिं बार सनेह वश, राउ लिये उर लाइ ॥ ७७ ॥
सकै न बोलि विकल नरनाहू * शोक विकल उर दारुण दाहू ॥
नाइ शीश पद अति अनुरागा * उठि रघुनाथ विदा तब मांगा ॥
पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै * हर्ष समय विस्मय कतकीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू[7] * यश जग जाइ होइ अपवादू[8] ॥
सुनि सनेह वश उठि नरनाहू * बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥

१ प्रीति । २ अचल । ३ निर्मल । ४ जाल । ५ हरिण । ६ राजादशरथ
७ अनुचित । ८ निंदा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं * राम चराचर नायक अहहीं ॥
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी * ईश देइ फल हृदय विचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई * निगम नीति अस कह सबकोई ॥
दोहा—और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग ॥
अति विचित्र भगवन्तगति, को जग जाने योग ॥ ७८ ॥
राउ राम राखन हित लागी * बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी ॥
लखे राम रुख रहत न जाने * धर्म्म धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीनी * अति हित बहुत भाँति सिखदीनी ॥
कहि वनके दुख दुसह सुनाये * सासु श्वशुर पित सुख समुझाये ॥
सियमन रामचरण अनुरागा * घर न सुगम वन अगम न लागा ॥
औरौ सबहि सीय समुझाई * कहिकहिविपिनविपति अधिकाई ॥
सचिव नारि गुरुनारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदुवानी ॥
तुम कहँ तौ न दीन्ह वनवासू * करहु जो कहहिं श्वशुर गुरु सासू ॥
दोहा—शिष शीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि नसुहानि ॥
शरदचन्द्र चांदनि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥ ७९ ॥
सीय सकुच वश उतर न देई * सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि पट भूषण भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदुवानी ॥
नृपहि प्राण प्रिय तुम रघुबीरा * शील सनेह न छांडहि भीरा ॥
सुकृत सुयश परलोक न भाऊ * तुमहिं जान वन कहहिं न राऊ ॥
अस विचारि सोइकरौ जो भावा * राम जननिसिख सुनिसुखपावा ॥
भूपहि वचन बाण सम लागे * करहिं न प्राण पयान अभागे ॥
शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू * काह करिय कछु सूझ न काहू ॥
राम तुरत मुनि वेष बनाई * चले जनक जननी शिरनाई ॥
दोहा—सजि वन साज समाज सब, वनिता[1] बन्धु[2] समेत ॥
वन्दि विप्र गुरु चरण प्रभु, चले करि सबहि अचेत ॥ ८० ॥

१ श्री जानकीजी । २ लक्ष्मणजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निकसि वशिष्ठ द्वार भये ठाढ़े * देखे लोग विरह दव डाढ़े ॥
कहि प्रिय वचन सबहि समुझाये * विप्रवृन्द रघुवीर बुलाये ॥
गुरु सनकहि वरषाशन दीन्हे * आदर दान विनय बहु कीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे * नीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी * गुरुहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कर सार सँभार गुसाईं * करब जनक जननीकी नाईं ॥
बारहिं बार जोरि युग पानी * कहत राम सब सन मृदुवानी ॥
सोइ सब भाँति मोरहितकारी * जेहिते रहैं भुआल सुखारी ॥

दोहा—मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुख दीन॥
सोउपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन ॥ ८१ ॥

इहि विधि राम सबहि समुझावा * गुरु पद पद्म हर्षि शिरनावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई * चले अशीष पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयो विषादू * सुनि नजाइ पुर आरतनादू ॥
कुशकुनलंक अवध अति शोकू * हर्ष विषाद विवश सुरलोकू ॥
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे * बोलि सुमन्त कहन असलागे ॥
राम चले वन प्राण न जाहीं * केहि सुख लागि रहे तनु माहीं ॥
इहि ते कवन व्यथा बलवाना * जो दुखपाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू * लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥

दोहा—सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ॥
रथ चढाइ दिखराइ वन, फिरहु गये दिन चारि ॥ ८२ ॥

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई * सत्यसिन्धु दृढ व्रत रघुराई ॥
तौ तुम विनय करहु कर जोरी * फेरिय प्रभु मिथिलेश किशोरी ॥
जब सिय कानन देखि डराई * कहेउ मोर सिख अवसर पाई ॥

---

१ ब्राह्मणोंकेझुण्डकेझुण्ड । २ एकएकवर्षका भोजन । ३ दोनोंहाथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सासु श्वशुर अस कहेउ सँदेशू * पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू ॥
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
इहिबिधि करेहु उपाय कदंबा * फिरइ तोहोइ प्राण अवलंबा ॥
नाहिं तो मोर मरण परिणामा * कछु न बसाइ भयो विधि बामा ॥
असकहि मूर्च्छि परेउ महिराऊ * राम लषण सिय आनि दिखाऊ ॥

दोहा—पाय रजायसु नाइ शिर, रथ अति रुचिर बनाय ॥
गयहु जहाँ बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाय ॥ ८३ ॥

तब सुमन्त नृप वचन सुनाये * करि विनती रथ राम चढाये ॥
चढि रथ सीय सहित दोउ भाई * चले हर्षि अवधहि शिरनाई ॥
चलत राम लखि अवध अनाथा * विकल लोग लागे सब साथा ॥
कृपासिंधु बहुविधि समुझावहिं * फिरहिं प्रेमवश पुनि फिरि आवहिं ॥
लागत अवध भयानक भारी * मानहु काल राति अँधियारी ॥
घोर जन्तु सम पुरनरनारी * डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मशान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहुँ यमदूता ॥
बागन विटप बेलि कुम्हिलाहीं * सरित सरोवर देखि नजाहीं ॥

दोहा—हय गय कोटिक केलि मृग, पुर पशु चातक मोर ॥
पिक रथांग शुक शारिका, सारस हंस चकोर ॥ ८४ ॥

राम वियोग विकल सब ठाढे * जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढे ॥
नगर सकल बन गहबर भारी * खग मृग विकल सकल नरनारी ॥
विधि कैकयी किरातिनि कीनी * जेहिदव दुसह दशहु दिशिदीनी ॥
सहि न सके रघुबर विरहागी * चले लोग सब व्याकुल भागी ॥
सबहि विचार कीन्ह मन माहीं * राम लषण सिय बिनु सुख नाहीं ॥
जहां राम तहँ सकल समाजू * बिनु रघुवीर अवध केहि काजू ॥

१ सहारा । २ सुंदर । ३ घोडा । ४ हाथी । ५ कोयल । ६ चकई-चकवा किन्तु सारसको कहते हैं । ७ वियोगकी अग्नि तेजमय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चले साथ अस मंत्र दृढाई * सुर दुर्लभ सुखसदन[2] विहाई ॥
रामचरण पंकज प्रिय जिनही * विषय भोग वश करैं कितिनहीं॥

दोहा–बालक वृद्ध विहाइ गृह, लगे लोग सब साथ ॥
तमसा तीर निवास किय, प्रथम दिवस[2] रघुनाथ ॥ ८५ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी * सदय हृदय दुख भयउ विशेषी॥
करुणामय[3] रघुनाथ गुसाँई * वेगि पाइ यह पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदुवचन सुहाये * बहु विधि राम लोग समुझाये ॥
किये धर्म उपदेश घनेरे * लोग प्रेमवश फिरहिं न फेरे ॥
शील सनेह छाँड़ि नहिं जाई * असमंजस[5] वश भये रघुराई ॥
लोक शोक श्रमवश गये सोई * कछुक देव माया मति मोई ॥
जबहि यामयुग यामिनि[5] बीती * राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
खोज मारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय वनहिं नहिं बाता ॥

दोहा–राम लषण सिय यान चढि, शंभु चरण शिरनाइ ॥
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ॥ ८६ ॥

जागे सकल लोग भये भोरू * गये रघुवीर भयो अति शोरू ॥
रथकरखोज कतहुँ नहिं पावहिं * रामरामकहि चहुँ दिशि धावहिं ॥
मनहुँ वारिनिधि[6] बूड जहाजू * भयउ विकल जनुवणिकसमाजू॥
एकहिं एक देहिं उपदेशू * तजेउ राम हम जानि कलेशू ॥
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना * धृक जीवन रघुवीर विहीना ॥
जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा * तौ कस मरण न माँगे दीन्हा ॥
इहिविधि करत प्रलाप कलापा * आये अवध भरे परितापा[7] ॥
विषम वियोग नजाइ बखाना * अवधि आश राखहिं सबप्राना ॥

दोहा–रामदरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि ॥

---

१ घरा २ दिन । ३ दयावान । ४ द्विविधा । ५ दोपहररात्रि । ६ समुद्र । ७ दुःख ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ॥ ८७ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई * शृंगवेर पुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेषी ॥
लषण सचिव सिय कीन्हप्रणामा * सबहि सहित सुख पायउ रामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला * सबसुख करनि हरनि सब शूला ॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा * राम विलोकत गंग तरंगा ॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई * विबुध नदी महिमा अधिकाई ॥
मज्जन कीन्ह पन्थ श्रम गयऊ * शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटहिं भवभारू * तेहिश्रम यह लौकिकव्यवहारू ॥

दोहा-शुद्ध सच्चिदानन्दमय, राम भानुकुल केतु ॥
चरित करत नर अनुहरत, संशृत सागर सेतु ॥ ८८ ॥

यहसुधि गुह निषाद जबपाई * मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई ॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा * मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा ॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगे * प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे ॥
सहज सनेह विवश रघुराई * पूछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे * भयउँ भाग्य भाजन जन लेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा * मैं जन नीच सहित परिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ * थापिय जन सब लोग सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखासुजाना * मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दोहा-वर्ष चारिदश वास वन, मुनि व्रत वेष अहार ॥
ग्राम बास नहिं उचित सुनि, गुहहि भयो दुख भार ॥ ८९ ॥

राम लषण सियरूप निहारी * कहहिं सप्रेम नगर नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे ॥

---

१ श्रीसूर्य्यनारायण । २ संसारकाभार । ३ शुद्ध और सत्य, चैतन्य, आनन्द-करूपा । ४ देखत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक कहहिं भूपति भल कीन्हा * लोचन लाहु हमहिं जिनदीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना * तरु शिंशुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा * कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जुहारि गृह आये * रघुबर सन्ध्या करन सिधाये ॥
गुह सँवारि साथरी बनाई * कुशकिशलय मृदु परम सुहाई ॥
शुचि फल मूल मृदुल मधु जानी * दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥

दोहा–सिय सुमंत्र भ्राता सहित, कन्द मूल फल खाइ ॥
शयन कीन्ह रघुवंश मणि, पाँय पलोटत भाइ ॥ ९० ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहिं सोवनमृदुवानी ॥
कछुक दूरि सजि बाण शरासन * जागन लगे बैठि वीरासन ॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती * ठाँव ठाँव राखे अति प्रीती ॥
आप लषण पहँ बैठेउजाई * कटि भाथा शर चाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा * भयउ प्रेमवश हृदय विषादा ॥
तनु पुलकित लोचन जल बहई * वचन सप्रेम लषण सन कहई ॥
भूपति भवन सुसहज सुहावा * सुरपति सदन न पटतर आवा ॥
मणिमय रचित चारु चौवारे * जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दोहा–शुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमन सुगन्ध सुवास ॥
पलँग मंजु मणि दीप जहँ, सब विधि सकल सुपास ॥ ९१ ॥

विविध वसन उपधान तुराई * क्षीर फेनु मृदु विशद सुहाई ॥
तहँ सिय राम शयन नित करहीं * निज छवि रति मनोज मदहरहीं ॥
ते सिय राम साथरी सोये * श्रमित वसन विन जाहिं न जोये ॥
मातु पिता परिजन पुरवासी * सखा सुशील दास अरु दासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं * महि सोवत सो रामगुसाईं ॥

१ शीशम । २ कोमलपत्ता । ३ तरकस । ४ उपमामें । ५ कामदेव । ६ वि-
वित्र । ७ सुन्दर । ८ तकियां । ९ रजाई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिता जनक जगविदित प्रभाऊ * श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो वैदेही * महि सोवत विधि वाम न केही ॥
सिय रघुवीर कि कानन योगू * कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ॥
दोहा—कैकयिनन्दिनिमन्दमति, कठिन कुटिल प्रण कीन्ह ॥
जेहि रघुनन्दन जानकिहि, सुख अवसर दुखदीन्ह ॥ ९२॥
भइ दिनकर कुल विटप कुठारी * कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी ॥
राम सीय महि शयन निहारी * भयउ विषाद निषादहि भारी ॥
बोले लषण मधुर मृदुवानी * ज्ञान विराग भक्ति रस सानी ॥
कोउ न काहु दुख सुख करदाता * निज कृत कर्म भोग सब भ्राता ॥
योग वियोग भोग भल मन्दा * हित अनहित मध्यम भ्रमफंदा ॥
जन्म मरण जहँ लगि जग जालू * सम्पति विपति कर्म अरु कालू ॥
धरणि धाम धन पुर परिवारू * स्वर्ग नरक जहँ लगि व्यवहारू ॥
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं * मोह मूल परमारथ नाहीं ॥
दोहा—स्वप्न होहि भिखारि नृप, रंक नाकपति होइ ॥
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जग जोइ ॥ ९३ ॥
अस विचारि नहिं कीजिय रोषू * वादि काहु नहिं दीजिय दोषू ॥
मोह निशा सब सोवनिहारा * देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
इहि जग यामिनि जागहिं योगी * परमारथी प्रपंच वियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जगजागा * जब सब विषय विलास विरागा॥
होइ विवेक मोह भ्रम भागा * तब रघुवीर चरण अनुरागा ॥
सखा परम परमारथ एहू * मन क्रम वचन रामपद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा * अविगत अलख अनादि अनूपा॥

१ दरिद्री । २ स्वर्गपति । ३ जगत्‌रूपीरात्रि । ४ मोक्षरूप । ५ जिनकी गति जाननेमें नहीं आवे । ६ अर्थात् देखनेमें नहीं आते । ७ जिनका आदि अन्त मध्य नहीं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकल विकाररहित गत भेदा * कहि नित नेति निरूपहिं वेदा ॥
दोहा—भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ॥
करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटै जग जाल ॥९४॥
सखा समुझि अस परिहरि मोहू * सिय रघुवीर चरण रति होहू ॥
कहत राम गुण भाभिनुसारा * जागे जग मंगल दातारा ॥
सकल शौच करि राम अन्हाये * शुचि सुजान वट क्षीर मँगाये ॥
अनुज सहित शिर जटा बनाये * देखि सुमन्त नयन जल छाये ॥
हृदय दाह अति वदन मलीना * कह करजोरि वचन अतिदीना ॥
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा * लै रथ जाहु रामके साथा ॥
वन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई * आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई ॥
लषण राम सिय आन्यहु फेरी * संशय सकल सकोच निवेरी ॥
दोहा—नृप अस कह्यउ गुसांइँ जस, कहियकरोंबलिसोइ ॥
करि विनती पाँयन परचउ, दीन बाल जिमि रोइ ॥९५॥
तात कृपा करि कीजिय सोई * जाते अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा * तात धर्म मगु तुम सब शोधा ॥
शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा * सहे धर्म हित कोटि कलेशा ॥
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना * धर्म धरेउ सहि संकट नाना ॥
धर्म न दूसर सत्य समाना * आगम निगम पुराण बखाना ॥
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा * तजे सो तिहँ पुर अपयश छावा ॥
सम्भावित कहँ अपयश लाहू * मरण कोटि सम दारुण दाहू ॥
तुम सन तात बहुत का कहऊं * दिये उतर फिरि पातक लहऊं ॥
दोहा—पितु पद गहि कहि कोटि विधि, विनय करव कर जोरि ॥
चिन्ता कवनिहुँ बात की, तात करिय जनि मोरि ॥ ९६ ॥
तुम पुनि पितु समान हित मोरे * विनती करौं तात कर जोरे ॥

१ गंगाजी । २ सभाके बैठनेवाले पुरुष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारे* दुख न पाव नृप शोच हमारे ॥
सुनि रघुनाथ सचिव संवादू * भयउ सपरिजन विकल निषादू ॥
पुनि कछु लषण कही कटुवानी * प्रभु वरजेउ बड़ अनुचित जानी ॥
सकुचि राम निज शपथ दिवाई* लषण सँदेश कहव जनि जाई ॥
कह सुमन्त पुनि भूप सँदेशू * सहिनसकहिंसियविपिन कलेशू ॥
जेहि विधि अवध आव फिरि सीया*सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया ॥
नतरु निपट अवलंब विहीना *मैं न जियब जिमि जल विनु मीना ॥

दोहा—मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहाँ मन मान ॥
तब तहँ रहब सुखेन सिय, जब लगि विपति विहान ॥ ९७ ॥

विनती कीन्ह भूप जेहि भांती * आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना * सियहिं दीन्ह शिष कोटि विधाना ॥
सासु श्वशुर गुरु प्रिय परिवारू* फिरहु तो सबकर मिटै खँभारू ॥
सुनि पति वचन कहति वैदेही * सुनहु प्राणपति परम सनेही ॥
प्रभु करुणामय परम विवेकी * तनुतजि छांह रहत किमि छेकी ॥
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई * कहँ चाँन्द्रिका चन्द्र तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई * कहत सचिव सन गिरा सुहाई ॥
तुम पितु श्वशुर सरिस हितकारी * उतर देउँ फिर अनुचित भारी ॥

दोहा—आरतवश सन्मुख भइउँ, विलग न मानव तात ॥
आरज सुत पद कमल विनु, वादि जहाँ लग नात ॥९८॥

पितुहि विभव विलास मैं दीठा * नृपमणि मुकुट मिलत पद पीठा ॥
सुखनिधान असपितु गृहमोरे * पति विहीन मन भाव न भोरे ॥
श्वशुर चक्रवै कोशलराऊ * भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ ज्यहि सुरपति लेई * अर्द्ध सिंहासन आसन देई ॥

---

१ कुटुंबसहित । २ वन । ३ सहारा । ४ दुःख । ५ किरणें । ६ मिथ्या । ७ सम्पदा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Prayagraj eGangotri

श्वशुर एतादृश अवध निवासू * प्रिय परिवार मातु सम सासू ॥
विनु रघुपति पद पद्म परागा * मोहि कोउ सपनेहुँ सुखद न लागा ॥
अगम पन्थ वन भूमि पहारा * करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल्ह किरात कुरंग विहंगा * मोहिं सब सुखद प्राणपति संगा ॥

दोहा—सासु श्वशुर सन मोरि हुति, विनय करब परिपाय ॥
मोर शोच जनि करिय कछु, मैं वन सुखी स्वभाय ॥९९॥

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा * वीर धुरीण धरे धनु भाथा ॥
नहिं मगु श्रम भ्रम दुख मन मोरे * मोहिंलगि शोच करिय जनि भोरे ॥
सुनि सुमन्त सिय शीतल वानी * भये विकलजनु फणि मणि हानी ॥
नयन न सूझ सुनै नहिं काना * कहि न सकै कछु अति अकुलाना ॥
राम प्रबोध कीन्ह वहु भाँती * तदपि होइ नहिं शीतल छाती ॥
यत्न अनेक साथ हित कीन्हा * उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा ॥
मेटि जाय नहिं राम रजाई * कठिन कर्म्म गति कछु न बसाई ॥
राम लषण सिय पद शिरनाई * फिरे वणिक[1] जिमि मूरगँवाई ॥

दोहा—रथ हाँके हय[2] रामतन, हेरि हेरि हिहनाहिं ॥
देखि निषाद विषादवश, शिर धुनि धुनि पछिताहिं ॥१००॥

जासु वियोग विकल पशु ऐसे * प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे ॥
बरबस[3] राम सुमन्त पठाये * सुरसरि[5] तीर आपु चलि आये ॥
माँगी नाव न केवट[4] आना * कहै तुम्हार मर्म[7] मैं जाना ॥
चरणकमल रज कहँ सब कहई * मानुष कराणि मूरि कछु अहई ॥
छुवत शिला[8] भइ नारि सुहाई * पाहन ते न काठ कठिनाई ॥
तरणिउ[9] मुनि घरनी[10] होइ जाई * वाट परै मेरि नाव उड़ाई ॥

---

१ सौदागर । २ जमा । ३ अश्व । ४ हठकरके । ५ श्रीगंगाजीके तट । ६ म॰ लाह । ७ भेद । ८पत्थर अर्थात् अहल्या गौतमकी नारि । ९ नाव ।१० अहल्या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहि प्रतिपालौं सब परिवारू * नहिं जानौं कछु और कबारू ॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू * तौ पद पद्म पखारन कहहू ॥
छंद०—पद पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ॥
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषण पै जब लगि न पाँव पखारिहौं ॥
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥ ४ ॥
सो०—सुनि केवटके वयन, प्रेम लपेटे अटपटे ॥
विहँसे करुणाअयन, चितै जानकी लषण तन ॥ ४ ॥
कृपासिन्धु बोले मुसुकाई * सोइ करहु जेहि नाव न जाई ॥
वेगि आनि जल पाँव पखारू * होत विलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत यक बारा * उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा * जे किय जग तिहुँ पगते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी * सुनि प्रभुवचन मोह मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा * पाणि कठवता भरि लै आवा ॥
अति आनन्द उमँगि अनुरागा * चरण सरोज पखारन लागा ॥
वर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं * इहि सम पुण्य पुंज कोउ नाहीं ॥
दोहा—पद पखारि जल पान करि, आपु सहित परिवार ॥
पितर पार करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लै पार ॥ १०१ ॥
उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता * सीय राम गुह लषण समेता ॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा * प्रभु सकुचे कछु यहि नाहिं दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननहारी * मणि मुँदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई * केवट चरण गहेहु अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काह न पावा * मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
अमित काल मैं कीन्ह मजूरी * आजु दीन्ह विधि सब भरि पूरी ॥

१ फूल ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अब कछु नाथ न चाहिय मोरे * दीनदयालु अनुग्रह तोरे ॥
फिरति बार जो कछु मुहिं देवा * सो प्रसाद मैं शिरधरि लेवा ॥
दोहा–बहुत कीन्ह हठ लषण प्रभुं, नाहिं कछु केवट लेय ॥
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्ति विमल[1] वर देय ॥१०२॥
तब मज्जन[2] करि रघुकुल नाथा * पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा करजोरी * मातु मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
पति देवर सँग कुशल बहोरी * आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सिय विनय प्रेमरस सानी * भइ तब विमल वारि वर वानी ॥
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही * तव प्रभाव[3] जग विदित न केही ॥
लोकप[4] होहिं विलोकत तोरे * तोहिं सेवहिं सब सिधि करजोरे॥
तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई * कृपा कीन्ह मोहिं दीन बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देव अशीशा * सफल होन हित निज वागीशा[5] ॥
दोहा–प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला आइ ॥
पूजहि सब मन कामना, सुयश रहहि जग छाइ ॥१०३॥
गंग वचन सुनि मंगलमूला * मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू * सुनत सुख मुख भा उर दाहू ॥
दीन वचन गुह कह करजोरी * विनय सुनिय रघुकुल मणि मोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ[6] दिखाई * करि दिन चारि चरण सेवकाई ॥
जेहि वन जाइ रहब रघुराई * पर्णकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मोकहँ जस देव रजाई[7] * सो करिहौं रघुवीर दुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासू * संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे * करि परितोष विदा सब कीन्हे ॥
दोहा–तब गणपति शिव सुमिर प्रभु, नाइ सुरसरिहिमाथ ॥

---

१ निर्मल । २ स्नान । ३ ऐश्वर्य । ४ लोकपाल-राजा । ५ वाणी । ६ मार्ग । ७ आज्ञा । ८ आदर-सन्मान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सखा अनुज सिय सहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ॥ १०४॥
त्यहि दिन भयउ विटप तर बासू * लषण सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रात कृत करि रघुराई * तीरथराज दीख प्रभुजाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी * माधव सरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरो भँडारू * पुण्य प्रदेश देश अति चारू ॥
क्षेत्र अगम गढ गाढ सुहावा * स्वप्नेहुँ जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा ॥
सेन सकल तीरथ वर वीरा * कलुष अनीक दलन रणधीरा ॥
संगम सिंहासन सुठि सोहा * छत्र अक्षय वट मुनि मन मोहा ॥
चमर यमुन जल गंग तरंगा * देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥
दोहा—सेवहिं सुकृती साधु शुचि, पावहिं सब मन काम ॥
वन्दी वेद पुराण गण, कहहिं विमल गुण ग्राम ॥ १०५॥
को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ * कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा * सुखसागर रघुबर सुख पावा ॥
कहिसिय अनुजहि सखहि सुनाई * श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत वन बागा * कहत महातम अति अनुरागा ॥
इहिविधि आइ विलोकेउ वेनी * सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्ह शिव सेवा * पूजि यथाविधि तीरथ देवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये * करत दण्डवत मुनि उर लाये ॥
मुनिमन मोद न कछु कहिजाई * ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई ॥
दोहा—दीन्ह अशीश मुनीश उर, अतिआनँद असजानि ॥
लोचन गोचर सुकृत फल, मनहुँ किये विधि आनि॥ १०६॥
कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा * पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके * दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके ॥

---

१ प्रयाग । २ भाट । ३ सम्पूर्ण पाप-मत्तहाथी सरीखेके नाश करनेको सिंह । ४ नेत्र । ५ सम्मुख-पलक । ६ पुण्य । ७ ब्रह्मा । ८ अमृतसरीखे मिठे ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीय लषण जन सहित सुहाये * अति रुचि राम मूल फल खाये ॥
भये विगत श्रम राम सुखारे * भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सकल तप तीरथ त्यागू * आजु सफल जप योग विरागू ॥
सफल सकल शुभसाधन साजू * राम तुमहिं अवलोकत आजू ॥
लाभ अवधि सुख अवधि नदूजी * तुम्हरे दरश आश सब पूजी ॥
अब करिकृपा देहु वर यहू * निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥
दोहा–कर्म वचन मन छांड़ि छल, जब लगि जन न तुम्हार ॥
तब लगि सुख स्वप्नेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार ॥ १०७ ॥
मुनि मुनि वचन राम सकुचाने * भाव भक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुवर मुनि सुयशसुहावा * कोटि भाँति कहि सबहिं सुनावा ॥
सोबड़ सो सब गुण गण गेहू * ज्यहि मुनीश तुम आदर देहू ॥
सुनि रघुबीर परस्पर नवहीं * वचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
यह सुधि पाइ प्रयागनिवासी * वटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
भरद्वाज आश्रम सब आये * देखन दशरथ सुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू * मुदित भये लहि लोचन लाहू ॥
देहिं अशीश परम सुख पाई * फिरे सराहत सुन्दरताई ॥
दोहा–राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात प्रयाग अन्हाइ ॥
चले सहित सिय लषण जन, मुदित मुनिहिं शिरनाइ १०८
राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं * नाथ कहहु हम केहि मगु जाहीं ॥
सुनि मुनि विहँसि रामसनकहहीं * सुगम सकलमगु तुम कहँ अहहीं ॥
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये * सुनि मन मुदित पचासक आये ॥
सबहिं राम पद प्रेम अपारा * सबहि कहहिं मगु दीख हमारा ॥
मुनि वटु चारि संग तब दीन्हे * जिन बहु जन्म सुकृत फलकीन्हे ॥
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई * प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥

१ उपाय । २ ब्रह्मचारी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग्राम निकट जब निसरहिं जाई * देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्म फल पाई * फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥
दोहा–विदा कीन्ह बहु विनय करि, फिरे पाइ मन काम ॥
उतरि नहाये यमुन जल, जो शरीर सम श्याम ॥१०९॥
सुनत तीर बासी नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी ॥
लषण राम सिय सुन्दरताई * देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥
अति लालसा सबहिं मन माहीं * नाम ग्राम पूंछत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महँ वय वृद्ध सयाने * तिन्ह करि युक्ति राम पहिचाने॥
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई * वनहिं चले पितु आयसु पाई ॥
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं * रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
त्यहि अवसर तापस यक आवा * तेज पुंज लघु वयस सुहावा ॥
कवि अलखित गति वेष विरागी * मन क्रम वचन राम अनुरागी ॥
दोहा–सजल नयन तनु पुलकि निज, इष्ट देव पहिचानि ॥
परेउ धरणि तल दंड जिमि, दशा न जाइ बखानि॥११०॥
राम सप्रेम पुलकि उर लावा * परम रंक जनु पारस पावा ॥
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ * मिलत धरे तनु कह सब कोऊ॥
बहुरि लषण पाँयन सो लागा * लीन्ह उठाइ उमँगि अनुरागा ॥
पुनि सिय चरण धूरि धरि शीशा * जननि जानि सुत देहिं अशीशा॥
कीन्ह निषाद दण्डवत तेहीं * मिले मुदित लखि राम सनेहीं ॥
पियत नयन पुट रूप पियूखा[1] * मुदित सुअशन[2] पाइ जिमि भूखा ॥
पुनि प्रभुपद सरोज शिरनावा * देखि प्रीति रघुवर मन भावा ॥
उर धरि धीर रजायसु पाई * चले मुदित मन अति हरषाई ॥
राम लषण सिय रूप निहारी * शोच सनेह विकल नर नारी ॥
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे ॥

१ अमृत । २ भोजन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथक्षेपक ॥

देखुरी किशोर दोय भूपति कुल तिलककोय मंद इन्दु लाग ए मुखारविन्द हेरे ॥ मुनि पट श्यामल शरीर नाशति भव विषमपीर कीन्हे मृदुमंद हँसोन काम कोटि चेरे ॥ कीन्हे तनु सुरति त्याग निरखत मुख सानुराग एतो वह सुरनि भाग जस खग मृग केरे ॥ लोचन युग पल बिसारि चितवत मग ग्राम नारि अतिहित जोइ जाहि ताहि कहत मंत्र टेरे ॥ प्रफुलित सोउ रहति जाय जीवन फल सहज पाय सोच सकुच भवन ढहेउ प्रेम सलिल प्रेरे ॥ भाषति भरि दृगनि वारि नीके इन धरूं सम्हारि सूरज तम सकल झारि कमल नयन फेरे ॥ इति क्षेपक ।

दोहा–तब रघुवीर अनेक विधि, सखहि सिखावन दीन्ह ॥
राम रजायसु शीश धरि, गवन भवन तिन्ह कीन्ह॥१११॥

पुनि सिय राम लषण करजोरी * यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी ॥
गवने सीय सहित दोउ भाई * रवितनया कर करत बड़ाई ॥
पंथिक अनेक मिलहिं मगुजाता * कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राज सुलक्षण अंग तुम्हारे * देखि शोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाये * ज्योतिष झूंठ हमारेहि भाये ॥
अगम पन्थ गिरि कानन भारी * तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥
करि केहरि वन जाहिं न जोई * हम सँग चलहिं जो आयसु होई ॥
जाब जहाँलगि तहँ पहुँचाई * फिरब बहोरि तुमहिं शिरनाई ॥

दोहा–इहिविधि बूझहिं प्रेमवश, पुलक गात जल नैन ॥
कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं, करि विनती मृदुवैन ॥ ११२ ॥

---

१ गृह । २ श्रीयमुनाजी । ३ बटोही अर्थात् मार्ग चलनेवाले । ४ पर्वत । ५ वन । ६ हाथी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेहि पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं * तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये * धन्य पुण्य मय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ राम चरण चालि जाहीं * तेहि समान अमरावति नाहीं ॥
पुण्यपुंज मगु निकट निवासी * तिनहिं सराहत सुरपुर बासी ॥
जेभरि नयन विलोकहिं रामहिं * सीता लषण सहित घनश्यामहिं ॥
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं * तिनहिं देव सर सरित सराहहिं ॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई * करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई ॥
परशि राम पद पद्म परागा * मानति भूरि भूमि निज भागा ॥

दोहा—छांह करहिं घन विबुध गण, बरषहिं सुमन सिहाहिँ ॥
देखन गिरि वन विहँग मृग, राम चले मग जाहिँ ॥११३॥

सीता लषण सहित रघुराई * गाँव निकट जब निसरहिं जाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी * चलहिं तुरत गृह काज विसारी ॥
राम लषण सिय रूप निहारी * पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
सजल नयन अति पुलक शरीरा * सब भये मग्न देखि दोउ वीरा ॥
वरणि नजाय दशा तिन्ह केरी * लही रंक जनु सुरमणि ढेरी ॥
एकहिं एक बोलि सिख देहीं * लोचन लाहु लेहु क्षण एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे * चितवत चलेजात सँगलागे ॥
एक नयन मग छवि उर आनी * होहिं शिथिल तनु मानस वानी ॥

दोहा—एक देखि वट छाँह भलि, डासि मृदुल[2] तृण पात ॥
कहहिं गँवाइय क्षणक श्रम, गमनब अबहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलश भरि आनहिं पानी * अँचइय नाथ कहहिं मृदुवानी ॥
सुनि प्रिय वचन प्रीति असि देखी * राम कृपालु सुशील विशेषी ॥
जानी सीय श्रमित मन माहीं * घरिक विलम्ब कीन्ह वट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं शोभा * रूप अनूप[4] देखि मन लोभा ॥

---

१ मेघ । २ कोमल । ३ वरगद । ४ जिसकी उपमा देने योग्य दूसरा नहो ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा * रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा ॥
तरुण तमाल वरण तनु सोहा * देखत काम कोटि मन मोहा ॥
दामिनि वरण लषण सुठिनीके * नख शिख सुभग भावते जीके ॥
मुनिपट कटिन्ह कसे तूणीरा * सोहत कर कमलन्ह धनु तीरा ॥

दोहा—जटा मुकुट शीशन सुभग, उर भुज नयन विशाल ॥
शरदपर्व विधु वदन वर, लसत स्वेदकण जाल ॥ ११५ ॥

वरणि नजाइ मनोहर जोरी * शोभा अमित मोरि मति थोरी ॥
राम लषण सिय सुन्दरताई * सब चितवहिं मन बुधि चितलाई ॥
थके नारि नर प्रेम पियासे * मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं * पूंछत अति सनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाये * कहहिं वचन मृदु सरल सुहाये ॥
राजकुमारि विनय हम करहीं * तिय स्वभाव कछु पूंछत डरहीं ॥
स्वामिनि अविनय क्षमव हमारी * विलग न मानव जानि गँवारी ॥
राजकुँवर दोउ सहज सलोने * इनते लहि द्युति मरकत सोने ॥

दोहा—श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुखमा ऐन ॥
शरद शर्वरी नाथ मुख, शरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

कोटि मनोज लजावनिहारे * सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल वानी * सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी ॥
तिनहिं विलोकि विलोकेउ धरणी * दुहुँ सकोच सकुचाति वर वरणी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी * बोली मधुर वचन पिकवयनी ॥
सहज स्वभाव सुभग तनु गोरे * नाम लषण लघु देवर मोरे ॥
श्याम वरण विशाल भुजनैना * अति सुंदर बोलनि मृदुवैना ॥
बहुरि वदन विधु अंचल ढांकी * पिय तन चितै दृष्टि करि वांकी ॥

---

१ भोजपत्र । २ शरदऋतुकी पूर्णमासीकी रात्रिका चन्द्रमा ऐसा निर्मल मुख । ३ शोभित । ४ पसीनेके कण । ५ बहुत । ६ मधुर-पवित्र । ७ देखि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खंजनमंजु तिरीछे नयननि *निजपति कह्यो तिनहिं सिय सयननि॥
भई मुदित सब ग्राम बधूटी* रंकन्ह रतन राशि जनु लूटी ॥
दोहा-अति सप्रेम सिय पाँय परि, बहु विधि देहिं अशीश ॥
सदा सुहागिनि रहहु तुम, जबलगि महि अहि शीश॥११७॥
पार्वती सम पति प्रिय होहू * देवि न हम पर छांडब छोहू ॥
पुनि पुनि विनय करहिं करजोरी * जो यहि मारग फिरिय बहोरी ॥
दरशन देव जानि निज दासी * लखी सीय सब प्रेम पियासी ॥
मधुर वचन कहिकहि परितोषी * जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लषण रघुवर रुख जानी * पूंछेउ मगु लोगन मृदु वानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी * पुलकित अंग विलोचन वारी ॥
मिटा मोद[3] मन भयउ मलीने *विधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने॥
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा *शोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥
दोहा-लषण जानकी सहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ ॥
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिये लाइ मन साथ ॥ ११८ ॥

अथ क्षेपक- ॥ भैरवी ॥

पथिक मोहनियां डारे जात ॥ विहँसत मंद विलोकत जेहितनु प्राणन सहित बिकात ॥ तजत निमेष विशेष नयन युग दरशत श्यामल गात ॥ अधरन श्रवत मधुर वचनामृत क्यों ए श्रवण अघात ॥ धरणी रहत सकुच उर पग पग परशि चरण जलजात ॥ इनहिं रह्यो वनवास योग सखि विधितें कहा बसात ॥ मनसहु अगम कि मिलहिं बहुरि यह निमिष भेंटवे नात ॥ ए जड प्राण अपान विगत सँग अजहुँ न लागे जात ॥ करतल खोइ सहज चिन्तामणि अन्त रहहिं पछितात ॥ बहुरि कहा करणी फल भोगत सूरज निज जल जात ॥ इति क्षेपक ॥

१ ग्रामस्त्री । २ नेत्र । ३ आनंद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिरत नारि नर अति पछिताहीं * दैवहि दोष देहिं मन माहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं * विधि करतब सब उलटे अहहीं ॥
निपट निरंकुश निठुर निशंकू * ज्यहि शशि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥
रूख कल्पतरु सागर खारा * तेहि पठये वन राजकुमारा ॥
जो पै इनहिं दीन्ह वनवासू * कीन्ह वादि विधि भोग विलासू ॥
ये विचरहिं मगु विनु पदत्रांना * रचेउ वादि विधि वाहन नाना ॥
ये महि परहिं डासि कुश पाता * सुभग सेज कत कीन्ह विधाता ॥
तरुतर वास इनहिं विधि दीन्हा * धवल धाम रचि कत श्रम कीन्हा ॥

दोहा—जो ये मुनिपट धर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार ॥
विविध भाँति भूषण वसन, वादि किये करतार ॥ ११९ ॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं * वादि सुधादि अशन जग माहीं ॥
एक कहहिं यह सहज सुहाये * आपु प्रकट भये विधि न बनाये ॥
जहँ लगि वेद कहैं विधि करणी * श्रवण नयन मन गोचर वरणी ॥
देखउ खोजि भुवन दशचारी * कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा * पटुतर योग बनावन लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये * तेहि इरषा वन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुत नजानहिं * आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे * जे देखत देखिहिं जिन्ह देखे ॥

दोहा—इहि विधि कहि कहि वचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर ॥
किमि चलिहैं मारग अगम, सुठि सुकुमार शरीर ॥ १२० ॥

नारि सनेह विकल सब होहीं * चकई साँझ समय जिमि सोहीं ॥
मृदु पद कमल कठिन करजग्नी * गहबरि हृदय कहहिं मृदुवानी ॥
परसन मृदुल चरण अरुणारे * सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जो जगदीश इनहिं वनदीन्हा * कसन सुमन मय मारग कीन्हा ॥

१ स्वतंत्र । २ सरोग । ३ जुती । ४ भोजन । ५ कान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो माँगे पाइय विधि पाहीं * राखिय सखि इन्ह आँखिन्ह माहीं॥
जे नर नारि न अवसर आये * ते सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि स्वरूप पूंछहिं अकुलाई * अब लगि गये कहां दोउ भाई ॥
समरथ धाइ विलोकहिं जाई * प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई ॥
दोहा—अबला बालक वृद्धजन, करमींजहिं पछिताहिं ॥
होहिं प्रेम वश लोग इमि, राम जहांजहँ जाहिं ॥ १२१ ॥
गाँव गाँव अस होहि अनन्दा * देखि भानुकुल कैरव चन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं * ते नृप रानिहि दोष लगावहिं ॥
एक कहहिं अति भल नरनाहू * दीन्ह हमहिं जिन्ह लोचन लाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई * बातैं सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये * धन्य सो नगर जहांते आये ॥
धन्य सो शैल देश वन गाऊं * जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं ॥
सुख पायो विरंचि रचि तेही * ये जिन्हके सब भांति सनेही ॥
राम लषण सिय कथा सुहाई * रही सकल मग कानन छाई ॥
दोहा—इहिविधि रघुकुल कमल रवि, मगलोगन्ह सुखदेत ॥
जाहिं चले देखत विपिन, सिय सौमित्र समेत ॥ १२२ ॥
आगे राम लषण पुनि पाछे * तापस वेष विराजत काछे ॥
उभय मध्य सिय शोभति कैसी * ब्रह्मजीव बिच माया जैसी ॥
बहुरि कहौं छवि जस मन बसई * जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही * जनु बुध विधुबिच रोहिणिसोही ॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता * धरहिं चरणमग चलहिं सभीता ॥
सीय राम पद अंक बराये * लषण चलहिं मग दाहिन बाँये ॥
राम लषण सिय प्रीति सुहाई * वचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छबि होही * लिये चोर चित राम बटोही ॥

१ स्त्री। २ कुमुदिनी। ३ सीधी। ४ पर्वत। ५ ब्रह्मा। ६ लक्ष्मणजी। ७ वसन्त। ८ कामदेव। ९ वचनोंसेपरे।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दोहा–जिन्ह जिन्ह देखे पथिकप्रिय, सीयसहित दोउ भाइ ॥
भव मग अगम अनन्द तेहि, बिनु श्रम रहे सिराइ॥१२३॥
अजहुँ जासु उर स्वप्नेहुँ काऊ * बसहिं राम सिय लषण बटाऊ ॥
राम धाम पथ जाइहि सोई * जो पदपाव कबहिं मुनि कोई ॥
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी * देखि निकट वट शीतल पानी ॥
तहँबसि कन्द मूल फल खाई * प्रात अन्हाइ चले रघुराई ॥
देखत वन सर शैल सुहाये * वाल्मीकि आश्रम प्रभुआये ॥
राम देखि मुनि वास सुहावन * सुन्दर गिरि कानन जल पावन ॥
सरनै सरोज विटप वन फूले * गुंजत मंजु मधुपरस भूले ॥
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं *रहित वैर प्रमुदित मन चरहीं ॥
दोहा–शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हर्षे राजिव नैन ॥
सुनि रघुबर आगमन मुनि, आगे आये लैन ॥ १२४ ॥
मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा * आशिर्वाद विप्र वर दीन्हा ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने * करि सन्मान आश्रमहिं आने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये * मुनिवर अतिथि प्राण प्रिय पाये ॥
कन्द मूल फल मधुर मँगाये * सिय सौमित्र राम फल खाये ॥
वाल्मीकि मन आनँद भारी * मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई * बोले वचन श्रवण सुखदाई ॥
तुम त्रिकालदरशी मुनि नाथा * विश्वबदरजिमि तुम्हरे हाथा ॥
असकहि सब प्रभु कथा वखानी * जेहि जेहि भाँति दीन्ह वन रानी ॥
दोहा–तात वचन पुनि मातु हित, भाइ भरत अस राउ ॥
मोकहँ दरश तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्य प्रभाउ॥ २२५॥
देखि पायँ मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उद्वेगें न पावहि कोई ॥

१ तालाबोंमेंकमल । २वनमें वृक्ष फूले हुये हैं । ३भ्रमर । ४ संसारवैर । ५क्लेश

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनि तापस जिनते दुख लहहीं * ते नरेश विनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल विप्र परितोषू * दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
अस जिय जानि कहिय सो ठाऊं * सिय सौमित्र सहित तहँ जाऊं ॥
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृणशाला * वास करौं कछु काल कृपाला ॥
सहज सरल सुनि रघुवर वानी * साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ॥
कसन कहहु अस रघुकुल केतू * तुम पालक सन्तत श्रुति सेतू ॥
छं०—श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया[2] जानकी ॥
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी ॥
जो सहस शीश अहीश महिधर लषण सचराचर धनी ॥
सुर काज हित नरराजतनुधरि चल्यहुमर्दन खल अनी[3]॥५॥
सो०—राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर ॥
अविगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगमकह ॥ ५ ॥
जग पेखन तुम देखन हारे * विधि हरि शम्भु नचावन हारे ॥
तेउ नहिं जानहिं मर्म्म तुम्हारा * और तुमहिं को जाननहारा ॥
सो जानै जेहि देहु जनाई * जानत तुमहिं तुमहि ह्वैजाई ॥
तुम्हरी कृपा तुमहि रघुनन्दन * जानत भक्त भक्त उर चन्दन ॥
चिदानन्द मय देह तुम्हारी * विगत विकार जात अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु सन्त सुर काजा * कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे * जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुम जो कहहु करहु सब सांचा * जस काछिय तस चाहिय नाचा॥
दोहा—पूँछचउ मोहिं कि रहहुँ कहँ, मैं कहते सकुचाउँ ॥
जहँ न होउ तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ ॥ १२६ ॥
सुनि मुनि वचन प्रेम रस साने * सकुचि राम मन महँ मुसुकाने॥

१ वेदकी मर्यादाके पालन कर्ता। २ आदिशक्ति। ३ स्वामी किन्तु सैन्य।
४ किसीके जाननेकी गति नहीं है।

In Public Domain, Ramkumar Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाल्मीकि हँसि कहहिं बहोरी * वाणी मधुर अमिय रस बोरी।
सुनहु राम अब कहौं निकेता * बसहु जहाँ सिय लषण समेता।
जिनके श्रवण समुद्र समाना * कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना।
भरहिं निरन्तर होहिं नपूरे * तिनके हिये सदन तव रूरे।
लोचन चातक जिन करि राखे * रहहिं दरश जलधर अभिलाषे।
निदरहिं सिंधु सरित सरवारी * रूप विन्दु लहि होहिं सुखारी।
तिनके हृदय सदन सुखदायक * बसहु लषण सिय सह रघुनायक।

दोहा–यश तुम्हार मानस विमल, हंसनि जीहा जासु ॥
मुक्ताहल गुण गण चुगहिं, बसहु राम हिय तासु ॥१२७॥

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा * सादर जासु लहै नित नाशा।
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं * प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं।
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी * प्रीति सहित करि विनय विशेखी।
करैं नित करहिं राम पद पूजा * राम भरोस हृदय नहिं दूजा।
चरण राम तीरथ चलि जाहीं * राम बसहु तिनके मन माहीं।
मन्त्रराज नित जपहिं तुम्हारा * पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा।
तपण होम करहिं विधिनाना * विप्र जेवाइ देहिं बहुदाना।
तुमते अधिक गुरुहि जिय जानी * सकल भाव सेवहिं सनमानी।

दोहा–सब कर मांगहिं एक फल, रामचरण रति होउ ॥
तिनके मन मन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ ॥ १२८॥

काम क्रोध मद मान न मोहा * लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा।
जिनके कपट दम्भ नहिं माया * तिनके हृदय बसहु रघुराया।
सबके प्रिय सबके हितकारी * दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी।
कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी * जागत सोवत शरण तुम्हारी।

---

१ स्थान। २ अनेक नदियां। ३ सुन्दर। ४ मेघ। ५ देवता। ६ ब्राह्मण।
७ हाथ। ८ ओम्। ९ प्रीति।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमहि छांड़ि गति दूसरि नाहीं * राम बसहु तिनके उर माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी * धन पराय विषते विष भारी ॥
जे हर्षहिं पर सम्पति देखी * दुखित होहिं पर विपति विशेषी ॥
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे * तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे ॥

दोहा—स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके सब तुम तात ॥
तिनके मन मन्दिर बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥१२९॥

अवगुण तजि सबके गुण गहहीं * विप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुण जिनकी जगलीका * घर तुम्हार तिनके मन नीका ॥
गुणतुम्हार समुझहिं निजदोसू * जेहिं सब भाँति तुम्हार भरोसू ॥
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही * तेहि उर बसहु सहित वैदेही[2] ॥
जाति पाँति धन धर्म्म बड़ाई * प्रिय परिवार सदन समुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लव लाई * ताके हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना * जहँ तहँ दीख धरे धनु बाना ॥
मन क्रम वचन जो राउर चेरा * राम करहु ताके उर डेरा ॥

दोहा—जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेह ॥
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥ १३० ॥

इहिविधि मुनि वर ठाम दिखाये * वचन सप्रेम राम मन भाये ॥
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक * आश्रम कहौं समय सुखदायक॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन[3] चारू * करि केहरि मृग विहँग विहारू॥
नदी पुनीत पुराण प्रसंगा * अत्रितीय निज तप बल आनी॥
सुरसरि धार नाम मन्दाकिनि * जो सब पातक पोतक डाकिनी ॥
अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं * करहिं योग जप तप तनु कसहीं ॥
चलहु सफल श्रम सब कर करहू * राम देहु गौरव[4] गिरिवरहू ॥

---

१ माताके तुल्य । २ जानकीजी । ३ बच्चोंको । ४ मान्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–चित्रकूट महिमा अमित, कही महा मुनि गाय ॥
आइ अन्हाने सरित वर, सीय सहित दोउ भाय ॥

रघुवर कहेउ लषण भल घाटू * करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ।
लषण दीख पयँ उतर करारा * चहुँदिशि फिरयोधनुष जिमिनारा ।
नदी पनच[2] शर[3] शम दम दाना * सकल कलुष[5] कलिसाउज नाना ।
चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चूक न घात मारु मुठ भेरी ।
असकहि लषण ठाँव दिखरावा * थलविलोकि रघुपति सुखपावा ।
रमेउ राम मन देवन जाना * चले सहित सुरपति परधाना ।
कोल्ह किरात वेष धरि आये * रच्यो पर्ण तृण सदन सुहाये ।
वरणि न जाइँ मंजु दुइ शाला * एक ललित लघु एक विशाला ।

दोहा–लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्ण निकेत ॥
सोह मदन मुनि वेष जनु, रति ऋतुराज समेत ॥ १३२ ॥

अमर नाग किन्नर दिगपाला * चित्रकूट आये तेहि काला ।
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू * मुदित देव लहि लोचन लाहू ।
बरषि सुमन कह देव समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू ।
करि विनती दुख दुसह सुनाये * हरषित निज निज गेह सिधाये ।
चित्रकूट रघुनन्दन छाये * समाचार सुनि मुनि मुनि आये ।
आवत देखि मुदित मुनि वृन्दा * कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा ।
मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं * सफल होन हित आशिष देहीं ।
सिय सौमित्र राम छबि देखहिं * साधन सकल सफल करि लेखहिं ।

दोहा–यथा योग्य सन्मान प्रभु, [illegible] न किय मुनिवृन्द ॥
करहिं योग जप यज्ञ तप, निज आश्रम स्वच्छन्द ॥ १३३ ॥

यह सुधि कोल्ह किरातन पाई * हरषे जनु नव निधि घर आई ।
कन्द मूल फल भरि भरि दोना * चले रंक जनु लूटन सोना ।

१ समान । २ पयास्वीनानिंदी । ३ चिल्ला । ५ बाण । ५ पाप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता * और तिनहिं पूछहिं मगु जाता ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई * आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे * प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े * पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने * कहि प्रिय वचन सकल सनमाने॥
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी * वचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥

दोहा–अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाँय ॥
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय ॥ १३४ ॥

धन्य भूमि वन पन्थ पहारा * जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा ॥
धन्य विहँग मृग कानन चारी * सफल जन्म भये तुमहिं निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा * देखि नयन भरि दरश तुम्हारा ॥
कीन्ह वास भल ठाँव विचारी * इहां सकल ऋतु रहब सुखारी ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई * करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
वन बेहड गिरि कन्दर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब * सर निर्झर सब ठाँव दिखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता * नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दोहा–वेद वचन मुनि मन अगम, ते प्रभु करुणाऐन ॥
वचन किरातनके सुनत, जिमि पितु बालक बैन ॥ १३५ ॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा * जानि लेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल वनचर परितोषे * कहि मृदुवचन प्रेम परिपोषे ॥
विदा किये शिरनाय सिधाये * प्रभु गुण कहत सुनत घर आये ॥
इहि विधि सीय सहित दोउ भाई * बसहिं विपिन सुर मुनि सुखदाई॥
जब ते आइ रहे रघुनायक * तबते भो वन मंगल दायक ॥
फूलहिं फलहिं विटप विधि नाना * मंजु ललित वर वेलि वितानों ॥

१ हाथी । २ सिंह । ३ सर्प । ४ चंदोये ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरतरु सरिस स्वभाव सुहाये * मनहुँ विबुध वन परिहरि आये ॥
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी * त्रिविध बयारि बहै सुख देनी ॥
दोहा–नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर ॥
भाँति भाँति बोलहिं विहँग, श्रवण सुखद चितचोर ॥ १३६ ॥
करि केहरि कपि कोल कुरंगा * विगत वैर विहरहिं यक संगा ॥
फिरत अहेर राम छबि देखी * होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी ॥
विबुध विपिन जहँलग जग माहीं * देखि राम वन सकल सिहाहीं ॥
सुरसरि सरस्वति दिनकरकन्या * मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सरि सिन्धु नदी नद नाना * मन्दाकिनिकर करहिं बखाना ॥
उदय अस्त गिरिवर कैलासू * मन्दर मेरु सकल सुर वासू ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट यश गावहिं तेते ॥
विन्ध्य मुदित मन सुख न समाई * विनु श्रम विपुल बड़ाई पाई ॥
दोहा–चित्रकूटके विहँग मृग, बेलि विटप तृण जाति ॥
पुण्य पुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति ॥ १३७ ॥
नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी * पाइ जन्म फल होहिं विशोकी ॥
परशि चरणरज अचर सुखारी * भये परमपदके अधिकारी ॥
सो वन शैल सुभाय सुहावन * मंगलमय अतिपावन पावन ॥
महिमा कहौं कवन विधि तासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
पयपयोधि तजि अवध विहाई * जहँ सिय राम लषण रहे आई ॥
कहि न सकहिं सुखभा जस कानन * जो शतसेस होहिं सहसानन ॥
सो मैं वरणि सकौं विधि केहीं * डाँबर कमठ कि मन्दर लेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्म मन वानी * जाइ न शील सनेह वखानी ॥
दोहा–क्षण क्षण सिय लखि राम पद, जानि आपु पर नेह ॥

१ कोकिल । २ सुअर । ३ हरिण । ४ नर्मदा । ५ एकलक्ष । ६ शेषनाग ।
७ गड्ढा । ८ कछुआ । ९ मन्दराचल-पर्वत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करत लषण स्वप्ने न चित, बन्धु मातु पितु गेह ॥ १३८॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी * पुर परिजन गृह सुरति विसारी ॥
क्षण क्षण पियविधु[1] वदन निहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥
नाह नेह नित बढ़त विलोकी * हर्षित रहति दिवस जिमि कोकी ॥
सिय मन रामचरण अनुरागा * अवध सहस सम वन प्रियलागा ॥
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा * प्रिय परिवार कुरंग[2] विहंगा[3] ॥
सासु श्वशुर सम मुनि तिय मुनिवर * अशन अमिय सम कन्द मूलफर ॥
नाथ साथ साथरी सुहाई * मयन शयन शत सम सुखदाई ॥
लोकप[4] होहिं विलोकत जासू * तेहि किमिमोहै विषय विलासू ॥
दोहा-सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृणसम विषय विलासु ॥
राम प्रिया जगजननि सिय, कछु न आचरज तासु ॥ १३९॥
सीय लषण जेहि विधि सुख लहहीं * सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं ॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी * सुनहिं लषण सिय अति सुख मानी ॥
जब जब राम अवध सुधि करहीं * तब तब वारि विलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत सनेह शील सेवकाई ॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी * धीरज धरहिं कुसमय विचारी ॥
लखि सिय लषण विकल ह्वै जाहीं * जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं ॥
प्रिया बन्धु गति लखि रघुनन्दन * धीर कृपालु भक्तउर चन्दन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनि सुख लहहिं लषण अरुसीता ॥
दोहा-राम लषण सीता सहित, सोहत पर्ण निकेत ॥
जिमि बसि बासव[5] अमरपुर, शची जयन्त समेत ॥ १४०॥
जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहि वैसे * पलकु विलोचन गोलक जैसे ॥
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहि * जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहि ॥

---

१ चंद्र । २ मृग । ३ पक्षी । ४ आठौ दिक्पाल-वरुण, वायु, कुबेर, महादेव, इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, । ५ इन्द्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

इहि विधि प्रभु वन बसहिं सुखारी * खग मृग सुर तापस हितकारी।
कहयउँ राम वन गवन सुहावा * सुनहु सुमन्त अवध जिमि आवा।
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई * सचिव सहित रथ देखेउ आई।
मंत्री विकल विलोकि निषादू * कहि न सकहिं जस भयउ विषादू।
राम राम सिय लषण पुकारी * पय्यउ धरणि तल व्याकुल भारी।
देखि दक्षिण दिशि हयहिहिनाहीं * जिमि बिनु पंख विहँगे अकुलाहीं।

दोहा-नहिं तृण चराहिं न पियहिं जल, मोचत लोचनवारि ॥
व्याकुल भयउ निषादपति, रघुवर वाजि निहारि ॥१४१॥

धरि धीरज तब कहहि निषादू * अब सुमन्त परिहरहु विषादू।
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता * धरहु धीर लखि वाम विधाता।
विविध कथा कहि कहि मृदुवानी * रथ बैठारेउ बरबस आनी।
शोक शिथिलरथसकहि न हाँकी * रघुवर विरह पीर उर बाँकी।
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे * वन मृग मनहु आनि रथ जोरे।
अटकि परहिं फिरि चितवहिं पीछे * राम वियोग विकल दुखतीछे।
जो कह राम लषण वैदेही * हिकरि २ हय हेराहिं तेही।
वाजि विरह गति किमि कहि जाती * विनुमणि फणी विकल जेहिभाँती।

दोहा-भये निषाद विषाद वश, देखत सचिव तुरंग ॥
बोलि सुसेवक चारितब, दिये सारथी संग ॥ १४२ ॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई * विरह विषाद वरणि नाहिं जाई।
चले अवध लै रथहि निषादा * होत क्षणहि क्षण मगन विषादा।
शोच सुमन्त विकल दुख दीना * धिक् जीवन रघुवीर विहीना।
रहहि न अन्तहु अधम शरीरू * यश न लहेउ विछुरत रघुवीरू।
भये अयश अघ भाजन प्राना * कौनं हेतु नहिं करत पयाना।
अहह मन्दमति अवसर चूका * अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका।
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई * मनहुँ कृपण धन राशि गँवाई।

१ अश्व। २ पक्षी। ३ जल।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विरद बाँधि वर वीर कहाई * चले समर जनु सुभट पराई ॥

दोहा–विप्र विवेकी वेद विद, सम्मत साधु सुजाति ॥
जिमि धोखे मदपान करि, सचिव शोच त्यहि भाँति ॥१४३

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी * पतिदेवता कर्म्म मन वानी ॥
रहैं कर्म्म वश परिहरि नाहू * सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू ॥
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी * सुनै न श्रवण विकल मति भोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी * जिय न जाइ उर अवध कपाटी॥
विवरण भयउ नजाइ निहारी * मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि विपुल मन व्यापी * यमपुरपन्थ शोच जिमि पापी ॥
वचन न आव हृदय पछिताई * अवध काह मैं कहिहौं जाई ॥
राम रहित रथ देखिहि जोई * सकुचिहि मोहिं विलोकत सोई ॥

दोहा–धाइ पूंछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नर नारि ॥
उतर देब मैं सबहि तब, हृदय वज्र बैठारि ॥ १४४ ॥

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता * कहब काह मैं तिनहिं विधाता॥
पुछिहहिं जबहिं लषण महतारी * कहिहौं कौन सँदेश सुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई * सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥
पूछत उतर देब मैं तेही * गे वन राम लषण वैदेही ॥
जेइ पूंछिहि तेहि उत्तर देबा * जाइ अवध अब यह सुख लेबा ॥
पूंछहिं जबहिं राउ दुख दीना * जीवन जासु राम आधीना ॥
देहौं उतर कवन मुँह लाई * आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई ॥
सुनत लषण सिय राम सँदेशू * तृण इव तनु परिहरब नरेशू ॥

दोहा–हृदय न विदरत पंक जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर ॥
जानत हौं मोहिं दीन्ह विधि, यम यातना शरीर ॥१४५ ॥

इहिविधि करत पन्थ पछितावा * तमसा तीर तुरत रथ आवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिदा किये करि विनय निषादू * फिरे पाँय परि विकल विषादू ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारोसि गुरु ब्राह्मण गाई ॥
बैठि विटप तर दिवस गँवावा * साँझ समय तेइँ अवसर पावा ॥
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे * पैठु भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये * भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथपहिंचानि विकल लखि घोरे * गरहिं गात जिमि आतप बोरे ॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसे * निघटत नीर[2] मीन गण जैसे ॥

दोहा—सचिव आगमन सुनत सब, विकलभईं रनिवास ॥
भवन भयंकर लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवास ॥ १४६ ॥

अति आरत सब पूछहिं रानी * उतर न आव विकल भइ बानी ॥
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा * कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई * कौशल्या गृह गईं लिवाई ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा * अमिय रहित जनुचन्द्र विराजा ॥
अशन न शयन विभूषण हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसास शोच यहि भांती * सुरपुर ते जनु खस्यो*ययाती ॥
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती * जनु जरि पंख परेउ सम्पाती ॥
को कहि सकै भूप विकलाई * रघुबर विरह अधिक अधिकाई ॥

* ययातिराजा यज्ञादि कर्मका आचरण करके सदेह इन्द्रपदकी प्रार्थना क इंद्रलोकको गये तब इंद्र आगेसे आय इनका सत्कारकर लेजाय सिंहासनपर बैठाय छलसहित बहुत बड़ाईकर इनसे पूछाकि राजा कहो तुमने कैसे कैसे क किये हैं कि जिनके प्रतापसे मेरे पदको प्राप्त हुए तब राजाने अपने पुण्यको बहुत बड़ाईके साथ इंद्रको सुनाया और ज्यों ज्यों सुनातेथे त्यों त्यों पुण्य क्षीण होता था जब कहते २ समस्त पुण्यक्षीण होगया तब इन्द्रकी आज्ञासे देवतोंने ययातिको स्वर्गसे ढकेलदिया.

१ घाम, पाला। २ पानी। ३ घर। ४ दुःखित। ५ सुधा। ६ भोजन। ७ नीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम राम कहि राम सनेही * पुनि कह राम लषण वैदेही ॥
दोहा–देखि सचिव जयजीव कहि, कीन्हेसि दण्ड प्रणाम ॥
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहु सुमंत कहँ राम ॥ १४७॥
भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई * बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी * पूंछत राउ नयन भरि वारी ॥
रामकुशल कहु सखा सनेही * कहँ रघुनाथ लषण वैदेही[1] ॥
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये * सुनत सचिव लोचन जल छाये ॥
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू * कहु सिय राम लषण संदेशू ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ ॥
राज्य सुनाइ दीन वनवासू * सुनि मन भयउ न हर्ष हेरासू[2] ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना * को पापी जग मोहिं समाना ॥
दोहा–सखा राम सिय लषण जहँ, तहाँ मोहिं पहुँचाउ ॥
नाहिंत चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतभाउ ॥ १४८ ॥
पुनि[3] पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ * प्रीतिमें[4] सुवन सँदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ * राम लषण सिय वेगि दिखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कहि मृदुवानी * महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥
वीर सुधीर धुरन्धर देवा * साधु समाज सदा तुम सेवा ॥
जन्म मरण सब दुख सुख भोगा * हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा ॥
काल कर्म्म वश होहिं गुसाईं * बर वश राति दिवस की नाईं ॥
सुख हर्षहिं जड़ दुख विलखाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं ॥
धीरज धरहु विवेक विचारी * छांड़िय शोच सकल हितकारी ॥
दोहा–प्रथम बास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर ॥
न्हाय रहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर ॥१४९॥
केवट कीन बहुत सेवकाई * सो यामिनि शृंगवेर गँवाई ॥

---

१ जानकीजी । २ शोच । ३ बार बार । ४ श्रीरामचन्द्र-लक्ष्मण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होत प्रात वटक्षीर मँगावा * जटा मुकुट निज शीशबनावा ॥
राम सखा तब नाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई * आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
विकल विलोकि मोहिं रघुवीरा * बोले मधुर वचन धरि धीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ * वार वार पदपंकज गहेऊ ॥
करब पाँय परि विनय बहोरी * तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
वन मग मंगल कुशल हमारे * कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥

हरिगीतिकाछंद ॥

तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ॥
प्रतिपालि आयसु कुशल देख न पाँय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोष परि परि पायँ करि विनती घनी ॥
तुलसी करेहु सोइ यत्न जेहि विधि कुशल रह कोशलधनी ॥
सोरठा—गुरु सन कहब सँदेश, बार बार पद पद्म गहि ॥
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति ॥ ६ ॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनावहु विनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जाते रह नरनाह सुखारी ॥
कहब सँदेश भरतके आये * नीति न तजब राज्य पद पाये ॥
पालहु प्रजहि कर्म मन वानी * सेयहु मातु सकल समजानी ॥
और निबाहब भायप भाई * करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ * शोच मोर जेहि करहिं न काऊ ॥
लषण कहेउ कछु वचन कठोरा * वरजि राम पुनि मोहिं निहोरा ॥
वार वार निज शपथ दिवाई * कहब न तात लषण लरिकाई ॥
दो०—कहि प्रणाम कछु कहन लिय, सिय भइ शिथिल सनेह ॥
थकित वचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ॥ १५० ॥

१ बरगदकादूध । २ निषादपति गुह । ३ आज्ञा । ४चरणकमल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहि अवसर रघुवर रुख पाई * केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुल तिलक चले इहि भांती* देखेउँ ठाढ़ कुलिश धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू * जियत फिरेउँ लै राम सँदेशू ॥
अस कहि सचिव वचन रहिगयऊ*हानि गलानि शोच वश भयऊ ॥
सुनत सुमंत वचन नरनाहू * परेउ धरणि उर दारुण दाहू ॥
तलफत विषम मोह मन मापा* मीजा मनहुँ मीन[1] कहँ व्यापा ॥
करि विलाप सब रोवहिं रानी * महा विपति किमि जाइ वखानी ॥
सुनि विलाप दुखहू दुखलागा * धीरज हू कर धीरज भागा ॥

दोहा–भयहु कुलाहल अवध अति, सुनि नृप राउर शोर ॥
विपुल विहँग[3] वन परचउ निशि, मानहुँ कुलिश[4] कठोर १५१

प्राण कण्ठ गत भयउ भुआलू * मणि विहीन जिमि व्याकुल व्यालू ॥
इन्द्रिय सकल विकल भइँभारी* जनु सर सरसिजवन[6] विनु वारी ॥
कौशल्या नृप दीख मलाना * रविकुल रवि अथये जिय जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी * बोली वचन समय अनुहारी ॥
नाथ समुझि मन करिय विचारू* राम वियोग पयोधि[7] अपारू ॥
कर्णधार तुम अवधि[8] जहाजू * चढ़ेउ सकल प्रिय बनिक समाजू ॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू * नाहिं त बूड़हि सब परिवारू ॥
जोजिय धरिय विनय पिय मोरी* राम लषण सिय मिलब बहोरी ॥

दोहा–प्रिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आँखि उघारि ॥
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत शीतल वारि ॥ १५२ ॥

धरि धीरज उठि बैठु भुआलू * कहु सुमन्त कहँ राम कृपालू ॥
कहाँ लषण कहँ राम सनेही * कहँ प्रिय पुत्र बधू वैदेही ॥
विलपत राउ विकल बहु भाँती * भइ युग सरिस सिराति न राती ॥

---

१ वर्षाके पानीका फेना । २ मछली । ३ पक्षी । ४ वज्र । ५ सर्प । ६ कमल । ७ समुद्र । ८ मर्य्यादा चौदा वर्षकी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तापस अन्ध शाप सुधि आई * कौशल्यहि सब कथा सुनाई ॥

अथ क्षेपक ॥

एक समय सुन प्रिये सयानी * मृगया की मेरे मन आनी ॥
सब मृगया कर साज सजाई * गयउँ वनाहिं सँग सेन सुहाई ॥
रैनि समय वेतस वन तीरा * बैठे सरवर तट मतिधीरा ॥
ताही समय लिये घट कर में * शरवन आयो जल हित सरमें ॥
तूंबा जल में जबहि डुबायो * भयो शब्द मेरे मन आयो ॥
जान्यो मृग तब धनुष सँभारा * लक्ष्य वेध कर तेहि उर मारा ॥
लागेउ हिये शब्द हा कीन्हो * यह मानुष मैंने तब चीन्हो ॥
गयउ निकट तब लख दुख पायो * शरवन मोसे वचन सुनायो ॥
शोच करहु मात नृपति हमारी * जो मैं कहहुँ करहु यहि वारी ॥
मैं शरवन सेवहुँ पितु माता * नयन विहीन दोउ सुखदाता ॥
तिन्हैं तृषाने आन सतायो * लेन हेत जल को हों आयो ॥

दोहा—सो तुम से अज्ञान से, नृप मोहिं मारेहु बान ॥
सो खैंचहु अब देह से, निकसन चाहत प्रान ॥ १५३ ॥

अरु तुम मन शंका मत मानो * ब्राह्मण वंश नहीं मैं जानो ॥
पर यक बात हिये तुम लावहु * माता पिता निकट चलि जावहु ॥
तिनको हित सों नीर पियाई * पाछे कहियो सब समझाई ॥
करहिं न शोच करहु उपदेशा * सत्य सन्ध रघुवंश नरेशा ॥
अब तुम दीजै बाण निकारी * सुन दशरथ दुःखित भये भारी ॥
हिय से जबहि निकारो बाना * ओं ओं कह तब छांडेहु प्राना ॥
नृप दशरथ घट लियो उठाई * तिनके मात पिता ढिग जाई ॥
प्यावन लगे नीर विनु वाणी * तब बोले दम्पति दुख मानी ॥

दोहा—पुत्र न बोलत आज तुम, हमसे सुन्दर वैन ॥
कारण कौन सो कहहु तुम, जा सों हो जिय चैन ॥ १५४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized By Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विन बोले हम पियहिं न नीरा * सुन भये दशरथ अधिक अधीरा॥
सब वृत्तान्त पुनि दियो सुनाई * परे धरणि दोऊ अकुलाई ॥
पुत्र पुत्र कहि रोवन लागे * मोंसे कहने लगे अभागे ॥
जहाँ पुत्र तहँ देउ दिखाई * तब मैं तिनको गयउँ लिवाई ॥
पुत्र उठाय गोद महतारी * रोवन लगी शब्द कर भारी ॥
पुनि दोउन यह बात सुनाई * दीजे नृपति चिता बनवाई ॥
सुन मैंने रच दीन्ह बनाई * बैठे पुत्र गोद दोउ जाई ॥
योग अग्निसे निज तनु जारा * मरण समय असवचनउचारा ॥

दोहा-जिमि हम पुत्र वियोग में, दशरथ त्यागैं प्रान ॥
तैसेही तनु तजहु तुम, मानहु वचन प्रमान ॥ १५५ ॥

अस कह तापस गये सुर लोका * मेरे मन छायो अति शोका ॥
पुनि मैं निज मन कीन्ह विचारा * विनु समझे ऋषि वचन उचारा ॥
पुत्र नहीं कोउ गेहैं हमारे * किमि त्यागहिं तनु वचन तुम्हारे ॥
शोच विहाय गेह में आयो * अब तक तुम को नहीं सुनायो ॥
सांच भई वह अब सब बाता * गये वन सीय राम सँग भ्राता ॥
प्राण पियारे वनहिं सिधारे * अब तक प्राण न गये हमारे ॥
अब सुख कौन मिलै जग माहीं * जेहि ते प्राण न तनुते जाहीं ॥
राम लषण सिय काननें जाहीं * अब तक प्राण रहे तनु माहीं ॥

दोहा-प्रिय शरवन की कथा से, अब मोहिं रह्यो न धीर ॥
पुत्र विना जे नहिं जिये, धन धन ते नर वीर ॥ १५६ ॥

इति क्षेपक ॥

भयउ विकल वर्णत इतिहासा * राम रहित धिक जीवन श्वासा॥
सो तनु राखि करब मैं काहा * जेइ न प्रेम पन मोर निवाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते * तुम विनु जियत बहुत दिन बीते॥

१ शरीर । २ दुःख । ३ घर । ४ वन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

हा जानकी लषण हा रघुवर *हा पितु हित चित चातक[1] जलधर[2]॥

दोहा–राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तनु परिहरि रघुबर विरह, राउ गये सुरधाम ॥ १५७ ॥

जियन मरण फल दशरथ पावा * अण्ड[3] अनेक अमल[4] यश छावा ॥
जियत राम विधुवदन[5] निहारी * राम विरह मरि मरण सँवारी ॥
शोक विकल सब रोवहिं रानी * रूप शील बल तेज बखानी ॥
करहिं विलाप अनेक प्रकारा * परहिं भूमि तल बारहिं बारा ॥
विलपहिं विकल दास अरु दासी * घर घर रुदन करहिं पुरवासी ॥
अथयउ आजु भानु कुल भानू * धर्म अवधि गुण रूप निधानू ॥
गारी सकल कैकयिहि देहीं * नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
इहि विधि विलपत रैनि वितानी * आये सकल महा मुनि ज्ञानी ॥

दोहा–तब वशिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास* ॥
शोक निवारेउ सकलकर, निज विज्ञान प्रकाश ॥ १५८ ॥

अथ क्षेपक. ॥

वशिष्ठजी बोले–हे कौशल्ये ।

क्या तौ हम, और क्या तुम, यह सुख तथा दुःखका भोग सबहीके अर्थ अवश्यहै, अन्तमें सबहीको मृत्युहै तौ फिर तुम क्यों शोक करती हो! हम प्राचीन राजाओंका इतिहास कहतेहैं, सो तुम सुनो जिस्से तुम्हारा शोक दूर होगा, जो राजाओंके चरित्रोंको सुनतेहैं–उनकी आयुकी वृद्धि होतीहै, और शुभ ग्रहोंका संचार होताहै। अविक्षितिके पुत्र राजा मरुत बड़े भाग्यवान्थे, इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता वृहस्पतिको साथ ले उनके यज्ञमें आयेथे, राजाने कीर्तिमें इन्द्रकोभी जीताथा, वृहस्पति और इन्द्रकी प्रीतिके अर्थ इस राजाकी यज्ञ क्रियाके सम्पादन करनेको स्वीकारकर उस कार्यको सम्बवर्त्तने

---

१ पपीहा । २ बादल । ३ अनेकब्रह्माण्ड । ४ निर्मल । ५ चंद्रवदन ६ महाराज दशरथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निर्वाह किया था। उनके राज्यमें पृथ्वी विनाही कर्षण (जोतना) के धान्यों को उत्पन्न करतीथी, उनके यज्ञमें विश्वेदेवा सभासदथे, साध्य और मरुद्गण चारों ओरसे रक्षा करनेवाले थे, देवता उस यज्ञमें सोम रसको पानकर अत्यन्त तृप्तहुएथे, और उस राजानें देवता, मनुष्य, गन्धर्वोंको इतनी दक्षिणादीथी कि जिसको वे उठा नहींसकेथे। हे कौशल्यो वह राजा तुमसें बहुत धार्मिक और ज्ञानी तथा वैराग्ययुक्तथे जब वहभी मृत्युको प्राप्तहुए तौ तुम इन राजाका शोक क्यों करतीहो। उतथिके पुत्र सुहोत्रभी मृत्युको प्राप्तहुए जिनके राज्यमें इन्द्रने एक वर्षतक सुवर्णकी वर्षा करीथी, वसुमति यथार्थ नामसे उनके राज्यमें थी, सारी नदियें सुवर्णवाहिनी थीं, और नदियोंमें इन्द्रने सुवर्णहीके नक्र कच्छपादि उत्पन्न करदियेथे, राजासुहोत्रने यह देख विस्मयको प्राप्तहो उन सब नक्रादिकोंको ग्रहणकर कुरु जंगल देशमें रखकै यज्ञमें सब ब्राह्मणोंको दान कर दिया था वे भी तौ मरे ॥ अङ्गदेशके राजाने यज्ञ करकै दशलाख श्वेतवर्णवाले घोड़े, दशलाख सुवर्णसे शोभित कन्या, दिग्गजोंकी समान दशलक्षहाथी, सुवर्णकी मालाओं से भूषित एककोटि (करोड़) वृषभ, और हजार गौ दक्षिणामें दीथीं इस बृहद्रथराजाके विष्णुपद नामवाले पर्वमें यज्ञ करनेसे इन्द्र और ब्राह्मण सोमपान करनेसे उन्मत्त होगयेथे, इसी प्रकार इस अंग देशाधिपति राजा बृहद्रथने सौ यज्ञकरे इस राजाने जो यज्ञमें धनदियाथा उतने धनको दान देनेवाला आजतक कोई राजा नहीं हुआ जब वहभी कालके वश हुए तौ तुम राजा दशरथका वृथा शोक क्यों करतीहो ॥ और राजा शिवि जिन्होंने रथमें इकलेही बैठकर सारे भूमंडलको जीताथा, और फिर यज्ञमें अपना सर्वस्व दान कर दियाथा जब ऐसे २ राजाभी मृत्युके आधीन हुए तौ तुम राजा दशरथका शोक क्यों करती हो — बड़े ऐश्वर्यवाले शकुन्तलाके पुत्र भरतने—यमुनाके किनारे तीनसौ, और सरस्वतीके तटपर बीस, तथा गंगाके किनारेमें चौदह, इस प्रकार हजार अश्वमेध यज्ञ, और सौ राजसूय यज्ञ किये थे उस समय उनकी समान और कोई दूसरा राजा न था, राजाभरतनें यज्ञवेदीका विस्तार और असंख्यों घोड़ोंको बांधकर महर्षिकण्व को हजारपद्म द्रव्य सहित घोड़े दान कर दिये थे, कौशल्ये! वेभी तौ कालका गिरास हुए तौ तुम दशरथका वृथा शोक क्यों करती हो ॥ एक समय राजा भगीरथ एकान्त स्थानमें बैठेथे, और उन राजाकी गोदमें गंगा विराजमानथीं इसीकारण गगां-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का नाम 'उर्वशी' हुआ, गंगाने राजा भगीरथको पिताकी सदृश मानाथा इसी कारण आजतक गंगाकानाम 'भागीरथी' प्रसिद्धहै, उन्हीं राजा भगीरथने यज्ञमें सुवर्णसे शोभायमान दशलक्ष कन्या दक्षिणामेंदीथीं, वह कन्या ओंका समूह चार चार घोडेवाले रथोंमें स्थितथा, एक २ रथके पीछे सुवर्णकी मालाओंसे भूषित सौ २ हाथी, एक २ हाथीके पीछे सौ२गौ प्रत्येक गौके पीछे हजार २ मेष (मैढ़े) और बकरी दानमेंदीथीं जब वेभी कालके मुखमें गये तौ दशरथकेप्रति तुम्हारा शोक करना वृथाहै ॥ राजादिलीपने भी यज्ञ करके धन तथा रत्नोंसे परिपूर्ण पृथ्वी दान करदीथी, उनके पुरोहितने प्रत्येक् यज्ञमें हजार २ हाथियोंकी दक्षिणाली थी, और यज्ञमें सुवर्णके यूप (खम्भ) गाड़े गयेथे, इन्द्रादिक सम्पर्ण देवता यज्ञकी सुवर्ण भूमिमें स्थितथे, गन्धर्व नृत्य करतेथे, और गन्धर्वोंके राजा विश्वावसु गान कर रहेथे, जिन्होंने राजा दिलीपको आँखोंसे देखाभी था वेभी तौ स्वर्गगामी हुए जब ऐसे पुण्यात्माराजाभी कालका कलेवा हुए तौ तुम दशरथका शोक वृथा क्यों करोहो ॥ राजा युवनाश्वके पुत्र मान्धाताने एक दिनमें सारी पृथ्वीको जीताथा, अङ्गार, मरुत्त, असित, गय, अङ्ग, और वृहद्रथको भी जीताथा, अंगारके साथ युद्धमें इनके धनुष की टंकारसे मानो आकाशमण्डल विदीर्ण होताथा, और सूर्यके उदयसे अस्त पर्यन्त पृथ्वीको जीताथा, इन राजाने सौ अश्वमेध, और सौ राजसूय यज्ञ कियेथे, ब्राह्मणोंको दश योजनलम्बा और एक योजन चौड़ा सुवर्णकामत्स्य दक्षिणामें दियाथा जब वेभी मृत्युकही आधीन हुए तौ तुम वृथा शोक मतकरो ॥ नहुषके पुत्र राजाययाति एकही स्थानमें बैठ कर बलसे युग कीलकको फेंकतेथे, वह कीलक जितनी दूर जाकर गिरताथा अपने स्थानसे उतनीही दूर यज्ञकी वेदी बनातेथे, उस कीलकका नाम शम्यापातहै, राजा ययातिने शत प्रधान यज्ञ–और सौ वाजपेय यज्ञकर सुवर्णके तीन पर्वत दान करके ब्राह्मणोंको तृप्त कराथा, और दैत्योंके समूहोंको युद्धमें मारकर यदु, द्रह्युआदि अपने पुत्रोंको पृथ्वीको देकर पुरुको राज्यतिलक कर स्त्री सहित वनको गये, जब वेभी मरे तौ तुम राजाका शोक क्यों करते हो ॥ राजा नाभागके पुत्र अम्बरीष अपनी प्रजामें बहुत प्रीति रखतथे, उन्होंने यज्ञमें स्थित दशलक्ष राजाओंको ब्राह्मणोंकी सेवा में नियुक्त करदियाथा, वे सब राजा ब्राह्मणोंको दक्षिणा करके दियेथे जब वोह भी मृत्युवश हुए

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तौ तुम अपने पति दशरथका शोक क्यों करती हो ॥ कौशल्ये ! राजाशशिविन्दुके दशलाख पुत्र थे, एक २ पुत्रको सौ २ कन्या विवाहीथीं, प्रत्येक् कन्याके पीछे सौ २ हाथीथे, एक २ हस्तीके पीछे शत २ रथ. एक २ रथके पीछे सुवर्णके आभूषण युक्त सौ २ घोड़े, प्रत्येक घोड़ेके पीछे सौ २ गौ, एक २ गौ के पीछे सौ २ मैंढ़े और बकरी दायजमें आई थीं, राजाशशिविन्दुने वह सब यज्ञमें दान करादियाथा जब वेभी कालके गालमें गये तौ तुम्हारा शोक वृथाहै ॥ हे कौशल्ये ! अमूर्त्तरयाके पुत्र राजागयने सौ वर्ष पर्यन्त होमसे बचीहुई वस्तुका भोजन कराथा, अग्नि आहुतियों से प्रसन्न हो वर देनेको तयार हुए-तब राजाने यही वर मांगाकि आपकी कृपासे मेरी धर्ममें श्रद्धा-सत्यमें प्रेम, और निरन्तर दान करनेसेभी धनका नाश नहीं हो, अग्निने प्रसन्न होकर कहा ऐसाही होगा, इनराजाने हजार वर्ष पर्यन्त-दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास, तथा अश्वमेध यज्ञकरेथे, इन्होंने स्वाहासे देवगण, स्वधासे पितृगण, इच्छानुसार साधनोंसे स्त्रीगणोंको तृप्तकियाथा, अश्वमेध यज्ञमें बीस व्याम चौड़ी और दश व्याम लम्बी सुवर्णमय पृथ्वी ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दीथी, गंगाकी वालुकाके जितने कण होते हैं उतनीही गौदानकर ब्राह्मणोंको दीथीं, ऐसे २ राजा भी तौ एकदिन मरही गये तौ तुम्हारा शोक करना सब वृथा है ॥ और हे कौशल्ये ! जब इसी इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न हुए राजा सगर जिनकी कीर्त्ति आकाश तक छारही है वेभी मरही गये तौ तुम वृथा शोक क्यों करती हो ॥ औरभी सुनो राजावेणुके पुत्र राजा पृथुको सब महर्षियोंने इकट्ठे होकर दण्डकवनमें राज्य तिलक कियाथा, वह राजा सब जगह अत्यन्त विख्यात राजा हुए, इसी कारण उनका 'पृथु' नाम हुआ, वह राजा क्षत (नाश) से त्राण (रक्षा) करतेथे इसकारण 'क्षत्रि' नाम उनमेंही चरितार्थ हो रहाथा, वह प्रजाको आनन्द देतेथे इस कारण राजा शब्द उन्हींने घटताथा, उनके राज्यमें पृथ्वी विनाही कर्षणके धान्योंको उत्पन्न करनेवाली और बहुतसे फूल-फलोंको उत्पन्न करनेवालीथी, प्रत्येक पत्रमें मधु उत्पन्न होताथा, सम्पूर्ण प्रजा रोग रहित निर्भयथी, जब राजा जलमें चलतेथे तब नदी, समुद्र स्थिर हो जातेथे, उन राजाने अश्वमेध यज्ञमें इक्कीस सुवर्णके पर्वत दानकियेथे, वेभी मृत्युहीके आधीनहुये तौ तुम्हारा राजा दशरथके प्रति शोक करना वृथा है ॥

इति क्षेपक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेल नाव भरि नृपतनु राखा * बुलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु वेगि भरत पहँ जाई * नृप अधिकतहुँ कहहु जनिकाहू ॥
इतनै कहेउ भरत सन जाई * गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाये * चले वेगि वर वाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउ जबते * कुशकुन होहिं भरत कहँ तबते ॥
देखहिं राति भयानक सपना * जागि करहिं बहु कोटिकलपना ॥
विप्र जेवाइ देहिं बहु दाना * शिव अभिषेक करहिं विधिनाना ॥
मांगहिं हृदय महेश मनाई * कुशल मातु पितु परिजन भाई ॥

दोहा–इहि विधि शोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाइ ॥
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेश मनाइ ॥ १५९ ॥

चले समीरं वेग हय हांके * लाँघत सरित शैल वन वांके ॥
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष वर्ष सम जाई * इहि विधि भरत अवध नियराई ॥
अशकुन होहिं नगर बैठारा * रटहिं कुभांति कुखेत करारा ॥
खरे शृगाल बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होहिं भरत उर शूला ॥
श्रीहत सर सरिता वन बागा * नगर विशेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गय जाहिं न जोये * राम वियोग कुरोग विगोये ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी * मनहुँ सबहि सब सम्पति हारी ॥

दोहा–पुरजन मिलहिं नकहहिं कछु, गवहिं जोहारहिं जाहिं ॥
भरत कुशल नहिं पूंछि सकि, भाविषादमनमाहिं ॥ १६० ॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी * जनु पुरदश दिशि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनन्दनि * हरषी रविकुल जलरुह चंदनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई * द्वारहि भेंटि भवन लै आई ॥

१ विचार । २ पूजन । ३ पवनके वेगसम । ४ कालेकौवे । ५ गदहा । ६ सियार-जम्बुक । ७ तालाब । ८ नदियाँ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत दुखित परिवार निहारी * मानहु तुहिन वनज वन मारी ॥
कैकेयी हर्षित इहि भांरी * मानहु मुदित देवलाइ किराती ॥
सुतहि सशोच देखि मन मारे * पूछति नैहर कुशल हमारे ॥
सकल कुशल कह भरत सुनाई * पूछी निज कुल कुशल भलाई ॥
कहु कहँ तात कहां सब माता * कहँ सिय राम लषण प्रिय भ्राता॥

दोहा–सुनि सुत वचन सनेह मय, कपट नीर भरिनैन ॥
भरत श्रवण मन शूल सम, पापिनि बोली वैन ॥ १६१ ॥

तात बात मैं सकल सँवारी * भइ मंथरा सहाय विचारी ॥
कछुक काज विधि बीच विगारेउ * भूपति सुरपति पुर पगुधारेउ ॥
सुनतभरतभयो विवशविषादा * जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी * परेउ भूमितल व्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोहीं * तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं ॥
वहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितु मरण हेतु महतारी ॥
सुनि सुत वचन कहति कैकेई * मर्म पाछि जनु माहुर देई ॥
आदिहि ते सब आपनि करणी * कुटिल कठोर मुदित मन वरणी॥

दोहा–भरतहि बिसरेउ पितु मरण, सुनत राम वन गौन ॥
हेतु अपन पुनि जान जिय, थकित रहे धरि मौन ॥१६२॥

विकल विलोकि सुतहि समुझावति * मनहुँ जरे पर लोन लगावति ॥
तात राउ नहिं शोचन योगू * बडइ सुकृत यश कीन्हेउभोगू ॥
जीवत सकल जन्म फल पाये * अन्त अमरपति सदन सिधाये ॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू * सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा * पाके क्षत जनु लागु अँगारा ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा * पापिनि सबहि भाँति कुल नाशा॥

---

१ अग्नि । २ भीलनी । ३ घावछ... । ४ कारण । ५ पुण्यकार्य । ६ डरत । ७ धान्य ।

CC-0. In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोपै कुरुचि रही असि तोहीं * जनमत काहे न मारेसि मोहीं ॥
पेड़काटि तैं पल्लव सींचा * मीन जियन हित वारि उलीचा ॥
दोहा–हंस वंश दशरथ जनक, राम लषणसे भाय ॥
जननी तू जननी भई, विधि से काह बसाय ॥ १६३ ॥

जब ते कुमति कुमत मन ठयऊ * खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ।
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा * जरि न जीह मुँह परे न कीरा ।
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरण काल विधि मति हरिलीन्ही ।
विधिहु न नारि हृदय गति जानी * सकल कपट अघ अवगुण खानी ।
सरल सुशील धर्मरत राऊ * सो किमि जानहि तीय स्वभाऊ ।
अस को जीव जन्तु जगमाहीं * जेहि रघुनाथ प्राणप्रिय नाहीं ।
भे अति अहित राम तेउ तोहीं * लौं कोतू अहसि सत्य कहु मोहीं ।
जोहसि सोहसि मुँह मसिलाई * आँखि ओट उठि बैठहु जाई ।
दोहा–राम विरोधी हृदय ते, प्रगट कीन्ह विधि मोहिं ॥
मो समानको पातकी, वादि कहौं कछु तोहिं ॥ १६४ ॥

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई * जरहिं गात रिसि कछु नवसाई ।
त्यहिअवसर कुवरी तहँ आई * वसन विभूषण विविध बनाई ।
लखि रिसि भरेउ लषण लघुभाई * बरत अनल घृत आहुति पाई ।
हुमुकि लात तकि कूबर मारा * परि मुँह भरि महि करत पुकारा ।
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलित दशन मुख रुधिर प्रचारू ।
अहह दैव मैं काहनशावा * करत नीक फल अनइस पावा ।
पुनि रिपुहन लखि नख शिख खोटी * लगेघसीटन धरि धरि झोटी ।
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई * कौशल्या पहँ गे दोउ भाई ।
दोहा–मलिन वसन विवरण विकल, कृश शरीर दुख भार ।
कनक कमल वर बेलि वन, मानहुँ हनी तुषार ॥ १६५ ॥

१ पिता । २ ब्रह्मा । ३ अग्नि । ४ दयाँ । पाला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरतहिं देखि मातु उठि धाई * मूर्च्छित अवनि परी अकुलाई ॥
देखत भरत विकल भयेभारी * परे चरण तनु दशा बिसारी ॥
मातु तात कहँ देहु दिखाई * कहँ सिय राम लषण दोउ भाई॥
कैकयि कत जनमी जग मांझा * जो जनमी तो भइ किनबांझा ॥
कुल कलंक जेहि जनमेउ मोही * अपयश भाजन प्रिय जन द्रोही॥
को त्रिभुवन मोहिंसरिस अभागी * गति असितोरि मातु जेहिलागी॥
पितु सुरपुर वन रघुकुलकेतू * मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिक् मोहिं भयउ वेणु वन आगी * दुसह दाह दुख दूषण भागी ॥

दोहा-मातु भरतके वचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि ॥
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचति वारि ॥ १६६ ॥

सरल स्वभाय मातु उर लाये * अति हित मनहुँ राम फिरि आये॥
भेटेउ बहुरि लषण लघु भाई * शोक सनेह न हृदय समाई ॥
देखि स्वभाव कहत सब कोई * राम मातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे * आंसुपोंछि मृदु वचन उचारे ॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू * कुसमय समुझि शोक परिहरहू ॥
जान मानहु जिय हानि गलानी *काल कर्म्म गति अघटित जानी॥
काहुहि दोष देहु जनि ताता * भामोहिं सबविधि वामविधाता ॥
जो ऐसेहु विधि मोहिं जियावा * अजहुँ को जानै का तेहि भावा॥

दोहा-पितु आयसु भूषण वसन, तात तजे रघुबीर ॥
विस्मय हर्ष ज हृदय कछु, पहिरे बल्कल चीर ॥ १६७ ॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू * सबकर सबविधि करि परितोषू ॥
चलेविपिन सुनिसिय सँगलागी * रही न रामचरण अनुरागी ॥
सुनतहि लषण चले लगिसाथा * रहे न यतन किये रघुनाथा ॥

---

१ पृथ्वी । २ वंशवन । ३ नयनोंसे आश्रुपातकरत । ४ उलटा । ५ भोजपत्र
६ प्रीति । ७ क्रोध । ८ सम[illegible] । ९ वन ।
पत । ७ [illegible]

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब रघुपति सबही शिरनाई * चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
राम लषण सिय वनहिं सिधाये * गई न संग न प्राण पठाये ॥
यह सब भा इन आँखिन आगे * तउ न तजत तनु जीवअभागे ॥
मोहिं न लाज निजनेह निहारी * राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जिये मरे भल भूपति जाना * मोर हृदय शत कुलिश समाना ॥

दोहा-कौशल्याके वचन सुनि, भरत सहित रनिवास ॥
व्याकुल विलपत राज गृह, मानहुँ शोक निवास ॥ १६८॥

विलपहिं विकल भरत दोउभाई * कौशल्या लिय हृदय लगाई ॥
भाँति अनेक भरत समुझाये * कहि विवेक वर वचन सुनाये ॥
भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई ॥
छलविहीन शुचि सरल[1] सुवानी * बोले भरत जोरि युग पानी ॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे * गाइ गोठ महि सुरपुर जारे ॥
जेअघ तिय बालक वधकीन्हे * मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं * कर्म्म वचन मन भव कवि कहहीं ॥
ते पातक मोहिं होउ विधाता * जो यह होइ मोर मत माता ॥

दोहा-जो परिहरि हरि हर चरण, भजहिं भूतगण घोर ॥
तिन्ह की गति मोहिं देउ विधि, जो जननी मत मोर॥१६९॥

बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं * पिशुन[2] पराव पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी * वेद विदूषक[3] विश्व विरोधी ॥
लोभी लम्पट[4] लोल लवारा * जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पावउँ मैं तिन कर गति घोरा * जो जननी यह सम्मतमोरा ॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे * परमारथ पथ विमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नर तनुपाई * जिनहिं न हरि हर सुयशसुहाई ॥
तजि श्रुति पन्थ वामपथ[5] चलहीं * वंचक[6] विरचि भेषजगछलहीं ॥

१ सीधी । २ चुगुलखोर । ३ वेदोंमेंदोषनिकालने वाले । ४ कामी । ५ टेढ़ा कल्पितमार्ग । ६ ठग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिन्ह कै गति शंकरमोहिं देऊ * जननी जो यह जानौं भेऊ ॥
छं०मन वचन कर्म्म कृपायतन कर दासमैं सुनु मातुरी ॥
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलक नख लेखत मही ॥
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभु पद रत सही ॥७॥
दोहा–मातु भरतके वचन सुनि, सांचे सरल स्वभाय ॥
कहत राम प्रिय तात तुम, सदा वचन मन काय॥१७०॥
राम प्राण ते प्राण तुम्हारे * तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे ॥
विधु विष चुवै श्रवै हिम आगी * होइ वारिचर वारि विरागी ॥
भये ज्ञान वरु मिटै न मोहू * तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं*सो स्वप्नेहुँ सुख सुगति न लहहीं॥
अस कहि मातु भरत हिय लाये* थन पय श्रवहिं नयनजलछाये ॥
करत विलाप विपुल यहिभांती * बैठे बीति गई सब राती ॥
वामदेव वशिष्ठ मुनि आये * सचिव महाजन सकल बुलाये ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे * कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥
दोहा–तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आज ॥
उठे भरत गुरु वचन सुनि, करन लग्यउ सबकाज ॥ १७१ ॥
नृप तनु वेद विहितें अन्हवावा * परम विचित्र विमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखी * रहीं राम दरशन अभिलाषी ॥
चन्दन अगर भार बहु ल्याये * अमित अनेक सुगन्ध सुहाये ॥
सरयु तीर रचि चिता बनाई * जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
याविधि दाह क्रिया सब कीन्ही* विधिवत न्हायतिलांजलि दीन्ही॥
शोधि स्मृति सब वेद पुराना * कीन्ह भरत दश गात्र विधाना ॥
जहँ जस मुनि वर आयसुदीन्ही* तहँ तस सहस भाँतिसबकीन्ही ॥

१ चन्द्र । २ पाला । ३ मछली । ४ वेदानुकूल । ५ अत्यंत सुंदर । ६ सिद्धी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भये विशुद्ध[1] दिये सब दाना * धेनु वाजि गज वाहन नाना ॥
दोहा–सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम ॥
दिये भरत लहि भूमिसुर[2], भे परिपूरण काम ॥ १७२ ॥
पितुहित भरत कीन्ह जसि करणी * सो मुख लाख जाइ नाहिं वरणी ॥
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये * सकल महाजन सचिव[3] बुलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे * नीति धर्म्म मय वचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी * कैकेयि कठिन कीन्ह जसकरणी ॥
भूप धर्म्म व्रत सत्य सराहा * ज्यहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा ॥
कहत रामगुण शील स्वभाऊ * सजल नयन पुलके मुनिराऊ ॥
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी * शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी ॥
दोहा–सुनहु भरत भावी प्रबल, विलखि कहेउ मुनिनाथ ॥
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ ॥ १७३ ॥
अस विचारि केहि दीजिय दोषू * व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात विचार करहु मन माहीं * शोच योग दशरथ नृप नाहीं ॥
शोचिय विप्र जो वेद विहीना * तजि निज धर्म्म विषय लवलीना ॥
शोचिय नृपति जो नीति न जाना * जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना ॥
शोचिय वैश्य कृपन धनवानू * जो न अतिथि शिवभक्ति सुजानू ॥
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी * मुखर[4] मान प्रिय ज्ञान गुमानी ॥
शोचिय पुनि पतिवंचक[5] नारी * कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी ॥
शोचिय वटु निज व्रत परिहरई * जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई ॥
दोहा–शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म्म पथ त्याग ॥
शोचिय यती प्रपंचरत[6], विगत विवेक विराग ॥ १७४ ॥

१ विशेषकरके शुद्ध २ । ब्राह्मण । ३ मंत्री । ४ वाचाल । ५ पतिसे कपट करनेवाली स्त्री । ६ संसारमें प्रीति करनेवाला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वैषानस सोइ शोचन योगू * तप विहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी * जननि जनक गुरु वन्धु विरोधी ॥
सब विधि शोचिय पर अपकारी * निज तनु पोषक निर्दय भारी ॥
शोचनीय सबही विधि सोई * जो न छाँड़ि छल हरि जन होई॥
शोचनीय नहिं कोशलराऊ * भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न अब होनिहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
विधि हरि हर सुरपति दिशिनाथा * वरणहिं सब दशरथ गुणगाथा ॥
तीनि काल त्रिभुवन जग माहीं * भूरि भाग्य दशरथ समनाहीं ॥

दोहा—कहहु तात केहि भाँति कोउ, करहिं बड़ाई तासु ॥
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिस सुवनसुतजासु ॥ १७५ ॥

सब प्रकार भूपति बड़ भागी * वादि विषाद करिय तेहि लागी ॥
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू * शिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राव राज पद तुम कहँ दीन्हा * पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे राम जेहि वचनहिं लागी * तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥
नृपहि वचन प्रिय नाहिं प्रियप्राणा * करहु तात पितु वचन प्रमाणा ॥
करहु शीश धरि भूप रजाई * है तुम कहँ सब भाँति भलाई ॥
परशुराम पितु आज्ञा राखी * मारी मातु लोक सब साखी ॥
*तनय ययातिहि यौवन दयऊ * पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ ॥

दोहा—अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु वैन ॥

* शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी और वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा एक समय स्नान करनेको गई तब शर्मिष्ठाने भूलसे देवयानीका वस्त्र पहरालिया तब देवयानी क्रोधितहो शर्मिष्ठासे लडपडी और शुक्राचार्यसे आयकै कहा तब शुक्राचार्यने वृषपर्वासे उराहनादिया कि तेरी पुत्रीने वादाविवादकिया तब वृषपर्वाने निवेदनकिया जिसमें देवयानी प्रसन्नहोय सो कियाचाहिये तब शुक्राचार्यने कहा कि वह चाहतीहै कि शर्मिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्वाने हजारदासी समेत शर्मिष्ठाको देवयानीके भृत्यपनमें भेजदिया जब देवयानी ययाति राजाको शापवश व्याहीगई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

ते भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति ऐन ॥ १७६॥
अवशि नरेश वचन फुर करहू * पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुमकहँ सुकृत सुयश नहिंदोषू ॥
वेद विहित सम्मत सबहीका * जेहि पितु देइ सो पावै टीका ॥
करहु राज्य परिहरहु गलानी * मानहु मोर वचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब राम वैदेही * अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौशल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी ॥
मर्म तुम्हार राम सब जानहिं * सो सब विधि तुम सन भल मानहिं ॥
सौंपेहु राज्य रामके आये * सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥

दोहा–कीजियगुरुआयसुअवशि, कहहिंसचिवकरजोरि ॥
रघुपति आये उचित जस, तब तस करब बहोरि ॥१७७॥

कौशल्या धरि धीरज कहई * पुत्र पिता गुरु आयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हित मानी * तजिय विषाद काल गति जानी ॥
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू * तुम इहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव कह अंबा * तुमही सुत सबकर अवलंबा ॥
लखि विधि वाम काल कठिनाई * धीरज धरहु मातु बलिजाई ॥

शर्मिष्ठाभी देवयानीके संगगई सो कहीं एकदिन राजाको शर्मिष्ठाके संग विह करते जान देवयानीने क्रोधकर पितासे जाय कहा तब शुक्राचार्यने ययातिको शाप दिया कि तू अभी वृद्धहोजायगा यह सुन राजाने शुक्रजीकी बड़ीविनती कि महाराज अभी विषय वासनासे मेरी तृप्ति नहीं हुई फिर दयाकर शुक्र बोले कि तुम अपने पुत्रोंसे युवा अवस्था मांगलो और अपनी बुढ़ाई उन्हें दे तब राजाने देवयानीके पुत्र यदु आदि तीनोंसे युवाअवस्था मांगी परन्तु उ न्होंने न दी इससे उन्हें शापदिया कि तुम्हारे वंशमें राज्यका अधिकारी कोई नहोगा फिर शर्मिष्ठाके दोनों पुत्रोंसे याचनाकरी तिनमें छोटे पुत्रने पिताकी आज्ञा मान अपनी युवा अवस्था देदी और आशीर्वाद पाया तभीसे राज्य धिकारीहो उनके वंशके लोग पुरुवंशी कहलाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेहि राखहिं घर रहु रखवारी * सो जानै जनु गरदन मारी ॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू * को न चहै जगजीवनलाहू ॥
दोहा–जरै सुसम्पति सदनसुख, सुहृद मातु पितु भाइ ॥
सन्मुख होत जो रामपद, करैनसहजसहाइ ॥ १८६ ॥
घर घर वाहन साजहिं नाना * हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू * नगर वाजि गज भवन भँडारू ॥
सम्पति सब रघुपति कै आही * जो विनु यत्न चलौं तजिताही ॥
तौ परिणाम न मोरि भलाई * आप शिरोमणि साईं दोहाई ॥
करहिं स्वामि हित सेवक सोई * दूषण कोटि देइ किन कोई ॥
अस विचारि शुचि सेवक बोले * जे स्वपन्यहु निज धर्म न डोले ॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा * जो जेहि लायक सो तहँ राखा ॥
करि सब यत्न राखि रखवारे * राम मातु पहँ भरत सिधारे ॥
दोहा–आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान ॥
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान ॥ १८७ ॥
चकचकई इव पुर नरनारी * चलब प्रात उर आनँद भारी ॥
जागत सब निशि भयउ बिहाना * भरत बुलाये सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू * वनहिं देव मुनि रामहिं राजू ॥
वेगि चलहु मुनि सचिव जोहारे * तुरत तुरँग रथ नाग सँवारे ॥
अरुन्धती[1] अरु अग्नि समाजू * रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू ॥
विप्रवृन्द चढि वाहन नाना * चले सकल तप तेज निधाना ॥
नगर लोग सब सजि सजि याना[4] * चित्रकूट कहँ कीन्हपयाना ॥
शिबिका[3] सुभग न जाइँ बखानी * चढि चढि चलत भई सबरानी ॥
दोहा–सौंपि नगर शुचि सेवकन्ह, सादर सबहि चलाइ ॥
सुमिरि राम सिय चरण तब, चले भरत दोउ भाइ ॥ १८८ ॥

१ फल । २ वशिष्ठजीकी स्त्री । ३ विशेषरथ । ४ पालकी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम दरश हित सब नरनारी * जनु करि करिणि चले तकि बारी ॥
बन सिय राम समुझि मनमाहीं * सानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेह लोग अनुरागे * उतरि चले हय गजरथत्यागे ॥
जाइ समीप राखि निज डोली * राम मातु मृदुवाणी बोली ॥
तातचढहु रथ बलि महतारी * होइहि प्रिय परिवार दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू * सकल शोक कृश नाहिं मग योगू ॥
शिर धरि वचन चरण शिरनाई * रथ चढि चलत भये दोउभाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करिवासू * दूसर गोमति तीर निवासू ॥

दोहा–पय अहार फल अशन इक, निशि भोजन सब लोग ॥
करत राम हित नेम व्रत, परिहरि भूषण भोग ॥ १८९ ॥

सई तीर बसि चले विहाने * शृंगवेर पुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा * हृदय विचार करै सविषादा ॥
कारण कवन भरत वन जाहीं * है कछु कपट भाव मन माहीं ॥
जो पै जिय न होत कुटिलाई * तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥
जानहिं सानुज रामहिं मारी * करौं अकण्टक राज्य सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी * तब कलंक अब जीवन हानी ॥
सकल सुरासुर जुरहि जुझारा * रामहिं समर न जीतन हारा ॥
का आश्चर्य भरत अस करहीं * नहिं विष बेलि अमिय फल फरहीं ॥

दोहा–अस विचारि गुह ज्ञाति सन, कहेउ सजग सब होहु ॥
हथवासहु बोरहु तरणि, कीजिय घाटारोहु ॥ १९० ॥

होइ सजग सब रोकहु घाटा * ठाटहु सकल मरण कै ठाटा ॥
सन्मुख लोह भरत सन लेहू * जियत न सुरसरि उतरन देहू ॥
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा * राम काज क्षणभंगु शरीरा ॥

---

१ हाथी । २ हथिनी । ३ जल । ४ सहितभाई शत्रुघ्नके । ५ अपनेजाति-वाले । ६ वास–पतवार । ७ गंगाजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत भाइ नृप मैं जन नीचू * बड़े भाग्य अस पाइय मीचू ॥
स्वामि काज करिहौं रण रारी * लेइहौं सुयश भुवन दशचारी ॥
तजहु प्राण रघुनाथ निहोरे * दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा * राम भक्त महँ जासु न रेखा ॥
जाय जियत जग सो मैंहि भारू * जननी यौवन विटप कुठारू ॥

दोहा–विगत विषाद निषादपति, सबहि बढ़ाय उछाह ॥
सुमिरि राम मांगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाह ॥ १९१ ॥

वेगिहि भाइहु सजहु सँजोऊ * सुनि रजाय कदराय न कोऊ ॥
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा * एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी * शूर सकल रण रुचै सुरारी ॥
सुमिरि रामपद पंकज पनहीं * भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं ॥
अँगुरि पहिरि कुंडि शिर धरहीं * फरसाबांस शेल सम करहीं ॥
एक कुशलअति ओडे न खांडे * कूदहिं गगन मनहुँ क्षिति छाँडे ॥
निज निज साज समाज बनाई * गुहरावतहिं जुहारहिं जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने * लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दोहा–भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहु ॥
सुनि सरोष बोले सुभट, वीर अधीर न होहु ॥ १९२ ॥

रामप्रताप नाथ बल तोरे * करहिं कटक विनु भट विनु घोरे ॥
जियत पाँव नहिं पीछे धरहीं * रुण्ड मुण्ड मय मेदिनि करहीं ॥
दीख निषाद नाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
इतना कहत छींक भइ बांये * कहेउ शकुनियन्ह खेत सुहाये ॥
बूढ़ एक कह शकुन विचारी * भरतहि मिलिय न होइहि रारी ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं * शकुन कहै अस विग्रह नाहीं ॥

---

१ आनन्दके लड्डू । २ पृथ्वी । ३ बोझ । ४ वृक्ष । ५ युद्धकासाज । ६ तरकस । ७ घटाटोप । ८ दुधारा-खांडा-सांग । ९ ढाल । १० तरवार । ११ पृथ्वी

In Public Domain, Gharbai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि गुह कहै नीक कह बूढा * सहसा करि पछिताहिं विमूढा।
भरत स्वभाव शील विनु बूझे * बड़िहित हानि जानि विनु जूझे।
दोहा—गहहु घाट भट सिमिटि सब, लेउ मर्म्म मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्यगति, तब तस करब उपाइ ॥१९३॥
लखब सनेह सुभाय सुहाये * वैर प्रीति नाहिं दुरत दुराये।
अस कहि भेट सँजोवन लागे * कन्द मूल फल खग[2] मृग[3] मांगे।
मीनें[4] पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन आने।
सकल साज सजि मिलन सिधाये * मंगल मूल शकुन शुभ पाये।
देखि दूरि ते कहि निज नामू * कीन्ह मुनीशहि दण्ड प्रणामू।
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा * भरतहि कहेउ बुझाय मुनीशा।
राम सखा सुनि स्यन्दन[5] त्यागा * चले उतरि उमँगत अनुरागा।
गाँव जाति गुह नाँव सुनाई * कीन्ह जुहारि माथ महिलाई।
दोहा—करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ ॥
मनहु लषण सन भेंट भइ, प्रेम न हृदय समाइ ॥१९४॥
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती * लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती।
धन्य धन्य ध्वनि मंगल मूला * सुर सराहि तेहि वरषहिं फूला।
लोक वेद सब भांतिहि नीचा * जासु छाँह छुइ लेइय सींचा।
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता * मिलत पुलक परि पूरित गाता।
राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिनाहिं न पाप पुंज समुहाहीं।
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा * कुल समेत जग पावन कीन्हा।
करमनाश जल सुरसरि परई * तेहि को कहहु शीश नहिं धरई।
उलटा नाम जपत जग जाना * वाल्मीकि भे ब्रह्म समाना।
दोहा—श्वपच सबर खल यवन जड, पामर कोल्ह किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥ १९५ ॥

१ एकत्र। २ पक्षी। ३ हरिण। ४ मछली। ५ रथ। ६ प्रीति। ७ पवित्र।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहिं अचरज युग युग चलिआई * केहिन दीन्ह रघुवीर बड़ाई ॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं * सुनि सुनि अवधलोक सुख लहहीं ॥
राम सखहि मिलि भरत सप्रेमा * पूछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा ॥
देखि भरत कर शील सनेहू * भानिषाद तेहि समय विदेहू ॥
सकुचि सनेह मोद मन बाढ़ा * भरतहि चितवत इकटक ठाढा ॥
धरि धीरज पद वन्दि बहोरी * विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी * मैं तिहुँकाल कुशल निज देखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे * सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥

दोहा–समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ॥
जो न भजै रघुवीर पद, जग विधि वंचक सोइ ॥ १९६ ॥

कपटी कायर[2] कुमति[3] कुजाती * लोक वेद बाहर सब भांती ॥
राम कीन्ह आपन जबही ते * भयउँ भुवन भूषण तबहीं ते ॥
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई * मिले बहोरि लषण लघु भाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुवानी * सादर सकल जुहारी रानी ॥
जानि लषण सम देहिं अशीशा * जियहु सुखी सौलाख बरीशा ॥
निरखि निषाद नगर नरनारी * भये सुखी जनु लषण निहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू * भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई * प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई ॥

दोहा–सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ ॥
घर तरु तर सर बाग वन, वासबनायउ जाइ ॥ १९७ ॥

शृंगबेर पुर भरत दीख जब * भे सनेह वश अंग शिथिल तब ॥
सोहत दिये निषादहि लागू * जनु तनु धरे विनय अनुरागू ॥
इहिविधि भरत सेन सब संगा * दीख जाइ जगपावनि गंगा ॥
राम घाट कहँ कीन्ह प्रणामा * भा मन मग्न मिले जनु रामा ॥

१ आनन्दमें देहकी सुधि न रही । २ डरपोक । ३ मन्दमति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करहिं प्रणाम नगर नर नारी * मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी ॥
करि मज्जन मांगहिं करजोरी * रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पाणि[2] वर मांगौं एहू * सीय राम पद सहज सनेहू ॥
दोहा—इहि विधि मज्जन[3] भरत करि, गुरु अनुशासन[4] पाइ ॥
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाइ ॥ १९८ ॥

जहँ तहँ लोकन्ह डेरा कीन्हा * भरत शोध सबही कर लीन्हा ॥
गुरु सेवा करि आयसु पाई * राम मातु पहँ गे दोउ भाई ॥
चरण चापि कहिकहि मृदुवानी * जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई * आप निषादहि लीन्ह बुलाई ॥
चले सखा कर सों कर जोरे * शिथिल शरीर सनेह न थोरे ॥
पूंछत सखहि सो ठाँव देखाऊ * नेकु नयन मन जरनि जुडाऊ ॥
जहँ सिय राम लषण निशि सोये * कहत भरे जल लोचन कोये ॥
भरत वचन सुनि भयउ विषादू * तुरत तहाँ लै गयउ निषादू ॥
दोहा—जहँ शिंशुपा[5] पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम ॥
अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दंड प्रणाम ॥ १९९ ॥

कुश साथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण[6] लाई ॥
चरण रेख रज आंखिन लाई * बनै न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनक विन्दु दुइ चारिक देखे * राखे शीश सीय सम लेखे ॥
सजल विलोचन हृदय गलानी * कहत सखा सन वचन सुवानी ॥
श्रीहत सीय विरह द्युति[7] हीना * यथा अवध नर नारि मलीना ॥
पिता जनक देउँ पटतर केही * करतल भोग योग जग जेही ॥
श्वशुर भानुकुल भानु भुआलू * जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥

१ कामधेनु-गाय । २ हाथ । ३ स्नान । ४ आज्ञा । ५ शशिमकावृक्ष । ६ प-रिक्रमा । ७ कांति । ८ इन्द्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राणनाथ रघुनाथ गुसाँई * जो बड होत सो राम बड़ाई ॥
दोहा—पति देवता सुतीय मणि, सीय साथरी देखि ॥
विहरत हृदय न हहरि[1]मम, पैविते कठिन विशेषि ॥ २०० ॥
लालन योग लषण लघु[2]लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे * सिय रघुवीरहि प्राणपियारे ॥
मृदुमूराति सुकुमार स्वभाऊ * ताति वायु तनु लागि नकाऊ ॥
तेवन वसहिं विपति सब भांती * निदरे कोटि कुलिश यह छाती ॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर * रूप शील सुख सब गुणसागर ॥
पुरजन पैरिजन गुरु पितु माता * राम स्वभाव सबहि सुखदाता ॥
वैरिउ राम बड़ाई करहीं * बोलनि मिलनि विनय मनहरहीं ॥
शारद कोटि कोटि शत शेषा * करि न सकहिं प्रभु गुण गण लेखा ॥
दोहा—सुख स्वरूप रघुवंश मणि, मंगल मोद निधान ॥
ते सोवत कुश डासि महि, विधिगति अति बलवान ॥ २०१ ॥
राम सुना दुख कान न काऊ * जीवन तरु जिमि जुगवहिं राऊ ॥
पलक नयन फणि मणि जेहि भांती * जुगवहिं जननि सकल दिनराती ॥
तेअब फिरत विपिन पदचारी * कन्द मूल फल फूल अहारी ॥
धिक कैकेयि अमंगल मूला * भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला ॥
मैं धिकधिक अघउदधिअभागी * सब उत्पात भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंक करि सृजेउ विधाता * साइँद्रोइ मोहिं कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथकरिय कत वादि विषादू ॥
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं * यह निर्दोष दोष विधि वामहिं ॥
छं—विधि वामकी करणीकठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी ॥
तेहिराति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी ॥
तुलसी न तुम सों रामप्रीतम कहत हौं सौं हैं किये ॥

---

१ वज्र । २ सुन्दर । ३ कुटुम्ब । ४ सजीवनवृक्ष । ५ पापोंकासमुद्र ।

CC-0. In Public Domain. Chanbal Archives - Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥ ९ ॥
सो०—अन्तर्यामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन ॥
चलिय करिय विश्राम, यह विचार दृढ़ जानि मन ॥ ८ ॥
सखा वचन सुनि उरधरि धीरा * वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी * चले विलोकन आरत भारी ॥
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा * देहिं कैकयिहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि वारि विलोचन लेहीं * वाम विधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
निन्दहिं आपु सराहि निषादहि * को कहिसकै विमोह विषादहि ॥
इहि विधि राति लोग सब जागा * भा भिनुसार उतारा लागा ॥
गुरुहि सुनाव चढ़ाइ सुहाई * नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारि महँ भा सब पारा * उतरि भरत तब सबहिं सँभारा ॥
दोहा—प्रात क्रिया करि मातु पद, वन्दि गुरुहिं शिरनाइ ॥
आगे किये निषाद गण, दीन्हेउ कटक चलाइ ॥२०२॥
किये निषाद नाथ अगुआई * मातु पालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा * पिप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा ॥
आप सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू * सुमिरे लषण सहित सिय रामू ॥
गमने भरत पयादेहि पाये * कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा * होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये * हम कहँ रथ गज वाजि बनाये ॥
शिर भर जाउँ उचित असमोरा * सब ते सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरत गति सुनि मृदुवानी * सब सेवक गण करहिं गलानी ॥
दोहा—भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥
कहत राम सिय राम सिय, उमँगि उमँगि अनुराग॥२०३॥

१ नेत्र। २ घोडे।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झलका झलकत पाँयन कैसे * पंकज[1] कोश ओस कण जैसे ॥
भरत पयादेहि आये आजू * देखि दुखित सुनि सकल समाजू॥
खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये * कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये ॥
सविधि सितासित[2] नीर अन्हाने * दिये दान महिसुर सन्माने ॥
देखत श्यामल धवल हिलोरे * पुलक शरीर भरत कर जोरे ॥
सकल कामप्रद तीरथराउ * वेद विदित जग प्रकट प्रभाऊ ॥
माँगौं भीख त्यागि निज धरमू * आरत काह न करहिं कुकरमू ॥
अस जिय जानि सुजानि सुदानी * सफल करौ जगयाचक वानी ॥

दोहा—अर्थ न धर्म्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान[3] ॥
जन्म जन्म रति[4] रामपद, यह वरदान न आन ॥ २०४ ॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही * लोग कहैं गुरु साहब द्रोही ॥
सीता राम चरण रति मोरे * अनुदिन[5] बढ़ै अनुग्रह तोरे ॥
जलद[6] जन्म भरि सुरति विसारे * याचत जल पवि पाहन डारे ॥
चातक रटनि घटे घटिजाई * बढे प्रेम सब भांति भलाई ॥
कनकहि[7] बान चढे जिमिदाहे * तिमि प्रीतम पद नेम निवाहे ॥
भरत वचन सुनि मांझ त्रिवेणी * भै मृदु वाणि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम सब विधि साधू * राम चरण अनुराग अगाधू ॥
वादिगलानि करहु मन माहीं * तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं ॥

दोहा—तनु पुलके हिय हर्ष सुनि, वेणि वचन अनुकूल ॥
भरतधन्य कहि धन्य कहि, नभ सुर वर्षहिं फूल ॥ २०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी * वैषानस[9] वटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दश पाँचा * भरत सनेह शील शुचि साँचा ॥

---

१ कमलकेपत्ता । २ सितकही उज्ज्वल जल गंगाजीका और आसितकही श्याम जल यमुनाजीका । ३ मोक्षपद । ४ प्रीति । ५ नितप्रति । ६ मेघ । ७ सोना । ८ शोभा । ९ वाणप्रस्थ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनत राम गुण गान सुहाये * भरद्वाज मुनिवर पहँ आये ॥
दण्ड प्रणाम करत मुनिदेखे * मूरतिवन्त भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे * चहत सकुचि गृह जनु भजिपैठे ॥
मुनि पूछब कछु यह बड़ शोचू * बोले ऋषि लखि शील सँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधिपाई * विधि करतब पर कछु न बसाई ॥
दोहा—तुम गलानि जिय जनि करहु, समुझि मातुकरतूति ॥
तात कैकयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति ॥ २०६ ॥
यहउ कहत भल कहहि न कोऊ * लोक वेद बुध सम्मत दोऊ ॥
तात तुम्हार विमलयश गाई * पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेद सम्मत विधि कहई * ज्यहि पितु राज्य देइ सो लहई ॥
राउ सत्यव्रत तुमहिं बुलाई * देत राज्य सुख धर्म्म बड़ाई ॥
राम गमन वन अनरथ मूला * जो सुनि सकल विश्व भइ शूला ॥
सो भावीवश रानि अयानी * करि कुचालि अन्तहु पछितानी ॥
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू * कहै सो अधम अयान असाधू ॥
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू * रामहिं होत सुनत सन्तोषू ॥
दोहा—अब अति कीन्हेउ भरत भल, तुमहिं उचितमतएहु ॥
सकल सुमंगल मूल जग, रघुवर चरण सनेहु ॥ २०७ ॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना * भूरिभाग्य को तुमहिं समाना ॥
यह तुम्हार आचरज न ताता * दशरथ सुवन राम लघु भ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं * प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषण राम सीतहि अति प्रीती * निशि सब तुमहिं सराहत बीती ॥
जाना मर्म्म अन्हात प्रयागा * मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुम पर अस सनेह रघुबरके * सुख जीवन जग जस जड़नरके ॥
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई * प्रणत कुटुंब पाल रघुराई ॥
तुम तौ भरत मोर मत एहू * धरेउ देह जनु राम सनेहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–तुम कहँ भरत कलंक यह, हम सबकहँ उपदेश ॥
राम भक्ति रस सिद्ध हित, भा यहि समय गणेश ॥२०८॥

नवविधु विमल तात यश तोरा * रघुबर किंकर कुमुद चकोरा ॥
उदय सदा अथइय कबहूना * घटिहि न जग नभ दिन दिनदूना॥
कोक विलोक प्रीति अति करहीं * प्रभु प्रताप रवि छबिहि न हरहीं ॥
निशिदिन सुखद सदा सब काहू * ग्रसिहि न कैकेयि करतबराहू ॥
पूरण राम सुप्रेम पियूषा * गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ॥
रामभक्ति अब अमिय अघाहू * कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरे सकल सुमंगल खानी ॥
दशरथ गुणगण वरणि न जाहीं * अधिक काह जेहि सम जगमाहीं॥

दोहा–जासु सनेह सकोचवश, राम प्रगट भे आय ॥
जे हर हिय नयनन कबहुँ, निरखे नाहिं अघाय॥ २०९ ॥

कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा * जहँ वस राम प्रेम मृग रूपा ॥
तात गलानि करहु जिय जाये * डरहु दरिद्रहिं पारस पाये ॥
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं * उदासीन तापस वन रहहीं ॥
सब साधन कर सफलसुहावा * लषण राम सिय दरशन पावा ॥
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा* सहित प्रयाग सुभाग्य हमारा ॥
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ * कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ॥
सुनि मुनि वचन सभासद हरषे * साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥
धन्य धन्य ध्वनि गगन प्रयागा * सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दोहा–पुलक गात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ॥
करि प्रणाम मुनि मंडिलिहि, बोले गद्गद वैन ॥ २१० ॥

मुनि समाज अरु तीरथ राजू * सांचेहु शपथ अघाइ अकाजू ॥
यहि थल जो कछु कहिय बनाई * तेहि सम नाहिं कछु अघ अधमाई॥
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ * उर अन्तर्यामी रघुराऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहिं न मातु करतबकर शोचू * नाहिं दुख जिय जग जानहि पोचू॥
नाहिं न डर बिगरहि परलोकू * पितहु मरे कर नाहिंन शोकू॥
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये * लक्ष्मण राम सरिस सुतपाये॥
रामविरह तजि तनु क्षणभंगू * भूप शोच कर कवन प्रसंगू॥
रामलषण सिय बिनु पग पनहीं * करि मुनि वेष फिरहिं वन वनहीं॥
दोहा–अजिन[1] वसन फल अशन महि, शयनडासि कुशपात॥
वसि तरु तर नित सहत दुख, हिम तप वरषा वात[2]॥२११॥
यह दुख दाह दहै नित छाती * भूंख न वासर[3] नींद न राती॥
यहि कुरोग कर ओषधि नाहीं * शोधेउँ सकल विश्व मनमाहीं॥
मातु कुमति बढई अघ मूला * तेहि हमार हित कीन्ह बसूला॥
कलि कुकाठ गढ कीन्ह कुयंत्रू[4] * गाडि अवध पढि कठिन कुमंत्रू॥
मुहिंलगि यह कुठाट जेहि ठाटा * घालिसि सब जग बारहवाटा॥
मिटै कुयोग राम फिरि आये * बसहि अवध नाहिं आन उपाये॥
भरत वचन सुनि मुनि सुखपाई * सबहि कीन्ह बहु भाँति बड़ाई॥
तात करहु जानि शोच विशेखी * सब दुख मिटिहि रामपद देखी॥
दोहा–करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्राण प्रियहोहु॥
कन्द मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु[5]॥ २१२॥
सुनि मुनि वचन भरत हिय शोचू * भयउ कु अवसर कठिन सकोचू॥
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी * चरण वन्दि बोले कर जोरी॥
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा * परम धर्म्म यह नाथ हमारा॥
भरत वचन मुनिवर मनभाये * शुचि सेवक शिष निकट बुलाये॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई * कन्द मूल फल आनहु जाई॥
भले नाथ कहि तिन्ह शिर नाये * प्रमुदित निज निज काज सिधाये॥
मुनिहिं शोच पाहुन बडनेवता * तस पूजा चाहिय जसदेवता॥

---

१ मृगचर्म मोत्रपत्र इत्यादि। २पवन। ३ दिन। ४ कल्पितवातें। ५ कृपाकरके।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनिऋधिसिधि अणिमादिक आई* आयसु होय सो करैं गुसाई ॥
दोहा—रामविरह व्याकुल भरत, सानुज सकल समाज ॥
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदित मुनिराज ॥ २१३ ॥
ऋधि सिधि शिरधरि मुनिवर वानी* बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई * अतुलित अतिथि राम लघुभाई॥
मुनिपदवन्दि करिय सोइ आजू * होइसुखी सब राज समाजू ॥
असकहि रुचिर रचे गृहनाना * जो विलोकि बिलखाहिं विमाना॥
भोग विभूति भूरि भरि राखे * देखत जिनहिं अमर अभिलाषे॥
दासी दास साज सब लीन्हे * जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे॥
सब समाज सजि सिधि पलमाहीं * जोसुख स्वपन्यहुँ सुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहिं वास दिये सब केही * सुंदर सुखद यथारुचि जेही ॥
दोहा—बहुरि सपरिजन भरतकहँ, ऋषि आयसु अस दीन्ह ॥
विधि विस्मय दायक विभव, मुनिवर तपबल कीन्ह ॥ २१४ ॥
मुनि प्रभाव जब भरत विलोका * सब लघु लगे लोक पति लोका॥
सुख समाज नहिं जाइ बखानी * देखत विरति विसारहिं ज्ञानी ॥
आसन शयन सुवसन विताना * वन वाटिका विहँग मृगनाना ॥
सुरभि फूल फल अमिय समाना * विमल जलाशय विविध विधाना॥
अशन पान शुचि अमित अमीसे * देख लोक सकुचात जमीसे ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबही के * लखि अभिलाष सुरेश शचीके ॥
ऋतु वसन्त वह त्रिविध वयारी * सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चन्दन वनितादिक भोगा * देखि हर्ष विस्मय सब लोगा ॥
दोहा—सम्पति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार ॥
त्यहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भा भिनुसार ॥ २१५ ॥

---

१ देवता । २ साथियोंसमेत । ३ ऐश्वर्य । ४ वैराग्य । सुगन्धमधु । ६ भोजन । ७ इन्द्र- इन्द्राणी । ८ रत्नफूलोंकीमाला । ९ बहेलिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा * नाइ मुनिहि शिरसहितसमाजा ॥
ऋषिआयसुअशीष शिर राखी * करि दण्डवत विनय बहुभाखी ॥
पथ गत कुशल साथ सब लीन्हे * चले चित्रकूटहि चित दीन्हे ॥
रामे सखा कर दीन्हे लागू * चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया * प्रेम नेम व्रत धर्म्म अमाया ॥
लषण राम सिय पन्थ कहानी * पूंछत सखहि कहत मृदुवानी ॥
राम बास थल विटप विलोके * उर अनुराग रहत नहिं रोंके ॥
देखि दशा सुरवर्षहिं फूला * भइ मृदु महि मगु मंगल मूला ॥
दोहा—किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहत वर बात ॥
तस मग भयउ न राम कहँ, जस भा भरतहिजात ॥२१६॥
जड़ चेतन मग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभुहेरे ॥
ते सब भये परमपद योगू * भरत दरश भेषज भव रोगू ॥
यह बड़ि बात भरत की नाहीं * सुमिरत जिनाहिं राम मन माहीं ॥
वारेक राम कहत जग जेऊ * होत तरण तारण नर तेऊ ॥
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता * कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
सिद्ध साधु मुनिवर असकहहीं * भरतहि निरखि हर्षहिय लहहीं ॥
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू * जगभल भलहि पोच कह पोचू ॥
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई * रामहि भरतहि भेंट न होई ॥
दोहा—राम सकोची प्रेमवश, भरत सप्रेम पयोधि ॥
बनी बात बिगरन चहत, करिय यतन छल शोधि ॥२१७॥
वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने * सहसनयन विनु लोचन जाने ॥
कह गुरु वादि क्षोभ छल छाँडू * इहां कपट करि होइय भांडू ॥
मायापति सेवक सन माया * करियत उलटि परे सुरराया ॥
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी * अब कुचाल करि होइहि हानी ॥

---

१ निषाद। २ कोमल। ३ पृथ्वी। ४ ओषधी। ५ इन्द्र। ६ बृहस्पति। ७ विडम्बना।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनु सुरेश रघुनाथ स्वभाऊ * निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥
जो अपराध भक्त कर करई * राम रोष पावक सो जरई ॥
लोकहु वेद विदित इतिहासा * यह महिमा जानहिं दुर्वासा* ॥
भरत सरिस को राम सनेही * जग जपु राम राम जपु जेही ॥

दोहा-मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुपति भक्त अकाज ॥
अयश लोक परलोक दुख, दिन दिन शोक समाज॥२१८॥

सुनु सुरेश उपदेश हमारा * रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवक सेवकाई * सेवक वैर वैर अधिकाई ॥
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू * गहहि न पाप पुण्य गुण दोषू ॥
कर्म्म प्रधान विश्व करि राखा * जो जस करै सो तस फल चाखा॥
तदपि करहिं सम विषम विहारा* भक्त अभक्त हृदय अनुसारा ॥
अगुण अलेख अमान एकरस * राम सगुण भये भक्त प्रेमवश ॥

---

* राजा अम्बरीषका यह नियम था कि एकादशीका व्रत करके द्वादशीमें ब्राह्मण जिंवाय पारन करतेथे एकसमय दुर्वासऋषि न्योता मान स्नान करने गये और द्वादशी थोडी रह गई व्यतीत काल जान राजाने ब्राह्मणोंसे कहकर चरणामृत ले पारण किया तिसके उपरान्त दुर्वासाऋषि आये राजाको चरणामृत लिये जान कोपकर एक जटा पटकी उससे कृत्या नाम राक्षसी प्रगट हो राजाको मारने चली इधर राजा कंपायमान हो पृथ्वीपर गिरा उधर ऋषि दुर्वासाके ऊपर सुदर्शन चक्र भगवान्का चला तब उसके भयसे ऋषि भागे अब आगे ऋषि और पीछे चक्र घूमते २ सब देवतोंकी शरणमें गये परन्तु किसीने शरण नहीं दिया तब विष्णुने आरत वचन सुनके इनसे कहा कि तुम राजाहीकी शरणमें जाओ वही तुम्हारी रक्षा करैगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीषके शरणमें आये और राजा उसी प्रकार व्याकुल हो पृथ्वीमें पड़ा रहा राजा इनको आतेदेख आगेजाय इनको आदरपूर्वक ले आये और सुदर्शनचक्रको निवारण किया तब विष्णुभगवान्ने अम्बरीषको निर्दोषी जान दुर्वासाके शापको आप अंगीकार किया और राजाने दुर्वासा ऋषिको भोजन खवाय अत्यन्त प्रीतिसे आदर पूर्वक विदा किय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

रामसदा सेवक रुचि राखी * वेद पुराण साधु सुर साखी ॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई * करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥
दोहा—रामभक्त परहित निरत, परदुख दुखी दयाल ॥
भक्तशिरोमणि भरतसे, जनि डरपहु सुरपाल ॥ २१९ ॥
सत्यसिन्धु प्रभु सुर हितकारी * भरत राम आयसु अनुसारी ॥
स्वारथ विवश विकल तुम होहू * भरत दोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुखर सुरगुरु वर वानी * भा प्रबोध मन मिटी गलानी ॥
वरषि प्रसून हर्षि सुरराऊ * लगे सराहन भरत स्वभाऊ ॥
इहि विधि भरत चले मगुजाहीं * दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा * उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा ॥
द्रवहिं[1] वचन सुनि कुलिश[2] पषाना[3] * पुरजन प्रेम न जाइ वखाना ॥
बीच वास करि यमुनहिंआये * निरखि नीर लोचन जलछाये ॥
दोहा—रघुवर वरण विलोकि वर, वारि समेत समाज ॥
होत विरह वारिधि मगन, चढे विवेक जहाज ॥ २२० ॥
यमुन तीर तेहि दिनकर वासू * भयउ समय सम सबहि सुपासू ॥
रातिहि घाट घाटकी तरणी[4] * आई अगणित जाइँ न वरणी ॥
प्रात पार भे एकहि खेवा * तोषे राम सखाकरि सेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहि शिरनाई * साथ निषाद नाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर वाहन आछे * राज समाज जाइ सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे * भूषण बसन वेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृद सचिव सुतसाथा * सुमिरत लषण सीय रघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम वास विश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा ॥
दोहा—मगु वासी नर नारि सुनि, धाम काम तजि धाइ ॥
देखि स्वरूप सनेह वश, मुदित जन्म फल पाइ ॥ २२१ ॥

१ पिघलतेहैं । २ वज्र । ३ पत्थर । ४ नौका ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं * राम लषण सखि होहिं किनाहीं ॥
वर्य वपु[1] वरण रूप स्वइआली * शील सनेह सरिस सम चाली ॥
वेष न सो सखि सीय न संगा * आगे अनी[3] चली चतुरंगा[4] ॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा * सखि सन्देह होत इहि भेदा ॥
तासु तर्क तिय गण मनमानी * कहहिं सकल तोहिं सम न सयानी ॥
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी * बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
कहिं सप्रेम सब कथा प्रसंगू * जेहि विधि राम राजरस भंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी * शील सनेह स्वभाव सुभागी ॥

दोहा—चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज ॥
जात मनावन रघुवरहि, भरत सरिस को आज ॥ २२२ ॥

भायप भक्ति भरत आचरणू * कहत सुनत दुख दूषण हरणू ॥
जोकछु कहिय थोर सखिसोई * रामबंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे * भये धन्य युवती जन लेखे ॥
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं * कैकयि जननियोग सुतनाहीं ॥
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन * विधि सबभांति हमहिंजो दाहिन ॥
कहँ हम लोग वेद विधि हीनी * लघु कुल तिय करतूति मलीनी ॥
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा * कहँ यह दरश पुण्य परिणामा ॥
अस अनन्द अचरज प्रतिग्रामा * जनु मरुभूमि कल्पतरुजामा ॥

दोहा—भरत दरश देखत खुलेहु, मगु लोगन्ह कर भाग ॥
जनु सिंहलबासिन्ह भयउ, विधि वश सुलभ प्रयाग ॥ २२३ ॥

निज गुण सहित राम गुण गाथा * सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा * निरखि निमज्जहिं करहिं प्रणामा ॥
मनहीं मन मांगहिं वरयेहू * सीय राम पद पद्म सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल्ह वनवासी * वैषानस वटु यती उदासी ॥

---

१ अवस्था । २ देह । ३ सैना । ४ रथारूढ, गजारूढ, अश्वारूढ, पदाति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

करि प्रणाम पूछहिं जेहि तेही * केहि वन लषण राम वैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं * भरतहि देखि जन्म फल लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुशल हमदेखे * तेप्रिय राम लषण सम पेखे ॥
इहि विधि बूझत सबहिं सुवानी * सुनत राम वन वास कहानी ॥

दोहा-तेहि वासर वस प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ ॥
राम दरशकी लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥ २२४ ॥

मंगल शकुन होहिं सब काहू * फरकहिं सुखद विलोचन बाहू ॥
भरतहिं सहित समाज उछाहू * मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू ॥
करत मनोरथ जस जियजाके * जाहिं सनेह सुरों सब छाके ॥
शिथिल अंग पग डगमग डोलहिं * बिहवल वचन प्रेम वश बोलहिं ॥
राम सखा तेहि समय देखावा * शैल शिरोमणि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरिस पयै तीरा * सीय समेत बसहिं दोउ वीरा ॥
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा * कहि जय जानकि जीवनरामा ॥
प्रेममगन अस राजसमाजू * जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दोहा-भरत प्रेम त्यहि समय जस, तस कहि सकैं न शेषु ॥
कविहि अगम जिमि ब्रह्म सुख, अहमम मलिनजनेषु ॥२२५॥

सकल सनेह शिथिल रघुबरके * गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जल थल देखि बसे निशि बीते * कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते ॥
वहां राम रजनी अवशेषा * जागी सीय स्वप्न अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनुआये * नाथ वियोग ताप तनु ताये ॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी * देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सिय स्वप्न भरेजल लोचन * भये शोच वश शोकविमोचन ॥
लषण स्वप्न यह नीक न होई * कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बन्धु समेत अन्हाने * पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥

१ नेत्र । २ स्नेहरूपीमदिरासेछके । ३ पयस्विनीनदी । ४ रात्रिव्यतीतहोनेपर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंद—सनमानि सुर मुनि वन्दि बैठे उतर दिशि देखत भये ॥
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गये ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे ॥
सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसरकहे ॥१०॥

सो०—सुनत सुमंगल वैन, मन प्रमोद[1] तनुपुलक भर ॥
शरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥ ९ ॥

बहुरि शोच बश भे सियरमनू * कारण कवन भरत आगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी * सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं भा अतिशोचू * इत पितु वच उत बन्धुसँकोचू॥
भरत स्वभाव समुझि मनमाहीं * प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने * भरत कहे महँ साधु सयाने ॥
लषण लख्यउ प्रभु हृदय खँभारू[2] * कहत समय सम नीतिविचारू ॥
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई * सेवक समय न ढीठ ढिठाई ॥
तुम सर्वज्ञ[3] शिरोमणि स्वामी * आपुनि समुझि कहौं अनुगामी[4] ॥

दोहा—नाथ सुहृद सुठि सरल चित, शील सनेह निधान ॥
सब पर प्रीति प्रतीति जिय,जानिय आपु समान ॥ २२६॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई * मूढ मोहवश मोहिं जनाई ॥
भरत नीति रत साधु सुजाना * प्रभु पद प्रेम सकल जगजाना ॥
तेऊ आज राज्यपद पाई * चले धर्म्म मर्य्याद मिटाई ॥
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी * जानि राम बनवासयकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू * आये करन अकण्टक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जोजिय होति न कपट कुचाली * केहि सुहात रथ वाजि गजाली ॥
भरतहि दोषदेइ को जाये * जग बौराइ राज्यपद पाये ॥

---

१ आनन्द । २ घबराहट । ३ सर्वकेमनोंकीगतिजाननहार । ४ सेवक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-*शशि गुरु तिय गामी नहुंष, + चढे भूमिसुर यान ॥
लोक वेद ते विमुख भा, अधम को वेणु ÷ समान ॥२२७॥

* चंद्रमाके गुरु बृहस्पति तिनकी स्त्री तारा उसने कामके वश मोहित होय चन्द्रमासे कहा कि मेरे संग भोग करो तब चंद्र गुरुपत्नीका विचार कछु मनमें नलाये और उसके साथ भोग किया जब वह गर्भवती हुई और पुत्र भया जिसका बुध नाम है तब बृहस्पति बुधका नाम करन करनेको उठे उससमयें चंद्रमाने जायके कहा कि महाराज यह पुत्र मेरा है मुझको दीजिये ऐसा कह सब समाचार गुरुको सुनाया तब बृहस्पति बोले कि वीर्य्य तुम्हारा है और क्षेत्र हमारा है इससे पुत्रका अधिकारी मैंहू इसमें दोनों प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतोंनें इसकी पंचायतकर बुधको चंद्रमाको दिलादिया ॥

+ राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भये एकसमय जब इंद्र वृत्रासुरकी इत्याके भयसे भागकर मानस सरोवरमें जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्यप्रबन्धके निमित्त राजा नहुषको बुलाय इंद्रपददे स्थापन किया तब राजा बड़े यश प्रतापके साथ इन्द्रपदका राज्यभोग करने लगे किसी समय इनको राज्यमदसे यह नीच कांक्षा उत्पन्न भई कि मैंनें इन्द्रपद पायकै क्या किया जो इंद्रानीके साथ भोग न किया ऐसा विचारकर इंद्रानीसे यह संदेश कहला भेजा तब इंद्रानी अतिव्याकुल हुई पीछे यह बात ठहरी कि राजा ब्राह्मणोंको कहार बनाय यानपर बैठकै आवै तौ हम उनके संग भोग करैं यह बात सुन कामके वश उठ करकै सप्तऋषियोंसे राजाने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करैं तो हमें इंद्रानी प्राप्तहो ऐसा कह यान पर बैठा पंथमें यह ऋषि सत्यमार्गी धीरे धीरे नीचे देख पैर धरैं और राजा कामके वश ऊपरसे सर्प सर्प अर्थात् जल्दी चलो२कहै तब तौ सप्तऋषियोंने क्रोधित होय विमान पटक शापदियाकि अयराजा काम वश तेरीबुद्धि भ्रष्ट होगई इस्से तू मृत्युलोकमें जाकर सर्पहो तब राजा मृत्युलोकमें आय सर्प भया जिसे युधिष्ठिरने उद्धार किया,

÷ राजावेणु अपनी लडकाईसे बडा क्रूरथा और अनेक तरहके उपद्रव प्रतिदिन किया करे इससे प्रजाको दुःखी देख वेणुके पिता अंग राजाको बडा क्लेश हुआ पश्चात् अंगराजाके मरनेपर जब यह राज्यका अधिकारी हुआ तब ता इस ने यह आज्ञादी कि कोई शास्त्र पुराण वेदको नमाने उसके बदलेमें सबकोई मेरा गुण गान करै और परमेश्वर मुझको माने आर जो कोई मेरी आज्ञा नमानेगा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहसबाहु* सुरनाथ त्रिशंकू + * केहि न राज्यमद दीन्ह कलंकू॥

सो दंडके योग्य होगा इस बातके प्रचलित होनेमें सुर मुनि प्रजा अधिक दुःखी हुई फिर एकसमय ऋषिलोग आपसमें विचारकरने लगे कि राजाके पास इसविषयमें कुछ बात चीत करनी चाहिये ऐसा शोचकै ऋषियोंने आयकै राजाको बहुत ज्ञान उपदेश किया परन्तु उसके चित्तमें कुछभी न आया और यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानीहो तब ऋषियोंने क्रोधसे शाप देके मारडाला पुनि ऋषियोंनें राजगद्दी भ्रष्ट जानके उसके शरीरको मथा प्रथम जांघमेंसे एक काला पुरुष निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजामेंसे पृथु निकले तब उन्हैं धर्मका अवतार जानकै राजगद्दी दिया सोराजा पृथु बडे धर्मात्मा नामी राजा भये और काला मनुष्य जो प्रथम निकला उसे दक्षिणका राज्यदिया उसीकी सन्तान निषाद कहलाई.

* सहस्रबाहु क्षत्रियराजा महादेवके प्रसादसे बडा बली हुआ एकसमय सेना संगलेकर अहेर खेलने गया वहां प्यासा होय दूतको भेजा यहां किसीका स्थान होयतौ जल लाओ दूत खोजता हुआ जमदग्निके पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले राजाको बुला लाओ यहां भोजनकर श्रम हरकर चले जायँगे तब दूत राजासे जाय ऋषिके वचन कहने लगा राजा राज्यमदसे बोले कि इतना भोजन ऋषि कहाँसे पावैगा कि सेना समेत मेरी तृप्ति होगी इसबातको दूत द्वारा ऋषि सुनकै बोले कि इसका शोच तुम्हारे राजा कुछ न करैं आज मेर अतिथि होयँ तब राजा सेना सहित ऋषिके स्थानमें गये और ऋषिनें कामधेनुके प्रसादसे राजाकी पहुनई करी तब सहस्रबाहुने ऋषिसे पूंछा इतना सामान क्षणमात्रमें आपने कैसे करलिया तब ऋषिने कहा महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजाने कहा वह कामधेनु मुझको दीजिये इसबातको सुनके ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनुको खोललेचलो और ऋषिका वचन मतसुनो तब कामधेनुसे म्लेच्छ पैदा हुये उनसे और राजासे लड़ाई होने लगी फिर क्रोधमें आकर सहस्रबाहुने जमदग्निका शिर काटडाला और रेणुका कोभी घायल किया गऊ भाग इंद्रलोक को गई यह समाचार सुन परशुराम आये पिताको मरा देख माताके संतोषके निमित्त प्रण किया कि पृथ्वीपर क्षत्रियका बीज न रक्खेंगे ऐसा कह सहस्रबाहु को जाय मारा इक्कीसबार पृथ्वी क्षत्रियोंसे रहित करी इंद्रकी कथा लिखचुके हैं.

+ राजा त्रिशंकुको राज्यमदसे यह इच्छा हुई कि हम ऐसा यज्ञकरैं कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ * रिपु रण रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आज विशेषी * समर सरोष रामरुख देखी ॥
इतनों कहत नीति रस भूला * रणरस विटप फूल जिमि फूला ॥
प्रभुपद वन्दि शीश रज राखी * बोले सत्य सहज बल भाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा * भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिय रहिय मनमारे * नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दोहा—क्षत्रि जाति रघुकुल जनम, राम अनुज जग जान ॥
लातहु मारे चढत शिर, नीच को धूरि समान ॥ २२८ ॥

उठि करजोरि रजायसु मांगा * मनहुँ वीररस सोवत जागा ॥
बांधि जटा शिर कसि कटि भाथा[2] * साजि शरासन[3] शायक हाथा ॥

सदेह स्वर्गको जाँय ऐसा विचार वशिष्ठजीसे जाय कहा तब वशिष्ठजीने अभिमानी जान कहा कि ऐसी शास्त्रकी मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठजीके पुत्रोंसे राजाने कहा उन्होंनें गुरुके वचनोंमें अविश्वासी देख शाप दिया कि तू चांडाल हो पितों पुत्रोंमें द्वेष किया चाहता है तब यह राजा शापवश चांडालहो विश्वामित्रकी शरणमें गया उन्होंने इस्से यज्ञप्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सबऋषि देवता मिलकै यज्ञविध्वंस करने लगे तब विश्वामित्रने तपबलसें ऋषि और देवता नये उत्पन्न किये और यज्ञको पूराकर त्रिशंकुको आज्ञादिया कि सदेह स्वर्गको चला जा त्रिशंकु स्वर्गमें चला गया तब वहांसे देवतोंनें नीचे ढकेला और वह उलटा होय नीचेको गिरने लगा विश्वामित्रने तपबलसे अधरमें स्थिर कर दिया सो त्रिशंकु तारा विदित है और उसीके मुँहसे जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी हुई जो बनारस बिहारके बीच बहतीहै और शास्त्रसे उसका पानी छूना वर्जित है कोई ऐसाभी कहते हैं गुरु गुरुपुत्रोंकी आज्ञा न माननेसे और एक समय वशिष्ठकी गऊको ताडन करनेसे इन तीनों पापसे इसराजाके माथेमें तीन सींग होगये इससे त्रिशंकु नाम पडा ॥

१ वीररस । २ तरकश । ३ धनुष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजु रामसेवक यश लेऊं * भरतहि समर सिखावन देऊं ॥
राम निरादर कर फल पाई * सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू * प्रगट करौं रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करि[1] निकर दलै मृगराजू[2] * लेइ लपेटि लवा[3] जिमि बाजू ॥
तैसहि भरतहि सेन समेता * सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जो सहाय कर शंकर आई * तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥

दोहा—अति सरोष भाषे लषण, लखि सुनि शपथ प्रमान ॥
सभय विलोकत लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥ २२९॥

जग भा मगन गगन भै वानी * लषण बाहु बल विपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा * को कहि सक को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काज कछु होई * समुझि करिय भल कह सब कोई॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं * कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुर वचन लषण सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने ॥
कहा तात तुम नीति सुहाई * सब ते कठिन राजमद भाई ॥
जो अँचवत मार्तहिं[4] नृप तेई * नाहिंन साधु सभा जिन्ह सेई ॥
सुनहु लषण भल[5] भरत सरीखा * विधि[6] प्रपंच महँ सुना न दीखा ॥

दोहा—भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ ॥
कबहुँ कि कांजी[7] सीकरन्हि, क्षीर सिंधु विनशाइ ॥ २३० ॥

तिमिर तरुण[8] तरणिहि[9] सकगिलई * गगन मगन मगु मेघहिमिलई ॥
गो पद जल बूड़हिं घटयोनी[10] * सहस क्षमा बरु छाँडहिं क्षोनी ॥
मशक फूंक बरु मेरु उडाई * होइ न नृपमद भरतहि भाई ॥
लषण तुम्हार शपथ पितु आना[11] * शुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥

---

१ हाथियोंके झुंड । २ सिंह । ३ बटेर । ४ बावला । ५ सुशील । ६ ब्रह्माकी सृष्टि । ७ मट्ठाके बरतनके धोवनके बूंद । ८ अंधकार । ९ दोपहरके सूर्य्य १० अगस्त्यमुनि । ११ सौगंध ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सगुण क्षीर अवगुण जलताता * मिले रचे परपंच विधाता ॥
भरत हंस रविवंश तडागा * जनमि कीन्ह गुण दोष विभागा ॥
गहिगुणपय तजि अवगुण वारी * निजयश जगत कीन्ह उजियारी ॥
कहत भरत गुण शील स्वभाऊ * प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

दोहा—सुनि रघुबर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु ॥
लगे सराहन सहसमुख, प्रभु को कृपानिकेतु ॥ २३१ ॥

जो न होत जग जन्म भरत को * सकल धर्म्मधुर धरणि धरत को ॥
कविकुल अगम भरत गुण गाथा * कोजाने तुम बिन रघुनाथा ॥
लषण राम सिय सुनि सुरवानी * अति सुखलह्यउ नजाइ बखानी ॥
इहां भरत सब सहित सुहाये * मंदाकिनी पुनीत अन्हाये ॥
सरित समीप राखि सब लोगा * मांगि मातु गुरु सचिव नियोगा ॥
चले भरत जहँ सिय रघुराई * साथ निषाद नाथ लघुभाई ॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं * करत कुतर्क कोटि मन माहीं ॥
रामलषण सिय सुनि ममनाऊं * उठिजानि अनत जाहिं तजिठाऊं ॥

दोहा—मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु कहहिं सो थोर ॥
अघ अवगुण तजि आदरहिं, समुझि आपनी ओर ॥ २३२ ॥

जो परिहरहिं मलिन मन जानी * जो सन्मानहिं सेवक मानी ॥
मोरे शरण राम की पनहीं * राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
जगयश भाजन चातक मीना * नेम प्रेम निज निपुण नवीना ॥
अस मन गुणत चले मग जाता * सकुचि सनेह शिथिल सबगाता ॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी[1] * चलत भक्ति बल धीरज धोरी ॥
जब समुझहिं रघुनाथ स्वभाऊ * तब पथ परत उतावल पाऊ ॥
भरत दशा तेहि अवसर कैसी * जल प्रवाह जल अलिगण[2] जैसी ॥
देखि भरत कर शोच सनेहू * भा निषाद त्यहि समय विदेहू ॥

१ दोष । २ भ्रमरगण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—लगे होन मंगल शकुन, सुनि गुणि कहत निषाद ॥
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनि परिणाम विषाद ॥ २३३ ॥

सेवक वचन सत्य सब जाने * आश्रम निकट जाय नियराने ॥
भरत दीख बन शैल समाजू * मुदित क्षुधित जनुपाइ सुराजू ॥
ईतिभीति[1] जनु प्रजा दुखारी * त्रिविध ताप पीडित ग्रह भारी ॥
जाइ सुराज सुदेश सुखारी * भई भरत गति तेहि अनुहारी ॥
राम बास वन सम्पति भ्राजा * सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव विराग विवेक नरेशू * विपिन सुहावन पावन देशू ॥
भट कमनीय शैल रजधानी * शांति सुमति शुचि सुन्दरि रानी॥
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ * रामचरण आश्रित चित चाऊ ॥

दोहा—जीति मोह महिपालदल, सहित विवेक भुआल ॥
करत अकण्टक राज्यपुर, सुख सम्पदा सुकाल ॥ २३४ ॥

वन प्रदेश मुनि बास घनेरे * जनु पुर नगर गाँव गण खेरे ॥
विपुल विचित्र विहँग मृगनाना * प्रजा समाज नजाइ बखाना ॥
खगहा[2] करि[3] हरि[4] बाघ बराहा[5] * देखि महिष[6] वृक[7] साज सराहा ॥
वैर विहाइ चरहिं इक संगा * जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं *मनहुँ निशान विविध विधि बाजहिं॥
चक चकोर चातक शुकपिकगन* गुंजत मंजु मराल मुदित मन ॥
अलिगण[8] गावत नाचत मोरा * जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ॥
वेलि विटप तृण सफल सफूला * सब समाज मुद मंगल मूला ॥

दोहा—राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम ॥
तापस तप फल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ॥ २३५ ॥

तब केवट उँचे चढि जाई * कहा भरत सन भुजा उठाई ॥

---

१ अतिवृष्टि-अनावृष्टि-इत्यादिभय । २ गैंडा । ३ हाथी । ४ सिंह । ५ शूकर । ६ भैंसा । ७ भेंड । ८ भ्रमर गण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाथ देख यह विटप विशाला * पाकरे जम्बु रसाल तमाला ॥
तिन तरुवरन्ह मध्य बव सोहा * मंजु विशाल देखि मन मोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला * अविचल छाँह सुखद सब काला॥
मानहुँ तिमिर अरुणमय राशी * विरची विधि सकेलि सुखमासी॥
तेहि तरु सरित समीप गुसाँई * रघुवर पर्णकुटी तहँ छाई ॥
तुलसी तरुवर विविध सुहाये * कहुँ सिय पिय कहुँ लषण लगाये॥
वट छाया वेदिका बनाई * सिय निज पाणि सरोज सुहाई ॥
दोहा—जहँ बैठें मुनिगण सहित, नित सिय राम सुजान ॥
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥२३६॥
सखा वचन सुनि विटप निहारी * उमग्यउ भरत विलोचन वारी ॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई * कहत प्रीति शारद सकुचाई ॥
हर्षहिं निरखि राम पद अंका * मानहुँ पारस पायहु रंका ॥
रजशिर धरि हिय नयन लगावहिं* रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा * प्रेम मगन मृग खग जड़जीवा ॥
सबहि सनेह विवश मग भूला * कहि सुपंथ सुर वर्षहिं फूला ॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे * सहज सनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाव भरत को * अचर सचर चर अचर करतको॥
दोहा—प्रेम अमिय मंदिर विरह, भरत पयोधि गँभीर ॥
मथि प्रगटे सुर साधु हित, कृपासिंधु रघुवीर॥२३७॥
सखा समेत मनोहर जोटा * लखेउ न लषण सघन वन ओटा॥
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन * सकल सुमंगल सदन सुहावन ॥
करत प्रवेश मिटा दुख दावा * जनु योगी परमारथ पावा ॥
देखे लषण भरत प्रभु आगे * पूछत वचन कहत अनुरागे ॥
शीश जटा कटि मुनि पट बाँधे * तूण कसे कर शर धनु काँधे ॥

१ पिलखन । २ जामुन । ३ आँब । ४ आबनूस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेदी पर मुनि साधु समाजू * सीय सहित राजत रघुराजू ॥
वलकल वसन जटिल तनु श्यामा * जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा ॥
करकमलन धनु शायक फेरत * जीकी जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दोहा—लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुनंद ॥
ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानंद ॥ २३८ ॥

सानुज सखा समेत मगन मन * विसरे हर्ष शोक सुख दुखगन ॥
पाहि पाहि कहि पाहि गुसाईं * भूतल परे लकुट की नाईं ॥
वचन सप्रेम लषण पहिंचाने * करत प्रणाम भरत जियजाने ॥
वंधु सनेह सरस यहि ओरा * उत साहब सेवा बरजोरा ॥
मिलन जाइ नाहिं गुदरैत बनई * सुकवि लषण मनकी गति भनई ॥
रहे राखि सेवा परभारू * चढीचंग[3] जनु खैंच खिलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा * भरत प्रणाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा * कहुँ पट कहुँ निषंग[3] धनु तीरा ॥

दोहा—वरवश लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान ॥
भरत रामकी मिलन लखि, विसरे सबहि अपान ॥ २३९ ॥

मिलन प्रीति किमि जाइ बखानी * कवि कुल अगम कर्म मनवानी ॥
परम प्रेम पूरण दोउ भाई * मनबुधि चित अहमिति विसराई ॥
कहहु सुप्रेम प्रकट को करई * केहिछाया कविमति अनुसरई ॥
कविहि अर्थ आखर बल साँचा * अनुहर[4] ताल गतिहि नटनाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुबर को * जहँ नजाइ मन विधि हरि हरको ॥
सो मैं वरणि कहौं केहि भाँती * बाजु सुराग कि गाडरितँती[5] ॥
मिलनि विलोकि भरत रघुबरकी * सुरगण सभय धुकधुकी धरकी ॥
समुझाये सुरगुरु[6] जड जागे * वरषि प्रसूँन[7] प्रशंसन लागे ॥

---

१ सेवामेंचित्तस्थिरहो । २ पतंग । ३ तरकस । ४ अनुसार । ५ रुईधुनकने-की तांति । ६ वृहस्पति । ७ पुष्प ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम ॥
भूरि भाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम ॥ २४० ॥

भेंट्यउ लषण ललाकि लघुभाई * बहुरि निषाद लीन्ह उरलाई ।
पुनि मुनि गण दोउ भाइन वन्दे * अभिमत आशिष पाइ अनन्दे ॥
सानुज भरत उमँगि अनुरागा * धरिशिर सियपद पद्म परागा ।
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये * सियकर कमल परशि बैठाये ।
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं * मगन सनेह देह सुधि नाहीं ।
सबविधि सानुकूल लखि सीता * भे अशोच उर अपडरबीता ।
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा * प्रेम भरामन निजगति छूछा ।
तेहि अवसर केवट धीरज धरि * जोरि पाणि विनवत प्रणामकरि ।

दोहा–नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ॥
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग ॥ २४१ ॥

शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू * सीय समीप राखि रिपुदमनू ।
चले सबेग राम तेहि काला * धीर धर्म्म धर दीनदयाला ।
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे * दण्ड प्रणाम करन प्रभु लागे ।
मुनिवर धाइ लिये उर लाई * प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई ।
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू * कीन्ह दूरिते दण्ड प्रणामू ।
राम सखा ऋषि वरबश भेंटे * जनु महि लुटत सनेह समेटे ।
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला * नभ सराहि सुर वर्षहिं फूला ।
इहिसम निपट नीच कोउ नाहीं * वड वशिष्ठ सम को जग माहीं ।

दोहा–जेहि लखि लषणहुँते अधिक, मिले मुदित मुनिराउ ॥
सो सीतापति भजन को, प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥ २४२ ॥

आरत लोग राम सब जाना * करुणाकर सुजान भगवाना ।
जो जेहि भांति रहा अभिलाषी * तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी ।

१ मनभावनी । २ वसिष्ठ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सानुज मिलि पल महँ सब काहू * कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं * जिमि घट कोटि एक रविछाहीं ॥
मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा * पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी * जनु सुबेलि अवली हिम मारी॥
प्रथम राम भेंटे कैकेयी * सरल स्वभाव भक्ति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी * काल कर्म्म विधि शिर धरि खोरी

दोहा–भेंटी रघुबर मातु सब, करि प्रबोध परितोष ॥
अम्ब ईश आधीन जग, काहु न देइय दोष ॥ २४३ ॥

गुरुतिय पद वन्दे दोउ भाई * सहित विप्र तिय जे सँग आई॥
गंग गौरि सम सब सन्मानी * देहिं अशीष मुदित मृदुवानी ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका * जनु भेंटी सम्पति अतिरंका ॥
पुनि जननी चरण न दोउ भ्राता * परे प्रेम व्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अम्ब उरलाये * नयन सनेह सलिल अन्हवाये ॥
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू * किमिकवि कहै मूक जिमि स्वादू॥
मिलि जननिहिं सानुजरघुराऊ * गुरु सन कहेउ कि धारिय पाऊ॥
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू * जल थल तकि तकि उतरे लोगू॥

दोहा–महिसुर मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिये साथ ॥
पावन आश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ ॥२४४॥

सीय आइ मुनिवर पग लागी * उचित अशीष लही मन मांगी ॥
गुरुपत्निहि मुनि तियन्ह समेता * मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता ॥
वन्दि वन्दि पद सिय सबहीके * आशिष वचन लहे प्रिय जीके ॥
सासु सकल जब सीय निहारी * मूंद्यउ नयन सहमि सुकुमारी ॥
परी वधिक वश मनहु मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्ह सिय निरखिनिपट दुख पावा* सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा * नील नलिन लोचन भरिनीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह शिरनाई * त्यहि अवसर करुणा महिछाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—लागि लागि पग सबनि सिय, भेटति अति अनुराग ॥
हृदय अशीशहिं प्रेमवश, रहिहौ भरी सुहाग ॥ २४५ ॥
विकल सनेह सीय सब रानी * बैठने सबहिं कहेउ गुरुज्ञानी ॥
प्रथम कही जगगति मुनि नाथा * कहे कछुक परमारथ गाथा ॥
नृप कर सुरपुर गमन सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा ॥
मरण हेतु निज नेह विचारी * भे अति विकल धीरधुरधारी ॥
कुलिश कठोर सुनत कटुवानी * विलपत लषण सीयसबरानी ॥
शोक विकल अति सकल समाजू * मानहु राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये * सह समाज सुर सरित अन्हाये ॥
व्रत निरम्बु[1] त्यहि दिन प्रभु कीन्हा * मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा ॥
दोहा—भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ॥
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥ २४६ ॥
करि पितु क्रिया वेद जस वरणी * भे पुनीत पातक तम तरणी ॥
जासु नाम पावक[2] अघतूला[3] * सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस * तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
शुद्ध भये दुइ वासर बीते * बोले गुरुसन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी * कन्द मूल फल अम्बु[4] अहारी ॥
सानुज भरत सचिव सब माता * देखि मोहिं पल जिमि युग जाता ॥
सब समेत पुरधारिय पाऊ * आपु इहां अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई * उचित होइ तस करिय गुसाँई ॥
दोहा—धर्महेतु करुणायतन, कसन कहहु अस राम ॥
लोग दुखित दिन दुइ दरश, देखि लहहिं विश्राम ॥ २४७ ॥
राम वचनसुनि समय समाजू * जनु जलनिधि[5] महँ विकल जहाजू ॥
सुनि मुनि गिरा सुमंगल मूला * भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥

१ निर्जल । २ आग्नि । ३ पापरूपीरुई । ४ पानी । ५ समुद्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावन पय तिहुँ काल अन्हाहीं * ज्याहि विलोकि अघ ओघ नशाहीं॥
मंगल मूरति लोचन भरिभरि * निरखहिं हर्षि दण्डवत करि करि॥
रामशैल वन देखन जाहीं * जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं॥
झरना झरहिं सुधा सम वारी * त्रिविधि ताप हर त्रिविध बयारी॥
विटप बेलि तृण अगणित जाती * फल प्रसून पल्लव बहु भांती॥
सुन्दरशिला सुखद तरुछाहीं * जाइ वरणि छवि वन केहिपाहीं॥

दोहा—सरित सरोरुह जल विहँग, कूजत गुंजत भृंग॥
वैर विगत विहरत विपिन, मृग विहंग बहुरंग॥ २४८॥

कोल्ह किरात भिल्ल वनवासी * मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधासी॥
भरि भरि पर्णपुटी रचि रूरी * कन्द मूल फल अंकुर जूरी॥
सबहिं देहिं करि विनय प्रणामा * कहि कहि स्वाद भेद गुण नामा॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं * फेरत राम दोहाई देहीं॥
कहहिं सनेह मगन मृदु वानी * मानत साधु प्रेम पहिंचानी॥
तुम सुकृती हम नीच निषादा * पावा दरशन राम प्रसादा॥
हमहिं अगम अति दरश तुम्हारा * जस मरुधरणि देवसरि धारा॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा * परिजन प्रजा चहिय जस राजा॥

दोहा—यह जिय जानि सकोच तजि, करिय क्षोह लखि नेहु॥
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृण अंकुर लेहु॥ २४९॥

तुम प्रिय पाहुन वन पगु धारे * सेवा योग्य न भाग्य हमारे॥
देब कहा हम तुमहिं गुसाँई * ईंधन पात किरात मिताई॥
यह हमार अति बड़ सेवकाई * लेहिं न बासन बसन चुराई॥
हम जड़जीव जीव गणघाती * कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥
पाप करत निशि वासर जाहीं * नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं॥

---

१ पाप। २ फूल। ३ पत्ते। ४ पत्तोंकादोना। ५ पुण्यात्मा। ६ दुर्लभ। ७ मारवाडकीपृथ्वी। ८ गंगाजीकीधारा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वपनेहुँ धर्म्म बुद्धि कस काऊ * यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जब ते प्रभुपद पद्म निहारे * मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
वचन सुनत पुरजन अनुरागे * तिन्हके भाग्य सराहन लागे ॥
छंद–लागे सराहन भाग्य सब अनुराग वचन सुनावहीं ॥
बोलनि मिलनि सिय राम चरण सनेह लखि सुख पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल्ह भिल्लन की गिरा ॥
तुलसी कृपा रघुवंशमणिकी लोह लै नौका तरा ॥ ११ ॥
सो०–विहरहिं वन चहुँओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ॥
जल जिमि दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥ १० ॥
पुरजन नारि मगन अति प्रीती * बासर जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति वेष बनाई * सादर करहि सरिस सेवकाई ॥
लखा न मर्म राम विनु काहू * माया सब सिय मायानाहू ॥
सीय सासु सेवा वश कीन्हीं *तिन्हलहि सुख शिष आशिष दीन्हीं
लखि सियसहित सरल दोउ भाई * कुटिल रानि पछिताइ अघाई ॥
अब जिय महि याचति कैकेई * मोहिं न बीच विधि मीचु न देई ॥
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं * राम विमुख थल नरक न लहहीं ॥
यह संशय सबके मन माहीं * राम गमन विधि अवध कि नाहीं ॥
दोहा–निशि न नींद नहिं भूख दिन, भरत विकल सुठि शोच ॥
नीच कीच विच मगन जस, मीनहिं सलिल सकोच ॥ २५० ॥
कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली * ईतिभीति जस पाकत शाली ॥
केहि विधि होइ राम अभिषेकू * मोहिं अब करत उपाय न एकू ॥
अवशि फिरहिं गुरु आयसु मानी* पुनिपुनि कहब राम रुचि जानी ॥
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ * राम जननि हठ करब कि काऊ ॥
मो अनुचर कर केतिक बाता * त्यहिमहँ कुसमय वाम विधाता ॥
जो हठ करौं तो निपट कुकर्म्मू * हर गिरि ते गुरु सेवक धर्म्मू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकौ युक्ति न मन ठहरानी * शोचत भरतहिं रैनि सिरानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहि शिरनाई * बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥
दोहा–गुरु पद कमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥ २५१ ॥
बोले मुनिवर समय समाना * सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धर्म्म धुरीन भानुकुल भानू * राजा राम स्ववश भगवानू ॥
सत्यसिन्धु पालक श्रुतिसेतू * राम जन्म जग मंगल हेतू ॥
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी * खल दल दलन देव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ * कोउ न रामसम जान यथारथ ॥
विधि हरि हर शशि रवि दिशिपाला * माया जीव कर्म कलिकाला ॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई * योगसिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जिय देखहु नीके * रामरजाय शीश सबहीके ॥
दोहा–राखे रामरजाय रुख, हम सब कर हित होइ॥
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि सम्मत सोइ ॥२५२॥
"सब कहँ सुखद राम अभिषेकू * मंगल मूल मोद मगु येकू" ॥
जेहि विधि अवध चलहिं रघुराई * कहहु समुझि सोइ करैं उपाई ॥
सब सादर मुनिवर सुनि बानी * नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोग भे भोरे * तब शिरनाय भरत कर जोरे ॥
भानुवंश भे भूप घनेरे * अधिक एक ते एक बडेरे ॥
जन्महेतु सब कह पितु माता * कर्म्म शुभाशुभ देइ विधाता ॥
दलिदुख सजैं सकल कल्याना * अस अशीष राउर जगजाना ॥
सो गुसाइँ विधिगति जेइ छेकी * सकै को टारि टेक जो टेकी ॥
दोहा–बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग ॥
सुनि सनेह मय वचनगुरु, उर उपजा अनुराग ॥ २५३ ॥

---

१ शेष । २ राजा-ब्राह्मण-शेषनाग । ३ वेद शास्त्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तात बात फुर राम कृपाहीं * राम विमुख सुख स्वपन्यहु नाहीं।
सकुचौं तात कहत इकबाता * अरध तजहिं बुध सरबस जाता।
तुम कानन गमनहु द्वउ भाई * फिरिहहिं लषण सीय रघुराई।
सुनि शुभ वचन हर्ष दोउ भ्राता * भे प्रमोद परिपूरण गाता।
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा * जनु जिय राउ राम भे राजा।
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * सम दुख सुख सब रोवहिं रानी।
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे * फल जगजीवन अभिमत दीन्हे।
कानन[2] करउँ जन्मभरि वासू * इहिते अधिक न मोर सुपासू।

दोहा—अन्तर्यामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
जो फुर कहहुँ तो नाथनिज, कीजिय वचन प्रमान ॥२५४॥

भरत वचन सुनि देखि सनेहू * सभासहित मुनि भयउ विदेहू।
भरत महा महिमा जलरासी[3] * मुनि मतितीर ठाढि अबलोसी।
गा चह पार यतन बहुहेरा * पावति नाव न बोहितें बेरा।
और करहि को भरत बड़ाई * सरसि सीप किमि सिन्धु समाई।
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये * सहित समाज रामपहँ आये।
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन * बैठे सब मुनि सुनि अनुशासन।
बोले मुनिवर वचन विचारी * देश काल अवसर अनुहारी।
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना * धर्म्म नीति गुण ज्ञान निधाना।

दोहा—सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव ॥
पुरजन जननी भरत हित, होइ सो करिय उपाव ॥ २५५॥

आरत कहँहिँ विचारि न काऊ * सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ।
सब कर हित रुख राउर राखे * आयसु किये मुदित फुर भाषे।
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई * माथे मानि करौं सिख सोई।

१ वांछितफल। २ वनमें। ३ समुद्र। ४ स्त्री। ५ जहाज।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि जेहि कहँ जस होब रजाई * सो सब भांति करिहि सेवकाई ॥
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा * भरत सनेह विचार न राखा ॥
तुहिते कहौं बहोरि बहोरि * भरत भक्ति भइ ममति भोरी ॥
मोरे जान भरत रुचि राखी * जो कीजिय सो शुभ शिव साखी॥

दोहा-भरत विनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि ॥
करब साधुमत लोकमत, नृप नय निगम निचोरि ॥२५६ ॥

गुरुअनुराग भरत पर देखी * रामहृदय आनन्द विशेषी ॥
भरतहिं धर्मधुरन्धर जानी * निज सेवक तनु मानस वानी ॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला * वचन मंजु मृदु मंगल मूला ॥
नाथ शपथ पितुचरण दोहाई * भयउ न भुवन भरत सम भाई ॥
जे गुरुपद अम्बुज अनुरागी * ते लोकहु वेदहु बड़भागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू * को कहिसकै भरत सम भागू॥
लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई * करत बदन पर भरत बड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई * असकहि राम रहे अरगाई ॥

दोहा-तब मुनि बोले भरत सन: सब सकोच तजि तात ॥
कृपासिन्धु प्रियबन्धु सन, कहहु हृदय की बात ॥ २५७ ॥

सुनि मुनि वचन रामरुख पाई * गुरु साहेब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपनेशिर सबछरभारू * कहि न सकैं कछु करैं विचारू ॥
पुलक शरीर सभाभे ठाढे * नीरज नयन नेह जल बाढे ॥
कहब मोर मुनिनाथ निवाहा * यहिते अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानौं निजनाथ स्वभाऊ * अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
मोपर कृपा सनेह विशेषी * खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी॥
शिशुपनते परिहरेउ न संगू * कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही * हारेहु खेलि जितावहिं मोहीं ॥

१ वेद । २ प्रीति । ३ पवित्रवचन । ४ चुप । ५ कमलनेत्र ६ क्रोध ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दोहा—महूं सनेह सकोचवश, सन्मुख कहेउँ न वयन ॥
दर्शन तृप्ति न आजुलगि, प्रेम पियासे नयन ॥ २५८ ॥

विधि नसकेउ सहि मोर दुलारा * नीच बीच जननी मिसु पारा ॥
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा * आपुन समुझि साधु शुचिकोभा ॥
मातु मन्द मैं साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
फरैं कि कोदव बालि सुशाली * मुकता श्रवैं कि शंबुकै ताली ॥
स्वप्नेहुँ दोष कलेश न काहू * मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
विनु समुझे निज अघ परिपाकू * जान्यउ जाइ जननि कह काकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा * एकहि भांति भलिहि भल मोरा ॥
गुरु गुसाइँ साहब सिय रामू * लागत मोहिं नीक परिणामू ॥

दोहा—साधु सभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सतिभाउ ॥
प्रेमप्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥ २५९ ॥

भूपति मरण प्रेम प्रण राखी * जननी कुमति जगत सब साखी ॥
देखि न जाहिं विकल महतारी * जरहिं दुसहज्वर पुर नर नारी ॥
महीं सकल अनरथ कर मूला * सोसुनि समुझि सहौं सब शूला ॥
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा * करि मुनि वेष लषण सिय साथा ॥
विनु पनही अरु प्यादेहि पाये * शंकर साखि रह्यों इहि घाये ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू * कुलिश कठिन उर भयउनवेहू ॥
अबसब आंखिन देखेउँ आई * जियत जीव जड सबै सहाई ॥
जिनहिं निरखि मग सांपिनि बीछी * तजहिं विषम विषता मतितीछी ॥

दोहा—तेइ रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि ॥
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि ॥ २६० ॥

सुनि आति विकल भरत वर वानी * आरति प्रीति विनय नयसानी ॥
शोक मगन सब सभा खँभारू * मनहुँ कमल वन परेउ तुषारू ॥

१ चावल-धान । २ मोती । ३ सीपी । ४ गहरासमुद्र । ५ कठोरवचन । ६ माता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहि अनेक विधि कथा पुरानी * भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी ॥
बोले उचित वचन रघुनन्दू * दिनकर कुल कैरववनचन्दू ॥
तात जीय जनि करहु गलानी * ईश अधीन जीवगति जानी ॥
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे * पुण्यश्लोक[1] तात कर तोरे ॥
उर आनत तुम पर कुटिलाई * जाइ लोक परलोक नशाई ॥
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई * जिन्ह गुरु साधु सभा नहिं सेई ॥
दोहा–मिटिहहिं पाप प्रपंच[2] सब, अखिल[3] अमंगल भार ॥
लोक सुयश परलोक सुख, सुमिरत नाम तुम्हार ॥२६१ ॥
कहौ स्वभाव सत्य शिव साखी * भरत भूमि रह राउर राखी ॥
तात कुतर्क करहु जिय जाये * वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगण निकट विहंगम जाहीं * बाधक वधिक विलोकि पराहीं ॥
हित अनहित पशु पक्षिउ जाना * मानुष तनु गुण ज्ञान निधाना ॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके * करौ कहा असमंजस[4] जीके ॥
राख्यउ राउ सत्य मोहिं त्यागी * तनु परिहरेउ प्रेम प्रणलागी ॥
तासु वचन मेटत मन शोचू * तेहि ते अधिक तुम्हार सकोचू ॥
तापर गुरु मुहिं आयसु दीन्हा * अवशि जो कहहु चहौं सो कीन्हा ॥
दोहा–मन प्रसन्न करि सकुच तजि, कहहु करौं सो आज ॥
सत्यसिन्धु रघुवर वचन, सुनि भा सुखी समाज ॥ २६२ ॥
सुरगण सहित सभय सुरराजू * शोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
करत विचार बनत कछु नाहीं * रामशरण सबगे मन माहीं ॥
बहुरि विचार परस्पर कहहीं * रघुवर भक्त भक्ति वश अहहीं ॥
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा * भेसुर सुरपति निपट निरासा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल विषादा * नरहरिकिये प्रगट प्रहलादा ॥
लगि लगि कान कहहिं धुनिमाथा * अब सुरकाज भरतके हाथा ॥

---

१ पुण्यात्मा भगवान् । २ नानाप्रकारके पाप माया । ३ सम्पूर्णविश्व । ४ दुविधा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आन उपाय न देखिय देवा * मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हिय सप्रेम सेवहिं सब भरताहिं * निजगुण शील रामवश करताहिं॥
दोहा–सुनि सुरमत[1] सुरगुरु[2] कहउ, भल तुम्हार बड़ भाग ॥
सकल सुमंगल मूल जग, भरत चरण अनुराग ॥ २६३ ॥
सीतापति सेवक सेवकाई * कामधेनु शत सरित सुहाई ॥
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई * तजहु शोच विधि बात बनाई ॥
देखु देवपति भरत प्रभाऊ * सहज स्वभाव विवश रघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरताहि जानि राम परिछाहीं ॥
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत शोचू * अन्तर्यामी प्रभुहि सँकोचू ॥
निज शिर भार भरत जिय जानी * करत कोटि विधि उर अनुमानी॥
करि विचार मन दीन्हो टीका * राम रजायसु आपनि नीका ॥
निज प्रणतजि राखेउ प्रणमोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ॥
दोहा–कीन्ह अनुग्रह[3] अमित अति, सब विधि सीतानाथ ॥
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलज[4] युगहाथ ॥ २६४ ॥
कहउँ कहावउँ का अब स्वामी * कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहब अनुकूला * मिटी मलिन मन कल्पित शूला॥
अपडर डरउँ न शोच समूले[5] * रविहि न दोष देव दिशि भूले ॥
मोर अभाग मातु कुटिलाई * विधिगति विषम काल कठिनाई॥
पाँवरोपि सब मिलि मोहिं घाला * प्रणतपाल प्रण आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु वेद विदित नाहिं गोई ॥
जग अनभल भल एक गुसांई * कहियहोइ भलकासु भलाई ॥
देव देव[6]तरु सरिस स्वभाऊ * सन्मुख विमुख नकाहुहि काऊ॥
दोहा- जाइनिकट पहिंचानि तरु, छाँह शमन सब शोच ॥
मांगत अभिमत पाव फल, राउ रंक भल पोच ॥ २६५ ॥

१ देवतोंकामत । २ वृहस्पति । ३ कृपा । ४ कमलरूपीदोनोंहाथ । ५ संपूर्ण । ६ कल्पवृक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि सब विधि गुरुस्वामिसनेहू * मिटेउ क्षोभ नहिं मन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजिय सोई * जनहितप्रभुचित क्षोभ न होई ॥
जो सेवक साहब संकोची * निजहित चहै तासु मतिपोची ॥
सेवक हित साहब सेवकाई * करै सकल सुख लोभ विहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका * किये रजाइ कोटि विधि नीका ॥
यह स्वारथ परमारथ सारू * सकल सुकृत फल सुगति शृँगारू ॥
देव एक विनती सुनि मोरी * उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलक समाज साजि सब आना * करिय सफल प्रभु जो मनमाना ॥

दोहा—सानुज पठइय मोहिं वन, कीजिय सबहि सनाथ ॥
नातरु फेरिय बन्धुदोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥ २६६ ॥

नतरु जाहिंबन तीनिउँ भाई * बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहिविधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुणासागर कीजिय सोई ॥
देवदीन्ह सब मोपर भारू * मोरे नीति न धर्म विचारू ॥
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू * रहत न आरतके चितचेतू ॥
उतरदेइ विनु स्वामि रजाई * सो सेवक लखि लाज लजाई ॥
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपालु मोहिं सोमत भावा * सकुच स्वामि मनजाइ नपावा ॥
प्रभु पद शपथ कहौं सतिभाऊ * जग मंगल हित एक उपाऊ ॥

दोहा—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जोज्यहि आयसु देव ॥
सो शिर धरि धरि करहिं सब, मिटिहि अनट अवरेव ॥ २६७

भरत वचन शुचि सुनि हिय हरषे * साधु सराहि सुमन[2] सुर वरषे ॥
असमंजस वश अवधनिवासी * प्रमुदित मन तापस वनवासी ॥
चुपरहिगे रघुनाथ सकोची * प्रभुगति देखि सभा सबशोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आवा * मुनि वशिष्ठ सुनि वेगिबुलावा ॥

१ नीच । २ पुष्प ।

In Public Domain, Gharibdas Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करि प्रणाम तिन राम निहारे * वेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिवर पूंछी बाता * कहहु विदेहू भूप कुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरबर जोरे हाथा ॥
बूझव राउर सादर साईं * कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं ॥
दोहा—नाहित कोशलनाथ के, साथ कुशल गै नाथ ॥
मिथिला अवध विशेष ते, जग सब भयउ अनाथ ॥ २६८ ॥
कोशलपति गति सुनि जन कौरा * भे सब लोग शोच वश वौरा ॥
जेहि देखा तेहि समय विदेहू * नाम सत्य अस लाग नकेहू ॥
नारि कुचालि सुनत महिपाले *सूझ न कछु जसमणिं विनुव्याले॥
भरत राज्य रघुवर वनवासू * भामिथिलेशहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू * कहहु विचारि उचित का आजू॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ * चलिय कि रहिय न कहकछुकोऊ
नृपति धीर धरि हृदय विचारी * पठये अवध चतुर चरचारी ॥
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ * आयहु वेगि न होइ लखाऊ ॥
दोहा—गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति ॥
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति ॥ २६९ ॥
दूतन आइ भरतकी करणी * जनक समाज यथामति वरणी ॥
सुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति* भेसबशोच सनेह विकल मति ॥
धरि धीरज करि भरत बडाई * लिये सुभट साहनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे * हय गज रथ बहु यान सँवारे ॥
दुघडी साधि चले ततकाला * किय विश्राम न मगु महिपाला ॥
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा * चले यमुन उतरन सब लागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा * तिन्हकहि अस महिनायउ माथा॥

१ राजाजनकजीकी । २ धावन । ३ राजादशरथ । ४ जनकपुरी । ५ स्वामीहीन । ६ मिथिलापुरी । ७ सेनापति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साथ किरात छसातक दीन्हें * मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हें ॥
दोहा—सुनत जनक आगमन सब, हर्ष्यउ अवध समाज ॥
रघुनन्दनहिं सकोच बड़, शोच विवश सुरराज ॥ २७० ॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेयी * काहि कहै क्यहि दूषण देई ॥
अस मन आनि मुदित नरनारी * भयउ बहोरि रहब दिनचारी ॥
इहि प्रकार गत बासर सोऊ * प्रात अन्हान लगे सब कोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नरनारी * गणपति गौरि पुरारि[1] तमारी ॥
रमा रमण पद वन्दि बहोरी * विनवहिं अंचल अंजलि जोरी ॥
राजा राम जानकी रानी * आनँद[4] अवधि अवध रजधानी ॥
सुबसबसैं फिरि सहित समाजा * भरतहि राम करैं युवराजा ॥
इहि सुख सुधा सींचि सब काहू * देव देहु जग जीवन लाहू ॥
दोहा—गुरु समाज भाइन सहित, राम राज पुरहोउ ॥
अछत राम राजा अवध, मरिय माँगु सब कोउ ॥ २७१ ॥
सुनि सनेह मय पुरजन वानी * निंदहिं योग विरति मुनि ज्ञानी ॥
इहि विधि नित्य कर्मकरि पुरजन * रामहिं करहिं प्रणाम पुलकि तन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी * लहैं दरश निज निज अनुहारी ॥
सावधान सबही सन्मानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
लरकाईते रघुवर वानी * पालत प्रीति रीति पहिंचानी ॥
शील सकोच सिन्धु रघुराऊ * सुमुख सुलोचन सरल स्वभाऊ ॥
कहत राम गुण गण अनुरागे * सब निज भाग्य सराहन लागे ॥
हम सब पुण्यपुंज[3] जग थोरे * जिनहिं राम जानत करिमोरे ॥
दोहा—प्रेममगन[4] तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेश ॥
सहित सभा संभ्रम उठे, रविकुल कमल दिनेश[5] ॥ २७२ ॥
आगे गमन कीन्ह रघुनाथा * भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ॥

---

१ महादेव । २ सूर्यनारायण । ३ पुण्यसमूह । ४ आनन्द । ५ सूर्य्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरिवर दीख जनक नृप जबहीं * करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं ॥
रामदरश लालसा उछाहू * पथ श्रम लेश कलेश न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही * विनुमन तन दुख सुख सुधि केही
आवत जनक चले इहि भांती * सहित सनेह प्रेम मद माती ॥
आये निकट देखि अनुरागे * सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनक मुनिगण पद वन्दन * ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन ॥
भाइन सहित राम मिलि राजहिं * चले ल्यवाय समेत समाजहिं ॥

दोहा–आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ ॥
सैन मनहुँ करुणा सरित, लिये जात रघुनाथ ॥ २७३ ॥

बोरति ज्ञान विराग करारे * वचन सशोक मिलत नदिनारे ॥
शोच उसास समीर तरंगा * धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥
विषम विषाद तुरावति धारा * भय भ्रम भँवरावर्त्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बडिनावा * सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ॥
वनचर कोल्ह किरात विचारे * थके विलोकि पथिक हियहारे ॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई * मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
शोक विकल दोउ राज समाजा * रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुण शील सराही * शोचहिं शोक सिन्धु अवगाही ॥

छंद–अवगाहि शोक समुद्र शोचहिं नारि नर व्याकुलमहा ॥
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्ह्यो कहा ॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनि दशा देखि विदेहकी ॥
तुलसी न समरथ कोउ जो तरिसकै सरित सनेहकी ॥१२॥

सोरठा–किये अमित उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिवरन ॥
धीरज धरिय नरेश, कह्यउ वशिष्ठ विदेहसन ॥ ११ ॥

जासु ज्ञान रवि भवनिशि नाशा * वचन किरणमुनि कमल विकाशा ॥
तेहिकि मोह महिमा नियराई * यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विषयी साधक सिद्ध सयाने * त्रिविधजीव जग वेद बखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू * साधु सभा बड़ आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम विनु ज्ञाना * कर्णधार विनु जिमि जलयाना ॥
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये * रामघाट सब लोग अन्हाये ॥
सकल शोक संकुल नर नारी * सो वासर वीत्यउ विनु वारी ॥
पशु खग मृगन न कीन्ह अहारा * प्रिय परिजन कर कवन विचारा ॥

दोहा—दोउ समाज निमिराज रघु, राज नहाने प्रात ॥
बैठे सब वट विटप तर, मन मलीन कृशगात ॥ २७४ ॥

जे महिसुर दशरथ पुरवासी * जे मिथिलापति नगर निवासी ॥
हंसवंश[2]गुरु जनक[5]पुरोधा * जिन्ह जगमग परमारथ शोधा ॥
लगे कहन उपदेश अनेका * सहित धर्म नय विराति विवेका ॥
कौशिक[4] कहिकहि कथा पुरानी * समझाई सब सभा सुवानी ॥
तब रघुनाथ कौशिकहि कह्यऊ * नाथ कालि विनु जल सब रह्यऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई * गयउ बीति दिन पहर अढाई ॥
ऋषि रुख लखि कह तिरहुति[1]राजू * इहाँ उचित नहिं असन[6] अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना * पाय रजायसु चले नहाना ॥

दोहा—त्यहिअवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ॥
लै आये वनचर विपुल, भरिभरि काँवरि भार ॥ २७५ ॥

कामद भो गिरि राम प्रसादा * अवलोकत अपहरत विषादा ॥
सर सरिता वन भूमि विभागा * जनु उमँगत आनँद अनुरागा ॥
वेलि विटप सब सफल सफूला * बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
त्यहि अवसर वन अधिक उछाहू * त्रिविध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न वरणि मनोहर ताई * जनुमहि करति जनक पहुनाई ॥

---

१ मांझी-केवट । २ सूर्यवंशगुरुवशिष्ठमुनि । ३ शतानंद । ४ विश्वामित्र ।
५ राजा जनक । ६ भोजन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सब लोग नहाइ नहाई * राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल फूल कन्द विधि नाना * पावन सुन्दर सुधा समाना ॥

दोहा—सादर सब कहँ राम गुरु, पठये भरि भरि भार ॥
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥२७६॥

इहिविधि वासर वीते चारी * राम निरखि नरनारि सुखारी ॥
दुहुँसमाज अस रुचि मन माहीं * विनुसिय राम फिरब भल नाहीं॥
सीता राम संग वनवासू * कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि[1] लषण राम वैदेही * ज्यहि घर भाव वाम विधि तेही॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं * राम समीप वासिय वन तबहीं ॥
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँकाला * राम दरश मुद[2] मंगल माला ॥
अटन रामगिरि वन तापस थल * अशन[3] अमियसम[4] कन्द मूलफल॥
सुख समेत संवत दुइ साता * पलसम होहिं न जानिय जाता ॥

दोहा—इहि सुख योग न लोग सब, कहहिं कहां अस भाग ॥
सहज स्वभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग[5] ॥ २७७॥

इहिविधि सकल मनोरथ करहीं * वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीय मातु तिहि समय पठाई * दासी देखि सुअवसर आई ॥
सावकाश सुनि सब सिय सासू * आईं जनक राज रनिवासू ॥
कौशल्या सादर सन्मानी * आसन दीन्ह समय सम आनी ॥
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा * द्रवहिं[6] देखसुनि कुलिश[7] कठोरा ॥
पुलक शिथिल तनुवारि विलोचन * महि नख लिखन लगीं सबशोचन
सब सिय राम प्रेमकी मूरति * जनु करुणा बहु रूप विसूरति ॥
सीर्य मातु कह विधि बुधि बांकी[8] * जो पयफेनु फोरि पैवि[9] टांकी[10] ॥

---

१ त्यागकर । २ प्रसन्नताकासमूह । ३ भोजन । ४ अमृततुल्य । ५ प्रीति । ६ पिघलतेहैं । ७ वज्र-पत्थर । ८ सुनयना । ९ टेढी । १० वज्रकीटांकी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ॥
जहँ तहँ काक उलूक वक, मानस सुकृत मराल ॥ २७८ ॥
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा * विधिगति अति विपरीत[1] विचित्रा॥
जो सृजि पालै हरै बहोरी * बाल केलि सम विधि मति भोरी॥
कौशल्या कह दोष न काहू * कर्म्म विवश दुख सुख क्षति[2] लाहू॥
कठिन कर्म्मगति जान विधाता * सो शुभ अशुभ कर्म्म फलदाता॥
ईश रजाइ शीश सबहीके *उतपति थिति लय विषय अमीके॥
देवि मोहवश शोचियवादी *विधि प्रपंच अस अचल अनादी॥
भूपति जियब मरब उर आनी *शोचियसखिलखिनिजहितहानी ॥
सीय मातु कह सत्य सुवानी * सुकृती अवधि अवधपति रानी ॥
दोहा-लषण राम सिय जाहिं वन, भलपरिणाम नपोच ॥
गहबरि हिय कह कौशला, मोहिं भरतकर शोच ॥ २७९ ॥
ईश प्रसाद अशीष तुम्हारी * सुत सुत वधू देवसरि वारी ॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ * सो करि सखी कहौं सतिभाऊ ॥
भरत शील गुण विनय बडाई * भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत शारदहु कै मति हीचे * सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानौ सदा भरत कुलदीपा * बार बार म्वहिं कहेउ महीपा ॥
कसे कनक मणि पारस पाये * पुरुष परखिये समय स्वभाये ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा * शोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनि वानी * भई सनेह विकल सबरानी ॥
दोहा-कौशल्या कह धीरधरि, सुनहु देवि मिथिलेशि ॥
को विवेकनिधि[5] वल्लभहि[6], तुमहिं सकै उपदेशि ॥ २८० ॥
रानि रायसन अवसर पाई * आपनि भांति कहब समुझाई ॥
राखिय लषण भरत गवनहिं वन * जो यह मत मानै महीपमन ॥

१ उलटी । २ हानि । ३ लाभ । ४ मर्यादा । ५ ज्ञानकेसमुद्र । ६ प्रिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तौ भल यतन करब सुविचारी * मोरे शोच भरत कर भारी ॥
गूढ सनेह भरत मन माहीं * रहे नीक मोहिं लागत नाहीं ॥
लखि स्वभाव सुनि सरल सुवानी * सब भइँ मगन करुणरससानी ॥
नभप्रसून[1] झरि धन्य धन्य धुनि * शिथिल सनेह सिद्ध योगीमुनि ॥
सब रनिवास थकित लखि रह्यऊ * तब धरिधीर सुमित्रा कह्यऊ ॥
देवि दण्डयुग[2] यामिनि[3] बीती * राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दोहा–वेगि पाँय धारिय थलहि, कह सनेह सतिभाय ॥
हमरे तौ अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय ॥ २८१ ॥

लखि सनेह सुनि वचन विनीता * जनक प्रिया गहि पाँव पुनीता ॥
देवि उचित अस विनय तुम्हारी * दशरथ घरनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अग्नि धूम गिरि शिर तृण धरहीं ॥
सेवक राउ कर्म मन वानी * सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरे अंग योग जग कोहै * दीपसहाय कि दिनकर सोहै ॥
राम जायवन करि सुरकाजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
अमर नाग नर राम बाहुबल * सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा * देवि नहोइ मृषा मुनि भाषा ॥

दोहा–असकहि पगु परि प्रेम अति, सियहित विनय सुनाइ ॥
सिय समेत सिय मातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥ २८२ ॥

प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही * जो ज्याहि योग भांति तसतेही ॥
तापस वेष जानकिहि देखी * भे सब विकल विषाद विशेषी ॥
जनक राम गुरु आयसु पाई * चले थलहि सिय देखीआई ॥
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावनि प्रेम प्रानकी ॥
उर उमग्यउ अम्बुधि अनुरागू * भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू ॥
सिय सनेह वट वाढत जोहा * तापर राम प्रेम शिशु सोहा ॥

---

१ आकाशसेपुष्पोंकीवर्षा । २ दोपहर । ३ रात्रि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिरंजीवि[1] मुनि ज्ञान विकल जनु * बूडत लह्यउ बाल अवलम्बनु ॥
मोह मगन मति नाहिं विदेहकी * महिमा सिय रघुवर सनेहकी ॥
दोहा–सिय पितु मातु सनेह वश, विकल न सकी सँभारि ॥
धरणिसुता[2] धीरज धरयउ, समय सुधर्म विचारि ॥ २८३ ॥
तापस वेष जनक सिय देखी * भयउ प्रेम परितोष विशेषी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ * सुयशधवल[3] जग कह सब कोऊ॥
जिमिं सुरसरि कीरति सरितोरी * गवन कीन्ह विधि अण्ड करोरी॥
गंग अवनि थल तीनि बडेरे * इहिकिय साधु समाज घनेरे ॥
पितुकह सत्य सनेह सुवानी * सीय सकुचि मन मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई * सिख आशिष हित दीन्ह सुहाई॥
कहति न सीय सकुच मन माहीं * इहां वसब रजनी भलनाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ * हृदय सराहत शील स्वभाऊ ॥
दोहा–बार बार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि ॥
कही समय सम भरत गति, रानि सुअवसर जानि ॥२८४ ॥
सुनि भूपाल भरत व्यवहारू * सोन सुगन्ध सुधा शशि सारू ॥
मूंदे सजल नयन पुलके तन * सुयशसराहन लगे मुदितमन ॥
भरत कथा भव[4] बन्ध विमोचनि * सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि॥
धर्मराज नय ब्रह्म[6] विचारू * यहां यथामति मोर प्रचारू[8] ॥
सोमति मोरि भरत महिमाहीं * कहौं काह छलि छुअति नछाहीं॥
विधि गणपति अहिपति[7] शिवशारद* कविकोविदबुध बुद्धि विशारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती * धर्मशील गुण विमल विभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू * शुचिसुरसरि रुचिनिदरि सुधाहू॥
दोहा–निरवधि[9] गुण निरुपम[10] पुरुष, भरत भरतसम जानि ॥

---

१ मार्कण्डेय । २ जानकीजी । ३ उज्ज्वल । ४ संसारबन्धनको नाशकरनेहारी । ५ वेदांतशास्त्र । ६ विचार । ७ शेष । ८ प्रवीण । ९ मर्यादा रहित । १० उपमारहित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कही सुमेरु सुमेरुसम, कविकुलमतिसकुचानि ॥ २८५ ॥
अगम सबहिं वर्णत वर वरणी * जिमि जलहीन मीन गण धरणी ॥
भरत अमित महिमा सुनुरानी * जानहिं राम न सकहिं वखानी ॥
वरणि सप्रेम भरत सतभाऊ * तिय जियकी रुचिलखिकहराऊ॥
बहुरहिं लषण भरत वन जाहीं * सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देवि परन्तु भरत रघुवरकी * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरत सनेह अवधि ममताके * यद्यपि राम सींव समताके ॥
परमारथ स्वारथ सुखसारे * भरत न स्वप्नेहु मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि राम पद नेहू * मोहिं लखि परत भरत मत येहू ॥
दोहा–भोरचहु भरत न पेलिहहिं, मनमहँ राम रजाय ॥
करिय न शोच सनेह वश, कह्यहु भूप बिलखाय ॥ २८६ ॥
राम भरत गुण कहत सप्रीती * निशि दम्पतिहि पलक सम वीती॥
राज समाज प्रात युग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई * वन्दि चरण बोले रुखपाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी * शोच विकल वनवास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेशू * बहुत दिवस भे सहत कलेशू ॥
उचित होय सो कीजिय नाथा * हित सबहीकर रौरे हाथा ॥
असकहि अति सकुचे रघुराऊ * मुनि पुलके लखि शील स्वभाऊ॥
तुमविनु राम सकल सुख साजा * नरक सरिस दुहुँ राज समाजा ॥
दोहा–प्राण प्राणके जीवके, जिय सुखके सुख राम ॥
तुम तजि तात सोहात गृह, जिनहिंतिनहिंविधिवाम॥२८७॥
सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ * जहँ न राम पदपंकज भाऊ ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू * जहां न राम प्रेम परधानू ॥
तुम विन दुखी सुखी तुमतेही * तुमजानहु जिय जो जेहि केही ॥

१ प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान, ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राउर आयसु शिर सबहीके * विदित कृपालुहिं गति सबनीके॥
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ * भये सनेह शिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रणाम तब रामसिधाये * ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये॥
राम वचन गुरु नृपहि सुनाये * शील सनेह स्वभाव सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई * सबकर धर्म सहित हित होई ॥

दोहा–ज्ञान निधान सुजान शुचि, धर्मधीर नरपाल ॥
तुमविनु असमंजस शमन, को समर्थ इहिकाल ॥ २८८ ॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे * लखि गति ज्ञान विराग विरागे ॥
शिथिल सनेह गुणतमनमाहीं * आये इहां कीन्ह भलनाहीं ॥
रामहिं राय कह्यउ वनजाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना ॥
हम अब वनते वनहिं पठाई * प्रमुदित फिरब विवेक बढ़ाई ॥
तापस मुनि महि सुरगति देखी * भये प्रेम वश विकल विशेषी ॥
समय समुझि धरिधीरज राजा * चले भरत पहँ सहित समाजा ॥
भरत आय आगे ह्वैलीन्हा * अवसर सरिस सुआसन दीन्हा॥
तात भरत कह तिरहुति राऊ * तुमहिं विदित रघुवीर सुनाऊ ॥

दोहा–राम सत्यव्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ॥
शंकट सहत सकोच वश, करिय जो आयसु देहु ॥ २८९ ॥

सुनि तनु पुलकि नयन भरिवारी * बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू * कुलगुरु समहित माय न बापू॥
कौशिकादि मुनिसचिव समाजू * ज्ञान अंबुनिधि आपुन आजू ॥
शिशु सेवक आयसु अनुगामी * जानि मोहिं सिख देइय स्वामी॥
इहि समाज थल बूझव राउर * मन मलीन मैं बोलव बाउर ॥
छोटे वदन कहौं बड़िबाता * क्षमवतात लखि वाम विधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवा धर्म्म कठिन जगजाना ॥

१ त्रिकालज्ञ । २ ज्ञानकेसमुद्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वामि धर्म्म स्वारथहि विरोधू * बधिर अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
दोहा—राखि रामरुख धर्म्म व्रत, पराधीन म्वहिं जान ॥
सबके सम्मत सर्वहित, करिय प्रेम पहिचान ॥ २९० ॥
भरत वचन सुनि देखि स्वभाऊ * सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदुमंजु कठोरा * अर्थ अमित अति आखर थोरा॥
ज्योंमुख मुकुर मुकुर निज पाणी * गहिनजाय अस अद्भुत वाणी ॥
भूप भरत मुनि साधु समाजू * गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू ॥
सुनि सुधि शोच विकल सबलोगा* मनहुँ मीन गण नव जल योगा ॥
दव प्रथम कुलगुरु गति देखी * निरखि विदेह सनेह विशेषी ॥
राम भक्ति मय भरत निहारे * सुर स्वारथी हहरि हियहारे ॥
सब कहँ राम प्रेम मयपेखा * भये अलेख शोच वश लेखा ॥
दोहा—राम सनेह सकोच वश, कह सशोच सुरराज ॥
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिंत भयउ अकाज ॥ २९१ ॥
सुरन सुमिरि शारदा सराही * देवि देव शरणागत पाही ॥
फेरि भरत मति करि निज माया * पाल विबुध कुल करि छल छाया॥
विबुध विनय सुनि देवि सयानी * बोली सुर स्वारथ जड जानी ॥
मोसन कहहु भरत मति फेरू * लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
विधि हरि हर माया बडि भारी * सो न भरत मति सकै निहारी ॥
सोमति मोहिं कहत करुभोरी * चाँदिनि कर किचन्द्र कर चोरी॥
भरत हृदय सिय राम निवासू * तहँकितिमिर[2] जहँतरणि[3] प्रकाशू ॥
असकहि शारद गइ विधि लोका* विबुध विकलनिशिमानहुँकोका[4] ॥
दोहा—सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम अरत उचाट ॥ २९२ ॥
करि कुचाल शोचत सुरराजू * भरत हाथ सब काज अकाजू ॥

---

१ श्रीरामचंद्र-चन्द्र । २ अन्धकार । ३ सूर्यनारायण । ४ चकई-चकवा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये जनक रघुनाथ समीपा * सनमाने सब रघुकुल दीपा ॥
समय समाज धर्म अविरोधा * बोले तब रघुवंश पुरोधा ॥
जनक भरत सम्बाद सुनाई * भरत कहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू * सो सब करैं मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी * बोले सत्य सरल मृदुवाणी ॥
विद्यमान आपुन मिथिलेशू * मोर कहा सब भाँति भदेशू ॥
राउरराय रजायसु होई * राउरि शपथ सही शिर सोई ॥

दोहा—रामशपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभा समेत ॥
सकल विलोकहिं भरत मुख, बनै न उत्तरदेत ॥ २९३ ॥

सभा सकुच वश भरत निहारी * रामबन्धु धरि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा * बढतविन्ध्य जिमि घटज निवारा॥
शोक कनक लोचन मति क्षोनी * हरी विमल गुण गण जग योनी ॥
भरत विवेक बराह विशाला * अनायास उघरे तेहि काला ॥
करि प्रणाम सबकह करजोरी * राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
क्षमब आजु अति अनुचित मोरा * कहउँ वदन मृदु वचन कठोरा ॥
हिय सुमिरी शारदा सुहाई * मानसते मुख पंकज आई ॥
विमल विवेक धर्मनयसाली * भरत भारती मंजु मराली ॥

दोहा—निरखि विवेक विलोचनहिं, शिथिल सनेह समाज ॥
करि प्रणाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥ २९४ ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी* पूज्य परम हित अन्तर्यामी ॥
सरल सुसाहिव शीलनिधानू * प्रणतपाल सर्वज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागत हितकारी * गुणग्राहक अवगुण अघहारी ॥
स्वामि गुसाँइहिं सदृश गुसाई * मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई ॥
प्रभु पितु वचन मोहवश पेली * आयउँ इहां समाज सकेली ॥

---

१ वशिष्ठजी । २ मोती । ३ वाणी-सरस्वती ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जगभल पोच ऊंच अरु नीचू * अमी अमरपद माहुर मीचू ॥
रामरजाइ मेटि मन माहीं * देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सोमैं सब विधि कीन्ह ढिठाई * प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दोहा–कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ॥
दूषणभे भूषण सरिस, सुयश चारु चहुँओर ॥ २९५ ॥

राउर रीति सुवाणि बडाई * जगत विदित निगमागम गाई ॥
कूरकुटिलखल कुमति कलंकी * नीच निशील निरीशनिशंकी ॥
तेउ सुनि शरण सामुहे आये * सुकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुँन उर आने * सुनि गुण साधु समाज वखाने ॥
को साहेब सेवकहि नेवाजी * आपु समान साज सब साजी ॥
निज करतूति न समुझिय सपने * सेवक सकुच शोच उर अपने ॥
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं प्रणरोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना * गुण गति नट पाठक आधीना ॥
दोहा–सो सुधारि सन्मानि जन, किये साधु शिरमोर ॥
कोकृपालु विनु पालिहै, विरदावलि वरजोर ॥ २९६ ॥

शोक सनेह कि बाल स्वभाये * आयसु लाइ रजायसु पाये ॥
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा * सबहिं भांति भल मानेहु मोरा ॥
देखेउँ पाँइ सुमंगल मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
बडे समाज विलोकेउँ भागू * बडी चूक साहिब अनुरागू ॥
कृपाअनुग्रह अंबु अघाई * कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गुसाँई * अपने शील स्वभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई * स्वामि समाज सकोच विहाई ॥
अविनय विनय यथा रुचि वानी * क्षमिय देव अति आरति जानी ॥
दोहा–सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि ॥
आयसु देइय देव अब, सबै सुधारिय मोरि ॥ २९७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभुपद पद्म पराग दुहाई * सत्य सुकृत सुखसींव सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपनेकी * रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथ छल फल चारि विहाई ॥
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा * सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
असकहि प्रेम विवशभे भारी * पुलक शरीर विलोचन[1] वारी ॥
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई * समय सनेह न सो कहिजाई ॥
कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी * बैठाये समीप गहिपाणी ॥
भरत विनय सुनि देखि स्वभाऊ * शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

छंद–रघुराउशिथिलसनेहसाधु समाजमुनिमिथिलाधनी ॥
मनमहँ सराहत भरत भायप भक्तिकी महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध वरषत सुमन मानस मलिनसे ॥
तुलसी विकलसब लोग सुनि सकुचे निशागम[3] नलिन[4]से ॥ १३

सो०–देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ॥
मघवा[5] महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥ १२ ॥

कपट कुचालि सींव सुरराजू * पर अकाज प्रिय आपनकाजू ॥
काक समान पाकरिपु[6] रीती * छली मलीन न कतहुँ प्रतीती ॥
प्रथम कुमति करि कपट सकेला * सो उचाट सबके शिरमेला ॥
सुरमाया सब लोग विमोहे * राम प्रेम अतिशय न विछोहे ॥
भय उचाट सब मन थिरनाहीं * क्षण वन रुचि क्षण सदन सुहाहीं ॥
दुविध मनोगति प्रजा दुखारी * सरिस सिंधु संगम जिमि वारी ॥
दुचित कतहुँ परितोष[7] न लहहीं * एकएकसन मर्म[8] न कहहीं ॥
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू * सरिस श्वान मघवा निजवानू ॥

दोहा–भरत जनक मुनिगण सचिव, साधु सचेत विहाइ ॥

---

१ नेत्र । २ जल । ३ रात्रि । ४ कमल । ५ इन्द्र । ६ यज्ञ-वासव । ७ संतोष । ८ भेद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगी देवमाया सबहिं, यथायोग्य जन पाइ ॥ २९८ ॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे * निज सनेह सुरपति छल भारे ॥
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री * भरत भक्ति सबकी मति यंत्री ॥
रामहि चितवत चित्र लिखेसे * सकुचत बोलत वचन सिखेसे ॥
भरत प्रीति नित विनय बड़ाई * सुनत सुखद वर्णत कठिनाई ॥
जासु विलोकि भक्तिलवलेशू * प्रेम मगन मुनिगण मिथिलेशू ॥
महिमा तासुकहै किमितुलसी * भक्तिप्रभाव सुमति हियहुलसी ॥
आपु छोट महिमा बडिजानी * कविकुलकानि मानि सकुचानी ॥
कहि नसकत गुणरुचि अधिकाई * मतिगति बाल वचनकी नाई ॥
दोहा—भरत विमलयश विमलविधु, सुमति चकोरकुमारि ॥
उदित विमल जन हृदय नभ, इकटक रही निहारि ॥२९९॥
भरत स्वभाव नसुगम निगमहू * लघुमति चापलता कविक्षमहू ॥
कहत सुनत सतिभाव भरतको * सीय राम पद होइ न रतको ॥
सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको * ज्यहिन सुलभ त्यहि सम नवामको
देखि दयालु दशा सबहीकी * राम सुजान जानि जनजीकी ॥
धर्मधुरीण धीर नयनागर * सत्य सनेह शील सुखसागर ॥
देश काल लखि समय समाजू * नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
बोले वचन वाणि सरवससे * हित परिणाम सुनत शशिरससे ॥
तात भरत तुम धर्मधुरीणा * लोक वेदविधि परम प्रवीणा ॥
दोहा—कर्म्म वचन मानस विमल, तुम समान तुम तात ॥
गुरु समाज लघुबन्धु गुण, कुसमय किमि कहिजात ॥ ३०० ॥
जानहु तात तरणि कुलरीती * सत्यसिन्धु पितु कीरति कीती ॥

---

१ निर्म्मल चन्द्र । २ देश कही श्रीचित्रकूट वन अरु इहां काल कही जिसमें सर्वजीवकर हितकार होइ अरु समय कही जो भरतजू आयसु मांगैहैं तहिके अनुकूल अरुसमाज कही सबके दुःख निवृत्ति हेतु ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समय समाज लाज गुरुजनकी * उदासीन हित अनहित मनकी ॥
तुमहिं विदित सबहीकर मरमू * आपन मोर परम हित धरमू ॥
मोहिं सब भांति भरोस तुम्हारा * तदपि कहौं अवसर अनुसारा ॥
भरत तात विनु बात हमारी * केवल कुलगुरु कृपा तुम्हारी ॥
भरतु प्रजा पुरजन परिवारू * हमहिं सहित सब होत दुखारू ॥
जो विनुअवसर अथवदिनेशू * जगकेहि कहौ न होइ कलेशू ॥
तस उत्पात तात विधि कीन्हा * मुनि मिथिलेश राखि सब लीन्हा ॥
दोहा—राज काज सब लाजपति, धर्म धरणि धन धाम ॥
गुरु प्रभाव पालिहि सबहि, भल होइहि परिणाम ॥ ३०१ ॥
सहित समाज तुम्हार हमारा * घर वन गुरु प्रसाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू * सकल धर्म धरणीधर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू * तात तरणि कुलपालक होहू ॥
साधक एक सकल सिधि देनी * कीरति सुगति भूतिमय वेनी ॥
सो विचारि सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥
बांटि विपति सबही मिलिभाई * तुमहिं अवधि भरि अति कठिनाई
जानि तुमहि मृदु कहौं कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥
होहिं कुठांव कुबन्धु सुहाये * ओडिय हाथ अशनिके घाये ॥
दोहा—सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहिब होइ ॥
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥ ३०२ ॥
सभा सकल सुनि रघुवर वानी * प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी ॥
शिथिल समाज सनेह समाधी * देखि दशा चुप शारद साधी ॥
भरतहि भयउ परम संतोषू * सन्मुख स्वामि विमुख दुखदोषू ॥
मुखप्रसन्न मन मिटा विषादू * भा जनु गुंगहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी * बोलेपाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको * लह्यउ लाभ जगजन्म भयेको ॥
अब कृपालु जस आयसु होई * करौं शीश धरि सादर सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो अवलंब देव म्वहि देई * अवधि पार पावउँ जेहि सेई ॥
दोहा–देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुशासन पाइ ॥
आन्यउँ सब तीरथ सलिल, त्यहिकहँ काह रजाइ ॥ ३०३ ॥
एक मनोरथ बड़ मन माहीं * सभय सकोच जात कहि नाहीं ॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई * बोले वाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट मुनि थल तीरथ वन * खग मृग सर सरि निरझर गिरिगन ॥
प्रभु पद अंकित अवनि विशेषी * आयसु होय तो आवों देखी ॥
अवाशि अत्रि आयसु शिरधरहू * तात विगत भय कानन चरहू ॥
मुनि प्रसाद वन मंगल दाता * पावन परम सोहावन भ्राता ॥
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं * राखेहु तीरथ जल थल तेहीं ॥
सुनि प्रभु वचन भरत सुखपावा * मुनिपद कमल मुदित शिरनावा ॥
दोहा–भरत राम सम्वाद सुनि, सकल सुमंगल मूल ॥
सुरस्वारथी सराहि कुल, हर्षित वरषहिं फूल ॥ ३०४ ॥
धन्य भरत जय राम गुसाईं * कहत देव हर्षत बरिआई ॥
मुनि मिथिलेश सभा सब काहू * भरत वचन सुनि भयउ उछाहू ॥
भरत राम गुण ग्राम सनेहू * पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू ॥
सेवक स्वामि स्वभाव सुभावन * नेम प्रेम अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत सम्वादू * दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू ॥
राममात दुख सुख सम जानी * कहि गुण दोष प्रबोधी रानी ॥
एक करहिं रघुवीर बड़ाई * एक सराहत भरत भलाई ॥
दोहा–अत्रि कह्यउ तब भरतसन, शैल समीप सुकूप ॥
राखिय तीरथ तोयँ तहँ, पावन अमल अनूप ॥ ३०५ ॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई * जलभाँजन सब दिये चलाई ॥

१ चौहदवर्ष । २ आज्ञा । ३ पृथ्वी । ४ पानी । ५ उपमारहित । ६ आज्ञा । ७ बर्तन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सानुज आपु अत्रिमुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुण्य थल राखा * प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥
तात अनादि सिद्धि थल येहू * लोप्यउ काल विदित नहिं केहू ॥
तबसेवकन्ह सरस थल देखा * कीन्ह सुजल हित कूप विशेषा ॥
विधिवश भयउ विश्व उपकारू * सुगम अगम अति धर्म विचारू ॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा * अति पावन तीरथ जल योगा ॥
प्रेम समेत निमज्जहिं प्राणी * होइहि विमल कर्म मन वाणी ॥

दोहा-कहत कूप महिमा सकल, गये जहां रघुराउ ॥
अत्रि सुनायहु रघुवरहि, तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥ ३०६ ॥

कहत धर्म इतिहास सप्रीती * भयउ भोर निशि सो सुखवीती ॥
नित्य निवाहि भरत दोउ भाई * राम अत्रि गुरु आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सब सादे * चले राम वन अटन पयादे ॥
कोमल चरण चलत विनु पनहीं * भैमृदु भूमि सकुचि मनमनहीं ॥
कुश कंटक कांकरी कुराई * कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे * वहत समीरै त्रिविध सुखलीन्हे ॥
सुमन वरषि सुर घन करि छाहीं * विटपे फूलि फल दल मृदुताहीं॥
मृग विलोकि खँग बोलि सुवानी * सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ॥

दोहा-सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ॥
राम प्राण प्रिय भरत कहँ, यह नहोइ बड़िबात ॥ ३०७ ॥

इहि विधि भरत फिरत वनमाहीं * नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुण्य जलाशय भूमि विभागा * खग मृग तरु तृण गिरि वन बागा॥
चारु विचित्र पवित्र विशेषी * बूझत भरत दिव्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदित कहतऋषिराऊ * हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥

---

१ बडाई । २ कोमल । ३ वायु, शीतल, मंद, सुगंध सहित । ४ पुष्प ।
५ पेड । ६ हरिण । ७ पक्षी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा * कतहुँ विलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई * सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि स्वभाव सनेह सुसेवा * देहिं अशीश मुदित वनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढाई * प्रभुपद कमल विलोकहिं आई ॥

दोहा—देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन मांझ ॥
कहत सुनत हरि हर सुयश, गयउ दिवस भइ सांझ॥ ३०८॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू * भरत भूमि सुर तिरहुति राजू ॥
भलदिन आजु जानि मनमाहीं * रामकृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी * सकुचिराम फिर अवनिविलोकी ॥
शील सराहि सभा सब शोची * कहुँ न राम सम स्वामि सकोची ॥
भरत सुजान रामरुख देखी * उठि सप्रेम धरि धीर विशेषी ॥
करि दण्डवत कहत करजोरी * राखीनाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहिंलगि सबहि सहेउ संतापू * बहुत भाँति दुख पावा आपू ॥
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई * सेवोंअवध अवधि लगि जाई ॥

दोहा—जेहि उपाय पुनि पाँय जन, देखै दीनदयालु ॥
सो शिष देइय अवधि लगि, कोशलपाल कृपालु ॥ ३०९॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई * सब शुचि सरस सनेह सगाई ॥
राउरबदि भल भव दुख दाहू * प्रभु विनु बादि परमपद लाहू ॥
स्वामि सुजान जानि सबहीकी * रुचि लालसा रहनि जनजीकी ॥
प्रणतपाल पालहिं सब काहू * देव दुहूं दिशि ओर निबाहू ॥
असम्वहिं सब विधि भूरि भरोसो * किये विचार न शोच खरोसो ॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू * दुहुँमिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू ॥
यह बड दोष दूरि करि स्वामी * तजि सकोच सिखइय अनुगामी ॥
भरत विनय सुनि सबहिं प्रशंसा * क्षीर नीर विवरण गति हंसा ॥

१ पृथ्वी । २ दुःख । ३ आपके ह्वैकै । ४ । वृथा । ५ सेवक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छल हीन ॥
देश काल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन ॥ ३१० ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी * चिन्ता गुरुहिं नृपहि घर वनकी ॥
लखे पर गुरु मुनि मिथिलेशू * हमहिं तुमहिं स्वप्नेहुँ न कलेशू ॥
धीर तुम्हार परम पुरुषारथ * स्वारथ सुयश धर्म परमारथ ॥
पितु आयसु पालिय दोउभाई * लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालै * चलत सुगम पग परत न खालै ॥
अस विचारि सब शोच विहाई * पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देश कोष पुरजन परिवारू * गुरु पद रजहिं लागि छैरभारू ॥
तुम पुनि मातु सचिव सुखमानी * पालहु पुहुमि[2] प्रजा रजधानी ॥

दोहा–मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक ॥
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥ ३११ ॥

राजधर्म सरबस इतनोई * जिमि मन माहिं मनोरथ गोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती * विनुअधार मन तोष न शांती ॥
भरत शील गुरु सचिव समाजू * सकुच सनेह विवश रघुराजू ॥
प्रभुकरि कृपा पाँवरी[3] दीन्ही * सादर भरत शीश धरि लीन्ही ॥
चरण पीठ करुणानिधानके * जनुयुग यामिक[4] प्रजा प्राणके ॥
सम्पुट[5] भरत सनेह रतनके * आखर युग जनु जीव जतनके ॥
कुल कपाट कर कुशल करमके * विमल नयन सेवा सुधरमके ॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते * अस सुख जस सिय रामरहेते ॥

दोहा–मँग्यउ बिदा प्रणाम करि, राम लिये उरलाय ॥
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाय ॥ ३१२ ॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी * अवधि आश सब जीवन जीकी ॥
नतरु लषण सिय राम वियोगा[6] * हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥

१ कार्य । २ पृथ्वी। ३ खडाऊं । ४ पहरुवा चौकी दार । ५ डब्बा । ६ विक्षेप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम कृपा अवरेव सुधारी * विबुधधार भइ गुणद गोहारी ॥
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो * राम प्रेम रस कहि न परतसो ॥
तन मन वचन उमँगि अनुरागा * धीर धुरंधर धीरज त्यागा ॥
वारिज लोचन मोचत वारी * देखि दशा सुर सभा दुखारी ॥
मुनिगण गुरुजन धीरजनकसे * ज्ञान अनल मन कसे कनकसे ॥
जे विरंचि निर्लेप उपाये * पद्मपत्र जिमि जग जलजाये ॥

दोहा—तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार ॥
भये मगन तन मन वचन, सहित विराग विचार ॥ ३१३ ॥

जहां जनक गुरुगति मति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बड़खोरी ॥
वर्णत रघुवर भरत वियोगू * सुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥
सो सकोचवश अकथ सुवानी * समय सनेह सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुवर समुझाये * पुनि रिपुदमन[2] हर्षि हियलाये ॥
सेवक सचिव भरत रुखपाई * निज निज काज लगे सबजाई ॥
सुनि दारुणदुख दुहूं समाजा * लगे चलनके साजन साजा ॥
प्रभुपद पद्म वन्दि दोउ भाई * चले शीश धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस वन देव निहोरी * सब सनमान बहोरि बहोरी ॥

दोहा—लषणहिं भेंटि प्रणाम करि, शिरधरि सियपद धूरि ॥
चले सप्रेम अशीष सुनि, सकल सुमंगल मूरि ॥ ३१४ ॥

सानुज राम नृपहिं शिरनाई * कीन्ही बहु विधि विनय बड़ाई ॥
देव दया वश बड़ दुख पायहु * सहित समाज काननहिं आयहु ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा * कीन्ह धीर धरि गमन महीशा[3] ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने * बिदा किये हरि हर समजाने ॥
सासु समीपं[4] गये दोउभाई * फिरे वन्दि पद आशिष पाई ॥
कौशिक वामदेव जाबाली * परिजन पुरजन सचिव सुचाली ॥

१ माया । २ शत्रुघ्न । ३ राजाजनक । ४ निकट ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यथायोग्य करि विनय प्रणामा * बिदाकिये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे * सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

दोहा—भरत मातुपद वन्दि प्रभु, शुचि सनेह मिलि भेट ॥
बिदाकीन्ह सजिपालकी, सकुचि शोच सबमेट ॥ ३१५ ॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता * फिरी प्राणप्रिय प्रेम पुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटी सब सासू * प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू ॥
मुनिसिख अभिमत आशिष पाई * रही सीय दुहुँप्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई * करि प्रबोध सब मातु चढाई ॥
बारबार हिलि मिलि दोउ भाई * सम सनेह जननि पहुँचाई ॥
साजि वाजि गज वाहन नाना * भूप भरत दल कीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय लषण समेता * चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
बसहु वाजि गज पशु हिय हारे * चले जाहिं परवश मन मारे ॥

दोहा—गुरु गुरुतिय पद वन्दि प्रभु, सीता लषण समेत ॥
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्णनिकेत ॥ ३१६ ॥

विदा कीन्ह सनमानि निषादू * चलेउ हृदय बड़ विरह विषादू ॥
कोल्ह किरात भिल्ल वनचारी * फेरे फिरे जुहारि जुहारी ॥
प्रभु सिय लषण बैठि वट छाहीं * प्रिय परिजन वियोग विलखाहीं ॥
भरत सनेह स्वभाव सुवानी * प्रिया अनुज सन कहत वखानी ॥
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी * श्रीमुख राम प्रेमवश वरणी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना * चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
विबुध विलोकि दशा रघुवरकी * वरषिसुमन कहि गति घरघरकी ॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो * चले मुदित मन डर न खरोसो ॥

दोहा—सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्ण कुटीर ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर ॥ ३१७ ॥

---

१ पटाम्बरजडावनतेजटित । २ बैल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू * राम विरह सब साज विहालू ॥
प्रभुगुण ग्राम गणत मन माहीं * सब चुपचाप चले मगुजाहीं ॥
यमुना उतरि पारसब भयऊ * सोवासर विनुभोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर वासू * रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनकरहे पुर वासर चारी * राज काज सबसाज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू * तिरहुत चले साजि सब साजू ॥
नगर नारि नर गुरुसिख मानी * वसे सुखेन राम रजधानी ॥

दोहा—राम दरश हित लोगसब, करत नेम उपवास ॥
तजि तजि भूषण भोग सुख, जियत अवधि की आश ॥ ३१८ ॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज निज काज पाइसिख सोधे ॥
पुनिसिख दीन्ह बोलि लघुभाई * सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत करजोरे * करि प्रणाम वर विनय निहोरे ॥
ऊंच नीच कारज भल पोचू * आयसुदेव न करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये * समाधान करि सुवश वसाये ॥
सानुजगे गुरु गेह बहोरी * करि दण्डवत कहत करजोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा * बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम सोई * धर्मसार जग होइहि जोई ॥

दोहा—मुनि सिख पाइ अशीष बड़ि, गणक[2] बोलि दिन साधि ॥
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि ॥ ३१९ ॥

राम मातु गुरु पद शिरनाई * प्रभु पद पीठि रजायसु पाई ॥
नंदिग्राम करि पर्णकुटीरा * कीन्ह निवास धर्मधुर धीरा ॥
जटाजूट शिर मुनि पटधारी * महि खनि कुश साथरी सँवारी ॥
अशन वसन आसन व्रत नेमा * करत कठिन ऋषि धर्म सप्रेमा ॥

१ चारदिन । २ ज्योतिषी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूषण वसन भोग सुख भूरी * मन तन वचन तजे तृण तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं * दशरथ धन लखि धनदलजाहीं ॥
तेहि पुर वसत भरत विनुरागा * चंचरीक जिमि चम्पक बागा ॥
रमाविलास राम अनुरागी * तजत वमन जिमि नर बड़भागी॥

दोहा—राम प्रेम भाजन भरत, बड़ी न यह करतूति ॥
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति ॥ ३२० ॥

देह दिनहि दिन दूबरि होई * बढ़त तेज बल मुख छवि सोई ॥
नित नव राम प्रेम प्रणपीना * बढत धर्म दल मन न मलीना ॥
जिमिजल निघटत शरद प्रकाशे * विलसत बेत सुवनज विकाशे ॥
शम दम संयम नेम उपासा * नखत भरतहिय विमल अकाशा
ध्रुवविश्वास अवधि राकासी * स्वामि सुरति सुर वीथि विकासी॥
राम प्रेमविधु अचल अदोषा * सहित समाज सोह नित चोखा॥
भरत रहनि समुझनि करतूती * भक्ति विरति गुण विमल विभूती॥
वर्णत सकल सुकवि सकुचाहीं * शेष गणेश गिरा गमनाहीं ॥

दोहा—नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति ॥
मांगि मांगि आयसु करत, राज काज बहुभांति ॥ ३२१ ॥

पुलक गात हिय सिय रघुवीरू * जीह नाम जपि लोचन नीरू ॥
लषण राम सिय कानन बसहीं * भरत भवनवासि तपतनु कसहीं ॥
दुहुँदिशि समुझि कहत सबलोगू * सबविधि भरत सराहन योगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं * देखि दशा मुनिराज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरणू * मधुर मंजु मृदु मंगल करणू ॥
हरण कठिन कलिकलुष कलेशू * महामोह निशि दलन दिनेशू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू * शमन सकल सन्ताप समाजू ॥

१ भौंरा। २ अधिक-मन । ३ कमल। ४ निर्म्मल। ५ चन्द्र। ६ वाणी। ७ खडाऊं। ८ वन। ९ सूर्य्य नारायण। १० हाथी। ११ सिंह।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जनरंजन भंजन भवभारू * राम सनेह सुधाकर सारू ॥

छंद–सियराम प्रेम पियूष पूरण होत जन्म न भरतको ॥
मुनिमन अगम यम नियम शम दम विषम व्रत आचरतको॥
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिस अपहरतको ॥
कलिकाल तुलसीसे शठहि हठि राम सन्मुख करतको ॥ १४ ॥

सो०–भरत चरित करिनेम, तुलसी जे सादर सुनहिं ॥
सीय राम पद प्रेम, अवशि होइ भवरस विरति ॥ १३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम तुलसीकृत
अयोध्याकांडे द्वितीयः सोपानः समाप्तः ॥ २ ॥

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाणा

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापखाना मुंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

आरण्यकाण्डम् ।

जिसमें

जयंतकीस्त्रीका वरदान पाना तथा कौशलकुमार श्री-रघुनाथजीका आत्रिऋषिसे मिलाप पुनः कवन्धराक्षस वधान्त शरभंगऋषि समागम पश्चात् सुतीक्ष्ण और अगस्त्यऋषिसे संभाषण पश्चात् पंचवटीमें प्रवेश शूर्पणखा कुरूपांत खर दूषण वध तथा जानकी हरण जटायु वधादि अत्यन्त पवित्र कथा वर्णित हैं ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छापकर प्रगट की ।

बंबई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आरण्यकाण्डम् ३

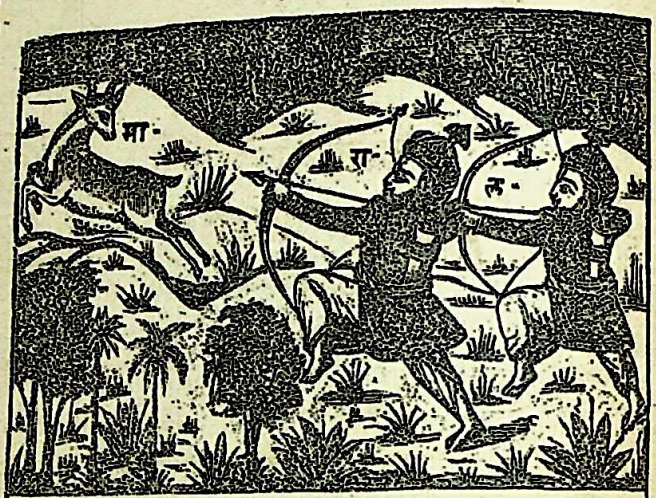

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ श्रीतुलसीदास विरचिते-

रामायणे आरण्यकाण्डम् ।

श्लोक ।

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं । वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघहरंध्वान्तापहं तापहम् ॥ मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौ स्वेशंभवंशंकरम् । वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनंश्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्दपयोद सौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं । पाणौबाणशरासनंकटिलसत्तूणीरभारंवरम् ॥ राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसंशोभितं । सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे॥२॥

श्लोकार्थ—जो धर्म वृक्षके मूल विवेक समुद्रके आनंद करनेवाले पूर्णचंद्र वैराग्य कमलके खिलानेको सूर्य पापके हरनेवाले अंधकारके हरनेवाले त्रिविध ताप हारक मोहरूपी वादलसमूहोंके तोडनेको पवनरूप ब्रह्म कुलके कलंकके नाशक श्रीराम भूपके प्यारे वा जिन्हैं रामभूप प्यारे हैं ऐसे शंकरकी मैं वंदेना करताहूं ॥ १ ॥ जलभरे बादलकी समान जिनका शरीर पीताम्बर धारणकिये सुंदर हाथमें धनुष बाण कमरमें बाणोंसे भरा तरकस शोभायमान कमलके समान बडे बडे नेत्रवाले शिरपर जटाजूट शोभित सीता लक्ष्मण संयुक्त मार्गमें प्राप्त आनंददायक रामको मैं भजताहूं ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—उमा राम गुण गूढ़, पण्डित मुनि पावहिं विरति ॥
पावहिं मोह विमूढ़, जेहरि विमुख न धर्मरति ॥ १ ॥

पूरण भरत प्रीति मैं गाई * मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभुचरित सुनो अतिपावन * करत जो वन सुर मुनि मन भावन॥
एकवार चुनि कुसुम सुहाये * निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीताहिं पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिक शिला परभोधर ॥
"कराहिं प्रकाश पास मणि झारी * रही छिटक पूनो उजियारी ॥
तेहि निशि नारि जयन्ताकेरी * आई तहँले सुमुखि घनेरी ॥
रघुपतिरूप विलोकि जुड़ानी * नृत्यगान कीन्हो कल वानी ॥
मन भावत वर मांग सिधाई * सो सुधि कतहुँ जयन्तै पाई ॥
सुरपति सुतै धरि वायस वेषा * शठ चाहत रघुपति बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महामन्द मति पावन चाहा ॥
सीताचरण चोंच हतिभागा * मूढ़ मन्दमति कारण कागा ॥
चला रुधिरे रघुनायक जाना * सींक धनुष सायक सन्धाना ॥

दोहा—अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह ॥
तासन आइ कीन्ह छल, मूरख अवगुण गेहँ ॥ १ ॥

विन अपराध प्रभु हतैं नकाहू * अवसर परे ग्रसै शशि राहू ॥
जब प्रभु लीन्ह धनुष सिकवाना * क्रोध जानिभा अनल समाना ॥
प्रेरित अस्त्र ब्रह्मशर धावा * चला भाजि वायस भयपावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं * रामविमुख राखा तिन नाहीं ॥
भानिराश उपजी हिय त्रासा * यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा ॥
ब्रह्मधाम शिवपुर सबलोका * फिरा भ्रमित व्याकुल भय शोका॥
काहू बैठन कहा न ओही * राखिको सकै रामकर द्रोही ॥

---

१ वैराग्य । २ शोभित । ३ जयंत । ४ चींटी । ५ लोहू । ६ बाण । ७ अवगुणकाघर । ८ जोबाणब्रह्माकी सृष्टिभरेमें विकलकरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातु मृत्यु पितु शमन समाना * सुधा होइ विष सुनु हरियाना ॥
मित्र करै शत रिपुकै करणी * ताकहँ विबुध नदी वैतरणी ॥
सब जग ताहि अनलते ताता * जो रघुवीर विमुख सुनु भ्राता ॥
दोहा–जिमि जिमि भाजत शक्रसुत, व्याकुल अति दुखदीन ॥
तिमि तिमि धावत रामशर, पाछे परम प्रवीन ॥ २ ॥
बचहि उरग बरु ग्रसै खगेशा * रघुपति शर छुटि बचब अँदेशा॥
नारद देखा विकल जयन्ता * लागि दया कोमल चित सन्ता॥
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई * भजे जात बहु विधि समुझाई ॥
पठवा तुरत राम पहँ ताही * कहसि पुकारि प्रणत हित पाही॥
आतुर सभय गहेसि पदजाई * त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई* मैं मतिमन्द जानि नाहिं पाई ॥
निजकृत कर्म जनित फल पायउँ*अब प्रभु पाहि शरण तकि आयउँ ॥
सुनि कृपालु अति आरत वानी * एक नयन करि तजा भवानी ॥
सो०–कीन्ह मोह वश द्रोह, यद्यपि त्यहिकर वध उचित ॥
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, कोकृपालु रघुवीर सम ॥ २ ॥
रघुपति चित्रकूट वसि नाना * चरित करत अति सुधा समाना॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना * होइहि भीर सबहि मोहिं जाना ॥
सकल मुनिन्हसन विदा कराई * सीता सहित चले दोउ भाई ॥
अत्रीके आश्रम प्रभु गयऊ * सुनत महामुनि हर्षित भयऊ ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाये * देखि राम आतुर चलि आये ॥
करत दण्डवत मुनि उरलाये * प्रेम वारि दोउ जन अन्हवाये ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने * सादर निज आश्रम तब आने ॥
करि पूजा कहि वचन सुनाये * दिये मूल फल प्रभु मनभाये ॥
सो०–प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन शोभा निरखि ॥
मुनिवर परम प्रवीन, जोरिपाणि स्तुति करत ॥ ३ ॥

१ यम । २ अमृत । ३ गरुड । ४ आग । ५ सर्प । ६ दया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंदप्रमाणिका–नमामि भक्तवत्सलं, कृपालुशीलकोमलम् ॥
भजामि ते पदाम्बुजं, अकामिनां स्वधामदम् ॥
निकामश्यामसुन्दरं, भवाम्बुनाथमन्दरम् ॥
प्रफुल्लकंजलोचनं, मदादिदोषमोचनम् ॥ १ ॥
प्रलम्बबाहुविक्रमं, प्रभो प्रमेयवैभवम् ॥
निषंगचापसायकं, धरे त्रिलोकनायकम् ॥
दिनेशवंशमण्डनं, महेशचापखण्डनम् ॥
मुनीन्द्रसन्तरंजनं, सुरारिवृन्दभंजनम् ॥ २ ॥
मनोजवैरिवन्दितं, अजादिदेव सेवितम् ॥
विशुद्धबोधविग्रहं, समस्तदुःखतापहम् ॥
नमामि इन्दिरापतिं, सुखाकरं सतां गतिम् ॥
भजेसशक्तिसानुजं, शचीपतिप्रियानुजं ॥ ३ ॥
त्वदंघ्रिमूलजे नरा, भजन्ति हीनमत्सरा ॥
पतंति नो भवार्णवे, वितर्कवीचिसंकुले ॥

छन्दार्थ–आप भक्तवत्सलहैं सुंदर कोमल कृपालु आपका स्वभावहै सो आपको नमस्कार करताहूं कामना रहित स्वजनोंको स्वधामके देनेवाले आपके चरणकमलोंका मैं भजन करता हूं और अत्यंत श्यामसुंदर शरीर भवरूपी समुद्रके मथनेहारे आप मंदरहैं अधिक फूले कमलके समान आपके नेत्रहैं और आप मद आदि दोषके छुड़ानेवालेहैं ॥ १ ॥ हेप्रभो आपकी लम्बायमान भुजाओंका बल अप्रमेयहै तरकस धनुष बाण धारण किये आप त्रिलोकीके नाथहैं सूर्यवंशके शोभा देनेहारे शिवजीके धनुष तोड़नेहारे मुनींद्र संतोंके आनंददाता राक्षसोंके समूहोंके मारनेवालेहो ॥ २ ॥ कामदेवके वैरी शिवजी तुमको वंदना करतेहैं ब्रह्मादिक देव सेवा करतेहैं आपका शरीर विशेष शुद्ध ज्ञानरूपीहै सब दोषोंका नाश कारकहै आप लक्ष्मीके पति सुखकी खान सज्जनोंकी गतिहैं आपको नमस्कारहै जानकी लक्ष्मण सहित आपका भजन करताहूं आप इंद्रके प्यारे अनुजहैं ॥ ३ ॥ जो मत्सर त्याग करके तुम्हारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विविक्तवासनाः सदा, भजंति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं, प्रयांति ते गतिं स्वकम् ॥४॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं, निरीहमीश्वरं विभुम् ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं, तुरीयमेव केवलम् ॥
भजामि भाववल्लभं, कुयोगिनां सुदुर्लभम् ॥
स्वभक्तकल्पपादपं, समस्तमेव्यमन्वहम् ॥ ५ ॥
अनूपरूपभूपतिं, नतोहमुर्विजापतिं ॥
प्रसीदमे नमामि ते, पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं, नरादरेण ते पदम् ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं, त्वदीयभक्तसंयुतम् ॥ ६ ॥

दोहा—विनती करि मुनि नाइ शिर, कह करजोरि बहोरि ॥
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ३ ॥

जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा * बढौ प्रेम चकोर जिमि चन्दा ॥
देखि राम मुनि विनय प्रणामा * विविध भांति पायउ विश्रामा ॥
अनुसूयाके पदगहि सीता * मिली बहोरि सुशील विनीता ॥
जो सिय सकल लोक सुखदाता * अखिल लोक ब्रह्माण्डकि माता ॥

चरणकमलको भजन करतेहैं वे कुतर्क लहरोंसे संयुक्त भवसागरमें नहीं गिरते और एकांती आपको मुक्तिके लिये हर्ष पूर्वक सदा सेवतेहैं सो इंद्रियादि रसोंको त्याग तुम्हारी निज गतिको प्राप्त होतेहैं ॥ ४ ॥ तुम एक अद्भुत प्रभु हो और निरीह उद्यम रहित ईश्वर और विभु अर्थात् व्यापक जगत्के गुरु और निरंतर जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्थाओंसे भिन्न केवल एक हो आपको भाव प्यारा है आप कुयोगियोंको दुर्लभहो अपने भक्तोंको कल्पवृक्षहो और समस्तलोकको सुंदर सेव्य और क्रोधरहित वा सनातन हो आपको भजताहूं ॥ ५ ॥ यह जो आपका जानकीपति अनूप भूपरूपहै इसको मैं नमस्कार करताहूं ॥ आप प्रसन्नहोकै मुझे चरणकमलकी भक्तिदो और जो इस स्तोत्रको आदरपूर्वक पढैं वे तुम्हारी भक्तिसहित तुम्हारे पदको निःसंदेह प्राप्तहों ॥ ६ ॥

१अखिलकहीं समूह लोक एक ब्रह्माण्डके भीतरहैं ऐसेअनेकब्रह्मांण्डतिनकीमाता।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते पाई सिय मुनिवर भामिनि * सुखी भई कुमुदिनि जिमि यामिनि ॥
ऋषिपत्नी मन सुख अधिकाई * आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये * जेनित नूतन अमल सुहाये ॥
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं * गरुड देखि जिमि पन्नग जाहीं ॥

दोहा—ऐसे वसन विचित्र सुठि, दिये सीय कहँ आनि ॥
सन्मानी प्रियवचन कहि, प्रीति न हृदय समानि ॥ ४ ॥

कह ऋषि वधू सरल मृदुवानी * नारि धर्म्म कछु व्याज बखानी ॥
मात पिता भ्राता हितकारी * मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥
अमित दान भर्त्ता वैदेही * अधम सोनारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी * आपतिकाल परखिये चारी ॥
वृद्ध रोगवश जड धनहीना * अन्ध वधिर[3] क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना * नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा * काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं * वेद पुराण सन्त अस कहहीं ॥

दोहा—उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाय ॥
आगे सुनहिं ते भवतराहिं, सुनहु सीय चितलाय ॥ ५ ॥

उत्तमके अस वस मनमाहीं * स्वप्नेहु आन पुरुष जगनाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे * भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं * सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं ॥
विनु अवसर भयते रहजोई * जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिवंचक[4] परपति रति करई * रौरव नरक कल[illegible] परई ॥
क्षण सुख लागि जन्म शत कोटी * दुखनसमझ तेहि [illegible] खोटी ॥
विनुश्रम नारि परमगति लहई * पतिव्रत धर्म छांडि छल गहई ॥
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई * विधवा होइ पा[illegible] तरुणाई ॥

१ रात । २ अनुसूया । ३ बहरा । ४ पतिसे कपट रखनेवाली ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—सहज अपावनि नारि, पतिसेवत शुभगति लहहिं ॥
यश गावत श्रुति चारि, अजहूं तुलसी हरिहि प्रिय ॥ ४ ॥
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ॥
तोहिं प्राण प्रियराम, कहेहुँ कथा संसारहित ॥ ५ ॥
सुनि जानकी परम सुख पावा * सादर तासु चरण शिरनावा ॥
तब मुनिसन कह कृपानिधाना * आयसुहोइ जाउँ वन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू * सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥
धर्म्मधुरन्धर प्रभुकी वानी * सुनि सप्रेमबोले मुनि ज्ञानी ॥
जासुकृपा अज शिव सनकादी * चहत सकल परमारथवादी ॥
ते तुम राम अकाम पियारे * दीनबन्धु मृदु वचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्री चतुराई * भजिय तुमहिं सब देव विहाई ॥
जेहि समान अतिशयनहिंकोई * ताकर शील कसन असहोई ॥
केहिविधि कहौं जाहु अबस्वामी * कहहुनाथ तुम अन्तर्यामी ॥
असकहि प्रभु विलोकि मुनिधीरा * लोचन जलबह पुलक शरीरा ॥
छंद०—तनु पुलक निर्भर प्रेम पूरण नयन मुखपंकज दिये ॥
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप काकिये ॥
जप योग धर्म समूहते नर भक्ति अनुपम पावई ॥
रघुवीरचरित पुनीत निशि दिन दास तुलसी गावई ॥ ७ ॥
दोहा—मुनिहुँकि स्तुति कीन्ह प्रभु, दीन्ह सुभग वरदान ॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, जय जय कृपानिधान ॥ ६ ॥
([illegible] शमन दमन मन, राम सुयश सुखमूल ॥
सादर [illegible]हिं जे ताहिपर, राम रहहिं अनुकूल ॥ ७ ॥
सो०—कठिन सुकलिमल कोश, धर्म न ज्ञान न योग तप ॥
परिहर [illegible]कल भरोस, राम भजहिं ते चतुरनर ॥ ६ ॥)

* शरीरकी सुधि नहीं है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनिपद कमल नाइ करिशीशा * चले वंनाहिं सुर नर मुनि ईशा ॥
आगे राम अनुज मुनिपाछे * मुनिवर वेष बने अति आछे ॥
उभय बीच सिय सोहहि कैसी * ब्रह्मजीव विच माया जैसी ॥
सरिता वन गिरि[1] अवघटघाटा * पति पहिचानि देहिं वर बाटा ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया * करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया ॥

अथ क्षेपक ॥

आश्रम विपुल दीख वनमाहीं * देव सदन तेहि पटतर नाहीं ॥
बहु तडाग सुन्दर अमराई * भांति भांति सब मुनिन लगाई ॥
दिव्य विटप वन चहुँदिशि सोहैं * देखत सकल सुरन मन मोहैं ॥
तेहि दिन तहँ प्रभुकीन्ह निवासा * सकलमुनिन्हमिलिकीन्हसुपासा ॥
दोहा—निज निज आश्रम वेदिका, तिहिपर तुलसि विराज ॥
अनुज जानकी सहित तहँ, राजतभे रघुराज ॥ ८ ॥
आन सुआश्रम मुदितमन, पूजि पहुनई कीन्ह ॥
कन्द मूल फल अमिय सम, आनि राम कहँ दीन्ह ॥ ९ ॥
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा * जो जिमि भाव सुभग वरदीन्हा ॥
होत प्रभात मुनिन्ह शिरनावा * आशिर्वाद सबहिसन पावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा * पुनि प्रभु चले सुनहु विहँगेशा[3] ॥
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना * लांघत चले जाहिं भगवाना ॥
मिला असुर विराध मगुजाता * गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहु काला * वेगवन्त धायउ जिमि व्याला ॥
गर्गनदेव मुनि किन्नर नाना * तेहि क्षण हृदय हा[illegible] माना ॥
तुरतहि सो सीताहि लैगयऊ * राम हृदय कछु विस्मय भयऊ ॥
समुझा हृदय कैकयी करणी * कहा अनुजसन बहुविधि वरणी ॥
बहुरि लषण रघुवरहि प्रबोधा * पांचबाण छांड़े करि क्रोधा ॥

१ पर्व्वत । २ मार्ग । ३ गरुड । ४ आकाश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छं० भयेक्रोध लषण सँधानि धनु शर मारि तेहि व्याकुल कियो ॥
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शूल लै धावत भयो ॥
जनु कालदण्ड कराल धावा विकल सब खग मृग भये ॥
धनु तानि श्रीरघुवंशमणि पुनि काटि तेहि रेजसम किये॥ ८ ॥

दोहा-बहुरि एक शर मारेउ, पराधरणि धुनिमाथ ॥
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥ १० ॥

ऐसे कहत निशाचर धावा * अब नहिं वचहु तुमहिं मैं खावा ॥
तासु तेज शत मरुत समाना * टूटहिं तरु बहु उडहिं पषाना ॥
जीव जन्तु जहँ लागि रहे जेते * व्याकुल भाजिचले सब तेते ॥
आव प्रबल यहि विधि जनु भूधर * होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर ॥
उरग समान जोरि शरसाता * आवतही रघुवीर निपाता ॥
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा * देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
तासु अस्थि गाडेउ प्रभुधरणी * देवमुदित मन लखि प्रभुकरणी॥
सीता आइ चरण लपटानी * अनुज सहित तब चले भवानी ॥
वहां शक्र जहँ मुनिशरभंगा * आये सकल देव निज संगा ॥
गये कहन प्रभु दैन सिखावन * दिशि बल भेद वसत जहँ रावन॥

दोहा-सुरपति संशय तिमिरसम, रघुपति तेज दिनेश ॥
रावण जीतन निशि सम, बीते छुटहिं कलेश ॥ ११ ॥

सुनासीर प्रभु तिहि क्षण देखा * तेजनिधान शुभ्र अति वेषा ॥
तुरंग चारि, बल मरुत समाना * रथ रविसम नहिं जाय बखाना ॥
क्षिति न परशु अन्तरहित रहई * श्वेतछत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई * सुरपति महिमा गुण प्रभुताई ॥
जिहि कारण वासव तहँ आये * सो कछु वचन कहन नहिं पाये ॥

---

१ रेणुका । २ पृथ्वी । ३ वृक्ष । ४ पर्व्वत । ५ देवता । ६ सर्प । ७ हाड ।
८ इन्द्र । ९ घोडा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीचहि सुनि आउब प्रभु केरा * कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा * हर्षि सुरेश गयउ निजधामा ॥

इति क्षेपक ॥

प्रभु आये जहँ मुनिशरभंगा * सुंदर अनुज जानकी संगा ॥
दोहा–देखि राम मुख पंकज, मुनिवरलोचनभृंग[1] ॥
सादर पान करत अति, धन्य धन्य शरभंग ॥ १२ ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला * शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउँ विरंचिके धामा * सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिनराती * अब प्रभु देखि जुडानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना * कीन्ही कृपा जानि जनदीना ॥
सो कछुदेव न मोर निहोरा * निज प्रण राखेउ जन मन चोरा ॥
तबलागि रहहु दीन हित लागी * जबलगि मिलौं तुम्हैं तनु त्यागी ॥
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा * प्रभु कहँदेइ भक्तिवर लीन्हा ॥
यहि विधि सररचि मुनि शरभंगा * बैठे हृदय छांडि सब संगा ॥
दोहा–सीता अनुज समेत प्रभु, नीलजलद[2] तनु श्याम ॥
मम हिय वसहु निरन्तर, सगुणरूप श्रीराम ॥ १३ ॥

असकहि योग अग्नि तनु जारा * राम कृपा वैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ * प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयऊ ॥
ऋषि निकाय[3] मुनिवर गति देखी * सुखी भये निज हृदय विशेषी ॥
स्तुति करहिं सकल मुनिवृन्दा * जयति प्रणत हित करुणाकन्दा ॥
पुनि रघुनाथ चले वन आगे * मुनिवर वृन्द पुलकि[4] सँग लागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया * पूछा मुनिन्ह लागि अतिदाया ॥
जानतहहु का पूछहु स्वामी * समदर्शी उर अन्तर्यामी ॥
निशिचर निकर सकलमुनिखाये * सुनि रघुनाथ नयन जल छाये ॥

१ भ्रमर । २ नीलमेघ । ३ मुनिसमूह । ४ हाडोंकेढेर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह ॥
सकल मुनिन्हके आश्रमन्ह, जाइ जाइ सुखदीन्ह ॥ १४ ॥

मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना * नाम सुतीक्षण रत भगवाना ॥
मन क्रम वचन राम पद सेवक * स्वप्नेहुँ आन भरोस न देवक ॥
प्रभु आगमन श्रवण सुनिपावा * करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हेविधि दीनबन्धु रघुराया * मोसे शठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहिं राम गुसांई * मिलिहहिं निज सेवककी नाईं ॥
मोरे जिय भरोस दृढ नाहीं * भक्ति न विरति ज्ञान मनमाहीं ॥
नहिं सतसंग योग जप यागा * नहिं दृढ चरण कमल अनुरागा॥
एकवानि करुणानिधानकी * सो प्रिय जाके गति न आनकी ॥

छं०–सोउपरमप्रियअतिपातकीजिन्हकबहुँप्रभुसुमिरणकन्यो ॥
ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हियभन्यो ॥
जेपद सरोज अनेक मुनि करिध्यान कबहुँ न आवहीं ॥
तेराम श्रीरघुवंश मणि प्रभु प्रेमते सुख पावहीं ॥ ९ ॥

दोहा–पन्नगारि सुनु प्रेम सम, भजन न दूसर आन ॥
यह विचारि पुनि पुनि मुनि, करत रामगुणगान ॥ १५ ॥

होइहहिं सफल आजु मम लोचन * देखिवदन पंकज भवमोचन ॥
निर्भरप्रेम मगन मुनि ज्ञानी * कहि नजाइ सो दशा भवानी ॥
दिशि अरु विदिशि पंथ नहिंसूझा * कोमैं कहां चलौं नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई * कबहुँक नृत्य करै गुण गाई ॥
अविरल प्रेम भक्ति मुनिपाई * प्रभुदेखहिं तरु ओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुवीरा * प्रकटे हृदय हरण भवभीरा ॥
मुनिमगु मांझ अचलहोइ वैसा * पुलक शरीर पनसफल जैसा ॥

१ प्रीति । २ आनकही कर्म धर्म अपर देव अरु चारिउ पदार्थ अर्थ, धर्म्म, काम मोक्ष, इन सबनको भरोस जिनके लशहैं नहीं है, । ३ गरुड । ४ कटहलकाफल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब रघुनाथ निकट चलिआये * देखि दशा निज जनमन भाये ॥
"सो०—राम सुसहज स्वभाव, सेवक सुख दारिद दमन ॥
मुनिसन कह प्रभु आव, उठ उठ द्विज मम प्राण सम ॥७॥"
मुनिहिं राम बहुभांति जगावा * जाग न ध्यान जनित सुखपावा॥
भूप रूप तब राम दुरावा * हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे *विकलहीन फणि मणि विनु जैसे ॥
आगे देखि राम तनुश्यामा * सीता अनुज सहित सुखधामा॥
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी * प्रेम मगन मुनिवर बड़भागी ॥
भुजविशाल गहि लिये उठाई * प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई ॥
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला * कनक तरुहि जनु भेंटतमाला ॥
राम वदन विलोकि मुनि ठाढा * मानहुँ चित्र मांझ लिखि काढा॥
दोहा—तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ॥
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविध प्रकार ॥ १६ ॥
कहमुनि प्रभु सुन विनती मोरी * स्तुतिकरौं कवन विधि तोरी ॥
महिमा अमित मोरि मतिथोरी * रविसन्मुख खद्योत उजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं * जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं * नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥
मोह विपिन घनदहन कृशानुं * सन्त सरोरुह कानन भानुं ॥
निशिचर करि वरूथ मृगराजं * त्रातु सदा नो भव खग बाजं ॥
अरुण नयन राजीव सुवेषं * सीता नयन चकोर निशेषं ॥
हर हृद मानस राज मरालं * नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादं * शमन सकल संताप विषादं ॥
भवभंजन रंजन सुरयूथं * त्रातु सदा नो कृपा वरूथं ॥
निर्गुण सगुण विषम समरूपं * ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥

---

१ उत्पन्नहोनेका मुख । २ जुगनू । ३ लालकमल । ४ पहिरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमल अखिल अनवद्यमपारं * नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं * तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अतिनागर भवसागर सेतुं * त्रातु सदा दिनकर कुलकेतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं * कलिमल विपुल विभंजन नामं ॥
धर्म्म वर्म्म[1] नर्म्मद[2] गुण ग्रामं * संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपि विरज[3] व्यापक अविनासी * सबके हृदय निरन्तर वासी ॥
तदपि अनुज सिय सहित खरारी * वसहु मनसि मम काननचारी ॥
जेजानहिं ते जानहु स्वामी * सगुण अगुण उर अन्तर्यामी ॥
जोकोशलपति राजिव नयना * करौं सो राम हृदय मम अयना[4] ॥

सो०—मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन ॥
तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ ८ ॥

अस अभिमान जाय जनि भोरे * मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
राम भक्ति तजि चह कल्याना * सोनर अधम शृगाल समाना ॥
सुनि मुनि वचन राम मनभाये * बहुरि हर्षि मुनिवर उरलाये ॥
परम प्रसन्न जानि मुनि मोहीं * जोवर मांगु देउँ मैं तोहीं ॥
मुनिकह मैं वर कबहुँ न यांचा * समुझि न परै झूंठ का सांचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई * सो मोहिं देहु दास सुखदाई ॥
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना * होहु सकल गुणज्ञान निधाना ॥
प्रभु जो दीन्हि सो वर मैं पावा * अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दोहा—अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बाण धरिराम ॥
ममहिय गगन इन्दु इव, वसहु सदा निष्काम ॥ १७ ॥

एवमस्तु कहि रमा निवासा * हर्षि चले कुम्भज ऋषि पासा ॥
मुनिप्रणाम करि युगकर जोरी * सुनहु नाथ कछु विनती मोरी ॥

---

१ बख्तर । २ अंतःकरणकी कठोरताके नाश करता हैं किन्तु मदते रहित करदेते हैं । ३ मायाते रहित । ४ स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत दिवस गुरु दरशन पाये * भये मोहिं यहि आश्रम आये ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुरुपाहीं * तुमकहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
चलेजात मग तव पदकंजा * देखिहौं जो विराध मद गंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई * लिये संग विहँसे दोउ भाई ॥
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा * मुनि आश्रम पहुँचे सुर भूपा ॥
(आश्रम देखि महाशुचि सुंदर * सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहीते * वैर न करहिं प्रीति सवहीते ॥

दोहा—तरु बहु विविध विहंग मृग, बोलत विविध प्रकार ॥
वसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं, महिमा गुण आगार ॥ १८॥)

तुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ * करि दण्डवत कहत अस भयऊ॥
नाथ कोशलाधीश कुमारा * आये मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत वैदेही * निशिदिन देव जपतहहु जेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठिधाये * प्रभु विलोकि लोचन जलछाये ॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई * ऋषि अति प्रीति लिये उरलाई ॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी * आसनपर बैठारे आनी ॥
पुनि करि वहु प्रकार प्रभुपूजा * मोहिं सम भागवन्त नाहिं दूजा ॥
जहँ लगि रहे अपर मुनि वृन्दा * हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा ॥

दोहा—मुनि समूह महँ बैठि प्रभु, सन्मुख सबकी ओर ॥
शरद इन्दु जनु चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥ १९ ॥

(पाइ सुथल जल हर्षित मीना * पारस पाइ सुखी जिमि दीना ॥
प्रभुहि निरखि सुखभा इहि भांती* चातक जिमि पाई जलस्वाती ॥)
तव रघुवीर कहा मुनिपाहीं * तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम जानहु ज्याहि कारण आयउँ * ताते तात न कहि समुझायउँ ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही * ज्यहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही ॥
द्विज द्रोही न वचहिं मुनिराई * जिमि पंकज वन हिमऋतु पाई ॥
मुनि मुसकाने सुनि प्रभु वानी * पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हरे भजन प्रभाव अधारी * जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ॥
(सो०—भृकुटी निरखत नाथ, रहत सदा पद कमलतर ॥
जिनडारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्धहर ॥ ९ ॥
अतिकराल सब पर जग जाना * औरौ कहौं सुनिय भगवाना ॥)
[1]द्रुमरितरु विशाल तव माया * फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना * भीतर वसहिं न जानहिं आना ॥
[2]तेफल भक्षक कठिन कराला * तव भय डरत सदा सोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साईं * पूंछ्यहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यह वर मांगों कृपानिकेता * वसहु हृदय सिय अनुज समेता॥
[3]अविरल भक्ति विरत सतसंगा * चरण सरोरुह प्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता * अनुभव गम्य भजहिं ज्यहिं संता
अस तव रूप बखानौं जानौं * फिरि फिरि सगुण ब्रह्मरति मानौं॥
दोहा—जाहि जीव पर तव कृपा, संतत रहत हुलास ॥
तिनकी महिमा को कहै, जो अनन्य प्रियदास ॥ २० ॥
सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई * ताते मोहिं पूछ्यहु रघुराई ॥
हैप्रभु परम मनोहर ठाऊं * पावन पंचवटी त्यहिनाऊं ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई * चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई ॥
*दंडकवन पुनीत प्रभु करहू * उग्रशाप मुनिवर कर हरहू ॥

---

* एक समय पंचवटीमें दुर्भिक्ष पड़ा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषिके पासगये तब गौतमने तप बलसे बहुत कालतक ऋषियोंका पालन किया पश्चात् ऋषियोंने आपसमें विचार किया कि अब जनस्थानको चलना चाहिये परन्तु गौतमके भयसे जा न सके तब सबोंने छलकरके मायाकृत एक गऊ बनाय गौतमऋषिके हाथमें दे उसकी प्रशंसा करने लगे इसमें वोह हाथसे छूट मरगई तब ऋषि गौतमजीको गोहत्या दोष लगाय दण्डकारण्यको चलेगये-

---

१ भौंह । २ गूलरकावृक्ष । ३ जिसमें एक पल चित्तकी वृत्तिमें विक्षेप न परै ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वास करहु तहँ रघुकुल राया * कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया॥
चले राम मुनि आयसु पाई * तुरतहि पंचवटी नियराई॥
दिव्य लता द्रुम प्रभुमन भाये * निरखि राम ते भयउ सुहाये॥
लषण राम सिय चरण निहारी * कानन अघगा भा सुखकारी॥

दोहा–गृध्र राजसों भेंट भइ, बहुविधि प्रीति दृढ़ाय॥
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाय॥ २१॥

जबते रामकीन्ह तहँ वासा * सुखी भये मुनि वीते त्रासा[2]॥
गिरि[3] वन नदी ताल छबि छाये * दिन दिनप्रति अतिहोत सुहाये॥
खग मृग वृन्द अनन्दित रहहीं * मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं॥
सोवन वरणि नसक अहिराजा[4] * जहां प्रकट रघुवीर बिराजा॥
एक वार प्रभु सुख आसीना * लक्ष्मण वचन कहे छल हीना॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं * मैं पूंछौं निज प्रभुकी नाईं॥
मोहिं समुझाइ कहो स्वइदेवा * सब तजि करहुँ चरण रज सेवा॥
कहहु ज्ञान विराग अरु माया * कहहु सो भक्ति करहु ज्यहिदाया॥

दोहा–ईश्वर जीवहि भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ॥
जाते होइ चरणरति[5], शोक मोह भ्रम जाइ॥ २२॥

थोरेमहँ सब कहौं बुझाई * सुनहु तात मति मन चित लाई॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया * ज्यहि वश कीन्हे जीवनिकाया॥

जब पीछे गौतमजीने जाना कि ऋषियोंने छल किया तब यह शाप दिया कि जिस वनके लोभसे तुमने मुझसे छल किया वोह भ्रष्ट होजाय और राक्षस वासकरैं (दूसरी कथा) राजा दंडकने अपनी गुरुपुत्रीसे अप्रसन्नतासे भोग किया उसने अपने पिता भृगुमुनिसे कहा तब मुनिने शाप दिया कि इस राजाका सब दिशा भ्रष्ट होजाय और धूरि वरषे तब ऋषिलोग वहांसे भागकर जहां वसे वहां स्थान जनस्थान कहलाया और रामचन्द्रने पवित्र किया तब फूल फल लगे हराहुवा॥

---

१ वन। २ भय। ३ पर्व्वत। ४ शेषनाग। ५ चरणोंमें प्रीति।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो गोचर जहँलगि मनजाई * सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ * विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा * जावश जीव परा भव कूपा ॥
एक रचै जग गुण वश जाके * प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताके ॥
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं * देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम विरागी * तृण सम सिद्धि तीनिगुण त्यागी॥

दोहा—माया ईश न आपु कहँ, जानि कहै सो जीव ॥
बन्ध मोक्ष प्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥ २३ ॥

धर्म्म ते विरति योग ते ज्ञाना * ज्ञान मोक्ष प्रद वेद बखाना ॥
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई * सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंबै न आना * जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला * मिलहिं जोसन्त होयँ अनुकूला ॥
भक्तिके साधन कहौं बखानी * सुगम पन्थ मोहि पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं विप्र चरण अतिप्रीती * निज निज धर्मनिरत[1] श्रुतिनीती ॥
इहिकर फल मन विषय विरागा * तब मम चरण उपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव[2] भक्ति दृढाही * मम लीला रति अति मनमाही ॥
सन्तचरण पंकज अति प्रेमा * मन क्रम वचन भजन दृढ़[3] नेमा ॥
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा * सब मोहिं कहँ जानै दृढ सेवा ॥
मम गुण गावत पुलक शरीरा * गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥
कामादिक मद दंभ न जाके * तात निरन्तर वश मैं ताके ॥

दोहा—वचन कर्म मन मोरि गति, भजन करै निष्काम ॥

---

१ पांच ज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइन्द्रिय श्रवण, त्वकू, नयन, रसना, नाशिका ये पांच ज्ञानइन्द्रिय, पुनि, कर, गुदा, लिंग, पग, मुख, ये पांच कर्मइन्द्रिय । २ साधन । ३ दृढ । ४ श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिनके हृदय कमल महँ, करौं सदा विश्राम ॥ २४ ॥

भक्तियोग सुनि अतिसुख पावा * लक्ष्मण प्रभु चरणन्ह शिरनावा ॥
नाथ सुने गत मम सन्देहा * भयन ज्ञान उपजेउ नवनेहा ॥
अनुज वचन सुनि प्रभु मनभाये * हर्षि राम निज हृदय लगाये ॥
इहिविधि गये कछुक दिनबीती * कहत विराग ज्ञान गुणनीती ॥
शूर्पणखा रावणकी बहिनी * दुष्ट हृदय दारुण जिमि अहिनी ॥
पंचवटी सो गइ यक बारा * देखि विकल भइ युगल कुमारा ॥
भ्राता पिता पुत्र उरगारी * पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ विकल सक मननहिं रोकी * जिमिरविमणिद्रवरविहि विलोकी ॥

दोहा–अधम निशाचरि कुटिल अति, चली करन उपहास ॥
सुनु खगेश भावी प्रबल, भा चह निशिचर नाश ॥ २५ ॥

रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ आई * बोली वचन मधुर मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मोसम नारी * यह संयोग विधि रचा विचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं * देख्यउ खोजि लोक तिहु माही ॥
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी * मन माना कछु तुमहि निहारी ॥
सीतहि चितइ कही प्रभु वाता * अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपु[1] भगिनी जानी * प्रभु विलोकि बोले मुदुवानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा * पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशलपुर राजा * जो कछु करैं उन्हैं सब साजा ॥

दोहा–केहरि सम नहिं करिवर, लवा[2] कि बाज समान ॥
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान ॥ २६ ॥

सेवक सुख चह मान भिखारी * व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी ॥
लोभी यश चहै चार[3] गुमानी[4] * नभ दुहि दूध चहत जे प्रानी ॥

---

१ सर्प्पिणी । २ रावणकी बहिन । ३ बटेर । ४ अशास्त्र कल्पित गुणकरै । ५ उत्तम गुण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि फिरि राम निकट सोआई * प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई ॥
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई * जो तृण तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसिआनि राम पहँ गई * रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
विथुरे केश रदन[1] विकराला * भ्रुकुटी कुटिल करण लगि गाला॥
सीताहि सभय देखि रघुराई * कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥
अनुज राम मनकी गति जानी * उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी ॥

दोहा—लक्ष्मण अति लाघव तिहि, नाक कान बिनु कीन्ह ॥
ताके कर रावण कहँ, मनहु चुनौती दीन्ह ॥ २७ ॥

नाक कान विनु भइ विकरारा * जनु श्रव शैल गेरु कै धारा ॥
खर दूषण पहँ गइ विलखाता * धृक धृक तव पौरुष बल भ्राता॥
तेइँ पूंछा सब कहेंसि बुझाई * यातुधान सुनि सैन बुलाई ॥
चौदहसहस सुभट सँग लीन्हे * जिन्ह स्वप्नेहु रण पीठ न दीन्हे ॥
धाये निशिचर निकर[2] बरूथा * जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा ॥
नाना वाहन नानाकारा * नाना आयुध[3] घोर अपारा ॥
श्याम घटा देखत नभ केरी * तहँ वासव धनु मनहुँ उयेरी ॥
शूर्पणखहि आगे करि लीन्ही * अशुभ रूप श्रुति[4] नाशा[5] हीनी ॥

दोहा—निज निज बल सब मिलि कहहिं, एकहि एक सुनाइ ॥
बाजन बाजु जुझाउने, हर्ष न हृदय समाइ ॥ २८ ॥

अशकुन अमित होहिं भयकारी * गनहिं न मृत्यु विवश भयभारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन[6] उड़ाहीं * देखि कटक[7] भट अति हरषाहीं ॥
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई* धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई ॥
कोउ कह सुनौ सत्य हम कहहीं* कानन फिरहिं वीर कोउ अहहीं
एकै कहा मष्ट ह्वै रहहू * खरके आगे अस जनि कहहू ॥

---

१ दांत । २ झुंडकेझुंड । ३ अस्त्रशस्त्र ।४ कान ।५ नाक ।६ आकाश । ७ सेना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहि विधि कहत वचन रणधीरा * आये सकल जहाँ रघुवीरा ॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रह्यऊ * राम बोलाइ अनुज सन कह्यऊ ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर * आवा निशिचर कटक भयंकर ॥
रह्यउ सजग सुनि प्रभुकै वाणी * चले सहित सिय शर धनु पाणी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा * विहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा ॥

छंद हरिगीतिका ॥

कोदण्ड[1] कठिन चढ़ाइ प्रभु शिर जटा बांधत सोहज्यों ॥
मर्कतशयल पर लसतदामिनि[2] कोटिसंयुग भुजंगज्यों[3] ॥
कटि कसि निषंगविशाल भुजगहि चापविशिखसुधारिकै ॥
चितवत मनहुँ मृगराजप्रभु[4] गजराज घटा निहारिकै ॥ १० ॥

सो०—आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट ॥
यथा विलोकि अकेल, बालरविहि घेरत दनुज[5] ॥ ९ ॥

घेरि रहे निशिचर समुदाई * दण्डक खग मृग चले पराई ॥
प्रभु विलोकि शर सकहिं नडारी * थकित भये रजनीचर झारी ॥
सचिव बोलि बोले खर दूषण * यह कोउ नृप बालक नरभूषण ॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते * देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई * देखी नहिं असि सुन्दरताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा * वध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
देहिं तुरत निज नारि पठाई * जीवत भवन जाहिं दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु * तासु वचन सुनि आतुर आवहु ॥

दोहा—भये कालवश मूढ सब, जानाहिं नहिं रघुवीर ॥
मशक फूंक किमि मेरु[6] उड, सुनहु गरुड मतिधीर ॥ २१ ॥

दूतन कहा रामसन जाई * सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड़ भाग्य हमारा * तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा ॥

---

१ धनुष । २ विजुली । ३ नाग । ४ सिंह । ५ राक्षस । ६ पर्व्वत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम क्षत्री मृगया[1] वन करहीं * तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं * एक वार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुज कुलघालक * मुनिपालक खल शालक बालक ॥
जो नहोइ बल घर फिरि जाहू * समर विमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई * रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ * सुनि खर दूषण उर अति दहेऊ ॥
छंद–उरदहेउ कहेउ कि धरहु धावहु विकटभट रजनीचरा ॥
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशुधरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा ॥
भये वधिर[2] व्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥११॥
दोहा–सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति[3] ॥
लागे वर्षन रामपर, अस्त्र शस्त्र बहुभाँति ॥ ३० ॥
तिन्हके आयुध तृण सम, करि काटे रघुवीर ॥
तानि शरासन[4] श्रवण[5] लगि, पुनि छांडे निज तीर[6] ॥ ३१ ॥

छंदलीलाबारहमात्रा ॥

तब चले बाण कराल, फुंकरत जनु बहु व्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम, चले विशिष निशित[7] निकाम ॥
अवलोकि खर तर तीर, मुरि चले निशिचर वीर ॥
यक एक कहँ न सँभार, कर तात मातु पुकार ॥ १२ ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह, जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल, ग्रसे आइ मानहु काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ, जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि वधब हम निज पानि, फिरे मरण मनमहँ ठानि ॥१३॥
दोहा–उमा एक निज प्रभुहि वश, पुनि इनके बड़ भाग ॥

१ शिकार खेलनेको वनमें आये हैं। २ बहिरे। ३ शत्रु। ४ धनुष। ५ कान। ६ पैने।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरण चहहिं प्रभु शरलगे, बिना योग जप याग ॥ ३२ ॥
छंद—आयुध अनेक प्रकार, सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपेउ जानि, प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छाँड़े विपुल नाराच[1], लगे कटन विकट पिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन, जहँ तहँ लगे महि परन ॥१४॥
चिक्करत लागत बान, धर परत कुधर समान ॥
भट कटत तनु शत खंड, पुनि उठत करि पाषंड ॥
नभ उडत बहु भुज मुण्ड, बिनु मौलि धावत रुण्ड ॥
खग कंक काक शृगाल, कट कटहिं कठिण कराल ॥१५॥
पु०छं०—कटकटहिं जम्बुक[3] भूत प्रेत पिशाच खप्परसाजहीं ॥
वैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीर बाण प्रचण्ड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा ॥
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरु करहिं सकल भयंकरा ॥१६
अंतावली गहि उडहिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं ॥
संग्राम पुरबासी मनहुँ बहु बाल गुड्डि उडावहीं ॥
मारे पछारे उर विदारे विपुल भट घूर्मित परे ॥
अवलोकि निजदल विकलभट त्रिशिरादि खरदूषणफिरे ॥
शर शक्ति तोमर[4] परशु[5] शूल[6] कृपाण[7] एकहिं बारहीं ॥
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिर्ष महँ रिपु शर निवारि प्रचारि डारे शायका ॥
दशदश विशिखे[8] उर मांझमारे सकलनिशिचरनायका ॥१८॥
महि परत उठि भट भिरत पुनि पुनि करत मायाअतिघनी ॥

१ बाण। २ मुण्ड-गृद्ध । ३ सियार । ४ मुद्गर । ५ फरशा । ६ त्रिशूल। ७ तलवारि। ८ पलमात्रमें। ९ बाण।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरडरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुक करचो ॥
देखत परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरचो॥१९॥

दोहा-राम राम करि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वाने ॥
करि उपाय रिपु मारचउ, क्षण महँ कृपानिधान ॥ ३३ ॥
हर्षित वर्षहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निशान ॥
अस्तुति करि करि सब चले, शोभित विविधविमान ॥३४॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते * सुर नर मुनि सबके दुख बीते॥
तब लक्ष्मण सीतहि लै आये * प्रभु पद परत हर्षि उर लाये ॥
सीता निरखि श्याममृदुगाता * परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक * करत चरित सुरमुनिसुखदायक॥
धुआंदेखि खर दूषण केरा * शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली वचन क्रोध करि भारी * देश कोशकी सुरति बिसारी ॥
करसिपान सोवसि दिन राती * सुधिनहिं त्वहिं शिरपरआराती ॥
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा * हरिहि समर्पे बिनुसतकर्मा ॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये * श्रम फल पढ़े किये अरुपाये ॥
संगते यती कुमंत ते राजा * मानते ज्ञान ज्ञानते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनु मदते गुनी * नाशहिं वेगि नीति अस सुनी ॥

सो०-रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गणिय न छोटकरि ॥
अस कहि विविध विलाप, पुनि लागी रोदन करन ॥ ११॥

दोहा-सभा मांझ व्याकुल परी, बहु प्रकार करि रोइ ॥
तोहिं जियत दशकन्धर, मोरि कि असगति होइ ॥ ३५ ॥

सुनत सभासद उठ अकुलाई * समुझाई गहि बांह बिठाई ॥

१ मोक्ष । २मदादिक । ३ प्रबलशत्रु । ४ नम्रता । ५ शत्रु ।६ रोग।७ अग्नि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कह लंकेश कहसि किन बाता * क्यइँ तव नाशा कान निपाता ॥
अवध नृपति दशरथके जाये * पुरुषसिंह वन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहिं उनकी करणी * रहित निशाचर करिहैं धरणी ॥
जिनकर भुजबल पाइ दशानन * अभय भये विचरहिं मुनि कानने[1] ॥
देखत बालक काल समाना * परम धीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता * खलवध रत सुर मुनि सुखदाता ॥
शोभाधाम राम अस नामा * तिन्हके सँग इक नारि ललामा ॥

सो०—अति सुकुमारि पियारि, पटतर योग न आहिकोउ ॥
मैं मन दीख विचारि, जहँरह तेहि सम आन नहिं ॥ १२ ॥

रूपराशि विधि नारि सँवारी * रतिशत कोटि तासु बलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखब तुम जबहीं * होइहौ विकल तासु वश तबहीं ॥
जीवन मुक्ति लोकवश ताके * दशमुख सुनु सुन्दरि अस जाके ॥
तासु अनुज[2] काटी श्रुति नासा * सुनि तव भगिनी करि परिहासा ॥
बिन अपराध असहाल हमारी * अपराधी किमि बचहिं सुरारी ॥
खर दूषण सुनि लाग गुहारा * क्षणमहँ सकल कटक उन मारा ॥
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता * सुनि दशशीश जरा सब गाता ॥
भयो शोचवश नाहिं विश्रामा * बीतहिं पल मानहुँ शत यामा ॥

दोहा—शूर्पणखहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहुभाँति ॥
भवन गयउ अतिशोच वश, नींदपरी नाहिं राति ॥ ३६ ॥

सुर नर असुर नाग जग माहीं * मोरे अनुचर[3] सम कोउ नाहीं ॥
खर दूषण म्वहिं सम बलवन्ता * मारिको सकय विना भगवन्ता ॥
सुररंजन भंजन महिभारा * जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥
तोमैं जाइ वैर हठ करिहौं * प्रभु शरते भवसागर तरिहौं ॥
होइ भजन नहिं तामस देहा * मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ एहा ॥

---

१ वनमें । २ लक्ष्मणजीने । ३ टहलू ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो नर रूप भूप सुत कोऊ * हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढि ताहां * बस मारीच सिंधु तट जाहां ॥
रथ अनूप जोरे खरचारी * वेगवन्त इमि जिमि उरगारी ॥
छंद–उरगारि सम अति वेग वर्णत जाय नहिं उपमा कही ॥
शिरछत्र शोभित श्यामघन जनु चमर श्वेत विराजही ॥
इहि भांति नांघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं ॥
वन बाग उपवन वाटिका शुचिनगर मुनि मन मोहहीं॥२०॥
दोहा–बहु तडाग शुचि विहँग मृग, बोलत विविध प्रकार ॥
इहिविधि आयउ सिंधु तट, शतयोजन विस्तार ॥ ३७ ॥
सुन्दर जीव विविध विधि जाती * करहिं कुलाहल दिन अरु राती॥
कूदहिं ते गरजहिं घननाई * महाबली बल वरणि नजाई ॥
कनक बाल सुन्दर सुखदाई * बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई ॥
तिहिंपर दिव्य लता तरु लागे * जिहि देखत मुनि मन अनुरागे॥
गुहा विविध विधि रहहिं बनाई * वर्णत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहां ऋषिनकर वासा * तहा निशाचर करहिं निवासा ॥
दशमुख देख सकल सकुचाने * जे जड़जीव सजीव पराने ॥
इहां राम जसि युक्ति बनाई * सुनहु उमा जो कथा सुहाई ॥
दोहा–लक्ष्मण गये वनहिं जब, लेन मूल फल कन्द ॥
जनकसुता सन बोल्यउ, विहँसि कृपासुखकन्द ॥ ३८ ॥
सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला * मैंकछु करब ललित नरलीला ॥
तुम पावक महँ करहु निवासा * जौ लगि करौं निशाचर नाशा ॥
जबहिं राम सब कहेउ वखानी * प्रभु पदधरि हिय अनल समानी॥
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता * तैसेइ शील स्वरूप विनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म नजाना * जोकछु चरित्र रच्यो भगवाना ॥

---

१ चारसौ कोश । २ शोर । ३ स्वर्ण । ४ वृक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशमुख गयउ जहां मारीचा * नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥
नवनि नीचकी अति दुखदाई * जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खलकी प्रियवानी * जिमि अकालके कुसुम भवानी ॥

दोहा—करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ॥
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयउ तात ॥ ३९ ॥

दशमुख सकल कथा त्यहि आगे * कही सहित अभिमान अभागे ॥
होउ कपट मृगें तुम छलकारी * ज्याहि विधि हरि आनौं नृप नारी ॥
त्यइँ पुनि कहा सुनहु दशशीशा * तनर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात वैर नहिं कीजै * मारे मरिय जिआये जीजै ॥
मुनि मखँ राखन गयउ कुमारा * बिनु फर शर रघुपति मोहिं मारा ॥
शतयोजन आयउँ क्षणमाहीं * तिन्हसन वैर किये भलनाहीं ॥
भइ मति कीट भृङ्गकी नाई * जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई ॥
जोनर तात तदपि अतिशूरा * तिनाहिं विरोध न आइहि पूरा ॥

दोहा—ज्यइँ ताडका सुबाहु हति, खण्ड्यउ हरकोदण्ड ॥
खर दूषण त्रिशिरा वध्यउ, मनुज कि अस बँलवण्ड ॥४०॥

रा अस नाम सुनत दशकन्धर * रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर ॥
जाहु भवन कुल कुशल विचारी * सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी ॥
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा * कहु जग मोहिं समानको योधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना * नवहिं विरोधे नाहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी * वैद्य वन्दि कवि मानस गुनी ॥
उभयँ भांति देखा निज मरणा * तब ताकोसि रघुनायक शरणा ॥
उतर देत मोहिं वधिहि अभागे * कस न मरौं रघुपति शर लागे ॥
अस जिय जानि दशानन संगा * चला रामपद प्रेम अभंगा ॥

---

१ पुष्प । २ उचाट । ३ रावण । ४ हरिण । ५ जानकीजी । ६ विश्वामित्र कृतयज्ञ । ७ बलिष्ठ । ८ कपटघाती । ९ भाट । १० दोऊदिशिते ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन अति हर्ष जनाव न तेही * आजु देखिहौं परम सनेही ॥
छं०–निज परमप्रीतम देखिलोचनसफलकरि सुखपाइहौं ॥
सिय सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाण दायक क्रोध जाकर भक्त ऐसेहि वश करी ॥
निजपाणि शर संधानि सो मोहिं वधहिं सुखसागरहरी॥२१॥
दोहा–मम पाछे धर धावत, धरे शरासन बान ॥
फिरि फिरि प्रभुहिं विलोकिहौं, धन्य न मोसम आन ॥४१॥
सीता लषण सहित रघुराई * ज्यहिवन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई
तेहि वन निकट दशानन गयऊ * तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अतिविचित्र कछु वरणि नजाई * कनक देह मणि रचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा * अंग अंग सुमनोहर वेषा ॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला * इहि मृगकर अति सुन्दर छाला॥
सत्यसंध प्रभु वंध करि एही * आनहु चर्म कहति वैदेही ॥
तब रघुपति जाना सब कारण * उठे हर्षि सुरकाज सँवारण ॥
मृग विलोकि कटि परिकर बांधा * करतल चाप रुचिर शर सांधा ॥
प्रभु लक्ष्मणहि कहा समुझाई * फिरत विपिन निशिचर समुदाई॥
सीताकेरि करेहु रखवारी * बुधि विवेक बल समय विचारी॥
दोहा–असकहि चले तहां प्रभु, जहां कपट मृग नीच ॥
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक वर्षा बीच ॥ ४२ ॥
प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी * धाये राम शरासन साजी ॥
निगम नेति शिव ध्यान न पावा * मायामृग पाछे सो धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई * कबहुँक प्रकटै कबहुँ छिपाई ॥
प्रकटत दुरत करत छल भूरी * इहि विधि प्रभुहि गयो लैदूरी ॥
तब तकि राम कठिन शर मारा * धरणि पर्यो करि घोर चिकारा॥

१ धनुष । २ बहुत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा * पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा ॥
प्राण तजत प्रकटचसि निज देही * सुमिरेसि राम सहित वैदेही ॥
अन्तर प्रेम तासु पहिचानी * मुनिदुर्लभ गति दीन्ह भवानी ॥

दोहा–विपुल सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभु गुण गाथ ॥
निज पद दीन्ह असुर कहँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥ ४३॥

मृगवधि तुरत फिरे रघुवीरा * सोह चाप कर कटि तूणीरा ॥
आरतगिरा सुनी जब सीता * कह लक्ष्मण सन परम सभीता॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता * लक्ष्मण विहँसि कह्यो सुन माता॥
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई * स्वप्नेहु संकट परै कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती * जोतजि जाउँ तोष नाहिं छाती ॥
यह जिय जानि सुनहु मम माता * पूछत कहब कवन मैं बाता ॥
मर्म वचन सीता जब बोली * हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली ॥
चहुँदिशि रेखा खींच अहीशा * बार बार नाये पद शीशा ॥
वन दिशि देव सौंपि सब काहू * चले जहां रावण शशि राहू ॥
चितवहिं लषण सियहि फिरि कैसे* तजत वृक्ष निज मातहि जैसे ॥

दोहा–एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि ॥
लषण तेज तनु हत भये, जिमि दाधी दववेलि ॥ ४४ ॥

शून्य भवन दशकंधर देखा * आवा निकट यतीके वेषा ॥
जाके डर सुर असुर डराहीं * निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं॥
सो दशशीश श्वानकी नाई * इत उत चिते चला भँडिहाई ॥
जिमि कुपन्थपग देत खगेशा * रह न तेज बल बुधि लवलेशा ॥
करि अनेक विधि छल चतुराई * मांगेउ भीख दशानन जाई ॥
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल * देन लगी तेइँ कीन्ह बहुरि छल॥

---

१ दुःखित वाणी । २ रामचंद्रकी इक्षाते । ३ लक्ष्मणजी । ४ संन्यासी ।
५ कुत्ता । ६ गरुड । ७ किंचित् मात्र । ८ भिक्षुक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कह दशमुख सुन सुन्दरि वानी * बांधी भीख न लेउँ सयानी ॥
विधिगति बाम काल कठिनाई * रेख नाँघि सिप बाहर आई ॥
दोहा–विश्वभरनि अघदल दलनि, करणि सकल सुरकाज ॥
जाना नहिं दशशीश तेहि, मूढ़ कपटके साज ॥ ४५॥
नाना विधि कहि कथा सुनाई * राजनीति भय प्रीति दिखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाईं * बोलेसि वचन दुष्टकी नाईं ॥
तब रावण निजरूप दिखावा * भइ सभीत जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा * आइ गये प्रभु खल रहु ठाढ़ा ॥
जिमि हरि बधुहि क्षुद्र शशचाहा * भयसि कालवशनिशिचर नाहा ॥
वायस[1] करचह खगपति समता * सिन्धु समान होइ किमि सरिता[2] ॥
खरिकि होइ सुरधेनु समाना * जाहु भवन निज सुन अज्ञाना ॥
सुनत वचन दशशीश लजाना * मनमहँ चरण वन्दि सुखमाना ॥
दोहा–क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ॥
चल्यउ गगन पथ आतुर, भय रथ हांकि नजाय ॥४६॥
हा जगदीश देव रघुराया * केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतहरण शरण सुखदायक * हारघुकुल सरोज दिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा * सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा ॥
कैकेयी मन जो कछु रह्यऊ * सो विधि आजु मोहिं दुख दयऊ ॥
पंचवटीके खग मृग जाती * दुखी भये वनचर बहुभांती ॥
विविध विलाप करति वैदेही * भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा * पुरोडाश[3] चह रासभ[4] खावा ॥
सीताकर विलाप सुनि भारी * भये चराचर जीव दुखारी ॥
दोहा–बहुविधि करत विलाप नभ, लिये जात दशशीश ॥
डरत न खल बर पाइ भल, जो दीन्हो अज ईश ॥४७॥

१ कौवा । २ नदी । ३ देवतनके यज्ञको भाग । ४ गदहा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गृध्रराज सुनि आरत वानी * रघुकुल तिलकनारि पहिचानी ॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई * जिमि मलेच्छवश कपिला गाई ॥
अहह प्रथम बल ममतनु नाहीं * तदपि जाइ देखौं बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा * करिहौं यातुधान[1] कर नाशा ॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे * छूटै पवि[2] पर्वत पहँ जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ किन होही * निर्भय चलसि नजानोसि मोही ॥
आवत देखि कृतांत[3] समाना * फिरि दशकंध करत अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई * ममबल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ[4] जटायू येहा * ममकर तीरथ छांड़हि देहा ॥

दोहा—मम भुजबल नहिं जानत, आवत तपिन्ह सहाइ ॥
समरचढ़ै तौ इहिहतौं, जियत न निज थल जाइ ॥ ४८ ॥

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा * कह सुन रावण मोर सिखावा ॥
तजि जानकी कुशल गृह जाहू * नाहिंत सत्य सुनहु बहुबाहू ॥
रामरोष पावक अति घोरा * होइहि सकल शलभ[5] कुल तोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा * तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच[6] विरथ कीन्ह महिगिरा * सीताहिं राखि गृध्र पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशर संधाना * गृध्र आइ काट्यउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि विदरिसि देही * दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही ॥

दोहा—जेहँ रावण निज वश किये, मुनि गण सिद्ध सुरेश ॥
तेइँ रावण सन समर अति, धीर वीर गृध्रेश ॥ ४९ ॥

स्वस्त भये सो पुनि उठिधावा * मारे गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा * थकित भये तब जरठ गिधेशा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना * काढेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी * सुमिरि रामकी अद्भुत करणी ॥

---

१ राक्षस । २ वज्र । ३ कालकेसमान । ४ वृद्ध । ५ भस्म पतंग । ६ बाल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Siddhanta eGangotri Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनमहँ गृध्र परम सुखभाना * रामकाज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहि यान चढाय बहोरी * चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति विलाप जाति नभ सीता * व्याध विवश जनु मृगी सभीता॥
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी * कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
इहि विधि सीतहि सो लैगयऊ * वन अशोक महँ राखत भयऊ ॥

दोहा—हारि परा खल बहुत विधि, भय अरु प्रीति दिखाइ ॥
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ ॥ ५० ॥

"उहां विधाता मन अनुमाना * सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनकतनया पहँ जाहू * सुधि नपाव जिहि निशिचर नाहू ॥
असकहि विधि सुन्दर हविआनी* सौंपि बहुरि बोले मृदुवानी ॥
इह भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा * वर्ष सहसदश संशय नाशा ॥
सो प्रसाद लै आर्यसु पाई * चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु वासवे माया निज गोई * रक्षक रहे गये तहँ सोई ॥
तदपि डरत सीता पहँ आयउ * करिप्रणाम निज नाम सुनायउ ॥
निश्चय जान सुरेश सुजाना * पिता जनक दशरथ सम माना ॥
करि परितोषे दूरकर शोका * हव्य खवाय गये निज लोका ॥"

दोहा—जेहि विधि कपट कुरंग सँग, धाय चले श्रीराम ॥
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरि नाम ॥ ५१ ॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी * मन बहु चिंता कीन्ह विशेषी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली * आयहु तात वचन मम पेली ॥
निशिचर निकर फिरहिं वनमाहीं * मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥
अहहतात भल कीन्हेउ नाहीं * सियविहीन मम जीवन काहीं ॥
इहिते कवन विपति बड़ भाई * खोयहु सीय काननहिं आई ॥

---

१ इन्द्र । २ पायस । ३ भूँख । ४ आज्ञा । ५ इन्द्र । ६ समाधान । ७ कपटमृग मारीच । ८ भाई लक्ष्मणजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गहि पदकमल अनुज कर जोरी * कहेउ नाथ कछु मोरि नखोरी ॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहँवां * गोदावरि तट आश्रम जहँवां ॥
आश्रम देखि जानकी हीना * भये विकल जस प्राकृत दीना॥
दोहा-कानन रहेउ तडाग इव, चक चकई सिय राम ॥
रावण निशि बिछुरन किये, दुख बीते चहुँ याम ॥ ५२ ॥
पर दुख हरण शोक दुखनाहीं * भा विषाद तिनके मन माहीं ॥
हा गुणखानि जानकी सीता * रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहुभांती * पूंछत चले लता तरु पांती ॥
हेखग मृग हेमधुकर श्रेनी * तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृग मीना * मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुन्दकली दाडिम दामिनी * कमल शरद शशि अहि भामिनी ॥
वरुणपाश मनोज धनुहंसा * गज केहरि नित सुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हरषाहीं * नेकु नशंक सकुच मनमाहीं ॥
सुन जानकी तोहिं विनु आजू * हर्षे सकल पाइ जनुराजू ॥
किमि सहिजात अनखतोहिं पाहीं * प्रिया वेगि प्रकटत कस नाहीं ॥
इहिविधि विलपत खोजत स्वामी * मनो महाविरही अति कामी ॥
दोहा-फणि मणि हीन दीन जिमि, मीन[1] हीन जिमि वारि[2] ॥
तिमि व्याकुल भये लषण तहँ, रघुवरदशा निहारि ॥५३॥
धरि उरधीर बुझावहिं रामहिं * तजहिं नशोक अधिक सुखधामहिं॥
पूरण काम राम सुखराशी * मनुज चरितकर अज[3] अविनाशी ॥
सरवर अमित नदी गिरि खोहा * बहु विधि राम लषण तहँ जोहा॥
शोच हृदय कछु कहिनहिं आवा * टूट धनुष शर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ शोणित[4] देखिय कैसे * श्रावण जल भा ढाबर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहि बुझाई * काहू कीन्ह युद्ध इहि ठाई ॥
आगे परा गृध्रपति देखा * सुमिरत रामचरणकी रेखा ॥

१ मछली । २ पानी । ३ अजन्मा । ४ रक्त ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—कर सरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुवीर ॥
निरखि राम छबि धाम मुख, विगत भई सबपीर ॥ ५४ ॥
तब कह गृध्र वचन धरि धीरा * सुनहु राम भंजन भवभीरा ॥
नाथ दशानन यहगति कीन्ही * तेहिखल जनकसुता हरि लीन्ही॥
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसाईं * विलपति अति कुररीकी नाईं ॥
दरशलागि प्रभु राखेउँ प्राना * चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
रामकहा तनु राखहु ताता * मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता ॥
जाकर नाम मरत मुखआवा * अधमौ मुक्त होइ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे * राखहुँ देह नाथ केहि लागे ॥
जलभरि नयन कहा रघुराई * तात कर्म्म निजते गतिपाई ॥
परहित वश जिनके मनमाहीं * तिन्हकहँ जगदुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहु ममधामा * देउँ कहा तुम पूरण कामा ॥
दोहा—सीता हरण तात जनि, कहहु पितासन जाइ ॥
जो मैं राम तौ कुल सहित, कहहि दशानन आइ ॥ ५५ ॥
गृध्र देह तजि धरि हरि रूपा * भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगात विशाल भुजचारी * अस्तुति करत नयन भरि वारी ॥
छंद—जयराम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही ॥
दशशीश बाहु प्रचंड खण्डन चण्ड शर मण्डन मही ॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ॥
नितनौमिराम कृपालु बाहु विशाल भवभय मोचनं ॥ २२ ॥

छन्दार्थ—हे राम आपके अनूपरूपकी जयहो यह रूप कैसाहै कि निर्गुण जो व्यापक ब्रह्महै और सगुण मत्स्यादि अवतार और सत रज तम गुण अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश इन सबका प्रेरक है और आप धनुष बाणको पृथ्वीके भूषित करनेको और दूषणरूपी रावणके निपातके हेतु धारण किया है आपका शरीर श्याम घनके समानहै और कमलके तुल्य बड़े बड़े नेत्रहैं हे राम कृपालु संसारके भय छुडाने वाली विशालबाहुको मैं प्रणाम करताहूं ॥ २२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ॥
गोविन्द गोपरद्वन्द्वहर विज्ञानघन धरणीधरं ॥
जे राम मंत्र जपन्त सन्त अनन्त जन मन रंजनं ॥
नितनौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दलगंजनं ॥२३॥
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्मव्यापक विरंज अज कहि गावहीं ॥
करिज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
सोप्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई ॥
ममहृदय पंकज भृंगअंग अनंग बहु छबि सोहई ॥ २४ ॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा॥
पश्यन्ति यं योगी यतनकरि करत मन गो वश यदा ॥
सो राम रमानिवास संतत दासवश त्रिभुवन धनी ॥
मम उर वसहु सो शमन संसृति जासु कीरति पावनी॥२५॥

हेराम जो आपका बल अप्रमेय है और आप अनादि जन्मसे रहित और अप्रगट शक्ति और अद्वैत अगोचर अर्थात् इंद्रियोंसे परे और गोविंद इन्द्रियोंका भोक्ता और इंद्रियोंके परे द्वन्द्व मोह मेरा तेरा आदिके हरनेवाले विज्ञानके बरसनेवाले और पृथ्वीके धारण करनेवाले हो जो कोई अनंत संत राममंत्रको जपते हैं उनके मनको रंजन करते हो हे कामादिखलदलगंजन अकाम प्रिय राम मैं आपको नित्य प्रणाम करताहूं ॥ २३ ॥ जिनको वेद निरंतर रोगरहित जन्मरहित ब्रह्म कहिकै गावते हैं और जिनको अनेक मुनि ज्ञान ध्यान विराग योग करकै ध्यान करतेहैं सोई करुणाजलके बरसनेवाले प्रगट होकै अपनी शोभाके समूहोंसे जड चैतन्योंके मोहनेवाले मेरे हृदयकमलमें अनेक कामकी बहु छबियुक्त भृंग सोभायमान हो ॥ २४ ॥ जो अगम और सुगम और स्वभावकरिके निर्मल विषम सदा शीतलहो जिनको योगीजन मनके वश करनेवाले अनेक यत्न कर हर्षसे देखते हैं हे राम सोई रमानिवास त्रिभुवनधनी जो आप अपने दासके निरन्तर वशरहतेहो तुम्हारी कीर्ति जरा मरणकी नाश करनेवाली है मेरे हृदयमें बसो॥२५॥

१ मन बुद्धि वाणीते परे हो । २ विरज कहीं षट्विकार रहित जन्म, वृद्धि, विवर्ण, क्षीण, जरा, मरण, । ३ देखतेहैं । ४ जन्म मरण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—अविरल भक्ति मांगिवर, गृध्र गयउ हरि धाम ॥
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्ही राम ॥ ५६ ॥

कोमल चित अतिदीनदयाला * कारण विन रघुनाथ कृपाला ॥
गृध्र अधम खग आमिष[1] भोगी * गति तेहि दीन्ह जो याचत योगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी * हरि तजि होहिं विषय अनुरागी॥
पुनि सीतहि खोजत दोउभाई * चले विलोकत वन बहुताई ॥
शंकुल[2] लता विटप घनकानन * बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पन्थ *कबन्ध निपाता * तेइँ सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हो शापा * प्रभु पद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गन्धर्व कहों मैं तोही * मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥

दोहा—मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर[3] सेव ॥
मोहिं समेत विरंचि[4] शिव, वश ताके सब देव ॥ ५७ ॥

शापत ताडत परुष कहंता * विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना * नहिंन शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना ॥
दुष्टौ धेनु[5] दुही सुन भाई * साधु रासभी[6] दुही न जाई ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा * निजपद प्रीति देखि मनभावा ॥
रघुपति चरण कमल शिरनाई * गयउ गगन[7] आपनि गतिपाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा * शबरीके आश्रम पगुधारा ॥

---

* कबन्ध पूर्व जन्मका गन्धर्व था एक समय उसके गानेसे दुर्वासाऋषि नहीं रीझे तौ यह उनपर हँसा तब दुर्वासाऋषिने शाप दिया कि राक्षस हो सो यह राक्षस होय उपद्रव करने लगा तब इंद्रने वज्र मारा कि शिर पेटमें घुसगया तबसे उसका नाम कबंधपडा और उसकी योजनभरकी बाहुथींजो बाहुके बीचसें आताथा उसे खींचकर खालेता था सो जब रामचंद्रको खैंचने लगा तौ इन्होंने खड्गसे भुजा काट डालीं

---

१ मांस । २ परिपूर्ण हैं लता जिस वनमें । ३ ब्राह्मण । ४ ब्रह्मा । ५ गौ । ६ गधी । ७ आकाश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शबरी दखि राम गृहआये * मुनिके वचन समुझि जिय भाये॥
सरसिज लोचन बाहु विशाला * जटा मुकुट शिर उर वनमाला ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुखवचन न आवा *पुनि पुनि पदसरोज शिरनावा ॥
सादर जल लै चरण पखारे * पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥

दोहा–कन्द मूल फल सरस अति, दिये रामकहँ आनि ॥
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिं बार बखानि ॥ ५८ ॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी * प्रभुहि विलोकि प्रीति अति बाढ़ी॥
केहिविधि स्तुति करहुँ तुम्हारी * अधम जाति मैं जड़ मति भारी॥
अधम ते अधम अधम अतिनारी* तिनमहँ मैं मतिमन्द गँवारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता * मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई * धन बल परिजन गुण चतुराई ॥
भक्ति हीन नर सोहै कैसे * विनु जल बारिद[2] देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं * सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तन करसंगा * दूसरि रत मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा–गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान ॥
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान ॥ ५९ ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा * पंचम भजन सो वेद प्रकाशा ॥
षट दम शील विरत बहु कर्मा * निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥
सतईं सब म्वहिं मय जग देखै * मोते सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथा लाभ सन्तोषा * स्वप्नेहुँ नहिं देखै परदोषा ॥
नवम सरल सबसों छलहीना * मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एको जिन्हके होई * नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिशय[3] प्रियभामिनि मोरे * सकल प्रकार भक्ति दृढ़तोरे ॥

१ अतिश्रेष्ठ । २ मेघ । ३ अत्यंत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई * तोकहँ आज सुलभ भइ सोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा * जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥
दोहा—सब प्रकार तव भागवड़, मम चरणन्ह अनुराग ॥
तव महिमा जेहि उर बसिहि, तासु परम बड़ भाग ॥ ६० ॥
सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई * पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुता कै सुधिम्वहिं भामिनि*जानहु तो कहु करिवर गामिनि ॥
पम्पासरहि जाहु रघुराई * मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ॥
ऋषिमतंग महिमा गुणभारी * जीव चराचर रहत सुखारी ॥
वैर न कर काहूसन कोई * जासन वैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले * खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकर जाई * तहां होइ सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुवीरा * जानतहू पूंछत मतिधीरा ॥
बार बार प्रभु पद शिरनाई * प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥
छंद—कहिकथा सकल विलोकि हरिमुख हृदय पदपंकजधरे ॥
तजि योग पावकदेह हरि पदलीन[1] भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोक प्रद सब त्यागहू ॥
विश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥ २६ ॥
दोहा—जाति हीन अघ जन्म मय, मुक्तकीन्ह अस नारि ॥
महामन्दमन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ६१ ॥
चले राम त्यागेउ वन सोऊ * अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥
विरही इव प्रभु करत विषादा * कहत कथा अनेक सम्वादा ॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा * देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा॥
नारिसहित सब खग मृग वृंदा * मानहुँ मोरि करतहहिं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृग[2] निकर पराहीं * मृगी कहहिं तुम कहँ भय नाहीं॥

१ प्राप्त । २ मृगोंके झुंडके झुंड भागते हैं ।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम आनन्द करहु मृग जाये * कंचन मृग खोजन ये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं * मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं ॥
शास्त्र सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय * भूप सुसेवित वशनहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं * युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं ॥
देखहु तात वसन्त सुहावा * प्रियाहीन म्वहिं भय उपजावा ॥
दोहा–विरह विकल बलहीन मोहिं, जानिसि निपट अकेल ॥
सहित विपिन मधुकर खगन्ह, मदन कीन्ह बगमेल ॥ ६२ ॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ॥
डेरा दीन्ह्यउ मनहुँ तिन्ह, कटक हटकि नहिं जात ॥ ६३ ॥
विटप विशाल लता अरुझानी * विविध वितानै दिये जनु तानी ॥
कदलि ताल वर ध्वजा पताका * देखिन मोह धीर मन जाका ॥
विविध भांति फूले तरु नाना * जनु बानैत बनै बहुबाना ॥
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये * जनुभट विलग विलग ह्वै छाये ॥
कूजत पिक मानहु गजमाते * ढेक महोख ऊंट विषराते ॥
मोर चकोर कीर वर वाजी * पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचर यूथा * वरणि नजाइ मनोज वरूथा ॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना * चातक वन्दी गुण गण वरना ॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई * त्रिविध बयारि बसीठी आई ॥
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे * विचरत सबहिं चुनौती दीन्हे ॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका * रहहिं धीर तिन्हके जगलीका ॥
यहिके एक परम बल नारी * त्यहिते उवर सुभट सोइ भारी ॥
दोहा–तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ ॥
मुनि विज्ञान धाम मन, करहिं निमिष महँ क्षोभ ॥ ६४ ॥
लोभके इच्छा दम्भ बल, कामके केवल नारि ॥

---

१ हथिनी । २ स्त्री । ३ छत्र । ४ केला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रोधके परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥ ६५ ॥
गुणातीत सचराचर स्वामी * राम उमा सब अन्तर्यामी ॥
कामिनकै दीनता दिखाई * धीरनके मन विरति[1] दृढ़ाई ॥
क्रोध मनोज[2] लोभ मद माया * छूटहिं सकल रामकी दाया ॥
सोनर इंद्रजाल नहिं भूला * जापर होइ सो नट अनुकूला ॥
उमा कहूं मैं अनुभव[3] अपना * हरिको भजन सत्य जग स्वपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा * पम्पानाम शुभग गम्भीरा ॥
सन्त हृदय जस निर्मल वारी * बांधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा * जिमि उदार गृह याचक भीरा ॥
दोहा—पुरइनि सघन ओट जल, वेगि न पाइय मर्म ॥
माया छन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥ ६६ ॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं ॥
यथा धर्म शीलान्हके, दिन सुख संयुत जाहिं ॥ ६७ ॥
विकसे[4] सरसिज नानारंगा * मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा * प्रभु विलोकि जनु करत प्रशंसा
चक्रवाक बक खग समुदाई * देखत बनै वरणि नाहिं जाई ॥
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई * जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये * चहुँ दिशि कानन विटप सुहाये ॥
चम्पक बकुल[5] कदम्ब तमाला * पाटल पनस पलाश[6] रसाल[7] ॥
नवपल्लव कुसुमित तरुनाना * चंचरीकपटली कर गाना ॥
शीतल मन्द सुगन्ध सुहाऊ * सन्तत वहै मनोहर बाऊ ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनि करहीं * सुनि रव[8] सरस ध्यान मुनिटरहीं॥
दोहा—फूले फले विटप सब, रहे भूमि नियराइ ॥

---

१ वैराग्य । २ कामदेव । ३ सिद्धान्त । ४ नानारंगके कमल फूलेहैं । ५ मौनसिरी । ६ ढाक । ७ आँब । ८ शब्द ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पति पाइ ॥ ६८ ॥

देखि राम अतिरुचिर तलावा * मज्जन कीन्ह परमसुख पावा ॥
देखि एक सुंदर तरु छाया * बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये * स्तुति करि निजधाम सिधाये ॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला * कहत अनुजसन कथा रसाला ॥
विरहवन्त भगवंतहि देखी * नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर शाप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि विलोकहुँ जाई * पुनि न बनै अस अवसर आई ॥
यह विचार नारद कर वीना * गये जहां प्रभु सुख आसीना ॥
गावत रामचरित मृदुवानी * प्रेम सहित बहु भांति बखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई * राखे बहुत वार उरलाई ॥
स्वागत पूंछि निकट बैठारे * लक्ष्मण सादर चरण पखारे ॥

दोहा–नाना विधि विनती करी, प्रभु प्रसन्न जिय जानि ॥
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि ॥ ६९ ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक * सुंदर अगम सुगम वरदायक ॥
देहु एक वर मांगौं स्वामी * यद्यपि जानहु अन्तर्यामी ॥
जानेहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ * जनसन कवहुँकि करौं दुराऊ ॥
कवन वस्तु अस प्रिय मोहिं लागी * जो मुनिवर नसकहु तुम मांगी ॥
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे * अस विश्वास तजहु जनि भोरे ॥
तब नारद बोले हरषाई * अस वर माँगौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका * श्रुतिकह अधिक एकते एका ॥
राम सकल नामन्हते अधिका * होउनाथ अघखगगणवधिका ॥

दोहा–राकारजनी[2] भक्ति तव, राम नाम सोइ सोम[3] ॥
अपर नाम उडुगण[4] विमल, बसहु भक्ति उरव्योम[5] ॥ ७० ॥

---

१ सुंदर । २ पूर्णमासीकी रात्रि । ३ चन्द्र । ४ नक्षत्र । ५ आकाश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Education Trust, Delhi and eGangotri

एवमस्तु मुनि सन कह्यउ, कृपासिन्धु रघुनाथ ॥
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभु पद नायउ माथ ॥ ७१ ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी * पुनि नारद बोले मृदुवानी ॥
राम जबहि प्रेर्‍यहु निजमाया * मोह्यहु मोहि सुनहु रघुराया ॥
तब विवाह चाहौं मैं कीन्हा * प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा ॥
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा * भजहि मोहितजि सकल भरोसा ॥
करौं सदा तिन्हकी रखवारी * जिमि बालकहि राख महतारी ॥
गहि शिशु वच्छ अनल अहिधाई * तहँ राखै जननी अरु गाई ॥
प्रौढ़ भये त्यहि सुतपर माता * प्रीति करैं नहिं पाछिल बाता ॥
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी * बालक सुत सम दास अमानी ॥
जिनहि मोरबल निजबल ताही * दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
यह विचारि पंडित मोहिं भजहीं * पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं ॥

दोहा-काम क्रोध लोभादिमद, प्रबल मोहकी धार ॥
तिन्ह महँ अति दारुण दुखद, माया रूपी नार ॥ ७२ ॥

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति संता * मोह विपिन कहँ नारि वसंता ॥
जप तप नेम जलाशय झारी * होइ ग्रीषम शोषै सबनारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका * इनहिं हर्ष पद वरषा एका ॥
दुर्वासना कुमुद समुदायी * तिनकहँ शरद सदा सुखदायी ॥
धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा * ह्वैहिम तिनहिं देय दुख मन्दा ॥
पुनि ममता जवास बहुताई * पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी * नारि निबिड़ रजनी अँधियारी ॥
बुधि बल शील सत्य सबमीना * वनशीसम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दोहा-अवगुण मूल शूलप्रद, प्रमदा सब दुख खानि ॥
ताते कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जिय जानि ॥ ७३ ॥

---

१ सत्यसंकल्प । २ वृद्ध । ३ स्त्री ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि रघुपतिके वचन सुहाये *मुनि तनु पुलकि नयनभरि आये॥
कहहु कवन प्रभुके असरीती * सेवक परममता अतिप्रीती ॥
जेनभजाहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी* ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम विज्ञान विशारद ॥
सन्तनके लक्षण रघुवीरा *कहहु राम भंजन भवभीरा ॥
सुन मुनि सन्तनके गुण कहऊं * ज्यहि ते मैं उनके वश रहऊं ॥
षट विकार तजि अनघ अकामा *सकल अकिंचन शुचि सुखधामा॥
अमित बोध परमारथ भोगी * सत्य सार कवि कोविद योगी ॥
सावधान मद मान विहीना * धीर भक्त गति परम प्रवीना ॥

दोहा—गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह ॥
तजि मम चरण सरोज प्रिय, तिन्हकहँ देह नगेह ॥ ७४ ॥

निज गुण सुनत श्रवण संकुचाहीं * परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं ॥
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती * सरल स्वभाव सबहि सन प्रीती॥
जप तप व्रत दम संयम नेमा * गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया * मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना * बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मान मद करहिं न काऊ * भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला * हेतुरहित परहित रतशीला ॥
सुनु मुनि साधुन्हके गुण जेते * कहि न सकहिं शारदश्रुतितेते ॥

छंद—कहिसक न शारद शेष नारद सुनत पदपंकज गहे ॥
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्त गुण निज मुख कहे ॥
शिरनाइ वारहिं वार चरणन्ह ब्रह्म पुर नारद गये ॥
ते धन्य तुलसी दास आश विहाइ जे हरि रँगरये ॥ २७ ॥

---

१ काम, क्रोध, मद, मात्सर्यादि । २ पाप रहित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-रावणारि यश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ॥
राम भक्ति दृढ़ पावहिं, विनु विराग जप योग ॥ ७५ ॥
दीपशिखा सम युवति जन, मनजनि होसि पतंग ॥
भजहिं राम तजि काममद, करहिं सदा सतसंग ॥ ७६ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
आरण्यकांडेतृतीयःसोपानःसमाप्तः ॥ ३ ॥

इति आरण्यकाण्ड समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

खेमराज श्रीकृष्णदास.

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना-मुंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इदं तुलसीकृतरामायणे
आरण्यकाण्डं मुम्बय्यां खेमराज
श्रीकृष्णदासइत्यनेन स्वकीये
"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रायन्त्रा-
लयेंऽकितम् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत

रामायणान्तर्गत

किष्किन्धाकाण्डम् ।

जिसमें

सुग्रीव और रघुनाथकी मित्रता, तथा सुग्रीव व वालि-की व्युत्पत्ति, वालि करके मायावी वध तथा दुंदुभि दैत्य वधान्त वालि शाप, तालवृक्ष छेदन तथा वालि सुग्रीव युद्ध तथा राम बाणसे वालिवध तथा वर्षा शरद ऋतु वर्णन हनुमानजी करके सैना एकत्र करना सीताकी खोजमें दूतोंका जाना तथा हनुमानजीका जीवनचरित्र आदि अत्यन्त पवित्र कथा वर्णित हैं ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदास

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रकट की ।

बम्बई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किष्किन्धाकाण्डम् ४

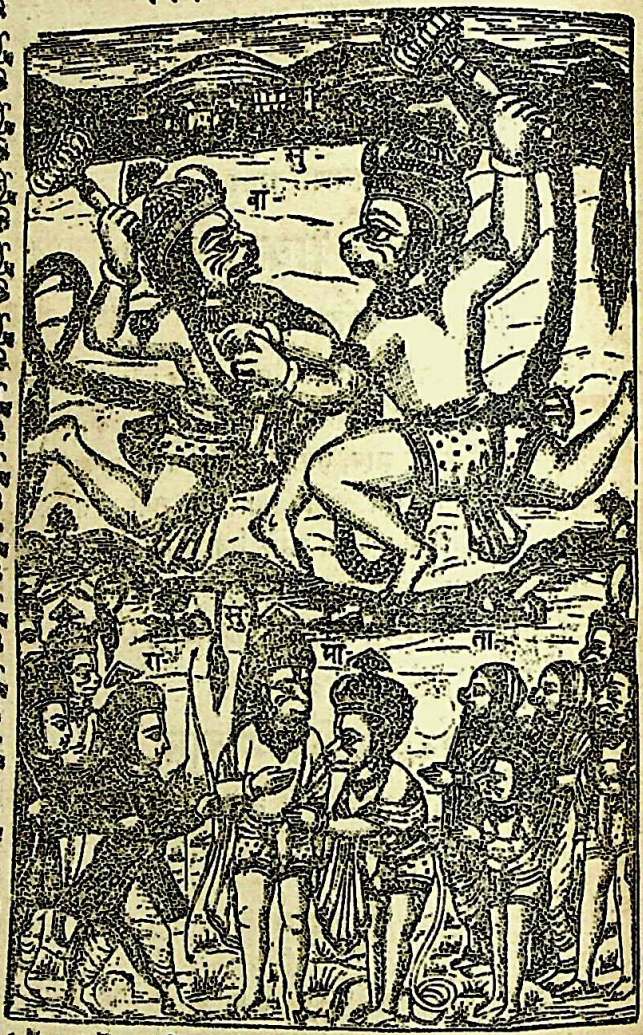

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः ।

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे किष्किन्धाकाण्डम् ।

श्लोक ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ । शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवंतौ हितौ । सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हिनः ॥ १ ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं । श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं संशोभितंसर्वदा ॥ संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं । धन्यास्तेकृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—कुन्दके फूलकी समान और नीलकमलकी समान सुंदर अति बलवान विज्ञानके घर दोनों शोभा संयुक्त धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वेदसे प्रशंसित और गौ ब्राह्मणोंको प्यार करनेवाले मायासे मनुष्यरूप धारण कियेहुए सद्धर्मके कवच धारण किये हितकारी सीताके ढूंढनेमें तत्पर मार्गमें विचरते हुए राम लक्ष्मण दोनों मुझको भक्तिके देनेवालेहैं ॥ १ ॥ वे सुकर्म कर्त्ता धन्यहैं जो निरन्तर रामनाम रूपी अमृतको पान करतेहैं वोह राम नाम रूपी अमृत कैसाहै कि ब्रह्म वेदरूपी समुद्रसे उत्पन्न कलिमलका नाशक जन्म मरणादिकसे रहित शोभासे युक्त शिवजीके चंद्रमुखमें सदैव शोभित और संसाररूपी रोगका औषधहै और सुंदर मधुरतरहै और वियोग समयमें श्रीजानकीजीका जिलानेवालाहै ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—मुक्तिजन्म महिजानि, ज्ञानखानि अघ हानिकर ॥
जहँ बस शंभु भवानि, सोकाशी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल जेहि पान किय ॥
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु शंकर सरिस ॥ २ ॥

आगे चले बहुरि रघुराई * ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहँरह सचिव सहित सुग्रीवा * आवत देखि अतुल बलसीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना * पुरुष युगल बलरूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई * कहेसि मोहिं निज सैन बुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला * भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ * माथनाय पूंछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा * क्षत्री रूप फिरहु वनवीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपद गामी * कवन हेतु वन विचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता * सहत दुसह वन आतप वाता ॥
की तुम तीनि देव महँ कोऊ * नर नारायण की तुम दोऊ ॥
दोहा—जगकारण तारण भवहिं, भंजन धरणी भार ॥
कै तुम अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

सुनि बोले रघुवंश कुमारा * विधिकर लिखा को मेटन हारा ॥
कोशलेश दशरथके जाये * हम पितुवचन मानि वन आये ॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई * संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहां हरी निशिचर वैदेही * विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई * कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परे गहि चरणा * सो सुख उमा जाहि नहिंवरणा ॥
पुलकित तनु मुख आव न वचना * देखत रुचिर वेषकी रचना ॥

---

१ शोकके हरनेको तरवारिसदृश । २ विष । ३ ब्रह्मचारी । ४ पर्व्वत। ५ घाम।
६ ब्रह्मा, विष्णु, महेश । ७ अयोध्या । ८ जनककुमारी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

पुनि धीरज धरि स्तुति कीन्हा * हर्षि हृदय निज नाथहि चीन्हा ॥
मैं अजान होइ पूछौं साईं * तुम कस पूँछहु नरकी नाईं ॥
तव मायावश फिरौं भुलाना * ताते प्रभु पद नहिं पहिचाना ॥
दोहा—एक मन्द मैं मोहवश, कीशं हृदय अज्ञान ॥
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान ॥ २ ॥
यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे * सेवक प्रभुहिं परे जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू * सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुवीर दुहाई * जानौं नाहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पितु मातु भरोसे * रहै अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
असकहि चरण परे अकुलाई * निजतनु प्रकट प्रीति उरछाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा * निजलोचन जलसींचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जियजानि मानसि ऊनो * तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना ॥
समदरशी मोहिं कह सब कोई * सेवक प्रिय अनन्यगति सोई ॥
दोहा—सो अनन्य अस जाहिके, मति न टरै हनुमन्त ॥
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त ॥ ३ ॥
देखि पवनसुत पति अनुकूला * हृदय हर्षि बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपिपति रहई * सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मयत्री कीजे * दीन जानि त्यहिं अभयकरीजे ॥
सो सीताकर खोज कराई * जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाई ॥
इहि विधि सकल कथा समुझाई * लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहँ देखा * अतिशयधन्य जन्मकरिलेखा ॥
सादर मिल्यउ नाइ पदमाथा * भेंटयउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपिके मन विचार यह नीती * करिहहिं विधि मोसन ये प्रीती ॥
दोहा—तब हनुमन्त उभय दिशि, कहि सब कथा बुझाइ ॥

१ बन्दर । २ सन्देह । ३ बंदर । ४ दोउदिशि ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ ४ ॥
कीन्ह प्रीती कछु बीच नराखा * लक्ष्मण राम चरित सब भाषा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि वारी * मिलिहिनाथ मिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित यहां इकबारा * बैठि रह्यउँ कछु करत विचारा ॥
गगनपन्थ[1] देखी मैं जाता * परवश परी बहुत विलखाता ॥
राम राम हाराम पुकारी * मम दिशि देखि दीन पट डारी ॥
मांगा राम तुरत सो दीन्हा * पट उरलाइ शोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा * तजहु शोक मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई * जेहिविधि मिलहि जानकी आई ॥

दोहा—सखावचन सुनि हरषेउ, रघुपति करुणासीव ॥
कारण कवन बसहु वन, मोसन कहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

अथ क्षेपक ॥

पूंछहिं प्रभु हँसि जानहिं ताही * महावीर मर्कट कुल माही ॥
तव स्थान प्रथम केहिठामा * कहु निज मात पिताकर नामा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * कहहुँ आदिते उत्पति गाई ॥
ब्रह्मा नयनन कीच निकारी * लै अँगुरी भुइँ ऊपर डारी ॥
वानर एक प्रगट तहँ होई * चंचल बहु विरंचि बल सोई ॥
तेहिकर नाम धरा विधि जानी * ऋच्छराज तेहिसम नहिं ज्ञानी ॥
विधि पदनाइ शीश कपि कहई * आयसु[2] कहा मोहिं प्रभु अहई ॥
विचरहु वन गिरि वन फलखावहु * मारहु निश्चर जेजहँ पावहु ॥
सो ब्रह्माकी आज्ञा पाई * दक्षिण दिशा गयउ रघुराई ॥

दोहा—ऋच्छराज तहँ विचरई, महावीर बलवान ॥
निश्चर मिलेते सबहने, लैलै घड़े पषान ॥ ६ ॥

फिरत दीख यक कूप अनूपा * जल परिछाहिं दीख निजरूपा ॥

---

१ आकाशमार्ग । २ आज्ञा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

तब कपि शोच करत मनमाहीं * केहिविधि रिपु रहहींह्यां आही ॥
ताहि देखि कोपा कपिवीरा * सब दिशि फिरा कूपके तीरा ॥
जोजो चरित कीन्ह कपि जैसा * सो सो चरित दीख तहँ तैसा ॥
गरजा कीश सोइ सो बोला * कूदिपरा जलमाही डोला ॥
तब तनु पलटि भई सो नारी * अति अनूपगुण रूप अपारी ॥
सुनहु उमा अति कौतुक होई * आइ बहोरि ठाढ़ि भै सोई ॥
सुरपति दृष्टि परी तेहि काला * तेहि तब विंदु परा तेहि बाला ॥
मोहे भानु देखि छबिसीवा * छूटा विंदु परा तेहि ग्रीवा ॥
दोहा—इंद्र अंशते बालिभा, महावीर बलधाम ॥
दिनकर सुत दूसर भयो, तेहि सुग्रीवउ नाम ॥ ७ ॥
पुनि तत्काल सुनहु रघुवीरा * नारी पलटि भयो सोइवीरा ॥
तब ऋच्छराज प्रीति मनभयऊ * हमहि संगलै विधि पहँ गयऊ ॥
करि प्रणाम सब चरित बखाना * कह अज हरि इच्छा बलवाना ॥
तब विधि हमहि कहा समुझाई * दक्षिण दिशा जाहु दोउ भाई ॥
किष्किंधा तुम करौ अस्थाना * रंग भोग बहु बिधि सुखनाना ॥
जो प्रभुलोक चराचर स्वामी * सो अवतरहि नाथ बहुनामी ॥
रघुकुल मणि दशरथ सुतहोई * पितु आज्ञा विचरहि वन सोई ॥
नर लीला करिहै बिधिनाना * पैहौ दरश होइ कल्याना ॥
दोहा—तब हर्षे हम बंधु दोउ, सुनिकै विधिके वयन ॥
तप जप योग न पावहीं, सो हम देखब नयन ॥ ८ ॥
विधिपद वंदि चले दोउ भाई * किष्किंधा तब आये गुसाई ॥
बालीराज कीन सुरत्राता * वनवसि दैत्य हन्यो दोउ भ्राता ॥
मयदानवके सुत दोउ वीरा * मायावी दुंदुभि रणधीरा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * विधिगति अलख जानि नहिं जाई ॥
इति क्षेपक ॥

---

१ उपमा रहित । २ सूर्य्यनारायण ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई * प्रीति रही कछु वरणि न जाई॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं * आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्धरात्रि पुरद्वार पुकारा * वालिहु रिपु बल सहै नपारा ॥
धावा वालि देखि सोइभागा * मैं पुनि गयउँ बन्धु सँग लागा ॥
गिरिवर गुहा पैठि सो जाई * वालि मोहिं तब कहा बुझाई ॥
परखेहु मोहिं एक पखवारा * नहिं आवौं तो जानेहु मारा ॥
मास दिवस तहँ रह्यहुँ खरारी * निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
तबमैं निजमनकीन्ह विचारा * जाना असुर बन्धु कहँमारा ॥
वालिहत्यसि मोहि मारहिआई * शिला द्वारदे चलेउँ पराई ॥

दोहा—बालि महाबल अमित अति, समर न जीतै कोय ॥
त्यहि मारिसि जो निशिचर, सो अब मारय मोय ॥ ९ ॥

गयउँ भवन मनशोच अपारा * पूछे वालि कह्यो जिमि मारा ॥
पंपापुरके जन तेहि काला * तनु व्याकुल मन बहुत बिहाला ॥
मंत्रिन पुर देखा बिनु साई * दीन्हेउ राज मोहिं बरिआई ॥
वाली ताहि मारि गृहआवा * देखि मोहिं जिय भेद बढावा ॥
रिपुँसमान म्वहिं मारेसि भारी * हरि लीन्हसि सर्वस अरु नारी ॥
ताके भय रघुवीर कृपाला * सकल भुवन मैं फिर्‍यउँ विहाला॥
इहां शाप वश आवत नाहीं * तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला * फरकि उठे दोउ भुजा विशाला ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा—सुनत वचन बोले प्रभू, कहहु शापकी बात ॥
दुंदुभिदैत्य सो कवन विधि, वालि हत्यो तेहि तात ॥१०॥
समदर्शी शीतल सदा, मुनिवर परम प्रवीन ॥

---

१ पर्वतकी कन्दरा । २ एकमहीना। ३रक्त ।४संग्राम।५गृह।६ जबरदस्ती ।७ शत्रु।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust, Delhi and eGangotri

मोहिं बुझाइ कहहु सब, शाप कौन हित दीन ॥ ११ ॥
पुनि पूछत भए कृपानिकेता * वालिहि शाप भयो केहिहेता ॥
बोले तब कपीश[1] मनलाई * दुंदुभिदैत्य महाबल भाई ॥
मल्लयुद्धकी गति सब जानै * और बली नहिं कोऊ मनमानै ॥
एकवार जलनिधि[2] तट आयो * जाइकै जलनिधि माँझ थहायो ॥
सबहि कटी प्रमाण जलभयऊ * करि अभिमान मथत सो लयऊ ॥
मथत सिंधु व्याकुल सब गाता * जीव जंतु सब भये निपाता ॥
तब अकुलाय सिंधु चलिआवा * वचन विचारिहि ताहि सुनावा ॥
तुम बल सरवर और न कोऊ * वचन विचारि कहौं मैं सोऊ ॥
हिमगिरि[3] बल वरणो ना जाई * त्यहि जीतन कर करहु उपाई ॥
वचन सुनत ताहीं चलि आयो * देखि हिमाचल आति मन भायो ॥
ताल ठोंकि हिम लीन उठाई * तब हिमगिरि बहु विनती लाई ॥
तुम्हारे बल सरवर[4] मैं नाहीं * ताते करो न मान तुम्हाहीं ॥
पंपापुर तुमही चलि जाहू * वालि महाबलनिधि अवगाहू ॥
सुनत वचन तबहीं चलिआवा * बालि बालि कहिकै गोहरावा ॥

दोहा—वेष किये सो महिषकर[5], गर्व बहुत मन माहिं ॥
आयो निकट सो गर्जिकर मनहुँ तनक भय नाहिं ॥ १२ ॥

महीं[6] मर्द्दि तरु[7] करै निपाता * गरजेउ घोर गिरा जनुघाता ॥
ठोंकेउ ताल वज्र जनु परहीं * तेहिकर मर्म जानि सब डरहीं ॥
पंपापुर व्याकुल सब काहू * चंद्र ग्रसन जनु आयो राहू ॥
सुनत वालि धावा ततकाला * देखि असुर भुजदंड कराला ॥
भिरे युगल करिवर की नाई * मल्लयुद्ध कछु वरणि नजाई ॥
चारि याम सब कौतुक भयऊ * मुष्टि प्रहार तासु कपि दयऊ ॥

---

१ सुग्रीव । २ समुद्र । ३ हिमवान । ४ तुल्य । ५ भैंसा । ६ पृथ्वी । ७ वृक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरा अवनि तब शैल समाना * जीव जंतु तरु टूटयउ नाना ॥
पुनि तेहि वालि युगल करि डारा * उत्तर दक्षिण कीन प्रहारा ॥
तेहि गिरि पर मुनिकुटी सुहाई * रुधिर प्रवाह गयो तहँ धाई ॥
ऋषि मतंगकर तहाँ निवासा * गये सो ऋषि मंजन सुख रासा ॥
मज्जन करि मतंगऋषि आये * देखि कुटी अति क्रोध बढ़ाये ॥
तबहिं विचार कीन्ह मनमाही * यक्ष एक चलि आवा ताहीं ॥
तिनहीं सकल कही इतिहासा * सुनि मतंग भय क्रोधनिवासा ॥

दोहा-दीन शाप तब क्रोध करि, नहिं मन कीन्ह विचार ॥
वालि नाश गिरि देखताहि, होइजाइ तनुछार ॥ १३ ॥

तेहिभय इहां वालि नहिं आवत * ऋषिकें वचन मानि भय पावत ॥
तेहि भरोस यहि गिरिपर रहऊं * वालित्रास नहिं विचरत कहऊं ॥
यहि दुखते प्रभु दिन अरुराती * चिंताबहुत जराति अतिछाती ॥
जानहु मर्म सकल रघुनाथा * इहां रहौं हनुमाति लै साथा ॥
सो वृत्तांत वालि सब जाना * इहां न आवत कृपानिधाना ॥
सुनि सुग्रीव वचन भगवाना * बोले हरि हँसि धरि धनु बाना ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा-सुन सुग्रीव मैं मारिहौं, बालिहि एकहि बाण ॥
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण ॥ १४ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी * तिन्हैं विलोकत पातक भारी ॥
निजदुख गिरिसमरजकरिजाना * मित्रके दुख रज[1] मेरु[2]समाना ॥
जिनके अस मति सहज न आई * ते शठ हट कत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा * गुणप्रगटै अवगुणहि दुरावा ॥
देत लेत मन शंक न धरहीं * बल अनुमान सदा हित करहीं ॥
विपति काल कर शतगुण नेहा * श्रुति कह संत मित्रगुण एहा ॥

१ रेणुचा । २ पर्व्वत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगे कह मृदु वचन बनाई * पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चित इहिगति सम भाई * अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥
दोहा-मित्र मित्रसों प्रीति करि, हृदय आन मुख आन ॥
जाके मन वच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान ॥ १५ ॥
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी * कपटी मित्र शूल समचारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे * सब विधि करब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनौ रघुवीरा * बालि महाबल अति रणधीरा ॥

अथ क्षेपक ॥

सप्त ताल ये कृपानिधाना * बेधैं सबहिं एकहीं बाना ॥
चंद्र मंडलाकार सुहाई * परै एक बाणहि महिं आई ॥
ताके कर वाली प्रभु मरई * नातौ श्रम मिथ्या कोउ करई ॥
सुनि बोले प्रभु शीतल वानी * कपि चतुरई तोरि मैं जानी ॥
यहि विधि बलका करहु परेखू * कहहु तालकर चरित विशेषू ॥
सुनि सुग्रीव हिये हर्षाना * ताल वृक्ष कर चरित बखाना ॥
एक दिवस कपीशँ वन गयऊ * वृक्ष फूल फल देखत भयऊ ॥
मन हर्षाय सात फल लीना * जल मज्जनते शुँचि सो कीना ॥
दोहा-लै आतुर चलि आयहु, पंपापुर जगदीश ॥
करि स्नान ध्यान पुनि, नाइ इष्ट कहँ शीश ॥ १६ ॥
राखे फल जे मगकरि दर्पा * तेहि फल पर बैठा इक सर्पा ॥
शशिमंडल समान फन काढी * देखि कपीश महारिसि बाढी ॥
अरे दुष्ट भख मोर नशावा * यमपुर आज सदन तुव छावा ॥
नाहिंत शीश शाप ले मोरा * वृक्ष फूटि निकसै तनु तोरा ॥
जहां जायकर बैठा वेदी * निकस तालवृक्ष तनु छेदी ॥
क्रोध निवारि बालि गृह आवा * समाचार यह तक्षक पावा ॥

१ बरछीकी धारके समान । २ हाथ । ३ बालि । ४ पवित्र ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—पुत्र वधन सुनि क्रोध करि, मनदुख भयो अपार ॥
निश्चय मारै वालिसो, जो इह वेधै तार ॥ १७ ॥
सो सब समाचार मैं जानव * असतव कहब नाथ मन मानव ॥

इति क्षेपक ॥

दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये * बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
भये शतखण्ड वृक्षके जबहीं * निकस्यो सर्प ताल तर तबहीं ॥
करि स्तुति जब सर्प सिधावा * निरखि हरीश प्रभुहि सुखपावा॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती * वालि वधन कर भइ परतीती ॥
बारहिं बार नाइ पद शीशा * प्रभुहि जानि मन हर्ष कपीशा ॥
उपजा ज्ञान वचन तब बोला * नाथ कृपा मन भयउ अडोला ॥
सुख सम्पति परिवार बड़ाई * सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥
ये सब राम भक्तिके वाधक * कहहिं सन्त तव पद अवराधक॥
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं * मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
वालि परमहित जासु प्रसादा * मिलेहु राम तुम शमनविषादा ॥
स्वप्नेहु जेहि सन होइ लराई * जागे समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपाकरहु इहि भांती * सब तजि भजन करौं दिनराती ॥
सुनि विराग संयुत कपिवानी * बोले विहँसि राम धनुपाणी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई * सखा वचन मम मृषा न होई ॥
नट मर्कट इव सबहि नचावत * राम खगेश वेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा * चले चाँप सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा * गर्जिसि जाइ निकट बल पावा ॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा * गहिकर चरण नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा * ते दोउ बन्धु तेज बल सीवा ॥
कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा * कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥

१सुग्रीव । २ त्याग । ३ मिथ्या । ४ बन्दर । ५ गरुड । ६ धनुष बाण । ७दशरथ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु * छांडहु मोह कहा मम मानहु "॥
दोहा–कहा बालि सुनु भीरु प्रिय, समदरशी रघुनाथ ॥
जो कदापि मोहिं मारिहैं, तौ पुनि होब सनाथ ॥ १८ ॥
असकहि चला महा अभिमानी * तृण समान सुग्रीवहिं जानी ॥
"बालि देखि सुग्रीवहि ठाढ़ा * हृदय क्रोध पुनि बहुबिधि बाढ़ा"॥
भिरेउ युगल बाली अतितर्जा * मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा * मुष्टिप्रहार वज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला * बन्धु न होइ मोर यह काला ॥
एक रूप तुम भ्राता दोऊ * तेंहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ ॥
कर परशा सुग्रीव शरीरा * तनुभा कुलिश गई सब पीरा ॥
मेली कण्ठ सुमनकी माला * पठवा पुनि बल देइ बिशाला ॥
पुनि नानाविधि भई लराई * विटप ओट देखहिं रघुराई ॥
दोहा–बहु छल बल सुग्रीव करि, हृदय हारि भय मानि ॥
मारा बालिहि राम तब, हिये मांझ शरतानि ॥ १९ ॥
परा विकल महि शरके लागे * पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
श्यामगात शिर जटा बनाये * अरुण नयन शर चाप चढ़ाये ॥
पुनि पुनि चितै चरण चितदीन्हे * सफल जन्म माना प्रभु चीन्हे ॥
हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा * बोला चितै रामकी ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गुसाईं * मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा * कारण कवन नाथ म्वहिं मारा ॥
अनुजवधू भगिनी सुत नारी * सुन शठ ये कन्यासम चारी ॥
इन्हैं कुदृष्टि विलोकै जोई * ताहि वधे कछु पाप न होई ॥
मूढ तोहिं अतिशय अभिमाना * नारि सिखावन करेसि नकाना ॥
मम भुजबल आश्रित तेहि जानी * मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

१ पुष्पोंकीमाला । २ वृक्ष । ३ बाण । ४ पृथ्वी । ५ रक्षित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ॥
प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि ॥ २० ॥

सुनत राम अति कोमलवाणी * वालि शीश परस्यउ निजपाणी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना * बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं * अन्तराम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल शंकर काशी * देत सबहिं समगति अविनाशी ॥
ममलोचन गोचर सोइ आवा * बहुरि कि अस प्रभु बनहि बनावा ॥

छंद—सो नयन गोचर जासुगुण नित नेति कहि श्रुति गावहीं ॥
जिमि पवन मन गोनिरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥
मोहिं जानि अति अभिमान वश प्रभु कह्यउ राखु शरीरहीं ॥
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु[1] वारि करहिं करीरहीं ॥ १ ॥
अब नाथ करि करुणा[2] विलोकहु देव यह वर मांगऊं ॥
ज्यहि योनि जन्मौं कर्मवश तहँ राम पद अनुरागऊं ॥
यहतनय[3] मम सम विनय बल कल्याण पद प्रभु दीजिये ॥
गहि बांह सुर नरनाह अंगद दास अपनो कीजिये ॥ २ ॥

दोहा-रामचरण दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ॥
सुमन माल जिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग ॥ २१ ॥

राम बालि निज धाम पठावा * नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
नानाविधि विलाप कर तारा * छूटे केश[4] न देह सँभारा ॥
पुनि पुनि तासु शीश उरधरई * वदन विलोकि हृदय महँ हतई ॥
मैंपति तुमहिं बहुत समुझावा * कालविवश पिय मनहिं न आवा ॥
अंगद कहँ कछु कहन नपायहु * बीचहि सुरपुर प्राण पठायहु ॥
तारा विकल देखि रघुराया * दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया ॥

---

१ कल्पवृक्ष । २ दया । ३ सुत । ४ बाल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षिति जल पावक[2] गगन[3] समीरा[4] * पंचरचित यह अधम शरीरा ॥
प्रगटसो तनु तव आगे सोवा * जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा॥
उपजा ज्ञान चरण तब लागी * लीन्हउसि परम भक्तिवर मांगी ॥
उमा दारुयोषितकी नाईं * सबहिं नचावत रामगुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा * मृतक कर्म विधिवत सबकीन्हा ॥
रामकहा अनुजहि समुझाई * राज्य देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरणनाइ करि माथा * चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दोहा—लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज ॥
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज ॥ २२ ॥

उमा राम सम हित जग माहीं * सुत पितु मातु बन्धु कोउनाहीं ॥
सुर नर मुनि सबकी यह रीती * स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ॥
वालित्रास व्याकुल दिनराती * तनु विवरण चिंता जर छाती ॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ * अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ ॥
ऐसे प्रभु कहँ जो परिहरहीं * काहेन विपति जाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई * बहुप्रकार नृप नीति सिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा * पुर न जाउँ दश चारि वरीशा ॥
गत ग्रीषम वरषाऋतु आई * रहिहौं निकट शैल परछाई ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू * सन्तत हृदय राखि ममकाजू ॥
तब सुग्रीव भवन फिरि आये * राम प्रवर्षण गिरि पर छाये ॥

दोहा—प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाइ ॥
राम कृपानिधि कछुक दिन, बास करहिंगे आइ ॥ २३ ॥

सुन्दर वन कुसुमित[5] तरु शोभा * गुंजत चंचरीक[6] मधुलोभा ॥
कन्दमूल फल अतिहि सुहाये * भये बहुत जबते प्रभु आये ॥
देखि मनोहर शैल अनूपा * रहेतहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥

---

१ भूमि । २ अग्नि । ३ आकाश । ४ वायु । ५ गेहा । ६ फूलेहुये । ७ भ्रमर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंगलरूप भये वन तबते * कीन्ह निवास रमापति जबते ॥
मधुकर खग मृग तनुधरि देवा * कराहिं सिद्ध मुनि प्रभुकी सेवा॥
फटिकशिला अति शुभ्र सुहाई * सुखआसीन तहां दोउ भाई ॥
कहत अनुजसन कथा अनेका * भक्ति विरति नृपनीति विवेका ॥
वर्षाकाल मेघ नभ छाये * गरजत लागत परम सुहाये ॥

दोहा—लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत वारिद पेखि ॥
गृही विरति जिमि हर्षयुत, विष्णु भक्त कहँ देखि ॥ २४ ॥

घनघमण्ड नभ गरजत घोरा * प्रियाहीन डरपत मनमोरा ॥
दामिनि दमकि रही घन माहीं * खलकी प्रीति यथा थिरनाहीं ॥
वरषहिं जलद भूमि नियराये * यथा नवहिं बुध विद्यापाये ॥
बूंद अघात सहै गिरि कैसे * खलके वचन सन्त सहै जैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई * जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा ढावर पानी * जिमि जीवहि माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटि जल भरेतलावा * जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महँ जाई * होइ अचल जिमि जन हरि पाई॥

दोहा—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परै नहिं पन्थ ॥
जिमि पाखण्ड विवादते, लुप्त भये सदग्रन्थ ॥ २५ ॥

दादुर ध्वनि चहुँ ओर सुहाई * वेद पढ़ैं जन वटु समुदाई ॥
नव पल्लव भे विटप अनेका * साधुके मन जस होइ विवेका ॥
अर्क जवास पात विनु भयऊ * जिमि सुराज्य खल उद्यम गयऊ॥
खोजत पन्थ मिलै नाहिं धूरी * करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी ॥
शशि सम्पन्न सोह महि कैसी * उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशितम घन खद्योत विराजा * जनु दम्भिनकर जुरा समाजा ॥

---

१ सीताजी । २ बिजुली । ३ मेघ । ४पर्वत।५मैला ।६समुद्र ।७मेढक ।८मदार।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Siddhanta eGangotri Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महा वृष्टि चलि फूटि कियारी * जिमि स्वतंत्र होइ बिगराहिं नारी॥
कृषी निरावहिं चतुर किशाना * जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखियत चक्रबाक खगनाहीं * कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊषर वरषै तृण नाहिं जामा * सन्त हृदय जस उपज न कामा॥
विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा * बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ पथिकरहे थकिनाना * जिमि इन्द्रियगण उपजे ज्ञाना ॥

दोहा—कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥
जिमि कुपूत कुल ऊपजे, सम्पति धर्म्म नशाहिं ॥ २६ ॥
कबहुँ दिवस महँ निविड तम, कबहुँक प्रगट पतंग ॥
उपजै बिनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग ॥ २७ ॥

वर्षा विगत शरदऋतु आई * देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महिछाई * जनु वर्षाऋतु प्रकटबुढाई ॥
उदित अगस्त्य पन्थजल शोषा * जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा ॥
सरिता सर जल निर्मल सोहा * सन्तहृदय जस गत मद मोहा॥
रस रस शोष सरित सरपानी * ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ॥
जानि शरदऋतु खंजन[2] आये * पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये॥
पंक[3] न रेणु सोह अस धरणी * नीति निपुण नृपकी जसकरणी ॥
जल संकोच विकल भये मीनां[4] * विबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना ॥
विनु घन निर्मल सोह अकाशा * जिमि हरिजन परिहरसब आशा ॥
कहुँ कहुँ वृष्टि[5] शारदी थोरी * कोउ यक पाव भक्ति जिमि मोरी ॥

दोहा—चले हर्षि तजि नगर नृप, तापस वणिक भिखारि ॥
जिमि हरि भक्ति पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि ॥२८॥

सुखी मीन जहँ नीर[6] अगाधा * जिमि हरि शरण न एको वाधा॥
फूले कमल सोह सर कैसे * निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे ॥

१ खेती । २ खडरैंचा । ३ चहला । ४ मछली । ५ वर्षा । ६ पानी ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुंजत मधुकर निकर अनूपा * सुन्दर खग रव नाना रूपा ॥
चक्रबाक मनदुख निशि पेखी * जिमि दुर्जन पर सम्पति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति वोही * जिमि सुख लहै न शंकरद्रोही ॥
शरदातप निशि शशि अपहरई * सन्तदरश जिमि पातक टरई ॥
देखहिं विधु चकोर समुदाई * चितवहिं हरिजन हरिजिमि पाई ॥
मशक दंश वीते हिमत्रासा * जिमिद्विज द्रोह किये कुलनाशा ॥

दोहा–भूमि जीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ ।
सद्गुरु मिले ते जाहिं जिमि, संशय भ्रम समुदाई ॥२९॥

वर्षागत निर्मलऋतु आई * सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एकवार कैसेहुँ सुधि जानौं * कालहु जीति निमिष महँ आनौं ॥
कतहुँ रहौ जो जीवति होई * तात यत्न करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि विसारी * पावा गज्य कोष पुरनारी ॥
जेहि सायक मैं मारावाली * तेहिशर हतौं मूढ कहँ काली ॥
जासु कृपा छूटे मद मोहा * ताकहँ उमा कि स्वप्नेहु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी * जिन रघुवीर चरण रति मानी ॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना * धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दोहा–तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुणासीव ॥
भय देखाय लै आवहु, तात सखा सुग्रीव ॥ ३० ॥

यहां पवनसुत हृदयविचारा * राम काज सुग्रीव विसारा ॥
निकट जाइ चरणन शिरनावा * चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भयमाना * विषय मोर हरि लीन्ह्यउज्ञाना ॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा * पठवहु जहँ तहँ वानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महँ आव न जोई * मोरे कर ताकर वध होई ॥

---

१ सम्पूर्ण । २ खजाना । ३ क्रोध । ४ प्रीति । ५ हनुमान् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust, Delhi and eGangotri

अथ क्षेपक ॥

सुनि पितु वचन बोल युवराजू * विन हनुमंत होइ नहिं काजू ॥
जानैहै गिरिकंदर सागर * चतुर विचक्षण बुधि बलनागर ॥
केशरिपुत्र पवनकर अंशा * पठवहु नाथ करहु परशंशा ॥
तब सुग्रीव मारुति हंकारा * राम काज जनि लावहु बारा ॥
पति आज्ञा धरिशीश सिधाये * मारि फलांग पूर्वदिशि आये ॥
सुनि हनुमंत मिलन सब आवहिं * माथनाइ हितवचन सुनावहिं ॥
कारण कवन कीन्ह श्रम भारी * तुम किष्किंधानाथ अधारी ॥
हमलायक जो कारज होई * नाथ शीश धरि मानव सोई ॥
सुनि कपि कहा न लावहु बारा * तुमहि बालिलघुबन्धु हँकारा ॥
आतुर जाहु न विलँब करेऊ * परेकाज भारी मन धरेऊ ॥
सुनत वचन सब चले तुरंता * जय सुग्रीव कहि गगन गहंता ॥

दोहा—असीलाख अरु सात शत, कपि दल वर बलचंड ॥
नभ मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलि दंड ॥ ३१ ॥

पठय तिनहि तरक्यो हनुमाना * रोहित पर्वत जाय तुलाना ॥
दुर्धर्षण सब बात सुनाई * चला वीर केदलिवन आई ॥
गजसन कह सुनु वानर राजा * पड़ा कठिन सुग्रीवहि काजा ॥
निजदल संग लाय सब लेहू * धीरजता निजपतिको देहू ॥
भलेहिं नाथ कहि सब उठि चले * वसुधा हली शेष कलमले ॥
पद्म सात दल असी करोरी * चले द्विरद गज भई अँधेरी ॥
हनुमत व्याहर पर्वत आवा * जेठ पुत्र बालि वीर बुलावा ॥
तीसलाख दल साठि हजारा * पवनपुत्र सब कीन्ह जोहारा ॥
कारज होय सो आयसु दीजै * इतना श्रम केहि कारण कीजै ॥
आज्ञाकरिय होय जो काजा * कुशलीहै किष्किंधा राजा ॥
कपिपति रघुपति कथा सुनाई * चला पवनसुत बिदा कराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धुंधमार पर्वत नियराना * कहतहिं श्रीखंड कीन पयाना ॥
छपनकोटि वनचर लैसाथा * करी प्रणाम चले कपिनाथा ॥
तब हनुमत अंजनिगिरि आवा * कुमुदनाम कपि वीर बोलावा ॥
पद्मसात अरुलाख सतासी * धाये वीर महाबल रासी ॥
गगन मार्ग जय राम कहंता * आयो नीलगिरी हनुमंता ॥
जहँ रह नील नाम कपिभारी * अग्नि पुत्र बल बुधि अधिकारी ॥
मारुतसुत तेहि मर्म बुझावा * मेघ समान गर्जि कपिआवा ॥
अर्बुदचारि चारि सतबारा * समरधीर सब सुभट जुझारा ॥
गहेवृक्ष आयुध वनचारी * चले सकल जैराम पुकारी ॥
पवनपुत्र उत्तर दिशि गयऊ * बद्रिक आश्रम परशतभयऊ ॥
आतुर गंधमादन पर गयऊ * जल तडाग देखत सुख लहेऊ ॥

दोहा-गज गवाक्ष कहँ मिल्यो पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥
नाइ माथ स्तुति करत, चले वीर हर्षाइ ॥ ३२ ॥

हनुमत अर्जुन गिरिपर आवा * तारा तात वीर तहँ पावा ॥
नाम सुखेन महाबल बीरा * बुधि बल तेज समर रणधीरा ॥
समाचार पुनि ताहि सुनावा * चलि हनुमंत सुमेरहिं आवा ॥
कनक वरणसम दीपित काया * नेत्रलाल अति विपुल सुहाया ॥
पवन प्रसून गगन पर गरजे * राक्षस देखि काल सम तरजे ॥
लँगुर उठाय शीश पर लाये * मानहु मघवा धनुष सुहाये ॥
एक एक सन बचन सुनावा * हनुमत चरणन शिर तिन नावा ॥
काया कष्ट कीन केहि काजा * कुशल अहहिं किष्किंधा राजा ॥
कपि तहँ समाचार सबभाषा * चले दरश कारण अभिलाषा ॥

दोहा-दश करोरि नव लाख अरु, वीस सहस शत एक ॥
चले केसरी संग लै, करत चरित्र अनेक ॥ ३३ ॥

ताहिहु बिदाकीन्ह कपिपवना * रुद्रगिरी कैलाशहि गवना ॥
कपिबल दुरद ताहि कर नाऊं * रखवारी अलकापुर गाऊं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महातेज बल दुर्गम काया * परम चतुर जानत सब माया ॥
सुनि सो मारुतसुत पहँ आवा * लै सँग सैन शीश तेहिं नावा ॥
पूछा कवन काजहै नाथा * दीन दरश हम भये सनाथा ॥
नृप सुग्रीवके तुम परधाना * आज्ञा देहु वेगि हनुमाना ॥
कहा पवनसुत बिलम न लावहु * लै निज सैन पंपपुर धावहु ॥
जय रघुवीर अनुज लघुवाली * साजि दल चले मेदिनीहाली ॥
सिंहनाद करि पूंछ उठाये * दरश उछाह सकल उठि धाये ॥
रहा न कोउ पवनसुत प्रेरा * मैना गिरिहिं हिमाचल हेरा ॥
प्रेम सहित कपि सकल बुलाये * आस वासना करत पठाये ॥
अंडक नाम महाबल कीशा * चले कहत जय राम अहीशा ॥
ताहि विदाकर पवनकुमारा * विंध्याचल कहँ शीघ्र पधारा ॥
नाम बसन्त महाबलवाना * ले निजदल कपि निकट तुलाना॥
इंद्रकेलिके वन कपि जेते * हनुमति चरण गहे सब तेते ॥
आठ पद्म अरु सहसअठासी * चले तहां जहँ हैं अविनासी ॥
राम काज हनुमत हिय धारे * कश्यप पर्वत जाय पुकारे ॥
नाम मयंद महाबल वीरा * तेजपुंज अति दुर्ग शरीरा ॥
इकिसकोटि वनचर लै साथा * पवनकुमारहिं नायउ माथा ॥
कहा पवनसुत जानहु तोहीं * धन्यभाग्य दर्शन भा मोहीं ॥
करहु न बेर सुनहु बलसींवा * तुमहिं बोलाय वेगि सुग्रीवा ॥

दोहा—सुनत मयंद गयंद गति, उच्छलंत आकाश ॥
अट्टहास गंभीर करि, सैन बोलाइसि पास ॥ ३४ ॥

टिडी समान सैन उथलानी * चलते दिगपालन भय मानी ॥
आतुर चले गगन करि छाहीं * उठे लंगूर पतंग छिपाहीं ॥
एक नीलदल तीस करोरा * धावत एक एक बर जोरा ॥
जय सिंहनाद करत बल दापा * देवन हाथ पेटमें चापा ॥
राम स्वरूप हिये महँ आना * करि दल विदा चला हनुमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसना करैं राम गुण गाना * धवलागिरि का कीन्ह पयाना ॥
दुर्गंधनाम वानर बड योधा * ताहि बोलाय दीन वर बोधा ॥
आठ लाख शतवार गनाई * लै सँग सैन पंपपुर जाई ॥
हनुमत उदयागिरिपर आवा * बंदर धाय परे तेहि पावा ॥
कुंद कुमुद बंदर जे गाये * जे जहँ रहे वनचर सब छाये ॥
शब्द किलकिलानभपरकरहीं * बन सर शैल धरा सब धरहीं ॥

दोहा–रामकाज करि पवनसुत, आये जहँ सुग्रीव ॥
मिले हर्षि स्तुति करि, धन्य धन्य बलसीव ॥ ३५ ॥

इति क्षेपक ॥

तब हनुमन्त बुलाये दूता * सबकरकरि सन्मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई * चले सकल चरणन शिरनाई ॥
त्यहि अवसर लक्ष्मण पुर आये * क्रोध देखि जहँ तहँ कपिधाये ॥

दोहा–धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर छार ॥
व्याकुल नगर देखि तब, आवा वालिकुमार ॥ ३६ ॥

चरणनाइ शिर विनती कीन्ही * लक्ष्मण अभय बाहँ तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनिकाना * कह[1]कपीशअतिशयअकुलाना ॥
तुम हनुमन्त संग लै तारा * करि विनती समुझाउ कुमार[2] ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना * चरणवन्दि प्रभुसुयशबखाना ॥
करि विनती मन्दिर लै आये * चरण पखारि पलँग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा * गहिभुज लक्ष्मणकण्ठलगावा ॥
नाथ विषय[3] सममदकछुनाहीं * मुनि मन मोहँ करै क्षणमाहीं ॥
सुनत विनीत वचन सुखपावा * लक्ष्मणतेहिबहुविधिसमुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई * ज्यहिविधि गये दूत समुदाई ॥

---

१ सुग्रीव । २ लक्ष्मणजी । ३ विषयकही इन्द्रियासक्त मोर तोर तैं मैं मद अष्ट- जाति कुल, रूप, यौवन, विद्या, धन, ज्ञान, ध्यान, मान, । ४ आवरण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

दोहा–हर्षि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिसाथ ॥
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ ॥ ३७ ॥
नाय चरण शिर कह कर जोरी * नाथ मोरि कछु नाहिंन खोरी ॥
अतिशय प्रबल देव तव माया * छूटै तबहिं करहु जब दाया ॥
विषयविवश सुरनरमुनि स्वामी * मैं पामर पशु कपि अतिकामी ॥
नारि नयन शर जाहि न लागा * महाघोरनिशि सोवत जागा ॥
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया * सो नर तुमसमान रघुराया ॥
यह गुण साधनते नहिं होई * तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई * तुमप्रियमोहिं भरतजिमिभाई ॥
अब सोइ यतन करहु मनलाई * जेहि विधि सीताकी सुधि पाई ॥
दोहा–इहिविधि होत बतकही, आये बानर यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल, देखिय कीश बरूथ ॥ ३८ ॥
वानर कटक उमा मैं देखा * सो मूरख जो किय चह लेखा ॥
आय राम पद नावहिं माथा * निरखि वदन सब होहिंसनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं * राम कुशल पूंछी जेहि नाहीं ॥
यहनहिंकछु प्रभुकी अधिकाई * विश्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढे जहँ तहँ आयसुपाई * कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा * वानर यूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहुजाई * मास दिवस महँ आयहु भाई ॥

अथ क्षेपक ॥

तब कपीश दुइ दूत बुलाये * गज गवाक्ष आतुर चलि आये ॥

---

१ जीवको परमेश्वर समान क्यों कहा यहां यह ध्वनि है कि जे काम क्रोध लोभ हैं तहां कामको सहायक मद है अरु वनिता स्थाई है अरु क्रोधको सहायक मोह है अरु अहंकार स्थाईहै अरु लोभको सहायक मात्सर्य कही ईर्षा है अरु दम्भ स्थाई है इनको जो जीतैं और श्रीरामचन्द्रको भजन करैं ते सारूप्यमुक्तिको प्राप्त होते हैं ताते जीवको रामस्वरूप कहा है ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन बुधि निगम केरगतिजानी * बोलेउ कीश सुधासम बानी ॥
सियखोजनहित पूर्व सिधायउ * रामकाजकहँ विलँबनलायउ ॥
उदधि सोत सरिता गिरि झरना * ब्रह्मपुरी कामावति बरना ॥
सर वापी गिरि कंदर जेते * देवनगर खोहादिक तेते ॥
जोकोउतुमहिं मिलहिमगमाहीं * सीता सुधि पूछहु तिनपाहीं ॥

दोहा-रामचरण परणाम कर, उर धरि युगल स्वरूप ॥
सात कोटि वानर बली, चले पूर्व कहँ भूप ॥ १ ॥

वाली अनुज सुखेन बुलावा * करि सन्मान निकट बैठावा ॥
तुम मयंद उत्तरदिशि जाहू * सीता सुधि पूछेहु सब काहू ॥
मादनगंध सुमेरु महीधर * अर्जुन शैल नीलगिरि कंदर ॥
शिव कैलाश अलक पुर छानी * गंधरव यक्ष पूंछ मृदुवानी ॥
उनहिं पूंछ आगे धरि पाऊं * जायहु दिव्य सरोवर ठाऊं ॥
पुष्प भार जहँ विटप सुहाये * परशतहैं धरणी नियराये ॥
श्रमनिवारि कछु करहु अहारा * प्रभु कारज हिय धरहु करारा ॥

दोहा-ऋषि तपस्विन सों बूझिकै, करहु बलिष्ठ पयान ॥
श्वेत भूमि उत्तर दिशा, अन्त धराको जान ॥ २ ॥

शिखर सुमेरु मही कैलाशू * काकभुशुंडि केर वनवासू ॥
कुंड एक तहँ मोतीचूरा * पानी अमृत कीच कपूरा ॥
जमुनी वृक्ष अहैं तेहि ठाऊं * जम्बूद्वीप जासु ते नाऊं ॥
गज समान लागे फल ताही * अमृत रस कहि निगम सराही ॥
पकत सो फल धरणी परपरई * तेहिके शाक कुंड बहु भरई ॥
दिव्यरूप चढ देव विमाना * तेहिके नीर करहिं स्नाना ॥
सो शुभ नीर सरितहोयबहई * अवध समीप प्रसिद्ध सो अहई ॥
जहँ मज्जन कीनेते वीरा * सकल पाप दुख हरै शरीरा ॥
फलभोजन जल पान करेहू * राम काज हित हिये धरेहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शूरसेन कर मंडप जहां * सुमरि राम जायहु पुनि तहां ॥
लोमशऋषि कर दर्शन करहू * पुनि सांडिल्य जहां अनुसरहू ॥
दोहा–रनवनघनजन शोधिकै, सिया बतायहु राम ॥
मासदिवस महँ आतुर, फिरहु लहहु विश्राम ॥ ३ ॥
निज प्रभुकेरि मानि हितवानी * शीशधरे प्रभु चरणन आनी ॥
निदरि पवन दोऊ उठि चले * पद्म एकादश वनचर भले ॥
पुनि सुग्रीव मोर मुख देखी * वीर सतवलिहि कहा विशेषी ॥
सुनहु सुवीर प्राण हितकारी * राम काज हिय धरहु सँभारी ॥
तुमवसंत पश्चिम दिशि गवनी * सीता सुधि पूछहु सब अवनी ॥
पश्चिम देश शैल सर जायहु * अग्निदेव कर जोर मनायहु ॥
खोजो सब तहँके स्थाना * रामकाज हित करहु पयाना ॥
रंगभूमि जायहु पुनि भाई * सीता सुधि पूछेहु सब ठाई ॥
सरिता शैल सुगिरि वन जेते * खोजहु सीतहि हित धरि तेते ॥
जोकोउ मिलै महामुनिज्ञानी * पूछहु समाचार मृदु वानी ॥
तुम्हरे बल गर्जत मैं भाई * मिलवहु वेगि जानकिहि आई ॥
दोहा–पश्चिम दिशा विशेषसो, जहाँ धराको अन्त ॥
एकमास में लेइ सुधि, फिरो वेग बलवन्त ॥ ४ ॥
चरण कमल सब कराहिं प्रणामा * पश्चिमदिशा चले बलधामा ॥
दशषटलाख हरी हर बोलत * चलेजाहिं गिरि कन्दर तोलत ॥

इति क्षेपक ॥

अवधि मेटि जो विनुसुधि पाये * अवशिमारिहि सो ममकर आये ॥
दोहा–वचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त ॥
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगदादि हनुमन्त ॥ ३९ ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना * जाम्बवन्त मतिधीर सुजाना ॥
सकलसुभटमिलि दक्षिणचाहू * सीता सुधि पूंछेहु सब काहू ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनवचक्रमसों यतन विचारेहु * रामचन्द्र कर काजसँवारेहु ॥
भानुपीठ सेइय उर आगी * स्वामी सेइय सब छलत्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका[1] * मिटहि सकलभवसंभव[2]शोका ॥
देह धरेकर यह फल भाई * भजिय राम सब काम विहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बडभागी * जो रघुवीर चरण अनुरागी ॥
आयसु मांगि चरण शिरनाई * चले सकल सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय शिरनावा * जानि काज प्रभुनिकटबुलावा ॥
परशा शीश सरोरुह पानी * कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु * कहि बल वीर वेगि तुम आयहु ॥
हनुमत जन्म सफल करि जाना * चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता * राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दोहा-चले सकल वन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ॥
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनु कर छोह ॥ ४० ॥

कतहुँ होई निशिचरसन भेंटा * प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
" वज्रदंड यक राक्षस आवा * देखत कपिन परम दुख पावा ॥
भीमरूप यह को अंब आवा * लखि अंगद क्रोधित उठिधावा ॥
देखत ताहि कोप युवराजा * सन्मुख जाय ताहि सन बाजा ॥
मल्लयुद्ध अति भयो अपारा * सब वानरमिल कीन्ह विचारा ॥
प्रथम पयानकाल चलिआवा * कह कपि विधिका कीनवनावा ॥
वालिसुवन तब हृदय विचारा * मुष्टिक एक तासु शिरमारा ॥
रामरूप हृदयमें आनी * अर्द्ध ऊर्ध्व धरि चीर भवानी ॥
जैजै शब्द भयो तेहि वारा * पवनपुत्र हिय हर्ष अपारा ॥

---

१ परलोक कही मोक्ष सालोक्य,सामीप्य, सारूप्य सायुज्य त्यहिचारिके पति श्रीरामचन्द्रतिनकर सेवनकरिये । २ सम्भव कही उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्यइत्यादिक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीसकोटि सँग सेन सुहाई * चले सकल जय कहि रघुराई ॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं * कोउमुनिमिलैताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिशय अकुलाने * मिलै न जल घन गहन भुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना * मरण चहत सब बिनु जलपाना ॥
चढिगिरि शिखर चहूंदिशिदेखा * भूमि विवर इक कौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं * बहुतक खग प्रविशहिं तेहिमाहीं ॥
गिरिते उतरि पवनसुत आवा * सब कहँ लै सो विवर दिखावा ॥
आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा * पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा ॥
"योजन चारि दुर्गअति वांकी * मय दानव गढ कीना ढाँकी" ॥

दोहा–दीख जाइ उपवन शुभग, सर विकसे बहु कंज ॥
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठिनारि तप पुंज ॥ ४१ ॥

दूरिहिते त्यहि सब शिरनावा * पूंछेसि निज वृत्तांत सुनावा ॥
तब तेइँ कहा करहु जल पाना * खाहु सरस सुन्दर फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फलखाये * तासु निकट पुनि सबचालि आये ॥
तेहि सब आपनि कथा सुनाई * मैं अब जाब जहां रघुराई ॥
"देवांगना सुनाम हमारी * एकसमय तपकरन विचारी ॥
ब्रह्मासे माँगेउँ वरदाना * दर्शन मैं पाऊं भगवाना ॥
ब्रह्मा कह्यो रह्यो यहिथाना * आवहिं यहां कीश बलवाना ॥
तिनसों राम खबर तुम पाई * दर्शन पावहुगी रघुराई ॥
सो वह सत्य भई अब वानी * जाउँ दर्शहित सारँगपानी" ॥
मूंदहू नयन विवर तजि जाहू * पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥
नयनमूंदि तब देखहिं वीरा * ठाढे सकल सिन्धुके तीरा ॥
सो पुनि गई जहां रघुनाथा * जाइ कमलपद नायसि माथा ॥
नानाभांति विनय त्यइँ कीन्ही * अनपावनी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥

दोहा–बदरीवन कहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि शीश ॥
उर धरि राम चरण युग, जो वंदित अज ईश ॥ ४२ ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहांविचारहिं कपि मन माहीं * बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥
सब मिलि करहिं परस्पर बाता * विनु सुधि लिये करबका भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि वारी * दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीताकर पाई * वहांगये मारिहि कपिराई ॥
पिता वधे पर मारत मोही * राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सबपाहीं * मरणभयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन सुनत कपिवीरा * बोल न सकहिं नयन बह नीरा॥
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये * पुनि अस वचन कहत सब भये ॥
हम सीताकी विनसुधिलीन्हे * फिरब न सुनु युवराज प्रवीने ॥
असकहि लवणसिन्धुतटजाई * बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जाम्बवन्त अंगद दुख देखी * कही कथा उपदेश विशेखी ॥
तात राम कहँ नर जनि जानहु * निर्गुणब्रह्म अजित अजमानहु ॥
हम सब सेवक अति बड़भागी * सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥

दोहा—निज इच्छा अवतरेउ प्रभु, सुर द्विज गो महि लागि ॥
सगुण उपासक रहहिं सब, मोक्ष सकल सुख त्यागि॥ ४३ ॥

यहिविधि कहत कथा बहु भांती * गिरिकन्दरा सुना सम्पाती ॥
बाहरहोइ देखे सब कीशा * मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥
आजु सबनकहँ भक्षणकरऊं * दिन बहुगये अहार विनु मरऊं ॥
कबहुँ न मिलि भरि उदर अहारा* आजु दीन्ह विधि एकहि बारा ॥
डरपे गृध्र वचन सुनि काना * अबभा मरण सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी * जाम्बवन्त मन शोचविशेखी ॥
कहविचारि अंगद मन माहीं * धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं॥
राम काज कारण तनु त्यागी * हरिपुर गयउ परम बड़भागी ॥

---

१ कुश। २ सात्विक, राजस, तामस, तीनिउँ गुणके परेहैं अरु अजित कही कालहूचे जीतिवेयोग्यहैं काल जिनकी आज्ञामें हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sri Sri Ravishankar Trust, Delhi and eGangotri

जो रघुवीर चरण चित लावै * तिहिसम धन्य न आन कहावै ॥
सुनि खग हर्ष शोक युत वानी * आवा निकट कपिन भयमानी ॥
ताहि देखि सब चले पराई * ठाढ कीन्ह तिन्ह शपथ दिवाई ॥
तिन्है अभयकरि पूछेसि जाई * कथा सकल तिन ताहि सुनाई ॥
सुनि सम्पाति बन्धुकी करणी * रघुपति महिमा बहुविधि वरणी ॥

दोहा—मोहिं लै चलहु सिन्धु तट, देउँ तिलांजलि ताहि ॥
वचन सहाय करब मैं, पैहहु खोजहु जाहि ॥ ४४ ॥

अनुज क्रियाकरि सागरतीरा * कह निजकथा सुनहु कपिवीरा ॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई * गगन गये रवि निकट उडाई ॥
तेज न सहिसक सोफिरि आवा * मैं अभिमानी रवि नियरावा ॥
जरे पंख रवितेज अपारा * पर्य्यउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही * लागी दया देखि कर मोही ॥
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा * देह जनित अभिमान छुडावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहै * तासु नारि निशिचरपति हरिहैं ॥
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता * तिन्है मिले तुम होब पुनीता ॥
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता * तिन्है देखाइ देव तैं सीता ॥
यहकहि मुनि निज आश्रम गयऊ * तिहिक्षण हृदय ज्ञान कछुभयऊ ॥
"पुनि संपाती वचन उचारी * सुनो गिरा ममहू हितकारी ॥
पुत्र मोर सुप्रन तेहि नाऊं * सेवत मोहिं सदा यहि ठाऊं ॥

दोहा—क्षुधावन्त यक दिन भयउँ, कही पुत्र सुन बात ॥
वेग भक्षले आवहू, नतौ प्राण मम जात ॥ १ ॥

सुत शिर आज्ञा धारि सिधावा * मोहिं धीरज दे बहु समुझावा ॥
नभपथ होय महावन गयऊ * गज मृगराज हनत बहुभयऊ ॥
अस्त पतंग बहुरि घर आवा * क्षुधावश्य मैं क्रोध बढावा ॥
ज्ञान रंक मैं अधम अभागा * सुतको शाप देन तब लागा ॥
गहि ममबाहु कहेउ समझाई * सुनहु तात मम वच चितलाई ॥

In Public Domain. Chennai Archives, Trowan

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब आरण्य गयउँ मैं ताता * तहँ पुनि एक भयउ उत्पाता ॥
वीसभुजा दश मस्तक ताही * आतुर चलेउ जात मगमाही ॥
संग नारि यक दिव्य अनूपा * कोउ नहिं वरणसकै तेहि रूपा ॥
कोटि सुधाकर मुख बलिहारी * रंभा रती शचीसी नारी ॥
जंतु जान तेहि धरा पछारी * दीनो छोड निरख सोइ नारी ॥
करमोहिं विनय दक्षिण दिशि गयऊ*यहि कारण विलम्ब मोहिं भयऊ ॥
सुनत वचन मोहिं लागि अँगारा * आपनि गति विचार हिय हारा ॥
मैं तनु पंख हीन का करऊं *आतुर जाय ओहि अब धरऊं ॥

दोहा-पंखहीन अवसर गये, सुत बल कीन धिकारि ॥
गहि मम निकट न लायहू, हती रामकी नारि ॥ २ ॥

तब मुनिवचन ध्यान हियआवा * हियमें धीरज तब कछु पावा ॥
यहि मिस राम जो दूत पठावहिं * सियसुधिलेन अरण्यहि आवहिं॥
देखत दरश होब बडभागी * तुव मग देखत मन अनुरागी॥"
सदा राम कर सुमिरण करऊं *निशि दिन मग जोवत दिन भरऊं॥
मुनिकी गिरा सत्य भइ आजू *सुनि मम वचन करहु प्रभुकाजू॥
गिरि त्रिकूट ऊपर वस लंका * तहँ रह रावण सहज अशंका ॥
तहां अशोक वाटिका अहई * सीय बैठि तहँ शोचति रहई ॥

दोहा-मैं देखौं तुम नाहिंन, गृध्रहि दृष्टि अपार ॥
बूढ भयों नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥ ४५॥

जोलांघै शत योजन सागर * करै सो राम काज अति आगर ॥
जो कोइ करै रामकर काजू * तेहि सम धन्य आन नहिं आजू ॥
मोहिं विलोकि धरहु मन धीरा * राम कृपा कस भयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर सुमिरण करही * अति अपार भवसागर तरही ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई * रामहृदय धरि करहु उपाई ॥
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ * सबके मन अति विस्मय भयऊ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निज निज बल सबकाहू भाखा * पारजान कर संशय राखा ॥
जरठ भयों अब कह ऋक्षेशा[1] * नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम[2] भये खरारी[3] * तब मैं तरुण रहों बल भारी ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा-घेरि अंगदहि सब कहा, अब कछु करहु उपाय ॥
है कोउ सुभट प्रवीण अस, समुद्र उलँघि जो जाय ॥ ४६ ॥

बोला विकट सुनहु युवराजू * योजनवीस उलंघहुँ आजू ॥
नील कहा चालिस मैं जाऊँ * आगे परत मोर नहिं पाऊँ ॥
नील वचन सुनि दुर्धर कहई * योजन पचास मोर बल अहई ॥
बोल्यो नल दुइ भुजा उठाई * योजनसाठि मोरिगति भाई ॥
दधिमुख कह अस्सी उपरंता * योजनसात जानु बलवंता ॥
सुनहु वचन मम सुभट प्रवीना * आगे होइ मोर बलहीना ॥
सुनि सब वचन बोल युवराजू * यहि बल होइ न प्रभुकरकाजू ॥
बहु दुख कृशि तब अंगद देखी * जाम्बवंत तब कहा विशेषी ॥
बूढ भयउँ अब कहेउ ऋक्षेशा * नहिं तनु रहा प्रथम बललेशा ॥
वृद्ध भये बल ऐसा भाई * नांघत पलमें जलधिहि धाई ॥
सब कहि वात सत्य सन्मानी * मानी सत्य कर्म्म मन वानी ॥
यक दिन बद्रिक आश्रमगयऊ * अरन विलोकि महासुख भयऊ॥
भक्षण करि फल पीन्हा पानी * बैठेउँ एक शिला सुख मानी ॥
ब्रह्मज्ञान एक विप्र सुजाना * बैठि अराधत श्रीभगवाना ॥
ताहि वधर्न[4] एक दानव आवा * देखत नयनक्रोध मोहिं छावा ॥
मुनिभयदेखि गयउँ तेहिसामू * तैंद्रुततर कीन्हा असकामू ॥
तीस योजन एक शैल उठाई * मारेसि मोहिं गोडमें आई ॥

---

१ जाम्बवन्त । २ वामनरूप । ३ परमेश्वर । ४ मारनेके कारण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लागत गिरि तन सहा प्रहारा * भयो क्रोध तेहि अवनि पछारा ॥
चीरेउ दोउ चरण करि रीसा * सुखपायों द्विजे दीन अशीसा ॥
सोबल नहिं अबतुमहिंबखानू * सुनत बात सबअचरजमानू ॥
शैल प्रहार करत मम पाऊँ * योजन नबे पांच महँ जाऊँ ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा–बलि बांधत प्रभु बाढेउ, सो तनु वरणि नजाइ ॥
उभय घरी महँ दीन्हमैं, सात प्रदक्षिण धाइ ॥ ४७ ॥

अंगद कहा जाउँ मैं पारा * जिय संशय कछु फिरती बारा ॥
जाम्बबंत कह सुनु सब लायक * किमिपठवौं सबही कर नायक ॥
कहाऋच्छपति सुनु हनुमाना * का चुपसाधि रह्यो बलवाना ॥
पवनतनय बल पवन समाना * बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥
कौनसोकाज कठिनजगमाहीं * जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥

अथ क्षेपक ॥

तव उत्पति अब कहौं सहेता * सुनहु सकल बैठे इहरेता ॥
हिमचल पर्वतके यक पासा * कश्यपऋषि तप तेज प्रकाशा ॥
दिग्गज यक ऐरावतकी सम * आयो ऋषि सन्मुख दुर्धरजम ॥
निरखिताहिऋषि सकलसकाने * चलेनचरण शिथिलभयमाने ॥
तात तोर तेहि वनकर राजा * केशरिनाम तेज बल छाजा ॥
सो गज देखि मुनी तेहि ओरा * हेकापि सकल शरणहै तोरा ॥
ऋषि दुख देखि दया मन माहीं * धायो तुरत तात बलवाहीं ॥
भिन्यो ताहि यक मुष्टिक मारा * उभय दशन गहि भूमि पछारा ॥
पन्यो धरणि करिघोरचिकारा * तब मुनि होय प्रसन्न विचारा ॥
दोहा–तव पितु बहु बलदेखि मन, मुनिवर दीन अशीश ॥
मांगु मांगु वर भाय मन, हेद्विजपाल कपीश ॥ ४८ ॥

---

१ पृथ्वीमें । २ विप्र । ३ शरीर । ४ स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सानुकूल तपस्वी कहँ जानी * बोला तात जोरि युग पानी ॥
जो प्रसन्न मोपर भगवाना * पुत्र देहु बल मरुतसमाना ॥
एवमस्तु कहि ऋषि तब गयऊ * आगिलचरित सुनहुजोभयऊ ॥
माता तोरि अंजनी सती * रूप अपार नहीं हियरती ॥
नवसत साजि शृंगार बनाई * बैठी शैल शिखर पर जाई ॥
त्रिविध समीर बहै सुखदाई * निरखत वन शोभा अधिकाई ॥
चीरउडावन पवन सुबसा * भुजा दीर्घ करचाहतपसा ॥
देखि मातु तव क्रोध करेही * लागी शाप देन पुनि तेही ॥
मारुत मधुरे वचन कहेऊ * शाप न देउ वचन सुनिलेऊ ॥
तवपति ऋषिसन सुतवरमांगा * ताते परशि अंग तव लागा ॥
निज काया धरि मिले न तोहीं * काहेक शाप देति तुम मोहीं ॥
असकहि पवन गुप्त होय रहेऊ * सो तव माता पतिसन कहेऊ ॥
अब तव जन्मकहबसुखमानी * सुनहु सकल वन दीपकजानी ॥
शुभ नक्षत्र शुभ घरी सुहाई * जन्मत भयउ देव बल पाई ॥
पुनि वरदान पवनकर दरशा * वीरज तोहिं पिताकर परशा ॥
उदित भये दंपति सुख साने * करहिं केलिं वनमहँ सुखमाने ॥
एक दिवस माताकी गोदा * करत रहेउ पर्यपान विनोदा ॥
देखेउ अरुणबंधु छवि लाला * तडकि अकाश गयो ततकाला॥
सूर्यगहन जब भुजा पसारा * क्रोधे इंद्र वज्र सो मारा ॥

दोहा—सहि प्रहार मन क्रोधकरि, धाहि पतंगहि लीन ॥
बाल अवस्था व्यसनते, सूरजका भषकीन ॥ ४९ ॥

अंधकार चारिउ दिशि भयऊ * जप तप दान धर्म रहि गयऊ ॥
स्तुति सुरन कीन्ह निजहेता * बोले शिव गुण ज्ञाननिकेता ॥

---

१ पर्व्वतका कँगूरा । २ ठंढी मंद सुगन्ध वायु । ३ वायु । ४ दूध । ५ देवतन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धरहुधीर जनि होहु उदासा * सब मिलि चलहु केशरी पासा ॥
शिव विरंचि सुर इंद्र समेता * आये सकल केशरी निकेता ॥
कह सुत तोर सूर्य गहि लीना * श्वास समीर रोंकि दुखदीना ॥
तजहु भानु रहे प्राण भलाई * तुम कहँ सुयश होय जगमाई ॥
जो मनभाव सो लेहु वरदाना * तजहु पतंग होइ कल्याना ॥
देवगिरा सुनि सुंदरवानी * बोलतु तात, जोरि युगपानी ॥
अमर अजीत सकल बलसागर * सुतहि देहु वर देवन नागर ॥
राम भक्त अरु निकट निवासी * यह वरदान देव बलराशी ॥
एवमस्तु सब देवन कीना * सूर्य समीर छांडि तब दीना ॥
दै वरदान देव सब गयऊ * विचरे वनहि महा सुखभयऊ ॥
तात मात कर प्राण समाना * इंद्र जुहनी नाम हनुमाना ॥
तजहु शोक मन आनहु धीरा * मोहिं निश्चय सेवक रघुवीरा ॥
हनुमत वचन सुनत सबकाना * जयजयजय सबकरहिं बखाना ॥
होइहै सिद्ध रामकर काजा * अति सुख लहेउ हियेयुवराजा ॥
जाम्बवंत औरौ नल नीला * अंगद आदि सुभट बलशीला ॥
मिलैं सबै हनुमंतहि धाई * राम काज लग जानु सुभाई ॥
बोले पवनतनयं सुखवानी * धरहु धीर कारज शुभजानी ॥
कह हनुमंत सिंधुतन देखी * राम रूप उर आनि विशेषी ॥
तब ऋक्षेश असवचन उचारा * सादर सुनहु समीरकुमारा ॥

इति क्षेपक ॥

राम काज लगि तव अवतारा * सुनि कपि भयउ पर्वताकारा ॥
कनकवर्णतनु तेज विराजा * मानहुँ अपर गिरिनकर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा * लीलहिं लाँघौं जलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी * आनौं इहां त्रिकूट उपारी ॥

---

१ स्थान । २ सूर्य । ३ वाणी । ४ अंगद । ५ हनुमानजी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाम्बवन्त मैं पूंछौं तोहीं * उचित सिखावन दीजे मोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई * सीतहि देखि कहौ सुधि आई ॥
तब निज भुजबल राजिवनयना * कौतुकलागि संग कपि सैना ॥

छंद—कपिसेन संग संहारि निशिचर राम सीतहि आनिहैं ॥
त्रयलोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं ॥
रघुवीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥

दोहा—भवभेषज[1] रघुनाथ यश, सुनैं जो नर अरु नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि ॥ ५० ॥

सो०—नीलोत्पल[2] तनु श्याम, काम कोटि शोभा अधिक ।
सुनिय तासु गुणग्राम, जासु नाम, अघ खग वधिक ॥ ३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
किष्किन्धाकांडेचतुर्थःसोपानःसमाप्तः॥४॥

इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥

---

१ भवकही संसार विष जन्म मरण रोग सो नाश करिवेको भेषजकही औषध संजीवन मूरिहै । २ नीलमणि ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इदं तुलसीकृतरामायणे
किष्किंधाकाडं मुम्बय्यां खेमराज
श्रीकृष्णदासइत्यनेन स्वकीये
"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रायन्त्रा-
लयेंऽकितम् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

सुंदरकाण्डम् ।

जिसमें

हनुमान्‌जीका सिन्धुउल्लंघन, लंकाकी शोभा वर्णन, जानकीका मिलाप, अशोक वाटिका विध्वंसन, अक्षकुमार वध, रावणसे वार्ता पश्चात् लंकदहन, तथा सीताजीसे चूडामणिले राम मिलाप, रामचन्द्रजीका कटक सहित सिन्धुपर पहुंचना, विभीषण प्रपत्ति, मंदोदरीका रावणको समझाना, विभीषणको राम जीकी शरण आना, रावणको राम सैन्यमें दूत भेजना तथा सेतुबन्ध मन्त्र दृढ करना आदि अद्भुत राम भक्ति स्वरूप कथा वर्णितहैं ॥

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छापकर प्रगट की ।

बंबई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन्दरकाण्डम् ५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीः।

श्रीवेंकटेशाय नमः।

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे सुंदरकाण्डम्

श्लोक।

शांतंशाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशांतिप्रदं ब्रह्माशंभुफणीन्द्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यंविभुम् ॥ रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिं वंदेहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेमदीयेसत्यंवदामिचभवानखिलांतरात्मा ॥ भक्तिंप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमेकामादिदोषरहितं कुरुमानसंच ॥ २ ॥अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुंज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ सकलगुणनिधानंवानराणामधीशंरघुपतिवरदूतंवातजातंनमामि ३॥

श्लोकार्थ—जो निरन्तर शान्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाणरहित देवतोंको शांति देनेवाले ब्रह्मा शिवजी शेषजी करके नित्यही सेव्यमान वेदान्तसे जानने योग्य समर्थ राम जिनका नाम जगत्के ईश्वर देवताओंके गुरु मायाके मनुष्य विष्णु करुणाके खान रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ और राजाओंके चूडामणिहैं तिनको मैं नमस्कार करताहूं ॥ १ सो हेरघुपति मेरे हृदयमें और कोई इच्छा नहींहै यह मैं सत्य कहताहूं और आप सबके अन्तःकरणकी आत्माहैं हेरघुवंशियोंमें श्रेष्ठ मुझे पूर्ण भक्तिदो और मेरे मनको कामादि दोषोंसे रहितकरो ॥ २ ॥ अतुलित बलके घर सुवर्णके पर्वतकी कान्तिकी समानदेह राक्षसोंके वनको जलानेको अग्नि ज्ञानियोंमें अग्रगण्य सम्पूर्ण गुणोंके निधान वानरोंके राजा रामचंद्रके श्रेष्ठ दूत वायुपुत्र हनुमान्जीकी मैं वन्दनाकरताहूं ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाम्बवंतके वचन सुहाये * सुनि हनुमान हृदयअतिभाये ॥
तबलगि मोहिं परेखेहु भाई * सहि दुख कन्द मूल फल खाई ॥
जबलगिं आवौं सीतहि देखी * होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाइ सबनिकहँ माथा * चलेहर्ष हियधरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर * कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी * तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरण देइहनुमन्ता * सो चलिजाय पताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना * ताही भांति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत विचारी * कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥

क्षेपक

इन्द्रवज्र जादिन करलीन्हा * पर्वत सबै पंख बिन कीन्हा ॥
तादिन मारुत कीन्ह सहाई * तस्सु तनय लंका को जाई ॥
सो-०सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाकतब ॥
कपि कहँ कीन्ह प्रणाम, वार वार करजोरिकै ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा-हनूमान तेहि परशि करि, पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम ॥
रामकाज कीन्हे विना, मोहिं कहां विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन देखा * जानाचह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिनकी माता * पठईदेव कही तिन बाता ॥
आज सुरन मोहिं दीन अहारा * सुनि हंसि बोला पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवों * सीताकी सुधि प्रभुहि सुनावों ॥
तब तव वदन पैठिहौंआई * सत्य कहौं मोहिं जानदेमाई ॥
कवनिहुँ यतन देहि नहिं जाना * ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना ॥
योजनभरि तेइँ वदन पसारा * कपि तनु कीन्ह दुगुणविस्तारा ॥
सोरहयोजन मुख तेइँ ठयऊ * तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥

१ सर्पोंकी माता । २ मुखमें ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जस जस सुरसा वदन बढावा * तासु दुगुण कपि रूप दिखावा ॥
शतयोजन तेहि आननकीन्हा * अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा ॥
वदन पैठि पुनि बाहर आवा * मांगी बिदा ताहि शिरनावा ॥
मोहिं सुरन्ह जेहिलागि पठावा * बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥
दोहा–राम काज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान ॥
आशिषदै सुरसा चली, हर्षि चले हनुमान ॥ २ ॥
निशिचर एक सिन्धु महँ रहई * करि माया नभके खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं * जल विलोकि तिनकी परछाहीं ॥
गहै छांह सकसो न उड़ाई * इहिविधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा * तासुकपट कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा * वारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहां जाइ देखी वन शोभा * गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये * खग मृग वृंद देखि मन भाये ॥
शैल विशाल देखि इक आगे * तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा नकछु कपिकी अधिकाई * प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गि[illegible] तेहि देखी * कहि नजाइ अति दुर्ग विशेखी॥
अति उतंग जलनिधिचहुँपासा * कनककोट कर परमप्रकासा ॥

छंद समष्टी ॥

कनककोट विचित्र मणि कृत सुन्दराजित अति घना ॥
चौहट्ट हाट सुघट्ट वीथी चारु पुर वहुबिधि बना ॥
गजवाजि[2] खच्चर निकर[3] पदचर रथवरूथनिको[4] गनै ॥
बहु रूप निशिचर यूथ अति बल सेन वर्णत नहिं बनै ॥१॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ॥
नर नाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥

---

१ समुद्र । २ घोडा । ३ समूह, । ४ झुंडके झुंड ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहुँ मल्ल देह विशाल शैल समान अति बल गर्जहीं ॥
नाना अखारन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं ॥ २ ॥
करियत्न भट कोटिन्ह विकट तनु नगर चहुँदिशि रक्षहीं ॥
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निशाचर भक्षहीं ॥
इहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही ॥
रघुवीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही ॥ ३ ॥

दोहा—पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ॥
अति लघु रूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥ ३ ॥

मशक[1] समान रूप कपि धरी * लंका चले सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी * सो कह चलेसि मोहिं निंदरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा * मोर अहार लंक कर चोरा ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी * रुधिर[2] वमन धरणी ठनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका * जोरि पाणि कर विनय सशंका ॥
जब रावणहि ब्रह्म वर दीन्हा * चलतविरंचि कहा मोहिं चीन्हा ॥
"त्रेता राम लषण अवतरहीं * भक्त हेतु मानुष तनु धरहीं ॥
तासु प्रिया रावण हर लावे * सो अपनो यक दूत पठावे" ॥
विकल होसि जब कपिकेमारे * तब जानासि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य वहूता * देखेउँ नयन रामकर दूता ॥

दोहा—तात स्वर्ग[3] अपवर्ग[4] सुख, धरी तुलौ[5] इक अंग ॥
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रविशि नगर कीजै सबकाजा * हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई * गोपद सिंधु अनल शितलाई ॥
गरुअ सुमेरु रेणुसम ताही * रामकृपाकरि चितवहिं जाही ॥
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना * पैठ्यो नगर सुमिरि भगवाना ॥

१ मशा । २ रक्त । ३ भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यं । ४ मोक्ष । ५ तराजू ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर मन्दिर प्रतिकरि शोधा * देखे जहँ तहँ अगणित योधा ॥
गयउ दशानन मन्दिर माहीं * अति विचित्रकहिजात सो नाहीं॥
शयन किये देखा कपि तेही * मन्दिरमहँ न दीख वैदेही ॥

क्षेपक किसीमहात्माजीकीकल्पितउक्ति ॥

निरखत मंदिर आयउ तहँवां * कुम्भकर्ण सोवतरह जहँवां ॥
अतियकार तनु चितै नजाई * चौंतिस योजनकी चकलाई ॥
योजन तीनि तीनिके काना * वाइस योजन बाहु अजाना ॥
सत्रहयोजन जांघ लँबाई * शतयोजन तनु वरणि नजाई ॥
दुइयोजनकै नाक जो बाढी * योजन एक मूछ रहै ठाढी ॥
दोहा—षटमासकै नींद तेहि, सोवत भीतर लंक ॥
बाजत ढोल जुझाउ शिर, जागत नहीं अशंक ॥ ५ ॥
शोचै लाग कहाँ अब जाऊं * कहां दरश सीताकर पाऊं ॥
विन देखे जो सीतहिं जाऊं * कैसे वदन प्रभुहि दरशाऊं ॥
कपिसब करैं मोर उपहासा * लछिमन मोहिं देखावहिंत्रासा ॥
जाम्बवंत पूंछहिं कुशलाता * नीके अहहिं जानकी माता ॥
कवन उतर देहौं तिनजाई * पवनतनय मन महँ पछिताई ॥
निशिचर घोर भयंकर रहहीं * सीताकीसुधि कोउ न कहहीं ॥
पूछौं काहि कहौं केहिजाई * जनकसुता सो देइ बताई ॥

इति क्षेपक ॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा * हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा * वरणि नजाइ देखि मन मोहा ॥
दोहा—राम नाम अंकित गृह, शोभा वरणि नजाय ॥
नवतुलसीके वृन्द बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥ ६ ॥
लंका निशिचर[1] निकर निवासा * यहां कहां सज्जन कर वासा ॥

१ राक्षस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनमहँ तर्क[1] करन कपि लागे * ताही समय विभीषण जागे ॥
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा * हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ॥
इहिसनहठि करिहौं पहिचानी * साधुते होइ न कारज हानी ॥
विप्र रूप धरि वचन सुनावा * सुनत विभीषण उठि तहँ आवा ॥
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई * विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम हरिदासन महँ कोई * मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
कीतुम राम दीन अनुरागी * आयहु मोहिं करन बड़भागी ॥

दोहा—तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम ॥
सुनत युगल तनु पुलक अति, मगन सुमिरि गुणग्राम॥७॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी * जिमि दशनन[2] महँ जीभ विचारी ॥
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा * करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं * प्रीति न पद सरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता * विनु हरि कृपा मिलहिं नाहिं संता॥
जो रघुवीर अनुग्रह[3] कीन्हा * तौतुम मोहिं दरश हठि दीन्हा ॥
सुनहु विभीषण प्रभुकी रीती * करहिं सदा सेवकपर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना * कपि चंचल सबही विधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा * तादिन ताहि नमिलै अहारा ॥

दोहा—अस मैं अधम सखा सुन, मोहू पर रघुवीर ॥
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन[4] नीर[5] ॥ ८ ॥

जानतहू अस स्वामि बिसारी * तेनर काहेन होइँ दुखारी ॥
इहिविधि कहत रामगुणग्रामा * पावन श्रवण सुखद विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही * जेहि विधि जनकसुता जहँरही ॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता * देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई * चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥

---

१ विचार । २ दांतनमें । ३ दया । ४ आंखोंमें । ५ जल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

धरि सोइरूप गयउ पुन तहँवाँ * वन अशोक सीता रह जहँवाँ ॥
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा * बैठे बीति गई निशियामा ॥
कृश तनु शीश जटा इक वेणी * जपति हृदय रघुपतिगुण श्रेणी ॥
दोहा–निज पद नयन दिये मन, राम चरण लवलीन ॥
परम दुखीभा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ॥ ९ ॥
तरु पल्लव महँ रह्यो लुकाई * करैविचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा * संग नारि बहु किये बनावा ॥
बहु विधि खल सीतहि समुझावा * साम दाम भय भेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखि सयानी * मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं प्रणमोरा * एक वार विलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही * सुमिरि अवधपति परमसनेही ॥
सुन दशमुख खद्योत[1] प्रकाशा * कबहुंकि नलिनी[2] करहिं विकाशा ॥
असमन समुझत कहत जानकी * खल नहिं सुधि रघुवीर बानकी ॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं * अधम निलज्ज लाज नाहिं तोहीं ॥
दोहा–आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान ॥
परुष वचन सुनि काढि असि[3], बोला अति रिसिआन ॥ १० ॥
सीता तैं ममकृत अपमाना * काटौं तव शिर कठिन कृपानी[5] ॥
नाहित सर्पदि[6] मानु ममवानी * सुमुखि होत नतु जीवनहानी ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर * प्रभु भुज करिकर समदशकन्धर ॥
सो भुजकंठकि तव असिघोरा * सुन शठ अस प्रमाण प्रणमोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा * रघुपति विरह अनल संतापा ॥
शीतल निशि तव असिवर धारा * कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत वचन पुनि मारनधावा * मयतनया[7] कहि नीति बुझावा ॥

---

१ एक पहर । २ जुगुनू । ३ कमल । ४ निरादर वचन । ५ तरवारि ।
६ शीघ्र । ७ मन्दोदरी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहेसि सकल निशिचरी बुलाई * सीताहि त्रास दिखावहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा नमाना * तौमैं मारब कठिन कृपाना ॥
दोहा–भवन गयउ दशकन्ध तब, इहां निशाचरि वृन्द ॥
सीतहि त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप बहु मन्द ॥ ११ ॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका * रामचरणरत निपुण विवेका ॥
सबहि बुलाइ सुनायसि सपना * सीताहि सेइ करौ हित अपना ॥
स्वप्ने वानर लंका जारी * यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ नग्न दशदीशा * मुण्डित शिर खंडित भुजवीशा ॥
इहिविधि सो दक्षिणदिशिजाई * लंका मनहुँ बिभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुवीर दुहाई * तब प्रभु सीताहि बोलि पठाई ॥
यह स्वप्ना मैं कहौं विचारी * होइहि सत्य गये दिनचारी ॥
तासु वचन सुनके सब डरीं * जनकसुताके चरणन परीं ॥
दोहा–जहँ तहँ गई सकल मिलि, सीताके मन शोच ॥
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचरपोच ॥ १२ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरि * मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु वेगि उपाई * दुसह विरह अब सहा नजाई ॥
आनि काठ रचि चिताबनाई * मातु अनल[1] तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी * सुनि सो श्रवण शूलसमवानी ॥
सुनत वचन पदगहि समुझावा * प्रभुप्रताप बल सुयश सुनावा ॥
निशि[2] न अनलमिलु राजकुमारी * असकहिसो निज भवन[3]सिधारी ॥
कह सीता विधि भा प्रतिकूला * मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखियत प्रकट गगन अंगारा * अवनि[4] न आवत एकौ तारा ॥
पावक मय शशि श्रवत नआगी * मानहुँ मोहिं जानि हतभागी ॥
सुनहु विनय ममविटप अशोका * सत्यनाम करु हरु मम शोका ॥

---

१ अग्नि । २ रात्रि । ३ गृह । ४ पृथ्वीमें ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

नूतन किसलय अनल समाना * देहु अगिनि ममकरहु निदाना ॥
देखि परम विरहाकुल सीता * सो क्षण कपिहि कल्पसम बीता॥
सो०—कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ॥
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हर्ष उठि कर गहेउ ॥ २ ॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर * राम नाम अंकित अति सुन्दर॥
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी * हर्ष विषाद हृदय अकुलानी ॥
जीतिको सकै अजय रघुराई * मायाते असि रची न जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना * मधुर वचन बोले हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे * सुनतहि सीताकर दुख भागे ॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई * आदिहिते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जे कथा सुनाई * कहिन प्रगट होत किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलिगयऊ * फिरि बैठी मन विस्मय भयऊ ॥
रामदूत मैं मातु जानकी * सत्य शपथ करुणानिधानकी ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी * दीन्हराम तुमकहँ सहिदानी ॥
नर वानरहि संग कहु कैसे * कही कथा संगति भइ जैसे ॥
दोहा—कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास ॥
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धु कर दास ॥ १३ ॥
हरिजन जानि प्रीति अतिबाढ़ी * सजल नयन पुलकावलि ठाढी ॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना * भयहु तात मोकहँ जलयाना ॥
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी * अनुजसहित सुख भवनखरारी ॥
कोमल चित कृपालु रघुराई * कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुखदायक * कबहुँक सुरति करत रघुनायक॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता * होइहि निरखि श्याम मृदुगाता ॥
वचन न आव नयन भरि वारी * अहो नाथ मोहिं निपट विसारी ॥

---

१ चिह्न । २ नौका ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखिविरह व्याकुल अति सीता * बोलेउ कपि मृदुवचन विनीता ॥
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता * तव दुख दुखित सो कृपानिकेता॥
जननी जनि मानहु मन ऊना * तुमते प्रेम रामके दूना ॥
दोहा-रघुपतिके सन्देश अब, सुनु जननी धरि धीर ॥
असकहि कपि गद्गद भयउ, भरे विलोचन नीर ॥ १४ ॥
राम वियोग कहा सुनु सीता * मोकहँ सकल भयउ विपरीता ॥
नूतन किशलय मनहु कृशानू * काल निशासम निशि शशि भानू॥
कुवलय विपिन कुन्तवन सरिसा * वारिद तप्त तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा * उरगँ श्वास सम त्रिविध समीरा ॥
कहूते कछु दुख घटि होई * काहि कहौं यह जान नकोई ॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा * जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं * जानु प्रीति रस इतनेमाहीं ॥
प्रभु सन्देश सुनत वैदेही * मगन प्रेम तनु सुधि नहिं तेही॥
कह कपि हृदयधीरधरुमाता * सुमिरि राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई *सुनि मम वचन तजहु विकलाई॥
दोहा-निशिचर निकर पतंग सम, रघुपति बाण कृशानु ॥
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु ॥१५॥
जो रघुवीर होत सुधि पाई * करते नहिं विलम्ब रघुराई ॥
राम बाण रविउदय जानकी * तम वरूथ कहँ यातुधानकी ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई * प्रभु आर्यसु नहिं राम दुहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा * कपिन्ह सहित ऐहैं रघुवीरा ॥
निशिचर मारि तुमहिं लैजैहैं * तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं ॥
हैं सब कपि सुत तुम्हैं समाना * यातुधान भट अतिबलवाना ॥

---

१ सन्देह। २ तरुनके नवीन पल्लव। ३ अग्निके लवरतुल्य। ४ कमलके वन। ५ वरछी। ६ मेघ। ७ सर्प्पके श्वाससम। ८ आज्ञा। ९ राक्षस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोरे हृदय परम सन्देहा * सुनि कपि प्रगट कीन्ह निजदेहा॥
कनक भूधराकार शरीरा * समर भयंकर अति रणधीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ * पुनि लघु रूप पवनसुतलयऊ ॥

दोहा–सुनु माता शाखामृगहि, नहिं बल बुद्धि विशाल ॥
प्रभु प्रताप ते गरुडही, खाय परम लघु व्याल ॥ १६ ॥

मन सन्तोष सुनत कपि वानी * भक्ति प्रताप तेज बल सानी ॥
आशिष[1] दीन्ह राम प्रिय जाना * होहु तात बल शील निधाना ॥
अजर[2] अमर गुणनिधि[3]सुतहोहू * करहु सदा रघुनायक छोहू ॥
करहिं कृपा प्रभु अससुनिकाना * निर्भर प्रेम मग्न हनुमाना ॥
बार बार नायउ पद शीशा * बोले वचन जोरिकर कीशा ॥
अब कृतकृत्य[4] भयउँ मैं माता * आशिष तव अमोघ विख्याता ॥
सुनहु मातु मोहिं अतिशय भूखा * लागि देखि सुन्दर फलरूखा ॥
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी * परम सुभट रजनीचर झारी ॥
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं * जो तुम सुख मानहु मन माहीं॥

दोहा–देखि बुद्धि बल निपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु ॥
रघुपति चरण हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा * फल खाये तरु तोरन लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे * कछुमारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी * तेइँ अशोक वाटिका उजारी ॥
खायसिफल अरु विटप उपारे * रक्षक मर्द्दि मर्द्दि महिडारे ॥
सुनि रावण पठये भटनाना * तिनहिं देखि गरजा हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे * गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठवा तेहि अक्षकुमारा * चला संग लै सुभट अपारा ॥

---

१ आशीर्वाद । २ अजर कही बाल युवा वृद्ध मरणते रहित ।
३ गुणके समुद्र । ४ कृतार्थ । ५ वृक्ष ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आवत देखि विटप गहि तर्जा * ताहि निपाति महा धुनि गर्जा ॥
दोहा–कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि ॥
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥
सुनि सुत वध लंकेश रिसाना * पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बांधेसि ताही * देखौं कीश कहांकर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित योधा * बन्धुवधनसुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा * कटकटाइ गरजा अरु धावा ॥
अति विशाल तरु एक उपारा * विरथ कीन्ह लंकेशकुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा * गहि गहिकपि मर्देसि निज अंगा ॥
तिन्हैं निपाति ताहिसनबाजा * भिरे युगल मानहु गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई * ताहि एक क्षण मूर्च्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया * जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥
दोहा–ब्रह्म अस्त्र तेहि साधेउ, कपिमन कीन्ह विचार ॥
जो न ब्रह्मशर मानऊं, महिमा मिटै अपार ॥ १९ ॥
[illegible] तेहि कपि कहँ मारा * परतिहु बार कटक संहारा ॥
[illegible] * नागफांस बाँधेसि लै गयऊ ॥
[illegible] नर ज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन [illegible] बँधावा ॥
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये * कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपि जाई * कहिनजायकछु अति प्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशप विनीता * भृकुटिविलोकतसकलसभीता ॥
देखि प्रताप न कपिमनशंका * जिमिअहिगणमहँगरुड अशंका ॥
दोहा–कपिहि विलोकि दशानन, बिहँसि कहेसि दुर्वाद ॥
सुत वध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥
कह लंकेश कवन तैं कीशा * केहिकेबल घालेसि वनखीशा ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीधौं श्रवण सुनेसिनाहिं मोहीं * देखौं अतिअशंक शठतोहीं ॥
मारेसिनिशिचर केहिअपराधा * कहुशठ तोहिं नप्राणकीबाधा ॥
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया * पाइ जासु बल विरचितमाया ॥
जाके बल विरंचि हरि ईशा * पालत हरत सृजत दशशीशा ॥
जा बल शीश धरे सहसानन * अंडकोशसमेत गिरि कानन ॥
धरै जो विविध देह सुरत्राता * तुमसे शठन सिखावन दाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेइँ भंजा * तोहिं समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दूषण विराध अरु वाली * वधे सकल अतुलित बलशाली ॥
दोहा–जाके बल लवलेशते, जितेउ चराचर झारि ॥
तासु दूतहौं जाहिकी, हरि आनेहु प्रियनारि ॥ २१ ॥
जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहुसन परी लड़ाई ॥
समरबालिसन करि यशपावा * सुनिकपिवचनविहँसि बहिरावा ॥
खायउँफल मोहिंलागी भूखा * कपि स्वभावते तोरेउँ रूखा ॥
सबके देह परम प्रिय स्वामी * मारहिं मोहिं कुमारगगामी ॥
जिन्ह मोहिंमारा तेहि मैं मारा * तेहिपर बांधेउ तनय तुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बांधे कर लाजा * कीन्ह चहौं [illegible]
[illegible] ॥
[illegible] तजि भजहु भक्त भयहारी ॥
जाके ड[illegible] डरा * जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों वैर कबहुँनहिं कीजै * मोरे कहे जानकी दीजै ॥
दोहा–प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ॥
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध विसारि ॥ २२ ॥
रामचरण पंकज उर धरहू * लंका अचल राज्य तुमकरहू ॥

---

१ शेषजी । २ ब्रह्माण्ड । ३ देवतोंके रक्षा हेतु । ४ धनुष । ५ बलकेस्थान । ६ राक्षस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋषिपुलस्त्ययश विमलमयंका * तेहिकुलमहँजनिहोसिकलंका ॥
राम नाम विनु गिरा नसोहा * देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसैन हीन नहिं सोह सुरारी * सब भूषण भूषित वर नारी ॥
राम विमुख सम्पति प्रभुताई * जाइ रही पाई विनु पाई ॥
सजल मूल जेहि सरिता नाहीं * बरषिगये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी * राम विमुख त्राता नहिं कोपी ॥
शंकर सहसविष्णु अजतोही * सकहिं न राखि रामकर द्रोही ॥

दोहा—मोह मूल बहु शूल प्रद, त्यागहु तुम अभिमान ॥
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान ॥ २३ ॥

यदपि कही कपि अतिहितवानी * भक्ति विवेक धर्म नयसानी ॥
बोलाविहंसि अधम अभिमानी * मिलाहमहिं कपि गुरु बड़ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खलतोहीं * लागेसि अधम सिखावन मोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना * मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
सुनिकपि वचन बहुतखिसिआना * वेगि न हरहु मूढकर प्राना ॥
[illegible] मारनधाये * साचिवन सहित विभीषण आये ॥
[illegible] * नीति विरोध न मारिय दूता ॥
आनदण्ड कछु [illegible] बही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर * अंगभंग करि पठवहु बन्दर ॥

दोहा—कपिकर ममता पूंछपर, सबहिं कहा समुझाइ ॥
तेलबोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूंछहीन वानर जब जाइहि * तबशठ निज नाथहि लै आइहि ॥
जिन्हकी कीन्हेसि अमित बड़ाई * देखौं मैं तिन्हकी प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना * भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण वचना * लागे रचन मूढ सोइ रचना ॥

१ वस्त्र । २नदी । ३ रक्षक । ४ ब्रह्मा । ५ शोभा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहा न नगर वसन घृत तेला * बाढी पूंछ कीन्ह कपिखेला ॥
कौतुक कहँ आये पुरवासी * मारहिं चरण करहिं बहुहांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सबतारी * नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमंता * भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुकिचढ्यो कपि कनक अटारी * भई सभीत निशाचरनारी ॥

दोहा-हरि प्रेरित तेहि अवसर, बह मारुत उनचाश ॥
अट्टहास करि गरजेउ, कपिबढ़ि लाग अकाश ॥ २५ ॥

अथ क्षेपक ॥

चढ्यो फलांगि धाम लूम लामको उठायऊ । मनोअकाशतेनदीकृशानुकी बहायऊ ॥ किलंकलीलनेककालजीहसीपसारहू ॥ किधों अनी अग्फशूरसैकसी निकारहू॥फिरायलायलायअयनमयनसेलगेबरै।गयंदछोरवाजिछोर ऊंटछोरियेखरै ॥ अनेक बाल बालकी सु तात मात बोलहीं। बचाय लीजिये हमें समय समानडोलहीं॥अनेकनारि मारिरिंभडिंभकाढि लावहीं।अनेकडारिडारिवस्तुवारिलैनधावहीं।अनेककंतवीरतेपुकारवैनयोंकहैं ॥ उठायलेहुलालमालजालदेपरे हैं ॥ गिरेकैंगूरदूरतेतबैकहैमंदोदरी।विहायलोकलाजकानिभागतीनक[illegible] अरेअकंपनायकिकंठकीमहोदरं ॥ लिवायलेउअदभु[illegible]यून[illegible]तसादरं॥अनकवारकैं कही बुझायहू विभीषणं । नमानिदाडिजारनेकुठारवंशतीक्षणं ॥ [illegible]नेकतद्वारअर्द्धउर्द्धहाटवाटमेंजहां। लुकातजायनीरकीशतीरदेखियेतहां॥वधूजोकुम्भकर्णकीपसारिहाथभाषिये । दुहाइरामचंद्रकेरमोरकन्तराखिये । अनेकधायधायजायरावणेसुनायहू । विचारिवीरमेघनादसेबलीपठायहू । अनेकअस्त्रशस्त्रलायआयमारनेलगे । घुमायदीनबालधीपुकारकूरसेभगे॥ विशालज्वालजानिकोपमेघबोलयोंकही । बुझायदेहुआगिरेवहायकीशकोसही ॥ भलेसुनायमेघआयपुंजपाथछांडेऊ । यथासनेहपायचौगुनीकृशानुवाढेऊ॥लगीजुअंगअंगवानप्रानलेभजेसबै। नि

१ वस्त्र । २ अग्नि । ३ अत्यंत छोटा ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाररीतमालवानस्यानबोलियोतबै ॥ नआहियाहिअग्निआहिईशकीजु वामता । समीरश्वाससीयकीजुरामरोषमामता ॥ बुलायकालतेकह्योलं गूरलाउमारिकै । वटोरभूतप्रेतयक्षदंडचंडधारिकै ॥ विलोकवातजात घातकीनसैनतासुको । उठायगालमेंधरोपरोखँभारजासुको ॥ समेतशं- भुइंद्रवातजातपासआयऊ । सभीतपंकजासनादिवीनतीसुनायऊ ॥

दोहा—देहु छांड़ि यमराज कहँ, यही विनय यक मोर ॥
वरवस आयो लरन सुनि, दीन गालते छोर ॥

इति क्षेपक ॥

देह विशाल परमहरुआई * मन्दिरते मान्दिर चढ़ि जाई ॥
जरत नगर भे लोगविहाला * लपट झपट बहु कोट कराला ॥
तात मातु सब करहिं पुकारा * यहि अवसर को हमहिं उबारा ॥
हम जो कह यह कपिनहिंहोई * वानररूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा * जरै नगर अनाथकर जैसा ॥
जारा नगर निमिष यक माहीं * एक विभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकर भक्त अनलजेइँसिरजा * जरानसोतोहिकारण गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका कपिजारी * कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दोहा—पूंछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघु रूप बहोरि ॥
जनकसुताके आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा * जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा ॥
चूड़ामणि उतारि तब दीन्हा * हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहु तात अस मोर प्रणामा * सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥
दीनदयालु विरद सम्भारी * हरहुनाथ मम संकट भारी ॥
तात शक्रसुत कथा सुनायहु * बाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं * तौपुनि मोहिं जियतनहिं पावहिं ॥
कहुकपिकेहि विधि राखौं प्राना * तुमहूं तात कहत अब जाना ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमहिं देखि शीतल भइ छाती * पुनिमोकहँ सोइ दिनसोइराती ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा—जिमिप्रणि विन व्याकुल भुजग, जल विन व्याकुल मीन॥
तिमि देखे रघुनाथ विन, तलफतहौं मैं दीन ॥ १ ॥
कवधौं विधि पहुँचाइ है, फिर कौशल पुर तात ॥
भरत शत्रुहन लोग सब, कब लहिहैं मुद मात ॥ २ ॥
ह्वै हैं मङ्गल काज कब, पुजिहैं याचक काम ॥
नखशिख कब अवलोकिहौं, रघुपति छबि अभिराम ॥ ३ ॥
शीश मुकुट मणि गण जटित, श्रवणन कुण्डल लोल ॥
जगमगात कब देखिहौं, टोपी दिये अमोल ॥ ४ ॥
अलकैं सींची अतर सौं, निकट कपोलन मुक्त ॥
भरि लोचन कब देखि हौं, कुसुम कलिन संयुक्त ॥ ५ ॥
भालतिलक भासित शुभग, भ्रुकुटी धनु अनुहारि ॥
भूरि भाग कब देखि हौं, नयन न पलक विसारि ॥ ६ ॥
चंचल [illegible] विशाल शुभ, लोचन मोचन मान ॥
चितवत दिशि कब देखि हौं, मनको करि कुरबान ॥ ७ ॥
कीरतुण्ड सम नासिका, लटकन की छवि भूरि ॥
कब चकोर सम देखि हौं, मुखमयंक तृणतूरि ॥ ८ ॥
अरुण अधर दाडिमदशन, रसन चारु मृदुहास ॥
हेहरि कब अवलोकि हौं, शशिकर सरिस प्रकास ॥ ९ ॥
मधुर वचन जन मन हरन, कब सुनिहौं निज कान ॥
चिबुक चारु कब देखि हौं, चितवन अमी समान ॥ १० ॥
कम्बु कण्ठ तुलसी सुभग, मणि मोतिनकी माल ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Kanpur

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उरदीरघ अवलोकि हौं, कब त्रिवली सुख जाल ॥ ११ ॥
भुज विशाल करि कर सरिस, करतल कमल समान ॥
सहित विभूषण देखि हौं, कब लीन्हे धनुबान ॥ १२ ॥
झीन झगा पहिरे ललित, ता ऊपर पट पीत ॥
कब निज नयन सिराइहौं, देखि उदर उपवीत ॥ १३ ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा–जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुविधि धीरज दीन्ह ॥
चरण कमल शिरनाइ करि, गमन राम पहँ कीन्ह ॥२७॥

चलत महा धुनि गरजेउभारी * गर्भश्रवहिंसुनि निशिचरनारी ॥
नांघि सिंधु यहि पारहिं आवा * शब्दकिलकिलाकपिन सुनावा ॥
हर्षे सब विलोकि हनुमाना * नूतन जन्म कपिन तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तनुतेज बिराजा * कीन्होसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अतिभये सुखारी * तलफत मीन पाव जनु वारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा * पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुवन भीतर सब आये * अंगद सहित मधुर फल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे * मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥

दोहा–जाइ पुकारे सकलते, वन उजार युवराज ॥
सुनि सुग्रीवहिं हर्षि कपि, करि आये प्रभु काज ॥ २८ ॥

जो नहोत सीता सुधि पाई * मधुवनके फल को सक खाई ॥
इहि विधि मन विचारकर राजा * आयगयेकपि सहितसमाजा ॥
आइ सबन नायउ पदशीशा * मिलेउसबन अति प्रेम कपीशा ॥
पूंछेउ कुशल कुशल पद देखी * रामकृपा भा काज विशेषी ॥
नाथ काज कीन्हउ हनुमाना * राखे सकल कपिनकर प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरिउठि मिलेऊ * कपिन सहित रघुपतिपँ चलेऊ ॥

१ नवीन। २ सुग्रीव।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम कपिन कहँ आवत देखा * किये काज उर हर्ष विशेषा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई * परे सकल कपि चरणन जाई ॥
दोहा-प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणा पुंज ॥
पूंछा कुशल कुशल अब, नाथ देखि पद कंज ॥ २९ ॥
जाम्बवन्त कह सुनु रघुराया * जापर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा शुभ कुशल निरंतर * सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर ॥
सो विजयी विनयी गुणसागर * तासु सुयश तिहुँ लोकउजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू * जन्म हमार सफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्ह जो करणी * सो मुख लाखउ जाइनवरणी ॥
पवनतनयके वचन सुहाये * जाम्बवन्त रघुपतिहिसुनाये ॥
सुनि कृपालु उठि हृदय लगाये * जानिसुभट रघुपति मनभाये ॥
कहहु तात केहि भांति जानकी * रहति करति रक्षा स्वप्राणकी ॥

अथ क्षेपक ॥

कौन भांति लंका विस्तारा * सोसब वर्णहु पवनकुमारा ॥
सुनत वचन मारुति कह वानी * सुनिये दीनबंधु सुखदानी ॥
गिरि त्रिकूटपर लंक सुहाई * वर्णिनिजाय मनोहरताई ॥
पांच लक्ष हैं पत्थरके घर * औ नवलाख काष्ठके सुंदर ॥
दोहा-सात कोटि हैं ताम्रके, चांदीके श्रुतिकाटि ॥
जातरूप केहूइते, माणिक कोट सुकोटि ॥
तृण निर्मित षट कोटि विशाला * वंशछाल शत कोटि दयाला ॥
नब करोर स्फटिक सुहाये * सहस कोटि मणिनील सुछाये ॥
शतयोजनमें पुरी सुहाई * घनी बसत अतिशय रघुराई ॥
राज्य करत रावण तहँ स्वामी * सो तुम जानत अंतर्यामी ॥
दश शिर ताके भुज प्रभु बीसा * देव दनुज नावत सब शीशा ॥
ताकी प्रभुताई तहँ भारी * राज्य करत भयत्यागि खरारी ॥
चलिये अब प्रभु विलमनकीजे * जनकसुताको धीरज दीजे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम विन सीय महादुख पावत * तुमविन तिन्हैं कछू नाहिं भावत॥

इति क्षेपक

दोहा–नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट ॥
लोचन निज पद यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट ॥३०॥

"चलती बार कह्यो मोहिं टेरी * सुरति कराय शक्रसुतकेरी" ॥
चलत मोहिं चूडामणि दीन्हीं * रघुपति हृदय लाइ तेहि लीन्हीं॥
नाथ युगल लोचन भरि वारी * वचन कह्योकछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहुप्रभुचरणा * दीनबन्धु प्रणतारति हरणा ॥
मन क्रम वचन चरणअनुरागी * केहिअपराध नाथ मोहित्यागी ॥
अवगुण एक मोर मैं जाना * बिछुरत प्राण न कीन्हपयाना ॥
नाथ सो नयनन कर अपराधा * निसरतप्राण करहिं हठिबाधा ॥
विरह अग्नि तनु तूलँ समीरा * श्वास जरे क्षण माँह शरीरा ॥
नयन श्रवेजल निजहितलागी * जरै न पाव देह विरहागी ॥
सीताकी अति विपति विशाला * बिना कहे भल दीनदयाला ॥

दोहा–निमिषनिमिष करुणायतन, जाहिं कल्प शत बीति ॥
वेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति ॥३१॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना * भरि आये जल राजिवनयना ॥
वचन काय मन ममगति जाही * स्वप्नेहु विपतिकि चाहियताही ॥
कह हनुमान विपति प्रभु सोई * जबतव सुमिरण भजन नहोई ॥
कितिक बात प्रभु यातुधानकी * रिपुहि जीति आनिये जानकी ॥
सुनुकपि तोहिं समान उपकारी * नहिं कोउ सुरनरमुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा * सन्मुखहोइ न सकत मनमोरा ॥
सुनु कपि तोहिं उऋण मैं नाहीं * देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥

१ केवांर । २ कुलुफ । ३ मार्ग । ४ जयन्त । ५ शीशपर जो चूडाविषे मणि रहतीहै । ६ हेनाथ दोनों नेत्रोंमें जलभर । ७ रुई ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता * लोचननीर पुलकि अतिगाता ॥

दोहा—सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख, हृदय हर्ष हनुमन्त ॥
चरण परेउ परमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहत उठावा * प्रेम मगन तेहि उठव नभावा ॥
प्रभुपद पंकज कपिकर शीशा * सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा[1] ॥
सावधान मन करि पुनि शंकर * लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाय प्रभु हृदयलगावा * कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावण पालित लंका * केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबंका[2]
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना * बोले वचन विगत अभिमाना ॥
शाखामृगकी[3] अति मनुसाई * शाखाते शाखा पर जाई ॥
नांघि सिन्धु हाटकपुर जारा * निशिचर गणवधि विपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई * नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई ॥

दोहा—ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल ॥
तव प्रताप बडवानलहिं, जारि सकै खल तूल ॥ ३३ ॥

सुनतवचन प्रभु बहु सुखमाना * मन क्रम वचन दासनिजजाना ॥
मांगु वचन सुत वर अनुकूला * देहुँ आजु तुम कहँ सुख मूला ॥
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि * देहु कृपाकरि सो अनपायिनि ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपिवानी * एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामस्वभाव जिन जाना * ताहि भजनतजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा * रघुपति चरणभक्ति तेहिं पावा ॥
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा * जय जय जय कृपालु सुखकन्दा
तब रघुपति कपिपतिहिबुलावा[4] * कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब विलंब[5] केहि कारण कीजै * तुरत कपिन कहँ आयसुदीजै ॥
कौतुक देखि सुमन[6] बहु वर्षे * नभते भवन चले सुर हर्षे ॥

---

१ महादेव । २ अगम । ३ कपि । ४ सुग्रीव । ५ देर । ६ पुष्प ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–कपिपति वेगि बुलायहू, आये यूथप यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल, वानर भालु वरूथ ॥ ३४ ॥
प्रभु पदपंकज नावहिं शीशा * गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपि सैना * चितव कृपा करि राजिवनैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा * भये पक्ष युत मनहुँ गिरिन्दा[1] ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना * शकुन भये सुन्दर शुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय नीती * तासु पयान शकुनयहनीती ॥
प्रभु पयान जाना वैदेही * फरके बाम अंग शुभ तेही ॥
जो जो शकुन जानकिहि होई * अशकुन भयउ रावणहिं सोई ॥
चला कटक को वरणै पारा * गरजहिं वानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी * चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद[2] भालु कपि करहीं * डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥
छंद–चिक्करहिं दिग्गज डोल महि[3] गिरिलोलसागर खरभरे ॥
मन हर्ष दिनकर[4] सोम[5] सुर मुनि नाग किन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं ॥
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुण गण गावहीं ॥
सहिसक न भार उदार अहिपति[6] बार बार विमोहई[7] ॥
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमिसोहई ॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्पर सर्पराजसोलिखतअविचलपावनी ॥ ५ ॥
दोहा–इहिविधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ॥
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥
वहां निशाचर रहहिं सशंका * जबते जारि गयउ कपिलंका ॥

१ सुमेरु । २ सिंहनाद । ३ पृथ्वीकांपउठी । ४ सूर्य्य । ५ चन्द्र । ६ शेष-नाग । ७ मूर्च्छित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निजनिज गृह सब करैं विचारा * नाहिं निशिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल वरणि न जाई * तोहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीत सुनि पुरजन बानी * मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी * बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू * मोर कहा अति हित चितधरहू ॥
समुझत जासु दूतकी करनी * श्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई * पठवहु कन्त जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल विपिन दुखदाई * सीता शीत निशासम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे * हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हे ॥

दोहा-राम बाण अहिगणसरिस, निकर निशाचर भेक ॥
जौ लगि ग्रसत न तबहिंलगि, यतनकरहुतजिटेक ॥ ३६ ॥

श्रवण सुनत शठ ताकी बानी * बिहँसा जगत विदित अभिमानी ॥
सभय स्वभाव नारिकरसांचा * मंगल माहिं अमंगलरांचा ॥
जो आवे मर्कट कटकाई * जियहिं विचारे निशिचर खाई ॥
कम्पहि लोकप जाके त्रासा * तासु नारि सभीत बड़िहासा ॥
असकहि बिहँसि ताहि उरलाई * चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता * भयो कन्तपर विधिविपरीता ॥
बैठेउ सभा खबरि असपाई * सिन्धुपार सेना सब आई ॥
बूझोसि सचिव उचित मत कहहू * ते सब हँसे मौनकरि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं * नर वानर केहि लेखे माही ॥

अथ क्षेपक ॥

सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी * कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी ॥
जो सन्मुख सक नयन मिलाई * अस कह चला विवस औघाई ॥

---

१ विरोध । २ निशाचरी गर्भको डारदेतीहैं । ३ सीताजी । ४ सर्पगणतुल्य। ५ निशिचर गण मेंढकतुल्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सक्रोध बोला अतिकाया * आयसु मोहिं देहु करिदाया ॥
अबहीं क्षिति नर हरिविन करहूं * और मंत्रका बहु उच्चरहूं ॥
कामरूप बोला घननादा * मम प्रभाव जग जानत जादा ॥
विधि हरि हर वशकिये जुझारू * नर वनरनहित कौन विचारू ॥
कुंभ निकुंभ दम्भ छलकारी * बोले विभुता विदित हमारी ॥
कृपादृष्टि सब देव निहारैं * देखत उच्चासन बैठारैं ॥
भोजन हित कहियत तिनपाहीं * हम काहूकर छुवा न खाहीं ॥
डाटत बोलिसकै नहिं एकू * कपि मानुष हम गनै न नेकू ॥
मत्सररूप अकम्पन कहई * हमैंजियत असको सिय लहई ॥
कहो उपाय करौ अबसोई * नर वानर जेहि बचै न कोई ॥
अपर कथा कहिये का छोभी * तब भाभनत महोदर लोभी ॥
जो आवै अनगिन्त करोरी * डारौं खाय भरै महि झोरी ॥
तौ कपि सहस लाख केहिंलेखे * जेहैं भूमि नाग हम देखे ॥
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी * छलकर हरि आनौ दोउ दण्डी ॥
जो चाह्यो सो कीन्ह्यो पाछे * वद मकराक्ष कपट वपुकाछे ॥
विपुलविप्रजा मैं वरिआनी * भूसुर वनि कोइ सकै न जानी ॥

दोहा-तिनके छलसें रामको, प्रभु तहँ लेहिं बुलाय ॥
धर बांधैं लावै यहां, कैसो कहो उपाय ॥ १ ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा-सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश ॥
राजधर्म तनु तीनकर, होइ वेगही नाश ॥ ३७ ॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई * स्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि विभीषण आवा * भ्राता चरण शीश तेहि नावा ॥
पुनि शिरनाइ बैठि निज आसन * बोला वचन पाइ अनुशासन ॥

---

१ आज्ञा ।

In Public Domain. Chaubal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो कृपालु पूंछेहु मोहिंबाता * मति अनुरूप[1] कहव मम ताता ॥
जो आपन चाहो कल्याना * सुयशसुमति शुभगति सुखनाना॥
तो परनारि लिलार गुसाई * तजो चौथि[2] चंदाकी नाई ॥
चौदह भुवन एकपति होई * भूत[3] द्रोह तिष्टै नाहिं सोई ॥
गुणसागर नागर नर जोऊ * अल्प लोभ बल कहै न कोऊ ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरककर पन्थ ॥
सब परिहरि रघुवीर पद, भजहु कहहिं सदग्रन्थ ॥३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला * भुवनेश्वर कालहुके काला ॥
ब्रह्म अनामय[4] अज भगवन्ता * व्यापक अजित अनादि अनंता॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी * कृपासिन्धु मानुष तनुधारी ॥
जनरंजन भंजन खल व्राता * वेद धर्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि वैर तजि नाइय माथा * प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहँ वैदेही * भजहु राम विनु काम सनेही ॥
शरणगये प्रभु ताहु न त्यागा * विश्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा॥
जासु नाम त्रयतापनशावन * सो प्रभु प्रगट समुझ जियरावन

दोहा—बार नार पद लागौं, विनय करौं दशशीश ॥
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोशलाधीश ॥ ३९ ॥
मुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन, कहि पठई यह बात ॥
तुरत सोमैं तुमसन कही, पाय सुअवसर तात ॥ ४० ॥

मालवंत अति सचिव सयाना * तासु वचन सुनि अति सुखमाना
तात अनुज तव नीति विभूषण * सोइ उरधरहु जोकहत विभीषण
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ * दूर न करहु इहांते कोऊ ॥

---

१ अनुसार । २ भाद्रपदकी चौथिके चन्द्रतुल्य । ३ जीव । ४ षट्वर्ग जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा मृत्युरहित ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मालवंत गृह गयउ बहोरी * कहेउ विभीषण पुनि करजोरी ॥
सुमति कुमति सबके उररहई * नाथ पुराण निगम अस कहई ॥
जहां सुमति तहँ संपति नाना * जहां कुमति तहँ विपति निदाना॥
तव उर कुमति बसी विपरीती * हित अनहित मानत रिपु प्रीती॥
कालरात्रि निशिचर कुलकेरी * तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दोहा–तात चरण गहि माँगौं, राखहु मोर दुलार ॥
सीता देहु राम कहँ, अति हित होइ तुम्हार ॥ ४१ ॥

बुँध पुराण श्रुति सम्मत वानी * कही विभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई * खलतोहिं मृत्यु निकटचलिआई॥
जियसि सदा शठ मोरजिआवा * रिपुकरपक्ष सदा तोहिं भावा ॥
कहसिनखल असको जग माहीं * भुजबलजेहि जीता हमनाहीं ॥
ममपुरबसि तपासिन सनप्रीती * शठमिलु जाहि ताहि कहुनीती ॥
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा * अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संतकी यही बड़ाई * मंद करत जो करै भलाई ॥
तुम पितु सरिस भले मोहिंमारा * रामभजे हित होइ तुम्हारा ॥
सचिव संगलै नभ पथ गयऊ * सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दोहा–रामसत्य संकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि ॥
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४२ ॥

असकहि चला विभीषण जबहीं * आयुहीनभे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी * कर कल्याण अखिलै कर हानी॥
रावण जबहिं विभीषण त्यागा * भयो विभवबिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं * करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता * अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥

---

१ छः मंत्रीलेकर । २ आयुर्बल । ३ समूह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेपद परशि तरी ऋषिनारी * दण्डक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये * कपट कुरंग संग धरिधाये ॥
हर उर सरसरोज पद जोई * अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥
दोहा–जिन पाँयन कर पादुका, भरत रहे मन लाइ ॥
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ ॥ ४३ ॥
यहिविधि करत सप्रेम विचारा * आयउ सपदि सिन्धुके पारा ॥
कपिन विभीषण आवत देखा * जानेउ कोउ रिपुदूत विशेषा ॥
ताहि राखि कपिपति पहँ आये * समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा * कहै कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि नजाय निशाचर माया * कामरूप केहि कारण आया ॥
भेद हमार लेन शठ आवा * राखियबांधि मोहिं असभावा ॥
सखा नीति तुम नीक विचारी * मम प्रण शरणागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना * शरणागत वत्सल भगवाना ॥
दोहा–शरणागत कहँ जो तजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥
तेनर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि ॥ ४४ ॥
कोटि विप्र वध लागहिं जाही * आये शरण तजैं नाहिं ताही ॥
सन्मुख होइ जीव मोहिं जबही * जन्म कोटि अघ[2] नाशौं तबहीं ॥
पापवन्त कर सहज स्वभाऊ * भजन मोर तेहि भाव नकाऊ ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई * मोरे सन्मुख आव कि सोई ॥
निर्मलमन जन सो मोहिंपावा * मोहिं कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेदलेन पठवा दशशीशा * तबहुँ न कछु भय हानि कपीशा॥
जगमहँ सखा निशाचर जेते * लक्ष्मणहनहिं निमिष महँतेते ॥
जो सभीत आवा शरनाई * रखिहौं ताहि प्राणकी नाई ॥

---

१ अहल्या । २ पाप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–उभयं भांति लै आवहु, हँसिकह कृपानिधान ॥
जय कृपालु कहि कपिचले, अंगदादि हनुमान ॥ ४५ ॥
सादर तेहि आगे करि वानर * चले जहां रघुपति करुणाकर ॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता * नयनानन्द दानके दाता ॥
बहुरि राम छबिधामविलोकी * रहा सो ठाढ एक पग रोकी ॥
भुज प्रलंब[2] कंजारुण[3] लोचन * श्यामलगात प्रणत भयमोचन ॥
सिंह कन्ध आयत[4] उर सोहा * आनन[5] अमित मदनछबिमोहा ॥
नयननीर पुलकित अतिगाता * मन धरि धीर कही मृदुबाता ॥
नाथ दशानन कर मैं भ्राता * निशिचर वंश जनम सुरत्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा * यथा उलूकहि तम पर नेहा ॥
दोहा–श्रवण सुयश सुनि आयऊं, प्रभु भंजन भयभीर ॥
त्राहि त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुवीर ॥ ४६ ॥
असकहि करत दण्डवत देखा * तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेषा ॥
दीनवचन सुनि प्रभु मन भावा * भुजविशालगहिहृदयलगावा ॥
अनुजसहितमिलि ढिग बैठारी * बोले वचन भक्त हितकारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा * कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खल मण्डली बसहु दिनराती * सखा धर्म निबहै केहि भांती ॥
मैं जानी तुम्हारि सब रीती * अतिशय निपुण न भावअनीती॥
बरु भल बास नरक करताता * दुष्ट संग जनि देहि विधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया * जोतुम कीन्ह जानि जन दाया ॥
दोहा–तब लगि कुशल न जीव कहँ, स्वप्नेहु मन विश्राम ॥
जबलगि भजन न रामके, शोक धाम तजि काम ॥ ४७ ॥
तबलगि हृदय वसत खल नाना * लोभ मोह मत्सर मदमाना ॥

---

१ दुष्टभावसे आयाहो या आर्त्तहैकै दोऊ भांतिसे ले आवो। २ आजानुभुजा।
३ अरुणकमल इव नेत्र। ४ चौडी। ५ मुख।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जबलगि उर न बसत रघुनाथा * धरे चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तिमिरतरुण अँधियारी * राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तबलगि बसत जीव उर माहीं * जबलगि प्रभुप्रताप रविनाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भयभारे * देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला * ताहि नव्याप त्रिविध भवशूला ॥
मैं निशिचर अति अधम स्वभाऊ * शुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान न पावा * सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा ॥

दोहा—अहो भाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुखपुंज ॥
देखउँ नयन विरंचि शिव, सेव्य युगल पदकंज ॥ ४८ ॥

सुनहु सखा निज कहहुँ स्वभाऊ* जानि भुशुण्डि शम्भु गिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही * आवै सभय शरणताकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छलनाना * करौं सखा तेहि साधु समाना ॥
जननी[1] जनक[2] बन्धु सुत[3] दारा * तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥
सबके ममता ताग बटोरी * ममपदमनहिं बांधि बटि डोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं * हर्ष शोक भय नाहिं मनमाहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे * लोभी हृदय बसत धन जैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे * धरौं देह नाहिं आन निहोरे ॥

दोहा—सगुण उपासक परमहित, निरत नीति दृढ नेम॥
तेनर प्राण समान मोहिं, जिनके द्विज पद प्रेम ॥ ४९ ॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे * ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ॥
राम वचन सुनि वानर यूथा * सकलकहहिं जय कृपावरूथा ॥
सुनत विभीषण प्रभुकरवानी * नाहिं अघात श्रवणामृत जानी ॥
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा * हृदयसमात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी * प्रणतपाल उर अन्तर्यामी ॥

१ माता । २ पिता । ३ पुत्र । स्त्री ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर कछु प्रथम वासना रही * प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपालु निजभक्ति पावनी * देहु दयाकरि शंभु भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा * मांगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं * ममदर्शन अमोघ जग माहीं ॥
असकहि राम तिलक तेहि सारा* सुमन वृष्टि नभ भयउ अपारा ॥

दोहा–रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर प्रचण्ड ॥
जरत विभीषण राखेउ, दीन्हेउ राज अखण्ड ॥ ५० ॥
जो सम्पति शिव रावणहि, दीन्ह दिये दशमाथ ॥
सो संपदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥ ५१ ॥

अस प्रभु छांडि भजहिं जे आना* ते नर पशु बिनु पूंछ बखाना ॥
निजजनजानि ताहि अपनावा * प्रभुस्वभाव कपिकुलमनभावा ॥
पुनि सर्वज्ञ सर्व उर बासी * सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
बोले वचन नीति प्रतिपालक * कारण मनुज दनुज कुलघालक॥
सुनु कपीश लंकापति वीरा *केहिविधि उतरिय जलधि गँभीरा॥
संकुल उरग मकर झखजाती * अति अगाध दुस्तर सब भांती॥
कह लंकेश सुनहु रघुनायक * कोटिसिन्धु शोषै तव शायक ॥
यद्यपि तदपि नीति अस गाई * विनय करिय सागर पहँ जाई ॥

दोहा–प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहहिं उपाय विचारि ॥
बिनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालु कपि धारि ॥ ५२॥

सखा कह्यो तुम नीक उपाई * करब दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लक्ष्मण मन भावा * राम वचनसुनि अतिदुखपावा ॥
नाथ दैवकर कवन भरोसा * सोखिय सिन्धु करियमनरोसा ॥
कादर मनकर एक अधारा * दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत विहँसि बोले रघुवीरा * ऐसे करब धरहु मन धीरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असकहि प्रभु अनुजहि समुझाई * सिन्धुसमीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई * बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥
जबहिं विभीषण प्रभु पहँ आये * पाछे रावण दूत पठाये ॥

सकल चरित उन्ह देखेउ, धरे कपट कपि देह ॥
प्रभु गुण हृदय सराहि अति, शरणागत पर नेह ॥ ५३ ॥

प्रकट वखानत राम स्वभाऊ * अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ॥
रिपुका दूत कपिन जब जाना * ताहिबांधि कपिपति पहँ आना॥
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर * अंग भंग करि पठवहु निशिचर॥
सुनि सुग्रीव वचन कपिधाये * बांधि कटक चहुँ पास फिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपिलागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जोहमार हर नासा काना * तेहि कोशलाधीश कर आँना ॥
सुनिलक्ष्मण तेहि निकट बुलाई * दयालागि हँसि दीन छुडाई ॥
रावणकर दीन्हेउ यह पाती * लक्ष्मण वचन वांच कुलघाती ॥

दोहा—कहेउ मुखागर मूढ सन, मम सन्देश उदार ॥
सीता देहु मिलहु नतो, आवा काल तुम्हार ॥ ५४ ॥

तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा * चला दूत वर्णत गुणगाथा ॥
कहत राम यश लंका आवा * रावण चरण शीश तिननावा ॥
बिहँसि दशानन पूंछेसि बाता * कहसि नशुक आपनिकुशलाता॥
पुनिकहु कुशल विभीषणकेरी * जासु मृत्यु आई अति नेरी ॥
करतराज्य लंका शठ त्यागा * होइहि यवकरि कीट अभागा ॥
पुनि कहु भालु कीश कटकाई * कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
तिनके जीवनकर रखवारा * भयउ मृदुलचित सिंधुविचारा ॥
कहु तपसिन कर बात बहोरी * जिनके हृदय त्रास बड़ मोरी ॥

दोहा—भई भेंटकी फिरि गये, श्रवण सुयश सुनि मोर ॥

---

१ भाईको । २ कुशासन । ३ नासिका । ४ सौंह । ५ राम-लक्ष्मण ।

In Public Domain. Chanbal Archives, Jaipur

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहसि न रिपुदल तेज बल, कस चकित चित तोर ॥ ५५॥

नाथ कृपा करि पूछहु जैसे * मानहु वचन क्रोध तजि तैसे ॥
मिलाजाइ जब अनुज तुम्हारा * जातहिं राम तिलकतेहि सारा ॥
रावण दूत हमहिं सुनि काना * कपिन बांधि दीन्हे दुख नाना ॥
श्रवण नाशिका काटन लागे * राम शपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूंछहु नाथ कीश कटकाई * वदन कोटि शत वरणि नजाई ॥
नाना वरण भालु कपि धारी * विकटानन विशाल भयकारी ॥
जेइ पुर दहेउ वधेउ सुत तोरा *सकल कपिनमहँ तेहि बल थोरा ॥
अमित नामभट कठिन कराला * विपुलवरण तनु तेज विशाला ॥

दोहा—द्विविद मयन्द नील नल, अंगदादि विकटासि ॥
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जाम्बवन्त बलराशि ॥ ५६ ॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना * इन्ह सम कोटि गनै को नाना ॥
राम कृपा अतुलित बलतिनहीं * तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं ॥
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर * पद्म अठारह यूथप[1] बन्दर ॥
नाथ कटक महँ सो कपिनाहीं * जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा * आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिं सिन्धु सहित झषव्याला * फारहिं नखधरि कुधर[2] विशाला ॥
मर्द्दि गर्दि मिलवहिं दशशीशा * ऐसे वचन कहहिं सब कीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका * मानहुँ ग्रसन चहत अब लंका ॥

दोहा—सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिर पर श्रीराम ॥
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥ ५७ ॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई * शेष सहस शत सकहिं नगाई ॥
एक शर एक शोषि शत सागर * तव भ्रातहिं पूंछेउ नयनागर ॥
ताकु वचन सुनि सागर पाहीं * मांगत पन्थ कृपा मन माहीं ॥

---

१ यूथोंके पति । २ पर्वत ।

In Public Domain, Jhambai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनत वचन विहँसा दशशीशा * जो असमति सहाय कृतकीशा॥
सहज भीरु करि वचन दृढ़ाई * सागरसन ठानी मचलाई ॥
भूढमृषा का करसि बडाई * रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत विभीषण जाके * विजय विभूति कहांलगि ताके ॥
सुनिखल वचन दूतरिसिबाढी * समय विचारि पत्रिका काढी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती * नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
विहँसि वामकर लीन्हेसि रावन *सचिव बोलि शठ लागु बँचावन ॥

दोहा—बातन मनहिं रिझाय शठ, जनि घालसि कुलखीश ॥
राम विरोध न उबरिहहु, शरण विष्णु अज ईश ॥ ५८ ॥
होउ मान तजि अनुज इव, प्रभु पद पंकज भृंग ॥
होहि राम शर अनल खल, जनि कुल सहित पतंग ॥५९॥

सुनत सभय मन महँ मुसुकाई * कहत दशानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकाशा * लघु तापस कर वागविलासा ॥
कह शुक नाथ सत्यसबवानी * समुझहुछांडि प्रकृतिअभिमानी ॥
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा * नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥
अति कोमल रघुवीर स्वभाऊ * यद्यपि अखिल लोककर राऊ ॥
मिलत कृपा प्रभु तुमपर करिहैं * उर अपराध न एकौ धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजै * इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेइँ देन कहेउ वैदेही * चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही ॥
चरणनाइ शिर चला सो ताहाँ * कृपासिन्धु रघुनायक जाहाँ ॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई * राम कृपा आपनि गति पाई ॥
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी * राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
वन्दि रामपद बारहिं बारा * पुनि निज आश्रमकहँ पगुधारा॥

दोहा—विनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिन बीति ॥
बोले राम सकोप तब, भय विनु होय न प्रीति ॥ ६० ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Hawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मण बाण शरासन आनू * शोषौं वारिध विशिष कृशानू ॥
शठसन विनयकुटिलसनप्रीती * सहजकृपणसनसुन्दर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञान कहानी * अतिलोभी सन विरति बखानी॥
क्रोधिहि सम कामिहिहरिकथा * ऊषर बीज बये फल यथा ॥
असकहि रघुपति चाप चढावा * यह मत लक्ष्मणके मन भावा ॥
सन्धानेउ शर विशिषकराला * उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला ॥
मकर उरग झषगण अकुलाने * जरतजन्तुजलनिधि जबजाने ॥
कनकथार भरि मणिगणनाना * विप्ररूप आये तजि माना ॥

दोहा-काटे पै कदली फरै, कोटि यत्न करि सीच ॥
विनय न मान खगेश सुन, डाटेहिं पै नव नीच ॥ ६१ ॥

सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे * क्षमहुनाथ सब अवगुण मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरणी * इनकी नाथ सहजजड़करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये * सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसुजेहिकहँजस अहही * सो तेहिभांतिरहै सुखलहही ॥
प्रभुभलकीन्हमोहिं सिख दीन्हीं * मर्य्यादासब तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी * ये सब ताडनके अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई * उतरिहि कटक न मोरि बडाई ॥
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई * करहु वेगि जो तुमहिं सोहाई ॥

दोहा-सुनत विनीत वचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ ॥
जेहि विधि उतरै कपि कटक, तात सो करहु उपाइ ॥६२॥

नाथ नील नल कपिदोउभाई * लरिकाईं ऋषि आशिष पाई ॥
"सरिता निकट रहे मुनि छाई * करहिं उपद्रव तहँ दोउ जाई ॥
आंखमूंद मुनि ध्यान लगावैं * तब ये ठाकुरको ले जावैं ॥
सो जलमें सब देहिं डुबाई * तब मुनि शाप दियो रिसिआई ॥
प्रस्तर छुआ तुम्हार जो होई * पानी पैउतरावै सोई ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थिर रहै चलै सो नाहीं * तब यह कछु समझे मन माहीं॥"
तिनके परश किये गिरिभारे * तारिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उरधारि प्रभु प्रभुताई * करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
इहि विधि नाथपयोधिबँधाइय * जिहिअससुयशलोकतिहुँगाइय ॥
इहि शर मम उत्तर तटवासी * हतहु नाथ खल गण अघराशी ॥
सुनि कृपालु सागरमन पीरा * तुरतहि हरी राम रणधीरा ॥
देखि राम बल अतुलितभारी * हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा * चरण वन्दि पाथोधिसिधावा ॥
छंद–निज भवन गवनेउ सिन्धु श्रीरघुवीरहियमतभायऊ ॥
यह चरित कलिमल हरण जसमति दास तुलसी गायऊ॥
सुखभवन संशय दमन शमन विषाद रघुपति गुणगना ॥
तजि आश सकल भरोस गावहिं सुनहिं सज्जनशुचिमना॥६
दोहा–सकल सुमंगलदायक, रघुनायक गुणगान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिंधु बिना जलयान ॥ ६३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
सुन्दरकांडेपंचमःसोपानःसमाप्तः ॥ ५ ॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

खेमराज श्रीकृष्णदासने
निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें
छापकर प्रगट की ।
बंबई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इदं तुलसीकृतरामायणे
सुंदरकाण्डं मुम्बय्यां खेमराज
श्रीकृष्णदासइत्यनेन स्वकीये
"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रायन्त्रा-
लयेंऽकितम् ।

In Public Domain. Chanhal Archives, Pawan

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

लङ्काकाण्डम् ।

जिसमें

सेतुरचना, चन्द्रोदय दर्शन शुकशारनको कपिसैन्य दिखाना, अंगदको रावणकी सभामें जाना, राम रावणसंग्राम, कुंभकर्ण तथा मेघनाद वध, अहिरावण तथा नरांतक वधान्त रामचन्द्रजी करके रावणका माराजाना, विभीषणको राज्य तिलक, जानकीजीका बंदिसे छूटना, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र कृत स्तुति श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, जानकीजी सहित कपि यूथपोंके पुष्पक विमानारूढ हो अयोध्या गमन आदि अत्यंत राम भक्ति रस भरी अद्भुत कथा वर्णितहैं ॥

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानामें

छापकर प्रगट की ।

बंबई

CC-0. Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लङ्काकाण्डम् ६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे लङ्काकाण्डम् ।

श्लोक ।

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ॥ मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं वंदे कुंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥ शंखेंद्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ॥ काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ २ ॥ यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ॥ खलानां दण्डकृत् योसौ शंकरः शंतनोतु मे ॥ ३ ॥

श्लोकार्थ—शिवजीसे सेवित संसारभयको हरनेवाले कालरूपी मतवाले हाथीको सिंह योगियोंमें इंद्र और ज्ञानसे जानने योग्य गुणोंके समुद्र अजित गुणोंसे परे विकाररहित मायासे पृथक् देवताओंके गुरु दुष्टोंके मारनेमें प्रीति करनेवाले ब्राह्मणगणोंके एकही देवता जल और जलसे पूरित मेघ कीसी आभा जिनके शरीरकी कमल केसे नेत्र ऐसे पृथ्वीपति रामकी मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥ शंख और चंद्रमाके समान गौर और अतिसुंदर जिनका शरीर सिंहका चर्म जिनका वस्त्र और जो कालके समान सर्प और कपालभूषणको धारण करनेवाले और गंगा चंद्रमा जिनको अति प्रियहैं काशीके ईश पापके नाशक कल्याणके कल्पवृक्ष गिरिजाके पति चराचरके पूजनीय गुणोंके समूह कामदेवके शत्रु शिवजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥ जो शिवजी सज्जनों को दुर्लभ मुक्ति देतेहैं और खलोंको दंड करते हैं सो शंकर मेरे कल्याणका विस्तार करैं ॥ ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"दोहा–षष्ठम लंकाकाण्ड यह, वारिधितट रघुवीर ॥
शोभित सभा ससैन घन, वन्दत रहत न पीर ॥ १ ॥
सुदृढ सुभग शुठि सेतु रचि, सहित भालु कपि सैन ॥
कृष्णविहारी पार भे, राम लषण बल ऐन ॥ २ ॥
मंदोदरि सुनि शीशधुनि, बहुविधि कंत मनाय ॥
अखिल अजन्म अनन्त अज, रूप विराट दिखाय ॥ ३ ॥
ताहि प्रबोधत आप शठ, गुणी समूह बुलाय ॥
निर्भय देखत नाट्यसुख, विविध यंत्र बजवाय ॥ ४ ॥
परम सुभट अरि शीशपर, तद्यपि भय नहिं लेश ॥
यहां सुबैल सुसभायुत, राजत प्रभु अवधेश ॥ ५ ॥
नीति निपुण अंगद गये, प्रभुआज्ञा धरि शीश ॥
लंकापति सों बतकही, कही न मान दशीश ॥ ६ ॥
बहुरि चढाई लंककी, समर अकम्पनकाय ॥
मेघनाद योधा अपर, लडे मरे गति पाय ॥ ७ ॥
सती सुलोचनि कुंभश्रुति, संगर कथा निकाय ॥
अहिरावण जूझन बहुरि, नारांतक सुनि आय ॥ ८ ॥
तासु वधन सति विंदुमति, समर भयो लंकेश ॥
व्याकुल सुर मुनि विप्रलखि, हत्यो ताहि अवधेश ॥ ९ ॥
बहुरि जानकी कर मिलन, विनती सुरन जो कीन ॥
भालु कपिन कर पुनि जियन, राज्य विभीषण दीन ॥ १० ॥
सहित जानकी लषण प्रभु, सचिव भक्त हनुमंत ॥
पुष्पकयान अरूढहै, चले अवध भगवंत ॥ ११ ॥
जहां तहां क्षेपक कथा, अरु बहु प्रसँग मिलाय ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाथा रघुवर नाम की, पढत सुनत रुज जाय ॥ १२ ॥"

दोहा—लव निमेष परिमाणु युग, वर्ष कल्प शर चण्ड ॥
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड ॥ १ ॥

सो०—सिंधु वचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कह्यउ ॥
अब विलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥ १ ॥
सुनहु भानुकुल केतु, जाम्बवन्त कर जोरि कह ॥
नाथ नाम तव सेतु, नर चढि भवसागर तरहिं ॥ २ ॥

यह लघु जलधि तरत कत बारा * अससुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप वडवानल भारी * शोषे प्रथम पयोनिधि वारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा * भऱ्यो बहोरि भयो तेहि खारा ॥
सुनि असि उक्ति पवनसुतकेरी * विहँसे रघुपति कपितनहेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई * नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि उर माही * करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु विनती इक मोरी ॥
रामचरण पंकज उर धरहू * कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट बिकट बरूथा * आनहु विटप गिरिनके यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करिहूहा * जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दोहा—अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाइ ॥
आनि देहिं नल नील कहँ, विरचहिं सेतु बनाइ ॥ २ ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं * कन्दुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना * विहँसि कृपानिधि बोले वचना ॥

---

१ पलकका लगना बंदहोना।२ साठिनिमिषकाएकपरिमाणु।३ बारहमासकाएकवर्ष। ४ कल्पकही हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग एसे चारिउ युग हजार हजार मिलके हजार चौकडी जब बीतैं तब ब्रह्माका एकदिन होताहै।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ क्षेपक ॥

प्रथम दिवस नल सेतु सुहावन * चौदह योजन कीन्ह सुपावन ॥
द्वितिय दिवस शुभ योजन वीसा * तीजे दिन इकइस किय कीसा ॥
दिवस चतुर्थ सुवाइस योजन * पंचम तेइस कियो मुदित मन ॥
दश योजन आयत अतिसुंदर * शत योजन विशाल शोभाधर ॥
आज्ञा तब रघुराज सुनाई * पर्वत विटप नलावहु भाई ॥
सुनत वचन कीशन सुखमाना * जहँ तहँ पर्वत तजे निदाना ॥
पवनपुत्र उत्तरते आवत * गोवर्धन पर्वत कहँलावत ॥
वृंदावन कानन नियराई * प्रभुकी आज्ञा सुनी सुहाई ॥
तहँ गोवर्धनको पधरायो * विप्र रूप तिन वचन सुनायो ॥
प्रभु दर्शनकी इच्छा भारी * तजो न विनती सुनहु हमारी ॥
अस कहि चले हिये सुखमानी * कही आय प्रभुसे सब बानी ॥
रघुपति कह्यो सुनहु हनुमाना * कहोजाय तासों ममबाना ॥
द्वापर अन्त कृष्ण अवतारा * लेहौं हरनि भूमिकरभारा ॥
सातदिना तोहि करपर धारौं * ब्रजवासिनको कष्ट निवारौं ॥
यह तुम ताहि सुनावहुजाई * चले पवनसुत आतुर धाई ॥
कही सकल तेहि प्रभुकी वानी * आये पुनि प्रभु पहँ सुखमानी ॥

इति क्षेपक ॥

परमरम्य सुंदर यह धरणी * महिमा अमित जाइ नाहिं वरणी ॥
करिहौं यहां शम्भु थापना * मोरे हृदय परम कल्पना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये * मुनिवर निकर बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा * शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै * सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै ॥
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी * सो नर मूढ मंदमति थोरी ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–शंकर प्रिय ममद्रोही, शिव द्रोही मम दास ॥
ते नर कराहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ बास ॥ ३ ॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं * सो तनु तजि ममधाम सिधरिहैं ॥
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि * सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छल तजिसेइहि * भक्ति मोरि तिहिं शंकर देइहि ॥
ममकृत सेतु जु दर्शन करिहैं * सो बिनु श्रम भवसागरतरिहैं ॥
रामवचन सबके मन भाये * मुनिवर[1] निजनिज आश्रम आये॥
गिरिजा रघुपति की यह रीती * सन्तत[2] कराहिं प्रणत[3] पर प्रीती ॥
बांधेउ सेतु नील नल नागर[4] * रामकृपा यश भयउ उजागर ॥
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई * भये प्रबल वोहित[5] सम तेई ॥
महिमा यह न जलधि[6]कै वरणी * पाहन गुणन कपिनकी करणी ॥

दोहा–श्रीरघुवीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाँषान ॥
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभुआन ॥ ४ ॥

बांधि सेतु अति सुदृढ बनावा * देखि कृपानिधिके मनभावा ॥
चली सेन कछु वरणि न जाई * गरजहिं मर्कट भट समुदाई ॥
सेतु बंध ढिग चढि रघुराई * चितै कृपालु सिन्धु अधिकाई ॥
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा * प्रगट भये सब जलचर वृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झर्ष[7] व्याला * शत योजन तनु परम विशाला ॥
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं * एकन के डर एक पराहीं ॥
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे * मन हर्षित सब भये सुखारे ॥
तिनकी ओट न देखिय वारी[9] * मगन भये हरिरूप निहारी ॥
चला कटक कछु वरणि न जाई * को कहि सक कपिदल विपुलाई ॥

---

१ अत्रिमुनि, अगस्त्य, च्यवन, मार्कण्डेय, गर्ग, मुद्गल, नारद, शुकदेवादि अनन्तमुनि अपने २ स्थानको गये। २ निरन्तर। ३ शरणागत। ४ श्रेष्ठ। ५ जहाज। ६ समुद्र। ७ पत्थर। ८ मीन। ९ पानी।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभ पन्थ उड़ाहिं ॥
अपर जलचरनि उपर चढ़ि, विनुश्रम पारहि जाहिं ॥५॥

यह कौतुक विलोकि दोउ भाई * विहँसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुवीरा * कहि न जात कछु यूथप भीरा ॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा * सकल कपिन कहँ आयसुदीन्हा॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये * सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये ॥
सब तरु फले राम हित लागी * ऋतु अनऋतुहि काल गति त्यागी॥
खाहिं मधुर फल विटप[1] हिलावहिं * लंका सन्मुख शिखर चलावहिं ॥
जहँ कहुँ फिरत निशाचरपावहिं * घेरि सकल मिलि नाच नचावहिं ॥
दशनन[2] काटि नासिका काना * कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना ॥
जिनकर नासा कान निपाता * तेइँ रावणहिं कही सब बाता ॥
सुनत श्रवण वारिधि बंधाना * दशमुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दोहा–बांधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धु वारीश ॥
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधि पयोधि नदीश ॥ ६ ॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी * बिहँसि चला गृह करिमति[3]भोरी॥
मन्दोदरी सुना प्रभु आये * कौतुक ही पाथोधि बँधाये ॥
कर[4]गहिपतिहिभवन निज आनी * बोली परम मनोहरवानी ॥
चरण नाइ शिर अंचल रोपा * सुनहु वचनपिय परिहरकोपा ॥
नाथ वैर कीजे ताही सों * बुधिबलजीतिसकियजाहीसों ॥
तुमहिं रघुपतिहि अंतर कैसा * खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिबल मधुकैटभ जिनमारे * महावीर दिति सुत संहारे ॥
जेहि बलि बांधि सहसभुजमारा * सोइ अवतरेउहरणमहिभारा ॥
तासु विरोध न कीजिय नाथा * काल कर्म गुण जिनके हाथा ॥

दोहा–रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ ॥

---

१ वृक्ष । २ दांतनसे । ३ बिसराइकै । ४ हाथपकरकै ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुत कहँ राज्य देइ वन, जाइ भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥

नाथ दीनदयालु रघुराई * बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चहिय करण सो सब करि बीते * तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
वेद कहहिं अस नीति दशानन * चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता * जोकर्त्ता पालक संहर्त्ता ॥
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी * भजहुनाथ ममता मद त्यागी ॥
मुनिवर यत्न करहिं जेहि लागी * भूप राज्य तजि होहिं विरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया * आये करन तोहिंपर दाया ॥
जो पिय मानहु मोर सिखावन * होइहि सुयश तिहूं पुर पावन ॥

दोहा—अस कहि लोचन वारि भरि, गहि पद कंपित गात ॥
नाथ भजहु रघुनाथ पद, मम अहिवात न जात ॥ ८ ॥

तब रावण मयसुता उठाई * कहै लागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया मृषा भय माना * जग पोधा को मोहिं समाना ॥
वरुण कुबेर पवन यम काला * भुजबलजित्यहुँसकलदिगपाला ॥
देव दनुज नर सब वश मोरे * कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाविधिकहि तेहि समुझाई * सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना * काल विवश उपजा अभिमाना ॥
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा * करियकवनविधि रिपु सन जूझा॥
कहहिंसचिवसुनिनिशिचरनाहा * वार वार प्रभु पूंछहु काहा ॥
कहहुकवनभय करियविचारा * नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दोहा—वचन सबनके श्रवण सुनि, कह प्रहस्त करजोरि ॥
नीति विरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अति थोरि ॥९॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती * नाथ न भल होइहि याहिभांती ॥
वारिधि लांघि एक कपि आवा * तासु चरित मन महँ सबगावा ॥

---

१ वन । २ जल । ३ मिथ्या ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू * जारत नगर न सकि धरि खाहू॥
सुनत नीक आगे दुखपावा * सचिवन असमत प्रभुहि सुनावा॥
जो वारीश बँधायउ हेला * उतरे कपिदल सहित सुवेला ॥
सो जनु मनुज खाबहमभाई * वचन कहहु सब गाल फुलाई॥
सुनि मम वचन तात अति आदर*निज मन गुणहु मोहिंकहिकादर॥
प्रियवाणी जे सुनहिं जे कहहीं * ऐसे जग निकाय नर अहहीं ॥
" वचन परम हित सुनत कठोरे * कहहिं सुनहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
प्रथम वसीठ पठव सुन नीती * सीतहि देइ करिय पुनि प्रीती ॥
दोहा—नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार ॥
नाहिं तो सन्मुख समर महँ, नाथ करिय हठ मार ॥१० ॥"
यह मत जो मानहु प्रभु मोरा * उभय प्रकार सुयश जग तोरा ॥
सुतसन कह दशकंधरिसाई *असमत तोहिं शठ कौन सिखाई॥
अबहीं ते उर संशय होई * वेणुवंश सुत भयसि घमोई॥
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा* चला भवन कहि वचन कठोरा ॥
हित मत तोहि न लागत कैसे * कालविवश कहँ भेषज जैसे ॥
संध्या समय जानि दशशीशा * भवन चला निरखत भुज वीसा॥
लंका शिखर रुचिर आगारा * अति विचित्र तहँ होय अखारा ॥
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावन * लागे किन्नर गँधरव गावन ॥
बाजै ताल पखावज वीणा * नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा ॥
दोहा—सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास ॥
परम प्रबल रिपु शीश पर, तदपि न कछु मन त्रास ॥११॥
यहां सुवेल शैल रघुवीरा * उतरे सेन सहित अति भीरा ॥
शैल शृंग इक सुंदर देखी * अति उतंग सम सुभग विशेषी ॥
तहँ तरु किशलय सुमन सुहाये * लक्ष्मण रचि निजहाथडसाये ॥

१ बहुतहैं । २ ओषधी । ३ इन्द्र । ४ भय । ५ अत्यन्त ऊंचा । ६ बराबर । ७ कोमलपत्ता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation Trust Delhi and eGangotri

तापर रुचिर मृदुल मृगछाला * तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
प्रभुकृत शीश कपीश[2] उछंगा * वाम दहिन दिशि चाप निषंगा॥
दुहुँ कर कमल सुधारत वाना * कह लंकेश मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना * चरणकमल चापत विधि नाना ॥
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन * कटि निषंग कर बाण शरासन ॥
दोहा—इहि विधि करुणा शील गुण, धामराम आसीन ॥
ते नर धन्य जो ध्यानयहि, रहहिं सदा लवलीन ॥ १२ ॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक[5] ॥
कह्यो सबहिं देखहु शशिहि, मृगपति[6] सरिस अशंक ॥ १३॥
पूरब दिशि गिरिगुहानिवासी * परम प्रताप तेज बल रासी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी * शशि केहरी गगन वनचारी ॥
विथुरे नभ मुकुताहल तारा * निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कह प्रभु शशिमहँमेचकताई[7] * कहहु कहा निज निज मति भाई॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया * शशि महँ प्रगट भूमिकी छाया ॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई * उर महँ परी श्यामता सोई ॥
कोउ कहजब विधि[8] रति मुख कीन्हा* सारभाग शशि कर हरि लीन्हा॥
छिद्रसो प्रकट इन्दु उरमाहीं *तेहि मग देखियत नभ परिछाहीं॥
कोउ कह गरल[9] बंधु शशिकेरा * अति प्रिय निज उर दीन्हवसेरा॥
विष संयुक्त कर निकर पसारी * जारत विरहवन्त नर नारी ॥
दोहा—कह मारुतसुत[10] सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रियदास ॥
तव मूरति तेहि उर बसत, सोइ श्यामता भास ॥ १४ ॥
पवनतनयके वचन सुनि, विहँसे राम सुजान ॥
दक्षिण दिशा विलोकि पुनि, बोले कृपानिधान ॥ १५ ॥

---

१ विराजमान भयेहैं । २ सुग्रीव । ३ गोद । ४ निर्मल । ५ चन्द्र । ६ सिंह । ७ श्यामता । ८ विधाता । ९ विष । १० हनुमान् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखु विभीषण दक्षिण आसा * घन घमण्ड दामिनी विलासा ॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा * होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत विभीषण सुनहु कृपाला * होइ न ताडित न वारिदमाला ॥
लंकाशिखर रुचिर आगोरा * तहँ दशकन्धर केर अखारा ॥
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी * सोजनु जलदघटा अति कारी ॥
मन्दोदरी श्रवण ताटंका * सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा * सोइ रव सरस सुनहु सुरभूपा ॥
प्रभुमुसुकान देखि अभिमाना * चाँप चढाइ बाण सन्धाना ॥
दोहा–छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एक ही बान ॥
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥ १६ ॥
यह कौतुक करि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग ॥
रावण सभा सशंक सब, देखि महा रसभंग ॥ १७ ॥
कम्प न भूमि न मरुत विशेषा * अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देषा ॥
शोचहिं सब निज हृदय विचारी * अशकुन भयउ भयंकर भारी ॥
रावणदीख सभा भय पाई * विहँसि वचन कह युक्तिबनाई ॥
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही * मुकुट गिरे कस अशकुन ताही ॥
शयन करहु निज निज गृहजाई * गवने भवन सकल शिरनाई ॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ * जबते श्रवणफूल महि खसेऊ ॥
सजल नयन कह युगकरजोरी * सुनहु प्राणपति विनती मोरी ॥
राम विरोध कन्त परिहरहू * जानि मनुज जनि हठ उरधरहू ॥
दोहा–विश्वरूप रघुवंश मणि, करहु वचन विश्वास ॥
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥ १८ ॥
पदपाताल शीश अज धामा * अपरलोक अंगन्ह विश्रामा ॥
भ्रुकुटि विलास भयंकर काला * नयन दिवाकर कच घनमाला ॥
जासु घ्राण अश्विनी–कुमारा * निशिअरु दिवस निमेष अपारा ॥

१ स्थान । २ सभा । ३ गर्जब । ४ धनुष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रवण दिशा दश वेद वखानी * मारुत श्वास निगम निजवानी ॥
अधर लोभ यम दशन कराला * मायाहास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अम्बुपति जीहा * उत्पति पालन प्रलय समीहा ॥
रोमावली अष्टदश भारा * आस्थि शैल सरिता न सजारा ॥
उदर उदधि अघगोयातना * जगमय प्रभु की बहुत कल्पना ॥
दोहा—अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान ॥
मनुज बास चर अचर मय, रूप राशि भगवान ॥ १९ ॥
अस विचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन वैर विहाइ ॥
प्रीति करहु रघुवीरपद, मम अहिवात नजाइ ॥ २० ॥
बिहँसानारि वचन सुनिकाना * अहो मोह महिमा बलवाना ॥
नारि स्वभाव सत्य कविकहईं * अवगुण आठ सदा उर रहईं ॥
साहस अनृत[2] चपलता[3] माया * भय अविवेक अशौच अदाया ॥
रिपुकर रूप सकल तैं गावा * अति विशालभय मोहिं सुनावा ॥
सो सब प्रिया सहजबश मोरे * समुझि परा प्रभाव अब तोरे ॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * यहि मिसि कहेउ मोरि प्रभुताई ॥
तव बतकही गूढ मृगलोचनि * समुझत सुखद सुनत भयमोचनि ॥
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ * पियहि कालवशमतिभ्रमभयऊ ॥
दोहा—बहुविधि जल्पेसि[4] सकल निशि, प्रात भये दशकन्ध ॥
सहज अशंक सो लंकपति, सभा गयो मदअन्ध ॥ २१ ॥
सो०—फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचिसम ॥ ३ ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा—मंत्रिन सहित दशानन, चढ़ेउ धवरहर जाय ॥

---

१ विनाविचारे शीघ्रकामकरना । २ मिथ्याकहना । ३ चंचलस्वभाव ।
४ अभिमान भरी बातें मन्दोदरीसे करतारहा ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सारन कह तब राज सन, देखहु कपि समुदाय ॥ २२ ॥
ये जो सिंहनाद किलकरहीं * सप्त ताल उन्नत संचरहीं ॥
सहस कोटि अतुलितबलवाना * इनके सँग वानर परिमाना ॥
रण अजीत ये सहज अशंका * नाद सुनै कांपै गढलंका ॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे * जनु ऋतुपावस युग धनु पूरे ॥
विश्वकर्माके सुत गुणखानी * इन्ह परशे पय शिल उतरानी ॥
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं * गोदावरी विमल जलपाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं वीरा * इन पर कृपा करहिं रघुवीरा ॥
करहिं यमहु कर संगर ढीला * कज्जल वरण नाम नल नीला ॥
दोहा—पदुम अठारह कपि कटक, चल इनकी भुजछाहँ ॥
निज कर सुरभी सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ ॥ २३ ॥
यह जो आवत अचलसमाना * चौदह ताड ऊंच परिमाना ॥
वास पुलिन्दा के तट करई *अम्बुद निकर निरखि कर धरई॥
रक्तकमल दल सम सब देहा * जनुविकसेउ संध्या कर मेहा ॥
हतै मेदिनी[1] पूंछ भवांई * लंका सौंह चितव जनु खाई ॥
तारा सुवन वालिको जायो * अति जुझार रघुपति मन भायो ॥
हृदय गगन इहिके प्रभु भानू * पंच पदुम इन कर परिमानू ॥
करै वज्र वासव[2] कर भंगा * उदयाचल कहँ लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनप इहि लागी * रघुपति कृपा परम बड़भागी ॥
दोहा—पाउँ धराधरि चापै, पन्नग[3] होइ अकाज ॥
सैन अग्रसर देखहु, यह अंगद युवराज ॥ २४ ॥
यह जो श्वेत वरण तनु रेखा * मनहुँ रजत गिरि शृंग विशेषा ॥
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा * चपल चलत बल बुद्धि प्रचण्डा॥
बास करै जलनिधि के तीरा * पान करै गोमती सुनीरा ॥

१ पृथ्वी । २ इन्द्र । ३ शेषनाग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नृप सुग्रीव केर अधिकारी * सबल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
जन्मत चन्द्रहि ग्रसन उडाना * इहिकर पुरुषारथ जगजाना ॥
निरखि गगन राकाशशिसोहा * शिशु अजानतेहिलगिमनमोहा ॥
धरणी धसकिधरनजबउडेऊ * सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ ॥
दोहा—कोटि पंचशत मर्कट, रहइँ सर्वदा साथ ॥
कालहु ते रण लरि सकै, कुमुद नाम कपिनाथ ॥ २५ ॥
ये देखहु जे चहुँदिशि घुमडे * मनहुँ लंक सावन घन उमडे ॥
आगू पीछू दशदिशि धावहिं * शिला शृंग तरु तोरत आवहिं॥
सहस नागबल सबहिसमाना * सप्त पदुम इनकर परिमाना ॥
काशीपुरी वास इन्हकेरी * समर कतहुँ जिन पीठ न फेरी॥
तीक्षणदन्त नखायुध धारी * द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा * लंकानिकट कीन्ह जेहि डेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता * तेहिके बल कर पावको अन्ता॥
देव दनुज को जूझै ताही * धरा होहि कर कंबुक जाही ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा * अशनि[1] समान अभेद शरीरा ॥
दोहा—सचिव सुकण्ठ[2] राजकर, रघुवर कर प्रियदास ॥
सो जड मन्द जो याहि रण, चह जीतन की आश ॥ २६ ॥
अब देखहु यह यूथ अपारा * पीतवरण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुण मरीचि जसफूटी * निशिचर निकर तमी चहछूटी ॥
चौविस अर्बुद इनकर यूहा * सहस बुन्द सम कोटि समूहा॥
शिला शैल जे आगे परहीं * पाँयन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दरके वासी * इनकर यूथ नाथ अविनाशी ॥
अतिबल वासव कर हितकारी * सखा सुकण्ठ केर सुखकारी ॥
पान करै गंगाकर नीरा * पर्वत शृंग समान शरीरा ॥

---

१ वज्र। २ सुग्रीव।

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छिन छिन सिंहनाद जो होई * गर्जत आवत है कपि सोई ॥
दोहा—यश तिहुँ मण्डल गलित गज, बल कर नाहिंन अंत ॥
यह कपिराजा केशरी, सुवन जासु हनुमंत ॥ २७ ॥
उत्तर दिशि देखहु रजधानी * जनु दुकाल लगिशलभउडानी ॥
मर्कट निकर विकल बल टूटे * आवत उदधि कूल जनु छूटे ॥
इहिदल यूथ नाथ जो अहई * अतिबलवंत राजसंग रहई ॥
कपिके रूप अनल अविनाशी * एदोउ पारिपात्रके वासी ॥
अति सुन्दर अरु समर विपक्षा * महाबली दोउ गवय गवक्षा ॥
ये दोउ गर्जत अति रणधीरा * पीवहिं तुंगभद्र कर नीरा ॥
सत्तरिसहस नागबल जाही * इनमहँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गंधमादन नामा * रण अजेय पुनि सब गुणधामा ॥
दोहा—वासव विबुध वृन्द महँ, तेजनमहँ जस भानु ॥
पनस नाम यह वानर, अति बल नीति निधानु ॥ २८ ॥
यह जो कुमुदपत्र सम देहा * जस कैलास शरद कर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने * कामरूप चितवत चहुँ कोने ॥
लंका सौंह लँगूर फिराई * गर्जत प्रलय मेघकी नाई ॥
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ * तब ते कामरूप यह भयऊ ॥
मघवा इहिसन कीन्ह मिताई * करै सदा यह दैव सहाई ॥
सहसकोटि कपि इहिके संगा * राते पीत श्वेत बहुरंगा ॥
वचन मृषा मम प्रभु यहनाहीं * अपरबालि जानहु मन माहीं ॥
दरदुर शैल सदन इहि केरा * मन वच कर्म्म राम कर चेरा ॥
दोहा—गिरिवर लांघत आवत, चलत उड़ावत रेणु ॥
तराणि तेज इन रूंधेउ, तारातनय सुषेणु ॥ २९ ॥
यह कपि लसत मनहुँ गिरिगेरू * दिनमुखछवि जस लहत सुमेरू ॥

१ पुत्र। २ टीडी।

In Public Domain, Chambal Archive - Jaiwan

Digitized by Sri Sathya Sai Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोइकपि प्रथमलंक जेहिजारी * प्रभुकेहि लगि आवत इहिबारी ॥
अंजनि गर्भ जन्म जब भयऊ * क्षुधित जननिसन अरतसठयऊ॥
तेइँकहसुपक अरुण फलखाहू * सुनत चितवइतउत चितचाहू ॥
बाल अरुण लखि गगन उडाना * ग्रसेसि तरणि वासव तब जाना ॥
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढी * कोपि पवन समीर सम वेढी ॥
देव विकल होइ स्तुतिकीन्हा * कुलिशहोउ तनु असवरदीन्हा ॥
तब रवि छांडि पवनसुत दीन्हा * जय जयकार देवतन कीन्हा ॥
विद्या पढत भानुके पाहीं * उलटी गति रवि आगे जाहीं ॥
वारिधि लांघेउ गोपद जैसे * यहि कपीश सन जूझव कैसे ॥

दोहा—अंबक पीत बालरवि, वदन तेज अति राज ॥
पवनते वेग अधिक जनु, अनल नितंब सुभ्राज ॥ ३० ॥

अतसी कुसुम वरण तनु रेखा * पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कंधर * कम्बु[1] कण्ठ रेखा प्रसन्नवर ॥
मुख छबि की उपमा कविजोहै * शशि सरोज सम कहै नसोहै ॥
दशन पांति की कांति कहै को * ललकत मन पटतरिय लहै को ॥
देखत अधरन[2] की अरुणाई * बिम्बाफल[3] बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डहि नासिका लजावै * थके सुकवि नहिं पटतरै[4] आवै ॥
शीश जटा के मुकुट बनाये * भाल विशाल तिलक अति भाये॥
दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा * रामबाहु सम अति रणधीरा ॥

दोहा—वाम भाग विभीषण, शिर अभिषेका राज ॥
बीज मंत्र सब जानहिं, अकसरकरहिं सुकाज ॥ ३१ ॥

अब देखहु यह सेन सुहाई * भादों मेघ घटा जनु छाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई * नयन भूरि अरु रूप लुनाई ॥

---

१ शंख । २ ओष्ठनकी । ३ कुँदरू । ४ उपमा ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाल भाव दिनकर बल दीन्हा * ऋतु जानी वासव राति कीन्हा ॥
जातक जमल बीर दोउ जाये * देव अंश वानर तनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना * देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा * चातुर्मास बसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रणमारा * यहि कहँ राजतिलक प्रभुसारा ॥
तारा तासु भई पटरानी * जेहि कर सुत अंगद अतिज्ञानी
सहस शंकु कर अरबुद एका * अरबुद सहस किविन्दु विवेका॥
सहस विन्दु गणकन गणि माना* महापद्म तेहि कर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा * विग्रह बढ़ेउ राम के काजा ॥
वीर वेष अरु नयन विशाला * कम्बु कण्ठ मोतिन की माला ॥

दोहा—हस्ती साठि सहस्र बल, सदा धर्म्म की सीव ॥
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥ ३२ ॥
इहि विधि सकल दिखाये, सारन कपिदलयूह ॥
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व्व समूह ॥ ३३ ॥

इति क्षेपक ॥

इहां प्रात जागे रघुराई * पूंछा मत सब सचिव बुलाई ॥
कहहु वेगि का करिय उपाई * जाम्बवन्त कह पद शिरनाई ॥
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उरवासी * सर्व्व रूप सब रहित उदासी ॥
मंत्र कहब निज मति अनुसारा * दूत पठाइय वालिकुमारा ॥
नीकमंत्र सबके मनमाना * अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
वालितनय बुधि बल गुणधामा * लंका जाहु तात ममकामा ॥
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं * परम चतुर मैं जानत अहऊं ॥
काज हमार तासु हित होई * रिपुसन करेहु बतकही सोई ॥

सो०—प्रभु आज्ञा धरिशीश, चरण वन्दि अंगद कह्यउ ॥
सोइ गुण सागर ईश, राम कृपा जापर करहु ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वयंसिद्धि सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ ॥
अस विचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षित भयउ ॥ ५ ॥
वन्दि चरण उरधरि प्रभुताई * अंगद चलेउ सबहि शिरनाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका * रणबांकुरा वालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावणकर बेटा * खेलत रहा सो होइ गइ भेटा ॥
बातहिं बात कर्ष बढि आई * युगल अतुल बल पुनि तरुणाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई * गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई ॥
निशिचर निकर देखि भटभारी * जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी॥
एक एक सन मर्म न कहहीं * सगुझि तासु बल चुप होइ रहहीं॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी * आवा कपि लंका जेइँजारी ॥
अबधौं कहा करिहि करतारा * अति सभीत सबकरहिं विचारा ॥
बिन पूंछे मगु देहिं बताई * जेहि विलोकि सोइ जाइ सुखाई॥
दोहा—गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि रामपदकंज ॥
सिंहठवनि इत उत चितै, धीर वीर बलपुंज ॥ ३४ ॥
तुरत निशाचर एक पठावा * समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा * आनहु बोलि कहांकर कीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपि कुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दशानन वैसा * सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा ॥
भुजा विटप शिर शृंगसमाना * रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना * गिरिकन्दरा खोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा * वालितनय अति बल बांकुरा ॥
उठी सभा सब कपि कहँ देखी * रावण उरभा क्रोध विशेखी ॥
दोहा—यथा मत्त गजयूथ महँ, पंचानन चलि जाय ॥

---

१ युद्धक्रियामें प्रवीण। २ प्रहस्त। ३ क्रोध। ४ भेद। ५ हल्ला। ६ रास्ता। ७ वृक्ष। ८ पर्वतकाकँगूरा। ९ सिंह।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सभहि शिरनाय ॥ ३५ ॥
कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर * मैं रघुवीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनकहि तोहिं रहीमिताई * तवहित कारण आयउँ भाई ॥
उत्तम कुल पुलस्त्यकर नाती * शिव विरंचि पूजेहु बहु भांती ॥
बर पायउ कीन्हेउ सब काजा * जीतेहु लोकपाल सुरराजा ॥
नृप अभिमान मोहवश किम्बा[1] * हरि आनेहु सीता जगदम्बा ॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा * सब अपराध क्षमहि प्रभु तोरा ॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी * पुरजन संग सहित निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे * इहि विधि चलहु सकल भय त्यागे ॥
दोहा—प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं ॥
सुनतहि आरत वचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥ ३६ ॥
रेकपि पोच बोलु संभारी * मूढ न जानासि मोहिं सुरारी ॥
कह निजनाम जनक कर भाई * केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम वालि कर बेटा * तोसों कबहुँ भई होइ भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना * रहा वालि वानर मैं जाना ॥
अंगद तुहीं वालि कर बालक * उपजेउ वंश अनल कुलघालक ॥
गर्भ न खसेउ वृथा तुम जाये * निजमुख तापसदूत कहाये ॥
अब कहु कुशल वालि कहँ अहई * विहँसि वचन अंगद अस कहई ॥
दिन दश गये वालि पहँ जाई * पूंछेहु कुशल सखा उर लाई ॥
राम विरोध कुशल जस होई * सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ॥
सुन शठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके ॥
दोहा—हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दशशीश ॥
अन्धउ वधिर[3] न कहहिं अस, श्रवण नयन तव वीश ॥ ३७ ॥
शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई * चाहत जासु चरण सेवकाई ॥

---

१ पिता । २ विकल । ३ बहिरा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तासु दूत होइ हम कुलबोरा * ऐसी मति उर बिहरु न तोरा ॥
सुनि कठोरवाणी कपि केरी * कहत दशानन नयन तरेरी ॥
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं * नीति धर्म सब जानत अहऊं ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी * हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी ॥
देखेउ नयन दूत रखवारी * बूडि न मरेहु धर्मव्रत धारी ॥
नाक कान विनु भगिनि निहारी * क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी ॥
धर्म शीलता तव जग जागी * पावा दरश हमहुँ बड़भागी ॥

दोहा—जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ विलोकु ममवाहु ॥
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमिराहु ॥ ३८ ॥
पुनि नभ सर ममकर निकर, कर कमलन पर वास ॥
शोभित भयो मरालइव, शम्भु सहित कैलास ॥ ३९ ॥

तुम्हरे कटक माहिं सुनु अंगद * मोसन भिरहि कौन योधा वद ॥
तव प्रभु नारि विरह बलहीना * अनुजतासु दुख दुखितमलीना ॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ * बन्धु हमार भीरु अति सोऊ ॥
जाम्बवन्त मंत्री अतिबूढा * सो किमि होइ समर आरूढा ॥
शिल्पकर्म जानत नल नीला * है कपि एक महाबल शीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिजारा * सुनि हँसि बोलेउ वालिकुमारा ॥
सत्यवचन कह निशिचर नाहा * साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा ॥
रावण नगर अल्प कपि दहई * को अस झूंठ कहै को सुनई ॥
जो अति सुभट सराहेउ रावन * सो सुग्रीव केर लघुधावन ॥
चलै बहुत सो वीर न होई * पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दोहा—अब जाना पुरदहेउ कपि, विनु प्रभु आयसु पाइ ॥
गयउ न फिर निजनाथ पहँ, तेहि भय रहेउ लुकाइ ॥ ४० ॥
सत्य कहसि दशकण्ठतैं, मोहिं न सुनि कछु कोहैं ॥

---

१ डरपोक । २ आज्ञा । ३ क्रोध ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोउ न हमरे कटक अस, तुमसन लरत जो सोह॥ ४१ ॥
नीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि ॥
जो मृगपति वध मेडुकहि, भलो कहै को ताहि ॥ ४२ ॥
यद्यपि लघुता रामकहँ, तोहिं बधे बड़ दोष ॥
तदपि कठिन दशकण्ठसुन, क्षत्रि जाति कर रोष ॥ ४३ ॥
वक्र उक्ति धनु वचनशर, हृदय दह्यउ रिपुकीश ॥
प्रतिउत्तर सडसी मनहुँ, काढत भट दशशीश ॥ ४४ ॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तव, कपिकर बड़ गुण एक ॥
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक ॥ ४५ ॥

धन्यकीश जो निजप्रभुकाजा * जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा ॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई * पातिहित करत कर्म निपुणाई ॥
अंगद स्वामि भक्त तव जाती *प्रभु गुण कसन कहसि इहिभांती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना * तव कटुवचन करौं नहिं काना ॥
कह कपि तव गुण गाहकताई * सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई ॥
वन विध्वंसि सुत वधि पुरजारा * तदपिनतेइँकृत कछु अपकारा ॥
सोइ विचारि तव प्रकृतिसुहाई * दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा * तुम्हरे लाज न रोष न माषा ॥
जो असिमति पितु खायहु कीशा*कहि अस वचन हँसा दशशीशा ॥
पितहि खाइ खातेउँ अबतोहीं * अबहीं समुझि परा कछु मोहीं ॥
वालि विमलयश भाजन जानी * हतौं न तोहिं अधम अभिमानी ॥
सुनु रावण रावण जग केते * मैं निज श्रवण सुने सुनु तेते ॥
वलिजीतन यक गयउ पताला * राखा वांधि शिशुन हयशाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई * दयालागि बलि दीन छुडाई ॥
एक बहोरि सहसभुज देखा * धाइ धरा जनु जन्तु विशेखा ॥

१ सिंह । २ रावण । ३ बालकन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौतुक लागि भवन[1] लैआवा * सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा ॥
दोहा—एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा वालि की काँख ॥
तिनमहँ रावण कवन तैं, सत्य कहहु तजि माख ॥ ४६ ॥
सुनुशठ सोइ रावण बल शीला * हर गिरि जानु जासु भुजलीला ॥
जान उमापति जासु शुराई * पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई ॥
शिर सरोज निजकरन उतारी * पूजे अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजविक्रम जानहिं दिगपाला * शठ अजहूं जिनके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई * जब जब जाइ मिरेउँ बरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे * उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासुचलत डोलत इमिधरणी *चढत मत्त गज जिमि लघु तरणी॥
सोइ रावण जगविदितप्रतापी * सुने न श्रवण अलीक अलापी ॥
दोहा—तेहि रावण कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान ॥
रे कपि बर्बर खर्ब्ब खल, अब जाना तव ज्ञान ॥ ४७ ॥
सुनि अंगद सकोप कह वानी * बोल सँभारि अधम अभिमानी॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा * दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परशु सागर खरधारा * बूड़े नृप अगणित बहु बारा ॥
तासु गर्व जेहि देखत भागा * सो नर किमि दशकंठ अभागा ॥
राम मनुज कसरे शठवंगा * धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा * अन्नदान पुनि रस पीयूषा[2] ॥
वैनतेय[3] खग अहि सहसानन * चिन्तामणि की उपलें[4] दशानन ॥
सुन मतिमन्द लोक वैकुण्ठा * लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा॥
दोहा—सैन सहित तव मान मथि, वन उजारि पुरजारि ॥
कसरे शठ हनुमान कपि, गयउजोतवसुतमारि ॥ ४८ ॥
सुनु रावण परिहरि चतुराई * भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥

---

१ गृह । २ अमृत । ३ गरुड । ४ पत्थर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Jaipur

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो खल भयसि रामकरद्रोही * ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ मृषा जनि मारसि गाला * रामवैर होइहि अस हाला ॥
तवशिर निकर कपिनके आगे * परिहैं धरणि राम शर लागे ॥
ते तव शिर कन्दुकइव नाना * खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक * छूटहिं अति कराल बहुसायक ॥
तब कि चलहि असगाल तुम्हारा * असविचारि भजु राम उदारा ॥
सुनत बचन रावण पर जरा * बरत अनल महँ जनु घृत परा ॥

दोहा–कुम्भकर्ण सम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि ॥
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि ॥४९॥

शठ शाखामृग जोरि सहाई * बांध्यो सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
नांघहिं खग अनेक बारीशा * शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा ॥
ममभुज सागर बल जल पूरा * जहँ बूड़े सुर नर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा * को अस वीर जो पावहि पारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा * भूप सुयश खल मोहिं सुनावा ॥
जोपै समर सुभट तवनाथा * पुनिपुनि कहसि जासु गुण गाथा ॥
तौ वसीठ पठवत केहि काजा * रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा ॥
हर गिरि मथन निरखि ममबाहू * पुनिशठ कपिनिजस्वामिसराहू ॥

दोहा–शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश ॥
हुनेउँ अनल महँ बारवहु, हर्षित साखि गिरीश ॥ ५० ॥

जरत विलोकेउँ जबहिंकपाला * बिधिकेलिखे अंक निजभाला ॥
नरके कर आपन वध बांची * हँसेउँ जानि विधि गिराअसांची ॥
सो मन समुझित्रासनहिं मोरे * लिखा विरंचि जरठ मतिभोरे ॥
आन वीर को शठ मम आगे * पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे ॥
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं * रावण तोहिं समान कोउ नाहीं ॥

१ गेंदकेतुल्य । २ अग्नि । ३ वृद्धापा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाजवन्त तव सहजस्वभाऊ *निजगुण निजमुख कहसिनकाऊ ॥
शिर अरु शैल कथा चित रही * ताते बार वीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली * जितेउ न सहसबाहु बलि बाली॥
सुन मतिमन्द देह अवपूरा * काटे शीश न होइय शूरा ॥
बाजीगर कहँ कहिय नवीरा * काटै निजकर सकल शरीरा ॥

दोहा—जरहिं पतंग विमोहवश, भार बहहिं खरवृन्द ॥
ते नहिं शूर कहावहीं, समुझ देखु मतिमन्द ॥ ५१ ॥

अबजनि बतबढाव खलकरई * सुनि ममवचन मान परिहरई ॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउ * असबिचारि रघुबीर पठायउ ॥
बार वार इमि कहहिं कृपाला * नहिं गजारि यश बधे शृगाला ॥
मनमहँ सुमुझि वचन प्रभु केरे * सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे ॥
नाहिं तो करि मुखभंजन तोरा * लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी * सूने हरि आनी परनारी ॥
तैं निशिचर पति गर्व बहूता * मैं रघुपति सेवककर दूता ॥
जो न राम अपमानहिं डरऊं * तोहिं देखत अस कौतुक करऊं॥

दोहा—तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाँउँ ॥
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ५२ ॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई * मुर्यहि वधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल कामवश कृपणविमूढा * अति दरिद्र अयशी अति बूढा ॥
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी * राम विमुख श्रुति सन्त विरोधी॥
निज तनु पोषक निर्दय खानी * जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥
अस बिचारि खल बधौं न तोहीं * अब जनि रिस उपजावसि मोहीं ॥
सुनिसकोप कह निशिचर नाथा * अधरदशन गहि मींजत हाथा ॥
रे कपि पोचमरणअबचहसी * छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥

१ गदहा । २ सिंह । ३ मुर्दा । ४ दलिद्री ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कटुजल्पसि जड़ कपिबल जाके * बुधि बल तेज प्रताप न ताके ॥
दोहा–अगुण अमान विचारि त्यहि, दीन पिता वनवास ॥
सोदुख अरु युवती विरह, पुनि निशि दिन ममत्रास॥५३॥
जिनके बल कर गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक ॥
खाहिं निशाचर दिवस निशि, मूढ समुझु तजि टेक ॥५४॥
जब तेइँ कीन्ह रामकी निन्दा * क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरि हर निन्दा सुनै जो काना * होय पाप गोघात समाना ॥
कटकटाइ कपिकुंजर भारी * दोउ भुजदण्ड तमकि महिमारी॥
डोलत धरणि सभासद खसे * चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठ्योसँभारी * भूतल परेउ मुकुट षटचारी ॥
कछु निजकर लै शिरनसँभारे * कछु अंगद प्रभु पास पँवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे * दिनहीं लूक परन अब लागे ॥
की रावण करि कोप चलाये * कुलिश चारि आवत अतिधाये॥
कह प्रभुहँसि जनिहृदय डराहू * लूक न अशनि केतु नाहिं राहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे * आवत बालितनयके प्रेरे ॥
दोहा–कूदि गहे कर पवनसुत, आनि धरे प्रभु पास ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकर सरिसप्रकास ॥५५॥
वहां कहत दशकन्ध रिसाई * धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
इहि विधि वेगि सुभट सब धावहु * खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु ॥
महि अकीश करि फेरि दोहाई * जियत धरहु तापस दोउ भाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा * गाल बजावत तोहिं न लाजा ॥
मरु मलकाटि निलजकुलघाती * बल विलोकि विदरत नहिं छाती॥
रेतिय चोर कुमारग गामी * खलमलराशि मन्दमति कामी ॥
सन्निपात जल्पसि दुर्वादा * भयसि कालवश शठमनुजादा ॥

---

१ अंगद । २ वज्र । ३ मुकुट । ४ फेंके । ५ सूर्य ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याको फल पावहुगे आगे * वानर भालु चपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत अस वानी * गिरहि न तव रसना अभिमानी ॥
गिरिहै रसना संशय नाहीं * शिरन समेत समर महि माहीं ॥
सो०—सो नर क्यों दशकन्ध, बालि बधेउजेहि एकशर ॥
बीसहु लोचन अन्ध, धृक तव जन्म कुजाति जड़ ॥ ६ ॥
तव शोणितकी प्यास, तृषित रामसायक निकर ॥
तजेउँ तोहिं तेहि आश, कटु जल्पसि निशिचर अधम॥ ७ ॥
मैं तवदशन तोरिबे लायक * आयसु पै न दीन रघुनायक ॥
असरिस होत दशौं मुख तोरौं * लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ॥
गूलरफल समान तव लंका * बसहिंमध्य जनु जन्तु अशंका ॥
मैं वानर फल खात नबारा * आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई * मूढ सिखेसि कहँ बहुतझुठाई ॥
बालि कबहुँ असगालनमारा * मिलि तपसिनतैं भयसिलवारा ॥
सांचउ मैं लवार दशशीशा * जो न उपारौं तव भुज वीशा ॥
राम प्रताप सुमिरिकपिकोपा * सभा मांझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जो ममचरण सकसि शठटारी * फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा * पदगहि धरणि पछारहु कीशा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना * हर्षि उठे जहँ तहँ भटनाना ॥
झपटहिं करि बल विपुलउपाई * पद नटरै बैठहिं शिरनाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती * टरै न कीश चरण इहि भांती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी * मोह विटप नहिं सकहिं उपारी ॥
दोहा—भूमि न छांड़ै कपि चरण, देखत रिपु मद भाग ॥
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ, तदपि नीति नहिं त्याग॥५६॥
कपिबल देखि सकल हियहारे * उठा आप कपिके परचारे ॥

१ जिह्वा । २ झूंठ । ३ देवतोंकेवैरी । ४ पाषण्डी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गहत चरण कह वालिकुमारा * ममपद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरण शठ जाई * सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥
भयो तेजहत श्री सबगई * मध्य दिवस जिमिशशिसोहई ॥
सिंहासन बैठा शिरनाई * मानहु सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा * तासु विमुख किमिलह विश्रामा ॥
उमा रामकर भृकुटि विलासा * होइ विश्व पुनि पावै नाशा ॥
तृणते कुलिश कुलिश तृणकरहीं * तासुदूत पद कहु किमि टरहीं ॥
पुनि कपि कही नीति विधि नाना * मानतनाहिं काल नियराना ॥
रिपुमदमथि प्रभु सुयश सुनाये * असकहि चले वालि नृपजाये ॥
अबहीं मुख का करौं बड़ाई * हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा * सो सुनि रावण भयोदुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी * भेव्याकुल अति हृदय विशेषी ॥

दोहा—रिपुबल धर्षि[1] हर्षि[2] हिय, बालितनय बलपुंज[3] ॥
सजल नयन तनुपुलकअति, गहे राम पदकंज ॥ ५७ ॥

सांझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ ॥
मन्दोदरी अनेक विधि, बहुरि कहा समुझाइ ॥ ५८ ॥

कन्तसमुझि मन तजहुकुमतिही * सोह न समर तुमहिं रघुपतिही॥
राम अनुज धनु रेख खँचाई * सो नहिं लाँघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतब संग्रामा * जाके दूतनके असकामा ॥
कौतुक सिंधु लाँघि तवलंका * आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति विपिन उजारा * देखत तुमहिं अक्ष जिन मारा ॥
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि छारा * कहांरहा बल गर्व तुम्हारा ॥
अबपति मृषा गाल जनि मारहु * मोर कहा कछु हृदय विचारहु ॥
पतिरघुपतिहि मनुज जनि जानहु * अगजगनाथ अतुल बलमानहु ॥

---

१ दोपहर । २ परास्त । ३ बलकेढेर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाणप्रताप जान मारीचा * तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभा अगणित महिपाला * रहेउ तहां तुम गर्व विशाला ॥
भंजि धनुष जानकी विवाही * तब संग्राम न जीत्यउ ताही ॥
सुरपतिसुत जानै बल थोरा * राखा जियत आँखियकफोरा ॥
शूर्पणखाकी गति तुम देखी * तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी॥

दोहा—बधि विराध खर दूषणहिं, लीला हतेउ कबन्ध ॥
बालि एक शर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध ॥ ५९ ॥

जेहिजल नाथ बँधायोहेला * उतरेउ कपि दल सहित सुवेला॥
कारुणीक दिनकर कुलकेतू * दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभामांझ जेइँ तव बलमथा * करि बरूथ महँ मृगपति यथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके * रण वांकुरे बीर अति बांके ॥
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू * मृषा मान ममता मदगहहू ॥
अहह कन्त कृत रामविरोधा * कालविवश मन होइ न बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा * हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं * तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥

दोहा—दुइ सुत मारेउ पुर दहेउ, अजहुँ पीय सिय देहु ॥
कृपासिंधु रघुवीर भजि, नाथ विमलयशलेहु ॥ ६० ॥

नारिवचन सुनि विशिख[2] समाना * सभागयो उठि होत विहाना ॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली * अति अभिमान त्रास सब भूली॥
वहां राम अंगदहि बुलावा * आइ चरण पंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी * बोले विहँसि कृपालु खरारी ॥
वालितनय अति कौतुक मोहीं * तात सत्य कहु पूंछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका * भुजबल अतुल जासु जगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये * कहहु तात कवनी विधि पाये ॥

---

१ हाथियोंके झुंडमें जैसे सिंह । २ बाण । ३ भोर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा वालिसुत सुनहु खरारी * मुकुट नहोइँ भूपगुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा * नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा ॥
नीति धर्मके चरण सुहाये * अस जिय जानि नाथ पहँ आये ॥

दोहा—धर्महीन प्रभुपदविमुख, कालविवश दशशीश ॥
आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥ ६१ ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार ॥
समाचार तब सब कहेउ, गढके बालिकुमार ॥ ६२ ॥

रिपुके समाचार जब पाये * राम सचिव तब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा * केहि विधि लागिय करहु विचारा ॥
तव कपीश ऋक्षेश विभीषण * सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषण ॥
करि विचार तिन मंत्र दृढ़ावा * चारि अनी कपि कटकबनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हे * यूथप सकल बोलि तिन लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये * सिंहनाद करि सब कपिधाये ॥
हर्षित रामचरण शिर नावैं *गहि गिरि[1] शिखर[2] भालु कपि धावैं ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा * जयरघुवीर कोशलाधीशा ॥
जानत परमदुर्ग गढलंका * प्रभु प्रताप कपि चले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुँ दिशि घेरी * मुखहि निशान बजावहिं भेरी ॥

दोहा—जयति राम भ्रातासहित, जय कपीश सुग्रीव ॥
गर्जे केहरिनाद[3] कपि, भालु महाबल सीव ॥ ६३ ॥

लंका भयउ कोलाहल[4] भारी * सुनेउ दशानन आतिहि हँकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई * विहँसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश कालके प्रेरे * क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहास शठकीन्हा * गृह बैठे आहारविधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहु दिशिजाहू * धरि धरि भालु कीश सबकाहू ॥

१ पर्वत । २ वृक्ष । ३ सिंहनाद । ४ हल्ला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमा रावणहिं अस अभिमाना * जिमि टिट्टिभपग सूत उताना ॥
चले निशाचर आयसु मांगी * गहि कर भिंडिपाल वरसांगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा * शूल कृपाण परशु गिरि खण्डा ॥
जिमिअरुणोपल निकर निहारी * धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंचभगंदुख तिनहिं न सूझा * तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥

दोहा–नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर ॥
कोट कँगूरन चढि गये, कोटि कोटि रणधीर ॥ ६४ ॥

कोटकँगूरन सोहहिं कैसे * मेरु शृंग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ * सुनि सुनि सुभटनके मन चाऊ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा * सुनि कादर उर होइँ दरारा ॥
देखि नजाइँ कपिनके ठट्टा * अति बिशाल तनु भालु सुभट्टा॥
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा * पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं * दशनन ओठ काटि अतितर्जहिं॥
उत रावण इत राम दोहाई * जयति जयति कहि परीलराई ॥
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं * कूदिधरहिं कपिफेरि चलावहिं ॥

हरिगीतिका छंद ॥

धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ॥
झपटैं चरण गहिपटकि महि भजि चलत बहुरिप्रचारहीं ॥
अति तरल तरुण प्रताप तर्जहिं तमकि गढपर चढिगये ॥
कपि भालु चढि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावतभये१॥

दोहा–एक एक गहि रजनिचर, पुनि कपि चले पराइ ॥
ऊपर आपुहि हेरि भट, गिरहिं धरणिपर आइ ॥ ६५ ॥

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा * मर्दहिं निशिचर निकर बरूथा ॥
चढे दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर * जय रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चले तमीचर निकर पराई * प्रबल पवन जिमिघनसमुदाई ॥
हाहाकार भयो पुर भारी * रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सबमिलि देहिं रावणहिं गारी * राज्य करत जेहि मृत्युहँकारी ॥
निजदल विचल सुना जबकाना * फिरे सुभट लंकेश रिसाना ॥
जो रणविमुख फिरा मैं जाना * तेहि मारिहौं कराल कृपाना ॥
सर्व्वसखाइ भोग करि नाना * समर भूमिभा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र वचन सुनि सकल डराने * फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥
सन्मुख मरण वीरकी शोभा * तब तिन तजा प्राणकर लोभा ॥

दोहा—बहु आयुध धरि सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि ॥
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ प्रचण्डनि मारि ॥ ६६ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे * यद्यपि उमा जीतिहैं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता * कहँ नल नील द्विविद बलवन्ता॥
निज दल विचल सुना हनुमाना * पश्चिम द्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई * टूटनद्वार परम कठिनाई ॥
पवनतनयसन भा अति क्रोधा * गर्जेउ प्रलयकालसम योधा ॥
कूदि लंकगढ ऊपर आवा * गहि गिरि मेघनाद पर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता * तासु हृदय महँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत विकल तेहि जाना * स्यंदन घालि तुरत घर आना ॥

दोहा—अंगद सुनेउ कि पवनसुत, गढपर गयउ अकेल ॥
समर बांकुरा बालिसुत, तर्कि चलेउ करि खेल ॥ ६७ ॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर * राम प्रताप सुमिरि उर अन्तर ॥
रावण भवन चढे दोउ धाई * करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहित सब भवन ढहावहिं * देखिनिशाचर अति भय पावहिं ॥

---

१ राक्षस । २ बादल । ३ अस्त्र शस्त्र । ४ मारा । ५ रथमेंडाल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारिवृन्द करि पीटहिं छाती * अब दोउ कपि आये उतपाती ॥
कपिलीलाकरि सबहि डरावहिं * रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं ॥
पुनि कर गहि कंचनकेखम्भा * करन लगे उतपात अरम्भा ॥
कूदिपरे रिपु कटक मँझारी * लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन केहू * भजेहु न रामहिं सो फल लेहू ॥

दोहा—एक एक सन मर्दि करि, तोरि चलावहिं मुंड ॥
रावण आगे परहिंते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥ ६८ ॥

महा महा मुखिया जे पावहिं * ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥
कहहिं विभीषण तिनकेनामा * देहिं राम तिनकहँ निजधामा ॥
खल मनुजाद जो आमिषभोगी * पावहिं गति जो याचतयोगी ॥
उमा राम मृदुचित करुणाकर * वैर भाव मोहिं सुमिरतनिशिचर॥
देहिं परमगति असजियजानी * को कृपालु अस अहै भवानी ॥
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रमत्यागी* तेमतिमन्द ते परमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा * कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा ॥
लंका महँ कपि सोहहिं कैसे * मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे ॥

दोहा—भुजबल रिपुदल दलिमलेउ, देखि दिवसकर अन्त ॥
कूदे युगल प्रयासबिनु, आये जहँ भगवन्त ॥ ६९ ॥

प्रभुपदकमल शीश तिन नाये * देखि सुभट रघुपतिमन भाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे * भये विगत श्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना * फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई * धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपिफिरे * कटकटाइ जहँ तहँ भटभिरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी * लरहिं सुभट नहिं मानहिंहारी ॥
वीर तमीचर सब अतिकारे * नानावरण बली मुख भारे ॥
सबलयुगलदलसम अतियोधा * विविध प्रकार लरहिं करि क्रोधा॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रविट दरश पयोद[1] घनेरे * लरत मनहुँ मारुतके प्रेरे ॥
अवनि अकम्पन अरु अतिकाया * बिचलतसेन करी तिनमाया ॥
भयउ निमिषमहँ अति अँधियारा * काहुनसूझे अपन परारा ॥
मारु खाहु सब करहिं पुकारा * वृष्टि होइ रुधिरोपल[4] क्षारा[5] ॥
दोहा—देखिनिबिडतमदशहुदिशि, कपिदलभयउखँभार ॥
एकहि एक न देखहीं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ७० ॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना * लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये * सुनत कोपि कपि कुंजर धाये ॥
पुनिकृपालु हँसि चापचढ़ावा * पावकसायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम[6] नाहीं * ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं ॥
भालु बली मुख पाइ प्रकाशा * धाये कोपि विगत श्रम त्राशा ॥
हनूमान अंगद रणगाजे * हांक सुनत रजनीचँर भाजे ॥
भागतभट पटकहिं गहिधरणी * करहिं भालु कपि अद्भुत करणी॥
गहिपदडारहिं सागर माहीं * मकर उरग झख धरि धरि खाहीं ॥
दोहा—कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ़ चले पराइ ॥
गर्जेउ मर्कट भालु भट, रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ७१ ॥
निशाजानि कपि चारिउ अनी * आये सब जहँ कोशलधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं * भये विगतश्रम बानर तबहीं ॥
वहां दशानन सचिव हँकारे * सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटक कपिन संहारा * कहहु वेगि का करिय विचारा ॥
मालवन्त[10] यक जरठ निशाचर * रावण मातु पिता मंत्रीवर[10] ॥
बोला वचन नीति अतिपावन * तात सुनहु कछु मोरसिखावन॥
जबते तुम सीता हरि आनी * अशकुन होहिं न जातबखानी ॥

---

१ वर्षाऋतु । २ मेघ । ३ लोहू । ४ पत्थर । ५ घरि । ६ अंधकार । ७ राक्षस । ८ रात्रि । ९ श्रमरहित । १० मंत्रियोंमें श्रेष्ठ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेद पुराण जासु यश गावा * तासु विमुख सुख काहु नपावा ॥
दोहा–हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधु कैटभ बलवान् ॥
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान् ॥ ७२ ॥
कालरूप खलवनदहन, गुणागार घन बोध ॥
जेहि सेवहिं शिव कमल भव, तिहिसनकौनविरोध ॥७३॥
परिहरि वैर देहु वैदेही * भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ताके वचन बाण सम लागे * करिया मुख करि जाहु अभागे ॥
बूढभयसि नत मरतेउँ तोहीं * अब जनि वदन देखावसि मोहीं॥
तेइँ अपने मन अस अनुमाना * बध्यो चहत यहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा * तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा * करिहौं बहुत कहतहौं थोरा ॥
सुनि सुतवचन भरोसा आवा * प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचार भयउ भिनुसारा * लगे भालु कपि चारिउद्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ घेरा * नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये * गढते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥
छंद–ढाहे महीधरशिखरकोटिनविविध विधि गोलाचले ॥
घहरात जिमि पवि पात गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लरत तनु जर्जरभये ॥
गहि शैल ते गढ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये॥२
दोहा–मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ पुनि छेंका आइ ॥
उतरि दुर्गते वीरनर, सन्मुख चला बजाइ ॥ ७४ ॥
कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता * धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा * कहँ हनुमत अंगद बलसीवा ॥
कहां विभीषण भ्राता द्रोही * आजु शठहिं हठि मारउँ ओही ॥

१ मुख। २ मेघनाद। ३ तमासा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असकहि कठिन बाणसंधाने * अतिशय कोपि श्रवणलगिताने ॥
शर समूह सो छांड़ै लागा * जनु सपक्ष धावैं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिये वानर *सन्मुख होइ न सकततेहि अवसर॥
भागेभय व्याकुल कपि ऋच्छा * विसरी सबहि युद्धकी इच्छा ॥
रोकपि भालु न रणमें देखा * कीन्हेसि जहि न प्राण अवशेषा ॥

दोहा–मारेसि दश दश विशिख उर, परे भूमि सब वीर ॥
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर ॥ ७५ ॥

देखि पवनसुत कटक विहाला * क्रोधवन्त धावा जनुकाला ॥
महा महीधर तमकि उपारा * अति रिस मेघनाद पर डारा ॥
आवत देखि गयउ नभसोई * रथ सारथी तुरँग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना * निकट न आव मर्म्म सोजाना ॥
राम समीप गयो घननादा * नानाभांति कहत दुर्वादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे * कौतुकही प्रभु काटिनिवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ खिसियाना * करे लाग माया विधिनाना ॥
जिमिकोउकरे गरुडसनखेला * डरपावहिं गहि स्वल्पसपेला ॥

दोहा–जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड़ छोट ॥
ताहि देखावत रजनिचर, निज माया मति खोट ॥ ७६ ॥

नभचढि वरषै विपुल अँगारा * महिते प्रगट होइ जलधारा ॥
नानाभांति पिशाच पिशाची * मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची ॥
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कच हाडा * वर्षै कबहुँ उपल बहु छांडा ॥
वर्षिधूरि कीन्हेसि अँधियारा * सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे * सब कर मरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने * भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एकहि बाण काटि सब माया * जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया॥

---

१ प्राणसंकटमें । २ बाण । ३ आकाश । ४ वर्षा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृपादृष्टि कपि भालु विलोके * भये प्रबल रण रहहिं नरोके ॥
दोहा–आयसु मांग्यउ राम पहँ, अंगदादि कपिसाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, बाण शरासन हाथ ॥ ७७ ॥
जलजनयन उर बाहु विशाला * हिमगिरि वरण कछुकइकलाला ॥
वहां दशानन सुभट पठाये * नाना अस्त्र शस्त्र गहिधाये ॥
भूधर विटपायुध धरि भारी * धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरसिन जोरी * इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन लातन दातन काटहिं * कपि गिरि शिलामारि पुनि डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरि मारु * शीश तोरि गहि भुजा उपारू ॥
अस ध्वनि पूरिरही नवखण्डा * धावहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा * कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा ॥
दोहा–जमेउ गाड भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाइ ॥
जिमि अंगारन राशिपर, मृतक छार रहि छाइ ॥ ७८ ॥
घायल बीर बिराजहिं कैसे * कुसुमित किंशुकके तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा * भिरहिं परस्परकरि आतिक्रोधा ॥
एकहिं एक सकैं नहिं जीती * निशिचर छल बल करै अनीती ॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता * भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नानाविधि प्रहार करि शेषा * राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ॥
रावणसुत निजमन अनुमाना * संकट भये हरिहि मम प्राणा ॥
वीरघातिनी छांडेसि सांगी * तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्तिके लागे * तब चालि गयउ निकट भयत्यागे
दोहा–मेघनाद सम कोटि शत, योधा रहे उठाइ ॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला खिसाय ॥ ७९ ॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू * जारै भुवन चारि दश आसू ॥

१ कमलनयन । २ पर्व्वत । ३ आपसमें । ४ लक्ष्मणजी । ५ मेघनाद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सक संग्राम जीतिको ताही * सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतुक जानहिं जन सोई * जेहिपर कृपा रामकी होई ॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ ऐनी * लगे सँभारन निज निज सैनी ॥
व्यापकै ब्रह्म अजित भुवनेश्वर * लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर ॥
तब लगि लै आयो हनुमाना * अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना ॥
जाम्बन्त कह वैद्य सुषेना * लंका रहै पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघु रूप गयो हनुमन्ता * आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥

दोहा–रघुपति चरण सरोज शिर, नायउ आइ सुखेन ॥
कहा नामगिरि ओषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥ ८० ॥

"कहै हनुमंत जोरि युगहाथा * लषण शोच जनि कीजै नाथा ॥
कहो चंद्रमै पटइव गारी * अबहीं देउँ अमी मुख डारी ॥
कहो विबुध वैदहि गहिआनो * मौत मारि सबके दुखभानो ॥
कहो फोरि नभ रविहि निकारों * रिपुतेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरि हर कहँ आनी * अमर अमर बुलबावों बानी ॥
कहो पताल जाय हति नागा * आनो अमी कुंड यहि जागा ॥
कहो देहुँ निज देहै त्यागी * अबहीं उठों लषण घट जागी ॥

दोहा–जो कछु तव मनमें रुचै, सो मोहिं आयसु होय ॥
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोय ॥ "

रामचरण सरसिज उर राखी * चलेउ प्रभंजन सुत बलभाषी ॥
वहांदूत यक मर्म जनावा * रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहा मर्म तेहि सुना * पुनि पुनि कालनेमि शिरधुना ॥
देखत तुमहि नगर जेहि जारा * तासु पन्थ[2]को रोकनहारा ॥
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना * तजौ नाथ अब मृषा जल्पना ॥
नीलकंज तनु सुन्दरश्यामा * हृदय राखु लोचन अभिरामा[3] ॥

---

१ सर्वविषेव्याप्त । २ मार्ग । ३ आनंदकेदाता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अहंकार ममता मद त्यागहु * महामोह निशि सोवतजागहु ॥
कालव्याल कर भक्षक जोई * स्वप्नेहु समर कि जीतै कोई ॥
दोहा–सुनि दशकंध रिसान तब, तेइँ मन कीन्ह विचार ॥
रामदूत कर मरणभल, यह खल नतु मोहिं मार ॥ ८१ ॥
असकहि चला रचेसि मग माया * सरमंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम * मुनिहिं बूझि जल पियौं जाइ श्रम॥
राक्षस कपट भेष तहँ सोहा * मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाय पवनसुत नायउ माथा * लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावण रामहिं * जीतहिं राम न संशय यामहिं ॥
इहां भये मैं देखौं भाई * ज्ञानदृष्टि बल मोहिं अधिकाई ॥
मांगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल * कह कपि नहि अघाउँ थोरे जल ॥
सरमज्जन[1] करि आतुर आवहु * दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु ॥
दोहा–सर पैठत कपि पद गहेउ, मक*री अति अकुलान ॥
मारि ताहि धरि दिव्य तनु, चली गगन चढ़ि यान॥८२॥
कपि तव दरश भइहुँ निहपापा * मिटा तात मुनिवर कर शापा ॥
मुनि नहोइ यह निशिचर घोरा * मानहु सत्यवचन कपिमोरा ॥
असकहि गई अप्सरा जबहीं *निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं॥
कह कपि गुनि गुरुदक्षिणा लेहु * पाछे हमहिं मंत्र तुमदेहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा * निजतनु प्रकटेसि मरती बारा ॥

* यह कालनेमि पूर्व जन्मका गन्धर्व और मकरी अप्सराथी एकसमय इंद्रकी सभामें नृत्य करतेहुए दुर्वासाऋषिको देखकर हँसे तब उन्होंने शाप दिया कि राक्षस होजाओ तब इन्होंने स्तुति करी शापानुग्रह करहु तब मुनिने कहा कि जब त्रेताके अन्तमें रामावतारहो रामजी लंकामें आवैंगे तब उनके दूतद्वारा तुम दोनोंका छुटकारा होजायगा सो शापसे छूटकर इंद्रलोकको गई ॥

१ तालावमें स्नानकर । २ पूंछ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम राम कहि छांडेसि प्राना * सुनि मन हर्षि चले हनुमाना ॥
देखा शैल न ओषधि चीन्हा * सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ * अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दोहा-देखा भरत विशाल अति, निशिचरमनअनुमानि ॥
विनु फर सायक मारेऊ, चाप श्रवण लगि तानि ॥ ८३ ॥

परेउ मूर्च्छि महि लागत सायक * सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरत उठि धाये * कपिसमीप अति आतुर आये ॥
विकल विलोकि कीश उरलावा * जागा नहिं बहु भांति जगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी * कहत वचन भरि लोचन वारी ॥
जेहि विधि रामविमुख मोहिं कीन्हा * तेहिं पुनि यह दारुण दुख दीन्हा ॥
जो मोरे मन वच अरु काया * प्रीति राम पद कमल अमाया[1] ॥
तौ कपि होउ विगत[2] श्रम शूला * जो मोपर रघुपति अनुकूला ॥
वचन सुनत उठि बैठि कपीशा * कहि जयजयति कोशलाधीशा ॥

सो०-लीन्ह कपिहि उर लाय, पुलक गात लोचन सजल ॥
प्रीति न हृदय समाय, सुमिरि राम रघुकुलतिलक ॥ ८ ॥

तात कुशल कहु सुखनिधानकी * सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
कपि सब चरित संक्षेप वखाने * भये दुखित मन महँ पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायउँ * प्रभुके एकौकाज न आयउँ ॥
जानि कुअवसर मन धरि धीरा * पुनि कपिसन बोलेउ बलवीरा ॥
(भले भरतकह बोले ताता * पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥
तेहिते चल दीजे समुझाई * आय भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहिं * भयउ हर्ष और शोच विचित्रहिं ॥
बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझेउ समर स्वामिके काजू ॥
पर यक दुःख होत अति ताता * कुसमय भये राम विन भ्राता ॥

---

१ निष्काम । २ रहित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि स्वभाय रिपुहनते कहेऊ * जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ ॥
सुनत उठे मुदसहित प्रकाशा * विधिवश सुढर ढरे जनु पासा ॥
दोहा–अम्ब अनुजगति देखमन, मानी सबनि गलानि ॥
बोली रघुपतिमातु तब, कपिते धीरज आनि ॥
जेहि सौंपेउँ मैं लषण कहँ, तिनकी यह गति होय ॥
अब कब देखों नयन भरि, पुत्र कमलमुख सोय ॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मनधीर ॥
कुशल जानकीलषणयुत, ऐहैं श्रीरघुवीर ॥)
तात गहरु होइहै तुहिं जाता * काज नशाइहि होतप्रभाता ॥
चढ मम सायक शैल समेता * पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता ॥
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना * मोरे भार चलहि किमि बाना ॥
रामप्रताप विचारि बहोरी * वन्दिचरण बोलेउ करजोरी ॥
तव प्रताप उर राखि गुसांई * जैहौं नाथ बाणकी नांई ॥
हर्षि भरत तब आयसुदीन्हा * पद शिरनाय गमन कपि कीन्हा ॥
"दोहा–तवप्रताप उरराखि प्रभु, जैहौं नाथ तुरन्त ॥
असकहि आयसु पायपद, वंदि चले हनुमन्त ॥८४॥"
भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपार ॥
जात सराहत मनहिंमन, पुनि पुनि पवनकुमार ॥ ८५ ॥
वहां राम लक्ष्मणहिं निहारी * बोले वचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा * राम उठाइ अनुज उर लावा ॥
सकहु न दुखित देखि मोहिंकाऊ * बन्धु सदा तव मृदुलस्वभाऊ ॥
ममहित लागि तजेउ पितु माता * सहेउ विपिन हिम आतप बाता ॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई * उठउ न सुनि मम वच विकलाई ॥
जो जनत्यों वन बंधु बिछोहू * पिता वचन नहिं मनतेउँ वोहू ॥

१ विलम्ब । २ मेरेबाणमें । ३ बोझ । ४ मनुष्यकेतुल्य । ५ वन । ६ धूप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुत वित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस विचारि जिय जागहु ताता * मिलहि न बहुरि सहोदर भ्राता ॥
यथा पंख विनु खगपति[1] दीना * मणि विनु फणि[2] करिवर[3] करहीना ॥
अस मम जिवन बंधु विनतोहीं * जो जड दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुँहलाई * नारिहेतु प्रियबन्धु गँवाई ॥
वरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं * नारिहानि विशेष क्षति नाहीं ॥
अब अवलोकि शोक यह तोरा * सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननीके एक कुमारा * तात तासु तुम प्राण अधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहिपानी * सब विधि सुखद परमहित जानी ॥
उतर ताहि देहौं का जाई * उठि किन मोहिंसिखावहु भाई ॥
बहुविधि शोचत शोचविमोचन * श्रवत सलिल राजिवदललोचन ॥
उमा अखण्ड राम रघुराई * नरगति भाव कृपालु दिखाई ॥

सो०-प्रभु विलाप सुनि कान, विकलभये वानरनिकर[4] ॥
आइ गये हनुमान, जिमि करुणामहँ वीररस ॥ ९ ॥

हर्षि राम भेंटेउ हनुमाना * अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद्य तब कीन उपाई * उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई ॥
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता * हर्षे सकल भालु कपि व्राता ॥
पुनि कपि वैद्य तहां पहुँचावा * जेहि विधि तबहिं ताहि लै आवा ॥

अथ क्षेपक ॥

हरिदिन धूम्राक्ष बलवाना * चढि कीन्हौ अति समर महाना ॥
महावीर तेहि कियोनिपाता * चढ्यो अकंपन पुनि दुखदाता ॥
समर कीन्ह ताने अतिभारी * मार्योतेहि युवराज प्रचारी ॥
पुनि प्रहस्त क्रोधातुर आवा * नील मार तेहि धरणि गिरावा ॥
चलोमहीधर करि अति क्रोधा * महावीर मारो सो योधा ॥

---

१ गरुड । २ सर्प । ३ हाथी । ४ पंक्तिकी पंक्ति ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि अतिकायाभिन्यो रिसिआई * मन्यो आठ दिन कीन्ह लराई ॥
कुम्भनिकुंभ आय रणठाना * मरे पांच दिन करि मैदाना ॥
पुनि मकराक्ष महाभट आवा * लक्ष्मणसे अति युद्धमचावा ॥
तब लक्ष्मणने क्रोधकर, ताको डारो मार ॥
कपिदलमें आनँद छयो, जैजैकार पुकार ॥

इति क्षेपक ॥

यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ * अतिविषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ॥
व्याकुल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ * करि बहुयत्न जगावत भयऊ ॥

अथ क्षेपक ॥

दशसहस्र राक्षस तब धाये * ढोल दमामे अधिक बजाये ॥
करनलगे कोउ मुगदर मारी * तद्यपि उठ्यो नसो असुरारी ॥
कोऊ लातचपेट लगावै * परताके कछु मन हिन आवै ॥
भूधरसम तेहि पर्यो शरीरा * तासों तनुमें गिनत न पीरा ॥
श्वासतजत आंधीसी आवत * सन्मुखतेहिकोउटिकन न पावत ॥
तब राक्षस यह कीन्ह विचारी * काटन लगे प्रचार प्रचारी ॥
उठ्यो न पुनि तब कियो उपाई * दिये नाकमें मेष चलाई ॥
औ हाथिनकी दोयँ चलाई * छीक महा निशिचरको आई ॥
दोहा-कुंभकरण ऐंडायकर, तबै उघारे नैन ॥
राक्षस लागे भागने, रावण मान्यो चैन ॥

इति क्षेपक ॥

जागानिशिचर देखिय कैसा * मानहुँ काल देह धरि वैसा ॥
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई * काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेइँ अभिमानी * जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन निशिचर संहारे * महा महा योधा सब मारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी * भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक वीरा * परे समरमहँ सब रणधीरा ॥
दोहा–दशकन्धरके वचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान ॥
जगदम्बा हरि आनिकै, शठ चाहसि कल्यान ॥ ८६ ॥
भलनकीन्ह तैं निशिचरनाहा * अबमोहिं आनि जगायहु काहा ॥
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक * जाके हनूमानसे पायक ॥
अहह बन्धु तैं कीन खुटाई * प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई ॥
कीन्हेहु प्रभु विरोध[1] तेहि देवक * शिव विरंचि सुर जाकेसेवक ॥
नारद मुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ * कहतेउँ तोहिं समय नहिंरहेऊ ॥
अब भरि अंक भेटु मोहिं भाई * लोचन सफल करों मैं जाई ॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन * देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥
दोहा–रामरूप गुण सुमिरि मन, मग्न भयो क्षण एक ॥
रावण मांगेउ कोटि घट, मद अरु महिष[3] अनेक ॥ ८७ ॥
महिष खाइ करि मदिरा पाना * गर्जेउ वज्रघात अनुमाना ॥
कुम्भकर्ण दुर्मदँ रणरंगा * चला दुर्गतजि सेन न संगा ॥
देखि विभीषण आगे आयउ * पुनि पदगहि निजनामसुनायउ ॥
अनुज उठाय हृदयतेहिलावा * रघुपति भक्त जानि मनभावा ॥
तातलात मोहिं रावण मारा * कहत परम हित मंत्र विचारा ॥
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ * दीन जानि प्रभुकेमनभायउँ ॥
सुनसुत भयउ कालवशरावन * सोकिमिमानै परमसिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण * भयउ तात निशिचरकुलभूषण ॥
बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर * भजहु राम शोभा सुखसागर ॥
दोहा–मन क्रम वचन कपट तजि, भजहु तात रघुवीर ॥

---

१ सेवक । २ शत्रुता । ३ भैंसा । ४ वीररसमदमें मत निर्भय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहु न निज पर सूझ मोहिं, भयउँ काल वश वीर ॥८८॥

बन्धु वचन सुनि फिरा विभीषण * आयउ जहँ त्रैलोक्यविभूषण ॥
नाथ भूधराकारशरीरा * कुम्भकर्ण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जब काना * किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उपारि[1] विटप[2] अरु भूधर[3] * कटकटाइ डारे तिहि ऊपर ॥
कोटिकोटि गिरि शिखर प्रहारा * कराहिं भालु कपि एकहिबारा ॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे * जिमि गंज[4] अर्क फलनके[5] मारे ॥
तब मारुतसुत मुष्टिकहनेऊ * परेउ धरणि व्याकुल शिरधुनेऊ॥
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता * घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनि नल नीलहिं अवनि पछारेसि * जहँ तहँ पटकि २ भटडारेसि ॥
चली बलीमुख सेन पराई * अतिभय त्रसितनकोउसमुहाई ॥

दोहा-अंगदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव ॥
कांखदावि कपिराजकहँ[6], चला अमित बलसीव ॥ ८९ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला * खेल गरुड़ जिमि अहिगणमीला॥
भृकुटि[7] भंग[8] जिहि कालहि खाई * ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जगपावनि कीरति विस्तरहीं * गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं ॥
मूर्च्छागइ मारुतसुत जागा * सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥
कपिराजहुकर मूर्च्छा बीती * निबुकि[9] गयउ तेहि मृतक प्रतीती॥
काटेसि दशन नासिका काना * गर्जि अकाश चला तेहि जाना ॥
गहेसि चरणधरि धरणि पछारा * अतिलाघव[10] पुनि उठि तेहि मारा ॥
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना * जयति जयति जय कृपानिधाना॥
नाक कान काटे तेहि जानी * फिरा क्रोध करि मानिगलानी ॥
सहजभीम[10] पुनि विनु श्रुतिनासा * देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥

---

१ उखारि । २ वृक्ष । ३ पर्वत । ४ हाथी । ५ मन्दारफल बूंदी । ६ सुग्रीव । ७ भौंह । ८ टेढी । ९ अतिशीघ्रते । १० भयानक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–जय जय जय रघुवंश मणि, धाये कपि करिहूह ॥
एकहि वार जो तासुपर, डारे गिरि तरु जूह ॥ ९० ॥

कुम्भकर्ण रणरंग विरुद्धा * सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटिकोटि कपि धरि धरि खाई * जिमि टीड़ी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीरसन मर्दा * कोटिन मीजि मिलायसि गर्दा ॥
मुख नासिका श्रवणकी वाटा * निकसि पराहिं भालु कपि ठाटा॥
रणमदमत्त निशाचर दर्पा * मानहुँ विश्व ग्रसन कहँ अर्प्पा ॥
मुरे सुभट रण फिराहिं नफेरे * सूझन नयन सुनाहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकर्ण कपि सेन बिडारी * सुनि धाये रजनीचर झारी ॥
देखी राम विकल कटकाई * रिपु अनीक नाना विधि आई ॥
दोहा–सुनहु विभीषण लषण सह, सकल सँभारहु सैन ॥
मैं देखौं खलबल दलहिं, बोले राजिवनैन ॥ ९१ ॥

कर सारंग[1] विशिष[2] कटि भाथा[3] * अरिदल दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा * रिपुदल बधिरे[4] भयउ सुनि शोरा ॥
धनु संधानि छांड शरलक्षा * कालसर्प्प जनु चले सपक्षा ॥
अति बल चले निकरनाराचा * लगे कटन भट विकट पिशाचा॥
कटहिं चरण शिर उर भुजदण्डा * बहुतक वीर होहिं शत खण्डा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल भट परहीं * उठहिं सँभारि सुभट फिरि लरहीं॥
लागतबाण जलधि जिमिगाजैं * बहुतकदेखि कठिन शर भाजैं ॥
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड विनु धावहिं * धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं ॥
दोहा–क्षण महँ प्रभुके सायकन, काटे विकट पिशाच ॥
पुनि रघुपतिके त्रोणमहँ, प्रविशे सब नाराच ॥ ९२ ॥

कुम्भकर्ण मन दीख विचारी * क्षण महँ हते निशाचर झारी ॥
भयउ क्रोध दारुण बलवीरा * करि मृगनायक नाद गंभीरा ॥

---

१ धनुष । २ बाण । ३ तूणीर । ४ बहरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोपि महीधर[1] लियो उपारी * डारेसि जहँ मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे * शरन काटि रज सम करिडारे ॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक * छाँडे अति कराल बहुसायक ॥
तनुमहँ प्रविशि निसरि शर जाहीं * जिमि दामिनि[2] घनमाहँ समाहीं ॥
शोणित[3] श्रवत सोह तनुकारे * जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥
विकल विलोकि भालु कपि धाये * विहँसा जबहिं निकट चलि आये ॥

दोहा—गर्जत धायउ वेगि अति, कोटि कोटि गहि कीश ॥
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ॥ ९३ ॥

भागे भालु कपिनके यूथा * वृकें[4] विलोकि जिमि मेषवरूथा[5] ॥
चले भालु कपि भागि भवानी * विकल पुकारत आरत वानी ॥
यह निशिचर दुकालसम अहई * कपि कुल देश परन अब चहई ॥
कृपावारिधर राम खरारी * पाहि पाहि प्रणतारतहारी ॥
करुणावचन सुनत भगवाना * चले सुधारि शरासन बाना ॥
रामसेन निज पाछे घाली * चले सकोप महाबलशाली ॥
खैंचि धनुष शतशर संधाने * छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर धावा रिसभरा * कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी * रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी ॥
धावा वाम बाहु गिरिधारी * प्रभु सोउ भुजा काटिमहिडारी ॥
काटे भुज सोहै खल कैसा * पक्षहीन मन्दर गिरि जैसा ॥
उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका * मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका ॥

दोहा—करिचिकार मुख घोर अति, धावा वदन पसार ॥
गगन सकल सुर त्रास अति, हाहाकार पुकार ॥ ९४ ॥

सभय देव करुणानिधि जाने * श्रवण प्रयंत शरासन ताने ॥
विशिख[6]निकर निशिचरमुख भरेऊ * तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥

---

१ पर्व्वत । २ विजुली । ३ रुधिर । ४ भेडहा । ५ भेडियोंके झुंड । ६ अनेकबाण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शरन भरा मुख सन्मुख धावा * कालत्रोण[1] जनु तनु धरि आवा ॥
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा * धड़ते भिन्न[2] तासु शिर कीन्हा ॥
सो शिरपरादशानन आगे * विकल भयउ जिमि फणि मणि त्यागे॥
धरणि धसे धरधाव प्रचण्डा * तब प्रभु काटिकीन्ह युगखण्डा॥
"परेउ भूमि जिमि नभते भूधर *तरे दाबि कपि भालु निशाचर ॥"
तासु तेज प्रभुवदन समाना * सुर मुनि सबहिं अचम्भा माना ॥
नभदुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं * जयजयकहि प्रसून सुर वर्षहिं ॥
करि विनती सुरसकल सिधाये * तब तेहि समय देवऋषिआये ॥
गगनोपरि[3] हरि गुणगण गाये * रुचिर वीररस प्रभु मनभाये ॥
वेगि हतहु खल मुनिकहिगये * रामसमर महँ शोभितभये ॥

हरिगीतिका छंद ॥

संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुलबल शोभाघनी ॥
श्रम विन्दु मुख राजीवलोचन रुचिर तनु शोणित कनी ॥
भुज युगल फेरत कर शरासन भालु कपि चहुँ दिशिबने॥
कह दासतुलसी कहि न सक छबि शेष जेहि आननघने॥ ३॥

दोहा–निशिचर अधम मलायतनु[4], ताहिदीन निजधाम ॥
गिरिजा ते नर मन्दमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥९५॥

दिनके अन्त फिरी दोउ अनी * समर भयो सुभटन सन घनी ॥
रामकृपा बल कपि दल बाढ़ा * जिमितृणबढै लगे अति डाढा ॥
छीजहिं निशिचर दिन अरु राती* निजमुखकहे सुकृत जेहिभांती ॥
बहु विलाप दशकन्धर करहीं * पुनि पुनि बन्धु शीश उरधरहीं ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी * तासु तेज बल विपुल बखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा * कहि बहुकथा पितहि समुझावा॥
देखहु काल्हि मोरि मनुसाई* अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥

---

१ तरकस। २ अलग। ३ आकाशके ऊपर। ४ मन वचन कर्म्मते दुष्टकामोंमेंतत्पर।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इष्टदेव सन जो वर पायउँ * सो वर तात न तुमहिं सुनायउँ ॥
इहिविधिजल्पत भयो बिहाना * लगे भालु कपि चहुँदिशिनाना ॥
इत कपि भालु काल सम वीरा * उत रजनीचर अति रणधीरा ॥
लरहिंसुभट निज निज जयहेतू * वरणि न जाइ समर खगकेतू ॥
दोहा—मेघनाद माया विरचि, रथ चढि गयउ अकास ॥
गर्जेउ प्रलय पयोद जिमि, भा कपिदल अतित्रास ॥ ९६ ॥
शक्ति[1] शूल शर परिघ कृपानी[2] * अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पषाना * लागा वृष्टि करै बहु बाना ॥
रहे दशहु दिशि सायक छाई * मानहुँ मघा मेघ झरिलाई ॥
धरु धरु मारु सुनाहिं कपिकाना * जो मारै तेहि कोउ न जाना ॥
गहिं गिरि तरु अकाशकपिधावैं * देखहिं तेहि न दुखित फिरिआवैं ॥
अवघट घाट वाट गिरिकन्दर * माया बल कीन्हेसि शरपंजर ॥
जाहिं कहां भय व्याकुल बंदर * सुरपति वंदि परे जिमि मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला *कीन्हेसि विकल सकल बलशीला॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण * शरन मारि कीन्हेसिजर्जरतन ॥
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा * छांडत शर होइ लागहिं नागा ॥
व्यालफांस वश भये खरारी * स्ववश अनन्त एक अविकारी ॥
नटइव चरित करत विधि नाना * सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रण शोभा हित आपु बँधावा * देखि दशा देवन भय पावा ॥
दोहा—खगपतिजाकर नाम जपि, नर काटहिं भवफांस ॥
सो प्रभु आवकि बन्ध तर, व्यापकविश्वनिवास ॥ ९७ ॥
चरित रामके सगुण भवानी * तरकिनजाइँ बुद्धि बल वानी ॥
अस विचारि जो परम विरागी * रामहिं भजहिं तर्क सबत्यागी ॥
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा * पुनिभा प्रकट कहत दुर्वादा ॥

---

१ वर्छी । २ तलवारि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाम्बवन्त कह खलरहु ठाढा * सुनिकै ताहि क्रोध अति बाढा ॥
बूढ जानिं शठ छांडेउँ तोहीं * लागेसि अधम प्रचारन मोहीं ॥
असकहिताहि त्रिशूल चलावा * जाम्बवन्त सो करगहि धावा ॥
मारेउ मेघनादकी छाती * परा धरणि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनिरिसाइ गहि चरण फिरावा * महि पछारि निजबलहि देखावा ॥
वरप्रसाद सो मरहि नमारा * तब पद गहि लंकापर डारा ॥
इहां देवऋषि गरुड पठाये * रामसमीप सपदि चलि आये ॥

अथ क्षेपक ॥

कह्यो भवानी तब सुख पाई * शक्ति सुलोचन केहिविधि पाई ॥
तब शिव कहन लगे इतिहासा * मन प्रसन्न कर सुखनिवासा ॥
मेघनाद तप कीन्ह अपारा * तब देवी वर मांग उचारा ॥
मेघनाद कह सुनहु भवानी * यान लोप दीजे सुखदानी ॥
तेहि पर चढ सन्मुख जेहि धावौं * विना प्रयास मारतेहिलावौं ॥
रथ दीन्हो देवी सुख पाई * कह्यो सदा रख याहि छिपाई ॥
परै कठिन रण जब कहुँ आई * तब यहि पर चढ करेहु लराई ॥
जाय अकाश पहर दो माही * जितिहो समर वीर सकनाही ॥

दोहा–जो त्यागे द्वादशवरस, नींद अन्न अरु नारि ॥
तासों मत करिये समर, सो तोहिं डारै मारि ॥

यह कह अंतर भई भवानी * शिवकी कठिन तपस्या ठानी ॥
समर करत भय लगै न तोही * यहवरदान दियो शिव ओही ॥
एक दिवस लैसैन अपारा * चढयो इन्द्र पर कियो प्रहारा ॥
ठान्यो समर भयंकर भारी * वासवको पुनि धरयो प्रचारी ॥
ले आवा पुनि लंकमझारी * रावणने सुख मानो भारी ॥
तुरत कमलभव लंक सिधाये * तजो इन्द्र यह वचन सुनाये ॥
दियो छांडि सुनि विधिके वयना * भये प्रसन्न तब अज सुखअयन ॥
तब अमोघ शक्ति विधि दीन्ही * गये प्रसन्न मति हरि पदलीन्ही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-नागलोक घन नादने, तुरतहि कीन्ह पयान ॥
तहां वासुकी नागसे, कीन्हौ युद्ध महान ॥
चौदह दिवस युद्ध करि भारी * बांधलियो अहिराज प्रचारी ॥
लंकालाय पितहि दिखरायो * बांध्योबहुरि गेहले आयो ॥
कह्यो वासुकी त्यागो हमको * कन्या ब्याह देहुँमैं तुमको ॥
छांडि दियो सुनि वचन भवानी * दीन्ह वासुकी सुता सयानी ॥
यहि विधि मिली सुलोचनि नारी * इन्द्र जीत भा नाम सुरारी ॥
जेहि विधि महा शक्ति खल पाई * सोसब तुमको दीन्ह सुनाई ॥
इति क्षेपक ॥

दोहा-पन्नगारि खाये सकल, क्षणमहँ व्याल बरूथ ॥
भई विगत माया तुरत, हर्षे वानर यूथ ॥ ९८ ॥
गहि गिरि पादप उपल बहु, धाये कीश रिसाइ ॥
चले तमीचर विकलअति, गढपर चढे पराइ ॥ ९९ ॥
मेघनादकी मूर्च्छा जागी *पितहिं विलोकि लाज अति लागी॥
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर * करन अजयमख असमन हठधर ॥
सो सुधिपाइ विभीषण कहई * सुनु प्रभु समाचार अस अहई ॥
मेघनाद मख करै अपावन * खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि * नाथ वेगि रिपु जीति न जाइहि ॥
सुनि रघुपति अतिशय सुखमाना* बोले अंगदादिकपिनाना ॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई * यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई ॥
तुम लक्ष्मण रणमारेहु ओही * देखि सभय सुर बड़ दुख मोही ॥
मारेउ तेहि बल बुद्धि उपाई * जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण * सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुवीर दीन अनुशासन * कटि निषंग कर बाणशरासन ॥
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा * बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा ॥
जोतेहि आजु बधे विनु आवौं * तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो शत शंकर करहिं सहाई * तदपि हतौं रघुवीर दुहाई ॥
दोहा–वन्दि राम पद कमल युग, चले तुरन्त अनन्त ॥
अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त ॥ १०० ॥
जाइ कपिन देखा सो वैसा * आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
तब कीशन कृतयज्ञ विध्वंसा * जब न उठै तब करहिं प्रशंसा ॥
तदपि न उठै धरहिं कच जाई * लातन हति हति चलहिं पराई ॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे * आवा रामअनुजके आगे ॥
आवत परम क्रोध करिमारा * गर्जि घोर रव बारहिं बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये * हति त्रिशूल उर धरणि गिराये ॥
प्रभु पर छांड़ेसि शूल प्रचण्डा * शरहतिकृत अनन्त युग खण्डा॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा * हतेउ कोपि तेहि घाव नबाजा ॥
फिरे वीर रिपु मरै न मारा * पुनि धावा करि घोर चिकारा ॥
धावतदेखि क्रोध जनुकाला * लक्ष्मण छांडे विशिख कराला ॥
आवत देखि वज्र सम बाना * तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना ॥
विविध वेषधरि करै लडाई * कबहुँक प्रकट कबहुँदुरिजाई ॥
"तब त्रिशूल छांडेसिलक्ष्मणपर * काटिकीन्ह शतखंड धरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सोधावा * राम अनुज सो काटि खसावा ॥
दोहा–आयुध विविध प्रहार किय, रज सम कीन फणीश ॥
हर्ष विवश कपि रीछ सब, विबुध सहित सुरईश ॥ १०१ ॥
बहुरि विविध शर छांड़नलागा * रणकारण छूटहिं जिमिनागा ॥
राम अनुज शर गरुड़ समाना * उमा ग्रसत छूटहिं अभिमाना" ॥
देखि अजयरिपु डरपेउकीशा * परम क्रोध तब भये अहीशा ॥
"देखिय जिमि रवितेजसमाना * फुकरत मनहुँ व्याल अनुमाना"
लक्ष्मण मन असमंत्र दृढावा * इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा * शर संधान कीन्ह अतिदापा ॥

१ वृक्ष । २ लक्ष्मणजी । ३ क्रोध ।

In Public Domain, Gharbai Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust, Delhi and eGangotri

छांड़ा बाण तासु उर लागा * शीश भुजा काटे नृप नागा ॥
घन समान सो गर्जि अभागा * मरती बार कपट सब त्यागा ॥
दोहा–राम अनुज कहि राम कहि, असकहि छांडेसिप्रान ॥
धन्य शक्रजित मातु तव, कहि अंगद हनुमान ॥ १०२ ॥

अथ क्षेपक ॥

जो जगकह दंडक यमदंडा * हरिद्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
महिमा अमित महाबलसीवा * जासु प्रताप अभय दशग्रीवा ॥
भुजबल सुरनायक वशकीन्हा * चौदह भुवन जीत यश लीन्हा ॥
रिपुतरुलषण मूलखनि गंजेउ * जिमि गजकमलनालगहिभंजेउ॥
जिमि वासवगहिकुलिशकराला * कीन विकल गिरि पक्ष निहाला॥
रणसागर महँ पचौ शरीरा * तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
दंत विकट मुख परम भयावन * चिकुरसघनचख अशुभ अपावन ॥
रसना लालरंग जनु जावक * दवकी शिखा सोह जनु पावक ॥
पाय सुआयसु ऋषभकपीशा * करगहि लीन दुष्ट कर शीशा ॥
दोहा–करि श्रम मार्‍यो महारिपु, रामअनुज रणधीर ॥
निडर सुमन वर्षहिं विबुध, कहिजय गिरागँभीर ॥ १०३ ॥
विनप्रयास हनुमान उठाये * लंकाद्वार राखि पुनि आये ॥

इति क्षेपक ॥

तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा * चढि विमान आये नभ सर्वा ॥
बर्षि सुमन दुन्दुभी बजावहिं * श्रीरघुवीर विमल यश गावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदाधारा * तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा ॥
स्तुति करि सुरसकल सिधाये * लक्ष्मण कृपासिन्धु पहँ आये ॥
सुत वध सुना दशानन जबहीं * मूर्च्छित भयउ पर्योमहि तबहीं॥
मंदोदरी रुदन करि भारी * उरताड़त बहुभांति पुकारी ॥

---

१ इन्द्र। २ वज्र। ३ मेहदी। ४ अग्नि।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नगरलोक सब व्याकुलशोचा * सकल कहहिं दशकंधरपोचा ॥
दोहा–तब दशकंठ विविध विधि, समुझाई सब नारि ॥
नश्वर रूप प्रपंच सब, देखहु हृदय विचारि ॥ १०४ ॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशत रावन * आपन मंद कथा अतिपावन ॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे * जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

अथ क्षेपक (सुलोचनाकीकथा)

प्रभुहि विलोकि शीशपद नाये * उठि प्रभु अनुज हर्षि उरलाये ॥
कृपादृष्टि करि अनुजहि हेरा * विगतभयो श्रम जब कर फेरा ॥
बाणवेधि तनु देखियत कैसे * कनकत्रोण शर पूरित जैसे ॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब * रिपुवध कहा विभीषणहू तब ॥
धारेउ शीश आन प्रभु आगे * वानर भालु विलोकन लागे ॥
प्रभुकौतुकी निरखि सोइ शीशा * राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥
दोहा–प्रभु आयसु सुनि कीशपति, राखेउ यतन कराय ॥
कटक सहित रघुवंशमणि, शोभित अति दोउभाय॥ १०५॥
कृपादृष्टि सब कटक निहारे * भये श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहिविधि रिपुमारे * सुर गन्धर्व मुनि भये सुखारे ॥
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी * खग जिमि गई लंक शर प्रेरी ॥
मेघनाद आँगनमें परी * बाण वेधि शोणितसन भरी ॥
राजति तहाँ सुलोचनि कैसी * रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध पतोहू * वासवरिपु तिय छबिमय जोहू ॥
हेमसिंहासन सोहति बाला * सेवत विद्याधर त्रियमाला ॥
पूजहिं विविध विनय करताही * मुख प्रमोदको सकत सराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती * मनहु सकल सुखतरुकीकांती ॥

---

१ नाशवान् । २ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, तीनों गुण इत्यादिक ।
३ स्वर्णसिंहासन । ४ प्रसन्नता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-तब निज दासिनिदेखि तहँ, शोणि श्रवत भुजदण्ड ॥
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहुँ अखंडनखण्ड॥ १०६ ॥
सुनकर सकल सखी मुखवैना * तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
नारि स्वभाव धुकधुकी धरकी * शूचक अशुभ दहिन भुज फरकी॥
होत महारण रावण रामहिं * वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकल सुरासुर सकहिंनजूझी * विधि वामता परत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलिआपू * पतिभुज लखि करिकोटि कलापू ॥
कंकन मणिगण भूषण सोई * महा विटप सम आननहोई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही * तासु प्रभाव सुना पहिलेही ॥
नींद नारि भोजन परिहरही * बारह वर्ष तासु कर मरही ॥
दोहा-करि विचार मन टेकदै, मैं पति देवत नारि ॥
भुजलिखि मेटहु दुचितही, सुन कर दीन पसारि ॥१०७॥
लखिरुख तासु सखी उठि धाई * तुरतहि खोज खरी लै आई ॥
दीनहाथ मणिमय अँगनाई * लिखन लषण कीरति रुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटी * तजत तासु महिमा अतिछोटी ॥
अक्षय अखंड अलख अविनाशी * अतुल अमित घटघटके बासी ॥
प्रगटहिं पालहि पुनि संहरई * त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई ॥
जो कालहु कर काल भयंकर * वर्णत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू * जासु नाम भवसागर सेतू ॥
मुनिमनपुण्डरीक जाके घर * वचन विवेक विचार बुद्धिवर ॥
दोहा-कोटि कल्प वर्णत निगम, अगम जासुगुणगाथ ॥
तिमि शरीर जड जीव बिनु, किमिवर्णतलिखिहाथ॥१०८॥
ममशिर गयो दरश रघुराई * तव प्रतति लगि भुजा पठाई ॥
इहि विधि लिखेउसकलभुजबाता* परी भूमि तब अतिविकलाता ॥

---

१ सुलोचना । २ देवता-राक्षस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वांचि सकल भुजलिखितयथारथ * लक्ष्मण रामनाम परमारथ ॥
त्रियास्वभाव तदपि बहुभाँती * विलखत सकल सखिनकरपाँती॥
गुणगण साहस शील नाहको * कहि रोवत बल विपुल बाँहको ॥
जेहि भुज बल सुरनाथ बिगोवा * सो प्रभु आजु समरमहि सोवा ॥
मणिगण भूषण बसन विसारत * महिलोटत करतल शिरमारत ॥
मगन विपतिनिजतनुसुधिनाही * दारुण विपति कहिन केहिपाही ॥
छिनक प्रबोधसखीकोउ करही * बहुरि शोक दावानल जरही ॥
क्षणक्षण उठत परत धरणीतल * पुनिपुनिसब सराह पतिको बल ॥

दोहा—तिनमें सखी सयान इक, कहि समुझावतबैन ॥
शोक छांड़ि पतिदेवता, सुमति करौ जिय चैन ॥ १०९ ॥

सुनकर सहसानन तनु जाता * सत्य कहत तुम सखी सुमाता ॥
विधि निर्मित दुख मोकहँलाहू * सुख परिपूर भुवन सब काहू ॥
विजय राम लक्ष्मणकहँ आवा * सुयश सकल मर्कट[२] कुल पावा ॥
कुल कलंक बडलहेउ विभीषण * कुलकुठार[३] अस सुनेउ न दीखन ॥
छूटि वन्दि अब सुरगण केरी * निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥
मुनिपुलस्त्यकर भा कुलनाशा * अबरविशशिसुख करहि प्रकाशा॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख * बहब समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गंग निर्मल जल आजू * सुबश बसहि सुरनायक राजू ॥

दोहा—यम कुबेर दिगपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ॥
खाँय अघाय विहाय दुख, पाय सु यज्ञ विभाग ॥ ११० ॥

इतना कह मन्दिर महँ आई * देखत मणिगण धन बहुताई ॥
सुरपति भुवन सुपर्टंतर[४] नाहीं * जहँ रिधि सिधि तनु धरे कमाहीं॥
देखत विभव न मन अनुरागा * पतिपदप्रेम निपुण मनलागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा * धेनु बसन मणि हाटक हीरा ॥

---

१ सावधान । २ बन्दर । ३ कुल्हाडी । ४ समान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मणिमय शिबिकारुचिरसुहाई * भुज चढाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढ़त भई पुनि आई * सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥
वीतराग जिमि तजत विषयगन * तेहितसभांतिदियो पतिपदमन ॥
शुकसारिका सुलोचनि जाये * कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥
व्याकुल कह कहँ जात सुनयना * सुन धीरज परिहरत सुवयना ॥
भयेविकल खग मृग इहिभांती * अपर दशा कैसे कहिजाती ॥
प्रजा लोग गृह तजि संगलागे * प्रेम उमँगि लोचन जल पागे ॥

दोहा—बाजन लगे निशान बहु, ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकीघेरि ॥ १११ ॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे * सजग भये तब वीरप्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुन कर आवा * अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा ॥
धनु चढाइ कटि तरकस बांधे * कोउ असिचर्म शरासन साधे ॥
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि * रोखनचोखे शूल शक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहि धाये * प्रगट दशानन विजय सुनाये ॥
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा * समर भयंकर निशिचर बीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई * चीन्ह सकल भट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नागपतिकन्या * सतीशिरोमणि त्रिभुवन धन्या ॥

दोहा—द्वारपाल दशकन्ध बहु, खबर जनाई जाय ॥
भयउ रजायसुवोगि तब, वचन कहति बिलखाय ॥११२॥

तुमहि अछत असिदशाहमारी * सुखताजिभई शोक अधिकारी ॥
नभ पथहै भुज मम गृह परी * बाण वेधि शोणित तनुभरी ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी * संशय जानि दीन्हकरखरी ॥
लिखी राम लक्ष्मण महिमाइन * क्रम क्रम सो सबकथा कहीतिन ॥
ठगिसी रही बांचि गुणगाथा * जरहुँ संग जो पाऊँ माथा ॥
रणकबन्ध भुज ममगृह आई * शिरतहँ गयउ जहां रघुराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करहु सो यत्न मिलहि मोहिं शीशा * तुम सामर्थ निशाचर ईशा ॥
सुनत कुलिशसम[1] गिरावधूकी * जीवन आश दशानन मूकी ॥
तदपि धीरधरि करसि प्रबोधा * कहुको मोहिंसमान जगयोधा ॥

दोहा-राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त ॥
माथ विभीषण ऋषभ कर, आनब मारि तुरन्त ॥ ११३ ॥

अबलगि रहेउ भरोसा भारी * कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
हमहुँ आज लगि कीन्ह न जूझा * इन सब कर पुरुषारथ बूझा ॥
मरेउ सो नर वानरके मारे * बात सुनत अति लाज हमारे ॥
गिनती कवन वीरमें तिनकी * अति दुरदशा कीन कपिजिनकी ॥
तजहु शोक कुलवधूपतोहू * उन समान जनि मानासि मोहू ॥
पुत्रि विलम्ब करौं घटि चारी * देखहु मोर भयंकर भारी ॥
आनि शीश तव शत्रुन केरा * बिन प्रयास नहिं लावौं वेरा ॥
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा * नतु किमि निशिचर वनचरयोगा ॥

दोहा-मेरु उखारन हारजे, धरा धरत कर बीच ॥
तेभटखाये मशक शिशु, कालकुटिलता नीच ॥ ११४ ॥

क्रोधावेश प्रगट बल बोली * हृदय शोक तनु अचल न डोली ॥
समाधान नहिं मानत सोई * सुनि प्रलाप परितोषै नहोई ॥
नर वानर पुरुषारथ देखत * बड़ो प्रभाव छोटकरि लेखत ॥
कूदि सिंधु कपि लंकाजारी * लघुकर मानत ताहि सुरारी ॥
कुंभकर्ण अतिकाय महोदर * ममपति गिरेउ समेत सहोदर ॥
ते रिपु चहत दशानन जीती * देखहु महा मोहकर रीती ॥
उतरदेउँ तौ पातक होई * कह विवाद कर सर्बस खोई ॥
फिरहि राज्य कछु मोहिं नकाजू * विनपिय सकल नरककर साजू ॥

दोहा-तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया[5] पास ॥

---

१ वज्रसमान । २ छोडी । ३ पृथ्वी । ४ बोध । ५ मन्दोदरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Trust, Delhi and eGangotri

पदगहि रोवत सकल कह, प्रकट शोक इतिहास ॥११५॥
आदिहिते सब कथा बखानी * सुनि सुनि रोवत रावण रानी ॥
कह निजपति भुज लिखत बहोरी * राम लषण महिमा नहिं थोरी ॥
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा * मुये विडंब नकीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निज पुत्रवधूकी बानी * बोली दुखित मन्दोदरि रानी ॥
कहत सो मानहु सत्यसयानी * सुनी जो नारदमुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब सांची * अनुभव कीन्ह न एकहु बांची ॥
देवि न होय मृषा ऋषि भाषत * अपने महा मोह मनराखत ॥
अगली कथा समास समेता * सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता ॥
वैरभाव दशकन्धर जूझब * प्राणहु गये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोक संकटसे छूटहिं * वानर भालु राज्य घर लूटहिं ॥
सुरमणि भूषण वसन विमाना * भोग करहिं वनचर कुल नाना ॥
दोहा—राज्य विभीषण पाइहैं, अमर कल्प निरबाह ॥
भावी वश दुख सुख जगत, उपदेशिय कहु काह ॥११६॥
मुनिबर वचन मोहिं परतीती * अनुभव दोउ हार अरु जीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका * पतिसंग वेगि साध परलोका ॥
जाहु राम पहँ पतिशिरलागी * तज संकोच आनकिनमांगी ॥
आज नहोइ लाजकर भूषण * समयहीन गुण गणिय न दूषण ॥
है पुनि श्वशुर बिभीषण तोरा * वालितनय बालकसम मोरा ॥
एकनारि व्रत रघुवर केरा * लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा ॥
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा * द्विविद मयंद महाबल सीवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता * शिवस्वरूप भव हर भगवन्ता ॥
सदा नीतिरत राम नरेशा * तहां जात कहु कवन कलेशा ॥
दोहा—विदित तोरपति भुजलिखत, लक्ष्मण राम प्रभाव ॥

१ सुलोचना । २ वानर-ऋच्छ । ३ त्याग । ४ अंगद । ५ प्रकट ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमहूं ऋषि भाषित कहेउ, अब विलम्ब जनिलाव ॥ ११७॥
सुनत सासुमुख कर हित बानी * जाहुँ रामपहँ अस जिय जानी ॥
बार बार चरणन शिर नाई * चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा * सिंधु सुबेल महीधर घेरा ॥
उमगेउ मनो महोदधि दूसर * हरित पीत कपि धूमर भूसर ॥
व्योम लाल भाषत अनुहेरी * मनहु लेत बड़वानल घेरी ॥
गिरितरुधर भुजसहस भयंकर * जहँ तहँ प्रकटहोइँ जनुजलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर * कटक जलधि सोवत राघवबर ॥
अक्षवट जहँ तहँ बैठि विभीषण * अससुकुती कहुँ सुने नदीखन ॥

दोहा—देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि ॥
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावो मोरि ॥ ११८ ॥

वानर सकल उठे अस बोली * अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा * भइमति मेघनाद जब जूझा ॥
हठतजि सीतहि दीन पठाई * तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जिहिलगिप्रकटकीन्ह पुरआगी * बांधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सोइ सीता अब बिन श्रमपाई * जानहु विधि अनुकूल सहाई ॥
विजय राम सुग्रीवहि आवा * सुयश वीर वानर कुल पावा ॥
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा * विनकलेश लंका गढ़ टूटा ॥
युग युग कीरति चलवहमारी * कहँ राक्षस कहँ लघुवनचारी ॥

दोहा—इहिविधि चारु विचार करि, निश्चयकरि मनमाहिं ॥
भयउ काज रघुराज कर, बात दूसरी नाहिं ॥ ११९ ॥

बैठत कटक अतिहि सकुचाई * अनविनारि जनु परघर जाई ॥
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा * छबि श्यामल मय गौरशरीरा ॥
मरकत कनकछबिहि जनुनिंदत * धन्य सुजन महिमाते विंदत ॥

१ महासागर । २ लंका ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कन्धर * कंबुकण्ठ रेखा त्रय सुन्दर ॥
दशनपांतिकी कांति कहैको * लावत मन पटतरहि लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई * बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डक नाशिका लजाई * थाकेउ कवि पटतरहि नपाई ॥

दोहा—छबिमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह
जहां न पावत पारसुर, किमि वरणै कविथाह ॥ १२० ॥

भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये * शीश जटा कर मुकुट बनाये ॥
भाल विशाल तिलक युत सोहै * ध्यान समय मुनि मानस मोहै ॥
बलकल[2] वसन त्रूण कटिबांधे * करशर शुभग शरासन[3] कांधे ॥
बीरासन आसीन कृपाला * नवपल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज वराणि नाहिं जाई * जहँमुनि मधुकर रहे लुभाई ॥
प्रगट भई जिहि थलसे गंगा * श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा ॥
नवत महेश विरंचि जाहिको * लोचन गोचर होत काहिको ॥
जन आरत भंजन जो कोई * भवसागर तारण कैसोई ॥

दोहा—प्रणतपाल विरदावली, जिन चरणनकी बान ॥
शोकहरण संशय दलन, करण सुमंगल खान ॥ १२१ ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना * द्विविद मयन्द कुमुदबलवाना ॥
जाम्बवन्त कपिपति बलशीला * ऋषभसुषेण सहित नल नीला ॥
महाबीर वानर सब राजत * लषण बिभीषणदोउदिशिभ्राजत॥
मितिभाषित प्रभुचरण सुसेवक * चितवत रुखरघुनन्दनदेवक ॥
सभामध्य सोहत अघमोचन * कीन्हेउसफलनिरखिनिजलोचन॥
करतदण्डवत शिरधारि धरणी * तिहिका चरित विभीषण वरणी ॥
पुत्रबधू दशकन्धर केरी * बड़ि पतिव्रता जानि प्रभु हेरी ॥

---

१ ऊँचा। २ छाल-भोजपत्र ३ धनुष।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेघनादकी नारि सुशीला * अस गति तव विरोध करलीला॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे * करुणा वचन कहत कर जोरे ॥
दोहा—मुये जान पति भुजहिं तब, लिख समुझाई मोहिं ॥
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं ॥ १२२ ॥
छंद—परशे चरण कर प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारिके ॥
जिहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भारके ॥
प्रभु जान सो विनती सुलोचनि करत कहि विनती घनी ॥
जय शोक हरण कृपालु जय जय जयतिजयरघुकुलमनी॥४॥
प्रभु ब्रह्म रूप स्वभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी ॥
जयहरण धरणीभार बाहु विशाल खंडन खलअनी ॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सब गुण आगरे ॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥ ५ ॥
षट अष्टलोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी ॥
केहि भांति वरणौं नाथ गुण गण नारि जड़मति बावरी ॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं ॥
हूंभूरिभाग्य सरोज पद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं ॥६॥

मात्रात्रिभंगीछंद ॥

गहकरवाणी शारंगपाणी सबगुणखानी रामबली ॥
सुरसुरभीरक्षक राक्षस भक्षक भक्तहिरक्षक भांतिभली ॥
मैंरिपुसुतनारी जानअघारी अधिकारी नहिंदुखभारी ॥
हरिविरहदवारी अति भयकारी सहबहुबारी दुखकारी॥७॥
तवशरणैआई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर ॥
पति मस्तकपाऊं जरिसँगजाऊं शिरपाऊं शोभाआगर ॥

१ निधान । २ चौदहलोक । ३ गो ।

In Public Domain, Gharibdas Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पतिममतत्युत्यागीअतिबड़भागी अनुरागीजिनमुक्तिलई ॥
ममताकिमितासू वरणूंआसू जासु अचल जगपंक्तिरही॥८॥
यहिविधिपदपंकजसेव्यरमाअजशिरनमिदोउकरजोरिरही ॥
सुनिपकजलोचन वचनसुलोचनि लोचनमें जलधारबही ॥
यहिभांतिसुनैना अस्तुतिबैना बारबार हरिचरणपरी ॥
प्रभुहोहुदयाला अतिहिकृपाला पावोंभक्तिअनूपहरी ॥ ९ ॥

दोहा—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छांड़ कपट जंजाल ॥१२३॥
तुम त्रिभुवन त्रैलोकके, दूसर और नकोय ॥
काहि पुकारौं छोंड़ि तोहिं, सत्य नाम प्रभुहोय ॥ १२४ ॥

तुम अन्तर्यामी भगवाना * नहिं तव आदि मध्य अवसाना ॥
करुणावचन सुनत रघुबीरा * पुलक रोम भयो शिथिल शरीरा॥
देहुँ जियाय तोरपति आजू * करहू लंक कल्पशत राजू ॥
छांडि शोच अब मन हरषाहू * तुरत भवन अपने फिरि जाहू ॥
सुनि अस सत्यसिंधु कर वानी * मनमें वनचर अति भय मानी ॥
कहि न सकत कछु प्रभु रुखदेखी* कहा करब करतार विशेखी ॥
सीय शोच कर फल नहिं होई * जोकरि कृपा राम यहि जोई ॥
अस विचार धारी मनआसा * जेहिते पाओ प्रभुक विलासा ॥
सब देवनकर शोच नजाई * जोकर कृपा राम इहि ज्याई ॥

दोहा—राज्य विभीषण लंककर किहिविधि करिहहिंजाइ ॥
समुझि वैर घननाद जब, गहिहि शरासन धाइ ॥ १२५ ॥

मुखरुखदेखि कपिनभयमाना * प्रणतपाल भगवन्त सुजाना ॥
देखि बहुत रघुबर कर छोहू * विनय करति दशकन्ध पतोहू ॥

१ दीनवचन । २ कपि-ऋच्छ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम उदार सब देवे लायक * करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहुँ विचारि दीख मनमाहीं * जीवनते अस मरण सराहीं ॥
भुजवल जीति लोक वशकीन्हे * चौदहभुवन भोग करि लीन्हे ॥
रणतीरथ याचक बड़ चीन्हा * प्राण सुधन लक्ष्मणकर दीन्हा ॥
अब न उचितपतिदै उपहारा * तेहि पर अधिकसो दरशतुम्हारा॥
हमहूं जाइ मरब सतसाधी *मिलबतुमाहिं जस मिलत समाधी॥

दोहा–निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुवीर ॥
तुमहिं मिलत नहिं होय भव, यथा सिंधु गति नीर[2]॥१२६॥

मनकी जानन हार सुदेवा * भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई * मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू * पिया विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी * कहि मम प्राण सजीवन मूरी ॥
देख संदेह कहत सुग्रीवा * भुजगहि लिखत जीह बिनग्रीवा॥
हँसिहहिबदन तीय तौ सांची * नातर निशिचर माया यांची ॥
कितअसज्ञान मृतक भुज गावा* जो मुनिवर साधन नहिंपावा ॥
प्रभु अस कहेउ हँसब यहशीशा*करत कुतर्क न उचित कपीशा ॥

दोहा–शिरसो कहति सुलोचना, हँसहु वेगि ममनाथ ॥
नातर सत्य नमानिहैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥ १२७ ॥

क्षणक विलम्ब कीन्ह नहिंबोला * मृतक बदन मूंदत नहिं खोला॥
पुनि पुनि कहत सोनागकुमारी * श्रमित भयउ रणमें करिमारी ॥
लगे लषण शर क्षोभ बढावा * प्रभुसमीपकस मोहिं लजावा ॥
जो मन वचन कर्म यह देही * पतिदेवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै * रहहि छाय यश सुयश अमोलै ॥
जो जानत तव यहगति सांई * बोलि पठावत पितहि सहांई ॥

१ लोक । २ पानी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनितिय वचन हँसेउ तबशीशा * चौंके चकित भालुभटकीशा ॥
हँसेउ ठठाय बदन सबदेखा * विस्मय[1] भयउ सकलजिहिपेखा ॥
कुलिश[2] समान सुना नहिंजाई * रहेउ सो वदन बहुरि अरगाँई[3] ॥
सकुच कपीशहि तोषेउ नारी * बड़ आश्चर्य भयो बनचारी॥ ॥
पूँछत कपिपति पद शिरनाई * कारण कवन हँसा शिर सांई ॥
प्रभुकह सुन सुग्रीव कपीशा * शीश हँसेकर सुनहु अदीशा ॥
मन क्रमवचनपतिहिसेवकाई * तियहित इहिसम आन उपाई ॥
असजियजानि करहिं पतिसेवा * तिहिपर सानुकूल मुनि देवा ॥
यह सतवति अहिराजकुमारी * त्यहि सतते हँसि शीश सुरारी ॥
सुनिप्रभुवचन कपिनसुखमाना * पुनि पुनि चरण गहे हहुमाना ॥
सुनु गिरिजा[4] असप्रभु प्रभुताई * केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग[5] उपजत नाशा * असकौतुककर केतिक आशा॥

दोहा—शीशपाइ प्रभु चरणगहि, बहुविधि विनय सुनाय ॥
आजको दिन रण परिहरहु[6], ममहित कोशलराय ॥ १२८ ॥

बहुरि विभीषण पगन परीसो * रघुपति चरणदिये मनपुनिसो ॥
तुम पितु सम दशकन्धर भाई * इहिकुलकी तोहिं लाजबड़ाई ॥
मुनि पुलस्त्य करि बारक दीपा * पायउ फल रघुबीरसमीपा ॥
महामोह वड अनभल माना * ज्ञान भयो तबगुण पहिंचाना ॥
युगयुगकरहु अकण्टक[7] राजू * सहित सुकीरति सुकृत समाजू ॥
सुमिरत तुमहिं सुजन गतिपावा * रघुपति चरित संगकरगावा ॥
सुनत विभीषण मनकरुणाभर * प्रकट नकहत समय विरहाकर ॥
काल कर्म गति कह समुझाई * चली तुरत गुरु आयसु पाई ॥

दोहा—बाहर करि कपि कटकते, फिरेउ विभीषण आप ॥
बिसरेउ दशमुख वैरही, हृदय अधिक सन्तापं[8] ॥ १२९ ॥

---

१ आश्चर्य । २ वज्र । ३ चुप । ४ पार्व्वती । ५ संसार । ६ त्यागहु । ७ एकछत्र । ८ दुःख ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिर चढाइ पालकी चढीसो * रघुपतिकृपा प्रभाव बढीसो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा * रसनो रटत निरन्तर नामा ॥
सरित सिन्धु संगम जहँ पावन * अस सुधिपाय गयो तहँ रावन ॥
संग मंदोदरि सब रनिवासू * मनोशोक रवि कीन्ह प्रकासू ॥
पाय रजाय सुसेवक धाये * चन्दन अगर सुगँध बहुलाये ॥
रचि दृढ दारुण चिताबनाई * जनु सुरलोक निसैनीलाई ॥
करि प्रणाम सब जनपरितोषी * धीरज धरसि तासु मति पोषी ॥
शिर भुजधरि बैठी करि आसन * भई जनुयोग सिद्धिकर बासन ॥

दोहा-देत अनल ज्वालाबढ़ी, लपट गगन लगिजाय ॥
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँची धाय ॥ १३० ॥

देखि चरित पुनीत सुरगावहिं * वर्षि सुमन दुंदुभी बजावहिं ॥
तासुक्रियाकरि निशिचरनाहा * भयउ शोचवश अतिउरदाहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन * वादि विषादकरिय जनि रावन ॥
सुत वित नारि त्रिविधसुखकैसे * उपजहि घटा जाहि नभ जैसे ॥
तडित विदित देखिय घनमाही * रहै न थिर तहँ तुरत छिपाही ॥
यह जिय जानि सुनहु दशभाला * बचहि नकोउ जग आये काला ॥
अब प्रभु यतन विचारहु सोई * रिपुकर नाश जवन विधिहोई ॥
वचन सुनततेहि कछु सुखमाना * काल विवस सुनि तीरथज्ञाना ॥

अहिरावणकी कथा ॥

दोहा-लागेउ करन विचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश ॥
समुझि हृदय अहिरावणहिं, आयउ जहां गिरीश ॥ १३१ ॥

दण्डेचारि तब तहँ निशि वीती * सन्ध्या वन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा * करि हर्षित संपुट भुज बीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी * सुन खगेश तेहिते बड़भागी ॥

---

१ जिव्हा । २ मंत्री । ३ मिथ्या । ४ घडी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंत्राकर्षन जपि दशभाला * अहिरावण चित डोल पताला ॥
लगेउ करन सो मन अनुमाना * केहिकारण दशमुख अकुलाना ॥
निशिचर नाह भुवन वश जाके * जीतन कहँ न वीर कोउताके ॥
मन क्रम वचन आननहि सेवी * धरेउ ध्यान उर कामदेवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवां * शिवमण्डप रावण रह जहँवा ॥
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ * करगहि निजआसनबैठायउ ॥

दोहा-अहिरावण तब रावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति ॥
प्रथम कही तेहिं सब कथा, जैसे भगिनि अनीति ॥ १३२ ॥

वध खर दूषण जिमि सुधिपाई * मृग मारीच कपट कृत जाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा * लंकदहन हनुमत कर वरणा ॥
सतुबांधिजिमि प्रभु चलि आयउ * बोलिकुमार विवाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पन अरु अतिकाया * परे समरे[1] माहि सुनु अहिराया ॥
तात कुशल अब सबइ सिरानी * कटक निशाचर सकल नशानी ॥
कुम्भकर्ण घननादहु मारे * राम लषण दुइ मनुज विचारे ॥
आनेहु बोलि तोहिं निज पासा * कहहु सुयतन होइ रिपुनासा ॥
सुनत शोचभा अहिरावणमन * बोला वचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जगनीति पियारी * करे अनीति होय भय भारी ॥
विना विचारि रारि तुम ठानी * कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी ॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ * सबते बड तेहि लघुकरिमानेउ ॥
यदपि न योग मोहि असवाता * तदपि हरहुँ तवलगि दोउ भ्राता ॥
लै पताल देविहि बलि देहौं * यशपूरण निशिचरकुल लैहौं ॥
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं * रविसमतेज होइ निशि जबहीं ॥

दोहा-कहि अस वचन प्रबोध करि, शीशनाइ बल भाखि ॥
आयउ रघुपति कटकमें, निज देविहि उर राखि ॥१३३॥

---

१ अंगद । युद्धभूमि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरिजा कहेउ सुनो भगवाना * अहिरावणको अतिबलवाना ॥
कहो तासु प्रभु उत्पति गाई * सुन बोले शिव गिरा सुहाई ॥
मंदोदरि ऐसा सुत जायो * रावण जाको सुन दुख पायो ॥
वीस व्यालयुत सुन विबुधारी * राखनयोग न मनहि विचारी ॥
स्वाननानते कह्यो बुलाई * आवहु याहि गाड़ि कहुँजाई ॥
दूत दाबि नैऋत्य सिधावा * पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा ॥
रघुपति चरित करनहित आगे * मरा न सो बालक तेहि लागे ॥
खायसि खनि माटी यक मासा * पुनिगा निकर नीरनिधिपासा ॥
तेहि लखि राहुजननि अनुरागी * भवनलायनिज पालन लागी ॥
यकदिन तहां शुक्र चलिआयो * बोले पुत्र कहाँ यह पायो ॥

दोहा-जेहि विधि पायो उदधि ढिग, सोसबदियोसुनाय ॥
कह्यो शुक्र दशशीश सुत, यह जानो सतभाय ॥

आदिहिते सब चरित सुनाये * अहिरावण धरिनाम सिधाये ॥
निजउत्पत्ति सुनी तेहि जबहीं * कूदिपरा सागर महँ तबहीं ॥
निकसा तुरत वितलमहँ जाई * तहां रहै अहिपुरी सुहाई ॥
तप प्रभाव तहँ सुनेउ घनेरा * वासुकि नगर देख चहुँ फेरा ॥
तफहितचल्यो नदीढिग जाई * कामन्दा देवी जेहि ठाई ॥
सुथलसमझ तहँ ध्यान लगावा * संवत चौदहसहसबितावा ॥
सबविधि देखि समाधि अडोली * वरंब्रूहि तब देवी बोली ॥
इष्टवचन सुन तेहि करजोरी * मांगेहु वर सुख भोग वहोरी ॥

दोहा-शेष महेश दिनेश सुर, ईश अजीश अनन्त ॥
मरों न काहू हाथसे, होउँ निशाचर कन्त ॥

पितहु कीन्ह अपमानहमारा * सोऊ मोहिं याँचै यकवारा ॥
सुनि देवी बोली सुन ताता * करिहौ तुमबहुविधि सुखगाता ॥
त्रेता शेष समय दशशीशा * याचाहिंतोहिं जोरि भुजबीशा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust, Delhi and eGangotri

मारै तुम्हैं न कोउ जगमाहीं * कपियक ममवाचा वशनाहीं ॥
कहिअस अन्तर भई भवानी * अहिरावण तब यहमति ठानी ॥
विविध भेष धरि अहिपुरजाई * अज गज हय खर डारहि खाई ॥
पुनिनागनसे भिरयो प्रचारी * कीन्हो व्याकुल सबहिन मारी ॥
तब नृप दर्विक बोल्यो ताही * विधिवत कन्या दई विवाही ॥
कुन्दनिनाम पाय तब नारी * काननमें घर करन विचारी ॥
पुनि कामन्दाके ढिग आवा * योजननव कर नगर वसावा ॥

दोहा—रह्यो असुरले ताहिमें, करन लग्यो सुख भोग ॥
अब त्रेताके शेषमें, भयो प्राप्त सोइ योग ॥

सूझन निजकर अति अँधियारी * मर्कट भट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला * अतिहिअगमजहँनहिंगतिकाला॥
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई * करि लंगूर कोट कठिनाई ॥
सो शोभा इहिंभांति सुनाई * भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत[1] शैल समाना * द्वार जहां तहँ मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा * किमि रवि गृह कर तिमिर[2] पसारा॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी * कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी ॥
वेष विभीषण सब अनुहारी[3] * पवनतनय पहँ गा छलकारी ॥

दोहा—सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपति पति दास ॥
तिनहिंनिदरि चल राम पहँ, मूढ हृदय नहिं त्रास[4]॥१३४॥

मर्म्म[5] न जान प्रभंजन[6]जाता * कीन्हेसि गमन विभीषण भांता ॥
ठाढ होहु बोलेउ सुनु भ्राता * चलेउँ जहां कृपालु जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई * संध्या करन गयउँ सुन भाई ॥
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं * भइ विलम्ब जनि राम रिसाहीं ॥
सत्यवचन कपि निजमन माना * सुनु खगेश भावी बलवाना ॥

---

१ ऊंचा । २ अंधकार । ३ अनसार । ४ डर । ५ भेद । ६ हनुमान् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कपट चतुरगति जानि नजाई * परमन हरै हरहि धनभाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहँवां * रहे फणीश[1] अरु प्रभु दोउ जहँवां॥
कपिपति जाम्बवंत नल नीला * वालीसुत सुखेन बल शीला ॥

दोहा-द्विविद मयन्दरु कीश गण, गय गवाक्ष कपिवीर ॥
सहित विभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर ॥ १३५ ॥

तिनहिं मध्य रावणशशिराहू * एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिणदिशि सोवत रघुनाथा * अनुज वामदिशि तेहि पर हाथा॥
प्रभुकर कर पर राजत कैसे * जातरूप पंकज फणि जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा * तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
सुभग बाण धनु धरे बनाई * लक्ष्मणसह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मनकीन्ह प्रणामा * देखि राम सुन्दर घनश्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं * मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥
करहिं विविध जप योग विरागी * जपहिं निरन्तर निशिदिन जागी ॥
सो प्रभु तेहि देखा भरिलोचन * कृपासिंधु सेवक भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह विचारा * करहुँ काज रावण अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुण आई* कवनी भांति जाहिं दोउ भाई ॥

दोहा-मोहनते मोहे सकल, मंत्रनते मुख मूँदि ॥
भयउ अदृश्य उठाइकरि, प्रभुहि चलेउ लै कूदि ॥१३६॥

यहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई * नभ मारग प्रकाश अति होई ॥
सो प्रकाश जब रावण देखा * कियप्रमाणतेहि वचन निशेखा ॥
मनमहँ हर्ष करहि अति भारी * अहिरावण लैगा असुरारी ॥
लै निज लोक गयउ पल माहीं * भयउ शोर तब कपिदल माहीं ॥
जागे वानर श्रीहत भारी * देखिय जिमि सरिता[2] विनुवारी ॥
पुनिदेखिय जिमि निशि विनुइन्दू[3]* भे वानर जिमि उड विनु चन्दू ॥

१ लक्ष्मणजी । २ नदी । ३ चन्द्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रवि विनु दिवस जीव विनु देहा * जिमि देखिय दीपक विनुगेहा ॥
एकहिं एक लगे तब बूझन * कहांगये त्रैलोक्य विभूषण ॥

दोहा-शोधेउ सबमिलि कटक तिन, नहिं पाये दोउ वीर ॥
भेव्याकुल सब भालु कपि, जिमि जलचर गत नीर[3] ॥१३७॥

सकल कहहिं यह विधिकहकीन्हा * रघुपति विरहप्राणकतलीन्हा ॥
शोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा * कहां राम लक्ष्मण दोउ वीरा ॥
करुणाकरहिं कपीश अपारा * बनी बात विधि कहा विगारा ॥
कटक निशाचर सकल सँहारी * रहा एकरिपु रावण भारी ॥
सोउ न रहत राम शर लागे * भाइउ हम सब परम अभागे ॥
कबहुँजोदशशिर अरिरणजीतहिं * उत्तरकवन देब हम सीताहिं ॥
असकहि बिकल मूर्च्छिमहिपरे * लागत वज्र शैल जिमि गिरे ॥
दशा विभीषण कही न जाई * विगत वत्स जनु धेनु लवाई ॥

दोहा-सहित पवनसुत ऋच्छपति, दुख मन भा बाड़िभांति ॥
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तिहिराति ॥ १३८ ॥

पवनतनय पुनि कह सब पाहीं * विस्मय एक होत मन माहीं ॥
कोउ इक आव विभीषण वेषा * प्रभुके निकट जात हम देखा ॥
पूछतवचन कहोसि आतिनीका * कपट नजानिय निशिचरजीका ॥
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा * अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नगलोक निवासी सोई * मम तनु वेष अवर नहिं कोई ॥
महाबली जानै सब माया * निश्चय तोहि दशशीश पठाया ॥
जेहिबल होइ तहां सो जाई * ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना * तव बल तात सकलजगजाना ॥
वेगि सो यतन विचारहुताता * कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥

दोहा-बिलखि कहेउ कपिपति, बहुरि, सुन मारुतसुत तात ॥

---

१ घर । २ पानी । ३ चिन्ता । ४ विभीषण । ५ जाम्बवन्त ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sri Sri Ravi Shankar Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिनु रघुनायक जन्म धिग, पल युग सरिस बिहात॥ १३९॥
यथा तृषित विनु वारिद वारी * रविविनुजलज[1] मीन विनु वारी ॥
भट अशस्त्र रणअनी अनाथा * बह्नि[2] अनिंधन गातसमाथा ॥
दीप अवर्ति सकल क्षणभंगी * तिमि हम सब देखिय बजरंगी ॥
जिमि सीता सुधि भेषज[3] आनी * तेहि प्रकार आनहु सुखदानी ॥
सुनत वचन मारुतसुत बोला * राखहुचित थिर कटक अडोला ॥
भुवन चारिदश तीनिहुँलोका * आनहुँ प्रभुबल प्रभुतजु शोका ॥
अबतुम सजग रहेउ सब भाई * लरेहु कालसन जो चढिआई ॥
असकहिसकृत चलेउ हनुमाना * गर्जत प्रलय पयोधि समाना ॥
चलत बाट इक तरुतर गयऊ * गीधिन गीध कहत अस भयऊ ॥
दोहा—नारिगर्भिणी गृध्रकर, बोली पतिसन वैन ॥
आनहु आमिष मनुज पिय, खाउँहोइ जिय चैन ॥ १४०॥
तासुवचन सुनि खग अस कहेऊ * अहिरावण रामहिं लै गयऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई * सो आमिष[4] बड़ भागन पाई ॥
कवनेउ यत्न देव मैं आनी * असकहि विहँग वाम सनमानी ॥
जबहिं पवनसुत अस सुधिपाई * चलेउ तहां सुमिरत रघुराई ॥
अभयप्लवंग पतालहि गयऊ * अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा * कपिसन डांटि कहत बहु रीशा॥
निदरि जात मोहिं तोहिं डरनाहीं* दीपहि जिमि न पतंग डराहीं ॥
जानेसि मोहिं न मरुतसुत बालक*स्वामि भक्त भंजन मुख कालक ॥
सो०—सुनत वचन हनुमान, बोलत भे विस्मय विवश ॥
अरे मूढ अज्ञान, मोरे सुत स्वप्नेहु नहीं ॥ १० ॥
कहत वचन शठ संयुत खोरी * कामविवश कब भइ मति मोरी ॥
ममसुतबनसि मूढ केहि काजा * इतना कहत तोहिं नाहिं लाजा ॥

१ कमल । २ अग्नि । ३ ओषधि । ४ मांस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केहि प्रकार तुम मम सुत भयऊ * निजउत्पति मोसन किनकहऊ ॥
सुनत कहहि मकरध्वजवचना * किहेउ दाह रावणपुर रचना ॥
जब आयो चलि उदधि[1] समीपा * बहेउ स्वेद[2] तव तनु कपिदीपा ॥
सोप्रस्वेद सागरमहँ गयऊ * पियउ मीन[3] तेहिते मैं भयऊ ॥
यहिप्रकार मैं तव सुत ताता * गोवहुँ नाहिं निज पिता न माता ॥
अहिरावणसेवा मैं करहूं * राखहुँ द्वार न कबहूँ टरहूं ॥

दोहा—सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूंछी सब बात ॥
लावा लक्ष्मण राम कहँ, कहा करत सो तात ॥ १४१ ॥

कहहु तात तेहि स्थल नाऊं * जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊं ॥
यह वृत्तान्त[4] अस जानहुताता * यह मैं श्रवणसुनेउँ कछुबाता ॥
सीतापति अरु फणिपति साथा * सो लैआयउ निशिचरनाथा ॥
करत होम तेहि कारण आजू * देविहि बलि देई नृपराजू ॥
जो कछु निजश्रवणन[5]सुनिपायउँ * तातसकलसो तुमहिं सुनायउँ ॥
निजप्रभुकाजलागि दुख सहेऊँ * तुमसन सत्यवचन मै कहेऊँ ॥
जानकहहु तुम जान न देऊं * प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊं॥
सुनि असपेलि चलेउ हनुमाना * भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥

दोहा—तेहि मुष्टिक कपि कहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहि ॥
हनहिं परस्पर एक इक, बल समान घट नाहि ॥ १४२ ॥

एकहिं एक सकहिं नहिं पारी[6] * पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहि लूमसन[7] बांधि भवानी * चलेउ बातसुत विलँब न आनी ॥
धरि लघुरूप होम गृह देखा * जीव सजीव परे नहिं लेखा ॥
तहँ देवी कर मण्डप रहई * शोणित घट बहु कोकहि सकई ॥
विविध भांति मेवा पकवाना * धरे आनि देवी स्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसून लै आई * सुमन मध्य प्रविशेउ कपिराई ॥

---

१ समुद्र । २ पसीना । ३ मछली । ४ हाल । ५ कानन । ६ जीती । ७ पूंछ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुमनहुँते करि अति हलुकाई * लेत पाणि जेहि जानि नजाई ॥
जब देविहि सो पुष्प चढायउ * बिकटरूप तब कपि दिखरायउ॥

दोहा—छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ॥
मुख बगारि ठाढे भये, कपि छबि लखत डराइ ॥ १४३ ॥

देवी प्रगट समुझ खलझारी * करहिं विचार हृदय अतिभारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगटभइ आजू * बड़भागी भा निशिचर राजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं * जो चढाव सो कपिमुख परहीं ॥
जो जहँ रही वस्तु समुदाई * बची न कछुक सकल कपिखाई॥
कपि खिलारि कौतुक विस्तारा * भाचह निशिचर कुलसंहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे * चढ़े कांध पर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्धि तेहि जाना * लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना ॥
ठाढ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी * निशिचर बहु आयुध धरि पानी ॥
कोऊ गदा कोउ धनु बाणा * शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दोहा—तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ॥
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत ॥ १४४ ॥

मायाबलते सकल विचक्षण * अति विकारमय मूढ कुलक्षण ॥
यहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं * अहिरावण आज्ञा दृढ गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग तिन काढे * मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढे ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू * भरि त्रयदण्ड विलँब अब करहू॥
पुनि अस वचन मूढमति कहहीं * सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं ॥
नाहिंत काल आइ नियराना * निशा स्वप्न सम दोउ जनप्राना ॥
बालहिं मूढ असम्भव वानी * सकुच लगै सो कहत भवानी ॥

दोहा—फणिपति चितवत राम तन, राम चितव अहिराज ॥
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनो दशा खगराज ॥१४५॥

---

१ अस्त्र-शस्त्र । २ लक्ष्मणजी । ३ चरित । ४ गरुड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विहँसि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा * जपे सकल जग नाम हमारा ॥
जाना देवि रूप हनुमाना * विहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक * भई तुम्हारि देवि तुम भक्षक ॥
सुनत गिरा[1] तिन मारन ठयऊ * घन[2] समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकल त्रासित भे भारी * कहहिं वचन भय हृदय विचारी ॥
अहिरावण भल कीन्ह न काजू * आने कपटवेष सुरराजू ॥
तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू * अब भा सबकर मरण समाजू ॥
संभ्रम[3] वश तब निशिचर झारी * बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी ॥

दोहा–प्रगटरूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ॥
अति भय त्रासित रजनिचर, सुनहु उमा मतिधीर ॥१४६॥

डगमगाननिशिचर अभिमानी * मारुतवेग यथा नदिपानी ॥
तेहि क्षण कपि लीन्हें दोउ भाई * धुनत तूल[4] निशिचर समुदाई ॥
छीन कृपाण लीन्ह हनुमाना * काटत भुज शिर कृषी[5] समाना ॥
खण्ड खण्ड तब खलदलकीन्हा * गहि पदडारि अनल[6]महँ दीन्हा ॥
करि लंगूर कोट कपिराई * तेहि महँ घिरि कोउ भागि न जाई ॥
इहि विधि सब निशिचर संहारे * अहिरावण लखि वचन उचारे ॥
रेकपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं * अहिरावण तैं जान न मोहीं ॥
जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा * अरु रावणसुतँ हतेउ विचारा ॥

दोहा–कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान ॥
असकहि खड्ग प्रहार किय, कपि तनु वज्रसमान ॥ १४७ ॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा * काटि शीश पावकमहँ डारा ॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा * लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा ॥
मकरध्वज विनती तब कीन्हा * बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा ॥
इहां राज्य भोगहु तुम ताता * भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता ॥

---

१ वाणी । २ मेघ । ३ शोक-संदेह । ४ रुई । ५ खेती । ६ अग्नि । ७ अक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस कहि कपि निजदलसो आवा * हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा ॥
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं * गइमणि पाइ फणी सुख पावहिं ॥
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई * तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई ॥
मिलेउ कपीश चरण धरिमाथा * पुनि पद गहे निशाचर नाथा ॥
दोहा—जाम्बवन्त अंगद सहित, मिले भालु अरु कीश ॥
सन्माने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश ॥ १४८ ॥
बहुरि सबहि भेंटे हनुमाना * कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्ही * प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्ही ॥
अनुज सहित हर्षित रघुवीरा * कहेउ वचन सुनु तनयसमीरा ॥
तव समान नहिं कोउ हितकारी * सुर मुनि सिद्ध मनुजतनुधारी ॥
यशतुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ * सुनि प्रभु वचन चरणकपिनयऊ ॥
नाथकीन्ह सब मैं केहिलेखे * तरणी चलत अगम जल देखे ॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा * सुनि अस मिलेकपिहि रघुनाथा ॥
कटक सहित हर्षे दोउ भाई *तेहि अवसर सुख किमि कहिजाई॥
छंद—कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकरसुनहुगिरिजाचितधरे ॥
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षत आरती सुरगण करे ॥
अति प्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन असकहा ॥
नर नारि यह कीराति सुनत गावत लहत मंगलमहा ॥
दोहा—करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय ॥
रामचरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरिलाय ॥ १४९ ॥
देवनिडर प्रभु गुणगण गावहिं * आरत हरकहँ विनय सुनावहिं ॥
विबुध विनय रघुपति सुनिकाना * कह प्रभु सत्यसिन्धु भगवाना ॥
चतुरानन वर दीन्ह अपेला * तेहि कारण यह बाढ़्यो खेला ॥
नाहिंत लषण एक पल माहीं * राखत यातुधान कुल नाहीं ॥

१ सर्प । २ नौका । ३ ब्रह्मा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अजहुँ होय रण कौतुक भारी * निरखहु तुम सब शोच बिसारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेषा * भटमहँ जासु भुजाकर रेखा ॥
तेहि रण माहि महँ हतहुँ प्रचारी * विनु श्रम सबसों कहत खरारी ॥
शंभु कृपा अब संशय नाहीं * सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं ॥

दोहा—सत्यवचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूह ॥
चले कहत जय जयति प्रभु, वर्षे सुमन समूह ॥ १५० ॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा * खगपति राम कृपा मैं गावा ॥
अब हिय हर्षि सुनहु द्विजराई * मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई ॥
याज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती * भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिरसुहावा * सुनि ममनाथ परमसुखपावा ॥
अहिरावण वधान्त भगवाना * चरित किये सो करहु बखाना ॥
सुनि मुनि विनय ऋषय पुलकाई * बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन * सहजसुभग सज्जनमनभावन ॥
मानस हरि चरित्र सुठि नीका * सुनतकरत जो कोउ मनफीका॥

दोहा—सोइ जगवंचक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाय ॥
भवसागर महँ भ्रमत सो, अमितकल्प चलिजाय ॥१५१॥

मानस सुनत न मनाहि अघाहीं * तासम धन्य अवर कोउ नाहीं ॥
धन्य धन्य तुमसन कोउ आना * ललित चरित अतिसुनहु सुजाना॥
राम लषण दलसहित विराजे * जयति रामकहि कपिगण गाजे ॥
राम सैन सुखमाअधिकाई * निगमागम जानेउ बुध भाई ॥
वहां दशानन सब सुधि पाई * दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहिरावण कर वध सुनि काना * भयउ तेजहत अति दुखमाना ॥
वचन वज्र सम लागेउ ताही * संभ्रम मूर्च्छि परेउ महि माही ॥
कटे पंख जिमि विहँगविहाला * रंगचीरगत निशि हिमकाला ॥

१ देवगण। २ मरण। ३ पक्षी।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुख सुखान लोचन जल बहई * वचन न आव शीश धुनि रहई ॥
दोहा-मयतनया[1] तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥
मान न मूरख कालवश, परम क्रोध कहँ पाइ ॥ १५२ ॥
नारि वचन सुनि तेहि रिस बाढी * उठि बैठेउ धरि धीरजगाढी ॥
तेहि अवसर मंत्री यक आवा * करि आदर दशमुख बैठावा ॥
सिन्धुरनाद नाम बलवाना * वृद्ध ज्ञान मय परम सुजाना ॥
सदा विभीषण कर सँग ठयऊ * कबहूं दशमुख सभा न गयऊ ॥
आवा सो भल अवसर पाई * कहेसि नीति रावणहिं बुझाई ॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी * तब वहिराइ बात कह आनी ॥
करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ * प्रभु दुहँ ताग हृदय पट बुनेऊ ॥
अब यहिकहौं सो सहज उपाई * जेहि यहि मूल समूलनशाई ॥
दोहा-यह विचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुलराउ ॥
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ॥ १५३॥

नरांतकका संग्राम ॥

अक्षादिकन सुतन बल दूना * कस सुरारि मन मानहु ऊना[2] ॥
सचिववचन सुनि दशमुख कहई * अब हमरे कुलको भट[3] अहई ॥
अपने मन महँ करहु विचारा * हैनारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अभुक्त माहिं भा जोई * दियो बहाइ मरा नाहिं सोई ॥
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ * पुर विहवावल नृपता दयऊ ॥
कोटिबहत्तर एक प्रभाऊ * राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ॥
दूत पठाइ बुलावहु ताही * जीतिहिसो रिपु रणके माही ॥
दनुज अधीश चतुर चर पठवौ * धरहु धीर चित चिंता घटवौ ॥
दोहा-तासु मंत्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद[4] अमान ॥
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समझायउसनमान ॥ १५४ ॥

---

१ मन्दोदरी । २ सन्देह । ३ योद्धा । ४ अत्यंतप्रसन्न ।

In Public Domain. Chennai Archives, Trawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धूम्रकेतु तुम परम सयाना * लै ममपाती करहु पयाना ॥
बसत जहां नारान्तक राजा * तहां न तात अवरकर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई * सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसु पाइ चार तहँ गवना * यह सुनि बिहँसि कह्यो अहिद्वना
काकनाथ यह गाथ सुहाई * मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उत्पत्ति यथाविधि * पुर विहवाबलगा कवनीसिधि ॥
सुमिरिकाकपति उर अवधेशा * मनप्रसन्न कर कह काकेशा ॥
अतिसुन्दर शुचि यह संबादू * चित थिर करि सुनिये उरगादू ॥

दोहा—नख चौगुण बसु उन तहँ, सप्त अकाश मिलाइ ॥
इतने निशिचर एक दिन, भे रावण पुर आइ ॥ १५५ ॥

पुरमहँ उपजे खल इक साथा * तब सुनि हरषा निशिचर नाथा॥
निज गुरु बोलि चरण शिरनाई * बूझा मुदित सो कलश धराई ॥
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ * आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं * भये आजु जे तव पुर माहीं ॥
तेसुत सब निज निज पितुघाती * मुख देखत सुन सुर आरोती ॥
घर राखे धनसहित विनाशा * होइ अवशि नहिं उबरन आशा॥
शुक्रवचन सुनि डरे निशाचर * कह करिये अति वाद परस्पर ॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू * सौंपिय सिन्धुहिं और नकाजू ॥

दोहा—सपदि करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोर ॥
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोर ॥ १५६ ॥

सेवक दशमुख आयसु पाई * धाये तुरित चरण शिरनाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी * सुनहु सकल पुर नर अरु नारी॥
आज अभुक्तमूल भये बालक * डारहु सागर सब कुलघालक ॥
बोरे सबनि बाल इकठाई * भावीवश मधुमाखी नाई ॥

१ गरुड । २ वैरी । ३ बालक । ४ शीघ्र । ५ आज्ञा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाय अधार वृक्ष वट बौरा * पावन लगे क्षीरे चहुँ ओरा ॥
पीवत क्षीर अब्द भरसाती * पुष्टभये खल निशिचर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाई * सुरसरि संगम भा जेहि ठाई ॥
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा * सबनिविलोकि मुदित शिरनावा ॥
छंद-शिरनाइ मुदित विलोकि शिव मंदिर सुहावन पावनं ॥
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठिचले सुन अहि दावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाप्राची कोश शतरस चलिगये ॥
बैठे जलधिमहँ पाइ थल वर शंभु चरणनाचितादिये ॥११॥
दोहा-जानत नहिं उत्पत्ति निज, मन महँ करत विचार ॥
गेतेहि ढिग जाकर विदित, रविते छठवीं बार ॥ १५७ ॥
हरि अरि गुरु निजशिष्यनचीन्हा * करत प्रणाम आशिषादीन्हा ॥
कहि निजनाम सबनि समुझावा * कुलगुरु जाना विनय सुनावा ॥
निज उत्पति बूझी शिरनाई * भृगुनन्दनसो सकल सुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने * लखिरुख भृगुनायक सन्माने ॥
करा प्रतोष मंत्र गुरुदीन्हा * शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशयत्यागी * भे विरंचिपद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन * वर्ष सहस तप किय उरगासन ॥
श्वास धार कृत वर्ष हजारा * रहे ऊर्ध्व मुख विना अहारा ॥
दोहा-एकपाद पुहुमी दये, अपर अंग अनयास ॥
सबल पुष्ट तनु मन हरष, स्वप्नेहु भूख न प्यास ॥ १५८ ॥
तप अतिउग्र विचार विधाता * तिन ढिग गमने मुखमुसकाता ॥
हंसारूढ कमंडलु हाथे * श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥
आनन चारि नयन वसु नीके * चारिउ भाल भस्म शुभटीके ॥
उपमामय प्रभु सब जगअयना * भाष्यो दयासदन बरवयना ॥

---

१ दूध । २ पूर्व । ३ शक्र । ४ शत्रु । ५ समाधान । ६ पृथ्वी । ७ कठिन ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मांगहु वर जो सब मनभावा * सुनेउ सबनि विधिपद शिरनावा ॥
नाथ चहत हम यह वरदाना * हमहिं न कोउ जीतै मैदाना ॥
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी * आनपाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी ॥
हरिसुत[1] है तुम्हार गुरु भाई * तेहिसन किहेउ न कबहुँ लराई ॥

दोहा-जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचन प्रमाण ॥
एकहि कहँ वरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥ १५९ ॥

दियउ नरांतक कहँ वरदाना * रहे अपर जे धरि उर ध्याना ॥
तिनसन वरंब्रूहि विधि कहेऊ * सुनत प्रमोद[2] सबनि उर लहेऊ ॥
सुनि विधिगिरा सबनि कह स्वामी * देहु एकवर अन्तर्यामी ॥
देवासुरसंग्रामहिं माहा * जीतहिं हम यह वर सुरनाहा ॥
असकहि रहे दनुज शिरनाई * तिनसन कहेउ विरंचि बुझाई ॥
तुम अजीत सब सन सब भांती * वानर भालु त्यागि दुइ जाती ॥
यहि विधि सब कहँ दै वरदाना * ब्रह्मलोक गये ब्रह्म सुजाना ॥
विधिते लहि वर तिन सुख बाढा * लागे करन बहुरि तप गाढा ॥

दोहा-गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ॥
जोरि युगल कर एक पद, निशिदिन आठौ याम ॥ १६० ॥

विनु प्रयास ठाढे सब भाई * क्षुधा[3] तृषा[4] निद्रा बिसराई ॥
गुण सहस्र संवत सब ऐसे * गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ॥
सबन शीश पुनि अवनी दीन्हा * उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा ॥
जोरेकर निरोध कर श्वासा * जपहिं मंत्र शंकर वर आशा ॥
मुनिगण तिनकर साधन देखी * मन महँ मानत सकुच विशेखी ॥
हरिइच्छा बल हृदय विचारी * निरखि चले मुनि जपत पुरारी ॥
अयुत अब्द बीते खगनायक * भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक ॥
चढे वरद[5] हिमसुतासमेता[6] * आये तिनतट कृपानिकेता ॥

---

१ दक्षिण । २ हर्ष । ३ भूख । ४ पियास । ५ बैल । ६ पार्व्वती ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

दोहा– बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, मांगहु वर मन भाव ॥
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥ १६१ ॥
मैं तप कीन्ह दरश तव लागी * नाथदीन जनचित अनुरागी ॥
अब मांगत आवत मोहिं लाजा * ठाढरहा कहि निशिचरराजा ॥
मांगु सकुच तजि असहर कहेऊ * नारांतक तब मांगत भयऊ ॥
मोहिं विभव[1] अस देहु गोसांई * भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई ॥
पुर अनयास[2] बसहि ममनाथा * यह कहि रहा जोरि युग हाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा * गमने भवन सहित वागीशा ॥
शिवप्रसाद नारांतक पावा * अंतरिक्ष पुर सपदि बसावा ॥
पुर विहवाबलकी रुचिराई * कहत कछू इक तुमसन गाई ॥
दोहा–ऋतु रवि दूने कोटिसो, भवन बसे इक ठौर ॥
जातरूप मय नग जडित, अति शोभित चहँ ओर ॥ १६२ ॥
योजन ढाई शत चकलाई * चौंसठ कोश उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा * विस्मय विश्वकर्म्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे * गढ भीतर चौहट्ट निधि पूरे ॥
वणिक पद्म धन तुच्छबखाना * वन उपवन सरिता सर नाना ॥
वसत प्रजा पुर सवन अपारा * नारांतक गढ मध्य सँभारा ॥
षोडशकोश कोट चहुँ ओरा * मणि माणिक लागे नहिं थोरा ॥
हय गज रथ खच्चर समुदाई * कहि नजाइ खग मृग विपुलाई॥
कोटि बहत्तर एकै साथा * विद्या पढन लगे खगनाथा ॥
दोहा–हरि प्रेरित तेहि काल महँ दधिबल पहुँचा आय ॥
पुर विहवाबल निरखिसो, कछुदिनरहा लुभाय ॥ १६३ ॥
भावी वश निशिचर सँग कीशा * वर्ष एक पढ सुनहु मुनीशा ॥
गुरुइकवार कहेउ रिसियाई * हतिहसितैं आपन गुरुभाई[3] ॥

---

१ ऐश्वर्य । २ बेपरीश्रम । ३ नरान्तक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विनु अघ[1] सुनि दधिबलगुणशापा * बिदा मांगि गवना करिदापा[2] ॥
मारग[3] मिले देवऋषि[4] तेही * गहे सुकंठ[5] सुवन पग नेही ॥
लखि अशीष दै बूझातेही * दधिबल कवन काजगएजेही ॥
तब नारांतकपुर प्रभुताई * दधिबल नारदमुनिहि सुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी * रहे ब्रह्मसुत हृदयविचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना * बार बार सुमिरे भगवाना ॥

दोहा- दधिबलते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ ॥
तनु धरि जेहि हरिभक्ति नहिं, जन्मवा[6]दिजगजांइ ॥ १६४॥

यह विचारि भजु रामहिं ताता * उपजेउ सुनत ज्ञान मुनिबाता ॥
ऋषिपद परशि आशिषा पाई * कपिपति सुत गमने हरषाई ॥
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवां * पयँनिधिमध्य रुचिर गिरितहँवा॥
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा * सुभग देखि कपिवर मनभावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई * कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारदताहि देइ उपदेशा * गये विरंचिहि धाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत विद्यापाई * जहां तहांकी विविध लराई ॥
विन्दुनाम इक निशिचरआहा * सो खल रहा बितलथलमाहा ॥

सो०-अति रणधीर जुझार, चढे शक्रपर बलि विपुल ॥
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुति सन्त कह ॥ ११ ॥

सप्तकोटि निशिचर सँग ताके * असित मेरु सम खल भटवांके ॥
सुनासीर कोपेउ इक वारा * सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि विन्दु केवल गृह गयऊ * तासु नारि निशिचर सुखदयऊ॥
सब निशि भोगकरा खल पापी * उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्तकोटि सुत नाना नामा * उदर वक्र[7] सकल बलधामा ॥

---

१ पाप । २ क्रोध । ३ राह । ४ नारद । ५ सुग्रीवसुत । ६ था । ७ क्षीर-सागर । ८ इन्द्र । ९ टेढ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोटि बहत्तर तनया जाके * लाजहिं मृगलोचन लखिताके ॥
तिनमहँ बिन्दुमती इक सुंदरि * नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि ॥
निरखि बिन्दु निजमन अनुमाना * नहि नारांतकसम कोउ आना ॥

दोहा—यह विचारि चितबिन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ ॥
बिन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ॥ १६५ ॥

सकल सुता इक संग विवाही * यथायोग्य जेहि कहँ जसचाही ॥
नारान्तक सबसेन समेता * करि विवाह फिरगयउ निकेता[1] ॥
पुर विहवाबल कीन्ह बसेरा * प्रजासहित सुख करत घनेरा ॥
जोतिय चहिय विबुध गृह भाई * सोभावीवश निशिचर पाई ॥
नारि पतिव्रत जेहि मरमाहीं * तेहिं प्रतापनिज अमरडराहीं ॥
बिन्दुमती विद्या समताता * बुधजनसभा चरित विख्याता ॥
नारान्तक उत्पति मैं गावा * सुन खगेश पुनि चरित सुहावा ॥
पुनि पुनि हरि हर पद शिरनाई * गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई ॥

दोहा—चारन दशमुखको तुरत, मगचलि पहुँचो जाय ॥
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ भयउ हरषाय ॥ १६६ ॥

तेहि मारुतदिशि कानन भारी * पर्णलेत देखेउ तहँ वारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढा * बूझेसि ताहि धीरधरि गाढा ॥
कवन रीति यहि पुर महँ भाई * तरुपर[2] चढत भूपसुत आई ॥
चार वचन सुनि सो मुसकाना * कवन नगर तुम बसत अयाना ॥
नारान्तक नृपकै यह वारी * तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा * कछु डरि पुनि निजमारगलीन्हा ॥
लिये कनकघट[3] सुखमापूरी * वारिलेन आई तियरूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी * बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥

दोहा—तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ॥

१ घर । २ वृक्ष । ३ स्वर्णके कलश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आइउ तुम जलभरन कहँ, बोलेउ त्याग डराव ॥ १६७ ॥
दूतवचन सुनि निशिचर चेरी * बोली हँसि करि एकहि वेरी ॥
नारान्तक दासिनकी दासी * हम ताकी दासी विश्वासी ॥
सदा भरैं यहि सागर पानी * यहँ आवहिँ केहि कारण रानी ॥
कहिहउ और काहु अस वाता * पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥
असकहि गवनी लै जल नारी * तिनसंग धूम्रकेतु पगधारी ॥
गढभीतर कीन्हेसि पैसारी * निरखे विपुल[1] कूप सर[2] वारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा * फिरत विलोकैल[3] पुर चहुँ ओरा ॥
अन्तरगढ तेहि चारि दुवारा * तहाँ न चर पावहिं पैसारा ॥
छं०—पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगि फिरि आयऊ ॥
यहि भांति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत ठाढ चौहट मध्यसो जब रहि गयो ॥
निशिचर निकंदन[4] होन लगि विधि[5] ताहिइक अवसरदयो १२
सो०—गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी[6] ॥
लीन्ह धार तेहि मार, गढ इमि कीन्ह प्रवेश चर ॥ १२ ॥
बैठेउ सभा नरान्तक जाई * कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनि रसगुण वसु एका * अंकरीति लिखि गुणी विवेका ॥
वन्दीजन नट कौतुक करहीं * प्रतिदिन कवि कोविद[7] उच्चरहीं ॥
रावणदूत सभा सो देखी * मनमहँ चकृत भयो विशेषी ॥
तब चारण मन अस अनुमाना * कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण वसन सुआसन जोहा * देखि सुखद चारण मन मोहा ॥
याम दिवसगत अवसर पावा * नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई * कुशल तासु बूझी हरषाई ॥

बहुत । २ तालाव । ३ देखत । ४ नाश । ५ ब्रह्मा । ६ नट विशेष तमाशा करनेवाले । ७ विद्वान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-नारान्तक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ॥
समाचार गढ लंककर, वर्णेउ दूत सचेतु ॥ १६८

चरभाषित नारान्तक सुनेऊ * क्षणकमाहिं निज कारण गुनेऊ ॥
पुनि पत्री निशिचरपति बांची * मानी चार बात सब सांची ॥
उठ्यो सभाते हृदय रिसाई * गा निजभवन शोच सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई * पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी * तुम जनि करहु रामसन रारी ॥
गहहु चरण पिय अकसर जाई * रसन सफलकरि विनय सुनाई ॥
मांगि भक्ति वरप्रेम दृढाई * निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
नारिवचन तेहि मनहिं न भावा * तब उठि कोट द्वार खलआवा ॥

दोहा-कहत बजाव निशान घन, सजहु सेन चतुरंग ॥
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितु चारनके संग ॥ १६९ ॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा * लगे निशाचर सजन समाजा ॥
अमित वाजि गज उष्टर नाना * रथ खच्चर खेचर बहुयाना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहिपानी * निशिचर अनी नजाइ बखानी ॥
जय सब संयुत साज सजाई * विविध निशान हने हरषाई ॥
कन्त जात निश्चय जियजानी * बिन्दुमती निजचित अनुमानी ॥
राम विरोध न यहि कल्याना * महूं संग अब करहुँ पयाना ॥
भूषण वसन सुअंग बनाई * कन्त चरण गहि विनय सुनाई ॥
सासु श्वशुर दर्शन हित नाथा * हमहूं चलब प्राणपति साथा ॥

दोहा-दशमुखसुत सुनि तियवचन, हृदयपरमसुखमानि ॥
कहेउ चलहु सब सखिन सह, प्रमुदितछाँडि गलानि ॥ १७० ॥

सुनि पति वचन नारि हरषानी * चली संग लै सखी सयानी ॥
लै दल नारान्तक पग धारा * अमितसेनको कहिसक पारा ॥

---

१ अधिक । २ घोडा । ३ हाथी । ४ सेना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुधजन कहत सुनहु खगराजा * अयुत[1] सतावन बाजत बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँगलीन्हे * अति आतुर गमना रिस कीन्हे ॥
चलत शकुन मग ताहि न होई * गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला * जिय महँ संशय करत विशाला ॥
कोल कूर्म अहिपति[2] अतिडरहीं * पुनि पुनि रामचरण चित धरहीं ॥
समुझि रामबल संशय त्यागी * सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी ॥

दोहा—नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ॥
दिग योजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीशसज्ञान ॥ १७१ ॥

इहां कृपालु रमेश खरारी * असित जलदसम सेन निहारी ॥
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू * सचिव बोलि कह रघुकुलकेतू ॥
सखा विलोकहु दक्षिण ओरा * गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
उमा राम सब अन्तर्यामी * चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
रामवचन सुनि दशमुख भ्राता * कह हँसि गहि प्रभुपद जलजाता॥
देव देव नहिं दल जलवाहा * अहहि नरान्तक निशिचरनाहा ॥
विहबावल पुर बसत गुसाई * पठवातेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूम्रकेतु चर संगा * करत कुलाहल नाद उतंगा ॥

दोहा—तेहिसँगगुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान ॥
सेनसंग चतुरंग[4] खल, डोलत विविध दिशान ॥ १७२ ॥

यह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना * विहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना ॥
पाइ राम रुख पवनकुमारा * उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषण प्रभुपद शिरनाई * धाये कहि जय जय रघुराई ॥
वातजात निशिचर समुदाई * देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई ॥
कटकटाइ गरजे अति भारी * देखेउ इमि आवत वनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता * यह आवत धावतको भ्राता ॥

---

१ सत्तावनहजार। २ शेषनाग। ३ हल्ला। ४ रथारूढ, गजारूढ, अश्वारूढ, पदचर।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वर्ण शैल विकराल शरीरा * गर्जत प्रलय जलद सम वीरा ॥
तब नारान्तक सन कह दूता * यहै पवनसुत बली अकूता ॥
दोहा–सिन्धु लांघि लंकहि दहेसि, पुनि हति अक्षकुमार ॥
कालनेमि कहँ मारिमग, लावा मेरु उपार ॥ १७३ ॥
पुनि अहिरावणसह परिवारा * पैठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई * आवत अब तव ढिग सोइ धाई॥
यहि कर भुजबल अहै अपारा * सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढाइ सुधारेसि बाना * तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपि डारा * पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे * मिश्र रसातलगे गिरि जैसे ॥
पवनपूत बल लूम पसारा * कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्णसम भयऊ * विधिवश तेहिकर प्राण न गयऊ॥
दोहा–एकदण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ ॥
पुनि शठ उठा सँभारि तनु, धायउ धनु धरि हाथ ॥१७४॥
छांडेसि अगणित सायक कोपी * क्षण इक कीश कटक गा तोपी॥
रामप्रताप प्रभंजन जाया * करगहि अरि शर तोरि बहाया ॥
देखि पवनसुतकी प्रभुताई * वर्षत सुमन विबुध झरिलाई ॥
जय जय पिंगलाक्षसुरभाषा * सुनि दशकन्धतनय मनमाषा ॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई * कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कहकलकीशजो कछुबल धरहू * मोसन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहिं विबुध तोरि भुजजोरा * निज उर सहु इक मुष्टिक मोरा ॥
लागत ठाढ रहै जो वानर * तौ जानहुँ तव भुजबल आगर ॥
सो०–हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोंकि उर ॥
अति सकोप मुसक्यात, क्षणक ठाढ सम्मुख रहेउ ॥ १३ ॥
तबतेहि कपिकहँ मुष्टिकमारा * भयउ तडित सम शब्द अपारा॥

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टरा न तहँते पग हनुमाना * हृदय न निशिचर नेक लजाना॥
दुइ मुष्टिक तेइँ फेरि चलावा * तब मारुतसुत कोप बढावा ॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा * डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा ॥
विकलताहि करि कपि अतिगाजे* भे व्याकुल निशिचर बहु भाजे ॥
कोटिन निशिचर कपिकर गहहीं* रामदूत कर कौतुक अहहीं ॥
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे * देखि देव जय जयति पुकारे ॥
एकदंड गत निशिचर जागा * बहुविधि समर करन सो लागा ॥
छंद—लागेउ करन पुनि समर बहुविधि निजसुभट बहु फेरिकै॥
खल कोटि कोटि प्रचंड नायक कपिहि रण महँ घेरिकै ॥
रणरंग रंजित वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही ॥
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछरात उर विदारत[1] तर्जही[2] ॥१३
दोहा—सघनवाहिनी जलज वन, जिमि करिकृत उत्पात ॥
रिपुन हनत तिमि वायुसुत[3], विनु श्रम प्रमुदित गात[4]॥१७५॥
करत समर[5] आयउ तेहिठामा * जहँ नित होत रहा संग्रामा ॥
लरत अकेल तहां हनुमाना * धायउ वालितनय बलवाना ॥
ता पाछे कपि चमू अपारा * चले कहत जय कृपाअगार[6] ॥
लीन्हे गिरिवर तरु पाषाना * जहँ तहँ करन लगे मैदाना ॥
अंगद आइ पवनसुत पाहा * कहि जय रघुवर सन द्विजनाहा॥
दोऊ भट इकसँग करि हूहा * हतनलगे अरिसेन समूहा ॥
देखत भालु कीश कृतमारी * भागिचले निशिचर भयभारी ॥
देखि अनीनिज त्रसित बहूता * भा अति कुपितदशाननपूता ॥
छं०—अति कुपित भा दशमुखसुवन निजभटनशपथदिवाइकै ॥
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहँ पराइकै ॥
विधिदीन विविध अहार कपि दल खात कस न अघाइकै ॥

फारत । २ गर्जहिं । ३ हनुमान । ४ तनु । ५ युद्ध । ६ कृपाके स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापसधाइकै॥१४॥

दोहा-सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय ॥
लागे लरन सकोप सब, माया कपट कुभाय ॥ १७६ ॥

मायातिमिर पसार अपारा * अस्त्र शस्त्र बहु भांति प्रहारा ॥
शक्ति शूल वर विशिषकराला * डारहिं रज तरु शैल विशाला ॥
गिरत ऋच्छ कपि लागत सायक * उठहिं बहुरि कहि जयरघुनायक॥
निजदल विकल विलोकि खरारी * सत्यसिंधु इकशर संचारी ॥
रिपु शर काटि तिमिरकर दूरी * प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंगमहँ पुनि सो तीरा * प्रविशेउ आइ सुनहु मुनि धीरा ॥
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा * गहि गिरितरुकहिजयजगदीशा ॥
निशिचर अनी मध्यगे जबहीं * दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं ॥

दोहा-मरे तमीचर कोटि षट, जानि निशा परिवेश ॥
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहां अवधेश ॥ १७७ ॥

अंगद हनुमदादि कपि भालू * आये जहँ रघुवीर कृपालू ॥
प्रभुहि विलोकि चरण शिरधरे * भे श्रमरहित सकल सुखभरे ॥
अतिआदर प्रभुकियसन्माना * सब कहँ बैठन कह भगवाना ॥
पुनि रजाँइ लै थलनि सिधाये * छवि वारिधि प्रभुपद शिरनाये ॥
अंगद हनुमत निकट निवासी * रामचरणसुखमा गुणराशी ॥
दोउभट कर परसत प्रभु पाऊ * देखि सुरन मन भा अतिचाऊ ॥
हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा * पद गहि नित्त रहत नर भूपा ॥
हरि न सिहाहिं सुमनझरलाये * निज निज आश्रम अमर सिधाये॥

दोहा-बन्धु सचिव सेनासहित, शोभित श्रीभगवान ॥
तुलसिदास ते धन्यनर, जे यह ध्यान लुभान ॥ १७८ ॥

---

१ मायारूपी अन्धकार । २ तूण । ३ मेरु । ४ वृक्ष । ५ निशाचर ।
६ संध्याकाल । ७ आज्ञा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत नारान्तक सेन समेता * गयउ जहाँ दशकन्धनिकेता ॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई * कुशल बूझि बैठेउ हरषाई ॥
देखि नरान्तककै समुदाई * दशमुखशठ सब शोच दुराई ॥
जेहि विधि हरि लावा जगमाता * ताहि आदि कृतकृत विख्याता ॥
कुम्भकर्ण घननाद निपाता * कहि विलखा अहिरावण घाता ॥
पितुमन मलिन नरान्तक देखा * बोला खल उर गर्व विशेखा ॥
तजहु सकल संशय विबुधारी * करिहहुँ प्रात समर अतिभारी ॥
चमू कीश विनु क्षिति[2] करि ताता * धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥
छं०—धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात वार नलाइहौं ॥
धरि धरि विपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं ॥
भुजबल कहहुँ निज नहिँ बहुत करिरिपुन प्रकट दिखाइहौं ॥
विनु श्रमहिं तातनको बयरलै तव चरण शिरनाइहौं ॥ १५ ॥
दोहा—सुनत बीसभुज सुतवचन, बार बार उर लाइ ॥
लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ ॥ १७९ ॥
बिन्दुमतीआदिक रनिवासू * सब चलिगईं मँदोदरि पासू ॥
सासुहि मिलि बैठीं सब नारी * मयतनया करि आदर भारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरनी * प्रभुयश ताहि सुनायउ वरनी ॥
देइ पतोहुन वास सुहावन * आपुलगी सुमिरन जगपावन ॥
शयन करहु कह सुतहिनिशाचर * उठा आपु मतिमन्द अघाकर ॥
गातेहि भवन कुटिल[3] दशग्रीवा * जहँ मयतनया सद्गुण सीवा ॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी * पाइ सुअवसर गहि पगपानी ॥
पियसुनाय अतिकोमल बयना * लगी कहन जल भरि युगनयना॥
दोहा—नाथ निगम आगम विबुध, कहत प्रकट यह बात ॥
बुधजन सो जो आधहू, राखै सरबस जात ॥ १८० ॥

---

१ रावण । २ पृथ्वी । ३ निद्रा । कुबुद्धि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तजहि न हठ शठ सरबसखोवै * यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै ॥
सो विचारि प्रभु परम सुजाना * मोरवचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाई * अनुजभांति मिलिये प्रभुजाई ॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई * पुनि तुम गवनहुँ पुत्र लखाई ॥
प्रभुपद गहि मांगहु वरएहू * पदपंकजरति विमल सनेहू ॥
प्रियावचन तहि विषसम लागा * सो गृहतजिगा अनत अभागा ॥
निजनारी कहि कटुअभिमानी * कीन्हशयन निशि गइ बड़जानी॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता * जागे रघुबर त्रयजगत्राता ॥
दोहा-ऋच्छ कीश जगदीशपद, शीश नाइ रुखपाइ ॥
धरि गिरि तरु धावत भयउ, कहि जय जय रघुराइ॥ १८१

कपि घेरा गढ यह सुनि काना * रावणसुत लखि निपट रिसाना ॥
साजि विपुलदल हनत निशाना * गढते चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई * विशिषबरषि कपिदल विचलाई ॥
निकरे निशिचर गढते कैसे * शलभ समूह शैलते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे * कटकटाइ मति विक्रमगाजे ॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भँवाई * रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर फल बेलू * केतिनदेत विदिशि दिशि मेलू ॥
इक दिशि इमि हरि कृत संग्रामा * दिगदूजी अंगद बलधामा ॥
दोहा-निशिचर सेना उदधिसम, मन्दर इव दोउ कीश ॥
मथतदेखि जय रतन लगि, हँसे विबुध सुरईश ॥ १८२ ॥

छं०-इमि निरखि पराक्रम करतकीश, भाक्रोधपरमरजनीचरीश
करि प्रलय कन्दते घोर शोर, धर कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इकबार मार कर शर समूह, किय विकल अस्त्र हनिकीशजूह

१ भाईकीतरह । २रात्री व्यतीत हुये । ३ टीडी । ४ मंदराचल पर्वत ।
५ नरांतक । ६ समूह ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोउ टेरत कपिपतिचितउचोट, कोउसुरतकरतनिजधामओट१६
बहु चले कन्दरा शैल ताक, कोउ दवकत इतउतपातझाक ॥
कोउ देत दुहाई लषण राम, कोउ कहत विधाता भयोवाम ॥
यहि बीच नरान्तक करप्रधान, तेहिधायगहेउयुवराजपान ॥
बहुभटलपटाने अंग संग, सब संग उठेउ अंगद उतंग ॥ १७ ॥
नभकीश कीन्ह कौतुक अभूत, रविमंडलपहुँचेउवालिपूत ॥
अँगगारे जारे तपनि आंच, पुनि आयउ जहँ संग्रामराच ॥
यह निरखि अपर यूथप पिशाच, तुर आइ गयउ सेना समाच॥
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड, उर लाग आन अतिकठिनदण्ड१८
महि परेउ तनयतारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड, होइ गिरेउ यूथपति सहस खंड॥
सब चरित सुनेउ रविकुलदिनेश, कह जाहु वेगि अहिराज शेष॥
चलेनाइ माथ शंकर मनाइ, धनु बांधि बांधि विकराललाइ ॥
उर अंगद कर धरि सुमिरिराम,श्रमविगतभयउबलअतुलधाम१९
दोहा—विगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ॥
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दलसाज ॥ १८३ ॥
सुनत टँकोर शरासन निशिचर * वधिर भये नहिं सुनत शब्दपर ॥
वर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा * काटे पाणि पाँय बहुमाथा ॥
उडहिं अकाश शीश भुज कैसे * धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी * यथा अकाल क्षुधारतकरणी ॥
इतकपि भालु विजय अभिलाषे * उतहिं निशाचर जय हित राखे॥
मारुतसुत अंगद बलबीरा * समरबांकुरे अति रणधीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ * भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं * प्रमुदित भट कायरहिय डरहीं ॥

१ लक्ष्मण । २ अंगद । ६ बहिरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंद-कायरडरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं ॥
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि भिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक विलोकत विबुधगण विस्मय हरष उर आनहीं ॥
रघुवीर सेननि पर सुमन झरि लाय विनती ठानहीं॥२०॥

दोहा-अति अद्भुत करणी करहिं, ऋच्छ कीश बल भूरि ॥
कर पद विनु कर रजनिचर तिन मुख डारहिँ धूरि ॥१८४॥

बहुतनिके शिर तोरि चलावहिं * निज भुज बल रावणहिं जनावहिं॥
गये याम युग दिवस भवानी * नारान्तक अधसेन सिरानी ॥
मरे निशाचर अमित निहारी * रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई * भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसैना * पुनि शठगा जहँ राजिवनैना ॥
गरजा मनहुँ मेघ समुदाई * कहन लगा कटु वचन रिसाई ॥
होसि सजग निश्चर कुलद्रोही * बन्धु वैर लगि मारहुँ तोही ॥
प्रभुकहँकटुक कहत सुनि काना * कोपेउ जाम्बवन्त बलवाना ॥

दोहा-शूल एक तेहि छांड़ेऊ, सो करगहि ऋच्छेश ॥
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥ १८५ ॥

लागत शूल सो मूर्च्छित भयऊ * जाम्बवन्त तब करगहि लयऊ ॥
बार अमित महि माहँ पछारा * बांधि गाडि बारू महँ डारा ॥
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा * लगे करन रण निजनिजइच्छा॥
जाम्बवन्त यह हृदय विचारा * मरै नहीं यह खल मर्म मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी * मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी ॥
गहिपद संचारो गढ माहा * सपदि परा जहँ निशिचर नाहा॥
दशौ वदन हाहाकर धावा * नारान्तकाहि हृदय तब लावा ॥

---

१ आकाश । २ कमलनयन-श्रीरघुनाथजी । ३ जाम्बवन्त । ४ मेरा ।
५ फेंका । ६ रावण।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निरखि निशाचर गण समुदाई * गढकहँ गए सब संभ्रमधाई ॥
दोहा-कपिगण समय प्रदोष[1] लखि, रामचरण धरि माथ ॥
ठाढभये सबतन चितै, दयादृष्टि रघुनाथ ॥ १८६ ॥
बिनु श्रमकीन्ह सबनि जगदीशा * गये सुवास भालु अरु कीशा ॥
रुचिरासन आसीन[2] रमेशा * ढिग बीरासन उरगनरेशा ॥
अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा * लाग पलोटन सुनहु अपरणा ॥
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना * जिनपर नित प्रसन्न भगवाना ॥
वहां सुरारि सुताहिं पौढ़ाई * बिलखाहिं तासु नारि समुदाई ॥
होत प्रभात नरांतक जागा * पितु बिलोकि लज्जारसपागा ॥
रथचढि तुरत इकाकी धावा * नभपथ समरपुहुमिमहँ[4] आवा ॥
कीशकटक यह मर्म नजाना * होइ लोप[5] कीन्हेसि झरिबाना ॥
दोहा-धावहिं व्योमहिं[6] भालु कपि, ताहि न हेरैं नैन ॥
घायल होइ होइ गिरहिं महि, भाषहिं आरत वैन ॥ १८७ ॥
बाण एक शत तड़ित समाना * छांड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना ॥
लागत विपुल कीश मुरझाने * बहुतक कायर देखि पराने ॥
भागि सेतुढिग एक अयाना * टेरे फिरहिं न सुन हरियाना ॥
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा * कुमुद मयंद द्विविद बलसीवा ॥
ये सब वीर हांक दै धावहिं * नभपथताहि न खोजत पावहिं ॥
तब सब वीर एक मत ठाना * लै गिरि तरु किय लंक पयाना॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा * बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥
करते डारि देहिं पाषाना[8] * बहुत दनुज भे चूर्ण समाना ॥
छंद-भे चूर्ण निशिचर यूथ, गै निशिचरी भय गूथ ॥
सुख बीन आरत दीन्ह, भइ भवन रावण लीन्ह ॥

---

१ संध्याकाल । २ विराजमान । ३ लक्ष्मणजी । ४ संग्रामभूमि । ५ अदृश्य । ६ आकाश । ७ पूंछ । ८ पत्थर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि बोलि भट दशभाल, कह खाहु कीश[1] कराल ॥ २१ ॥
करि यत्न भागहिं कीश, अस कहेउ वच दशशीश ॥
मम लहहु आयसु छोर, सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥
सो शूर मोकहँ प्यार, जो खाय मर्कट धार ॥
जो जाय आयसु छोर, सोइ जानिहौं रिपु[2] मोर ॥ २२ ॥
दोहा—ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ॥
रावण पावन राखि शिर, धाये करि रव[3] घोर ॥ १८८ ॥
देखि लँगूर सकल हरषाने * मधुमाखीसम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा * डारे सबनि पटकि कर दापा ॥
काचे घटसम दनुज विदारी * जयतिराम जय लषणखरारी ॥
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा * भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥
अति विशालगहि कंचनखंभा * जिमि प्रयासबिनु करु आरम्भा ॥
लै ढाहत अपक्क घट जूहा * कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा ॥
पुनि विचार करि हरिभट धाये * निशिचर निकर मध्यचलि आये ॥
करि कोटिन बिनु नासा काना * करपद हीन कीन्ह रिपुनाना ॥
छं०—रिपु कीन्ह कर पद हीन अगणित दीनवचन पुकारहीं ॥
गढते निकर निशिचर अखिल खल विपिन बाट सिधारहीं ॥
पीपर परणसम धरणि लंका कम्प षट कीशनिकरा ॥
तोरे कपाट निपाटि अरितिय केश[4] खैंचत गहिकरा ॥ २३ ॥
दोहा—भयउ कुलाहल लंक अति, नारान्तक सुनि कान ॥
नभते स्यन्दन सहित शठ, प्रकटि परम रिसियान ॥१८९॥
निरखि दशा निज नारिन केरी * कहन लागु कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई * लरत तियन सँग लाज न आई॥
अवलनपै बल भट न कराहीं * छांड़हु तियन[5] लरहु ममपाहीं ॥

१ बन्दर । २ शत्रु । ३ शब्द । ४ बाल । ५ स्त्रिन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि मरकटनि[1] भयउ सुखभारी * तजी निशाचरि दीन पुकारी ॥
भाजि भवन भययुत गईं नारी * लीन्ह कपिन कर शिला उपारी॥
शिलप्रहार हयै[2] स्यन्दन[3] भंजा * आयुध[4] तोरि सारथी[5] गंजा ॥
धरि पछारि रावण दृग देखा * कौतुक कीशनि कीन्ह विशेषा ॥
लागे पद गहि खलन फिरावन * नाचहिं गाइ राम यश पावन ॥
दोहा-तोरत तिन तनु पटकि महि, कहत जयति रघुवीर ॥
करत युद्धगत याम युग, कीश छहौ रणधीर ॥ १९० ॥
अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा * वन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी * पदधरि शिर सुख लहेउ विशेषी॥
राम सबनि सादर सन्माना * को दयालु रघुवीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना * आयसु पाइ भये श्रमहीना ॥
भये विगत श्रम वानर भालू * अनुजसहित मन मुदित कृपालू॥
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक * गावत जन गुण सब गुणदायक॥
याम तीनि यामिनि[6] गत जबहीं * उत नारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच विवश मर्जित दोउ हाथा * लज्जित हृदय निशाचरनाथा ॥
छंद-लाजकै रथै सँवारि वाजिँ साजि रुष्ट पुष्ट ॥
शंक छांड़ि शस्त्र मांड़ि गाढ वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निशान गान काडकैत कर्त ॥
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त ॥ २४ ॥
जीव आश त्रास नाश वाजि मोह छण्ड छण्ड ॥
वंक शूर शंक दूर वीरता सपूर चण्ड ॥
वाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ॥
धूरि पूरि मेघ बोध शोध ना परौ अपान ॥ २५ ॥

---

१ वानरोंको । २ घोडे । ३ । रथ । ४ हथियार । ५ रथ हांकनेवालेको । ६ रात्रि । ७ अश्व ।

In Public Domain. Chambal Archives, Howrah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कूदि कूदि व्योम पन्थ जाय आइ जाइ भूमि ॥
अस्त्र शस्त्र काढि काढि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥ २६ ॥
दोहा-प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनीतमीचरचण्ड ॥
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरवण्ड ॥ १९१ ॥
छं०-निहारि हर्ष कीश ऋच्छ फूलि फूलि शैलभे ॥
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारकै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ॥
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू ॥
रदीहरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू ॥
मनौ विचित्र वाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥ २७ ॥
हलै धरा बलै विचारि भार धारि को सकै ॥
सुनै पुकारि जयति राम शत्रुसे नहीं धकै ॥
लँगूर शूलसे अकाश भीत उच्च औचट्यो ॥
गिरे पयोदि पौनते झपेट भेटते कट्यो ॥ २८ ॥
सो०-शब्दकरत अति घोर, इमि पहुँच्यो दल भालु कपि ॥
आयुध झरि अति जोर, परै लागि घन प्रलय सम ॥ १४ ॥
सजगहोन कपि भालु नपाये * अतिशय निकट तमीचर आये॥
असित निशाचर अति अँधियारी * तापर करैं शत्रुकै मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे * जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सन्मुख कोउ न करत लराई * कपिन मारि रण भूमि सुवाई ॥
गे अनेक भाजि सिंधु समीपा * सेन विकललखि रघुकुलदीपा ॥
सजि शारंग तजा इकबाना * भा प्रकाश दिग तरणि समाना ॥

१ राक्षसी । २ पर्वत । ३ पृथ्वी । ४ बादल । ५ वायु । ६ राक्षस । ७ काले ।
८ धनुष । ९ श्रीसूर्य्यनारायण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि तम विगत भालु कपि हरषे* कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥
भीरे एकसन एक प्रचारी * लागे करन कठिन हठ भारी ॥

दोहा—शीश शिला तरु करन धरि, कांखन भरि भरि धूरि ॥
गरजे भालु बली वदन, धाय धाय नभ दूरि ॥ १९२ ॥

डारहिं गिरि तरु निशिचर शीशा* दधिघटसम फोरहिं भट कीशा ॥
चढहिं अनेक कन्धपर जाई * काटहिं कान दृगनि रज नाई ॥
तोरहिं शूल चापे नाराचा * अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा ॥
अस्त्रहीन रिपुसेन पराई * देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवनि अतिलूम लफाई * अति उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे * पक्षहीन नभते खग जैसे ॥
गिरत कीशगहि चरण फिरावहिं * पटकि भूमिगाड़हिं बिहँसावहिं ॥
तुम्बरि सम अगणित भुजतोरत* अगणित रुण्ड सिंधु महँ बोरत॥

दोहा—कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात ॥
रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात ॥ १९३ ॥

प्रभु तूणीर महँ हरि शर जबहीं * प्रविशेकीन्ह उदयरवि तबहीं ॥
देखि कटकनिज परमबिहाला * नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये सँग वीरा * वर्षत शक्ति उपलें गण तीरा ॥
शर अस्तंभन विपुल पनारे * भये अचल कपि टरहिं न टारे ॥
लैलै पाश निशाचर धाई * बांधत जिमि चुंगलि शुकपाई ॥
व्याधि पींजरा सम बहुजाना * भरे जान प्राति अयुत प्रमाना ॥
जे कपि लखैं विपुल बल बंका * ते मूर्च्छित फेकैं गढ लंका ॥
रावण देखि तनयकी करणी * वन्दीजन जिमि भुजबल वरणी ॥

---

१ अँधियारा । २ रीछ । ३ बंदर । ४ पुकारकर । ५ आकाश । ६ नेत्र । ७ धूरि । ८ बरछी । ९ शरासन । १० बाण । ११ पृथ्वी । १२ ऊंची । १३ पक्षी । १४ मारकर । १५ निखंग-धनुष । १६ सूर्य्य । १७ पत्थर । १८ वधिक । १९ सुत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-हरि इच्छा जानै न कस, सुताहि सराहत मूढ ॥
काल बिवस मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ॥१९४॥

अंगद हनूमान जब जागे * नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षण इक कीश न पायउ लरई * पुनि शर हति मूर्च्छा वश करई ॥
याम युगल तेहिकर वरदाना * राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
रिपुहि खिलावत रघुकुलकेतू * पालक बुधि वाणी श्रुति सेतू ॥
सो युगयाम गये जब बीती * तब रघुवीर सजी जयरीती ॥
हांक देइ कपि भालु जगाये * भये विगत मूर्च्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे * राम लषण चरणन अनुरागे ॥
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा * तब हँसि बोले श्रीजगदीशा ॥

सो०-विधि वाचा लगि आज, तात तुमहिँ मूर्च्छा भई ॥
पुनि कहि प्रभु रघुराज, अब श्रम स्वप्नेहुँ अनत नहिँ ॥१५॥

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना * जितिहैं जगत मनुज रणनाना ॥
असवर जबहिं रमापति भाषा * सुनत गिरा हरषे मृगशाखा ॥
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा * सुनु अंगद हनुमत रणधीरा ॥
तात तुरत तुम उभयसिधावहु * लंक गये कपि तिन्हैं छुटावहु ॥
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला * सुमिरि कोशलाधीश कृपाला ॥
सपदि कीश गढ पर चढिगये * देखि लंक महँ खरभर भये ॥
सकल कपिनकै मूर्च्छा बीती * तोरि पाश भजि राम सप्रीती ॥
वायुसूनु युवराज निहारी * हरषे कहि जय जयति खरारी ॥

दोहा-मेष बरूथहि पाइ जिमि, वृकगण करहिं संहार ॥
तिमि मर्दहिं दनुजन सुभट, कीश भालु बरियार ॥१९५॥

यामे एक वासर अवशेषा * कह अंगद कीशन तन देखा ॥

---

१ वाणी । २ बन्दर । ३ शीघ्र । ४ हनुमान । ५ अंगद । ६ भेडोंकेझुण्ड । ७ भेडहा । ८ निशाचर । ९ पहर । १० दिन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलिय तात अब जहँ सुरभूपा * देखिय पदपाथोज[1] अनूपा ॥
अंगदवचन पवनसुत भाये * सपदिसहित दल प्रभु पहँ आये॥
निशिचरकोटि नरान्तक संगा * करतरहे बहु विधि रणरंगा ॥
माया करि निजगात बचावहिँ * जहँ तहँ खल रावणयश गावहिँ ॥
अदितिनन्द[2] लखि तिन कर माया * सभय भये जाना रघुराया ॥
दीननाथ अनुजहि[3] अनुशासन[4] * उठे नमित गहि विशिषशरासन[6] ॥
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षण एका * तैं कीन्हे रण खेल अनेका ॥
छंद-तैं कीन्ह खेल अनेकविधि अवतिष्ठ खलरणभूथला ॥
इमि कहि अहीश चढाइ धनु शर करन निशिचर दलमला ॥
निज अनी निरखि निदान हरिहर सुवन धावा रिसिभरा ॥
डारत अनेक नराँच प्रभु पर शिला तरु वर भूधरा ॥ २९ ॥
रघुवीर अनुज प्रवीण खलबलदलन श्रुति यश गावहीं ॥
तरु उपल गिरि अरि तीर उपराहि बाण लषण चलावहीं ॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं ॥
सुरगण प्रफुल्लित सुमन झरि करि जयतिलषणपुकारहीं ॥ ३० ॥
दोहा-मायापतिके अनुज सन, माया करत अयान ॥
लगत न एको जानि जिय, तब खल निकट तुलाने ॥१९६॥
हना लषणउर पँ[10] विसमसायकै[11] * लगत गिरे रणमहि अहिनायकै[12] ॥
पुनिखलदलभा प्रबल अपारा * भक्षणलाग भालुकपिधारा[13] ॥
चले पराय कीश भय भीता * अब न बचब करि काल प्रतीता ॥
निशिचर धारि भालुकपिवेषा * लागे खान कपिन अस देखा ॥
कपि डर कीश भालु डर ऋक्षा * आपु आपु भय मिलन अनिक्षा ॥
कोउ न काहु निकट नियराई * जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई ॥

---

१ चरणकमल । २ सुग्रीव-इन्द्र । ३ लक्ष्मणजी । ४ आज्ञा । ५ बाण । ६ षधनु । ७ शर । ८ पहाड । ९ आया । १० वज्र । ११ बाण । १२ श्रीलक्ष्मणजी । १३ यूथकेयूथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि शठ साधि विभीषणरूपा * गहि अंगद हनुमत कपिभूपा ॥
काहु न यह माया कछु जानी * कपट मिलाप विभीषण ठानी ॥
दोहा-तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश ॥
अहिरावणछल पवनसुत, समुझत उड़ा अकाश ॥ १९७ ॥
गरजेउ जाय भयंकर भारी * फटेउ हृदय सुनि निशिचर झारी॥
मायाहत शर लषण पवारा * उघरे कपटकपाट अपारा ॥
नारान्तककै माया बीती * गयउ यज्ञशाला अति प्रीती ॥
खोजिसि सकल समग्री ताकी * कीन्ह अरम्भ विजय निजताकी ॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना * पशु समूह बलि कारण आना ॥
भये निशामुख श्रम वश सैना * फिरे सुमिरि सब राजिवनैना[1] ॥
तुरत अहीश राम पहँ आये * सहित अनी प्रभु पद शिर नाये ॥
कृपाअयन निरखे मृगशाखा * प्रभु श्रम छीन दीन अभिलाषा ॥
दोहा-टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ ॥
पाय सुआयसु भालु कपि, चले सुमिरि गुणगाथ ॥१९८॥
तब रघुराज अनुज उरलावा * निज आसन समीप बैठावा ॥
मघवासुत सुत अरु हनुमाना * इनसम भाग्यवंत नहिं आना ॥
अमलाम्बुज पद गहि निजपानी * परशे सबनि सनेह भवानी ॥
जाम्बवंत लंकेश[2] हरीशा * प्रभुसमीप सब मुदित मुनीशा ॥
अनुज सखा नारान्तक करणी * युद्धप्रबलता बहुविधि वरणी ॥
शिवप्रताप तेहि अमितप्रतापा[3] * मरण न दीन्हे बहुसन्तापा[4] ॥
सुने वचन रघुपति मुसकाने * अति सनेह हरिचरित बखाने ॥
सुनहु सकल हम शम्भुनआना * जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना ॥
दोहा-जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानहु मम प्रीय ॥
शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिं सो शंभु अतीय ॥१९९॥

---

१ कमलनेत्र श्रीरामचंद्रजी । २ सुग्रीव । ३ अपरिमान । ४ दुःख ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारिपदारथ करतल ताके * बसहिं महेश उमा उर जाके ॥
जो मम प्रण शिव सदानिबाहा * सो जय देव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जय विजय विभूती * शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना * जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
कह आश्चर्य नरान्तक एहा * मोपर गिरिपति परम सनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक साथा * कपट त्यागि नावहु सब माथा ॥
होइहि विजय धीर मन धरहू * वेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शंभुउपासन कर मम दासा * तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा ॥

दोहा-जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ ॥
शिवासमेत गिरीशपद, निशिदिन रहु मनलाइ ॥ २०० ॥

मन क्रम वचन शम्भुपदआशा * करहिं ताहि उर सब गुणबासा ॥
निर्भय करि जो हरपद नेहू * ता उर रमासहित मम गेहू ॥
भववारिधि लांघाहि विनु खेवहिं * यह विचारि बुध जन भव सेवहिं॥
भवभंजन यह हित उपदेशा * अनुजहि सखहि बुझाव रमेशा ॥
ध्रुववाणी सुनि अति सुख पावा * अहिपति रामचरण शिर नावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला * कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला ॥
सहित विभीषण राजन साता * सुन श्रीमुख हरयश विख्याता ॥
रामहि शिवहिं एक जे जाने * भयतजि नाम जपत हरषाने ॥

दोहा-कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युगयाम ॥
खगपति आगम देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ॥ २०१ ॥

राम लषण सुखसीव विराजे * मारें अपार निहारत लाजे ॥
निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा * उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा * आशिष पाइ हर्षि हित कीन्हा ॥
मुनि नीके हरिरूप विलोका * यथा इन्दु लखि सुखलह कोका॥

१ हाथ । २ हृदय । ३ संसारसागर । ४ काम । ५ चन्द्रमा । ६ कमल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुलकि गात तब कह ऋषिराजा* सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा ॥
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी * यदपि कृपानिधि अन्तर्यामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना * विभव विरंचि करिय परिमाना ॥
जबलगि होन प्रभात न पावहि* तबलगि हरिहरिसुत लै आवहि ॥

दोहा-जपत निरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान ॥
विधि वर हित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान ॥२०२॥

नारान्तकवध है तेहि हाथा * दधिबल नाम भक्त तव नाथा ॥
नाथ बहुत यहि खलहिं खिलावा * रण विलोकि देवन दुखपावा ॥
अब रघुवीर करहु सोइ बाता * बिनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता ॥
तेइ सन तुमहिं न सोह लराई * दधिबल सन्मुख करहु बुलाई ॥
सविनय नाइ शीश वर भाषी * गवने मुनि प्रभु छबि उरराखी॥
नारद गये जबहिं विधि लोका * वायुतनयतन राम विलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवां * वारिधिमहँ धौरागिरि जहवां ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये * बहुत दिवस चलिगये सुभाये ॥

दोहा-अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिगजाइ ॥
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु वेगि बुलाइ ॥ २०३ ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन * चले वन्दिपद हरषि उदासन ॥
वेगवन्त धावा कपि कैसे * वर नराच दधिसुतसे तैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा * पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
देखि तरणिसम तासु प्रकाशा* ठाढ भयउ कपि मंदिर पासा ॥
दण्ड युगल कपि इच्छित रहेऊ * हिय महँ राम राम अस कहेऊ ॥
उत रण होई होत प्रभाता *इत इन कर चित हरिपद राता ॥
क्षण इक कपि मन कीन्ह विचारा* प्रभु पहँ चलिये कवन प्रकारा ॥
जो गृहसहित चलहुँ लै येही * नाहिं अस आयसु भक्त सनेही ॥

---

१ ब्रह्मा । २ दधिबल । ३ श्रम-यत्न । ४ हनुमान् ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-बुध जन शीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराउ ॥
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हे अमित उपाउ ॥ २०४ ॥
अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना* तजि प्रवीणता भजि भगवाना ॥
रामचरण चित कपि बरदयऊ * दण्ड एक औरो चलिगयऊ ॥
विधिप्रेरित दधिबल लघु शंका * करन उठेउ देखा भटबंका ॥
जयश्रीराम वायुसुत बोला *सुनि दधिबल निज लोचन खोला॥
बूझि हरिहि कीशहि उरलाई * कही परस्पर[2] दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुन भ्राता * चलहु विलोकन त्रिभुवनत्राता ॥
सानुज नाथ सुखद पद कंजा * जिनमकरन्द शिला अघगंजा ॥
जेहि लगि तप कीन्हेउ बहुकाला * सो तुमपर अनुकूल[3] कृपाला ॥
दोहा-धूरजटी हृदमानसर, बसत हंस इव जोइ ॥
सादर तुमकहँ लेन लगि, पठवा मोहिं प्रभुसोइ ॥ २०५ ॥
सुनि शुभ वचन सुकंठ[4] कुमारा * हरिपहँ हरिसँग तुरतसिधारा ॥
आये नाथ निकट मृगशाखा * देखे पद जे हर हियराखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता * दधिबल निरखेउकृपानिकेता ॥
सानुज हर्षि मिले सुखपुंजा * तासुपाणिगहि निजकरकंजा ॥
बैठे ताहि निकट बैठावा * तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा॥
निरखितनय कपिपति हरषाना* मिलत प्रेमनहिं जायबखाना ॥
गइमणि पन्नग[5] जनु पुनि पाई * देही देह मीन जलजाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे * अवगुण तीन ताहि क्षण भेटे ॥
सो०-दधिबल वालिकुमार, मिले परस्पर हर्षिहिय ॥
भयउ आइ भिनसार, न्हाइ सबनि प्रभुपद गहे ॥ १६ ॥
जहँ तहँ समर[6] करन बनचारी * चले कहत जय लषण खरारी ॥
वहां नरान्तक प्रात प्रबोधा * रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा ॥

---

१ आंखें । २ आपसमें । ३ प्रसन्न । ४ सुग्रीवकुमार । ५ सर्प । ६ युद्ध ।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निशिचर अनी सुभटसँगताके * आयुध अखिल भयानक वाके ॥
महि संग्राम निशाचर ठाढे * असितमेघसम अति रिस बाढे ॥
करि माया तेइँ गात छिपावा * भयउ प्रगट जब प्रभुढिग आवा ॥
दधिबल लखा सखा चलि आयउ * भुजापसारि हर्षि उठि धायउ ॥
नारान्तकहु दीख गुरु भाई * मुदित मिले उर उभय अघाई ॥
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता * निज निज दशा कीन्ह विख्याता ॥

दोहा–हरिपतिपूत प्रवीण अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ॥
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु बीयपति बात ॥ २०६ ॥

वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं * फल पियूष विष बेलि न लहहीं ॥
समुझहु तात विचारि निदाना * किहे अनीति न जग कल्याना ॥
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं * रामविरोध कतहुँ जय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे * कूप धसत बिकबाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिनचारि लड़ाई * जानेउ भालु काश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना * कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभुपदपरशी * करिहैं अभय तोहिं समदरशी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी * प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥

दोहा–शारंगी शर तरणि सम, दशमुख वपु खग लेख ॥
जरत राखु यहि समय तुव, करि विज्ञान विशेष ॥ २०७ ॥

सुनत वचन गुरु भ्राता केरा * नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभांती * सहज सभीत कीश दिन राती ॥
वालिहि हतेउ जौन तपधारी * भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिबल यह बानर कुलरीती * हमरे करहिं न अरिसन प्रीती ॥
यह कहि प्रभु सम्मुख सो धावा * दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर * तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
छांडहुँ मूढ समुझि गुरुभाई * कहि अस पेलि चला कठिनाई ॥

Digitized by Sri Vidya Ashram Trust, Chennai and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ * सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥
दोहा–नारान्तक दधिबल भिरे, निरखि भालु अरु कीश ॥
लगे लरन सँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश ॥२०८॥
छंद–कपिशूरसँहारेशिलनिमारि, बहुमर्दिकरेसिकतापहारि ॥
भट विहवावल वासी जितेक, कपि मारिगिराये वच न एक ॥
रहे एकाकी मनुजाद वीर, किय द्वन्द्व युद्ध उरगादधीर ॥
दोउ लरतलहैं छबि एकभांति, गिरि कज्जलकंचनउभयगाति ॥
युग घटिका ऊपर एक याम, दोउ भिरे समर वलयोगधाम ॥
पुनिभा अलक्ष सो करत युद्ध, वलवन्तउभयश्रमगतसक्रुद्ध ॥
कह षट प्रकार श्रुतियुद्धरीति, सुखमानेउ सुर देखतसुप्रीति ॥
लखि पुत्रइकाकी पुलकिगात, कहबालिअनुजअतिहर्षबात॥ ३३
दोहा–जाम्बवन्तसन वचन मृदु, कहेउ सुकण्ठ पुकारि ॥
कहहु तात दधिबलकबहिं, दनुजहि डारिहि मारि ॥२०९॥
समर करत लागी अति बारा * यह सुनि बोलेउ ऋक्षभुवारा ॥
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा * दधिबल गुरुसन लही अशीशा ॥
सो अवसर अब आय तुलाना * एक पलक महँ मरिहि अयाना ॥
सुनि हरीश मन महँ अतिहरषे * तबहीं बिबुध सुमन बहु बरषे ॥
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा * रणकौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिस्तुति सुनि हरिअरिकोपा * कपिहिसहित खल भयउ अलोपा ॥
योजन अयुतअष्ट नभ[3] जाई * दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई ॥
गहि मनुजाद[4] भूमिपर डारा * करि चिकार तेहि मरती बारा ॥
छंद–मरतीसमय अतिशब्दकरि दशमुखतनय हरिहरिकही ॥
तजिअधमतनु धरि शुभगवपु द्विजनाथसुनि सोगतिलही ॥

---

१ आठसहस्र । २ आकाश । ३ राक्षस । ४ कोलाहल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भांति जप तप मख किये ॥
श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजै दिये ॥ ३४ ॥
दोहा—देखि तासु गति विबुध गण, अभय भये खगराइ ॥
प्रमुदित वर्षैं पुहुप झरि, रामचरण चितलाइ ॥ २१० ॥
मरा नरान्तक दधिबल जानी * तोरि तासु शिर गहि निजपानी ॥
रुण्ड तासु गहि लंक सचारी * आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥
निशाप्रवेश भूत वैताला * चढि चढि वाहन वेषकराला ॥
जाइ समर महि सुखद समेता * उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा * देखि हर्षि उठि रमानिवासा ॥
सानुज राम मिले अति प्रीती * परमप्रसाद नाथ नितरीती ॥
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई * सखासुतहि निज ठिग बैठाई ॥
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाही * नाइ माथ प्रमुदित मनमाही ॥
दोहा—राम रजायसु पाय पुनि, होइ विगत श्रम कीश ॥
तब दधिबल प्रभुचरण गहि, आगे धरि अरिशीश ॥ २११ ॥
समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा * सुनहु सुकण्ठ कहा जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु * यतनसमेत न सेत चलावहु ॥
नाथ रजाय पाय कपिराई * राखेउ सो शिर यतन कराई ॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई * श्रीपति श्रीमुख बहुविधिगाई ॥
जासु बड़ाई किय बड़ईशा * सखहि सराहत सो जगदीशा ॥
दधिबलप्रभु अनुकूल विलोकी * सफलजन्म लखि भयउ विशोकी
प्रेमबारि लोचन कर जोरी * बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी ॥
जगदात्मा तुम्हार यह वाना * सन्तत करहु दीनसनमाना ॥
दोहा—वनचर पांवर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान ॥
विरद स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान ॥ २१२ ॥

१ पुष्प । २ स्थान । ३ अनुशासन । ४ सदैव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तव यश विमल विदित अवधेशा * कहत न पार पाव श्रुति शेषा[2] ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे * पर्णवणिक गजमणिगुण जैसे ॥
असकहि हरि हरिपद लपटाने * देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना * दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
मांगु बच्छ जो बर मन भावा * सुनि दधिबल करि विनय सुनावा
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा * करहि निरन्तर मम उर धामा ॥
होइ मुहिं प्रिय पदपंकज कैसे * कामहि बामें[3] सूमें[4] धन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ बर येहू * मम इच्छा कछु औरौ लेहू ॥
सो०-विहवाबलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ॥
छांड़ि और सब काज, शिवाशम्भुपद भक्ति दृढ़ ॥ १७ ॥
यहै काज शुभ संतत चहई * जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ * जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
मोहिं निजरूप रमापति जानै * ताते बारम्बार बखानै ॥
जानेउ श्रीरघुवर स्वभाव जिन * सब तजि प्रेभभक्ति मांगी तिन ॥
रामभक्तिवारीश[5] जासु उर * महिमा तासु कहत श्रुति बुधवर॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये * सहजहि आवत विनहिं बुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिष दे रघुनाथा * पुनि प्रभु कीन्ह तिलक निजहाथा
सारंगी रुख सबही पावा * अंगदादि ताकहँ शिरनावा ॥

दोहा-पाइ भक्ति वर राज्य वर, प्रभु चरणन शिरनाइ ॥
दधिबल पठयउ तुरत हठ, सुनहु ऋषय मन लाइ ॥२१३॥

तन मन राम चरण अनुरागे * दधिबल राज्य करत भयत्यागे ॥
सैनसहित श्रीराजिवनयना * राजत देखि विबुध चितचयना ॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा * पुहुपमाल झरि करत अपारा ॥
करि स्तुतिवर विनय पुकारे * अदितिसूनु निज गेह सिधारे ॥

---

१ वेद । २ शेषनाग । ३ स्त्री । ४ लोभी । ५ समुद्र ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उताहि जहां बैठा दशभाला * बिनु शिर वपु सो परा विशाला ॥
देखि विकल आपै उठि धावा * पहिंचानत तेहि अति दुखपावा ॥
हा नारांतक कहि खल परा * महा खँभार लंकगढ भरा ॥
मयतनयाआदिक निशिचरीं * शोकसमाज विषादहिं भरीं ॥
दोहा-विन्दुमतीआदिक सकल, नारान्तककी नारि ॥
व्याकुल महि लोटहिं परी, निज निज दशा विसारि॥२१४
करि विलाप जिमि निशिचरनारी * सो न जात कहि सुनु नभचारी॥
शोक जलधि लंका लघुतरणी * चढीं सकल निशिचरकी घरणी॥
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा * कहत मँदोदरि तब सब पाहा ॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई * नार्गसुताकी कथा सुनाई ॥
सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी * धारि धीर नारान्तकघरणी ॥
सबनि बुझाय सासुपग लागी * तजि धन धाम स्वामिअनुरागी॥
मातु करहु सो यतन उताउल * मिलहुँ जाहि जेहि पद निज राउल
सुन सुतवधू न आन उपाऊ * जाउ जहां राजँत रघुराऊ ॥
दोहा-जेहि विधि गई सुलोचना, तेहि गति तुम भय त्यागि॥
निरखहु रघुपतिपदकमल, लावहु पतिशिर मांगि ॥२१५॥
सासुवचन सुनि जानि प्रभाता * उठि निशिचरतिय पुलकितगाता
जातरूपमय यान मँगाई * निज कर गहि पति देह चढ़ाई॥
चली अकेलि यान चढि जबहीं * तासु सवति इक आई तबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू * गुण गण सुभग बसै तनु जासू॥
सो करि विनय चढी तेहि संगा * कीन्ह पयान रँगी सतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा * कायर डरपे हृदय विशेखा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोऊ * नल अरु नील सुभट बर दोऊ॥
आये धाय सपदि तब आगे * युगल नारि तनु निरखन लागे ॥

१ दुःख । २ नाव । ३ स्त्री । ४ सुलोचना । ५ घर । ६ स्वामी । ७ शोभित । ८ रथ ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ, फिरि आये प्रभु पास ॥
वन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमानिवास ॥ २१६ ॥

नाथ नरान्तककी दोउ नारी * आवत शरण प्रणत भयहारी ॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने * उतहि टिकावहु सखा सयाने ॥
सुनि प्रभुवचन बहुरि सो धाये * कटक विगत रथ दूरि टिकाये ॥
बिन्दुमती चितरेखा दूनो * विनय हमारि कीश अस सूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई * केहि कारण हम दरश न पाई ॥
हम अबला कपि विनवैं तोहीं * बूझि नाथसन कहिये मोहीं ॥
नारिविनय सुनि कपि दोउ भले * नीति विचारि राम पहँ चले ॥
विनती नारि जाय नल वरणी * सुनि विहँसे प्रभु तिनकी करणी॥

दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध वेद ॥
ताकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश सो भेद ॥ २१७ ॥

प्रेम परीक्षा हित रघुनायक * कौतुक करत समर सुखदायक॥
नाथ सखा तब बहुरि बुझाई * पुनि नल नारिन पास पठाई ॥
कह कपि सुनहु नरान्तकनारी * दरशन तुमहिं न देत खरारी ॥
तुम गृह जाहु वचन मम मानी * बोली सो तिय वचन सयानी ॥
हम अबला दरशनहित आई * नयनसफलविनु किमि गृह जाई॥
यहि विधि करत विनय दोउनारी* कीशन कटक कीन पैसारी ॥
आवत निकट जानि रिपुरवनी * यद्यपि पतिव्रतहैं सुखभवनी ॥
तदपि नाथ तेहि दरश न देहीं * जाइ निकट विनती की तेहीं ॥

दोहा-प्रभु सीतापति जगतपति, सुरनरपति रघुनाथ ॥
देउ दरशकरुणायतन, दीनबन्धु श्रुतिमाथ ॥ २१८ ॥

बोले राम न सो तिय बोली * विमलज्ञान पतिव्रत अनुडोली ॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै * पुरुष न परतिय स्वप्नेहुँ जानै ॥

---

१ हाल । २ नम्र । ३ लीला । ४ श्रीरामचन्द्र । ५ शत्रुकी स्त्रियां ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राकृत पुरुषनकी यह रीती * जिनके हृदय कपट पर प्रीती ॥
समदरशी कछु दोष न स्वामी * सो विचारु प्रभु अन्तर्यामी ॥
आरतबन्धु विलम्ब न कीजै * करुणाकर वर दरशन दीजै ॥
नाहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई * तव यश अस श्रुति गावत अहई॥
गौतमनारि राम तुम तारी * अधम जाति भिलनी निस्तारी ॥
सुनि मम हृदय परी परतीती * अब प्रभु कस देखिय विपरीती ॥

दोहा-तारि तारि अधमनि अमित, बार बार श्रमजान ॥
ताते करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान ॥ २१९ ॥

प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं * ताकर प्रेमपरीक्षा लेहीं ॥
विकल उभय नारान्तकबाला * बार बार करि विनयविशाला ॥
धर्म्मधुरंधर प्रभु अवतारा * केवल पतिव्रतधर्म्म हमारा ॥
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी * द्रवहु वेगि उर अन्तर्यामी ॥
वृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा * पूजत नाथ न मम अभिलाषा ॥
लीन भयउ पतिप्राण राम महँ * अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ॥
वृन्दाचरित नाथ सुधि करहू * विनय हमारि वेगि उर धरहू ॥
विनय प्रीति सतधर्म जनाई * परीं प्रेमवश मँहि अकुलाई ॥

दोहा-पाँहि पाहि रघुवंशमणि, हतहु न विरद प्रतीति ॥
प्रीतम प्रीति न नरक डर, तुम कहँ नाथ अनीति ॥२२०॥

सती निराश विनय सुनि वानी * पुलके दीनदयालु भवानी ॥
दुहुन लीन निजकटक बुलाई * परीं युगल प्रभुपदतर आई ॥
तिन्हैं उठाय राम बैठावा * जगदीश्वर मृदुवचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी * पतिपदरति दृढ हृदय समानी ॥
बहुत करहुँका तव गुण गाना * मांगु बेगि वर जो मन माना ॥
सुनत वचन लोचँन जल वाढीं * जोरि युगल कर दोऊ ठाढीं ॥

---

१ अहल्या । २ शबरी । ३ कृपाकरहु । ४ भूमिमें । ५ त्राहि त्राहि । ६ दोनो । ७ आँखैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभु तुम दानि देव तरुवरसे * पदजलजात देखि सुरसरिसे ॥
परमपवित्र भईं हम दोऊ * हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ ॥
छंद—को धन्य हम सम नारि जग महँ सुनहु श्रीरघुनायकं ॥
दै दरश कीन्ही पतितपावन नाथ सुर अरि धायकं ॥
अब कृपासागर यशउजागर देहु बर सुरभावरं ॥
जेहि मिलैं पतिकहँ जाइ विनु श्रम बढै तव यश श्रीधरं ३५॥
सो०—यह कहि विन्दुकुमारि, सहित सौति प्रभुपद परी ॥
तिन्हैं उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत पुनि ॥ १८ ॥
धरहु धीर तुम जनि अब डरहू * निजपति लेहु भवन सुखकरहू ॥
कहेउ देव हम कहँ यह नीका * हमहुँ कहत अब भावत जीका ॥
गिरिजासहित गिरीश विरागी * नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते * जप तप करहिं विविध विधि तेते॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाई * देखहिं पदजलजात अघाई ॥
हरिदरशन लवलेश प्रमाना * जगके सबसुख नाहिं समाना ॥
अमियँ अघाइ गरलँको खाई * विनय हमारि यहै सुरसाई ॥
देहु कन्त शिर सँपदि मँगाई * दयाशील सागर रघुराई ॥
दोहा—नारान्तककरशीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ॥
पाइ स्वामिशिर मुदित है, बोलीं दोउ उरँगेश ॥ २२१ ॥
नाथ विनय हम औरौ करहीं *दाह विना हम केहि विधि जरहीं ॥
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना * हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
कह प्रभु सखा लंकमहँ धावहु * चन्दन अगर भार वहु लावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये * लंका गढ गृह गृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा * लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा * तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥

१ कल्पवृक्ष । २ गंगाजी । ३ घर । ४ अमृत । ५ विष । ६ शीघ्र । ७ गरुड । ८ विभीषण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिंदुमती जहँ चाहत ठाऊ * दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर वैर बिहाई * चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥

दोहा-रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ॥
अयुत भार चंदन अगर, तेहि सँग चले लिवाइ ॥ २२२ ॥

जहां जरी मघवाँजित नारी * तेहि गहर शुचि चिता सवाँरी ॥
उहवां अपर सौति मनुनारी * विंदुमती मनभाव पियारी ॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं * चलीं सुनत गति दुख मनमाहीं॥
चलीं चतुर्दश निशिचारि कैसे * निरखि दवास मृगीगण जैसे ॥
हाहा विंदुमती पतिप्यारी * कहां गई तुम हमहि बिसारी ॥
पहुँचीं सहबिलाप तहँ सोऊ * हरषीं हृदय विलोकत दोऊ ॥
षोडश निशिचारि भईं सभागी * मन वच क्रम पतिपद अनुरागी ॥
सकल अन्हाय मृतक अन्हवाई * सुमिरत हृदय रामगतिदाई ॥

दोहा-उत दशकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सब हेतु ॥
संगमँदोदरि आदि तिय, गवना लै खगकेतु ॥ २२३ ॥

बाजत ढोल कपिन सुनि काना * अपने मन तिन अस अनुमाना ॥
आव युद्ध हित उत कोउ वीरा * हमकहँ ठाढ करत यहि तीरा ॥
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये * पूरणप्रेम चरण शिरनाये ॥
कीश एक कह सुनु जन त्राता * नाथ उताहि दशकंधर जाता ॥
प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु * वेगि विभीषण कहँ लै आवहु ॥
राम रजाइ सुशिर धरि धाये * सपदि विभीषण पहँ सो आये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा * सुनत लंकपति आतुर आवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा * कुमुदसहित रघुपति पहँ आवा ॥
दोहा-मोहनिशा कहँ तरुण रवि, तिन चरणन शिर नाइ ॥

---

१ सुन्दर । २ दशहजार । ३ इंद्रजीत । ४ सोलह । ५बन्दरन । ६ दशहजार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाग्यवंत रावण अनुज, बैठेउ प्रभु रुख पाइ ॥ २२४ ॥

दशमुख तियनसहित गा तहँवाँ * बिंदुमती चितरेखा जहँवाँ ॥
देखत अतिबिलखा बिबुधारी * करुणाकरत निशाचरि झारी ॥
सासु श्वशुर कहँ देखि दुखारी * ज्ञान नवीन नरांतकनारी ॥
कहिं शुचिगाथ सबन समुझाई * स्वामि समेत चितापर आई ॥
यथायोग्य बैठीं सब तैसे * पतिगृह रहत रहीं नित जैसे ॥
अग्नि दीन ज्वाला अति धाई * पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई ॥
देखि दशा तिनकी सुरवनी * तिनहि सराहि भवन निज गवनी॥
रावण सहित युवति निजगेहा * गयउ भरोसा सति संदेहा॥

छंद-संदेह सासत भरेउ रावण सहित दारनि गृह गयो ॥
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनिलखिविकलबलमूर्छितभयो ॥
दशमाथ गति देखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी ॥
संताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंका महँ परी ॥३६॥

दोहा-राम विरोधिहिं जस उचित, तसदिन पहुँचा आइ ॥
सो विचार करि लंक गढ, उतरी विपति बजाइ ॥ २२५ ॥

इहां देव देवायसु जाना * वर आसन शोभित भगवाना ॥
यथायोग्य बैठे मृगशार्षा * सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाषा ॥
रिपु बड मरेउ हर्ष सबके मन * पुनि पुनि हेरत सुभग श्यामतन॥
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला * शिवयश गावहु कहा कृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई * गावहिं कपि कलकंठ लजाई ॥
डमरु भृंगी शृंगी करतारी * घ्राँण पाँणि मुखते वनचारी ॥
गोंडर तन्तु वेणु मंजीरा * शंख मृदंग नाद गंभीरा ॥
नृत्यत कीश भाव दिखरावत * शिवासहित शिव कीरति गावत ॥

१ राक्षसी। २ पवित्रकथा। ३ देववधू। ४ वानर। ५ कोकिल। ६ नाक। ७ हाथ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंद-शिवशिवा कीरति विमलगावत भालु वानर सुखभरे ॥
अहिनाथयुत रघुनाथ छबि निरखत सकल चित पदधरे ॥
प्रभु देखि कौतुक अनुजसहित सखन बखानत श्रीमुखम् ॥
तुलसी पगे यहि ध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखम् ३७

सो०-गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणाअयन ॥
करि पूरण मन काम, सबनि कहेउ राजहु थलन ॥ १९ ॥

बैठे निज निज थल रणधीरा * अनुजसहित राजत रघुवीरा ॥
सुखमासीवे[3] सेनयुत राजै * जय जय ध्वनि कपि भालु समाजै ॥
उमाचरित यह रुचिरे[1] सुहावा * नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपरचरित[4] गिरिराज कुमारी[5] * सुनहु कहत तव प्रीति निहारी ॥
वहां मध्य निशि रावण जागा * कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा ॥
उग्र सिखावन कहि बुध बाके * थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई * मेटिकों सकै जो विधिउर वसई ॥
प्रभुविरोध करि चह कल्याना * मोहविवश सो शठ अज्ञाना ॥

इति क्षेपक ॥

वचन सुनत तेइँ कछु सुखमाना * कालविवश जस तीरथ ज्ञाना ॥
इहि विधि जलपत भा भिनुसारा * लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला * रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई * रणसन्मुख भागे न भलाई ॥
निज भुजबल मैं वैर बढावा * देहौं उतर जो रिपु चढि आवा ॥
असकहि मरुतवेग[6] रथ साजा * बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले वीर सब अतुलित बली * जनु कज्जल गिरि आँधी चली ॥
अशकुन अमित होहिं तेहि काला * गनै न भुजबल गर्व विशाला ॥

---

१ दयाके धाम-श्रीरामचन्द्रजी । २ मर्य्यादा । ३ सुभग । ४ औरचरित्र ।
५ पार्व्वति । ६ वायु ।

CC-0. Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंद—अतिगर्व गनत न शकुन अशकुन श्रवहिं आयुध हाथते ॥
भट गिरहिं रथते वाजि गज चिक्करत भाजत साथते ॥
गोमायु गृध्र शृगाल खररव श्वान[1] बोलहिं अति घने ॥
जनु कालदूतउलूक[2] बोलहिं सकल परम भयावने ॥ ३८ ॥
दोहा—ताहि कि सम्पति शकुन शुभ, खप्नेहु मन विश्राम ॥
भूतद्रोह रत मोहवश, रामविमुख रतकाम ॥ २२६ ॥
चली निशाचर अनी अपारा * चतुरंगिनी चमू बहुधारा ॥
विविध भांति वाहन रथ याना * विपुल वरण पताक ध्वज नाना ॥
चले मत्तगज यूथ घनेरे * मनहुँ जलद[3] मारुतके[4] प्रेरे ॥
वर्ण वर्ण वर दैत्य निकाया * समर शूर जानहिं बहु माया ॥
अति विचित्र वाहिनी विराजी * वीर वसन्तसेन जनु साजी ॥
चलतकटक दिगसिन्धुर[5]डगहीं * क्षुभित पयोधि[6] कुधर[7] डगमगहीं ॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई * पवन थकित बसुधा[8] अकुलाई ॥
पणव निशान घोररव बाजहिं * महाप्रलयके जनु घन गाजहिं ॥
भेरि नफीर बाज सहनाई * मारू राग शूर सुखदाई ॥
केहरिनाद[9] वीर सब करहीं * निज निज बल पौरुष अनुसरहीं ॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई * अस कहि सन्मुख सैन चलाई ॥
यह सुधि सकल कपिन जबपाई * धाये करि रघुवीर दुहाई ॥
छंद—धाये विशाल कराल मर्कट[10] भालु काल समानते ॥
मानहुँ सपक्ष उडाहिं भूधर वृन्द नाना बाणते ॥
नख दशन शैलन करन द्रुमगहि[11] सबल शंक न मानहीं ॥
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश सुनावहीं॥ ३९ ॥

---

१ कुत्ता । २ घुघू । ३ मेघ । ४ हवा ५ दिग्गज । ६ समुद्र । ७ पर्व्वत । ८ पृथ्वी । ९ सिंहनाद । १० कपि । ११ वृक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-दुहुँ दिशि जयजयकार करि, निज निज जोरी जानि ॥
भिरे वीर इत रघुपतिहि, उत रावणहिं बखानि ॥ २२७ ॥

रावण रथी विरथ रघुवीरा * देखि विभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा * वन्दि चरण कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना * केहि विधि जीतव रिपुबलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना * जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना॥
शौरज धर्म्म जाहि रथचाका * सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम परहित घोरे * क्षमा दया समता रजु जोरे ॥
ईशभजन सारथी सुजाना * विरति चर्म्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा * वर विज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
संयम नियम शिलीमुख नाना * अमल अचल मन तोण समाना ॥
कवच अभेद विप्रपदपूजा * इहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्म्म मय अस रथ जाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥

दोहा-महाघोर संसार रिपु, जीति सकै सो वीर ॥
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥ २२८ ॥

सुनत विभीषण प्रभुवचन, हर्षि गहे पदकंज ॥
इहि विधि मोहिं उपदेश किय, रामकृपा सुखपुंज ॥ २२९॥
उत प्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान ॥
लरत निशाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभुआन॥२३०॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना * देखहिं रण नभ चढे विमाना ॥
हमहूं उमा रहे तेहि संगा * देखत रामचरित रणरंगा ॥

---

१ शरीरबल, विद्याबल, बुद्धिबल, । २ सारासार कर विचार सारको ग्रहण असारको त्याग । ३ पांच ज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइन्द्रिय इनको स्वाधीन रखना । ४ मन वचन कर्मते परावा उपकार करे ये चार घोडे । ५ सहना । ६ अहेतु दीनोंपर द्रवना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुभट समररस दुहुँ दिशि माते * कपि जयशील रामबल ताते ॥
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं * एकन एक मर्दि महि पारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं * शीश तोरि शीशनसन मारहिं ॥
उदर विदारहिं भुजा उपारहिं * गहिपद अवनि पटकि भटडारहिं॥
निशिचर भटमहि गाडहिं भालू * ऊपर डारि देहिं बहु बालू ॥
वीर बली मुख युद्ध विरुद्धा * देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा ॥

छंद—क्रुद्धे कृतान्त समान कपि तनु श्रवत शोणित राजहीं ॥
मर्दहिं निशाचर कटक भट बलवंत जिमि घन गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन काटि दांतन डारि लातन मीजहीं ॥
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिंजेहिखलछीजहीं॥४०॥
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ॥
प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ॥
जयराम जो तृणते कुलिश[2] करु कुलिशते करु तृणसही॥४१

दोहा—निजदल विचल विलोकि तब, वीसभुजा दशचाप ॥
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करिदाप ॥ २३१ ॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर * सन्मुख चले हूह करि बन्दर ॥
गहि गिरि पादप उपल पहारा* डारहिं तेहिपर एकहि बारा ॥
लागहिं शैल वज्र तनु तासू * खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहा रथ रोपी * रणदुर्मद[3] रावण अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपटि कपियोधा* मरदै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं * यह खल आव कालकी नाईं ॥
तेइँ देखे कपि सकल पराने * दशहु चापै[4] शायक सन्धाने ॥

१ हृदय । २ वज्र । ३ युद्धमद-सुरापानमद । ४ धनुष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंद–संधानि धनु शर निकर छांडेसि उरग[1] जिमि उडि लागहीं॥
रहे पूरिशर धरणी[2]गगन दिशि विदिशि कहँ कपिभागहीं ॥
भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे[3]॥
रघुवीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जन रक्षकहरे ॥ ४२ ॥

दोहा–विचलत देखा कपिकटक, कटिनिषंग धनु हाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ ॥ २३२ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू * मोहिं विलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती * आजु निपाति[4] जुडावों छाती ॥
कहि अस छांडेसि बाण प्रचंडा * लक्ष्मण किये तुरत शत[5]खंडा ॥
कोटिन आयुध रावण डारे * तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे ॥
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा * स्यन्दन[6] भांजि सारथी मारा ॥
शत शत शर मारे दशभाला * गिरिशृंगन जनु प्रविशहिं व्याला[7] ॥
पुनि शत शर मारे उरमाहीं * परेउ अवनि तनु सुधि कछु नाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी * छांडेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी ॥

छं०–जो ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही ॥
परचो विकल वीर उठाव दशमुख अतुलबल महिमा रही ॥
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रजकनी ॥
तेहि चह उठावन मूढ रावण जान नहिं त्रिभुवनधनी ॥४३॥

दोहा–देखत धावा पवनसुत, बोलत वचन कठोर ॥
आवत तेहि उर महँ हनेउ, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ २३३ ॥

जानु टेकि कपि भूमि न परेउ * उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा * परेउ शैल जिमि वज्रप्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा * कपिबल विपुल[8] सराहनलागा ॥

---

१ सर्प। २ आकाश। ३ दुःखित। ४ मारि। ५ सौटुकडे। ६ रथ। ७ सर्प। ८ बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धृक धृक धृक बल पौरुष मोही * जोतैं जियत उठा सुरद्रोही ॥
असकहि कपि लक्ष्मण कहँ ल्याये * देखि दशानन विस्मय पाये ॥
कह रघुवीर समुझि जियभ्राता * तुम कृतांतभक्षक सुरत्राता ॥
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला * गगन गई सो शक्तिँ कराला ॥
पुनि कोदंण्ड बाण गहि धाये * रिपुसन्मुख अतिआतुर आये ॥
छंद—आतुर बहोरि विभंजिस्यन्दन सूतहाति व्याकुलकियो ॥
गिर्‍यो धरणि दशकंधर विकल तनुबाण शत वेधो हियो ॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ॥
रघुवीरबन्धु प्रतापपुंज बहोरि प्रभु चरणन नयो ॥ ४४ ॥
दोहा—वहां दशानन जाइकै, करन लाग कछु यज्ञ ॥
जय चाहत रघुपति विमुख, शठ हठ वश अति अज्ञ ॥ २३४ ॥
इहां विभीषण सब सुधि पाई * सपदि जाय रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावण इक यागा * सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा ॥
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर * करहिं विध्वंस आव दशकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढे कपिलंका * पैठे रावणभवन अशंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देषा * सकल कपिन भा क्रोध विशेषा ॥
रणते भागि निलज गृह आवा * इहां आइ बकध्यान लगावा ॥
असकहि अंगद मारेउ लाता * चितव न शठ स्वारथ मनराता ॥
छंद—नहिंचितवजबकपिकोपितब गहिदशनलातनमारहीं ॥
धरि केश नारि निकारि बाहर तेपि दीन पुकारहीं ॥
तब उठा कोपि कृतांतसम गहि चरण वानर डारहीं ॥
इहि भांति यज्ञ विध्वंस करि कपि नेकु मनहिं न हारहीं ४५ ॥
दोहा—मखविध्वंस करि कपि सकल, आये रघुपति पास ॥

१ शोक। २ काल। ३ देवतोंके रक्षक। ४ धनुष। ५ सारथी। ६ दांत ७ बाल।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चला दशानन क्रोध करि, छांड़ी जियकी आस ॥ २३५ ॥
चलत होहिं तेहि अशुभ भयंकर * बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरन पर ॥
भयउ कालवश कहा न माना * कहोसि बजावहु युद्धनिशाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा * बहु गज रथ पदचर असवारा ॥
प्रभुसन्मुख खल धावहिं कैसे * शलभसमूह अनल कहँ जैसे ॥
इहां देव सब विनती कीन्हीं * दारुणविपति हमहिं इन दीन्हीं ॥
अब जनि नाथ खेलावहु एही * अतिशय दुखित होति वैदेही ॥
देववचन सुनि प्रभु मुसकाना * उठि रघुवीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट बांधी दृढ माथे * सोहत सुमन बीच बिच गाथे ॥
अरुणनयन वारिद तनु श्यामा * अखिललोकलोचनअभिरामा ॥
कटि तट परिकर कसे निषंगा * कर कोदण्ड कठिन शारंगा ॥
छंद–शारंगकर सुन्दरनिषंग शिलीमुखाकर कटि कस्यो ॥
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरा सुरपद लस्यो ॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे ॥
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥ ४६ ॥
दोहा–हर्षे देव विलोकि छबि, वर्षहिं सुमन अपार ॥
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल, धाम हरण महिभार ॥ २३६ ॥
इहिके बीच निशाचरअनी * कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा * प्रलयकालके जिमि घनघट्टा ॥
शक्ति शूल तलवारि चमक्कहिं * जनु दशदिशि दामिनीदमक्कहिं
गज रथ तुरँग चिकार कठोरा * गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर विपुल नभ छाये * मनहुँ इन्द्रधनु उदय सुहाये ॥
उठी रेणु मानहुँ जलधारा * बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिशि पर्वत करत प्रहारा * वज्रपात जनु बारहिं बारा ॥

१ राक्षसी सैन्य। २ पतंगसमूह। ३ आनन्ददाता। ४ मुनिपट पहिरे। ५ पुष्ट। ६ भृगुलता। ७ मेघ। ८ पूंछ। ९ वर्षा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुपति कोपि बाण झरिलाई * घायल भे निशिचर समुदाई ॥
लागत बाण वीर चिक्करहीं * घुर्मि घुर्मि अगणित महि परहीं ॥
श्रवहिं शैल[1] जनु निर्झर वारी * शोणितसर[2] कादर भय भारी ॥
छंद–कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी ॥
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजन्तु गज पदचर तुरँग रथ विविध वाहनको गने ॥
शर शक्ति तोमर सर्प चाप तुरंग चर्म[3] कमठ[4] घने ॥ ४७ ॥
दोहा–वीर परे जनु तीरतरु, मज्जा बह जनु फेन ॥
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन ॥ २३७ ॥
मज्जहिं भूत पिशाच वैताला * केलि करहिं योगिनी कराला ॥
काक कंक[5] धरि भुजा उडाहीं * एकते एक छीनि धरि खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई * शठ तुम्हार दारिद्र नजाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे * जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं आँत गृध्र तट भये * जनु बनशी खेलत चित दये ॥
बहुभट बहे चढे खग जाहीं * जिमि नावरि खेलहिं जलमाहीं ॥
योगिनि भरि भरि खप्पर साँचहिं * भूत पिशाच विविध विध नाचहिं॥
भट कपाल करताल बजावहिं * चामुण्डा[6] नानाविधि गावहिं ॥
जम्बुक निकर तहाँ कटकटहीं * खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं ॥
कोटिन रुण्ड मुण्ड विन डोलहिं* शीशपरे महि जय जय बोलहिं ॥
छंद–बोलहिं जो जय जय रुण्ड मुण्ड प्रचण्ड शिर बिनु धावहीं ॥
परिणाम युद्ध अगुह्य बोलहिं सुभट सुरपुर धावहीं ॥
निशिचर वरूथनि मर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये ॥

---

१ पर्व्वत । रुधिरकेतालाव । ३ ढाल । ४ कछुआ ।
५ गृध्र । ६ देवी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संग्राम अंगन सुभट सोहहिं रामशर निकरनहये ॥ ४८ ॥
"सो०-सप्त दिवस दिन रात, बाजेउ घंटा धनुष कर ॥
हरि पूजाकी भांत, भये सुभट संहार सब ॥
दोहा-घंटाकी परमान अब, सुनिये संगर वीच ॥
नाग अयुत दशलाखहैं, रथी डेढ शत मीच ॥
मरहिं कोटि दश पैदर जबहीं * नाचत एक कबंध रण तबहीं ॥
नृत्यकरहिं जब कोटि कबन्धा * तब इक खेचर उठत निबंधा ॥
खेचर कोटि नचहिं निहकंटा * तब इक धनुकर बाजत घंटा ॥
श्लोक- एवं सप्तदिनख्यातं, स्वर्गे मर्त्ये रसातले ॥
भवेद्भूरि भटं नाशं, रामरावणसंगरे ॥ "
दोहा-हृदय विचारेसि दशवदन, भा निशिचर संहार ॥
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार ॥ २३८ ॥
देवन प्रभुहि पयादेहि देखा * उर उपजा अति क्षोभ[1] विशेषा ॥
सुरपति[2] निजरथ तुरत पठावा * हर्षसहित मातलि लै आवा ॥
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा * विहँसि चढ़े कोशलपुरभूपा ॥
चंचल तुरंग मनोहर चारी * अजर[3] अमर[4] मानस गतिहारी ॥
रथारूढ रघुनाथहिं देखी * धाये कपि बल पाइ विशेषी ॥
सही नजाइ कपिनकी मारी * तब रावण माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहिं बांची * सब काहू मानी कर सांची ॥
देखी कपिन निशाचरअनी * बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ॥
छंद-बहु बालिसुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे ॥
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवतखरे ॥
निज सेन चकित विलोकि हँसि धनु तानि शर कोशलधनी ॥
माया हरि हरि निमिष महँ हर्षी सकल मर्कट अनी ॥ ४९ ॥

---

१ संदेह । २ इन्द्र । ३ वृद्धतासे रहित । ४ किसीके मारे न मरे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—बहुरि राम सब तन चितै, बोले वचन गँभीर ॥
द्वन्द्वयुद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अति वीर ॥ २३९ ॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा * विप्रचरणपंकज शिरनावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा * गर्जि तर्जि प्रभु सन्मुख आवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं * सुन तापस मैं तिनसम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना * लोकप जेहिके न्वदीखाना ॥
खर दूषण विराध तुम मारा * हतेउ व्याध इव वालि विचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे * कुम्भकर्ण घननादहि मारे ॥
आज करौं खल कालहवाले * परेहु कठिन रावणके पाले ॥
आजु वैर सब लेउँ निबाही * जो रणभूमि भागि नहिं जाही ॥
सुनि दुर्वचन कालवश जाना * कहेउ विहँसि तब कृपानिधाना॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई * जनि जल्पसि देखव मनुसाई ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

जनिजल्पनाकरि सुयशनाशहि नीतिसुनि शठ करु क्षमा ॥
संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनसःसमा ॥
यक सुमनप्रद यक सुमनफल इक फलै केवल लागहीं ॥
इक कहहिं करहिं न एक कहिकर एक करहिं न वागहीं॥५०॥
दोहा—राम वचन सुनि विहँसि कह, मोहिं सिखावहु ज्ञान ॥
वैर करत तब नहिं डरेहु, अब लागत प्रियप्रान ॥ २४० ॥
कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर * कुलिशसमान लाग छांड़न शर ॥
नानाकार शिलीमुख धाये *दिशि अरु विदिशि गगन महँ छाये

---

१ द्वन्द्वकही तीनो लोकमें न ऐसा युद्ध हुआ न होगा जैसा हमारा और रावण-का होगा तुम खडे देखो। २ संग्राम-गिनती-शीघ्र। ३ इन्द्रादिक। ४ बारबार अपने मुखसे अपनी प्रशंसा मतकर। ५ आंब। ६ कटहर। ७ वज्र। ८ दिशोंके कोने आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनलबाण छांडे रघुवीरा * क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा ॥
छांडेसि तीव्र शक्ति खिसियाई * बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवँरे * तृणसमान प्रभु काटि निवारे ॥
विफल होइँ रावणशर कैसे * खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहि मारेसि * परे भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा * तब प्रभु परम क्रोधकर पावा ॥

छंद–भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण सायक कसमसे ॥
कोदण्ड धुनि सुनि चण्ड अति मनुजाद[1] भय मारुतग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पित कमठ भूधर अति त्रसे ॥
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥५१॥

दोहा–तान्यो चाप जो श्रवण[2] लगि, छांडे विशिख[3] कराल ॥
रामबाण नभ मग चले, लहलहात जनु व्याल[4] ॥ २४१॥

चले बाण सपक्ष जनु उरगो[5] * प्रथमहिं हते सारथी तुरगो[6] ॥
रथ विभंजि हनि केतु पताका * गर्जा अति अन्तर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढि खिसियाना * छांडेसि अस्त्र शस्त्र विधि नाना ॥
विफल होइँ सब उद्यम ताके * जिमि परद्रोह निरतमनसाके ॥
तब रावण दशशूल[7] चलाये * वाजि[8] चारि महि मारि गिराये ॥
तुरँग उठाइ कोपि रघुनायक * छांडे अति कराल बहु सायक ॥
रावणशिर सरोज वनचारी * चले रघुनाथ शिली मुख धारी ॥
दश दश बाण भाल दश मारे * निसरिगये चल रुधिर[9] पनारे ॥
श्रवत रुधिर धावा बलवाना * प्रभु पुनि कृत धनु शर संधाना ॥
तीस तीर रघुवीर पवँरे * भुजन समेत शीश महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने * राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥

---

१ रथहाँकनेवालेको । २ राक्षस । ३ कान । ४ बाण । ५ सर्प । ६ घोडा । ७ बर्छी । ८ घोडे । ९ लोहू । १० टपकत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कटित झटित पुनि नूतन भये * प्रभु बहु वार बाहु शिर हये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुजशीशा * अति कौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू * मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥
छंद–जनु राहु केतु अनेक नभ पथ श्रवत शोणित धावहीं ॥
रघुवीरतीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शिर शर निकर छेदे नभ उडत इमि सोहईं ॥
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहँ तहँ विधुन्तुद पोहईं॥५२॥
दोहा–जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर, तिमितिमिहोहिंअपार ॥
सेवत विषय विवर्द्धजिमि, नित नित नूतन मार ॥ २४२ ॥
दशमुख दीख शिरनकी बाढी * बिसरा मरण भई रिस गाढी ॥
गरजेउ मूढ महा अभिमानी * धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समरभूमि दशकन्धर कोपा * वर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ * जनु निहार[2] महँ दिनकर[3] दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन सब कीन्हा * तब प्रभुकोपि धनुष कर लीन्हा ॥
शर निवारि रिपुके शिर काटे * ते दिशि विदिशि गगन महिपाटे॥
काटे शिर नभ मारग धावहिं * जयजय ध्वनिकहि भय उपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा * कहँ रघुवीर कोशलाधीशा ॥
छंद–कहँ राम कहि शिरनिकरधावहिं देखिमर्कट भजिचले ॥
सन्धानि शर रघुवंशमणि तब शरण शिर वेधे भले ॥
शिरमालिका[4] गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनि सों मिलीं ॥
करि रुधिर सर मज्जन मनहुँ संग्रामवट पूजनचलीं ॥ ५३ ॥
दोहा–पुनि रावण अति कोप करि, छांड़ी शक्ति प्रचण्ड ॥
सन्मुख चली विभीषणहिं, मनहुँ काल कोदण्ड ॥ २४३ ॥

---

१ राहु-केतु । २ कुहिरा । ३ सूर्य । ४ मालावनाकै ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आवत देखि शक्ति अतिभारी * प्रणतारत हरि विरद सँभारी ॥
तुरत विभीषण पाछे मेला * सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई * प्रभुकृत खेल सुरन्ह विकलई ॥
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायउ * गहिकर गदा क्रोध करि धायउ ॥
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे * तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥
सादर शिव कहँ शीश चढाये * एक एकके कोटिन पाये ॥
तेहि कारण खल अबलगिबाचा * अब तव काल शीशपर नाचा ॥
राम विमुख शठ चहसि सम्पदा * अस कहि हनेसि मांझ उरगदा ॥
छंद–उरमांझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महिपर्‍यो ॥
दशवदन शोणित श्रवत पुनि संभारि धायो रिसि भर्‍यो ॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध विलोकि एकहि इक हनै ॥
रघुवीर बल गर्वित विभीषण माल नहिं ता कहँ गनै ॥५४॥
दोहा–उमा विभीषण रावणहिं, सम्मुख चितव कि काउ ॥
भिरत सो काल समान अब, श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥ २४४ ॥
देखा श्रमित विभीषण भारी * धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता * हृदय मांझ मारेउ तेहि लाता ॥
ठाढ रहा अति कम्पित गाता * गयउ विभीषण जहँ जनत्रोता ॥
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी * चला गगन कपि पूंछ पसारी ॥
गहेसि पूंछ कपिसहित उड़ाना * पुनि नभ भिरेउ प्रबलहनुमाना ॥
लरत अकाश युगल समयोधा * हनत एक एकहि करि क्रोधा ॥
शोभित नभ छल बल बहुकरहीं * कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
बुधिबल निशिचर परै न पारा * तब मारुतसुत प्रभुहि सँभारा ॥
छंद–संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो ॥
महि परत पुनि उठिलरत देवन युगल कहँ जय जय भन्यो॥

---

१ शक्ति । २ देवता । ३ पर्वतलेके । ४ श्रीरामचन्द्र । ५ स्मरणकिया ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ॥
रण मत्त रावण सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले॥५५॥
दोहा—राम प्रचारे वीर सब, धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदल विपुल विलोकितेइँ, कीन्ह प्रकट पाषण्ड ॥ २४५॥
अन्तर्द्धान भयो क्षणएका * पुनि प्रकटेसि खल रूप अनेका ॥
रघुवर कटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा * भागे भालु विकल भटकीशा ॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा ॥
दश दिशि कोटिन धावहिं रावण* गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई * जयकी आश तजहुरे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकंधर * अब बहु भये तकहु गिरिकंदर ॥
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी * जिन निज प्रभुकी महिमा जानी ॥
छं०—जानहिं प्रतापते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउ फुरे ॥
चले विकल मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रणवांकुरे ॥
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन्ह कपट भटके आंकुरे ॥ ५६ ॥
दोहा—सुर वानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश ॥
साजि शरासन निमिष महँ, हरे सकल दशशीश ॥ २४६ ॥
प्रभु क्षण महँ माया सब काटी * जिमि रविउदय जाहि तमै फाटी॥
रावण एक देखि सुर हर्षे * विपुल सुमन पुनि प्रभु पर बर्षे॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे * फिरे एक एकनिके टेरे ॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये * तरलै तमकि संयुगमहि आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेइँ देखे * भयउँ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल * असकहि गगनपंथ कहँ धायल ॥

१ रावण । २ अन्धकार । ३ अतिशयक्रोधकरिकै । ४ सम्मुख-शीघ्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

हाहाकार करत सुर भागे * शठहु जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि विकल सुर अंगद धावा * कूदि चरण गहि भूमि गिरावा ॥
छंद–गहि भूमि पाच्यो लात माच्यो वालिसुत प्रभुपहँ गयो ॥
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो ॥
करि दापं धनुष चढाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई ॥
किये सकल भट घायल बियाकुल देखिनिजबलहर्षई॥५७॥
दोहा–तब रघुपति लंकेशके, शीश भुजा शर चाप ॥
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथके पाप ॥ २४७ ॥
शिर भुज बाढि देखि रिपु केरी * भालु कपिन रिसि भई घनेरी ॥
मरत न मूढ कटे भुज शीशा * धाये कोपि भालु अरु कीशा ॥
वालितनय मारुत नल नीला * द्विविद मयन्द महाबल शीला ॥
विटप महीधर करहिं प्रहारा * सोइ गिरि तरुगहिकपिनसोमारा॥
एकन नख गहि वपुष विदारी * भागि चलहिं यक लातन मारी ॥
तब नल नील शिरनि चढि गयऊ * नखनिलिलाट विदारत भयऊ ॥
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी * तिनहिं धरन कहँ भुजापसारी ॥
गहे न जाहिं शिरनिपर फिरहीं * जनु युगमधुप कमलवन चरहीं ॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी * महि पटकेसि गेहि भुजामरोरी ॥
पुनि सकोपि दशघनु करलीन्हा * शरनि मारि घायल कपिकीन्हा॥
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर * पाइ प्रदोष हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्च्छित देखि सकल कपि वीरा * जाम्बवंत धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु भारी * मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना * गहि पद महि पटके भटनाना ॥
देखि भालुपति निज दलघाता * कोपि मांझ उर मारेसि लाता ॥
छंद–उरलात घात प्रचण्ड लागत विकल रथते महिगिरा ॥

---

१ क्रोध। २ शरीर। ३ रावण। ४ भ्रमर। ५ पकड। ६ संध्याकाल। ७ पर्वत।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गहि भालु बीसहु करानि मानहु कमल निशिवश मधुकरा ॥
मूर्च्छित विलोकि बहोरि पदहति भालुपति प्रभुपहँ गयो ॥
निशि जानि स्यन्दन घालि तेहि तबसूतयत्नसुगृहनयो५८॥
दोहा—मूर्च्छा गइ कपि भालु तब, सब आये प्रभु पास ॥
सकल निशाचर रावणहिं, घेरि रहे अति त्रास ॥ २४८ ॥
तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई * त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई ॥
शिर भुज बाढि सुनत रिपुँ केरी * सीता उर भै त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिन्ता * त्रिजटासन बोली तब सीता ॥
होइहि कहा कहसि किन माता * केहि विधि मरिहि विश्वदुखदाता॥
रघुपतिशर शिर कटे न मरई * विधि विपरीति चरित सब करई॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही * जेहि हौं हरिपदकमल विछोही ॥
जेइँ कृत कनकँ कपट मृग झूठा * अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा ॥
जेइँ विधि मोहिं दुखदुसह सहावा * लक्ष्मण कहँ कटुवचन कहावा ॥
रघुपतिविरह विषम शर भारी * तकि तकि बार बार मोहिं मारी॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राणा * सो विधि ताहि जिआव न आना ॥
बहुविधि करत विलाप जानकी * करि करि सुरति कृपानिधानकी ॥
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी * उर शर लागत मरिहि सुरारी ॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही * इहिके हृदय बसति वैदेही ॥
छंद—इहिके हृदय बस जानकी मम जानकी उर बासहै ॥
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सबको नाशहै ॥
अस सुनत हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि त्रिजटाकहा ॥
अब मरिहिरिपुइहिभांतिसुंदरि तजहुतुमसंशयमहा ॥ ५९॥
दोहा—काटत शिर होंइहि विकल, छूटि जाइ तव ध्यान ॥

---

१ देखि । २ जाम्बवन्त । ३ रात्रि । ४ रथ । ५ सारथी । ६ भय । ७ रावण । ८ संसार । ९ लीला । १० स्वर्णमृगमारीच ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब रावणके हृदय शर, मारहिं राम सुजान ॥२४९॥
असकहि बहुप्रकार समुझाई * पुनि त्रिजटा निजभवन[1] सिधाई ॥
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही[2] * उपजी विरह व्यथा अति तेही ॥
निशिहि[3] शशिहि निन्दत बहुभांती * युगसम भई विहाति नराती ॥
करत बिलाप मनहिं मन भारी * रामविरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उरदाहू * फरकेउ वाम नयन अरु बाहू ॥
शकुन विचारि धरी उर धीरा * अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा ॥
इहां अर्द्ध निशि रावण जागा * निजसारथि सन खीझन लागा॥
शठ रणभूमि छुड़ायहु मोहीं * धृक धृक अधम मन्दमति तोहीं
तेइँ पदगहि बहुबिधि समुझावा * भोरभये रथचढि पुनि आवा ॥
सुनि आगमन दशानन केरा * कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी * धाये कटकटाइ भट भारी ॥
छंद–धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ॥
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावण लियो॥
दशदिशिचपेटन्ह मारि नखन विदारि तेहि व्याकुल कियो॥
दोहा–देखि महा मर्कट प्रबल, रावण कीन्ह विचार ॥
अन्तरहित होइ निमिष महँ, करिमाया विस्तार ॥ २५० ॥
छंदलीला–जब कीन्ह तेइँ पाखण्ड, भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड ॥
वैताल भूत पिशाच, कर धरे धनुष नराचँ ॥
योगिनि गहे करबालँ, इक हाथ मनुज कपाल ॥
करिसद्यँ[6] शोणितपान, नाचहिं करहिं गुणगान ॥ ६१ ॥
धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥

---

१ घर । २ विदेहमहाराजजनककुमारी सीताजी । ३ चन्द्र । ४ बाण । ५ खड्ग । ६ तुरन्तका ।

In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखबाय धावहिं खान, तब लगे कीश परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय विकल वानर भालु, पुनि लाग वर्षनवालु ॥ ६२ ॥
जहँ तहँ थकित करि कीश, गर्जा बहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत, भये सकल वीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
इहिविधि सकल बल तोरि, तेहि कीन कपट बहोरि॥ ६३
प्रगटेसि विपुल हनुमान, धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरेउ जाइ, चहुँ दिशि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनिजाइ, कटकटहिं पूंछ उठाइ ॥
दशदिशि लँगूर विराज, तेहि मध्य कोशलराज ॥ ६४ ॥

छंद हरिगीतिका ॥

तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तनु शोभा सही ॥
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर वदति जय जय जय करी
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महँ मायाहरी ॥ ६५॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे ॥
शर निकर छांडे राम रावण बाहु शिर पुनि पुनि हरे ॥
श्रीराम रावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ॥
शत शेष नारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं॥ ६६॥

दोहा—कहे तासु गुणगण कछुक, जडमति तुलसीदास ॥
निज पौरुष अनुसार जिमि मशक उडाहिं अकास॥ २५१॥
काटि शीश भुज वार बहु, मरै न भट लंकेश ॥
प्रभु क्रीडत मुनि सिद्ध सुर, व्याकुल देखि कलेश॥ २५२॥

१ झुण्डके झुण्ड । २ मसा । ३ लीलाकरतेहैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काटत बढहिं शीश समुदाई * जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा * राम विभीषण तन तब देखा ॥
उमा काल मरु जाकी इच्छा * सो प्रभु जनकी लेत परीच्छा ॥
सुन सर्वज्ञ चराचर नायक * प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक॥
नाभी कुंड सुधा बस वाके * नाथ जियत रावण बल ताके ॥
सुनत विभीषण वचन कृपाला * हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
अशकुन होन लगे विधि नाना * रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरतहेतू * प्रगट भये जहँ तहँ नभकेतू ॥
दश दिशि दाह होन तब लागा * भयउ पर्व बिनु रवि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी * प्रतिमा श्रवहिं नयन बह वारी ॥

हरिगीतिकाछंद प्रतिमाश्रवहिंपविपातनभअतिवातबहडोलतमही
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही ॥
उत्पात अमित विलोकि नभसुर विकल बोलहिं जय जये ॥
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरत भये ॥६७॥

दोहा—आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छांडे शर इकतीस ॥
रघुनायक सायक चले, मानहुँ काल फणीश ॥ २५३

सायक एक नाभि शर शोषा * अपर लगे शिर भुज करि रोषा॥
लै शिर बाहु चले नाराचाँ * शिरभुजहीन रुंड महि नाचा ॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा * तब शर हति प्रभु कृतयुगखण्डा ॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी * कहां राम रण हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर * क्षुभित सिन्धु सर दिग्गजभूधर ॥
परेउ भूमि युग खंड बढाई * चापि भालु मर्कट समुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा * धरि शर चले जहां जगदीशा ॥

---

१ अमृत । २ पक्षी । ३ मूर्च्छा । ४ पत्थर । ५ वायु । ६ मेघ । ७ बाण । ८ जल ऊपरको उछलने लगा । ९ समुद्र । १० तालाब । ११ हाथी । १२ पर्वत ।

CC-0. In Public Domain. Shambhavi Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रविशे सब निषंग महँ आई * देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभुआनन * हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जय ध्वनि पूरि रही नवखंडा * जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा ॥
बर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा * जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा ॥
छंद—जय कृपाकन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो ॥
खलदल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो ॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजि दुन्दुभि गहगही ॥
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ॥ ६८ ॥
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ॥
जनु नीलगिरिपर तडितपटल समेत उडुगण भ्राजहीं ॥
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिरकण तनु अतिबने ॥
जनु रायमुनिय तमालतरुवर बैठि बहु सुख आपने ॥६९॥
दोहा—कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ॥
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ॥ २५४ ॥
पति शिर दीख जबहि मन्दोदरि * मूर्छित बिकल खसी धरणी परि ॥
युवतिबृन्द रोवत उठि धाई * तेहि उठाय रावण पहँ ल्याई ॥
पतिगति देखि सो कराति पुकारा * छूटे केश न देह सँभारा ॥
उर ताडना करै विधि नाना * रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तव बलनाथ डोल नित धरणी * तेजहीन पावकँ शशि तरणी ॥
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा * सो तनु आजु परा महिछारा ॥
वरुण कुवेर सुरेश समीरा * रणसन्मुख धरु काहु न धीरा ॥
भुजबल जीति काल यम साई * आजु सो परेउ अनाथ किनाई ॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई * सुत परिजन बल वरणि नजाई ॥

---

१ मुख । २ ब्रह्मा । ३ करुणाके मर्य्यादा श्रीरामचन्द्रजी । ४ गंभीर । ५ नक्षत्र । ६ शोभित । ७ अग्नि । ८ श्रीसूर्य्यनारायण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामविमुख अस हाल तुम्हारा * रहा न कुल कोउ रोवनि हारा॥
तव वश विधि प्रपंच सब नाथा * सब दिगपति तोहिं नावहिं माथा॥
अब तवशिर भुज जम्बुक खाहीं* रामविमुख यह अनुचित नाहीं ॥
कालविवशपति कहा न माना * अग जगनाथ मनुज करि जाना॥
छंद–जानेउ मनुज करि दनुज काननदहन पावक हरि स्वयं ॥
ज्यहि नमत शिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु ना करुणामयं
आजन्मते परद्रोहरत पापौघमय तव तनु अयं ॥
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥ ७० ॥
दोहा–अहहनाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन ॥
मुनि दुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन्ह भगवान ॥ २५५ ॥
मन्दोदरी वचन सुनि काना * सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना॥
अज महेश नारद सनकादी * जे मुनिवर परमारथवादी ॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी * प्रेम मगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत विलोकेउ नारी * गये विभीषण मन दुख भारी ॥
बन्धुदशा देखत दुख भयऊ * तब प्रभु अनुजहि आयसु दयऊ ॥
लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझाये * सहित विभीषण प्रभु पहँ आये ॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका * करहु क्रिया परिहरि सब शोका॥
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी * विधिवत् देश काल गति जानी॥
दोहा–मयतनयादिक नारि सब, देइँ तिलांजलि ताहि ॥
भवन गई रघुवीरगुण, गण वर्णति मनमाहि ॥ २५६ ॥
आइ विभीषण पुनि शिरनावा * कृपासिंधु तब अनुज बुलावा ॥
तुम कपीश अंगद नल नीला * जाम्बवन्त मारुतसुत शीला ॥
सब मिलि जाहु विभीषण साथा * सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥

---

१ अनेक ब्रह्माण्ड चराचरके स्वामी । २ पापोंकोसमूह । ३ ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी । ४ त्याग । ५ आज्ञा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पितावचन मैं नगर न जाऊं * आपुसरिस कपि अनुज पठाऊं ॥
तुरत चले कपि सुनि प्रभुवचना * कीन्ही जाइ तिलककी रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी * तिलक कीन्ह स्तुति अनुसारी ॥
जोरि पाणि सबही शिर नाये * सहित विभीषण प्रभु पहँ आये ॥
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे * कहि प्रियवचन सुखीसब कीन्हे॥
छंद–कीन्हे सुखी सब कहि सुवाणी बल तुम्हारे रिपुहयो ॥
पायो विभीषण राज्य तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो ॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ॥
संसारसिन्धु अपारपार प्रयासबिनु तरिजाइहैं ॥ ७१ ॥
दोहा–सुनत रामके वचन मृदु, नाहिं अघात कपिपुंज ॥
बारहिं बार विलोकि मुख, गहे सकल पदकंज ॥ २५७ ॥
तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु * तासु कुशल लै तुम चलि आवहु॥
तब हनुमान नगर महँ आये * सुनि निशिचरी निशाचर धाये ॥
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही * जनकसुता दिखाय पुनि दीन्ही॥
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा * रघुपतिदूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता * कुशल अनुज प्रभु सेनसमेता ॥
सब विधि कुशल कोशलाधीशा * मातु समर जीत्या दशशीशा ॥
अविचल राज्य विभीषण पावा * सुनि कपिवचन हर्ष उरछावा ॥
छंद–अतिहर्षमन तनु पुलक लोचन सजल पुनि पुनि कह रमा ॥
का देउँ तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि नहिं वाणीसमा ॥
सुन मातु मैं पायउँ अखिल जगराज्य आजु न संशयं ॥
रण जीति रिपुदल वन्धुयुत पश्यामि राम निरामयं ॥ ७२ ॥

---

१ भाई । २ हाथ । ३ शत्रुकानाशभयो । ४ श्रम । ५ मधुर । ६ अचल ।
७ आमय षट् विकार जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा, मृत्यु ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दोहा—सुन सुत सद्गुण सकल तव, हृदय बसैं हनुमन्त ॥
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त[2] ॥ २५८ ॥

अब सोइ यत्न करहु तुमताता * देखौं नयन श्याम मृदुगाता ॥
तब हनुमन्त राम पहँ आई * जनकसुता कर कुशल सुनाई ॥
सुनि वाणी पतंगकुलभूषण * बोलि लिये कपिराज विभीषण ॥
मारुतसुतके संग सिधावहु * सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहि सकल गये जहँ सीता * सेवहिं सब निशिचरीविनीता ॥
वेगि विभीषण तिनहि सिखावा * सादर तिन सीतहि अन्हवावा ॥
दिव्यवसन भूषण पहिराये * शिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये ॥
तेहि पर हर्षि चढी वैदेही * सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
वेतपाणि[1] रक्षक चहुँपासा * चले सकल मन परम हुलासा ॥
संग लिये त्रिजटा निशिचरी * चली राम पहँ सुमिरत हरी ॥
देखन भालु कीश बहु धाये * रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुवीर कहा मम मानहु * सीतहि सखा पयादेहि आनहु ॥
देखहिं कपि जननीकी नाईं * बिहँसि कहा रघुवीर गुसाईं ॥
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हरषे * नभते सुरन सुमन बहु वरषे ॥
सीतहि प्रथम अग्नि महँ राखी * प्रगट कीन्ह चह अन्तरसाखी ॥

दोहा—तेहि कारण करुणाअयन, कहे कछुक दुर्वाद ॥
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥ २५९ ॥

प्रभुके वचन शीश धरि सीता * बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥
लक्ष्मण होहु धर्मके नेगी * पावक[4] प्रगट करहु तुम वेगी ॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी वानी * विरह विवेक[5] धर्म रति[6] सानी ॥
लोचन[7] सकल जोरि कर दोऊ * प्रभु सन कछु कहिसकत न ओऊ ॥

---

१ समीचीन । २ लक्ष्मणजी । ३ विभीषणके चोपदार । ४ अग्नि । ५ ज्ञान । ६ प्रीति । ७ नेत्रोंमें जल भराहै ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखि राम रुख लक्ष्मण धाये * पावक प्रगट काठ बहु लाये ॥
प्रबल अनल विलोकि वैदेही * हृदय हर्ष कछु भय नहिँ तेही ॥
जो मन क्रम वच मम उरमाहीं * तजि रघुवीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृशानु सबकी गति जाना * मोकहँ होहु श्रीखण्डसमाना ॥
छंद—श्रीखंडसम पावकप्रकटकिय सुमिरिप्रभु तेहिमहँचली ॥
जय कोशलेश महेशवन्दितचरणरज अतिनिर्मली ॥
प्रतिबिम्ब अरु लौकिक कलंक प्रचण्ड पावक महँ जरे ॥
प्रभुचरित काहु न लखेउ सुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे ॥७३॥
तब अनल[2] भूसुररूप करगहि सत्य श्री श्रुतिविदित जो ॥
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनिसो ॥
सोइ राम वामविभागराजित रुचिर अति शोभा भली ॥
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकजकी कली ॥७४॥
दोहा—हर्षि सुमन वर्षहिं विबुध, बाजहिं गगन निशान ॥
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढ़ी विमान ॥ २६० ॥
श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार ॥
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार ॥ २६१ ॥
तब रघुपति अनुशासन पाई * मातलि[3] चले चरण शिरनाई ॥
आये देव सदा स्वारथी * वचन कहहिं जनु परमारथी[4] ॥
दीनबंधु दयालु रघुराया * देव कीन्ह देवनपर दाया ॥
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी * निज अघ गयउ कुमारगगामी ॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी * सदा एक रस सहज उदासी ॥

---

१ चन्दन । २ अग्नि ब्राह्मणका रूप धरके । ३ इन्द्रका सारथी । ४ परमार्थ कहीं परमअर्थ श्रीरामचन्द्र स्वरूप परब्रह्म प्रताप ऐश्वर्य तेज कृपा परमादिव्य देवता वर्णन करतेहैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अकल[1] अगुण[2] अनवद्य अनामय * अजित अमोघ एक करुणामय॥
मीन कमठ शूकर नरहरी * वामन परशुराम वपुधरी ॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा * नाना तनु धरि तुमहिं नशावा ॥
रावण पापमूल सुरद्रोही * कामक्रोधमदरत अति कोही ॥
अधम शिरोमणि तवपद पावा * यह हमरे मन अचरज आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी * स्वारथरति तव भक्ति विसारी ॥
भव प्रभाव सन्तत हम परे * अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे ॥
दोहा– करि विनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि ॥
अतिशय प्रेम सरोज विधि, स्तुति करत बहोरि ॥ २६२ ॥
तोटकछंद–जयरामसदासुखधामहरे, रघुनायकशायकचापधरे॥
भववारण दारुणसिंह प्रभो, गुणसागर नागर[3] नाथ विभो ॥
तनु काम अनेक अनूप छबी, गुणगावत सिद्ध मुनींद्र कबी ॥
यशपावनरावननागमहा, खगनाथयथाकरिकोपगहा ॥ ७५ ॥
जनरंजन[4] भंजन शोक भयं, गत कोह सदा प्रभु बोधमयं ॥
अवतार उदार अपार गुनं, महिभार विभंजन ज्ञानघनं ॥
अजव्यापकमेकमनादिसदा, करुणाकर राम नमामि मुदा ॥
रघुवंशविभूषणदूषणहा, कृतभूपविभीषणदीनरहा ॥ ७६ ॥
गुणज्ञान निधान[5] अमान अजं, नितरामनमामिविभुं[6] विरजं[7] ॥
भुजदण्डप्रचण्ड प्रताप बलं, खलवृन्दनिकन्द महाकुशलं[8] ॥
विनुकारण दीनदयालुहितं, छबि धाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारण कारण काजपरं, मनसम्भव दारुण दोषहरं ॥७७॥
शर चाप मनोहरतूणधरं, जलजारुणलोचन भूपवरं ॥

१ कलारहित । २ तामस, राजस, सात्विकतेपरे । ३ सर्व्वोपरिश्रेष्ठ अतिप्रवीण । ४ जनोंके आनन्दकर्त्ता । ५ स्थान । ६ सबप्रकारसमर्थहौ । ७ मायाते रहितहौ । ८ प्रवीण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखमन्दिर सुन्दर श्रीरमनं, मद मार महा ममता[3] शमनं ॥
अनवद्य[1] अखंड अगोचरगो, समरूप सदा सब होइनसो ॥
इतिवेदवदन्ति न दन्तकथा, रविआतपभिन्न न भिन्न यथा॥७८॥
कृतकृत्य[5] विभो सब वानरये, निरखन्त तवाननँ सादरये ॥
धृकजीवन देव शरीरहरे, तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयालु दया करिये, मति मोरि विभेद करी हरिये ॥
जिहितेविपरीतक्रियाकरिये, दुखमेंसुखमान सुखीचरिये ॥७९॥
खलखण्डन[9] मण्डन रम्य क्षमा, पदपंकज सेवित शम्भुउमा ॥
नृपनायक दे वरदानमिदं, चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं ॥ ८० ॥
दोहा—विनय कीन्ह बहु भांति विधि, प्रेम प्रफुल्लित गात ॥
वदन विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥ ५६३ ॥
तिहि अवसर दशरथ तहँ आये * तनय विलोकि नयन जल छाये ॥
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा * आशिर्वाद पिता तब दीन्हा ॥
तात सकल तव पुण्य प्रभाअ * जीतेउँ अजेय[11] निशाचर राऊ ॥
सुनि सुत वचन प्रीति अति बाढी * नयन सलिल[12] रोमावलि ठाढी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना * चितै पितहि दीन्हेउ दृढ ज्ञाना ॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा * दशरथ भेद भक्ति मन लावा ॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं * तिन्हकहँ राम भक्ति निज देहीं॥
बार बार करि प्रभुहि प्रणामा * दशरथ हर्षि गये निजधामा ॥
दोहा—अनुजजानकीसहित प्रभु, कुशल कोशलाधीश ॥
छबि विलोकि मन हर्षि अति, स्तुति कर सुरईश ॥ २६४ ॥

---

१ योग वैराग्य, ज्ञान, ध्यान, समाधि इत्यादिकको अभिमान । २ नाशकर्त्ता । ३ वाणीतेपरेहो । ४ तेज । ५ कृतार्थ । ६ ऐश्वर्य । ७ मुख । ८ दानव राक्षस । ९ सम्पर्ण भुवनके शृंगार।१०स्वरूप । ११ जो किसीकेजीतिवे योग्यनहीं।१२पानी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोमरछद* जय राम शोभाधाम, दायक प्रणत[१] विश्राम ॥
धृत तूण[२] वर शर चाप[३], भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि, मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट[४] मारेउ नाथ, भये देव सकल सनाथ ॥ ८१ ॥
जय हरण धरणीभार, महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल, किये यातुधान विहाल ॥
लंकेश अति बलगर्व, किये वश्य सुर गन्धर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग, हठि पन्थ सबके लाग ॥८२॥
पर द्रोह रत अति दुष्ट, पायो सो फल पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीनदयाल, राजीवनयन विशाल ॥
मोहिं रहा अति अभिमान, नाहिं कोउ मोहिं समान ॥
अब देखि प्रभु पदकंज, गत मानप्रद दुखपुंज ॥ ८३ ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव, अव्यक्त[५] जिहि श्रुतिगाव[६] ॥
मोहिं भाव कोशलभूप, श्रीराम सगुण स्वरूप ॥
वैदेहि अनुज समेत, मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निजदास, देभक्ति रमानिवास ॥ ८४ ॥
पु०छं०—दे भक्ति राम निवास त्रासहरण शरणसुखदायकं ॥
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्द्वभंजन मनुज तनु अतुलित बलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्यराम नमामि करुणाकोमलं ॥ ८५ ॥
दोहा—अब करि कृपा विलोकि मोहिं, आयसु देहु कृपालु ॥
काह करों सुनि प्रिय वचन, बोले दीनदयालु ॥ २६५ ॥

---

१ शरणागत । २ तरकस । ३ धनुर्बाण । ४ रावण । ५ अप्रकट अदृश्य ।
६ वेद । ७ जन्म मरणके नाशकर्त्ता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निशिचरके मारे ॥
ममहित लागि तजे इन प्राना * सकल जिआउ सुरेश सुजाना ॥
सुनु खगेश प्रभुकी यह वानी * अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी॥
प्रभुचह त्रिभुवन मारि जिवाई * केवल शक्राहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधावरषि कपि भालु जिआये * हर्षि उठे सब प्रभु पहँ आये ॥
सुधा वृष्टि भइ दुहुँदल ऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
रामाकार भये तिन्हके मन * गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन ॥
सुर अंशिक सब कपि अरु ऋच्छा * जिये सकल रघुपतिकी इच्छा ॥
राम सरिस को दीन हितकारी * कीन्हे मुक्त निशाचर झारी ॥
खल मल धाम काम रत रावन * गति पाई जो मुनिवरपावन ॥

दोहा—सुमन वर्षि सब सुर चले, चढि चढि रुचिर विमान ॥
पेखि सुअवसर राम पहँ, आये शम्भु सुजान ॥ २६६ ॥
परम प्रीति कर जोरि युग, नयन नलिन भरि वारि ॥
पुलकित तनु गदगदगिरा, विनय करत त्रिपुरारि ॥२६७॥

छंद—मामभिरक्षयरघुकुलनायक, धृतवरचापरुचिरकरसायक ॥
मोहमहा घन पटल प्रभंजन, संशयविपिनअनलसुररंजन ॥
अगुणसगुण गुणमंदिर सुंदर, भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर॥
काम क्रोध मद गज पंचानन, बसहुनिरन्तर जनमनकानन८६
विषय मनोरथ पुंज कुंजवन, प्रबल तुषार उदार पारमन॥
भव वारिधि मन्दर परमन्दर, वारय तारय संसृतिदुस्तर ॥
श्यामगात राजीवविलोचन, दीनबन्धु प्रणतारत मोचन ॥
अनुजजानकी सहित निरन्तर, बसहुरामनृप ममउर अन्तर॥
मुनिरंजन महिमण्डल मण्डन, तुलसिदासप्रभुत्रासविखण्डन

१ इन्द्र । २ अमृतकी वर्षा । ३ राक्षस । ४ कमलनेत्र । ५ घनमेघ । ६ सिंह । ७ जन्म मरण । ८ शृंगार । ९ विशेषखण्डनकर्त्ता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–नाथ जबहिं कोशलपुर, होइहिँ तिलक तुम्हार ॥
तब आउब हम सुनहु प्रभु, देखन चरित उदार ॥ २६८ ॥
करि विनती जब शम्भु सिधाये * तब प्रभुनिकट विभीषण आये ॥
नाइ चरण शिर कह मृदुवाणी * विनय सुनिय मम शारंगपाणी ॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा * पावन यश त्रिभुवन विस्तारा ॥
दीन मलीन हीन मति जाती * मोपर कृपा कीन्ह वहु भांती ॥
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजै * मज्जन करिय सकल श्रम छीजै ॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा * देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा ॥
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय * पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला * सजल भये हरि नयन विशाला ॥
दोहा–तोर कोश गृह मोर सब, सत्य वचन सुनु तात ॥
दशा भरतकी सुमिरि मोहिं, पलक कल्पसम जात ॥२६९॥
तापस वेष शरीर कृश, जपैं निरन्तर मोहिं ॥
देखों वेगि सो यतनकरि, सखा निहोरों तोहिं ॥ २७० ॥
जो जैहों वीते अवधि, जियत न पाऊं वीर ॥
प्रीति भरतकी समुझि प्रभु, पुनि पुनि पुलक शरीर॥२७१॥
करहु कल्प भरि राज्य तुम, मोहिं सुमन्यहु मन माहिं ॥
पुनि ममधाम सिधारचउ, जहां संत सब जाहिं ॥ २७२ ॥
सुनत विभीषण वचन रामके * हर्षि गहे पद कृपाधामके ॥
वानर भालु सकल हर्षाने * प्रभुपद गहि गुण विमल बखाने॥
बहुरि विभीषण भवन सिधाये * मणिगण वँसन विमान भराये ॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा * हँसिकै कृपासिन्धु अस भाषा ॥
चढिविमान सुन सखा विभीषण * गगन जाइ बर्षहु पटे भूषण ॥

१ पवित्र । २ स्नान । ३ खजाना । ४ आनंदसह । ५ दूबर । ६ चौदहवर्ष-कीमर्यादा । ७ कपडे । ८ आकाश । ९ वस्त्र । १० गहना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नभ पर जाइ विभीषण तबहीं * बर्षि दिये पट भूषण सबहीं ॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं * मणिमुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
हँसत राम सिय अनुजसमेता * परम कौतुकी कृपानिकेता ॥
दोहा–ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कह वेद ॥
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों, करत अनेक विनोद ॥२७३॥
उमा योग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ॥
रामकृपा नहिं कराहिं तस, जस निःकेवल प्रेम ॥ २७४ ॥
भालु कपिन पट भूषण पाये * पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये॥
नाना जिनिसि देखि प्रभु कीशा * पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा॥
चितै सबनि पर कीन्ही दाया * बोले मधुर वचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा * तिलक बिभीषण कहँ पुनि सारा॥
निज निज गृह अब तुम सब जाहू* सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू ॥
वचन सुनत प्रेमाकुल बानर * जोरि पाणि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सबसोहा * हमरे हिय उपजे सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा* तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं*मशक कबहुँ खगपति हित करहीं॥
देखि राम रुख बानर ऋच्छा * प्रेम मगन नहिं गृहकी इच्छा ॥
दोहा–प्रभुप्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उर राखि ॥
हर्ष विषाद समेत तब, चले विनय बहु भाषि ॥ २७५ ॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ॥
सहित विभीषण अपर जे, यूथप अति बलवान ॥ २७६ ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश, भरि भरि लोचन वारि ॥
सन्मुख चितवहिं राम तन, नयन निमेष निवारि ॥ २७७॥
अतिशय प्रीति देखि रघुराई * लीन्हे सकल विमान चढाई ॥

१ काले, नीले, पीले, हरित, लाल, श्वेत, लघु, मध्य, दीर्घ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन महँ विप्र चरण शिरनावा * उत्तर दिशिहि विमान चलावा ॥
चलत विमान कोलाहल होई * जय रघुवीर कहैं सब कोई ॥
सिंहासन अतिउच्च मनोहर * सिय समेत बैठे प्रभु तापर ॥
राजत राम सहितभामिनी[1] * मेरु शृंग जनु घन दामिनी[2] ॥
रुचिर विमान चला अति आतुर[4] * कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सुर ॥
परमसुखद चलि त्रिविध बयारी * सागर सुरसरि निर्मल वारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा * मन प्रसन्न निर्मल नभ आशा ॥
कह रघुबीर देख रण सीता * लक्ष्मण हत्यो इहाँ इंद्रजीता[3] ॥
अंगद हनूमानके मारे * रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई * इहां हतेउँ सुर मुनि दुखदाई ॥
दोहा—सुन्दरि * सेतु देखु यह, थापेउँ शिव सुखधाम ॥
सीता सहित कृपायतन, शम्भुहि कीन प्रणाम ॥ २७८ ॥
जहँ जहँ कृपासिन्धु वन, कीन्ह बास विश्राम ॥
सकल देखाये जानकिहि, कहि कहि सबके नाम ॥२७९॥
सपदि विमान तहां चलिआवा * दण्डकवन जहँ परम सुहावा ॥
कुम्भजादि मुनि नायक नाना * गये राम सबके स्थाना ॥
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा * आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा * चला विमान तहांते चोखा[4] ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई * यमुना कलिमल हरणि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता * राम कहा प्रणाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा * देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि वेनी * हरण शोक सुरलोक निशेनी ॥

*श्लोक—अत्रपूर्वंमहादेवःप्रसादमकरोद्विभुः॥एतत्तुदृश्यतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः॥१॥
सेतुबन्धइतिख्यातंत्रैलोक्येनचपूजितं ॥ एतत्पवित्रंपरमंमहापातकनाशनम् ॥ २ ॥

१ सीता । २ बिजुली । ३ मेघनाद । ४ अतिशीघ्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखी अवधपुरी अति पावनि * त्रिविधताप भव दाप नशावनि ॥

दोहा—तब रघुनन्दन सिय सहित, अवधहि कीन प्रणाम ॥
सजल विलोचन पुलक तनु, पुनि पुनि हर्षित राम॥२८०॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ॥
कपिनसहितमहिसुरन्हकहँ,दानविविधविधि दीन्ह ॥ २८१ ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई * धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिकुशल हमारि सुनावहु * समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ * तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ ॥
नानाविधि पूजा मुनि कीन्ही * स्तुतिकरि पुनि आशिषदीन्ही ॥
मुनि पदवन्दि युगल करजोरी * चढि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये * नाव नाव कहि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा * उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी * बहु प्रकार करि चरणन परी ॥
दीन्ह अशीष मुदित मन गंगा * सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल * आवा निकट परम सुख संकुल ॥
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही * परेउ अवनि तनु सुधि नहिं तेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई * हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥

छंद—लिये हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप पूछी कुशल सो करि वीनती ॥
अब कुशल पदपंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्यजे ॥
सुखधाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामिते ॥८८॥
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लायऊ॥

---

१ अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत । २ गंगा, यमुना, सरस्वतीकासंगम । ३ ब्राह्मणकारूप । ४ पूर्णप्रेमभरे । ५ पृथ्वी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मतिमंद तुलसीदास सोप्रभु मोह वश बिसरायऊ ॥
यह रावणारि चरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥८९॥

दोहा—समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥ २८२ ॥
यह कलिकाल मलायतनु, मन करि देखु विचार ॥
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार ॥ २८३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
लंकाकांडेषष्ठःसोपानःसमाप्तः ॥ ६ ॥

इति लङ्काकाण्ड समाप्त ।

---

१ रामचन्द्रका । २ प्रीतिदाता । ३ षड्विकारहरता । ४ प्रसन्नतासे ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना—मुंबई

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

उत्तरकाण्डम्।

जिसमें

श्रीरामचन्द्र भरत मिलाप तथा रघुनाथजीको राजगद्दीपर बैठना, रामराज्य वर्णन, रामचन्द्रजीका प्रजाका सदुपदेश करना, काकभुशुण्ड और गरुडजीका सम्वाद, ज्ञान भक्तिकी अभेदता, कलियुग महिमा, काकभुशुण्ड प्रति गरुडजीके सप्त प्रश्न आदि अत्यंत सुमधुर कलिमय नाशनी कथा वर्णित हैं ॥

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानामें

छापकर प्रगट की ।

बंबई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तरकाण्डम् ७

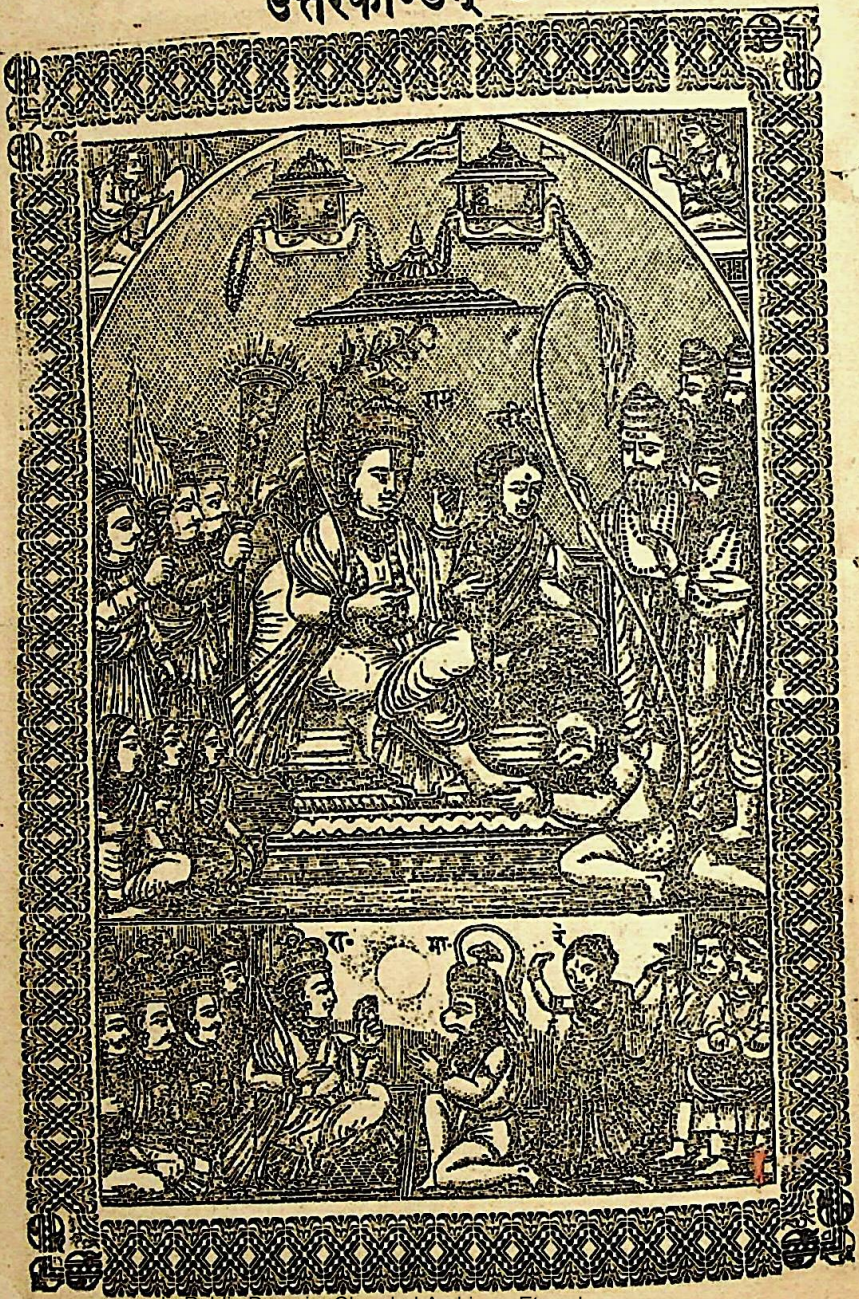

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे उत्तरकाण्डम् ।

श्लोक ।

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥ कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौ पद्मयोनिशिति कंठवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्यमनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥ इंदुकुंददरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥ कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ॥ ३ ॥

दो०-पूर्णेन्दुसमजगसुखद,रामचंद्ररघुराज॥निर्मलमूरतिअवधपुर,रही विराजसमाज॥ करदंडवतसप्रेमसे,चरणहियेमेंधार॥उत्तरको शोधन करहुँ, कछु निजमति अनुसार॥

श्लोकार्थ—मोरके कंठकी कान्तिकी समान नीलवर्ण देवताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके चरणकमलका जिनके हृदयमें चिह्न है शोभाके निधि पीतवस्त्र धारण किये कमलसे नेत्र सदा प्रसन्नरहनेवाले हाथमें धनुष बाण लिये कपिसमूहोंसेयुक्त भाइयोंसे सेवित जानकीके पति पुष्पकपर बैठेहुये स्तुतियोग्य रामकी मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥ रामचंद्र कौशलपुरीके ईश्वर जिनके युगलचरणकमल ब्रह्माशंकरसे वंदनीयहैं जो जानकीके हस्तकमलसे प्यार किये हुयेहैं और ध्यान करनेवाले दासोंके मन भृंगके संगीहैं तिनकी वंदना करताहूं ॥ २ ॥ चंद्रमा कुंदके पुष्प शंखकी समान गौरवर्ण गिरिजाके पति इच्छित सिद्धिके दाता करुणारससेभरे उत्तम कमलकी समान नेत्र और कामके जलानेहारे शिवजीको नमस्कार करताहूं ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–रहा एक दिन अवधिकर, अति आरत पुरलोग ॥
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर, कृशतनु राम वियोग[३] ॥ १ ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगररम्य चहुँ फेर ॥ २ ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ ॥
आये प्रभु सिय अनुज युत, कहन चहत अस कोइ ॥ ३ ॥
भरत नयन भुजदक्षिण, फरकहिं बारहिं बार ॥
जानि शकुन मन हर्ष अति, लागे करन विचार ॥ ४ ॥
रहा एक दिन अवधि अधारा * समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
कारण कवन नाथ नहिं आये * जानिकुटिल प्रभु मोहिंबिसराये ॥
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी * रामपदारविन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिल नाथ मोहीं चीन्हा * ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जोकरणी समुझैं प्रभु मोरी * नहिं निस्तार कल्प शत कोरी ॥
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ * दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ सोई * मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई ॥
बीते अवधि रहैं जो प्राना * अधमकवनजग मोहिं समाना ॥
दोहा–राम विरह सागर महँ, भरत मगनमन होत ॥
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत[६] ॥ ५ ॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ॥
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात[८] ॥ ६ ॥
देखत हनूमान अति हर्षे * पुलकि गात लोचन जल वर्षे ॥
मनमहँ बहुत भांति सुख मानी * बोले श्रवण सुधासम[१०] वानी ॥
जासु विरह शोचहु दिन राती * रटहु निरन्तर गुण गण पाती ॥

१ मर्यादा चौदह वर्षकी । २ दूबर । ३ विक्षेप । ४ कोमल । ५ डूबत । ६ नौका । ७ टपकतेहैं । ८ कमल । ९ शरीर । १० अमृतमय ।

Public Domain, Gharibal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुकुलतिलक सुजन सुखदाता * आवत कुशल देव मुनि त्राता ॥
रिपुरणजीति सुयश सुरगावत * सीता अनुजसहित प्रभु आवत ॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा * तृषावन्त जनु पाय पियूषा ॥
को तुम तात कहांते आये * मोहिं परमप्रिय वचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना * नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर * सुनत भरत भेटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेमनहिं हृदय समाता * नयन श्रवत जल पुलकित गाता ॥
कपितव दरश सकल दुखबीते * मिले आजु मोहिं राम सप्रीते ॥
वार वार पूंछी कुशलाता * तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता ॥
यहि संदेश सरिस जगमाहीं * करि विचार देखा कछु नाहीं ॥
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं * अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमान नाइ पदमाथा * कहेसि सकल रघुपति गुणगाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं * सुमिरत मोहिं दासकी नाईं ॥

छंद—निजदासज्यों रघुबंशभूषण कबहुँमम सुमिरन करचो ॥
सुनि भरतवचन विनीतअति कपि पुलकतनुचरणनपरचो ॥
रघुवीर निजमुख जासु गुणगण कहत अग जग नाथसो ॥
काहे न होउ विनीत परम पुनीत सद्गुणगाथसो ॥ १ ॥

दोहा—राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्यवचन मम तात ॥
पुनि पुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात ॥ ७ ॥

सो०—भरत चरण शिरनाइ, तुरतगये कपि राम पहँ ॥
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यानचढ़ि ॥ १ ॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये * समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई * आवत नगर कुशल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठिधाईं * कहि प्रभुकुशल भरतसमुझाईं ॥

१ रक्षक । २ सुधा । ३ सेवक । ४ माता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समाचार पुरवासिन पाये * नर अरु नारि हर्षि उठिधाये ॥
दधि दूर्वा रोचन फल फूला * नव तुलसीदल मंगल मूला ॥
भरि भरिथार हेमवर[1] भामिनि * गावत चलीं सिन्धुरागामिनि[2] ॥
जो जैसे तैसे उठि धावहिं * बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं ॥
एक एक सन पूछहिं धाई * तुम देखे दयालु रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी * भई सकल शोभाकी खानी ॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा * बहै सुहावनि त्रिविध समीरा[3] ॥

दोहा—हर्षित गुरु पुरजन अनुज, भूसुरवृन्द समेत ॥
चले भरत अति प्रेममन, सन्मुख कृपानिकेत ॥ ८ ॥
बहुतक चढीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान ॥
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमंगलगान ॥ ९ ॥
राकाशशि[4] रघुपति पुरी, सिन्धु देखि हर्षान ॥
बढे कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान ॥ १० ॥

रविकुल कमल दिवाकर आवत * नगर मनोहर कपिन देखावत ॥
सुन कपीश अंगद लंकेशा * पावनिपुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना * वेद पुराण विदित जगजाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ * यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि ममपुरी सोहावनि * उत्तरदिशि सरयू बह पावनि ॥
जोमज्जहिं[5] सो विनहिं प्रयासा[6] * मम समीप नर पावहिं बासा ॥
अतिप्रिय मोहिं इहांके बासी * मम धामदापुरी सुखरासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी वानी * धन्य अवध जेहि राम बखानी ॥

दोहा—आवत देखे लोग सब, कृपासिंधु भगवान ॥
नगरनिकट प्रभु आयउ, उतरे भूमि विमान ॥ ११ ॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम कुबेर पहँ जाहु ॥

---

१ कंचनकेथार । २ गजगामिनी । ३ वायु । ४ पूर्णमासीकाचन्द्रमा । ५ पवित्र । ६ स्नानकरैं । ७ परीश्रम । ८ हमारे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष विरह अति ताहु ॥ १२ ॥

आये भरत संग सब लोगा * कृश तनु श्रीरघुबीर वियोगा ॥
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक * देखे प्रभु महिधरि धनुसायक ॥
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह * अनुजसहित अतिपुलकितनूरुह[1] ॥
भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया * हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया ॥
सकलद्विजन कहँ नायउ माथा * धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभुपद पंकज *नवहिंजिनहिं शंकर सुर मुनि अज[2] ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये * बल करि कृपासिन्धु उरलाये ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढे * नव राजीव[3] नयन जल वाढे ॥

हरिगीतिका छंद ॥

राजीव लोचन श्रवतजल तनु ललित पुलकावलिबनी ॥
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ॥
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत बर सुखमा[4] लही ॥२॥

पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि न आवई ॥
सुनि शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दरशन दियो ॥
बूडत बिरह वारिधि कृपानिधि काढि मोहिं कर गहि लियो ॥ ३

दोहा—"सधन चोर मम मुदित मन, धनी गही जिमि फेंट ॥
तिमि सुग्रीव विभीषण, प्रभुहि भरतकी भेट ॥ १३ ॥"
पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ॥
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १४ ॥

---

१ तनुके रोम खडे होगये हैं । २ ब्रह्मा । ३ कमल । ४ शोभा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेटे * दुसह विरह सम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिरनावा * अनुज समेत परम सुख पावा ॥
प्रभु विलोकि हरषे पुरवासी * जनित वियोग विपति सब नासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी * कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमितरूप प्रकटे तेहि काला * यथायोग्य मिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपा दृष्टि सब लोगविलोका * किये सकल नर नारि विशोका ॥
क्षणमहँ सबहि मिले भगवाना[1] * उमा मर्म यह काहु नजाना ॥
यहिविधि सबहिं सुखी करि रामा * आगे चले शीलगुणधामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाई * निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ॥

हरिगीतिका छंद ॥

जनु धेनु बालक बच्छतजि गृहचरण वन परवश गईं ॥
दिन अन्त पुर रुख श्रवत थन हुंकार करि धावति भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहु विधि कहे ॥
गइ विषम विपति वियोगभवतिन्हहर्षसुखअगणितलहे ॥४॥

दोहा—भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरण रति जानि ॥
रामहिं मिलत कैकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥ १५ ॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले, हर्षे आशिष पाइ ॥
कैकयि कहँ पुनि पुनि मिले, मन कर क्षोभ न जाइ ॥१६॥

सासुन सबहिं मिली वैदेही * चरणन लागि हर्ष अति तेही ॥
देहिं अशीष पूंछि कुशलाता * होइ अचल तुम्हार अहिवाता[2] ॥
सबरघुपतिपदकमल विलोकी * मंगल जानि नयन जल रोकी ॥
कनकथार[3] आरती उतारहिं * बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नानाभांति निछावरि करहीं * परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं * चितवहिं कृपासिन्धु रणधीरहिं॥

१ भगवान् कही षट् भग संयुक्त, ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष ।
२ सुहाग । ३ सोनेकेथार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हृदय विचारति बारहिं बारा * कवन भांति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार युगल[1] मम बारे * निशिचर सुभट महाबलभारे ॥
दोहा—लक्ष्मण अरु सीता सहित, प्रभुहिं विलोकहिं मात ॥
परमानन्द मगनमन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥ १७ ॥
लंकापति[2] कपीश नल नीला * जाम्बवंत अंगद शुभ शीला ॥
हनुमदादि सब वानर वीरा * धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
भरत सनेह शील व्रत नेमा * सादर सब वर्णहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगरबासिनकी रीती * सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
पुनि रघुपति निज सखा बुलाये * मुनिपद लागहु सबहिं सिखाये ॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे * इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे * भये समर सागर कहँ बेरे[4] ॥
मम हित लागि जन्म इनहारे * भरतहुते मोहिं अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये * निमिष निमिष[5] उपजत सुखनये॥
दोहा—कौशल्याके चरण युग, पुनि तिन नायउ माथ ॥
आशिष दीन्ही हर्षि हिय, तुम प्रिय जिमि रघुनाथ ॥१८॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल[6], भवनचले सुखकन्द ॥
चढे अटारिन देखहिं, नगर नारि नर वृन्द ॥ १९ ॥
कंचनकलश विचित्र सँवारे * सबनिधरे साजि निज निज द्वारे॥
बन्दनवार पताका केतू * सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
वीथिन[7] सकल सुगंधि सिंचाये * गजमणि रचि बहु चौक पुराये ॥
नानाभांति सुमंगल साजे * हर्षि निशान नगर बहुबाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं * देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना * युवती साजि करहिं कलगाना ॥

---

१ राम-लक्ष्मण । २ विभीषण । ३ सुग्रीव । ४ जहाज । ५ पलपल । ६ अतिसघन । ७ गलिनमें । ८ बाजा । ९ मधुरगान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करहिं आरती आरतहरके * रघुकुल कमल विपिन दिनकरके ॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना * निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठग रहहीं * उमा तासु गुण नर किमि कहहीं

दोहा–नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपति विरह दिनेश[1] ॥
अस्त भये विकसित[2] भई, निरखि राम राकेश[3] ॥ २० ॥

होहिं शकुन शुभ विविध विधि, बाजहिं गगन निशान ॥
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥ २१ ॥

प्रभु जाना कैकयी लजानी * प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा * पुनि निज भवन गवन प्रभु कीन्हा
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ * पुर नर नारि सुखी सब भयऊ ॥
गुरुवशिष्ठ द्विज लिये बुलाई * आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन[4] * रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठके वचन सुहाये * सुनत सकल विप्रन मन भाये ॥
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका * जग अभिराम राम अभिषेका[5] ॥
अब मुनिवर विलम्ब नहिंकीजै * महाराज कहँ तिलक करीजै ॥

दोहा–जहँ तहँ धावन[6] पठै पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ ॥
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनि शिर नायउ आइ ॥ २२ ॥

तब मुनि कहेउ सुमन्त्र सन, तुरत चले शिरनाइ ॥
रथ अनेक गज वाजि बहु, सकल सँवारे जाइ ॥ २३ ॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई * देवन सुमन वृष्टि झरिलाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई * प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये * सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे * निज कर जटा राम निरवारे ॥

---

१ सूर्य्य । २ फूली । ३ पूर्ण चन्द्र । ४ आज्ञा । ५ राज्यतिलक । ६ दूत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई * भक्त वछल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई * शेष कोटिशत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिवराये * पुनि अनुशासन[1] पाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभुसाजे * अंग अनंग कोटि छवि लाजे ॥

दोहा—सासुन सादर जानकिहि, मज्जन[2] तुरत कराइ ॥
दिव्य बसन वर भूषणनि[3], अँग अँग सजे बनाइ ॥ २४ ॥
राम बाम दिशि शोभित, रमा रूप गुणखानि ॥
देखि सासु सब हर्षित, जन्म सफल निज जानि ॥ २५ ॥
सुन खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द ॥
चढि विमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द ॥ २६ ॥

प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा * तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रवि सम तेज वरणि नहिं जाई * बैठे राम द्विजन शिरनाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई * देखि प्रहर्षे[5] मुनि समुदाई ॥
वेदमंत्र द्विजवर उच्चारे * नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक वाशिष्ठमुनि कीन्हा * पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी * बार बार आरती उतारी ॥
विप्रन दान विविध विधि दीन्हे * याचक सकल अयाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं * देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई ॥

छं०ह०—नभदुन्दुभी[6]बाजहिं विपुल[7] गन्धर्व किन्नर गावहीं ॥
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द मुनि सुर पावहीं ॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेतजे ॥
गहेछत्र चामर व्यजन धनु असिचर्म[8] शक्ति विराजते ॥ ५ ॥

---

१ आज्ञा । २ स्नान । ३ श्रेष्ठ । ४ गहना । ५ अतिउत्कर्ष हर्ष । ६ नगारा । ७ वहुत । ८ ढाल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिय सहित दिनकर वंश भूषण कामबहुछवि सोहहीं ॥
नवअम्बुधर बरगात अम्बर पीत मुनि मन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे ॥
अंभोज[1] नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखंतजे ॥६॥
दोहा—वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश ॥
वर्णै शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश ॥ २७ ॥

अथ क्षेपक ॥

उठ्यो विभीषण तब सुखपाई * रत्नमाल कर[2] लई उठाई ॥
दीन्ह जलधि[3] रावणको जोई * पुनः विभीषण पाई सोई ॥
सोई रत्नमाल सुखकारी * दीन्ह जानकीके गरडारी ॥
तासु ज्योति अस भई विशाला * सन्मुख लख न सकत महिपाला[4]
राज समूह अधिक तहँ सोहा * तेहि विलोकि सबकर मन मोहा॥
तेहि क्षण जनकसुता महारानी * चितै राम तन पुनि मुसकानी ॥
कह्यो कृपालु प्रिया सुन लीजै * जो इच्छा जेहिको सो दीजै ॥
सुनत वचन तब जनकदुलारी * सोई गलसे माल उतारी ॥
काहि देउँ यह हृदय विचारी * मारुतसुतकी ओर निहारी ॥
दोहा—कृपा दृष्टि लखि पवनसुत, हर्षि दंडवत कीन्ह ॥
रत्नमाल सो जानकी, डारि गरेमहँ दीन्ह ॥

महावीर मनमाहिं विचारी * है कोइ गुण मालामें भारी ॥
परमानन्द प्रेम रस पागे * मणियैं सकल विलोकन लागे ॥
विनु प्रकाश कछु और न तामे * मन लागे भक्तनको जामे ॥
मणि भीतर कछु ह्वैहै सारा * मुक्ता एक तोरि तब डारा ॥
ताके मध्य विलोकन लागे * देख लोग अचरजमें पागे ॥

---

१ विशाल अरुणकमल तद्वत् नेत्र । २ हाथ । ३ समुद्र । ४ राजा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि दूजो तोऱ्यो हनुमाना * देख निसार तज्यो बलवाना ॥
इहि विधि तोरत क्रम क्रम मोती * पीर अधिक दर्शक गण होती ॥
कहन लगे निज निज मन माहीं * जो कोई अधिकारी नाहीं ॥
ताको ऐसी वस्तु नदीजै * नाहिंतौ यही दशा लख लीजै ॥

दोहा-बोल उठ्यो कोउ नृपति यह, कहा करत हनुमान ॥
क्यों तोरतहो माल तुम, सुन्दर रत्न सुजान ॥

वचन सुनत कहै मारुति वानी * देखहुँ राम नाम सुखदानी ॥
नाम न यामें परत लखाई * ताते तोरत डारत भाई ॥
कह कोउ सकल वस्तुके माहीं * राम नाम कहुँ सुनियत नाहीं ॥
कह मारुति न नाम जेहि माहीं * सोतौ काहु कामकी नाहीं ॥
बोलो सोइ सुनो बलधामा * तुम तनु माहिं रामको नामा ॥
सुनत वचन कह पवनकुमारा * निश्चय तनु हरि नाम उदारा ॥
असकह कपि निजहृदय विदारा * रोम रोम प्रभु नाम अपारा ॥
अंकित राम नाम सब ठाहीं * लखि सब चकित भये मनमाहीं ॥
पुष्पवृष्टि नभ जयति उचारी * कृपादृष्टि रघुनाथ निहारी ॥

दोहा-अंग भयो पुनि कुलिश सम, उठ तुरंत भगवान ॥
वारि विलोचन पुलकतनु, हिय लाये हनुमान ॥

भयो तहां अचरज यह भारी * देवन जय जय जयति उचारी ॥

इति क्षेपक ॥

दोहा-भिन्न भिन्न स्तुतिकरि, गेसुरनिजनिजधाम ॥
वन्दि वेषधरि वेद तब, आये जहँ श्रीमरा ॥ २८ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ॥
लखा नकाहू मर्म कछु, लगे करन गुणगान ॥ २९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रथम सामवेद बोल्यो ॥

छं०ह०गी०-जयसगुणनिर्गुणरूपराम अनूपभूप शिरोमने ॥
दशकन्धरादिप्रचण्ड निशिचर प्रबल खल भुज बल हने ॥
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुण दुख दहे ॥
जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्त शक्ति नमामहे ॥७।१॥

पुनि यजुर्वेद बोल्यो ॥

तव विषय माया वश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ॥
भव पंथ भ्रमित श्रमित दिवस निशि काल कर्म गुणनि भरे ॥
जेहिनाथ करि करुणाविलोकहु त्रिविध दुख ते निर्वहे ॥
भव खेद छेद न दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामिहे ॥८।२॥

पुनि अथर्ववेद बोल्यो ॥

जेचरण शिव अज पूज्य रज शुभ परशि मुनिपत्नीतरी ॥
नख निर्गता सुरवन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंजयुत वन फिरत कंटक किनलहे ॥

छंदार्थ-हे अनूपरूप भूपशिरोमणे आपकी जयहो क्योंकि तुम्हारे सगुण निर्गुण रूपमें यह प्रधान भूपरूपहै रावण आदि भयंकर राक्षसोंको अपनी भुजाओंके बलसे नाशकरनेवाले हो मनुष्यका अवतार धारणकर संसारके भारको उतार दारुणदुःखके जलादेनेवाले हो दीनोंके पालनेवाले दयायुक्त शक्ति सहित आपको प्रणाम करतेहैं ॥ १ ॥ हेहरे तुम्हारी तीक्ष्णमायाके अर्थात् अविद्याके वशमें होकर सुर, असुर, नाग, नर और जड चैतन्यहैं ते भवके मार्गमें रातदिन घूमतेहुए थकगयेहैं इसपर भी उनके ऊपर काल कर्म गुणोंके अनुकूल बोझधराहै हेनाथ जिनपर आप करुणा करके दृष्टि करतेहो वोह तीनो प्रकारके दुःख अर्थात् काल कर्म गुणोंसे छूटजाते हैं हे जगत्के दुःख काटनेमें चतुर रामजी हमारी रक्षा करो हम आपको नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ जिन चरणोंकी रजको शिव ब्रह्मा पजन करते हैं और जिसको स्पर्शकर मुनिकी पत्नी तरगई और जिनके नखोंसे नमस्कार योग्य त्रैलोक्यपावनी गंगा निकली हैं और जिन चरणोंमें ध्वज कुलिश अंकुशका चिह्नहै जिनमें कि वनोंके फिरनेसे कांटे आदिकोंसे चिह्न पड-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पदकंज द्वंद्व मुकुन्दराम रमेश नित्य भजामिहे ॥ ९ ॥ ३ ॥
जे ज्ञानमान विमत्त तव भव हरणि भक्ति न आदरी ॥
तेपाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
विश्वासकरि सब आश परिहरि दास तव जे होरहे ॥
जपि नाम तव विनु श्रम तरहिं भवनाथ रामनमामिहे॥ १०।४

पुनि ऋग्वेदबोल्यो ॥

अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ॥
षट्कन्ध शाखा पंचविंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥
फल युगल विधि कटु मधुरवेलि अकेलि जेहि आश्रितरहे ॥
पल्लवित फूलत नवल नित संसार विटप नमामिहे ११।५ ॥

गये हैं वा कंटकिन कोल किरातोंने जो चरण पाये हैं हे लक्ष्मीपति राम आपके चिह्न मोक्षके देनेवाले दोनों चरण कमलोंका हम भजन करते हैं ॥ ३ ॥ जिन्होंने ज्ञानके मानसे मतवाले होकर तुम्हारी भक्तिका आदर नहीं कियाहै उन्हें हम देखतेहैं कि सुरदुर्लभपदको पाकर फिरभी पतित होते हैं और जो सब आशा छोड विश्वासकरके तुम्हारे दास होरहे हैं वे तुम्हारा नाम जपकै विनाही श्रम भवसागरपार होजातेहैं ऐसे आपका हम भजन करतेहैं ॥ ४ ॥ इससंसाररूपी वृक्षकी जड विद्या मायारूपी अदृश्य है और यह वृक्ष अनादिहै इसमें चारखान अंडज पिंडज स्वेदज जरायुज ये चार वक्कल हैं यह वेद शास्त्र कहता है और इसमें छःस्कंध हैं सुख, दुःख. शीत, उष्ण, ज्ञान, अज्ञान, इन छःस्कंधोंमेंसे पचीस शाखा निकलती हैं पांच तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पांच इनके विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध और दशइंद्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय नाक, कान, आंख जिह्वा, त्वक पांच कर्मेन्द्रिय चरण, लिंग, गुदा, हाथ, वाक्य और अन्तःकरण मन, बुद्धि अहंकार, चित्त, महत्तत्व और अनेक प्रकारकी वासना पत्तोंके समूह हैं जो लगते और झडते रहते हैं और अनेक प्रकारके संकल्प फूल हैं किसीमें फल लगता है कोई वैसेही गिरपडताहै वोह फल पापपुण्यरूप होनेसे दोप्रकारके हैं एक खट्टा एक मीठा उसपर अविद्या मायाकी बेल चढरही है उसमेंसों नितपल्लव निकलते हैं और वोह नित्य फूलती रहती है ऐसे संसारवृक्षरूपी आपको हम नमस्कार करते हैं ॥५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं ॥
तेकहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नित गावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर मांगहीं ॥
मन कर्म्म वचनविकारतजितवचरणहमअनुरागहीं ॥१२।६

दोहा—सबके देखत वेदन, विनती कीन्ह उदार ॥
अन्तर्द्धान भये तब, गये ब्रह्म आगार ॥ ३० ॥
वैनतेय सुन शंभु तब, आये जहँ रघुवीर ॥
विनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥ ३१ ॥

तो०छ०—जयरामरमारमणंशमनं, भवतापभयाकुल पाहिजनं ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत मांगत पाहिप्रभो ॥
दशशीश विनाशन वीसभुजा, कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा ॥
रजनीचर वृन्द पतंगरहे, शरपावकतेज प्रचण्ड दहे ॥१३॥१ ॥
महिमण्डलमण्डन चारुतरं, धृतसायक चाप निषंगवरं ॥

जो जन आपको ब्रह्मरूप अज जन्म और मायारहित अद्वैत उत्पत्ति एकअनुभवसे जाननेयोग्य मनसे परे ध्यावते हैं सो वही कहैं वही जानें हमतो तुम्हारा सगुणरूप नित्य आर्थात् ब्रह्मकहिके ध्यावते हैं और हेदेव करुणानिधान सद्गुणोंकी खान आपसे हम यही वर मांगते हैं कि मन वचन कर्मसे विकार तज तुम्हारे चरणोंमे प्रीति करते रहैं ॥ ६ ॥

हे रमारमण राम भवताप अर्थात् जरामरणके दूर करनेवाले और डरसे व्याकुलजनोंकी रक्षा करनेवाले हो अवधेश हो और यही रूप आपका सुरेश रमेश है और व्यापक है हे प्रभो शरणागतकी रक्षा करो रावणके दशशिर वीसभुजओंके तुम नाश करनेवाले हो और पृथ्वीके रोगरूपी अनेक राक्षसोंको आपने दूर किया और जो पतंग रूपी राक्षसोंके समूह थे वो आपकी तीक्ष्णबाणरूपी अग्निमें जलगये ॥ १ ॥ पृथ्वीमंडलके आपश्रेष्ठ भूषण हैं धनुष बाण तरकस धारण कियेहुए मद मोह ममताकी बडी अंधेरी

१ ब्रह्मलोक । २ गरुड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मद मोह महा ममतारजनी, तमपुंजदिवाकर तेजअनी ॥
मन जात किरात निपात किये, मृगलोग कुभोगशरेनहिये ॥
हितनाथअनाथनिपाहिहरे, विषयावशपामरभूलिपरे १४।२॥

बहुरोग वियोगन्ह लोग हये, भवदंघ्रि निरादरके फलये ॥
भवसिन्धु अगाध परे नरते, पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं, जिनमें पदपंकज प्रीतिनहीं॥
अवलंबभवंतकथाजिनको, प्रियसंतअनंतसदातिनको १५।३

नहिंराग न रोष न मान मदा, तिनके सम वैभव वादि पदा॥
यहिते तव सेवक होतमुदा, मुनि त्यागत योग भरोससदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेमलिये, पदपंकज सेवत शुद्ध हिये ॥
सममाननिरादरआदरही, सबसन्तसुखीविचरन्तमही १६।४

रात उसके नाश करनेमें आप तेजोंकी सेनाके लिये सूर्यहैं कामरूप बहेलियेने उन लोग मृगोंको जो अनाथ थे कुभोगबाण हृदय में मारकै निपात किया सो उस भयसे मैं शरणागत होताहूं आप मेरे नाथ हो और जो और जीव मारेगयेथे वे अधम विषयवनमें भूलेपडे थे ॥ २ ॥ और उनमेंसे जो बचे सो कोई रोग कोई मरेहुओंके वियोगमें नष्ट हुए सो आपके चरणोंके निरादरका यही फल है और जो उनमेंसें भी बचे थे सो इस अथाह भवसागरमें पडे डूबते हैं क्योंकि इन्होंनें आपके चरणकमलमें प्रेम नहीं किया क्योंकि जिनको आपके चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वोह नित्यही दीन और मलीन दुःखी रहतेहैं और जिनको आपका अवलम्ब है वा आपकी भवछेदन करनेवाली कथाका जिनको अवलम्बहै वा जिनको अनन्त सन्त सदा प्यारेहैं ॥ ३ ॥ कैसे सन्त हैं कि जिनको राग रोष, मान, मद नहीं है विपत्ति सम्पत्ति समानहै इसीसे तुम्हारे सेवक मुनि आनन्दसे रहते हैं और योगके भरोसेको छोड़देते हैं जो आपके प्रेमका नियमलिये शुद्धहृदयसे आपके चरणकमलको सेवते हैं और आदर अनादरको सम मानके पृथ्वीमें विचरते हैं ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनि मानस पंकज भृंग भजै, रघुवीर महारण धीर अजै ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी, भवरोग महामद मानअरी ॥
गुण शील कृपा परमायतनं, प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्द्वघनं, महिपालविलोकयदीनजनं १७।५

दोहा—बार बार बर मांगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ३२ ॥

वरणि उमापति रामगुण, हर्षि गये कैलास ॥
तब प्रभु कपिन दिवाये, सब विधि सुखप्रद वास ॥ ३३ ॥

सुनुखगपति यह कथा सुहावनि * त्रिविधताप भव दोष नशावनि ॥
महाराज कर शुभ अभिषेका * सुनत लहहिं नर विरति विवेका ॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं * सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं * अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त विरत अरुविषई * लहहिं भक्तिसुख सम्पति नितई ॥
खगपति राम कथा मैं वरणी * सुमति विलास त्रास दुख हरणी॥
विरति विवेक भक्ति दृढ करणी * मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशलपुरी * हर्षित रहहिं लोग सब कुरी ॥

ऐसे मुनियोंके मनकमलको आप भ्रमर होके सेवते हो रघुवीर महारणधीर और अजित हो मुनियोंके मनमें वसतेहो हेहरे आपके नामको हम जपते हैं और आपको प्रणाम करतेहैं तुम्हारा नाम भवरोग महामद मानका शत्रु है गुण शील कृपा और परम शोभाके घर हो ऐसे आप श्रीरमणको मैं अतिशय प्रणाम करताहूं हे द्वंद्वघन अर्थात् रावण कुम्भकर्णके नाशक रघुनाथ महिपाल कृपाकर मुझ दीन जनको देखिये हे लक्ष्मीपति वार २ यही वर मांगताहूं कि आपके चरणकमलकी अनपावनी भक्ति मिलै ॥ ५ ॥

१ ज्ञान विज्ञान । २ चारिउ वर्णके अनेक भेद ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नित नव प्रीति रामपद पंकज * सेवत जेहि शंकर सुर मुनि अज॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये * द्विजन दान नाना विधि पाये ॥
दोहा—परमानन्द मगन कपि, सबके प्रभुपद प्रीति ॥
जात न जानेउ दिवस निशि, गये मासषट बीति ॥ ३४ ॥
विसरे गृह स्वप्ने सुधि नाहीं * जिमि परद्रोह सन्त मन माहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये * आइ सबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे * भक्तसुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई * मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई॥
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे * मम हितलागि भवन सुख त्यागे॥
अनुज राज्य सम्पति वैदेही * देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मोहिं प्रिय नहिं तुमहिंसमाना* मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब कहँ प्रियसेवक यह नीती * मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥
दोहा—अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढनेम ॥
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अति प्रेम ॥ ३५ ॥
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये * को हम कहां बिसरि गृह गये ॥
यकटक रहे जोरि करै आगे *कहि नसकत कछु अति अनुरागे॥
परम प्रीति तिनकर प्रभु देखी * कहा विविधविध ज्ञान विशेषी ॥
प्रभु सन्मुख कछु कहै नपारहिं * पुनि पुनि चरणसरोज निहारहिं॥
तब प्रभु भूषण वसन मँगाये * नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये * भरत वसन निज हाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये * लंकापति रघुपति मन भाये ॥
अंगद बैठि रहे नाहिं डोले * प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले ॥
दोहा—जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि राम स्वरूप सब, चले नाय पद माथ ॥ ३६ ॥
तब अंगद उठि नाइ शिर, सजल नयन करजोरि ॥

१ छःमहीना । २ व्यापक । ३ हाथ । ४ प्रीति । ५ विभीषण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Chennai and eGangotri

अति विनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ ३७ ॥
सुन सर्वज्ञ कृपा सुखसिन्धो * दीन दयाकर आरत बन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली * गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण विरद सम्भारी * मोहिं जनि तजहु भक्त भयहारी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता * जाउँकहा तजि पद जलजाता ॥
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा * प्रभु तजि भवन काज ममकाहा ॥
बालक अबुध ज्ञान बल हीना * राखहु शरण जानि जन दीना ॥
नीच टहल गृहकी सब करिहौं * पद विलोकि भवसागर तरिहौं ॥
असकहि चरण परे प्रभु पाहीं * अब जनि नाथ कहहु गृहजाहीं ॥
दोहा—अंगद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासीव ॥
प्रभु उठाय उर लायउ, सजलनयन राजीव ॥ ३८ ॥
निज उरमाला वसन मणि, वालितनय पहिराय ॥
बिदा किये भगवान तब, बहु प्रकार समुझाय ॥ ३९ ॥
भरत अनुज सौमित्र[1] समेता * पठवन चले भक्त[2]कृतचेता ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा * फिरिफिरि चितवत प्रभुकी ओरा ॥
बार बार करि दण्ड प्रणामा * मन अस रहन कहहिं मोहिंरामा ॥
राम विलोकनि बोलनि चलनी * सुमिरिसुमिरि शोचत हँसिमिलनी ॥
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाषी * चले हृदय पदपंकज[3] राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये * भाइन सहित राम फिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना * भांति विनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दश करि रघुपति पद सेवा * तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुंज तुम पवनकुमारा * सेवहु जाइ कृपालु अगारा ॥
असकहि कपिपति चले तुरंता * अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता ॥
दोहा—करेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहिं कहौं करजोरि ॥

---

१ लक्ष्मणजी । २ सबभक्तनकेबाह्यांतरकेचैतन्यकर्त्ता । ३ चरणकमल ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार बार रघुनायकहि, सुराति करायहु मोरि ॥ ४० ॥
अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आये हनुमंत ॥
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवंत ॥ ४१ ॥
कुलिशहुँ चाह कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझि परै कहु काहि ॥ ४२ ॥
पुनि कृपालु लिय बोलि निषादा * दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू * मन क्रम वचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरत सम भ्राता* सदा रहहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुखभारी * परेउ चरण लोचन भरिवारी ॥
चरण कमल उरधरि गृह आवा * प्रभु प्रभाव परिजनहिं सुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरवासी *पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी ॥
राम राज्य बैठे त्रयलोका * हर्षित भयउ गयउ सब शोका ॥
वैर न कर काहूसन कोई * राम प्रताप विषमता खोई ॥
दोहा—वर्णाश्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग ॥
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक नरोग ॥ ४३ ॥
दैहिक[1] दैविक[2] भौतिक[3] तापा * रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती *चलहिं सुधर्म निरत श्रुति नीती॥
चारिउ चरण धर्म्म जगमाहीं * पूरि रहा स्वप्नेहु अघ नाहीं ॥
राम भक्ति रत नर अरु नारी * सकल परमगतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा * सब सुंदर सब निरुज शरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी नदीना * नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना॥

१ दैहिक कही अध्यात्म देहसम्बन्धी तामें दो भेद हैं एक बाह्यज्वर मिथ्याभाषणादि पुनि एक अन्तर काम, क्रोध, लोभ, मात्सर्यइत्यादि । २ अधिदवत जो देवतों करके विघ्नहोय पाला, पत्थर, अतिवृष्टि अनावृष्टि वज्रपातादि। ३ अधिभूत जो जीवनकरके पीडितहोय राजा चौर सर्प इत्यादि ।

CC-0. In Public Domain. Chanhal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब निर्दम्भ धर्म्म रति धरणी * नर अरु नारि चतुर शुभकरणी॥
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी * सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी ॥

दोहा—रामराज्य विहँगेश सुनु, सचराचर जगमाहिं ॥
काल कर्म स्वभाव गुण, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ ४४ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला * एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोमप्रति जासू * यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी * यह वर्णत हीनता घनेरी ॥
यह महिमा खगेश जिन जानी * फिरि यहचरित तिनहु रतिमानी ॥
सोजाने कर फल यह लीला * कहहि महामुनि सुमति सुशीला॥
राम राज्य कर सुख सम्पदा * वरणि न सकहि फणीश शारदा ॥
सब उदार सब पर उपकारी * द्विजसेवक सब नर अरु नारी ॥
एकनारि व्रत रत नर झारी * ते मन वच क्रम पति हितकारी ॥

दोहा—दण्ड यतिनकर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज ॥
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज ॥ ४५ ॥

फूलहि फलहि सदा तरु कानन[1] * रहहिं एकसँग गज पंचानन[2] ॥
खग मृग वैर सहज बिसराई * सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा * अभय चरहिं वन करहिं अनन्दा॥
शीतल सुरभि[3] पवन वह मन्दा * गुंजत अलि[4] लेचलु मकरन्दा[5] ॥
लता[6] विटप मांगे फल द्रवहीं * मनभावते धेनु[7] पय[8] श्रवहीं ॥
शस्यसम्पन्न[9] सदा रह धरणी * त्रेता भै सतयुगकी करणी ॥
प्रगटे गिरि नाना मणि खानी * जगदात्मा भूप पहिंचानी ॥
सरिता सकल बहैं वर वारी * शीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥
सागर निज मर्य्यादा रहहीं * डारहिंरत्न तटनि नर लहहीं ॥

---

१ वन । २ सिंह । ३ सुगंधित । ४ भ्रमर । ५ रस । ६ डालैं । ७ गाय । ८ दूध । ९ खेती ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरसिज संकुल सकल तडागा * अतिप्रसन्न दशदिशा विभागा ॥
दोहा—विधुमहि पूर पियूषन, रवि तप तेज न काज ॥
माँगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्रके राज ॥ ४६ ॥
कोटिन बाजपेयि प्रभु कीन्हें * अमित दान विप्रन कहँ दीन्हें ॥
श्रुतिपथपालक धर्मधुरन्धर * गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता * शोभा खानि सुशील विनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई * सेवत चरण कमल मनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी * सब प्रकार सेवा विधि लीनी ॥
निजकर गृह परिचर्या करहीं * रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहि विधि कृपासिन्धु सुखमानहिं*सोइ सिय सेवा विधि उर आनहिं॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं * सेवहिँ सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिता * जगदम्बा सन्ततमनिन्दिता ॥
दोहा—जाकी कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ
रामपदारविन्दरत, रहति स्वभावहिं सोइ ॥ ४७ ॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई * रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं *कबहुँ कृपालु हमहिं कछु कहहीं ॥
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती * नानाभांति सिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा * करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
अहँनिशि विधिहि मनावत रहहीं* श्रीरघुवीरचरण रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये * लव कुश वेद पुराणन गाये ॥
दोउविजयी विनयी अतिसुन्दर * हरि प्रतिबिंब मनहुँ गुणमंदिर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे * भये रूप गुण शील घनेरे ॥
दोहा—ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥

---

१ कमल । २ चन्द्र । ३ किरणामृत । ४ मेघ । ५ टहल । ६ चरणकमल । ७ रात दिन । ८ प्रीति । ९ इन्द्रिय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नर चरित अपार ॥ ४८ ॥
प्रातकाल सरयू करि मज्जन * बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं * सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं * देखि सकल जननी सुख भरहीं॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई * सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
पूछहिं बैठि रामगुण गाहा * कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनत विमलगुण अति सुखपावहिं* बहुरि बहुरिकै विनय सुनावहिं ॥
सबके गृह गृह होय पुराना * रामचरित सुन्दर विधिनाना ॥
नर अरु नारि राम गुणगावहिं *करहिं दिवस निशि जात न जानहिं

दोहा—अवधपुरी वासिन्ह कर, सुख सम्पदा समाज ॥
सहसशेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज ॥ ४९ ॥

नारदादि सनकादि मुनीशा * दरशन लागि कोशलाधीशा ॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं* देखि नगर विराग विसरावहिं ॥
रत्नजटित मणि कनक अटारी * नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँपास कोट अति सुंदर * रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई * मनहु घेरि अमरावति आई ॥
महि बहु रूप रुचिरगचकाँचा * जो विलोकि मुनिवर मनराचा ॥
धवल धाम ऊपरनभचुम्बत * कलशमनहुँशशिरविद्युतिनिन्दत॥
बहुमणि रचित झरोखन भ्राजैं * गृह गृह प्रति मणि दीप विराजैं ॥

छं०—मणि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर अति फटिकन खची ॥
मणिखंभ भीति विरंचि विरचित कनक मणि मरकतरचे ॥
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे ॥१८॥

---

१ भाइन। २ माता। ३ निर्मल। ४ हजार शेषनाग। ५ मूंगा। ६ अंगनाई। ७ हीरा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ ॥
रामधाम जो निरखत, मुनि मन लेत चुराइ ॥ ५० ॥

सुमनवाटिका सबहि लगाई * विविध भांति करि यतन बनाई ॥
लता ललित बहुभांति सुहाई * फूलहि सदा वसन्त किनाई ॥
गुंजत मधुकर[2] मुखर मनोहर * मारुत[3] त्रिविधि सदा बह सुंदर ॥
नाना खग बालकन जिआये * बोलत[4] मधुर उडात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत * भवननपर शोभा अतिपावत ॥
जहँ जहँ देखहिं निज परिछाही * बहुविधि कूजहीं[5] नृत्यकराहीं ॥
शुक सारिका पढावहिं बालक * कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबही विधि चारू * वीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छंद—बाजर रुचिर[6] न बनै वर्णत वस्तु विनु गथ[7] पाइये ॥
जहँ भूप रमा निवास तहँकी सम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेरते ॥
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठते॥१९॥

दोहा—उत्तरदिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ॥
बांधे घाट मनोहर, स्वल्प पंकं नहिं तीर ॥ ५१ ॥

दूर फराक रुचिर सो घाटा * जहँ जल पियहिं बाजि गज ठाटा॥
पानिघट परम मनोहरनाना * तहां न पुरुष करहिं स्नाना ॥
राजघाट सबही विधि सुंदर * मज्जहिं तहां वरण चारिउ नर ॥
तीर तीर देवनके मन्दिर * चहुंदिशि तिहिंके उपवन सुंदर ॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर निवासी * वसहि ज्ञान रत मुनि संन्यासी ॥
जहँ तहँ तुलसी वृन्द सुहाये * बहुप्रकार सब मुनिन लगाये ॥
पुर शोभा कछु वरणि न जाई * बाहर नगर परम रुचिराई ॥

---

१ सुंदर । २ भ्रमर । ३ वायु । ४ बोलहिं । ५ सुन्दर । ६ वेमूल्य । ७ कीच । ८ घोड़े ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखतपुरी अखिले अघभागा * वन उपवन वापिका तडागा ॥
छंद--वापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई ॥
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहई ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्य पिकादि खग रव मनहुँ पथिक[2] हँकारहीं॥२०॥
दोहा-रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरणि नजाइ ॥
अणिमादिक सुख सम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ ॥ ५२ ॥
जहँ तहँ नर रघुपति गुण गावहिं * बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहि * शोभाशीलरूप गुणधामहि ॥
जलजविलोचन[3] श्यामलगातहि * पलकनयन इव सेवकत्रातहि[4] ॥
धृत[5] शर रुचिर चाप तूणीरहिं[6] * सन्त कंज वन रवि रणधीरहिं ॥
काल कराल व्याल खगराजहि[7] * नमत राम अकाम ममताजहि ॥
लोभ मोह मृगयूथ किरातहि * मनसिज करि[8] हरिजन सुखदातहि
संशय[9] शोक निबिड तम[10] भानुहि[12] * दनुजगहन वनदहन कृशानुहि[13] ॥
जनकसुतासमेत रघुवीरहि * कस न भजहु भंजन भवभीरहि ॥
बहुवासना मशक हिमराशिहि[14] * सदा एकरस अज[15] अविनाशिहि॥
मुनिरंजन[16] भंजन महि भारहि * तुलसिदासके प्रभुहि उदारहि ॥
दोहा-इहि विधि नगर नारि नर, करहिं राम गुण गान ॥
सानुकूल सन्तत रहत, सब पर कृपानिधान ॥ ५३ ॥
जबते राम प्रताप खगेशा * उदित भयउ अतिप्रबल दिनेशा॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका * बहुतन सुख बहुतन मन शोका ॥
जिनहि शोक तेहि कहौं बखानी * प्रथम अविद्या निशा सिरानी ॥

---

१ समूह । २ मुसाफिर । ३ कमलनयन । ४ रक्षक । ५ धारणकियेहैं । ६ तरकस । ७ गरुड । ८ कामदेव । ९ हाथी । १० भ्रम ११ अतिसघनअन्धकार । १२ श्रीसूर्य्यनारायण । १३ अग्नि । १४ पालाकारीशि १५ अजन्मा । १६ आनन्दकर्त्ता ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अघ उलूक जहँ तहां लुकाने * काम क्रोध कैरव[1] सकुचाने ॥
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ * ये चकोर सुख लहहिं नकाऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा * इनकहँ सुख नाहिं कवनिहुँ ओरा
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना * ये पंकज विकसे विधि नाना ॥
सुख सन्तोष विराग विवेका * विगत शोक ये कोक अनेका ॥

दोहा—यह प्रताप रवि जासु उर, जब प्रभु करहिं प्रकाश ॥
पाछिल बाढ़हिं प्रथमजे, कहेते पावहिं नाश ॥ ५४ ॥

भ्रातन सहित राम इक बारा * संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
सुन्दर उपवन देखन गयऊ * सब तरु कुसुमित पल्लव नयऊ॥
जानि समय सनकादिक आये * तेज पुंज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द[3] सदा लय लीना * देखत बालक बहु कालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा * समदरशी मुनि विगत विभेदा ॥
आशावसन[4] व्यसन नहिं तिनहीं * रघुपति चरितहोइ तहँ सुनहीं ॥
तहां रहे सनकादि भवानी * जहँ घटसम्भव[5] मुनिवर ज्ञानी ॥
रामकथा मुनि बहु विधि वरणी * ज्ञान योग पावक जिमि अरणी[6] ॥

दोहा—देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ॥
स्वागत पूंछि पीत पट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ५५ ॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई * सहित पवनसुत सुख अधिकाई॥
मुनि रघुपति छबि अतुल विलोकी* भये मग्न मन सकत नरोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन * सुंदरतामन्दिर भवमोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं * प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं ॥
तिनकी दशा देखि रघुवीरा * श्रवत नयन जल पुलक शरीरा॥
करगहि प्रभु मुनिवर बैठारे * परम मनोहर वचन उचारे ॥

---

१ कुमुदिनी । २ चकचकई । ३ तदात्मक ब्रह्माकारवृत्ति एकरसअखंड । ४ दशोदिशा । ५ अगस्त्यमुनि । ६ लकड़ी ।

In Public Domain. Gharbal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा * तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा ॥
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा * विनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥

दोहा—सन्त संग अपवर्ग[1] कर, कामी भव कर पंथ ॥
कहहिं सन्त कवि कोविद, श्रुति पुराण सदग्रन्थ ॥ ५६ ॥

सुनि प्रभुवचन हर्षि मुनिचारी * पुलकगात स्तुति अनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय[2] * अनघ[3] अनेक एक करुणामय ॥
जय निर्गुण जय जय गुणसागर * सुखनिधान तिहुँलोक उजागर ॥
जय इन्दिरारमण[4] जयभूधर * अनुपम अज अनादि शोभाकर ॥
ज्ञान निधान अमान मानप्रद * पावन सुयश पुराण वेद वद ॥
तज्ञ[5] कृतज्ञ[6] अज्ञता भंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन[7] ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय * बसहु सदा हमकहँ प्रतिपालय ॥
द्वंद्व विपति भवफंद विभंजन[8] * हद वसु राम काम मद गंजन ॥

दोहा—परमानन्द कृपायतन[9], तुम परिपूरण काम ॥
प्रेमभक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ५७ ॥

देहु भक्ति रघुपति अनपावनि * त्रिविध ताप भव[10] दाप[11] नशावनि ॥
प्रणत[12] काम सुरधेनु कल्पतरु * होइ प्रसन्न प्रभु दीजै यह वरु ॥
भववारिधि कुंभज[13] रघुनायक * सेवक सुलभ सकल सुखदायक ॥
मनसम्भव[14] दारुण दुखदारय[15] * दीनबन्धु समता विस्तारय ॥
आश[16] त्रास ईर्षादि निवारक * विनय विवेक विरति विस्तारक ॥
भूप मौलि मणि मण्डन धरणी * देहु भक्ति संसृति[17] सरि तरणी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर * चरण कमल वन्दित अज शंकर ॥

---

१ मोक्ष । २ षट्विकारते रहित । ३ पापरहित । ४ लक्ष्मी । ५ परमतत्त्वरूप परमतत्त्ववेत्ता । ६ सबकी करणीके जाननहार । ७ मायातेरहित । ८ नाशकर्त्ता । ९ कृपाकेस्थान । १० संसार । ११ दुःख । १२ शरण । १३ अगस्त्यमुनि । १४ उत्पन्न । १५ नाशकर्त्ता । १६ वासना । १७ जन्म-मरण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक * काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक ॥
तारण तरण हरण सब दूषण * तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषण॥
दोहा—वार वार स्तुति करि, प्रेम सहित शिरनाइ ॥
ब्रह्म भवन सनकादि गे, अति अभीष्ट वर पाइ ॥ ५८ ॥
सनकादिक विधिलोक सिधाये * भ्रातन रामचरण शिरनाये ॥
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं * चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुना चहहिं प्रभुमुखकर वाणी * जो सुनि होय सकल भ्रमहानी॥
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना * पूँछत कहा कहहु हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमंता * सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ॥
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं * प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं॥
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ * भरतहि मोहिं न कछू दुराऊ ॥
सुनि प्रभुवचन भरतगहि चरणा * सुनिय नाथ प्रणतारति हरणा ॥
दोहा—नाथ न मोहिं संदेह कछु, स्वप्नेहु शोक नमोह ॥
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द संदोह ॥ ५९ ॥
करौं कृपानिधि एक ढिठाई * मैंसेवक तुम जन सुखदाई ॥
संतनकी महिमा रघुराई * बहुविधि वेद पुराणन गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई * तिन्हपर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई॥
सुना चहौं प्रभु तिन्हकर लक्षण * कृपासिन्धु गुणज्ञान विचक्षण ॥
सन्त असन्त भेद विलगाई * प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई ॥
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता * अगणित श्रुति पुराण विख्याता॥
सन्त असन्तन की अस करणी* जिमि कुठौर चन्दन आचरणी ॥
काटे पर सुमलय सुनु भाई * निज गुण देइ सुगन्ध बसाई ॥
दोहा—ताते सुर शीशन चढत, जगवल्लभ श्रीखण्ड ॥

---

१ पताका । २ अभिवांछित । ३ समूहसमुद्रहौ । ४ प्रवीण । ५ फरसा । ६ प्रिय । ७ चन्दन ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनल दाहि पीटत घनहिं, परशु वदन यह दण्ड ॥ ६० ॥
विषय अलंपट शीलगुणाकर * परदुख दुख सुख सुख देखेपर॥
सम अभूत रिपु विमद विरागी * लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीननपर दाया * मन वच क्रम ममभक्त अमाया॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी * भरत प्राणसम मम ते प्राणी ॥
विगतकाम[1] ममनाम परायन[2] * शान्त विरक्त विदित मुदितायन[3]॥
शीतलता सरलता मयत्री * द्विजपद प्रेम धर्म जनु यंत्री ॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर * जानेहु तात संत संतत फुर ॥
शम दम नियम नीति नहिं डोलहिं * परुष वचन कबहूँ नहिं बोलहिं॥
दोहा–निन्दा स्तुति उभय[4] सम, ममता मम पद कंज ॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुंज ॥ ६१ ॥

सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ * भूलेहु संगति करिय नकाऊ ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई * जिमि कपिलहिं घालै हरहाई ॥
खलन हृदय अतिताप विशेषी * जरहिं सदा परसम्पति[5] देषी ॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई * हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन[6] ॥
वैर अकारण सब काहूसों * जोकर हित अनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना * झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा * खाहिं महा अहि हृदय कठोरा ॥
दोहा–परद्रोही परदाररत, परधन परअपवाद ॥
तेनर पामर[7] पापमय, देह धरे मनुजाद[8] ॥ ६२ ॥

लोभै ओढन लोभै डासन * शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन ॥
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई * श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥

---

१ रहित । २ लीन । ३ आनंदकेस्थान । ४ दोनो । ५ पराईद्रव्य । ६ पापोंकेस्थान । ७ नरपशु । ८ राक्षस ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब काहूकी देखहिं विपती * सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती ॥
स्वारथरत[1] परिवार विरोधी * लम्पट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
मात पिता गुरु विप्र न मानहिं * आप गये अरु घालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहवश द्रोह[2] परावा * सतसंगति हरि भक्ति न भावा ॥
अवगुण[3]सिंधु मन्दमति[4] कामी * वेद विदूषक[5] परधन स्वामी ॥
विप्रद्रोह परद्रोह विशेषी[6] * दम्भ कपट[7] जिय धरे सुवेषी ॥

दोहा—ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापर कछुक वृन्द[8] बहु, होइहैं कलियुग माहिं ॥ ६३ ॥

परहित[11] सरिस धर्म नहिं भाई * पर पीडा सम नहिं अधमाई ॥
निर्णय[12] सकल पुराण वेदकर *कहेउ तात जानहिं कोविद[13] नर ॥
नर शरीर धरि जो परपीरा * करहिं ते सहहिं महा भव[14]भीरा ॥
करहिं मोहवश नर अघ नाना* स्वारथरत परलोक नशाना ॥
कालरूप मैं तिनकहँ ताता * शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता ॥
अस विचारि जो परम सयाने * भजहिं मोहिं संभृतदुख जाने ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक * भजैं मोहिं सुर नर मुनिनायक ॥
सन्त असन्तनके गुण भाषे * ते न परत भव जिन लखिराषे ॥

दोहा—सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक ॥
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक ॥ ६४ ॥

श्रीमुखवचन सुनत सबभाई * हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं विनयअति बारहिं बारा * हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये * इहि विधि चरित करत नितनये ॥

---

१ लीन । २ ईर्षा । ३ कुकर्म । ४ अल्पबुद्धि । ५ परस्त्रीरत । ६ निंदक । ७ अत्यंतकर । ८ ठगनार्थ अनेक भेष धरना । ९ अन्तर और प्रकट और । १० समूह । ११ गैरको तन मन धनसेसहारादेना । १२ निचोड । १३ पंडित । १४ घोरसागर ।

In Public Domain, Gharshel Archives, Eluru

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वार वार नारद मुनि आवहिं * चरित पुनीत रामकर गावहिं ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं * ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि विरंचि अतिशय सुख मानहिं * पुनि पुनि तात करहु गुणगानहिं ॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं * यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं ॥
सुनि गुणगान समाधि बिसारी * सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दोहा—जीवनमुक्त ब्रह्म पर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ॥
जेहरि कथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान ॥ ६५ ॥

एक वार रघुनाथ बुलाये * गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विज वर मुनि सज्जन * बोले वचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम वानी * कहौं न कछु ममतौ उर आनी ॥
नहिं अनीति नाहें कछु प्रभुताई * सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई * मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई * तो मोहिं बरजेहु भय विसराई ॥
बड़े भाग्य मानुष तनु पावा * सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्षकर द्वारा * पाइन जे परलोक सँवारा ॥

दोहा—सो परन्तु दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
कालहि कर्म्महिं ईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ६६ ॥

यहि तनुकर फल विषय न भाई * स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषय मन देहीं * पलटि सुधाते शठ विष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहै नकोई * गुंजा गहै परशमणि खोई ॥
आकरँ चारि लाख चौरासी * योनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥
फिरत सदा मायाके प्रेरे * काल कर्म स्वभाव गुण घेरे ॥
कबहुँक करि करुणानरदेही * देत ईश विनु हेतु सनेही ॥

---

१ ब्रह्मा । २ प्रीति । ३ पत्थर । ४ अपनपौ । ५ शरीर । ६ रत्ती । ७ चारिखानि-जरायुज, उद्भिज, अंडज, ऊष्मज ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नर तनु भव वारिधि[1] कहँ बेरे[2] * संमुख मरुत[3] अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ नावा * दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

दोहा—जो न तरै भवसागरहिं, नर समाज अस पाइ ॥
सोकृतनिन्दक[4] मन्दमति, आतमहन गतिजाइ ॥ ६७ ॥

जोपरलोक इहां सुख चहहू * सुनि मम वचन हृदय दृढ गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई * भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूहें[5] अनेका * साधन कठिन न मन महँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई * भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई ॥
भक्तिस्वतंत्र सकल सुखखानी * विन सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुण्यपुंज विन मिलहिं न संता * सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा * मन क्रम वचन विप्र पद पूजा ॥
सानुकूल तिहिपर सब देवा * जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥

दोहा—औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि ॥
शंकर भजन विनानर, भक्ति न पावै मोरि ॥ ६८ ॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा * योग न मख जप तप उपवासा ॥
सरलस्वभाव[6] न मन कुटिलाई * यथालाभ सन्तोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा * करै तो कहहु कहाँ विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढाई * इहि आचरण वश्य मैं भाई ॥
वैर न विग्रह आश न त्रासा * सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी * अनघँ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा * तृण सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठताई * दुष्ट कर्म सब दूरि बिहाई ॥

---

१ संसारसागर । २ जहाज । ३ पवन । ४ कृतनिन्दक कही जो काहूते नीकि करणीकरै और वह न माने । ५ विघ्न । ६ दम्भ, पाषण्ड, कपट, छल छिद्र, ईर्षा इनतेरहित । ७ पापरहित ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—ममगुण ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह ॥
ताकर सुख सोइ जाने, परमानंद सन्दोह ॥ ६९ ॥

सुनत सुधासम वचन रामके * सबन्हि गहे पद कृपाधामके ॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे * कृपानिधान प्राणते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी * सब विधि तुम प्रणतारति हारी॥
अस सिख तुम विनुदेइ न कोऊ* मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ॥
हेतु रहित सब विधि उपकारी * तुम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जगमाही * स्वप्नेहुं कोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके वचन प्रेमरस साने * सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गए आयसु पाई* वर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥

दोहा—उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ७० ॥

एक वार वशिष्ठमुनि आये * जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा * पद पखारि चरणोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह करजोरी * कृपासिन्धु विनती इक मोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा * होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना * मैं केहि भांति कहौं भगवाना ॥
उपरोहितीकर्म अतिमन्दा * वेद पुराण स्मृतिकर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबहीं विधि मोहीं * कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा * होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥

दोहा—तब मैं हृदय विचार किय, योग यज्ञ जप दान ॥
जेहि नित करिय सो पाइये, धर्म न इह सम आन ॥७१॥

जप तप नियम योग व्रत धर्मा * श्रुति सम्भव नानाविधि कर्मा ॥

---

१ भगवान्कहीं षट्भगयुक्त ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्ञान[1] दया दम[2] तीरथ मज्जन * जहँलगि धर्म कहै श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका * पढे सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर * सब साधन कर फल यह सुंदर ॥
छूटै मल कि मलहिके धोये * घृत कि पाव कोउ वारि विलोये ॥
प्रेमभक्ति जल विनु रघुराई * अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ[3] सोइ पंडित * सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई * जाके पद सरोज रति होई ॥

दोहा—नाथ एक वर मांगौं, मोहिं कृपा करि देहु ॥
जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ७२ ॥

असकहि मुनिवशिष्ठ गृह आये * कृपासिन्धुके मन अति भाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता * संग लिये सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ * गज रथ तुरंग मँगावत भयऊ ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे * दिये उचित जिन्ह जिन्ह जो चाहे ॥
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई * गये जहां शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज वसन डसाई * बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत[4] मारुत तब करई * पुलकि गात लोचन जल भरई ॥
हनूमान सम को बड़भागी * नहिं कोउ रामचरण अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई * बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दोहा—तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल वीन ॥
गावन लागे राम गुण, कीरति सदा नवीन ॥ ७३ ॥

मामवलोकय[5] पंकज लोचन * कृपा विलोकनि शोच विमोचन ॥
नीलतामरस[6] श्याम काम अरि * हृदय कंज मकरंद मधुपहरि ॥
यातुधान[7] वरूथ बल गंजन * मुनि सज्जन रंजन अघ भंजन ॥

---

१ ज्ञानमें दो भेद एक शास्त्रजन्य दूसरा आत्मज्ञान । २ शुद्धमनइंद्रियनको जीतना । ३ तत्त्ववेत्ता । ४ वायु । ५ मेरीओर देखो । ६ नीलकमल । ७ दानव ।

In Public Domain, Chanbai Archives, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूसुर[1] नवशशि वृन्दबलाहक[2] * अशरण शरण दीनजन गाहक॥
भुजबल विपुल भार महि खंडित * खर दूषण विराध वध पण्डित ॥
रावणारि सुख रूप भूपवर * जय दशरथकुल कुमुद सुधाकर ॥
सुयश पुराण विदित निगमागम * गावत सुर मुनि सन्त समागम ॥
कारुणीक वाली मद खंडन * सब विधि कुशल कोशला मंडन
कलिमल मथन नाम ममताहन *तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणतजन ॥

दोहा–प्रेम सहित मुनि नारद, वर्णि राम गुणग्राम ॥
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहां विधि धाम ॥ ७४ ॥

गिरिजा सुनहु विशद[3] यह कथा * मैं सब कही मोरि मति यथा ॥
राम चरित शत कोटि अपारा * श्रुति शारदा न वरणै[4] पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी * जन्म कर्म अगणित नामानी ॥
जलशीकर महिरज गणि जाही * रघुपति चरित न वरणि सिराही॥
विमलकथा यह हरिपद दायिनि * भक्तिहोइ सुनि अतिअनपायिनि॥
उमा कहेउँ सोइ कथा सुहाई * जो भुशुण्ड खगपतिहि सुनाई ॥
कछुक राम गुण कहेउँ वखानी * अबका कहौं सो कहहु भवानी ॥
सुनि शुभ कथा उमा[5] हरषानी * बोली अति विनीत मृदुवानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी * सुनेउँ राम गुण भव भयहारी ॥

दोहा–तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य[6] नभोह ॥
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ७५ ॥
नाथ तवानन[7] शशि[8] श्रवत, कथा सुधा[9] रघुवीर ॥
श्रवणपुटन[10] मन पानकरि, नहिं अघात मतिधीर ॥ ७६ ॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं * रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महा मुनि जेऊ * हरि गुण सुनत अघात न तेऊ ॥

---

१ ब्राह्मण । २ मेघ । ३ अतिपावनी उज्ज्वलि । ४ पार्व्वती । ५ कृतार्थ । ६ मुख । ७ चन्द्रमा । ८ अमृत । ९ कान । १० लीला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भवसागर चह पार जो पावा * राम कथा ताकहँ दृढ़ नावा ॥
विषयिन कहँ पुनि हरि गुणग्रामा * श्रवणसुखद अरु मनविश्रामा ॥
श्रवणवंत अस को जगमाहीं * जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं ॥
ते जड़जीव निजातम घाती * जिनहिं न रघुपति कथा सुहाती ॥
रामचरित मानस तुम गावा * सुनि मैं नाथ परम सुख पावा ॥
तुम जो कही यह कथा सुहाई * काकभुशुण्डि गरुड प्रति गाई ॥

दोहा—विरति ज्ञान विज्ञान दृढ, रामचरण अति नेह ॥
वायसतनु रघुपति भगति, मोहिं परम संदेह ॥ ७७ ॥

नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी * कोउ इक होइ धर्म व्रतधारी ॥
धर्म शील कोटिन महँ कोई * विषय विमुख विरागरत होई ॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई * सम्यक्ज्ञान सुकृत कोइ लहई ॥
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई * जीवन्मुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहसन महँ सब सुखखानी * दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥
धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी * जीवन्मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया * रामभक्ति रत गत मद माया ॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई * विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥

दोहा—रामपरायण ज्ञानरत, गुणागारमतिधीर ॥
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काक शरीर ॥ ७८ ॥

यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा * कहहु कृपालु काक किमि पावा ॥
तुम केहिभांति सुना मैदनारी * कहहु मोहिं यह कौतुक भारी ॥
गरुड महाज्ञानी गुणराशी * हरिसेवक अतिनिकट निवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई * सुनी कथा मुनि निकर विहाई ॥
कहहु कवन विधि भा सम्वादा * दोउ हरि भक्त काक उरगादा ॥

---

१ अपने आत्माको नाश करनेवाले। २ वैराग्य। ३ शम्भु। ४ सन्देह। ५ गरुड।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Public Domain. Shambhu Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गौरि गिरा[1] सुनि सरल सुहाई * बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावनि मतितोरी * रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा * जो सुनि होइ सकल भ्रम नाशा ॥
उपजहि रामचरण विश्वासा * भवनिधि तरनर विनहिं प्रयासा ॥

दोहा–ऐसे प्रश्न विहंगपति, कीन्ह काकसन[2] जाइ ॥
सो सब सादर कहतहौं, सुनहु उमा चितलाइ ॥ ७९ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि * सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्षगृह जब अवतारा * सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना * तुम अति क्रोध तजे तहँ प्राना ॥
मम अनुचरन[3] कीन्ह मख भंगा * जानहु तुम सो सकल प्रसंगा[4] ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे * दुखित भयउँ वियोग[5] प्रिय तोरे ॥
सुन्दर गिरि वन सरित[6] तडागा * कौतुक देखत फिरौं विभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी * नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय[7] शिखर सुहाये * चारि चारु[8] मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इक इक विटप[9] विशाला * वट पीपर पाकरी रसाल[10] ॥
शैलोपरि[11] सुंदर सर[12] सोहा * मणि सोपान[13] देखि मन मोहा ॥

दोहा–शीतल अमल मधुर जल, जलज[14] विपुल[15] बहुरंग ॥
कूजत कल रव हंस गण, गुंजत नाना भृंग ॥ ८० ॥

तेहि गिरि रुचिर वसै खग सोई * तासु नाश कल्पांत नहोई ॥
माया कृत गुण दोष अनेका * मोह मनोज आदि अविवेका ॥
रहेउ व्यापि समस्त जग माहीं * तेहिगिरि निकट कबहुँ नहिंजाहीं
तहँबसि हरिहि भजै जिमि कागा * सो सुन उमा सहित अनुरागा ॥

---

१ वाणी । २ काकभुशुण्डि । ३ गणन । ४ इतिहास । ५ विक्षेप । ६ नदी । ७ स्वर्णके । ८ पवित्र । ९ वृक्ष । १० आँब । ११ पर्वतके ऊपर । १२ तलाव । १३ सीढी । १४ कमल । १५ अनेक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Delhi and eGangotri

पीपर तरुतर ध्यान सो धरई * जाप योग पाकर तर करई ॥
आंब छाहँ करि मानस पूजा *तजि हरि भजन काज नहिंदूजा॥
वटतर कह हरिकथा प्रसंगा * आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा ॥
रामचरित विचित्र विधि नाना * प्रेम सहित करु सादर गाना ॥
सुनहिं सकलमति विमल मराला* बसहिं निरंतर जो जेहि काला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा * उर उपजा आनन्द विशेषा ॥

दोहा–तब कछु काल मराल[2] तनु, धरि तहँ कीन्ह निवास ॥
सादर सुनि रघुपति चरित,पुनि आयउँ कैलास ॥ ८१ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा* मैं जेहि समय गयउँ खगपासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू * गयउ काक पहँ खगकुलकेतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रण क्रीडा * समुझत चरित होत मोहिंव्रीडा[3] ॥
इंद्रजीत कर आपु बँधावा * तब नारद मुनि गरुड़ पठावा ॥
बंधन काटि गयउ उरगादा * उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा ॥
प्रभु बन्धन समुझत बहु भांती * करत विचार उरग आराती ॥
व्यापक ब्रह्म विरंज[4] वागीशा * माया मोह पार परमीशा[5] ॥
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं * देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दोहा–भवबन्धनसे छूटहीं, नर जपि जाकर नाम ॥
खर्व[6] निशाचर बांधेऊ, नागफांस सोइ राम ॥ ८२ ॥

नानाभांति मनहिं समुझावा * प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा ॥
खेद खिन्न[7] मन तर्क वढाई * भयउ मोहवश तुम्हरी नाई ॥
व्याकुल गयउ देवऋषि[8] पाहीं * कहेसि जो संशय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अति दाया * सुनु खग प्रबल रामकी माया ॥
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई * बरिआई विमोह वश करई ॥

---

१ पक्षी। २ हंस। ३ लज्जा। ४ मायातेपरे। ५ सर्व ईशनके ईश। ६ अल्प। ७ दुःख। ८ नारद।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

जेहि बहु बार नचावा मोहीं * सो व्यापी विहंगपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे * मिटहि न वेगि कहे खग मोरे॥
चतुरानन पहँ जाहु खगेशा * सोइ करहु जो होहि निदेशा ॥

दोहा—असकहि चले देवऋषि, करत राम गुणगान ॥
हरिमाया बल वर्णत, पुनि पुनि परम सुजान ॥ ८३ ॥

तव खगपति विरंचिपहँ गयऊ* निज सन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिरनावा * समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मनमहँ करहिं विचार विधाता * मायावश कवि कोविद ज्ञाता ॥
हरि मायाकर अमित प्रभावा * विपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अग[2] जगमय[3] जग[4] ममउपजाया * नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई * जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेय[5] शंकर पहँ जाहू * तात अनत पूछहु जनि काहू ॥
वहां होइ तव संशय हानी[6] * चला विहँगपति सुनि विधिवानी॥

दोहा—परमातुर सुविहंगपति, तब आयउ मम पास ॥
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ॥ ८४ ॥

तेइँ मम पद सादर शिरनावा * पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकर पुनीत मृदु वानी * प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड मारग महँ मोहीं * कवनि भांति समुझावों तोहीं ॥
जब कछुकाल करिय सतसंगा* तब यह होइ मोह भ्रम भंगा ॥
सुनिय तहां हरिकथा सुहाई * नानाभांति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाँना * प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथा होत जहँ भाई * पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा * होइहि रामचरण दृढ़ नेहा ॥

दोहा—विनु सतसंग न हरिकथा, तेहि विनु मोह नभाग ॥

---

१ ब्रह्मा। २ स्थावर। ३ जंगम। ४ संसार। ५ गरुड। ६ नाश। ७ अन्त।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहगये बिनु राम पद, होइ न दृढ अनुराग ॥ ८५ ॥
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा * किये योग जप ज्ञान विरागा ॥
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला * तहँ रह काक भुशुण्ड सुशीला ॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना * ज्ञानी गुण गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरंतर * सादर सुनहिं विविध विहंगवर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी * होइहि मोहजनित दुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई * चले हर्षि मम पद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा * रघुपति कृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना* * सो खोवा चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहिंराखा * खग जानै खगहीकी भाखा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी * जाँहि न मोह कवन अस ज्ञानी॥

दोहा—ज्ञानीभक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपतिकर याँन ॥
ताहि मोह माया प्रबल, पामर कराहिं गुमान ॥ ८६ ॥
शिव विरंचि कहँ मोहई, कोहै वपुरा आन ॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ॥ ८७ ॥

गयउ गरुड जहँ बसै भुशुण्डी * मति अकुण्ठ हरिभक्ति अँखण्डी॥

* एक समय कागभुशुंडि दशरथके आंगनमें बाललीला देखरहेथे कि देखतें देखते मोह हुआ तब रामजीके हाथसे पूरी छीनकै भागे रामजीने मोहसे इनकी ढिठाई देख गरुडका स्मरण किया सो गरुड और भुशुंडि दोनोंमें अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभुशुंडजी भागे और त्रिलोकीमें फिरे परन्तु गरुडने पीछा नहीं छोडा जब फिर रामजीकी शरणमें आये तब रामजीने गरुडको निवारण कर कागभुशुंडिको ज्ञान उपदेश किया वही अभिमान गरुडको रहा सो कृपानिधानने श्रोता बनायकै सो अभिमान दूर किया ॥

१ प्रीति । २जामेंअन्तरनपरै । ३श्रेष्ठ पक्षी । ४समूह । ५ उत्पन्न । ६ पखेरू । ७ वाहन । ८ अधमनर । ९ दुःखितजीवी । १० अबाध्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Archives, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ * माया मोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करितडाग मज्जन जल पाना * वटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृद्ध वृद्ध विहंग तहँ आये * सुनहिं रामके चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सो चाहा * ताही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा * हर्षेउ वायस सकल समाजा ॥
अति आदर खगपति करकीन्हा * स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा * मधुरवचन बोलेउ तब कागा ॥
दोहा—नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ॥
आयसु होइ सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ॥ ८८ ॥
सदा कृतारथ रूप तुम, कह मृदु वचन खगेश ॥
जाकी स्तुति सादरहि, निजमुख कीन्ह महेश ॥ ८९ ॥
सुनहु तात जेहिकारण आयउँ * सो सब भयउ दर्श तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम * गयउ मोह संशय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि * सदा सुखद दुखपुंज नशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं * बारबार विनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुडकी गिरा विनीता * सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा * लहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिं अतिअनुराग भवानी * रामचरित सब कहेसि वखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावण अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * पुनि शिशुचरित कहेसि मनलाई ॥
दोहा—बालचरित कहि विविधविधि, मन महँ परम उछाह ॥
ऋषि आगमन कहेउ पुनि, श्रीरघुवीर विवाह ॥ ९० ॥
बहुरि राम अभिषेकें प्रसंगा * पुनि नृपं वचन राज रसभंगा ॥

---

१ अतिप्रीतिसे आगमन । २ आज्ञा । ३ दीनयुक्त । ४ आनंद । ५ राजतिलक कीवार्त्ता । ६ दशरथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरवासिन कर विरह विषादा * कहेसि राम लक्ष्मण संवादा ॥
विपिन[1] गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
वाल्मीकि प्रभुमिलन बखाना * चित्रकूट जिमि वस भगवाना ॥
सचिवागमन[2] नगर नृपमरणा * भरतागमन प्रेम अति वरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरवासी * भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहुविधि समुझाये * लै पादुका[3] अवध फिरि आये ॥
भरत रहनि सुरपतिसुत[4] करणी * प्रभु अरु अत्रि भेट पुनि वरणी ॥
दोहा–कहि विराध वध जाहिविधि, देह तजी शरभंग ॥
वर्णि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभु अगस्त्य सतसंग ॥ ९१ ॥
कहि दण्डकवन पावन ताई * गृध्र मइत्री पुनि तेइँ गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटीकृतवासा * भंजेउ सकल मुनिनकरत्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा * शूर्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा ॥
खर दूषणवध बहुरि बखाना * जिमि सब मर्म दशानन[5] जाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही * जेहि विधि भई सकल तेइँ कही ॥
पुनि माया सीताकर हरणा * श्रीरघुवीर विरह कछु वरणा ॥
पुनि प्रभु गृध्रक्रिया जिमि कीन्हा * वधि कबंध शबरिहि गतिदीन्हा ॥
बहुरि विरह वर्णत रघुवीरा * जेहि विधि गयउ सरोवर तीरा ॥
दोहा–प्रभु नारद सम्वाद कहि, मारुत[6] मिलन प्रसंग ॥
पुनि सुग्रीव मिताई, वालि प्राणकर भंग ॥ ९२ ॥
कपिहि तिलक करि रामकृत, शैल प्रवर्षण वास ॥
वर्णत वर्षा शरदऋतु, रामरोष कपित्रास ॥ ९३ ॥
जेहिविधि कपिपति[7] कीश[8] पठाये * सीताखोज सकलदिशि धाये ॥
विवर[9] प्रवेश कीन्ह जेहि भांति * कपिन बहोरि मिला संपाती ॥

---

१ वन । २ सुमंत । ३ खडाऊं । ४ जयन्त । ५ रावण । ६ हनुमान् । ७ सुग्रीव । ८ बंदर । ९ गिरिकंदरा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सब कथा समीरकुमारा * लांघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रवेश जिमिकीन्हा * पुनि सीताहि धीरज जिमि दीन्हा॥
वन उजारि रावणहि प्रबोधी * पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई * वैदेहीकी कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुवीरा * उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला विभीषण जेहिविधि आई * सागर निग्रह कथा सुनाई ॥
दोहा—सेतु बांधि कपि सेन जिमि, उतरे सागर पार ॥
गयो बशीठी वीर वर, ज्यहि विधि वालिकुमार ॥ ९४ ॥
निशिचर कीश लड़ाई, वर्णेसि विविध प्रकार ॥
कुम्भकर्ण घननादकर, बल पौरुष संहार ॥ ९५ ॥
निशिचर निकर मरण विधिनाना* रघुपति रावण समर बखाना ॥
रावण वध मन्दोदरिशोका * राज्य विभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन वहोरी * सुरन कीन्ह स्तुति करजोरी ॥
पुनि पुष्पकचढ़ि सीय समेता * अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि विधि राम नगर नियराये * वायस विशद चरित सब गाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका * पुर वर्णन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंड बखानी * जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि सब राम कथा गुणगाहा * कहत वचन मन परम उछाहा ॥
सो०—गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित ॥
भयउ रामपद नेह, तवप्रसाद वायस तिलक ॥ २ ॥
मोहिं भयउ अति मोह, प्रभु बंधन रण महँ निरखि ॥
चिदानन्दसन्दोह, राम विकल कारण कवन ॥ ३ ॥
देखि चरित अति नर अनुहारी * भयउ हृदय मम संशय भारी ॥
सो भ्रम अब मैं हित करिमाना* कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

---

१ हनुमान । २ समुद्र । ३ दूत । ४ अंगद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोअति आतप[1] व्याकुल होई * तरु[2]छाया सुख जानै सोई ॥
जो नाहिं होत मोहअति मोहीं * मिलितेउँ तातकवनिबिधि तोहीं॥
सुनितेउँ किमि हरिकथा सुहाई * अतिविचित्र सबविधि तुम गाई॥
निगमागम पुराण मत एहा * कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा ॥
सन्त विशुद्ध[3] मिलहिं पुनि तेही * चितवहिं राम कृपाकरि जेही ॥
रामकृपा तव दरशन भयऊ * तवप्रसाद मम संशय गयऊ ॥
सुनि विहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग ॥
पुलक गात लोचन सजल, मन हर्षे अति काग ॥ ९६ ॥
श्रोता सुमति सुशील[4] शुचि[5], कथा रसिक[6] हरिदास ॥
पाइ उमा यह गोप्यमत, सज्जन करहिं प्रकास ॥ ९७ ॥
बोलेउ कागभुशुण्ड बहोरी * नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे * कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोहन माया * मोपरनाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोहमिसु खगपति तोहीं * रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं * सो नहिंकछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव विरंचि सनकादी * जे मुनि नायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही * को जग काम नचाव नजेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा * केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥
दोहा—ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥
केहिके लोभ विडंबना, कीन्ह न यह संसार ॥ ९८ ॥
श्रीमद[7] वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता वधिर न काहि ॥

---

१ घाम । २ वृक्षकीछाया । ३ विशुद्धकही विशेषशुद्ध योग, ज्ञान, वैराग्य, इत्यादिक, संयुक्त, श्रीरामानन्य । ४ सहनशील । ५ पवित्र । ६ श्रीरामचंद्रके चरित रसका पानकरे अपर साधनके रसते अनइच्छितहोइ । ७ श्रीकहीलक्ष्मी, धन, जाति, कुल, युवा, विद्या, ज्ञान, ध्यान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मृगनयनीके नयनशर, को अस लागु न जाहि ॥ ९९ ॥
गुणकृत सन्निपात नहिं केही * को न मान मद व्यापेउ जेही ॥
यौवनज्वर केहिनहिं बलकावा * ममता केहिकर यश न नशावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा * काहि न शोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि काहि न खाया * को जग जाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा * जेहि न लागु घुन को अस धीरा॥
सुत वित लोक ईर्षणातीनी * केहिकी मति इन्हकृत न मलीनी॥
यह सब मायाकृत परिवारा * प्रबल अमितको वरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं * अपरजीव केहि लेखे माहीं ॥
दोहा–व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ॥
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट पाषण्ड ॥ १०० ॥
सोदासी रघुवीरकी, समुझे मिथ्या सोपि ॥
छुटै न राम कृपा विनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥ १०१ ॥
सोमाया सब जगहि नचावा * जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूविलास खगराजा * नाच नटीइव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा * अज विज्ञान रूप गुणधामा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता * अखिल अमोघ[1] एकभगवन्ता ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता * समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा * नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृतिपार[2] प्रभु सब उर वासी * ब्रह्म निरीह[4] विरज[5] अविनाशी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं * रविसम्मुख तम[6] कबहुँ न जाहीं ॥
दोहा–भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ॥
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥ १०२ ॥

---

१ इच्छा । २ सफल । ३ मूलप्रकृति, अव्याकृत, अध्यात्मशक्ति, महामाया । ४ निरिच्छा । ५ मायाके विकारते रहित । ६ अन्धकार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ जोइ भाव दिखावै, आपु न होइ न सोइ ॥ १०३ ॥
अस रघुपति लीला उरगारी * दनुज विमोहन जनसुखकारी ॥
जो मतिमलिन विषयवश कामी * प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जाकहँ जब होई * पीतवर्ण शशि कहँ कह सोई ॥
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा * सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ चलत जग देखा * अचल मोहवश आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी * कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
हरि विषइक अस मोह विहंगा * स्वप्नेहुँ नाहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
मायावश मतिमंद अभागी * हृदय जमनिका बहुविधि लागी ॥
ते शठ हठवश संशय करहीं * निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥
दोहा—काम क्रोध मद लोभ रत, गृहाशक्त दुखरूप ॥
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ परे तमकूप ॥ १०४ ॥
निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण न जानै कोय ॥
सुगम अगम नानाचरित, सुनि मुनिमन भ्रमहोय ॥ १०५ ॥
सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई * कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहिविधि मोह भयउ प्रभु मोहीं * सो सबचरित सुनावों तोहीं ॥
रामकृपा भाजन तुम ताता * हरिगुण प्रीति मोहिं सुखदाता ॥
ताते नाहिं कछु तुमहिं दुरावों * परमरहस्य मनोहर गावों ॥
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ * जन अभिमान न राखै काऊ ॥
संसृति मूल शूलप्रद नाना * सकल शोकदायक अभिमाना ॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी * सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमि शिशुतनु व्रणहोइ गुसाई * मातु चिराव कठिनकी नाई ॥
दोहा—यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर ॥

---

१ सूर्य्य । २ मोहरूपीकाई । ३ आसक्त । ४ बडतोर-फोडा ।

In Public Domain. Chandel Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याधि नाश हित जननी, गनै न सो शिशुपीर ॥ १०६ ॥
तिमि रघुपति निज दास कर, हरहिं मान हित लागि ॥
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजहु भ्रम त्यागि १०७

रामकृपा आपनि जडताई * कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं * भक्तहेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं * शिशु लीला विलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई * वर्ष पांच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा * शोभा वपुष कोटि शतकामा ॥
निज प्रभु वदन निहारि निहारी * लोचन सफल करौं उरगारी ॥
लघु वायस वपु धरि हरि संगा * देखौं बाल चरित बहुरंगा ॥
दोहा—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उडाउँ॥
जूठन परै अजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥ १०८ ॥
एक बार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुवीर ॥
सुमिरत प्रभु लीला सोई, पुलकित भयउ शरीर ॥१०९॥

कहै भुशुण्ड सुनहु खगनायक * रामचरित सेवक सुखदायक ॥
नृपमन्दिर सुन्दर सब भांती * खचित कनक मणि नानाजाती॥
वरणि नजाय रुचिर अंगनाई * जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
बाल विनोद करत रघुराई * विचरत अजिर जननि सुखदाई॥
मरकंत मृदुल कलेवर श्यामा * अंग अंग प्रति छबि बहुकामा ॥
नवराजीव अरुण मृदु चरणा * पदपंकज नख शशिद्युति हरणा॥
ललितअंग कुलिशादिक चारी * नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचित बनाई * कटिकिंकिणि कलमुखर सुहाई ॥
दोहा—रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ॥

१माता । २ देह । ३ आंगन । ४ क्रीडा । ५ घरकेमांझ । ६ माताकेसुखदाता । ७ श्याममणि । ८ कोमल । ९ सुन्दर । १० सुवर्ण । ११ पेट ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उरआयत भ्राजत विविध, बालविभूषण चीर ॥ ११० ॥
अरुणपाणि नखकरंज मनोहर * बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
कन्धवाल केहरि दरग्रीवां * चारु चिबुक आननछबि सीवां ॥
कलबल वचन अधर अरुणारे * दुइ दुइ दशन विशद वरबारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा * सकलसुखदशशिकरसम हासा ॥
नीलकंज लोचन भवमोचन * भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
विकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये * कुंचित कच मेचक छवि छाये ॥
पीत झीन झींगुलि तनु सोही * किलकनि चितवनि भावत मोही ॥
रूपराशि नृप अजिर विहारी * नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥
मोसन करहिं विविध विधि क्रीड़ा * वर्णत चरित होत मन व्रीड़ा ॥
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं * चलौं भाजि तब पूप देखावहिं ॥

दोहा—आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितै पराहिं ॥ १११ ॥
प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह ॥
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ११२ ॥

इतना मन आनत खगराया * रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहिं काहीं * आनजीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहां कछु कारण आना * सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर * मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस * ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
मायावश्य जीव अभिमानी * ईशवश्य माया गुणखानी ॥

---

१ चौडी । २ अंगुरियां । ३ शंख । ४ मुख । ५ तोतर । ६ रुचिर । ७ टेढी ८ भौंह । ९ कान । १० घुँघुवारे । ११ वाल । १२ श्यामसचिक्कन । १३ छाया । १४ लज्जा । १५ जन्म मरण ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परवश जीव स्ववश भगवन्ता * जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
मृषा भेद यद्यपि कृत ग्या * विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥
दोहा—रामचन्द्रके भजन विनु, जो चह पद निर्वाण ॥
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु विनुपूछ विषाण ॥ ११३ ॥
राकापति षोडश उगहिं, तारागण समुदाय ॥
सकल गिरिन दव लाइये, रविविनु राति नजाय ॥ ११४ ॥
ऐसे विनु हरिभजन खगेशा * मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या * प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर * भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर ॥
भ्रमते चकित राम मोहिं देखा * विहँसे सो सुन चरित विशेषा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म नकाहू * जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिंधरणा * श्यामलगात अरुण मृदुचरणा ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी * रामगहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उडाउँ अकाशा * तिमितिमि भुज देखौंनिजपासा ॥
दोहा—ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितवत पाछ उड़ात ॥
युग अंगुल कर बीचरह, राम भुजहि मोहिं तात ॥ ११५ ॥
सप्तावर्ण भद करि, जहँ लगि रहि गति मोरि ॥
गयों तहां प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयों वहोरि ॥ ११६ ॥
मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊं * पुनि चितवत, कोशलपुर गयऊं ॥
मोहिं विलोकि राम मुसकाहीं * विहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं ॥
उदर मांझ सुन अंडजराया * देखउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अति विचित्र तहँ लोक अनेका * रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा * अगणित उड़गण रवि रजनीशा ॥

---

१ पूर्णमासीका चन्द्रमा सोलह । २ सूर्य्य । ३ माया । ४लाल । ५ कोमल । ६गरुड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अगणित लोकपाल यम काला * अगणित भूधर भूमि विशाला ॥
सागर सरि[2] सर[3] विपिन[4] अपारा * नाना भांति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर* चारि प्रकार जीव सचराचर ॥
दोहा–जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाय ॥
सब अद्भुत तहँ देखेउँ, वर्णि कवन विधि जाय ॥ ११७ ॥
एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ॥
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक ॥ ११८ ॥
लोक लोक प्रति भिन्न विधाता * भिन्न विष्णु शिव मनु दिशित्राता॥
नर गन्धर्व भूत वैताला * किन्नर निशिचर पशु खग व्याला॥
देव दनुज गण नाना जाती * सकल जीव तहँ आनहिं भांती ॥
महि सरि सागर रस गिरि नाना* सब प्रपंच[5] तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निजरूपा * देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी * सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता * विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रतिब्रह्माण्ड राम अवतारा * देखेउँ बाल विनोद अपारा ॥
दोहा–भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अति विचित्र हरियान ॥
अगणित भुवन[6] फिरेउँ मैं, राम न देखा आन ॥ ११९ ॥
सोइ शिशुपन[7] सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर ॥
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह समीर ॥ १२० ॥
भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका * बीते मनहुँ कल्पशत एका ॥
फिरत फिरत निजआश्रम आयउँ* तहँ पुनि रहि कछुकाल गँवायउँ ॥
निज प्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ * निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्ममहोत्सव जाई * जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥

---

१ पर्वत । २ नदी । ३ तालाब । ४ वन । ५ संसारकीबातें-रचना । ६ ब्रह्माण्ड । ७ लडकपना ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम उदर देखेउँ जगनाना * देखत बनै न जात बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ रामसुजाना * मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं विचार बहोरि बहोरी * मोह कलिल[1] व्यापित मति भोरी ॥
उभयँ घरीमहँ मैं सब देखा * भयउँ श्रमित मनमोह विशेषा ॥

दोहा—देखि कृपालु विकल मुहिं, विहँसे तब रघुवीर ॥
बिहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुन मतिधीर ॥ १२१ ॥
सोइ लरिकाई मोहिंसन, लगे करन पुनि राम ॥
कोटि भांति समुझावों, मन न लहै विश्राम ॥ १२२ ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई * समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणिपरेउँ मुख आव न बाता * त्राहि त्राहि आरतजन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी * निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ * दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा * सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम विचार विचारी * मनमहँ होइ हर्ष अति भारी ॥
भक्तबछलता प्रभुकै देखी * उपजा मम उर हर्ष विशेषी ॥
सजलनयन पुलकित करजोरी * कीन्ही बहुविधि बिनय बहोरी ॥

दोहा—सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निजदास ॥
वचनसुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥ १२३ ॥
कागभुशुण्डी मांगु वर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
अणिमादिकसिधिअपरनिधि, मोक्षसकलसुखखानि ॥ १२४ ॥

ज्ञान विवेक विराति विज्ञाना * मुनि दुर्लभ गति जो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं * मांगु जो तोहिं भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुबचन बहुत अनुरागेउँ * मनअनुमान करन तब लागेउँ ॥

---

१ मोहसे घिरीहुई । २ बावली । ३ दोघडी । ४ घर । ५ अष्टसिद्धिनवौनिधि ।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभुकह देन सकल सुखसही * भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्ति हीन गुण सुख सब ऐसे * लवण विना बहु व्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा * अस विचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू * मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मनभावत वर मांगौं स्वामी * तुम उदार[2] उर अन्तर्यामी[3] ॥

दोहा—अविरल[4] भक्ति विशुद्ध तव, श्रुति[5] पुराण जो गाव ॥
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभु प्रताप कोउ पाव ॥ १२५ ॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम ॥
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम[6] ॥ १२६ ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक[6] * बोले वचन परम सुखदायक ॥
सुनु वायस तैं परमसयाना * काहेन मांगसि अस वरदाना ॥
सब सुखखानि भक्ति तैं मांगी * नहिं जग कोउ तोहिंसम बडभागी ॥
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं * कै जप योग अनल[7] तनु दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई * मांगेउ भक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे * सब शुभगुण बसिहैं उरतोरे ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा * योगचरित्र रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा * मम प्रसाद नहि साधन खेदा[9] ॥

दोहा—मायासम्भव[10] सकल भ्रम, अब नहिं व्यापिहि तोहिं ॥
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुण गुणाकर मोहिं ॥ १२७ ॥
मोहिं भक्ति प्रिय सन्तत, अस विचारि सुनु काग ॥
काय[11] वचन मन मम चरण, करहु अचल अनुराग ॥ १२८ ॥

अब सुन परम विमल ममवानी * सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥

---

१ भोजन । २ सबकछुदेवेयोग्य । ३ अन्तरकेजाननहार । ४ अखंड । ५ वेद ६ श्रीरामचन्द्र । ७ अग्नि । ८ भिन्नभिन्न । ९ दुःख । १० उत्पन्न । ११ शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं *सुन मन धरि सब तजि भजु मोहीं ॥
मम माया संभव संसारा * जीव चराचर विविध प्रकारा ॥
सब ममप्रिय सब मम उपजाये * सबते अधिक मनुज मुहिं भाये ॥
तिन्हमहँ द्विज[2] द्विजमहँ श्रुतिधारी[3]* तिन्हमहँ निगमधर्म[4] अनुसारी ॥
तिन्हमहँ प्रियविरक्त[5] पुनिज्ञानी * ज्ञानिहुँते अतिप्रिय विज्ञानी[6] ॥
तिनते पुनि मोहिं प्रिय निजदासा * जेहिगति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्यकहौं तोहिं पाहीं *मोहिं सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं ॥
भक्तिहीन विरंचि[7] किन होई * सब जीवनमहँ अप्रिय सोई ॥
भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी * मोहि परमप्रिय सुनु मगवाणी ॥

दोहा—शुचि सुशील सेवक सुमति, कहु प्रिय काहि न लाग ॥
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥ १२९ ॥

एक पिताके विपुल[8] कुमारा * होइँ पृथक्गुण[9] शील अचारा ॥
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता * कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई * सबपर पितहिं प्रीति सम होई ॥
कोउ पितुभक्त वचन मन कर्म्मा* स्वप्रेहु जान न दूसर धर्म्मा ॥
सो प्रिय सुत पितु प्राणसमाना * यद्यपि सो सब भांति अयाना[10] ॥
इहिविधि जीव चराचर जेते * त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिलविश्व[11] यह मम उपजाया * सब पर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परिहरि सब माया *भजहि मोहिं मन वच अरु काया ॥

दोहा—पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ॥
सर्व भाव भजु कपट तजि, मोहिं परम प्रिय सोइ ॥ १३० ॥

सो०—सत्य कहौं खग तोहिं, शुचि सेवक मम प्राणप्रिय ॥

---

१ अनुभव । २ ब्राह्मण । ३ वेदके जाननेवाले । ४ वेदके अनुसारचलनेवाले । ५ वैरागी ब्रह्मज्ञानजाननेवाले । ६ कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड चारिउफल । ७ विधि । ८ अनेक । ९ अलग । १० मूर्ख । ११ समूह ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस विचारि भजु मोहिं, परिहरि[1] आश भरोस सब ॥ ४ ॥
कबहुँ काल नहिं व्यापै तोही * सुमिरेहु भजेहु निरंतर[2] मोही ॥
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं * तनुपुलकित मन अति हर्षाऊं ॥
सो सुख जानै मन अरु काना * नहिं रसना[3] प्रति जाइ वखाना ॥
प्रभु शोभासुख जानत नयना * कहि किमिसकैं तिन्हैं नहि वर्यना[4]
बहुविधि राम मोहिं सिख देई * लगे करन शिशु[5] कौतुक तेई ॥
सजलनयन कछु मुखकरि रूखा * चितै मातु तनु लागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई * कहि मृदुवचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराय पय पाना * रघुपतिचरित ललित[6]करि गाना॥
सो०—जेहि सुखलागि पुरारि[7], अशिव भेष कृत शिव सुखद॥
अवधपुरि नर नारि, तेहि सुख महँ संतत मगन ॥५ ॥
सोई सुख लवलेश, जिन बारेक स्वप्नेहु लहेउ ॥
ते नहिं गणहिं खगेश, ब्रह्म सुखहिं सज्जन सुमति ॥ ६ ॥
मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला * देख्यों बाल[8] विनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति वर पायउँ * प्रभुपद वन्दि निजाश्रम[9] आयउँ ॥
तबते मोहिं न व्यापी माया * जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्तचरित मैं गावा * हरिमाया जिमि मोहिं नचावा ॥
निज अनुभव[10] अब कहौं खगेशा * विनु हरिभजन नजाहि कलेशा ॥
राम कृपा विनु सुनु खगराई * जानि नजाइ राम प्रभुताई ॥
जाने विनु नहोइ परतीती * विनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति विना नाहिं भक्ति दृढाई * जिमि खगेश जलकी चिकनाई॥
सो०—विनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥
गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहहिं विनु हरि भगति ॥७॥

---

१ त्याग । २ सदासर्वदा । ३ जिह्वा । ४ वाणी । ५ बालपन । ६ सुंदर । ७ महादेव । ८ शिशुक्रीडा । ९ भूपनानिवासस्थान । १० सिद्धांत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष विनु ॥
चलै कि जल विनु नाव, कोटि यतन पचि पचि मरै ॥ ८ ॥

विनु सन्तोष न कामनशाहीं * काम अछत सुखस्वप्नेहुँ नाहीं ॥
रामभजन विनु मिटहि नकामा * थलविहीन तरु कबहुँ कि जामा ॥
विना ज्ञानकी समता आवै * कोउ अवकासकि नभ विनुपावै ॥
श्रद्धा विना धर्म नहिं होई * विनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
विनु तप तेज कि करु विस्तारा * जल विनु रस कि होइ संसारा ॥
शीलकि मिलु विनु बुंध सेवकाई * जिमि विनुतेज न रूप गुसाई ॥
निजसुख विनु मन होइ कि थीरा * परस किहोइ विहीन समीरा ॥
कवनेउ सिद्धि कि विनु विश्वासा * विन हरिभजन न भवभय नाशा ॥

दोहा—विनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि विन द्रवहिं न राम ॥
रामकृपा विनु स्वप्नेहु, मनकि लहै विश्राम ॥ १३१ ॥

सो०—अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संशय सकल ॥
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ ९ ॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई * प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
कह्यों न कछु करि युक्ति विशेषी * यह सब मैं निज नयनन देखी ॥
महिमा नाम रूप गुणगाथा * सकल अमितअनन्त रघुनाथा ॥
निजनिज मति मुनि हरिगुण गावहिं * निगम शेष शिव पार नपावहि ॥
तुम्हैं आदि खग मशक प्रयन्ता * नभ उडाहिं नहिं पावहिं अन्ता ॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा * तात कबहुँ कोउ पावकि थाहा ॥
रामकाम शतकोटि सुभगतनु * दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दनु ॥
शक्र कोटिशत सरिस बिलासा * नभशतकोटिअमित अवकाशा ॥

१ नआयेकोहर्षनगयेकोशोच । २ कामना । ३ रहते । ४ वृक्ष । ५ आकाश । ६ पृथ्वी । ७ पंडित । ८ आत्मक । ९ छूना । १० वायु । ११ कृपा १२ आंखौं । १३ अथाह । १४ सुंदर । १५ शत्रु । १६ इंद्र । १७ विस्तारित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—मरुत कोटि शत विपुलबल, रवि शत कोटि प्रकास ॥
शशि शतकोटि सुशीतल, शमन सकल भवत्रास ॥ १३२ ॥
काल कोटि शत सरिस अति, दुस्तर[1] दुर्ग दुरन्त[2] ॥
धूम्रकेतु[3] शत कोटि सम, दुराधर्ष[4] भगवन्त ॥ १३३ ॥
प्रभु अगाध शत कोटि पताला * शमन कोटि शत सरिस कराला ॥
तीरथ अमित कोटिशत पावन * नाम अखिल अघ पुंज नशावन ॥
हिमगिरि[5] कोटि अचल रघुवीरा * सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा ॥
कामधेनु शत कोटि समाना * सकल कामदायक भगवाना ॥
शारद कोटि अमित चतुराई * विधि शतकोटि अमित निपुणाई ॥
विष्णु कोटिशत पालनकर्त्ता * रुद्र कोटिशत सम संहर्त्ता ॥
धनद[6] कोटि शत सम धनवाना * माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
धराधरण[7] शतकोटि अहीशा * निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा ॥
छंद—निरवधि निरूपम राम सम नहिं आन निगमागम कहैं ॥
जिमि कोटिशत खद्योत[8] रवि कहँ कहत अति लघुतालहैं ॥
इहिभांति निज निजमति विलास मुनीश हरिहि बखानहीं ॥
प्रभु भाव गाहक अति कृपालु सप्रेमसुनि सुख पावहीं ॥ २१ ॥
दोहा—राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ ॥
सन्तन सन जस कछु सुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ ॥ १३४ ॥
सो०—भाववश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन ॥
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमण ॥ १० ॥
सुनि भुशुंडके वचन सुहाये * हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अतिहर्षाना * श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिलमोह समुझि पछिताना * ब्रह्म अनादि मनुजकरि जाना ॥

१ तरिवे योग्यनहीं । २ ज्यहिकर अन्त पावनादूरिहै । ३ अग्नि । ४ दूरिहै धारणा जिनकी । ५ हिमाचल । ६ कुवेर । ७ पृथ्वी । ८ जुगनू ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि पुनि कागचरण शिरनावा * जानि रामसम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु विनु भवनिधि तरै न कोई * जो विरंचि शंकरसम होई ॥
संशयसर्प ग्रसेउ मोहिं ताता * दुख दल हरि कुतर्क बहु व्राता॥
तव स्वरूप गोरुडि रघुनायक * मोहिं जियायहु जनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना * रामरहस्य अनूपम जाना ॥
दोहा–ताहि प्रशंसेउ विविध विधि, शीश नाइ करजोरि ॥
वचन सप्रेम विनीत मृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥ १३५ ॥
प्रभु अपने आंववेक ते, पूंछों स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दास निज मोहिं ॥ १३६ ॥
तुम सर्वज्ञ तज्ञ[2] तम[3] पारा * सुमति सुशील सरल आचारा ॥
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा * रघुनायकके प्रिय तुम दासा ॥
कारण कवन देह यह पाई * तात सकल मोहिं कहहु बुझाई॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी * पायहु कहां कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं * महाप्रलय महँ क्षय तवनाहीं ॥
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं * सो मेरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नरदेवा * नाथ सकल जग काल कलेवा ॥
अंडकटाह[4] अमित लयकारी * काल महादुरतिक्रम[5] भारी ॥
सो०–तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारण कवन ॥
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योग बल ॥ ११ ॥
दोहा–प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ॥
कारण कवन सो नाथ अब, कहहु सहित अनुराग ॥१३७॥
गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा * बोलेउ उमा सहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी * प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी ॥

१ गरुडमंत्र जिससे सांपका विष उतरिजाय । २ परमतत्त्ववेत्ता । ३ अविद्यातिपरे । ४ अनेकब्रह्मांडविस्तारित । ५ दुस्तर ।

CC-0. In Public Domain. Sharmaji Archives, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई * बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई * तात सुनहु सादर मनलाई ॥
जप तप मख शम दम व्रत दाना * विरति विवेक योग विज्ञाना ॥
सबकर फल रघुपतिपद प्रेमा * तेइ विनु कोइ न पावै क्षेमा ॥
इहि तनु राम भक्ति मैं पाई * ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥
जेहिते कछु निज स्वारथ होई * तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो०—पन्नगारि असि नीति, श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं ॥
अति नीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज परमहित॥१२॥
पाट कीटते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर ॥
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्राणसम ॥ १३ ॥

स्वारथ सर्व्व जीव कहँ एहा * मन क्रम वचन राम पद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा * जो तनु पाइ भजिय रघुवीरा ॥
रामविमुख लहि विधिसम देही * कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही ॥
राम भक्ति यहि तनुमहँ जामी * ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी ॥
तजौं न तनु निजइच्छा मरणा * तनु विनु वेद भजन नहिंवरणा ॥
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवौ * राम विमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
नाना जन्म कर्म्म पुनि नाना * किये योग जप तप मख दाना ॥
कवन योनि जन्मेहुँ जहँ नाहीं * मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं ॥
देखेहुँ सब करि कर्म्म गुसाई * सुखी न भयउँ अबहि की नाई॥
सुधि मोहिं नाथ जन्मबहु केरी * शिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥

दोहा—प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहँगेश ॥
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश ॥ १३८ ॥
पूर्वकल्पमें एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल ॥

---

१ कुशल । २ गरुड । ३ कीडा । ४ भरमाया । ५ यज्ञ । ६ गरुड । ७ प्रीति । ८ पाप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगम प्रतिकूल ॥ १३९ ॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई * जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई ॥
शिव सेवक मन क्रम अरु वानी * आनदेव निन्दक अभिमानी ॥
धन मद मत्त परम वाचाल[2] * उग्रबुद्धि[3] उर दम्भ[4] विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी * तदपिनहीं महिमा कछु जानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा * निगमागम पुराण अस गावा ॥
कवनिहुँ जन्म अवधबस जोई * राम परायण[5] सो परिहोई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी * जब उर वसहिं राम धनु पाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी * पाप परायण सब नर नारी ॥

दोहा—कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ[6] ॥
दम्भिन निज मति कल्पि करि, प्रगट कीन्ह बहुपन्थ॥१४०
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहौं कछुक कलिधर्म ॥ १४१ ॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥
द्विज श्रुतिवंचक[7] भूप प्रजाशन[8] * कोउ नहिं मान निगम अनुशासन
मारग सोइजाकहँ जो भावा * पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्या रम्भ दम्भरत जोई * ताकहँ सन्त कहै सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारा * जो करु दम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो बहुझूठ मसखरी जाना * कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना ॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी * कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी ॥
जाके नख अरु जटा विशाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥

---

१ वेद । २ वक्ता । ३ बडीतीक्ष्ण तामस राजससे मिलितबुद्धि । ४ शास्त्रके पदार्थ सबको देखावत रहौं अरु त्यही की कर्त्तव्यते प्रतिकूलरहौं । ५ लगाहुआ । ६ शास्त्रकी रीति । ७ वेदकी निंदा करनेवाले । ८ प्रजाका अन्न खाजानेवाले ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष्या भक्ष्य जे खाहिं ॥
त्यइ योगी त्यइ सिद्ध नर, पूज्यते कलियुग माहिं ॥ १४२ ॥
सो०—जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता ॥
मन क्रम वचन लबार[1], ते वक्ता कलिकाल महँ ॥ १४ ॥
नारि विवश नर सकल गुसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी[3] नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी * देव विप्र गुरु सन्त विरोधी ॥
गुण मन्दिर सुन्दर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी विभूषणहीना * विधवनके शृंगार नवीना ॥
गुरु शिष अंध बधिरकर[4] लेखा * एक न सुनै एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्य धन शोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई ॥
मात पिता बालकन बुलावहिं * उदर भरे सोइ कर्म सिखावहिं ॥
दोहा—ब्रह्मज्ञान विनु नारि नर, करहिं न दूसरि बात ॥
कौडी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात ॥ १४३ ॥
वाद शूद्र कह द्विजन सन, हम तुमते कछु घाटि ॥
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आंखि दिखावहिं डाटि ॥ १४४ ॥
परतिय लम्पट[5] कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर * देखा मैं चरित्र कलियुग कर ॥
आपु गये अरु आनहिं घालहिं * जोकोउ श्रुतिमारग प्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का * परहिंजे दूषहिं श्रुतिकरि तर्का ॥
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा * श्वपच किरात[6] कोल्ह कलवारा ॥
नारि मुई गृह सम्पति नाशी * मूड़ मुडाइ भये संन्यासी ॥
ते विप्रन सन पाँव पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नशावहिं ॥
विप्र निरक्षर लोलुप[8] कामी * निराचार शठ वृषली[9] स्वामी ॥

---

१ आदर । २ झूठे । ३ बंदर । ४ बहिर । ५ आसक्त । ६ चांडाल । ७ भील । ८ लोभी । ९ दासी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना * बैठि वरासनै कहहिं पुराना ॥
सब नरकल्पित करहिं अचारा * जाइ न वर्णि अनीति अपारा ॥
दोहा–भये वर्णसंकर कलिहि, भिन्न सेतु सब लोग ॥
करहिं पाप दुख पावहीं, भय रुज[2] शोक वियोग ॥१४५॥
श्रुति सम्मत हरि भक्तिपथ, संयुत ज्ञान विवेक ॥
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ १४६ ॥

त्रोटक छंद ॥

बहु धाम सँवारहिं योगि यती, विषया हरि लीन्ह गई विरती[3] ॥
तपस्वी धनवन्त दरिद्र गृही, कलि कौतुक तात न जात कही ॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती गृहआनहिं चेरिहि चोरगती ॥
सुत मानहिं मात पिता तबलौं, अबलानन[4] दीखनहीं जबलौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जबते, रिपु रूप कुटुम्ब भये तबते ॥
नृपपाप परायण धर्म नहीं, करि दण्ड विदण्ड[5] प्रजा नितहीं ॥
धनवंत कुलीन मलीन अपी[6], द्विज चिह्न जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिजो, हरिसेवकसंतसही कलिसो ॥
कवि वृंद उदार दुनी न सुनी, गुण दूषत बातन कोपि गुनी ॥
कलि बारहिंबार दुकालपरैं, विन अन्न दुखी बहुलोग मरैं ॥२४
दोहा–सुन खगेश कलि कपट हठ, दम्भ द्वेष[7] पाषण्ड ॥
काम क्रोध लोभादि मद, व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड ॥ १४७ ॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ॥
देव न वरषैं धरणि पर, बये न जामहिं धान ॥ १४८ ॥

---

१ श्रेष्ठआसन ऊँचो । २ रोग । ३ वैराग्य । ४ अपनीस्त्रीनकोमुख । ५ मार । ६ निश्चय । ७वैर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रोटक छंद ॥

अबला कच भूषण भूरि क्षुधा, धनहीन दुखी ममतावहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ न धर्मरता, मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥
नर पीडित रोग नभोग कही, अभिमान विरोधअकारणही ॥
लघुजीवन संवत पंचदशा, कल्पांत न नाश गुमान अशा॥२५॥
कलिकालविहाल कियेमनुजा, नहिं मानतकोउअनुजा तनुजा॥
नहिं तोष विचार न शीतलता, सब जाति कुजाति भयेमँगता ॥
इरषा परुषाँ छल लोलुपता, भरि पूरि रही समता विगता ॥
सब लोग वियोग विशोक हये, वर्णाश्रम धर्म अचार गये ॥
दमँ दान दया नहिं जानपनी, जडता परपंचक तात धनी ॥२६
तनु पोषक नारि नरा सगरे, परनिन्दक जे जगमें बैगरे ॥
दोहा—सुनु व्यालारि कराल कलि, मल अवगुण आगार ॥
गुणहु बहुत कलिकाल कर, विनु प्रयास निस्तार ॥१४९ ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग ॥
जो गति होइ सो कलिह हरि, नाम ते पावहिं लोग॥१५०॥
कृतयुग सब योगी विज्ञानी * करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी॥
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं * प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपतिपदपूजा * नर भवतरहिं उपाय न दूजा ॥
कलि केवल हरिगुणगण गाहा * गावत नर पावहिं भव थाहा ॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना * एक अधार राम गुण गाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं* प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥
सो भव तर कछु संशय नाहीं * नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं ॥

---

१ बाल । २ अधिक । ३ भूख । ४ प्यार । ५ छोटीबहिन । ६ अपनी कन्या । ७ कठोर । ८ लुब्ध । ९ जातीरही । १० इन्द्रियनकर जीतव । ११ फैले १२ गरुड । १३ घर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलिकर एक पुनीत प्रतापा * मानस पुण्य होइ नहिं पापा ॥
दोहा—कलियुगसम युग आन नहिं, जो नर कर विश्वास ॥
गाइ राम गुणगण विमल, भवतर विनहिं प्रयास ॥ १५१॥
प्रगट चारि पद धर्मके, कलि महँ एक प्रधान ॥
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥ १५२ ॥
कृतयुग धर्म होहिं सब केरे * हृदय राम मायाके प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व समता विज्ञाना * कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना ॥
सत्व बहुत कछु रजरतिकर्मा * सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रज सत्व स्वल्प कछुतामस* द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा * कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
बुध युग धर्म जानि मन माहीं * तजि अधर्म रत धर्म कराहीं ॥
काल कर्म नहिं व्यापहि ताही * रघुपति चरण प्रीति अति जाही॥
नटकृत कपट विकट खगराया * नट सेवकहिं न व्यापै माया ॥
दोहा—हरिमाया कृत दोष गुण, विनु हरि भजन न जाहिं ॥
भजियरामसबकामतजि, असविचारिमनमाहिं ॥ १५३ ॥
तेहि कलिकाल वर्ष बहु, बसेउँ अवध विहँगेश ॥
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश ॥१५४ ॥
गयउँ उजैन सुनहु उरगारी * दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई * तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥
विप्र एक वैदिक[1] शिवपूजा * करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ विन्दक[2] * शंभु उपासक नहिं हरिनिन्दक॥
सेवों मैं तेहि कपट समेता * द्विज दयालु अति नीति निकेता॥
बाहर नम्र देखि मुहिं सांई * विप्र पढाव पुत्रकी नाईं ॥
शम्भुमंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा * शुभ उपदेश विविध विधि कीन्हा॥

---

१ वेदवेत्ता । २ परमार्थको जाननेवाला ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई * हृदय दम्भ अहंमिति अधिकाई ॥
दोहा–मैं खल मल संकुल मति, नीच जाति वश मोह ॥
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णु कर द्रोह ॥ १५५ ॥
सो०–गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरण मम ॥
मोहिं उपजे अति क्रोध, दम्भिहि नीति कि भावई ॥ १५ ॥
एक वार गुरु लीन्ह बुलाई * मोहिं नीति बहु भाँति सिखाई ॥
शिव सेवा कर फल सुत सोई * अविरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता * नर पामर कर केतिक बाता ॥
जासु चरण शिव अज अनुरागी * तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ * सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये * भयउँ यथा अहि दूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती * गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा * पुनि पुनि मोहिं सिखाव सुबोधा ॥
ज्यहिते नीच बडाई पावा * सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा ॥
धूम अनलसम्भव सुन भाई * तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रजे मग परी निरादर रहई * सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
मरुतँ उडाइ प्रथमतेहि भरई * पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई ॥
सुन खगपति अससमुझि प्रसंगा * बुध न करहिं अधमन कर संगा ॥
कवि कोविद गावहिं अस नीती * खलसन कलह न भलसन प्रीती ॥
उदासीन वरु रहिय गुसाईं * खल परिहरिय श्वानकी नाईं ॥
मैंखल हृदय कपट कुटिलाई * गुरु हित कहैं न मोहिं सुहाई ॥
दोहा–एक वार हर मन्दिर, जपत रह्यउँ शिव नाम ॥
गुरुआये अभिमान ते, उठि नाहिं कीन्ह प्रणाम ॥ १५६ ॥

---

१ अहंकार । २ युक्त । २ वैष्णव । ४ सर्प । ५ धूरि।६चोटा ७हवा ।८आंखें ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोदयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश ॥
अति अघ गुरु अपमानता, सहि नहिं सके महेश ॥ १५७॥
मन्दिर मांझ भई नभ वानी * रेहतभाग्य अधम अभिमानी ॥
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा *अतिकृपालु चित सम्यक् बोधा॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं * नीति विरोध सुहात नमोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्ड शठ तोरा *भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ॥
जो शठ गुरुसन ईर्षा करहीं * रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा * अयुत[2] जन्मभरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइव पापी * होसि सर्प्प खलमलमति व्यापी॥
महा विटप कोटर महँ जाई * रहुरे अधम अधोगति[3] पाई ॥

दोहा–हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुण[4] शिव शाप ॥
कम्पित मोहिं विलोकि अति, उर उपजा परिताप[5]॥ १५८॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिव सन्मुख करजोरि ॥
विनय करत गद्गद गिरा, समुझि घोर गति मोरि ॥ १५९ ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ॥

छन्दार्थ–हे ईशानईश! मुक्तिरूप आप कैसेहो विभु अर्थात् समर्थ और व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूप और अपनेसे प्रगट होनेवाले गुणसे रहित निर्विकल्प अर्थात् एकरस रहनेवाले और निरीह चेष्टारहित और सूक्ष्म और महाकाशमें है वास जिनका वा जिनमें दोनों आकाश वसते हैं उनको मैं भजताहूं आकारसे रहित और ओंकारका मूल और तुरीय अर्थात् जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिसे परे वचन

---

१ उत्कृष्ट। २ दशहजार। ३ नीचगति-शिर नीचे पूंछ ऊपर। ४ कठिन।५ दुःख।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करालं महाकालकालं कृपालं, गुणागारसंसारपारं नतोहं ॥२७
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं, मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा, लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखंडं अजंभानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी, सदासज्जनानंददातापुरारी॥
चिदानंदसंदोहमोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी२९
न यावत् उमानाथ पादारविंदं, भजंतीह लोके परे वानराणाम्॥
न तावत्सुखं शांतिसंतापनाशं, प्रसीदप्रभो सर्वभूताधिवासं ॥

ज्ञान इंद्रियोंसे परे ईश कैलासके स्वामी और कराल जो महाकाल है उसकेभी आप महाकालहैं कृपालु गुणोंके आगार संसारसे परे हो मैं आपको नमस्कार करताहूं॥२७॥ आप हिमाचल पर्वतके समान गौरवर्ण और गम्भीर हैं और करोडों कामके समान शरीरकी शोभाहै और मस्तकपर गंगा आनन्दसे शोभित हैं और ललाटमें द्वीजका चंद्रमा और कंठमें सर्प शोभित हैं जिनके कानोंमें कुंडल हलरहेहैं बडे विशाल नेत्रहैं जिनका मुख प्रसन्न कंठ नीलहै और दयाके घर हैं सिंहका चर्म मुंडकी माला जिनको प्रिय हैं ऐसे जो सबके नाथ आप शंकर अर्थात् कल्याण कारक हो सो तुम्हारे स्वरूपको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २८ ॥ प्रचंड अतिउत्तम अति ढीठ बडे ईश्वर खंडरहित अज कोटिभानुवत् प्रकाशित तीनों शूलके नाश करनेवाले त्रिशूल हाथमें लियेहुए भावसे प्राप्त होनेयोग्य भवानीपतिको मैं नमस्कार करताहूं कलासे परे कल्याण और कल्पांतके करनेवाले सदा सज्जनोंके आनंद देनेवाले त्रिपुरासुरके शत्रु चैतन्य आनंदके वासन और मोहके हर्त्ता मन्मथके नाशकर्ता प्रभु मेरे ऊपर कृपा करके रक्षा करो ॥ २९ ॥ हे उमानाथ जबतक सबजीवोंसे सेवित भक्तजन आपके चरणारविंदकी नहीं सेवाकरते तबतक इसलोक वा परलोकमें उनलोगोंको सुख शान्ति नहीं और सं-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नजानामि योगं जपं नैवपूजां, नतोहंसदा सर्वदाशम्भु तुभ्यं॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं,प्रभोपाहि आपन्नमामीशशंभो॥
श्लोक–रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ॥
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ४ ॥

दोहा–सुनि विनती सर्वज्ञ शिव, देखि विप्र अनुरागु ॥
पुनि मन्दिर वाणी भई, हेद्विजवर वर मांगु ॥ १६० ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ॥
निजपद भक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥ १६१ ॥
तव मायावश जीव जड, सन्तत फिरै भुलान ॥
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥ १६२ ॥
शंकर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ॥
शापानुग्रह होइ ज्यहि, नाथ थोरही काल ॥ १६३ ॥

इहिकर होइ परम कल्याना * सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
विप्रगिरा सुनि परहित सानी * एवमस्तु इति भइ नभ वानी ॥
यदपि कीन यह दारुणपापा * मैं पुनि दीन क्रोधकरि शापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी * करिहौं इहिपर कृपा विशेषी ॥
क्षमा शील जे पर उपकारी * ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी॥
मोर शाप द्विज मृषा नहोई * जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥

तापका नाश नहीं होता योग जप पूजाको मैं नहीं जान्ताहूं और हे शिवजी मैं सदा तुमको नमस्कार करताहूं और बुढाई जन्मके दुःखोंके समूह करके जो मैं दुःखी हूं आपकी शरणमेंहूं हे प्रभो आप रक्षा करो मैं आपको हे ईश नमस्कार करताहूं३०

श्लोकार्थ–इस रुद्राष्टकको पढकर ब्राह्मणने महादेवजीको प्रसन्न किया जो कोई इसको पढेंगे उनपर शिवजी कृपा करैंगे ॥

---

१ रामचन्द्र ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जन्मत मरत दुसह दुख होई * इहिकहँ स्वल्प न व्यापिहि सोई ॥
कौनिहु जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना * सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तब भयऊ * पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह[1] मोरे * राम भक्ति उपजहि उरतोरे ॥
सुन ममवचन सत्य अब भाई * हरि तोषक व्रत द्विज सेवकाई ॥
अब जनि करसि विप्र अपमाना * जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्रकुलिश[2] ममशूल विशाला * कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥
जो इनकर मारा नहिं मरई * विप्ररोष पावक सो जरई ॥
अस विवेक राखेहु मनमाहीं * तुमकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
औरौ एक आशिषा मोरी * अप्रतिहत[3] गति होइहि तोरी ॥

दोहा—सुनि शिव वचन सप्रेम गुरु, एवमस्तु इति भाषि ॥
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शंभुचरण उर राखि ॥ १६४ ॥
प्रेरित काल विंध्य गिरि, जाइ भयउँ मैं व्याल ॥
विनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल ॥ १६५ ॥
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान ॥
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान ॥ १६६ ॥
शिव राखेउ श्रुति नीति विधि, मैं नहिं पाव कलेश ॥
इहिविधि धरेउ विविध तनु, ज्ञान न गयउ खगेश ॥ १६७ ॥

त्रियग योनि जो जो तनु धरेऊं * तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं ॥
एक शूल मोहिं विसरु न काऊ * गुरुको कोमल शील स्वभाऊ ॥
चर्म देह द्विज कर मैं पाई * सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहां बालकन मीला * करौं सकल रघुनायक लीला ॥
प्रौढभये मोहिं पिता पढावा * समुझौं सुनौं गुणौं नहिं भावा ॥
मनते सकल वासना भागी * केवल रामचरणलयलागी ॥

---

१ कृपा । २ वज्र । ३ जहांजीचाहे तहां चलाजावे । ४ अन्तमें । ५ सयान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहु खगेश अस कवन अभागी * खरीसेव सुरधेनुहि त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई * हारेउ पिता पढाय पढाई ॥
भयउ कालवश जब पितु माता * मैं वन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ तहँ विपिन मुनीश्वर पावों * आश्रम जाइ जाइ शिरनावों ॥
पूँछौं तिनहिं रामगुण गाहा * कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा * अव्याहतगति शंभुप्रसादा ॥
छूटी त्रिविध ईषणा गाढी * एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं * तब निजजन्म सफलकरि लेखौं ॥
जेहि पूँछौं सो मुनि असकहई * ईश्वर सर्वभूतमय अहई ॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई * सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥
दोहा—गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ॥
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षण क्षण नव अनुराग॥१६८॥
मेरु शिखर वट छाया, मुनिलोमश आसीन ॥
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥ १६९॥
सुनि मम वचन विनीत मृदु, मुनि कृपालु खगराज ॥
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज आयउ केहिकाज ॥१७०॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुणब्रह्म अवराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥ १७१ ॥
तब मुनीश रघुपति गुणगाथा * कहेउ कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी * मोहिं परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा * अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा * अनुभवगम्य अखंड अनूपा ॥

---

१ गदही । २ कामधेनु । ३ परमेश्वर । ४ सुत वित्त लोकमर्यादापर ममता । ५ परमप्रवीण । ६ कलारहित । ७ चेष्टारहित । ८ नामरहित । ९ अनुभवकरके प्राप्तहैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनगोतीत[1] अमल अविनाशी * निर्विकार[2] निरवधि[3] सुखराशी ॥
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा * वारि वीचि इव गावहिं वेदा ॥
विविधभांति मोहिं मुनि समुझावा * निर्गुणमत ममहृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा * सगुण उपासन कहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना * किमि विलगाइ मुनीश प्रवीना ॥
सोइ उपदेश कहहु करि दाया * निज नयनन देखौं रघुराया ॥
भरिलोचन विलोकि[4] अवधेशा * तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा[5] ॥
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा[6] * खंडि सगुणमत अगुणनिरूपा ॥
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी * सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं कीन्हा * मुनि उरभयउ क्रोधकर चीन्हा ॥
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा[7] किये * उपज क्रोध ज्ञानिहुके हिये ॥
अति संघर्षण[8] करै जो कोई * अनलै[9] प्रगट चन्दन ते होई ॥

दोहा—बारहि बार सकोपि मुनि, करहिं निरूपण[10] ज्ञान ॥
मैं अपने मन बैठि तब, करौं विविध अनुमान ॥ १७२ ॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि विनु, द्वैत कि विनु अज्ञान ॥
मायावश परिछिन्न[11] जड, जीव कि ईश समान ॥ १७३ ॥

कबहुँक दुख सबकर हित ताके * त्यहि कि दरिद्र परसमणि जाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका * परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
वंश कि रह द्विजअनहित कीन्हे * कर्मकि होंहिं स्वरूपहि चीन्हे ॥
काहुहि सुमति[12] कि खलसँग[13] जामी * शुभगति पाव कि परतियगामी[14] ॥
राजकि रहै नीतिविनु जाने * अघ[15] किरहै हरिचरित बखाने ॥

---

१ मनवाणीतेपरे । २ षट्विकाररहित । ३ जिनकी मर्यादाकीथाहनहीं । ४ देखि । ५ शिक्षा । ६ जिसकीतुलनानहीं । ७ अनादर । ८ रगड । ९ अग्नि १० प्रतिपादन व्याख्यान । ११ यह इतनाहै ऐसा अजमायाहुआ । १२ उत्तम-बुद्धि । १३ दुष्ट । १४ । परस्त्रीगमनेवाला । १५ । पाप ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भवकि परहिं परमारथ विंदक * सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक ॥
पावनयश कि पुण्य विनु होई * विनु अघ अयश कि पावै कोई ॥
लाभ कि कछु हरिभक्ति समाना * जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग इहिसम कछु भाई * भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि विना तामस[1] कछु आना * धर्म कि दयासरिस हरियाना[2] ॥
इहिविधि अमितयुक्ति मनगुणेऊं * मुनिउपदेश नसादर सुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा * तब मुनि बोले वचन सकोपा ॥
मूढ परम सिख देउँ न मानसि * उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य वचन विश्वास न करही * वायस इव सबही सन डरही ॥
शठ सपक्ष तवहृदय विशाला * सपदि होहु पक्षी चण्डाला ॥
लीन्ह शापमैं शीश चढ़ाई * नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दोहा–तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ ॥
सुमिरि राम रघुवंशमणि, हर्षित चलेउँ उड़ाइ ॥ १७४ ॥
उमा जो रामचरण रत, विगत काम मद क्रोध ॥
निज प्रभुमय देखहिं जगत, कासन करहिं विरोध ॥ १७५ ॥

सुनु खगेश नहिंकछु ऋषिदूषण * उर प्रेरक रघुवंशविभूषण ॥
कृपासिंधु मुनिमति करि भोरी * लीन्ही प्रेमपरीक्षा मोरी ॥
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना * मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी * रामचरण विश्वास विशेषी ॥
अतिविस्मय पुनि पुनि पछिताई * सादरमुनि मुहिं लीन्ह बुलाई ॥
मम परितोष विविध विधि कीन्हा * हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप रामकर ध्याना * कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा * जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा ॥
मुनि मोहिं कछुक काल तहँ राखा * रामचरित मानस सब भाषा ॥

---

१ क्रोध । २ गरुड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सादर मोहिं यह कथा सुनाई * पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा * शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकर जानी * ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
रामभक्ति जिनके उरनाहीं * कबहुँ न तात कहिय तेहि पाहीं॥
मुनि मोहिंविविधभांति समुझावा * मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निज करकमल परासि ममशीशा * हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
रामभक्ति अविरल उर तोरे * वसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दोहा—सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभ गुण भवन अमान[1] ॥
कामरूप[2] इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान[3] ॥ १७६ ॥

ज्यहि आश्रम तुम बसब पुनि,सुमिरहु श्रीभगवन्त ॥
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन एक प्रयन्त ॥ १७७ ॥

काल कर्म्म गुण दोष स्वभाऊ * कछु दुख तुमहिंनव्यापिहि काऊ ॥
राम रहस्य[4] ललितविधि नाना * गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
विनु श्रम तुम सब जानव सोऊ * नित नवप्रेम रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मन माहीं * हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनि आशिष सुनु मतिधीरा* ब्रह्मगिरा[5] भइ गगनगँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनि ज्ञानी * यह मम भक्त कर्म मन वानी ॥
सुनि नभगिरा हर्ष मम भयऊ * प्रेम मगन मन संशय गयऊ ॥
करि विनती मुनि आशिष पाई * पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई ॥
हर्षसहित यहि आश्रम आयउँ * प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
इहां वसत मोहिं सुन खगईशा * बीते कल्प सात अरु वीसा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना * सादर सुनाहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुवीरा * धराहिं भक्त हित मनुज शरीरा ॥

---

१ मानरहित। २ कामरूपकही जो इच्छा करहुगे सो रूप प्राप्त होवे। ३ स्थान। ४ चरित। ५ ब्रह्माकी वाणी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब तब जाइ अवधपुर रहऊं * शिशुलीला विलोकि सुख लहऊं॥
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा * इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई * कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी * रामभक्ति महिमा अति भारी ॥

दोहा—ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह ॥
निज प्रभु दरशन पायउँ, गयउ सकल संदेह ॥ १७८ ॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउँ दीन्ह महा ऋषि शाप ॥
मुनिदुर्लभ वर पायउँ, देखहु भजन प्रताप ॥ १७९ ॥

जे आसि भक्ति जानि परिहरहीं * केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड कामधेनु गृह त्यागी * खोजत आकं[1] फिरहिं पयलागी[2] ॥
सुनु खगेश हरि भक्ति विहाई[3] * जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु विनुतरणी[4] * पैरि पार चाहत जडकरणी[5] ॥
सुनि भुशुण्डके वचन भवानी[6] * बोलेउ गरुड हर्षि मृदुवानी ॥
तव प्रसाद प्रभु ममउर माहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुण ग्रामा * तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं * कहहु बुझाइ कृपानिधि[7] मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना * नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना ॥
सो मुनि तुमसन कहेउ गोसांई * नहिं आदरेउ भक्तिकी नाई ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि अन्तर केता * सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारि वचन सुख माना * सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि नहिं कछु भेदा * उभय हरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर * सावधान होइ सुनहु विहँगवर ॥
ज्ञान विराग योग विज्ञाना * ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥

---

१ मंदार । २ दूध । ३ त्यागके । ४ नौका । ५ दुष्टकृत्य करनेवाले । ६ पार्वती । ७ कृपाकेस्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती * अबलाअबल सहज जड जाती॥
दोहा—पुरुष त्यागि सक नारि कहँ, जो विरक्त मतिधीर ॥
नतु कामी विषया विवश, विमुख जो पद रघुवीर ॥१८०॥
सो०—सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधुमुख निरखि ॥
विकल होहिं हरियान, नारि विरचि माया प्रगट ॥ १६ ॥
यहां न पक्षपात कछु राखों * वेद पुराण सन्तमत भाषों ॥
मोह न नारि नारिके रूपा * पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ * नारि वर्ग जानै सब कोऊ ॥
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी * माया खल नर्तकी विचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया * ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी * वसे जासु उर सदा अवाधी ॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई * करि नसकै कछु निज प्रभुताई ॥
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी * यांचहिं भक्ति सकल गुणखानी ॥
दोहा—यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जानेते रघुपति कृपा, स्वप्नेहु मोह न होइ ॥ १८१ ॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण ॥
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण ॥ १८२ ॥
सुनहु तात यह अकथ कहानी * समुझत बनै नजात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी * चेतन अमल सहज सुखराशी ॥
सो मायावश भयउ गुसाईं * बँध्यो कीर मर्कटकी नाईं ॥
जड चेतनहिं ग्रंथि परिगई * यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तबते जीव भयो संसारी * ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई * छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥

---

१ चन्द्रवदनी । २ चैतन्यरूप । ३ सुवा । ४ माया । ५ जीव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीव हृदय तम मोह विशेषी * ग्रन्थि न छूटै परै न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई * तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई * जो हरि कृपा हृदय सब आई ॥
जप तप व्रत यम नियम अपारा * जो श्रुति कहैं सुधर्म्म अचारा ॥
सोइ तृण हरित चरै जब गाई * भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा * निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धर्म्ममय पय दुहि भाई * अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुडावै * धृतसम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै विचार मथानी * दम अधार रज सत्य सुवानी ॥
तब मथि काढि लेइ नवनीता * विमल विराग शुभग सुपुनीता ॥

दोहा—योग अग्नि कर प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरिजाइ ॥ १८३ ॥
तब विज्ञानँ निरूपिणी, बुद्धि विशद घृतपाइ ॥
चित्त दिया भरि धरै दृढ, समता दिअटि बनाइ ॥ १८४ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपासते काढि ॥
तूल तुरीय सवाँरि पुनि, बाती करै सुगाढि ॥ १८५ ॥

सो०—यहिविधि लेसो दीप, तेज राशि विज्ञान मय ॥
जातहिं तासु समीप, जरहिं मदादिक शलभ सब ॥ १७॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा * दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा * तब भव मूल भेद भ्रम नाशा ॥

---

१ विषयवासना-अंधकार । २ वेदगुरुवाक्यमेंप्रतीति । ३ जैं. अक्षरका मंत्र होइ तै हजार नित्त जपै भूतशुद्धि प्राणायाम करके । ४ येनकेन इन्द्रियनको दमनकरै । ५ एकादशीचान्द्रायण इत्यादिक । ६ माखन ७ । अपनास्वस्वरूपजविअरूपास्वरूपब्रह्मद्वैकीएकताको निरूपण । ८ पतंग ९ ब्रह्मज्ञान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रबल अविद्या कर परिवारा * मोह आदि तम मिटैं अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा * उर गृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई * तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया * विघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई * बुद्धिहिं लोभ देखावै जाई ॥
कलबल छलकरि जाइ समीपा * अंचल वात बुझावै दीपा ॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी * तिन्हतन चितव नअनाहित जानी॥
जो तेहि विघ्न बाधि नहिं बाधी * तो बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना * तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय बयारी * ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उर गृहजाई * तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकाशा* बुद्धि विकल भइ विषय बताशा॥
इन्द्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई * विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी * तेहि विधि दीपको बार बहोरी ॥

दोहा—तब फिरि जीव विविध विधि, पावैं संसृति क्लेश ॥
हरिमाया अति दुस्तर, तरि नजाइ विहँगेश ॥ १८६ ॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक ॥
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ १८७ ॥

ज्ञान कि पन्थ कृपाणं कै धारा * परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई * सो कैवल्य परम पद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद * सन्त पुराण निगम आगम वद ॥
रामभक्ति सो मुक्ति गुसाई * अनइच्छित आवै बरिआई ॥
जिमि थलविनु जल रहि न सकाई* कोटि भांति कोउ करे उपाई ॥

---

१ देवता । २ दरवाजा । ३ पवन । ४ जन्ममरणकेदुःख । ५ कठिन । ६ विघ्न । ७ तरवारि—दुधारा । ८ विनाचाहे ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई * रहि न सकै हरि भक्ति विहाई ॥
अस विचारि हरि भक्त सयाने * मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत विनुयतन प्रयासा * संसृति मूल अविद्यानाशा ॥
भोजन करिय तृप्ति हित लागी * जिमि सो असन पचवै जठरागी॥
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई * को अस मूढ न जाहि सुहाई ॥

दोहा–सेवक सेव्यभाव विनु, भव न तरिय उरगारि ॥
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त विचारि ॥ १८८ ॥
जो चेतन कहँ जडकरै, जडहि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥१८९॥

कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई * सुनहु भक्ति मणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर * बसै गरुड जाके उर अन्तर ॥
परमप्रकाश रूप दिन राती * नहिं कछु चहिय दिया घृतबाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहिं* लोभ वात नहिं ताहि बुझावहिं ॥
प्रबल अविद्यातम मिटि जाई * हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकटनहिं जाहीं * बसै भक्ति मणि जेहिउरमाहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई* तेहि मणि विनुसुख पाव नकोई ॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी * जेहिके वश सब जीव दुखारी ॥
राम भक्ति मणि उर बस जाके * दुख लवलेश न स्वप्नेहुँ ताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं * जे मणि लागि सुयतन कराहीं॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई * रामकृपा विनु कोउ न लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे * नर हतभाग्य देत भटभेरे ॥
पावन पर्वत वेद पुराना * रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्म्मी सज्जन सुमति कुदारी * ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥

---

१ भोजन । २जीव । ३श्रीरामचन्द्र । ४ विष । ५अमृत । ६ वैरी । ७ खानि ।
८ जे वेद पुराण रूप पर्व्वतके अंतर मणि रूप भक्तिको लखैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाव सहित जो खोदै प्रानी * पावभक्ति मणि सब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा * रामते अधिक रामकर दासा ॥
रामसिन्धु घन सज्जन धीरा * चन्दन तरु हरिसन्त समीरा ॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई * विनु सो सन्त न काहू पाई ॥
अस विचारि जो करु सतसंगा * रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥
दोहा—ब्रह्म पयोनिधि सुन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि ॥
कथा सुधा मथि काढ़हीं, भक्ति मधुरता जाहि ॥ १९० ॥
विरति[2] चर्म[3] असि[4] ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि ॥
जय पाई सोइ हरि भगति, देख खगेश विचारि ॥ १९१ ॥
पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ * जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी * सप्तप्रश्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा * सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड़दुख कवन कवन सुख भारी * सो संक्षेपहि कहहु विचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु * तिन्हकर सहज स्वभाव बखानहु ॥
कवन पुण्य श्रुतिविदित विशाला * कहहु कवन अघ परमकराला ॥
मानस रोग कहहु सब गाई * तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती * मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नरसमान नहिं कवनिहु देही * जीव चराचर याचत जेही ॥
नरकस्वर्ग अपवर्ग निसेनी * ज्ञान विराग भक्ति सुख देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर * होय विषयरत मन्दमन्द तर ॥
कंचन कांच बदलि[1] शठ लेहीं * करते डारि परसमणि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं * सन्तमिलन सम सुख कछु नाहीं ॥
परउपकार वचन मन काया * सन्त सहज स्वभाव खगराया ॥
सन्त सहहिं दुख परहित लागी * परदुख हेतु असन्त अभागी ॥

---

१ पवन । २ वैराग्य । ३ ढाल । ४ तरवारि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूरुजतरुसम सन्त कृपाला * परहित सह नित विपतिविशाला ॥
शणइव खल परबंधन करहीं * खाल कढाइ विपतिसहि मरहीं ॥
खल विनुस्वारथ पर अपकारी * अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदा विनाशि नशाहीं * जिमिकृषिहतिहिमउपलविलाहीं ॥
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू * यथा प्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू ॥
सन्त हृदय सन्तत सुखकारी * विश्व सुखद जिमि इंदुतमारी ॥
परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा * परनिंदासम अघ न गरिशा ॥
हरि गुरु निन्दक दादुर होई * जन्म सहस्र पाव तनु सोई ॥
द्विजनिंदक बहुनरक भोग करि * जग जन्मै वायस शरीर धरि ॥
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी * रौरव नरक परहिं ते प्राणी ॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत * मोह निशाप्रिय ज्ञान भानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड करहीं * ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा * जेहि ते दुखपावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन कर मूला * तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला ॥
काम वात कफ लोभ अपारा * क्रोध पित्त नित छातीजारा ॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई * उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना * ते सब शूल नाम को जाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई * हर्ष विषाद गहर बहुताई ॥
परसुख देख जरइ सो छई * कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई ॥
अहंकार जो दुखदडहरुआ * दम्भ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी * त्रिविध ईषणा तरुण तिजारी ॥
युग विधिज्वर मत्सर अविवेका * कहँलगि कहौं कुरोग अनेका ॥

१भोजपत्र । २ सर्प ३ मूस । ४ खेती । ५ पाला । ६मन ७ चन्द्र ।८सूर्य्य । ९ किसीजीवकोदुःख नपहुंचाना । १० घोरपाप । ११ मेढक । १२ कौवा । १३ घूघूपक्षी । १४ दुःख । १५ खाजु । १६ जलन्धर-त्रिमदा । १७ द्वन्द्वज्वर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—एक व्याधि बस नरमरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि ॥
सन्तत पीडहिं जीव कहँ, सोकिमि लहहिं समाधि ॥१९२॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ॥
भेषज पुनि कोटिन्ह करहिं, रुज न जाहिं हरियान ॥१९३॥

यहिविधि सकलजीव जगरोगी * शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये * हैं सबके लखि विरलन्हि पाये ॥
जाने ते छीजहिं कछु पापी * नाश न पावहिं जनँ परितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे * मुनिन्ह हृदय कानर वापुरे ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा * जो इहि भांति बनै संयोगा ॥
सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा * संयम यह न विषयकी आशा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी * अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहिविधि भले कुरोग नशाहीं * नाहिं तो यतन कोटि नहिं जाहीं ॥
जानिअ तब मन विरुजँ गोसांई * जब उर बल विराग अधिकाई ॥
सुमति क्षुधा बाढै नितनई * विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञान जल पाइ अन्हाई * तब रहु रामभक्ति उरछाई ॥
शिव अज शुक सनकादिक नारद * जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद ॥
सबकर मत खगनायक एहा * करिय रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं * रघुपति भक्ति विना सुखनाहीं ॥
कमठपीठ जामहिं बरु बारा * वंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहि नभ बरुबहुविधि फूला * जीव न लह सुख प्रभुप्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना * बरु जामहिं शश शीश वृषाना ॥
अन्धकार बरु रविहि नशावै * राम विमुख सुख जीव नपावै ॥
हिमते प्रकट अनल बरु होई * विमुख राम सुख पाव न कोई ॥

---

१ ओषधि । २ रोग ३ प्राणी । ४ निरोग । ५ प्रवीण । ६ कछुआ । ७ सींग । ८ पाला । ९ अग्नि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—वारि मथे बरु होइ घृत, सिकतातें बरु तेल ॥
विनु हरि भजन न भव तरिह, यह सिद्धांत अपेल ॥ १९४ ॥
मशकहि करहिं विरंचि प्रभु, अजहिं मशक ते हीन ॥
अस विचारि तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रवीन ॥१९५ ॥
"श्लोक—विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ॥
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरंति ते " ॥ ५ ॥
कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा * व्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी * राम भजिय सबकाम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही * मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा * कीन्ह नाथ मोपर अति छोहा ॥
पूंछेउ राम कथा अति पावनि * शुक सनकादि शम्भुमनभावनि ॥
सतसंगति दुर्लभ संसारा * निमिष दण्ड भरि एकौ बारा ॥
देखु गरुड निज हृदय विचारी* मैं रघुवीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सबभांति अपावन * प्रभुमोहिंकीन्ह विदित जगपावन ॥
दोहा—आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबविधि हीन ॥
निज जन जानि राम मोहिं, संत समागम दीन ॥१९६ ॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय ॥
चरित सिन्धु रघुनाथ कर, थाह कि पावै कोय ॥ १९७ ॥
सुमिरि रामके गुणगण नाना * पुनिपुनि हर्ष भुशुण्ड सुजाना ॥
महिमा निगम नेति कहि गाई * अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिव अज पूज्य चरण रघुराई * मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस स्वभाव कहुँ सुनौं न देखौं* केहि खगेश रघुपति सम लेखौं॥
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी * कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ॥

---

१ पानी । २ वालू । ३ विस्तारपूर्वक । ४ थोरेमें । ५ पक्षियोंमेंनीच । ६ जेमुक्तिकीसाधनाकरतेहैं मुमुक्षु।७ सम्पूर्ण सिद्धी जिनके हस्तामलकहैं।८त्रिकालदर्शी ।

CC-0. Public Domain. Chandigarh Archives, Lahore

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योगी[1] शूर सुतापस ज्ञानी * धर्म निरत पण्डित विज्ञानी ॥
तरहिं न विनु सेये मम स्वामी * राम नमौमि[2] नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसेउ अघराशी * होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥
दोहा—जासु नाम भव भेषज[3], हरण घोर त्रयशूल[4] ॥
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर, सदा रहहिं अनुकूल[5] ॥१९८॥
सुनि भुशुण्डके वचनवर, देखि राम पद नेह ॥
बोले गरुड सप्रेम अति, विगत मोह सन्देह ॥ ११९ ॥
मैं कृतकृत्य[6] भयउँ तव वानी * सुनि रघुवीर भक्ति रस सानी ॥
रामचरण नूतन[7] रति भई * माया जनित[8] विपति सब गई ॥
मोहजलधि[9] वोहित[10] तुम भयऊ * मोकहँ नाथ विविध सुख दयऊ ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा * वन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी * तुम सम तात न कोउ बड़भागी॥
संत विटप[11] सरिता[12] गिरि[13] धरणी* परहित हेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्त हृदय नवनीत[14] समाना * कहा कविन पै कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता * परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता ॥
जीवनजन्म सफल मम भयऊ * तवप्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर[15] * पुनि पुनि उमा कहै सुविहंगवर ॥
दोहा—तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर ॥
गरुड गयो वैकुंठ तब, हृदय राखि रघुवीर ॥ २०० ॥
गिरिजा संत समागम[16], सम न लाभ कछु आन ॥
विनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं वेद पुरान ॥ २०१ ॥

---

१ जिनकेअष्टांगयोगसिद्धहै । २ नमस्कार करताहूं ।३ औषध। ४ काम क्रोध लोभ । ५ प्रसन्न । ६ कृतार्थ । ७ नवीन । ८ उत्पन्न । ९ मोहरूपीसमुद्र । १० जहाज । ११ वृक्ष । १२ नदियां । १३ पर्व्वत । १४ माखन । १५ सेवक । १६ सतसंग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा * सुनत श्रवण छूटहिं भवपासा ॥
प्रणत कल्पतरु करुणापुंजा * उपजै प्रीति रामपद कंजा ॥
मन वच कर्म जनित अघ जाई * सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ॥
तीर्थाटन साधन समुदाई * योग विराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना * संयम नियम यज्ञ जप नाना ॥
भूतदया द्विज गुरु सेवकाई * विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी * सब कर फल हरिभक्ति भवानी ॥
सोइ रघुनाथ प्रक्ति श्रुतिगाई * राम कृपा काहू यक पाई ॥

दोहा—मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ॥
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥ २०२ ॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता * सोइ महिमंडन पण्डित दाता ॥
धर्म परायण सोइ कुलत्राता * रामचरण जाकर मनराता ॥
नीतिनिपुण सोइ परम सयाना * श्रुति सिद्धांत नीक तेइँ जाना ॥
सोइ कवि कोविद सोइ रणधीरा * जो छल छांड़ि भजै रघुवीरा ॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी * धन्य सो देश जहां सुरसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई * धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई ॥
सोधन धन्य प्रथमगति जाकी * धन्य पुण्य रतमति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा * धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा ॥

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुन, जगत्पूज्य सु पुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥ २०३ ॥

मतिअनुरूप कथा मैं भाषी * यद्यपि प्रथम गुप्त करि राषी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई * तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥

---

१ बंधन । २ तीर्थोंकाफिरना । ३ चराचरजीवमेंदया । ४ नम्रता । ५ पृथ्वीका भूषण । ६ रक्षक । ७ पंडित । ८ श्रीगंगाजी । ९ राजा । १० । ब्राह्मण । ११ नम्र-सुशिक्षित ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह नहिं कहिय शठहिंहठशीलहि * जो मनलाइ न सुन हरिलीलहि ॥
कहिय न लोभिहि क्रोधिहिं कामिहिं* जो न भजैं सचराचर स्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहि न सुनाइय कबहूं * सुरपतिसरिस होइ नृप जबहूं ॥
रामकथा के ते अधिकारी * जिनके सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरुपदप्रीति नीति रत जोई * द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह विशेष सुखदाई * जाहि परमप्रिय श्रीरघुराई ॥

दोहा—रामचरणरति[1] जो चहै, अथवा पद निर्वान[2] ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान ॥ २०४ ॥

राम कथा गिरिजा मैं वरणी * कलिमलशमन मनोमलहरणी
संसृत रोग सजीवन मूरी * राम कथा गावहिं श्रुति भूरी
इहि महँ रुचिर सप्त सोपानी[4] * रघुपति भक्ति केर पथ नाना ॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई * पाँव देइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावै * जो यह कथा कपट तजि गावै॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन[5] करहीं * ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई * गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गतसंदेहा * रामचरण उपजा नव नेहा ॥

दोहा—मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश ॥
उपजी रामभक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश ॥ २०५ ॥

यह शुभ शंभु उमा सम्वादा * सुखद सदा अरु शमन[6] विषादा॥
भव भंजन गंजन सन्देहा * जनरंजन सज्जन प्रिय येहा
राम उपासक जे जगमाहीं * इहसम प्रिय तिनकहँ कछु नाहीं॥
रघुपति कृपा यथा मति गावा * मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहि कलिकाल नसाधन दूजा * योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥

१ इंद्र । २ भक्ति । ३ ज्ञानकरके कैवल्यमुक्ति । ४ सप्तकाण्ड सीढ़ी । ५ विचारतेहैं । ६ नाश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं * सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतित पावन बडवाना * गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना ॥
ताहि भजिय तजि मनकुटिलाई * राम भजे केहि गति नहिं पाई ॥
छं०–पाई न गति केहिपतितपावन रामभज सुनु शठमना ॥
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादिखलतारेघना ॥
आभीर[1] यमन किरात खल श्वपचादिअतिअघरूप जे ॥
कहि नाम बारेकतेपि पावन होत राम नमामि ते ॥ ३१ ॥
रघुवंश भूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ॥
कलिमल मनोमल धोइ विनु श्रम रामधाम सिधावहीं ॥
शत पंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ॥
दारुण अविद्या[2] पंचजनित विकारश्रीरघुपतिहरैं ॥ ३२ ॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥
सो एक राम अकाम हित निर्वाणपद[3] सम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेशते मतिमंद तुलसी दासहूं ॥
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ ३३ ॥
दोहा–मोसम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर ॥
अस विचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भवपीर ॥२०६॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ॥
ऐसे होइके लागहू, तुलसीके मन राम ॥ २०७ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
उत्तरकांडेसप्तमःसोपानःसमाप्तः ॥ ७ ॥

---

१ अहीरव्रजके । २ तमअविद्या, मोहअविद्या, महामोहअविद्या, तामिस्रअविद्या अन्धतामिस्रअविद्या । ३ निर्वाणकहीमोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सार्ष्टि ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ आरती श्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्रीरामायणजीकी ॥ कीरतिकलितललितसियपीकी॥
टेक ॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ॥ वाल्मीकि विज्ञानविशारद॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद ॥वरणि पवनसुत कीरति नीकी १॥
संतत गावत शम्भु भवानी ॥ औघटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कवि पुंगबखानी ॥ कागभुशुण्डि गरुडके हियकी २॥
चारिउ वेद पुराणअष्टदश ॥ छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनिको रस ॥
तन मन धन संतनको सर्वस ॥ सार अंश सम्मत सबहीकी ॥ ३॥
कलिमलहरणि विषयरस फीकी ॥ सुभगशृंगार मुक्ति युवतीकी ॥
हरणिरोगभवभूरि अमीकी ॥ तात मात सबविधि तुलसीकी ॥ ४ ॥

इति आरती ॥

श्लोक–यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं श्रीमद्राम पदाब्जभक्तिमनिशं प्रार्थ्यैव रामायणम् ॥ मत्वा तद्रघुनाथनाम निरतं स्वान्तस्तमःशांतये भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्त थामानसम् ॥ १ ॥ पुण्यम्पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ॥ श्रीमद्रामचरित्र मानसमिदं भक्त्यावगाहंतिये तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्तिनो मानवाः ॥ २ ॥ यः पृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥ निश्चक्रं ह-तराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां कीर्तिम्पापहरां विधाय जग तां तं जानकीशं भजे ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इति

उत्तर काण्ड

समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायणान्तर्गत

रामाश्वमेध-

लवकुशकाण्डम् ।

जिसे

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छापकर प्रगट किया ।

बंबई ।

शके १८१५ संवत् १९५० सन् १८९४ ई०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लवकुशकाण्डम् ८

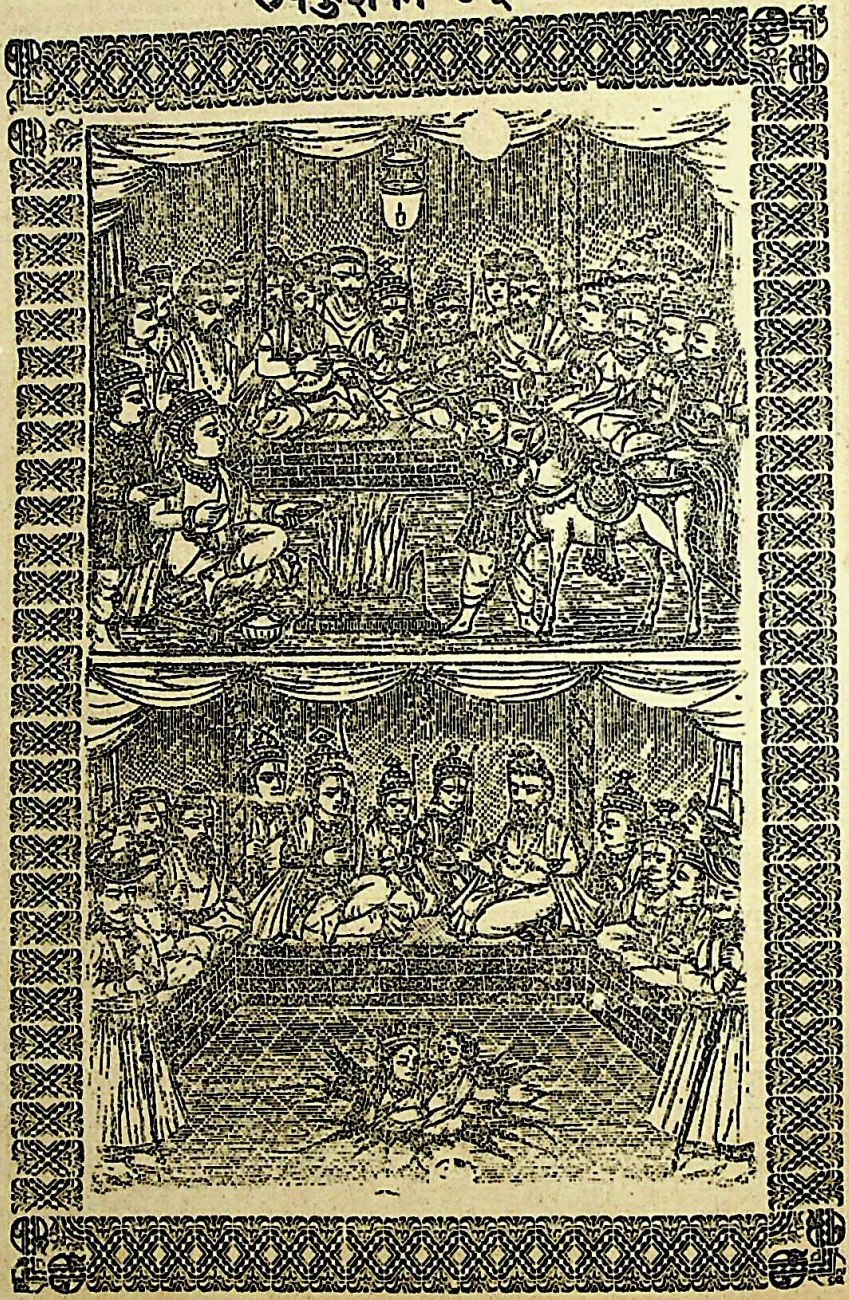

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ रामाश्वमेध-

लवकुशकाण्डप्रारंभः ॥

दोहा ।

सुनि भुशुंडके वचन मृदु, देख राम पद नेह ॥
बोले प्रेम सहित गिरा, गरुड विगत सन्देह ॥ १ ॥

छं० नमामीश घन ज्ञान रघुवंशदासं, सदानन्ददातासुविद्याप्रकाशं
विशद शैलनीलं कृपालुंनिवासं, पादाब्जवैसेवितंपापनाशं ॥
गतंमोहमारादिशूलंविशालं, हरततापसंताप भवशोकसालं ॥
नमोकाकपादंसुबुद्धिंसुशीलं, सदाभक्तवात्सल्यवासाद्रिनीलं ॥
प्रसन्नाननंनीलवदनंसुश्यामं, नमोपाहिशरणंसुरामाभिरामं ॥
भाष्योउमानाथयशनाथनामं, देख्योकृपासिंधुकोरमाधामं ॥
इक्षावपुषकाककल्याणकारी, जिन्हैंएकआशाअयोध्याविहारी ॥
भागींसकलवासनात्रासभारं, दयानाथकीन्होअविद्याप्रहारं ॥
सगुणब्रह्मलीलाधराभारनाशं, सुनोरामअवतारमोहंविनाशं ॥
जान्योदनुजनाशनंविश्ववासं, चिदामोहसंदोहभक्तिर्विलासं ॥
अचलज्ञानगोतीतमंत्रंविशालं, पायोकृपानाथनिजभाग्यभालं ॥
विगतषष्टरोगंअयोगंदयालुं, नमोपाहिशरणंनमामीकृपालुं ॥ १ ॥

दोहा—सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुने सकल गुण गण प्रभुकेरे * पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद वायस कुलनाथा * हृदय बसहिं अबप्रभुगुणगाथा ॥
मनसन्तोष कतहुँ अघ नाहीं * यथा उदधि सरिता अब जाहीं ॥
पशु पक्षी जड जंगम जाती * चर अरु अचर बनै किहि भांती ॥
सकल अवधवासी सुखधामा * लिये संग सादर श्री रामा ॥
तजितनु अवध गये प्रभुदेहा * इहि सुनिनाथ परम सन्देहा ॥
अब प्रभु मोहिं सब कहौ बुझाई* जानि पिता मैं कीन्ह ढिठाई ॥
इह इतिहास पुनीत कृपाला * जिमिमखकीन्ह राम महिपाला ॥

दोहा—असकहि गदगदवचनमृदु, पुलकावली शरीर ॥
सुनि सप्रेम हर्षे विहँग, वायसमति अतिधीर ॥ ३ ॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया * कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया ॥
राम कृपा तुम्हरे मन माहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
अति प्रियवचन रसज्ञ तुम्हारे * लागत नाथ मोहिं अति प्यारे ॥
अब प्रभुकथा विशद विस्तारी * सकल सुनावहु मम हितकारी ॥
तव मन प्रीति देखि खगराया * मिटे अमंगल कोटिहु माया ॥
सुनि अब राम रहस्य अनूपा * चरित पुनीत अवधसुर भूपा ॥
अज अद्वैत अमल अविनाशी *साहित सकल कलिमलकी फांसी॥
नौ सहस्र नौसै कम वासी * कृत चरित्र रह पुर जगदासी ॥

दोहा—विधिवर वचन सँभारि उर, राजत करुणाऐन ॥
युगल जोरि शोभा निरखि, लजित कोटिशतमैन ॥ ४ ॥

अनुजसचिव प्रभु प्रजा बुलाये * गुरु गृह सादर सुनि सब आये॥
मकर मास रवि पर्व सुहावा * विदा माँगि प्रभु पद शिरनावा ॥
काशी क्षेत्र धर्म जग जाना * चले सकल सजि बाहन नाना ॥
चतुरंगिनी अनी सब साथा * इहि विधि चले राम रघुनाथा ॥
बीच वासकर शिव पुर आये * सादर पुरिहिं शीश सब नाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आये सुरसरि कीन्ह प्रणामा * अभय अनंत पाय विश्रामा ॥
महिसुर दांडि यती संन्यासी * पूजे कृपासिंधु सुखरासी ॥
दियेदान बहु वरणि नजाई * धनद कुबेर सुरेश लजाई ॥

दोहा—रहेउ प्रभू इमि विपुलदिन, सुखीकिये मुनिवृन्द ॥
आये पुनि निजनगरमहँ, रविकुल कैरवचन्द ॥ ५ ॥

प्रतिदिन अवध अनंत उछाहू * दानदेहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
झूंठ प्रपंच न दुखद न काहू * व्याप न कबहुँ सुना खगनाहू ॥
सुनहिं जहां तहँ वेद पुराना * दूसर धर्म नकाहू जाना ॥
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना * अमित अनंत सकल पुर जाना ॥
शत संवत परिमाण हमारा * रहेउ शोच वश राम उदारा ॥
अश्वमेध मख करौं सुहावा * गाइ तरहिं नर भव दुखदावा ॥
पुनि निज धामहिं तुरत सिधावों * विधिवर वचन विलंब नलावों ॥
प्रातजाय गुरुभवन सप्रीती * कहौं करहु सब सुन्दर रीती ॥

दोहा—अस विचार उरराखिकर कृपासिंधु मतिधीर ॥
करतचरित नाना अमित, हरण शोक भवभीर ॥ ६ ॥

कहहुँ सुनहु रघुपति प्रभुताई * जो पुराण श्रुति नारदगाई ॥
राम राज महिमा अतिभारी * सो वर्णत मन कवि कदरारी ॥
मैं मतिमन्द कहौं किहि भाँती * सोह हंस किमि बगुला पाँती ॥
सुनिय न पुहुमि कतहुँ अघकाना * पढहिं चतुरनर वेद पुराना ॥
गावहिं प्रभुगुण गण भयहारी * निन्दहिं अमर लोक नरनारी ॥
आज्ञा मात पिता गुरु करहीं * तप मख दान छीन हरि भजहीं ॥
प्रजा अनंद राज प्रभुकेरे * मानहु शक्र कुबेर घनेरे ॥
राजत सब रनिवास अनंदा * सुखी चकोर लखत जिमिचंदा ॥

छंद—जिमि शरद चंद चकोर देखत मातु प्रभुमुख जोहहीं ॥
तिमि भरत लक्ष्मण शत्रुसूदन भेषलखि मनमोहहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नितजात प्रभु चौगान खेलन साथलै चतुरंगिनी ॥
जबगये भूतल भारटारन संग बहु मर्कट अनी ॥
चढि वाजि गज रथ नगर देखहिं श्रमित पुनि घर आवहीं॥
सारंग हेम विलोकि विनुपद त्राणहीं प्रभु धावहीं ॥
कुसुम कंटक अंग लागत मोरि मुख मुसकावनी ॥
सो शत्रु सन्मुखसही तीक्षण शक्ति असरिपुदाहनी ॥
निशि नींद नाशरु भूखसादर वर्ष चौदहसो रहे ॥
निजभक्त हेत समेत लक्ष्मण प्रौढ रिपुभारे सहे ॥ २ ॥

दोहा—रघुवर राज विराजअति, सकल अवनि अघभाग ॥
विचरहिं मुनि कानन विपुल, प्रीतिसहित अनुराग ॥ ७ ॥

मही सुहावनि कानन चारू * खगमृगइकसँग करहिं विहारू ॥
वैर न सुनिय रामके राजा * मिलिविचरहिं वन सकल समाजा॥
नाना ग्रन्थ स्मृति समुदाई * गाय न सकहिं राम प्रभुताई ॥
सादर कोटि कोटि अहिईशा * अगणित चतुरानन गवरीशा ॥
जहँ लगि जग कोविद कविराई * राम राज गुण सकहिं न गाई ॥
असित आदि कज्जलगिरिभूरी * पात्र पयोनिधि मसि भरि पूरी ॥
करहिं लेखनी सुरतरु डारी * सप्तद्वीप महि पत्र विचारी ॥
वाणी हरि हर विधि अरु शेषा * सहसकल्प शत लिखहिंविशेषा ॥

सोरठा—तदपि न पावहिंपार, रामराज कौतुक अमित ॥
सुन अब चरित अपार, जस खगपति आगे भयउ ॥ १॥

राजत राम सभासह भ्राता * तहँ आयो इक द्विजविलखाता ॥
कटुक वचन मुख कहत पुकारा * हंस वंश बूडचो संसारा ॥
रघु दिलीप अरु सगर नरेशा * अमित प्रभाव भये अवधेशा ॥
इह अयुक्त लखि त्यागेउ प्राना * अंतर्यामी प्रभु सब जाना ॥
नरलीला कर राम कृपाला * लगे विचार करन तेहिकाला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारण कवन मृतक सुत भयऊ * द्विजदुख देख विकल प्रभु भयऊ
भ्रम चित देख गगन भई वानी * शूद्रतपो सुनु सारँगपानी ॥
विंध्याचल गँभीर वन जाहां * द्विज सुत मरण हेतु नरनाहां ॥

छंद–इहिहेतु द्विजसुतमृतकसुनि रथसाजिप्रभुआतुरचले ॥
सोइ परमशैल विलोकिपावन मुदितमन सन्मुखभले ॥
शुचिरुचिर आश्रमवेदिका तहँदेखि मुनिमन भावनी ॥
बहुबाग शुभग तडाग गुंजत मंजु मधुकरसावनी ॥
पिक हंस मोर चकोर चातक कीर शोभा पावनी ॥
वनविविध कोल किरात सादर खोहकीन्ही तहँघनी ॥
तबक्रोध संयुत विशिष छांडेउ माथलै तब शरगयो ॥
वरभक्ति आरतजान तेहि दियो आप तीरथ व्रतकियो॥ ३॥

दोहा–द्विजवर बालक मृतकसो, उठि बैठ्यो हरषाय ॥
आयेपुर रघुपतिभगति, भयभंजन सुखदाय ॥ ८ ॥

उठ्यो समय तिहिं श्वान पुकारी* पाहि पाहि प्रणतारतिहारी ॥
विनु अघनाथ कृपालु खरारी * हत्यो मोहिं द्विज अति बलभारी॥
सुनिके श्वान वचन तबकाना * तिहि पर दूत पठेउ भगवाना ॥
आन्यो विप्र बोलि तेहि काला * कहे वचन तव दीनदयाला ॥
हन्यो श्वान सो किहि अपराधा * सुन सर्वज्ञ नकछु कृतवाधा ॥
क्रोधविवसप्रभु विन परिचारा * नाथ प्रबल मैं इहिको मारा ॥
कहौ दण्ड द्विज सकल समाजा * विप्र अदंड देव रघुराजा ॥
उचित दंड तस देहु बताई * कहौ श्वान जस तुम्हैं सुहाई ॥

दोहा–कीजिय यह माठापती, ममभावन सुख ऐन ॥
तुरत मँगायो पीतपट, गजकुंडल प्रभु दैन ॥ ९ ॥

पूजिचरण तब विप्र पठायो * दुंदुभि बाजत मठसो आयो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहैं परस्पर सब नर नारी * देख्यो श्वान दंड अतिभारी ॥
कीन्ह सकल प्रभु सोई दीना * जो कछु श्वान कही सो कीन्हा ॥
तासु अनंद देख नरनारी * कहौ दंड फल कवन खरारी ॥
पूछहु श्वान कही सो बाता * पूरब सब प्रसंग सुखदाता ॥
काशी विप्रवंश मैं भयऊ * शिवसेवा सादर चितदयऊ ॥
हिमऋतु होमहि कीन्हसप्रीती * घृतनखरह्यो नाथजिमि भीती ॥

दोहा—तातोदन भोजन करत, खायगयो सो भाग ॥
विविध योनि भ्रमतौ फिरचो, मिट्यो न सो अनुराग॥१०॥

राजसभहि शिरनाय बहोरी * चला श्वान मनत्रास नथोरी ॥
उठि मध्याह्न कीन्ह रघुनंदन * पूजि पुरारि भक्त उर चंदन ॥
भोजन शयन जगतपति कीन्ही * पुनिसबही कहँ आयसुदीन्ही ॥
रह्योदिवस जब घटिका चारी * जुरा सभा तब आय खरारी ॥
सुनि पुराण प्रभु अनुज समेता * संध्याभई दान शुभदेता ॥
भवनचले प्रभु आयसु पाई * सबही संध्या कीन्ह सुहाई ॥
दूत अवध निशि वासर धावहिं * संध्या कहँ सब खबर सुनावहिं॥
पृथक् पृथक् सुनि चरवर वानी * बोल न एक सो सुनहु भवानी ॥

छंद—कछु कह्यो नहिं तेहि पूछि सादर वचन वेगि न आवही॥
इक रजक पत्निहिं कहत डाटत व्यंग्य वचन सुनावही ॥
सुनिवचन कृपानिधान चरके मध्य उर राखतभये ॥
निशि स्वप्न देखत जगतपति उठिजागिदारुणदुखछये॥४॥

दोहा— बीती अवधिप्रमाणयुग, कीन्ह विचार कृपाल ॥
इक सहस्रपितु राजशुचि, करहुँ सत्यइहिकाल ॥ ११ ॥

त्यागहुँ जनकसुता वनमाहीं * राखहुँ श्रुति पथ धर्म नजाहीं ॥
देमन ठीक सीयपहँ आये * सादर बोले वचन सुहाये ॥
निज छाया धरि अत्रविनीता * रहहुजाय निजधाम पुनीता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभुपद वंदि गई नभसोई * जीव चराचर लखी नकोई ॥
तिहिसनप्रभु असकहा बुझाई * मनभावत मांगहु सुखदाई ॥
नाथ साथ मुनिधाम विहाई * आयउँ तुम गृहमन सकुचाई ॥
मुनितियभूषण वसन सुहाये * पहिराऊँ प्रभु जो मनभाये ॥
हँसिकह कृपानिकेत सकारे * पूजेंमन अभिलाष तुम्हारे ॥

दोहा—होतप्रात जब जगतपति, जागे रमानिवास ॥
याचक जन गावत मुदित, शोभित कंज प्रकाश ॥ १२ ॥

भरत लषण रिपुदमन समेता * आये जहँ प्रभु कृपानिकेता ॥
कीन्हप्रणाम माथ महिलाई * बोलेनहिं कछु श्रीरघुराई ॥
वदन विलोकि सशंकितअंगा * श्रीहत देख वपुषकर रंगा ॥
थर थर कंपित तीनो भाई * जानिनजाय चरित रघुराई ॥
ऐंचिश्वासतकि कछु मनजानी * बोले गूढ मनोहर वानी ॥
सुनिलघुभ्रात कहेउ रघुनाथा * ले वन जाहु जानकिहि साथा ॥
सूखि सहमि सुनि वचन कराला * जरेउगात उपजी उरज्वाला ॥
हँसत कि सत्य कहत रघुराई * असमंजस मन दुख अधिकाई ॥

दोहा—भरतादिक व्याकुल अनुज, मुख आवत नहिंवैन ॥
जोरि युगलकर शत्रुहन, कहत नीर भरिनैन ॥ १३ ॥

सुनि प्रभु वचन हृदय बिलगाना * जगत जननि सिय सब जगजाना ॥
जगत पिता प्रभु सब उरवासी * जड चेतन घन आनँदराशी ॥
कारण कवन जानकी त्यागी * मन क्रम वचन चरण अनुरागी ॥
सुनि सर्वज्ञ सगर्व सुज्ञानी * रिस परिहास कि सत्य सुवानी ॥
पंकजनैन नीर भरि आये * कहि प्रियवचन अनुज समुझाये ॥
आयसु मोर टरहि जोताता * रहै न प्राण तात ममगाता ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना * तुम कहँ तात सदा कल्याना ॥
यह मम वचन पालु लघुभाई * प्रात जानकिहि जाहुलिवाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरठा—सुनि प्रभुवचन कठोर, भरत कहेउ युग जोरिकर ॥
नाथ हमहि मतिथोर, सुनु विनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २ ॥

हंस वंश जगमें विख्याता * दशरथ पिता कौशलामाता ॥
त्रिभुवन पति प्रभु सब जगजाना * गावहिं यश चहुँ वेद पुराना ॥
सत्य शक्ति तव प्रकट सुहाई * वरणि न सकहि वेद अहिराई ॥
शोभा खानि जगतकी माता * रहित अमंगल मंगलदाता ॥
छाया जेहि त्रिय पतिव्रत धरहीं * तुमहि विहाय क्षणहुँ किमि भरहीं ॥
जल विनु मीन कि जिये कृपाला * कृषी कि रह बिनुवारिदमाला ॥
अस तुम बिनु क्षण जियहि कि सीता * ज्ञानवन्ति अति निपुण विनीता ॥
सुनि करुणामय वचन सप्रीती * कही भरत तुम सुन्दर नीती ॥

दोहा—तदपि नृपहि चहिये सदा, राजनीति धनधर्म ॥
वसुधापालहि सोचतजि, वचन प्रीति शुचिकर्म ॥ १४ ॥

दूतन कहा सो अपयश कहेऊ * कुल कलंक यह दारुण भयऊ ॥
तरणि वंश नृप भये अनेका * एक एक अति निपुण विवेका ॥
स्वायंभुवमनु रघु नृप जानो * सगर भगीरथ विरद बखानो ॥
दशरथ विदित दीख तुम नीके * वचन न टारेउ लालचजीके ॥
तहि शिर रंचक सुनत कलंकू * रहै जीवतो अधम अशंकू ॥
सुन सर्वज्ञ सकल अघहारी * रहित कलंक विदेहकुमारी ॥
विधि हरि हर दिवि देखि सुहाई * पावक अवटि अनठ सबभाई ॥
जो सुर नर मुनि स्वप्नेहुँ माहीं * यह चरित्र जग लखि हरषाहीं ॥

दोहा—तेहठिरौरवनरक महँ, कोटिकल्प करिवास ॥
रहहिंकल्पशत रोगवश, भोगहिं विगत विलास ॥ १५ ॥

रिस रुख देखि नयन करि तीछे * आये भरत लषणके पीछे ॥
सुन सौमित्र छांडि हठ सोचू * जगभल कहै कहौ किन पोचू ॥
तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहो * मोहिविनसोच जन्मभरिभरिहो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जनकसुता रथ तुरत चढाई * गंगसमीप फिरहु पहुँचाई ॥
अति गह्वर वन जहाँ न कोई * छांडहु तात जतन कर सोई ॥
फेरहु तुम मति वचन उदासा * मरण ठानकर चलेउनिरासा ॥
शुभग विमान सीय वैठारी * पट भूषण बहु धरे सँभारी ॥
सुधा सरस पकवान बनावा * जो कछु वांछित सो फल पावा॥
अति अनंद मन चली जानकी * अतिशय प्रियकरुणानिधानकी ॥

दोहा—विवरण लषण निहारिकर, सोच विकलभई वाल ॥
हृदय विचार न काहि सकति, मणि विनु व्याकुल व्याल १६

उतरि देवसरि यान सुहावा * अति उद्यान देखि भयपावा ॥
कारण अपर जानि भयभीता * बोली वचन मनोहर सीता ॥
दीखत नहीं मुनिनके धामा * जातकहांप्रिय अनुज सकामा ॥
खग मृग केहरि विषधर व्याला * कीर केहरि वृक वाघ कराला ॥
कोउमुनि मिलत न आवत जाता * निकसत प्राण तात ममगाता ॥
सीय विकल लखि मनहिं अहीशा* कीन्ह कहा विधि हरि गौरीशा ॥
मूर्च्छित रथसे हो विकराला * भूमिगिरा तब आप सँभाला ॥
सिय विलोकि मनधीरजआना * त्रिया विना जल जातहै प्राना ॥

दोहा—धरणिसुता व्याकुल अमित, प्राण कंठगत जान ॥
तजाचहत तनु शेष तब, धृकधृक जीवनमान ॥ १७ ॥

प्राण बिना लक्ष्मण कहँ देषा * गगन गिरा तब भई विशेषा ॥
सुनु सौमित्र जहु सिय त्यागी * जनकपुत्रिका जियहि सुभागी ॥
ब्रह्मगिरा सुनि धीरज कीन्हा * हाथ जोरि परिदक्षिण दीन्हा ॥
लेरथ चरणवंदि सिय केरे * चले अवधपुर त्रास घनेरे ॥
जागी सिया सकल दिशि देषा * नहिंरथ अश्व नहीं कहिं शेषा ॥
रहे प्रथम दुख सहिहैं प्राना * पुनि सोइ चाहत करन पयाना ॥
करुणा करत विपिन अतिभारी * वाल्मीकि आये वनचारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुत्री वाल्मीकि कह ज्ञानी * वन आवन निज चरित वखानी॥
दोहा–मुनि पुत्री मैं जनककी, राम प्रिया जगजान ॥
त्यागन हेतु न जानु कछु, विधि गति अति बलवान ॥ १८॥
देवर लषण गये पहुँचाई * तब सब हेतु लख्यों मुनिराई ॥
सुनु सीता मिथिलापति मोरा * परम शिष्य विधिवत पितुतोरा ॥
चिंता अब जनि करसि कुमारी * मिलिहहिंतोहिं शेष हितकारी ॥
सादर पर्णकुटी सिय आनी * पुनि करि मज्जन सबगति जानी ॥
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा * सिय तब सुरसरि मज्जन कीन्हा॥
सुमिरि राम मूरति उरराखी * दीने फल सुंदर शुभ भाखी ॥
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा * कहैं सुनैं सिय संग विहंगा ॥
ज्ञान अनेक प्रकार दृढावा * लक्ष्मण अवध सुनो जब आवा ॥
छंद–आये सुलक्ष्मण त्यागि सीतहि विकलनिज आश्रमगये ॥
बहु भाँति रोवत मातु सन सिय त्याग दारुण दुख दये ॥
सुनि सहमि मूर्छित मातुवाणी विकल फणिजिमिमणिगये ॥
इहिभांति व्याकुल विकलपति कौशलहि अतिही दुखभये ॥
रोदति वदति बहु भाँति को कह विपति यह दारुणअये ॥
सुनि सौर रावर सहित लक्ष्मण राम निज मंदिरगये ॥
निज ज्ञानदे समझाय तेहि तब खुले पट अंतर नये ॥
अब कृपाकरि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ॥
जेहि खोज मुनि योगी तपी गति लेहु अविचल पावनी ॥
वरचह्यो सोइ सोइ दियो मातुहि कारुणीक दिनकरतबै ॥
मन सोधकर निज योग पावक तजा तनु सादर सबै ॥५॥
दोहा–योगअग्नितनुभस्मकरि, सकल गई पतिधाम ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, शोकभवन श्रीराम ॥ १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधिवत किये कर्म श्रुति गाये * प्रभुसन गुरु सादर करवाये ॥
दीनदान पुनि कोटि प्रकारा * को अस कवि जग वरणै पारा ॥
धेनु वसन मणि हाटक हीरा * हय गज गो मुक्तावर चीरा ॥
पुनि परलोक हेतु धन धामा * दियेकिये परिपूरण कामा ॥
रही न चाह याचकनकेरी * रंक धनद पदवी जनु हेरी ॥
वेदपढ़हिं द्विजदेहिं अशीशा * चिरजीवहु कोशलपुर ईशा ॥
राम दानदे सब विधि तोषे * भये निवर्त्त काजकरि चोखे ॥
गृह द्विज याचक सकल सिधाये * अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
विप्रदंड तापस वध कीन्हा * सुरपुरवास मातु कहँ दीन्हा ॥

दोहा—करहुँ अजयमखयज्ञपुनि, अश्वमेध जगजान ॥
कलुष सकलसंतापहर, अंगदादि हनुमान ॥ २० ॥

एक वार गुरु गृह अवधेशा * गये संगानुज सचिव खगेशा ॥
कीन्ह दंडवत पद शिरनाई * सादर मिले हरषि मुनि राई ॥
पूछी कुशल देखि मृदु गाता * कुशल देखि तव पद जलजाता ॥
गुरु पद वंदि द्विजन शिरनाई * बैठे अमित आशिषा पाई ॥
कहत पुराण नवल इतिहासा * सुनत कृपानिधि परम हुलासा ॥
भाइन अमित सुहित सुख दीन्हा * मुनि तब लखेउ प्रेम कर चीन्हा ॥
दोउ करजोरि सच्चिदानंदा * बोले वचन भानुकुल चंदा ॥
नाथ चरण तव सकल प्रसादा * भैजगविदित मोर मर्यादा ॥

दोहा—समय समझि करुणायतन, सादरवचनबहोरि ॥
प्रभुअंतर्यामी करहु, सफल कामना मोरि ॥ २१ ॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका * कीने अधिक एकते एका ॥
नाथ सकल जन पुर मन कहहीं * देखन अश्वमेध अब चहहीं ॥
जस कछु आयसुदीजियनाथा * सोमैं करब नाय पद माथा ॥
तनु पुलके सुनि वचन सप्रीती * कसन कहौ तुम सुंदर नीती ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजिहि मन अभिलाषतुम्हारा * उठव भरत अब करवविचारा ॥
सुनि मुनि बचन भरत रिपुदमनू * हर्षि सचिव लक्ष्मण गृह गमनू ॥
विविध प्रकार चरण करिसेवा * चले भरत सँग सब महिदेवा ॥
दोहा—सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय ॥
हाटवाट पुर द्वार गृह, रचहु वितान बनाय ॥ २२ ॥
चले सकल सेवक सुनिवानी * सुनत वचन हरषीं सब रानी ॥
रचेवितान अनेकन भारी * देखि अवध विधि बिलपत भारी ॥
लगे सँवारन रथ गज वाजी * सुनि सुर मगन दुन्दुभी बाजी ॥
तुरत सचिव चर विपुल बुलाये * कहि जयजीव शीश तिन नाये ॥
जाहु मुनिन्हके आश्रमताहीं * सादर निवत देहु सब पाहीं ॥
वहां राम पूँछेउ गुरु देवा * आज्ञा देउ करौं सोइ सेवा ॥
प्रभु मनकी गति मुनि वर जानी * बोले अति सनेह वर बानी ॥
पठवहु दूत जनकपुर आजू * आवहिं जनक समेत समाजू ॥
दोहा—सुनहु राम रघुवंशमणि, न्योति सकलपुरजाति ॥
वरुण कुबेरहि इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सबज्ञाति ॥ २३ ॥
गुरु समेत प्रभु अवधहि आये * देखि बनाव अमित सुख पाये ॥
मिथिलापुर चर तुरत पठाये * देश देशके नृपति बुलाये ॥
जाम्बवन्त सुग्रीव विभीषण * अरु नल नील द्विविद कुलभूषण॥
आये सब जहँ राम कृपाला * वरुण कुबेर इन्द्र यम काला ॥
चढि विमान सुर नारि सिहाँहीं * करहिं गान कलकंठ लजाहीं ॥
आये मुनिवर यूथ घनेरे * देहिं कृपानिधि सुंदर डेरे ॥
शशि हरि हर रवि विधि सनकादी * आये सुर जे परम अनादी ॥
विश्वामित्र संग मुनि झारी * सहससात ऋषि इच्छाचारी ॥
दोहा—आये ऋषिभृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ॥
नानायूथपमुनि सकल, देवसमस्त पुलस्त्य ॥ २४ ॥
मख स्थल अति देव सुहाये * नाना भाँति देखि सुखपाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिथिलापुर जे दूत पठाये * देखि नगरवासिन मन भाये ॥
द्वारपाल सब खबरि जनाई * अवधनगर सन पाती आई ॥
सुनि विदेह सहसा उठि धाये * तन मन पुलकि नयन जल छाये ॥
भयो भूप मन आनँदजेता * कहिन सकैं शारद अहि तेता ॥
शिथिल आपु उठि द्वारे आये * देखि दूत अतिशय सुख छाये ॥
कहहु कुशल रघुपति सबभाई * गद्गद कंठ नकछु कहिजाई ॥

दोहा—भूपप्रेम तिहि समयजस, तस नकहहिं मतिधीर ॥
तुलसी भयउ उछाह वश, जय जय शब्द गँभीर ॥२५ ॥

बाँचत प्रीति न हृदय समानी * चरवरबोलि कही हँसी वानी ॥
नगर ग्राम पुर मंगल साजे * अमित प्रकार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि नृपपाती दीन्ही * उठि करजोरि विनय करलीन्ही ॥
पढीसचिव अति प्रेमानंदा * सुमिरि रामकोशलपुरचंदा ॥
घर घर खबरि व्यापि क्षण माहीं * मंगल कलश साजि सबपाहीं ॥
भयो अनंद नजाय बखाना * कीन्हे विविध भांति नृपदाना ॥
धरितनदेव अमित नभवासी * आये भूपनगर सुखराशी ॥
कहहिं वचन नृपके हितकारी * चलो अवध सबकाज विसारी ॥

दोहा—कहि कहि सुर सादर चले, वाहनरचेवनाय ॥
जोरि युगलकरमुकुटमणि, स्तुतिकरहिंसुभाय ॥ २६ ॥

छंद—पदसुमिरिकरुणाकन्दरघुकुलचंद दशरथनायकं ॥
श्रीसहित अनुजसमेतसुस्थिर वसहुममउरलायकं ॥
अंभोज नयन विशालभाल कृपालुदशरथनंदनं ॥
शतकोटि मार उदारशोभा अतुलबल महिमंडनं ॥
त्रूणकटि शुभकर शरासन कपटमृगमद गंजनं ॥
वैदेहि अनुज समेत कृपानिकेत जन मन रंजनं ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ममहृदयवसहुनिवास करि करुणायतनकरुणामयं ॥
महिमानकोऊ जान सुन हरियान ज्ञानविशालयं ॥
सोइहेतु करि वृषकेतु प्रभु खर दूषणादि निकंदनं ॥
नरअंध पामर कामवश मन भजहि नहिंरघुनंदनं ॥
तवललितलीलाबसहि जेहि उर तासु उर धरणीधरं ॥
कहि सक न शारद शेष नारद जानकिमि जनवापुरे ॥
सोइ आनतुलसीदास निजउर शरण अबकाकीगहै ॥
सुखपायमन वच काय नहिं गति दूसरी सपनेहुलहै ॥
सबकुशल पूंछि महीपसादर विहँसि आनँदउरछयो॥
मनभाय पाय बनाय विधिवत् दानबहु विप्रनदयो॥
गज वाजि भूषण भूमि वस्तु अनेक विधि अबकोगनै ॥
इकवारले नृपद्वारदीन्ही कहहु कवि कैसे भनै ॥ ६॥

दोहा–पूजे विविध प्रकारनृप, सादर दूत हँकारि ॥
गुरुगृहगवनेउ मुकुटमणि पाय पदारथचारि ॥ २७ ॥

सकल कथा महिपाल सुनाई * शतानंद आनंद अघाई ॥
चलहु नृपति मख देखहिंजाई * साजहु जाय सकल कटकाई ॥
करि विनती नृपमंदिर आई * बाँचि पत्रिका सकल सुनाई ॥
आनँदयुत सब करी वधाई * दियेदान महिदेव बुलाई ॥
याचक सकल अयाचक कीन्हे * सादर बोलि युगल चरलीन्हे ॥
विलग विलग सब पूछहिंवामा * सुने रामकें पूरणकामा ॥

छंद–सबकामपूरण रामके सुनि विपुल वाजन बाजहीं ॥
पुर द्वार घर रखवार राखे सैन्यभट सब साजहीं ॥
दशसहस सिंधुर षष्टिशतरथ वाजिवर्णत नहिंवनै ॥
जगमगतजीन जडावरविमणि देखि कबि कैसे भनै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चढिशूर प्रबल प्रबीनजे असि चलत सब सादर भये ॥
सुखपाल परम विशाल युगचढिगुरुहिले आदरनये ॥
महिडोल धसकत कमठ अहि दलदेखि अमित विदेहको ॥
रथ यूथ पदचर अमित वर्णहिं जगत असकवि मूढको॥७॥

दोहा—चलेउरावमुनिगण सहित, विपुल निसानबजाय ॥
प्रातितीसरे प्रहर सोइ, अवधनगर नियराय ॥ २८ ॥

पुरवाहिर सरयू शुचि तीरा * वासदीन्ह हर्षित रघुबीरा ॥
सौंपि अनुज कहँ राज समाजू * आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥
मिल पुनि नृपति निकट बैठारे * गदगद गिरा सुवचन उचारे ॥
बदन मयंक निरखि सबगाता * आनँद मगन न हृदय समाता ॥
प्रभु विनीति सबही सेवकाई * सचिव भरत पुनि लिये बुलाई ॥
नृप शय्या सब भरत सँभारी * सुनि खगपति जस कीन्ह खरारी
आय गुरुहिं सादर शिरनाई * मन भावत आशिष तिनपाई ॥
पुनि प्रभु सकल देव गुरु वंदे * अभिमत आशिषपाइ अनंदे ॥

दोहा—दश सहस्र मुनिवर सहित, आये प्रभु मख धाम ॥
बोले वचन विनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम ॥ २९ ॥

धर्म सकल जेहि वेद वखाने * संत पुराण लोक सब जाने ॥
विनतिय नहिं फल होय खरारी * अब चहिये मिथिलेशकुमारी ॥
सुनि मुनिवचन मौन गहि रहेऊ * सत्य असत्य न एकौ कहेऊ ॥
ममप्रण विरद जान मुनिराया * रहै सुकृत जेहि करहु सोदाया॥
द्वै गुरु मिल नारद सनकादी * बचन कहेउ सुन परमअनादी ॥
कनक जटित मणि सुंदर वाला * रचि सिय रूप सुशील विशाला॥
अंग अंग सब भूषण साजे * तासु रूपलखि रति पति लाजे ॥
सहसालखि नसकहिं नरनारी * सिय देखेउ सब अचरज भारी ॥

दोहा—तेहि अवसर शोभा अमित, कोकवि बरणे पार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जगदातार कृपालु प्रभु, कीन्हे चरित अपार ॥ ३० ॥
जटित कनक सुंदर मृगछाला * तिहि आसन आसीन कृपाला ॥
सियासहितलखि सुर मुसुकांहीं * कीन्ह प्रणाम सबन हरषाहीं ॥
भीर अपार देखि गुरुज्ञानी * ऋधि सिधि बोलिसकलसनमानी॥
कहा जाय जो उचित सो करहू * जो जेहिचहिय सकल अनुसरहू॥
सुनिरजाय रघुपति रुखपाई * रचे कोट गृह विधिहि सिहाई ॥
सुरसुरभी सुरतरु सुखखानी * शारद शेष न सकहिं बखानी ॥
पुर गृह बाहर गली अटारी * भरि सुगंध सब रची सँभारी ॥
रहे तहां दिशिपाल अनेका * जे परमारथ निपुण विवेका ॥
छंद–जेनिपुण परमविवेक पावन भरतलै राखे तही ॥
निजभाग्य प्रबल सराह निदराहिं धनदकी पदवीसही ॥
आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे विधिनेरचे ॥
सन्मानि सकल सनेह सादर रामसनको नाहिबचे ॥ ८ ॥
दोहा–युगसहस्र जे विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन ॥
जानहि श्रुति करमत सकल, राहि मख संग अधीन ॥ ३१ ॥
मकर मास ऋतु शिशिर सुहाये * मख मंडप बैठे रघुराई ॥
तब बोले गुरुवचन सुहाये * आनहु वाजि जो वेद बताये ॥
लक्ष्मण सुनि गुरु वचन अनंदे * बार बार पद पंकज वंदे ॥
हयशाला सादर चलि आये * विविध विभूषण तेहि पहिराये ॥
श्वेत वर्ण सुंदर श्रुतिकारे * रविहय निदरिँ मनोज सँवारे ॥
जीन जराव न जाय वखाना * चढि रविरथ आवत जगजाना ॥
माथे मोर पक्ष मणि लागे * सोइ नभ नखत देव अनुरागे ॥
सेवक चारु पाट मय डोरी * दामिनिदमकि निपट अतिथोरी॥
दोहा–षटसहस्र दशवीरबर, रामानुजरणधीर ॥
मध्यतांहि आनेहु तहां, जहां राम रघुवीर ॥ ३२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजहु हय प्रभु जय जगहेतू * जस कछु कहा गाधिकुलकेतू ॥
दीन्ह विविध विधि दान अनेका* लिखो पत्र सोइ करि अभिषेका॥
एक वीर कौशलपुर माहीं * अरिदल दलन सुरेश सकाहीं ॥
जिह बलहोइ गह्यो सोइ बाजी * देहु दंड वन जाहु कि भाजी ॥
लिख बाँधो हय शीश सँभारी * तहँ सुन वच आये मुनिचारी ॥
भार्गव आदि सकल मुनिसंगा * रहे जहं रघुकुल कमल पतंगा ॥
कथा सकल लवणासुर केरी * मुनिन त्रास जिन दीन्ह घनेरी ॥
सुनि ऋषि वचन नयन जल छाये* विहँसिराम निज त्राण मँगाये ॥

दोहा—दीन्हे रिपुसूदनहि सोइ, बाण अमोघ कराल ॥
मंत्रमोर पढ ताहि हति, जीतहु सकल भुआल ॥ ३३ ॥

बहुरि विभीषण राम बुलाये * सादर आय माथ तिननाये ॥
लवणासुरके चरित अपारा * पूछेउ दिनमणि वंश उदारा ॥
करयुग जोरि निशाचर नाहा * सत्य कहौं अब सुन अवगाहा ॥
भगनिविमात्र नाथ सोइ मोरी * कुंभनिशा तेहि नाम बहोरी ॥
मधुदानव कहँ रावण दीनी * बहु विनतीकर विनयवसीनी ॥
तनय तासु लवणासुरभयऊ * शिवसेवा सादर मन दयऊ ॥
अगम तासु तप शंकर जाना * दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना ॥
जहिकर रहे अस्त्रकर भारी * चौदह भुवन जीतिसबझारी ॥

दोहा--तेहि बल प्रभुसोनहि गनहि, अमर दनुज नर नाग ॥
जीति सकल वंश कीन्ह सोइ, हठपथ सबके लाग ॥ ३४ ॥

तासु चरित सुनि मन मुसकाने* रिपुहि हतहु बल दे सनमाने ॥
सैन्य संग चतुरंग बनाई * रहे साथ दोउ तनय सुहाई ॥
सुनि प्रभु वचन निशान अपारा* तीन सहस्र हने इकवारा ॥
दलकै वसुधा कुंजर गाजै* दश सहस्र रथ रवि रथ लाजै ॥
पूरोशंख चलो दल साजी * अमित अकाश दुंदुभी बाजी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरवाहिर सब कीन्ह सँभारी * तनय युगल लखि परम सुखारी ॥
द्वादश निशि बीते मगमाही * पहुँचे जाय यमुन तट पाहीं ॥
दिन प्रति दान देहिं बहु भांती * प्रभु पद पूजें दिन औ राती ॥
दोहा–रवितनया पदवंदिकै, सादर पूजिपुरारि ॥
चलेहु शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहि राम खरारि ॥ ३५ ॥
चमू चपल अति सुभट जुझारा * घेऱ्यो नगर वीर वरियारा ॥
विपुल निसान हने तिहिकाला * सुनि निश्चरपति गर्व विसाला ॥
षष्ट सहस दशशूर जुझारा * लवणासुर संग अनी अपारा ॥
सुभट प्रचारत गज रथ आवा * देख कटक निज अति सुखपावा
मारहु खावहु नृप धरि वांधहु * जेहिजय होय जतन सोइ साधहु॥
असकहि सन्मुख सैन्य चलाई * कज्जल गिरि जनु आँधी आई ॥
मारू शब्द सुनत भट गाजहिं * विपुल वाजने दुहुँ दिशि बाजहिं ॥
निज प्रभु कहि जय जोरिजानी * हरषि भिरे भट मन हठठानी ॥
छंद–हठठानि प्रबल प्रवीनजे असिभिरे अतिरिपुप्रबलसे ॥
इक मल्ल युद्ध सराहि रोकहि एक एकन कर खसे ॥
शर शक्ति तोमर शूल परशु कृपाण शूरचलावहीं ॥
कर चरण शिर हत तीर धाराहिं भूमिजान न पावहीं ॥
भटगिरहिंपुनिउठिभिरहिं धरुकैकरहिंमायाअतिघनी ॥
प्रभुतनय सुंदरवीर बाँके हनहिं रिपुनिश्चरअनी ॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुभट एकहि इकहने ॥
सजिकोटि रथ सुर आयनभपथ सुमन वरषाकरिभने ॥ ९ ॥
दोहा–विचलत अनी विलोकि निज, लवणासुरवरबंड ॥
संग तनय मातंगभट, दूसर केतु अखंड ॥ ३६ ॥
प्रभु सुत ज्येष्ठ सुबाहु विशाला * भिरामतंग हृदय जनुकाला ॥
जूपकेतु अरु केतु प्रचारी * लडहिं सुखेन नमानहिं हारी ॥
लवणापुर रिपु अतिबल भारी * कौतुक करहिं प्रचारि प्रचारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनी समूह जानि निज जोरी * अस्त्र शस्त्र गहिभिरे वहोरी ॥
विषम युद्ध लखि देव सकाने * पूछेउ सुरगुरु कहि मुसकाने ॥
जनि हिय सोच अमरपति करहू * राम प्रताप सुमिरि उर धरहू ॥
जूपकेतु कर कोप अपारा * हनारिपुकेतु खंड महिडारा ॥
इहां सुवाहु मत्त गहिमारा * कर पद काटि अवनि परडारा ॥
छंद–महिडारि कर पद शीश आतुर तूण शर प्रविसतभये ॥
रविवंशके अवतंश दून्यो समर माहि राजत भये ॥
सुनिमरणयुगसुत विकल निशिचर भूमिपर घूर्मित गिरचो॥
पुनि जागि शूल सँभारि प्रभुके समर सन्मुख सो भिरचो ॥
दोउ प्रबलवीर प्रताप निशिचरसैन्य दुहुँदिशि मुरि चली ॥
शिर बाहु चरण उडात नभपथ योगिनी आनँद भली ॥
बहुरुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नर शिरमालिका ॥
आनंद ह्वै मन मुदित गावहिं गीत खेचर बालिका ॥
धुनि पढहिं शंख मृदंगकी सुनि शूर हर्ष बढावहीं ॥
गतिलेत निर्तत प्रेत त्रिय शिर माल हर्ष चढावहीं ॥
कहुँकरत पान प्रमाण नर कहँ भरी शोणित शाकिनी ॥
सब मेद मांस अहार कर मन मुदित बोलहिं डाकिनी॥१०॥
दोहा–मारे रघुवर वीर बहु, गिरे समर रणधीर ॥
क्षणइक निश्चर बध निरखि, अंतर हुइ बलवीर ॥ ३७ ॥
करि छल प्रगट सो विविध वरूथा* अस्त्र शस्त्र लै सब सुरयूथा ॥
धाये अज अरु शिव सनकादी * जेमुनि अपर कहे श्रुतिवादी ॥
शक्ति शूल असि चर्म सुहाई * गदा परशु धनु बाण बनाई ॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं * लरत न भट विस्मित होरहहीं ॥
निश्चर प्रबल भये रघुनाथा * केतिक धीर मलैं निजहाथा ॥
सैन्य विकल लखि नारद आये * समाचार सब कह समुझाये ॥
रिपुसूदन प्रभु विशिषसँभारी * जोर समर सुमिरे त्रिपुरारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिमि तम अचै तरणि गो सोई * सुमर अमर नहिं दीसै कोई ॥
दोहा–मंत्र प्रेरि चल कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभछाय ॥
मनहुँ बलाहक प्रबल बहु, मारुत देखि विलाय ॥ ३८ ॥
सुर समाज कितहूं नहिं देखा * चलेहु सुबाहु केतुजनुवेषा ॥
खलसम्हारु गहु शूल विचारी * असकहि गदा कोप उर मारी ॥
सहि नसका सोइ तेज अपारा * मूर्च्छित अवनिपरा विकरारा ॥
निजपति विकल देखि भटभारी * धाये बहु कर शस्त्र सँभारी ॥
कैटभ नाम वीर बलवाना * मूर्च्छित लवणासुर मनजाना ॥
तीन सहस्र लिये रणगाढे * आइ सुबाहु सामुहै ठाढे ॥
कटुक वचन कहि छांडेसिवाना * ताहि काटि प्रभु शीघ्र कृपाना ॥
तब खिसियान शूल ले धावा * जूपकेतुके सन्मुख आवा ॥
सोरठा–मारसि हृदय सँभारि, गिरेजपत करुणायतन ॥
मूर्च्छित बेर पुकारि, रामचंद्र दिनमणि तिलक ॥ ३ ॥
मूर्च्छित बंधु सुबाहु विलोकी * भैरिसअमित रहै नहिंरोकी ॥
कठिन बाणकर क्रोध अपारा * छांडेउ तीनि सहस इकवारा ॥
ताहि विकल करि अनुज समीपा * आतुर आये निज कुलदीपा ॥
लाग्यो शूल देख मन माहीं *परचो अवनि तल सुधि कछु नाहीं
खैंच शूल तनु बाहिर कीन्हा * राम नाम वर औषधि दीन्हा ॥
उठि शुचि अंग अनुजके संगा * लीन्ह विहँसि धनुबाण निखंगा॥
आय समर महि सुभट प्रचारे * बाणते विपुल देव अरि मारे ॥
मूर्च्छागत कैटभ बलवाना * ताहि चढाय उपाय विधाना ॥
दोहा–करउपाय रथराखि तेहि, पठय भवन रणधीर ॥
आय समर गर्जतभयो, संगमहा बलवीर ॥ ३९ ॥
जागा निशिचर देख लडाई * पठयसि कुमक संग निज भाई ॥
शूरवीर जेहि काल सकाई * हारेउ समर विबुध खगराई ॥
जानाकैटभ जाम्यक आवा * समरधीर नहिं चलहि चलावा ॥
नायउ माथ आनि करजोरी * तात समर रुचि पूजेउमोरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रावण रिपु लघु भ्राता जानू * तनय तासुबल रूपनिधानू ॥
कोटिन शूर समर हम मारे * बालक नृपति निरखि हिय हारे ॥
रिपुलखि सुनि कर हृदय कलापू * पावहिं मोह जानि जिय आपू ॥
रवितनया महि सैन्यहिडारूं * तनय समेत अनुजरिपु वारूं ॥
लैकर गदा अनी बिचलाई * घेर रहे निशिचर समुदाई ॥
भागौ रथ आनहु बलवाना * ताहिचढाय उपाय विधाना ॥
छंद–रिपु अनुज मारूं सैन यमुनहिडार नृपशिर नायऊ ॥
तजसोचसैन सँमारचलभट वेगि जो अरि पायऊ ॥
दोउमत्तगर्व विशाल निशिचर आयरण गर्जित भये ॥
इतजूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथलै आतुरगये ॥
भटभिरेनिजनिज जयति कह निज जान जोरीसमरकी ॥
शिरकटत खंडन चरण योगिनिखात बालक बालकी ॥
हठिगीधजंबुककाकशोणित पिवहिंअति सुखपावहीं ॥
बहुदानदिये मनाय मनमहँ विहँसि मंगल गावहीं॥ ११ ॥
दोहा–भिरेसमर सारोषअति, फिरे आकरे कूर ॥
लागे लोहे रुठरहे, समर धीर वरशूर ॥ ४० ॥
शूर सहाय होंय निज ठाढे * फिरे लजाय क्रोधकरगाढे ॥
भिरे प्रचार सुभट समुदाई * भयो युद्ध तेहिवरणि न जाई ॥
वरषहिं समर शूर शर कैसे * प्राविट समय जलद जल जैसे ॥
हय पगउठे धूरनभछाई * भयो प्रदोष सुनहु खगराई ॥
समर देख रिपु प्रबल प्रभाये * प्रभु समीप सादर सुत आये ॥
देख तनय बल विपुल विशाला * रिपुहन हर्ष मनुजसुरव्याला ॥
यातुधान बल बुद्धि गँवाई * निज पुर गये राज यश पाई ॥
निशि निशिचर सब बात विचारी * होत प्रात पुनि लाग गुहारी ॥
दोहा–साजि वाजि गज बाहनहिं, गहगहे हने निशान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥ ४१ ॥

शिवहिं सुमिर लै शूल विशाला * रिपु बलपर्यो मनहु यमकाला ॥
छिनकमाहिं मारे बहु योधा * चलो सकोप मनुज करिक्रोधा ॥
आवत शूल हन्यो प्रभु छाती * घुर्मित गिर्यो धरणि परघाती ॥
मूर्च्छित देखि खड्गलै धावा * निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा ॥
प्रबल गदा रथ सारथि भंजा * बिहँसिमहाबल रिपुदल गंजा ॥
रथ विहीन व्याकुल मन माहीं * मूर्च्छित पर्यो अवनि सुधि नाहीं॥
पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी * अस्त्र सँभारि क्रोध करि भारी ॥
उठे शत्रुहन मन अनुमाने * सादरसब हियते सनमाने ॥
विस्मित विकल देख सब जाने * राम बाण अति सादर आने ॥

दोहा–सुमिरि अवधपति चरणयुग, छांडे युगनाराच ॥
परयो अवनितनु भिन्नहोय, व्याकुल विकटपिशाच ॥ ४२ ॥

तासु मरण सुनि सब सुर यूथा * चढि विमान नभ सकल वरूथा॥
बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला * आज नाथ बीते सब शूला ॥
देहिं अशीश देव धुनि करहीं * जयति मंत्र कहि आशिष बरहीं॥
जात यानपति हीन विलोकी * कैटभ जाम्ब नहीं रिस रोकी ॥
करि हिलकार गर्जि अति घोरा * शिला एक धारी बहुजोरा ॥
शर शत शैल सुबाहु प्रचारी * काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
वदन पसारि ताहि तकधावा * देव सुवाहु प्रबल पहँ आवा ॥
खैंचि धनुष तब श्रवण प्रयंता * अति कराल शर छांडि तुरंता ॥
काटि शीश तिहिभूमि गिरावा * सुनासीर आतुर चलि आवा ॥
जोरि युगलकर अति अनुरागे * बोले वचन प्रेमरसपागे ॥
हमहि सहित सुर कीन्ह सनाथा * स्तुति योग नाहिं हमताता ॥
सुरपति सुर लखि प्रभु लघु भाई * कीन्ह प्रणाम माथ महिनाई ॥
स्तुति विनय शक्र तब कीन्ही * वार वार बहु आशिष दीन्ही ॥

दोहा–देवन सहित सुदेवगुरु, आये जहँ मख धाम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समाचार सादर सकल, कहे सबनक नाम ॥ ४३ ॥

तहँ युग नगर रचे अतिरूरे * राखे तनय युगल बलपूरे ॥
मथुरा नाम जगत यश जाना * दुसरि विश्व जो वेद वखाना ॥
जोग तनय बल बुद्धि विशाला * नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
राखेउ यमुनातट बल भूरी * विदित नगर पश्चिम दिशि दूरी ॥
जूपकेतु पुनि साथ रखावा * राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
सौंपि नगर बहु आशिष दीनी * नृपमणि गवन विजय कहँकीनी ॥
चिरंजीव करि हन्यो निशाना * दक्षिण अश्व चला जग जाना ॥
सचिव समेत राखि सुत संगा * उतरे सब जल यमुन तरंगा ॥
दोहा—रवितनया पदवंदिकै, चली अनी हयसंग ॥
हर्षित शूर समूह अति, देखि सैन्य चतुरंग ॥ ४४ ॥

वाल्मीकि थल सैन्य समेता * कानन सघन मुनीश निकेता ॥
सिय सुत युगल वीरवर बंडा * भुजबल अमित दिनेश प्रचंडा ॥
वीरबली हय देख्यो आई * पत्र वँध्यो शिर बाँच्यो ताही ॥
कटि कसि त्रोण हाथ धनुतीरा * षमर हेतु बैठे बलवीरा ॥
शूर सहस्र साठि हय साथा * आय गये तहँ रघुकुल नाथा ॥
तहँ तरु बाँध्यो बंध विलोकी * बालक जानि सकल रिसरोकी ॥
देहु तुरंग घर जाहु सुहाये * धन्य मातु पितु जिन तुमजाये ॥
माँगहु भीख समर चढि भाई * क्षत्रिय कुलहि कलंक लगाई ॥
छंद—जिनक्षत्रिकुलहि कलंकलावहु समर शूर सुहावने ॥
बलहीन तुरँग प्रवीन छाँड्यो धराविनु भट जानने ॥
सुनि वचन कटुक कठोर बालक जानिभट धावत भये ॥
शरतानि एकहिं वार लव हँसि हने तनु जरजरभये ॥
महिपरे पुनि कछु भिरे योधा जायरिपुहनसों कहा ॥
पुनि बालहत संग्राम सैन्यहि वाजिलै रणमहँ रहा ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनिकोपिकर अति शत्रुहनतबसैन्यलै धावत भयो ॥
रणमाहिं गाजत वीरबाँक कोपलखि लज्जितभयो ॥ १२ ॥
सोरठा—सुन मुनि बाल मराल, देहु अश्व तजि कोप निज ॥
पूज तुमहिं तेहिकाल, करिहहिं जन्म सफल प्रभू ॥ ४ ॥
कौन नाम नृप किहि पुरवासी * फिरहु विपिन संग सैन्य प्रकासी ॥
छांडेउवाजि हेतु किहि लागी * लिख्यो पत्र बाँध्यो भयत्यागी ॥
नहिं तव तनुबल पौरुष भाई * छोरहु पत्र वाजि गृह जाई ॥
सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने * गहहु अस्त्र असकहि मुसकाने ॥
हमहिं प्रचारत नृप बलभारी * डरपहिं सिंह वाजते तारी ॥
असकहि धनुष बाण करलीना * मुनि वर विनय चरण शिरदीना॥
मारसि रथ सारथी तुरंगा * कोटिन बाण हने सब अंगा ॥
करि मूर्छित नृपकटक संहारा * खाँहिमाँस अति गीध करारा ॥
दोहा—एकहि एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर ॥
आये तब रघुवीर पहँ, कायर करनी कूर ॥ ४५ ॥
पूछेहु सकल भानुकुलनाथा * रिपुके सबनकहे गुणगाथा ॥
मुनिबालक दोउ कटकसंहारा * रिपुहन आदि समरमहँ डारा ॥
रिपुबालक सुनि विकलखरारी * विकलहोय पुनि कहेउ करारी ॥
लक्ष्मणसंग जाउ दोउ भाई * मुनि बालक बाँध्योवरियाई ॥
मारहु पुनि आनहु पुरमांही * ऋषिसुत बंधन उचित नकाहीं ॥
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा * आयउ तुरत समरजेहि मारा ॥
लै घर जीव जाहु मुनि बालक * दिनकरवंश देव द्विजपालक ॥
आँखिन ओट होहु अबताता * लखिअतिकोप चढत ममगागा ॥
दोहा—सुनि लक्ष्मणके बचन तव, विहँसे बालकबीर ॥
अनुजविलोकहुजाय अब, प्रबल महारणधीर ॥ ४६ ॥
अनुज विलोकि वचनसुनिकाना * धनुष चढाय गहे करभाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेषविलोकि बाल मुनिजाना * निज कुल समझि करौंमनकाना॥
निज सहायशठ आन बुलाई * केवल तोहिं हते न भलाई ॥
सुनि कुश कठिन बाणसंधाने * कांपीपुहुमि शेष अकुलाने ॥
छूटे विशिष रहे नभ छाई * बाणभानु प्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहि प्रबल लखि चलासकोपी * मुरो न मनहिं रहारथरोपी ॥
काटे विशिष विशिष सनभाई * कौतुक करहिं विविध खगराई ॥
झपटि गदा लक्ष्मण तबझारी * गिरयो भूमिकुशमूर्छितभारी ॥
दोहा-मूर्च्छित कुशहि निहारि करि, धाये लव करि शोर ॥
आवतही शरउरहने, गिरयो न महि बल जोर ॥ ४७ ॥
मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी * लरहिं सुखेन नमानतहारी ॥
भिरहिं उपाय विपुल बलकरहीं * गिरताहिंधरणि बहुरि उठि लरहीं ॥
विकल सैन्य सबमानुसँहारी * सुमिरि कौशलाधीशखरारी ॥
मारेउबाण लवहि क्षितिडारा * मूर्छित होय गिरयो विकरारा ॥
सुमर सीय मुनिचरण सुहाये * गतमूर्छा कुश आतुर आये ॥
बिकल विलोकि बंधुलघुजानी * चल्यौ वीर मन बहुत गलानी ॥
लक्ष्मण देखि वीर वर धाये * धनुषबाण धरि आगे आये ॥
शक्रजीत अरि जे शर मारेउ * तेसबबालककाटि निवारेउ ॥
दोहा-रामानुज विस्मित विकल, देख सबल आरति ॥
सीयत्याग उरशोचबड़, प्राणदेहकिहि भांति ॥ ४८ ॥
कुशकरिक्रोध विशिख सो लीने * मंत्रप्रेरि मुनिवर जे दीने ॥
नाक रसातल भूतल माहीं * यह शर छुटेउ बचै कोउनाहीं ॥
मोहन अस्त्रनाम तेहिजानो * विष्णु महेश ब्रह्म जेहि मानो ॥
मारेसि शेष ताकि उरमाहीं * पराधरणितल सुधि कछु नाहीं ॥
चली सैन्य सब भागि अपारा * कौशलपुर महँ जाय पुकारा
करनी सकल युद्धकै वरणी * लक्ष्मण वीर परे जिमिधरणी
जेहिविधिकटक सकल संहारा * निजलोचन हम नाथ निहारा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वयाकिशोर दोउ बाल अनूपा * तवप्रतिबिंब मनहु सुरभूपा ॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई * बालकवीर वरणि नहिंजाई ॥
दोहा—भरत जोरिकरकै कहेउ, वचन अमित बिलखाय ॥
सीयत्याग फल दीन विधि, प्रभुकहि देखहुजाय ॥ ४९ ॥
अनुज समर महँ तुम हियहारे * साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
रहौ यज्ञ रिपु देखहुँ जाई * बालक रावणके दुखदाई ॥
तीव्रवचन सुनि भरत लजाने * बहुतभाँति रघुपति सनमाने ॥
प्रथम सखा सब लिये बुलाई * हनुमदादि अंगद समुदाई ॥
जाम्बवंत कपिराज विभीषण * द्विविद मयंद नील नल भूषण ॥
रिपुहिमारिकै समरभगाई * तातअनुज दोउ आनहुजाई ॥
माथनाय संग कटक विशाला * चलेभरत उर उपजी ज्वाला ॥
शोणित सरिता समर विलोकी * डरपेउ वीर आश रण रोकी ॥
दोहा—समर सीय दोउ वीरवर, आयगये बलवान ॥
देखडरे कपि भालु सब, तब बोलेउ हनुमान ॥ ५० ॥
धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये * पुरुष युगल घरजाहुसुहाये ॥
समर विमुख सुन भट विलखाना * कीन्हक्रोध कहँ सुन हनुमाना ॥
बल होउ जाहु घरभाई * हतौं नठौर जानकदराई ॥
बचन भरत सुनिकाना * लेहु सँभार बाल धनुबाना ॥
टाय कपि भालु समूहा * लीन्ह उपार प्रबल तरु जूहा ॥
ईवार सकल तिनमारा * लवकाटहिं तिल सम करि डारा ॥
रि शरकाटि निमिष यक माहीं * यथा मनोरथ खल मिटिजाहीं ॥
कर लव क्रोध बाण फटकारे * मारे बीर भूमि गजडारे ॥
छंद—गजवाजिघने रणभूमिपरे, तहँ शोणितवीर बरूथभरे ॥
लवतानि शरासन बानभले, रिपुसागरवीरप्रचार दले ॥
लगते शरद्वै रण घायलते, धरणी परिजाहिं बियाकुलते ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Trust Delhi and eGangotri

कहुँ झूंमहिं कुंजर पुंज परे, महिलोटहिं शोणित भार भरे ॥
शरलागत घायलवीरगिरे तहँ हाँक उठे रणधीरधरे ॥
रणधीर वरूथनभालुकटै, गिरिसेजनु मेदिनि खंग पटै ॥
तबशोणितकी सरिताउमगी, अतितीक्षणधार अपार पगी ॥
तहँ योगिन भूत पिशाचघने, भषपालक कंककरालबने ॥ १३ ॥

पु० छंद–पलभषहिं कंक कराल जहँ तहँ गीधमन प्रमुदितभये ॥
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत व्याहप्रति मंगलठये ॥
तहँ डाकिनी मनमुदितडोलहिं शाकिनी शोणितभरी ॥
दोउकरनखैंचहिं कालिका शिव प्रेत प्रति कीरतिकरी ॥
अंतावरी गहि गर लपेटहिं, पिवत शोणित आतुरे ॥
गजखाल खैंचहिं भूत शंकर, प्रेत संगर चातुरे ॥
वैतालवीर कराल करवर करीकर इककरधरे ॥
ह्वैभार रुधिर प्रवाह पूरण पान करत हरे हरे ॥
रघुवंश समर सराहि दुहुँदिशि, करहिं निज मन भावने ॥
गज वाजि नर कपि भालु जहँ तहँ, गिरे महि शुभ पावने ॥
दोउ रामतनय प्रचारि बहुविधि निकट कोउ न आवहीं ॥
जे त्रसित व्याकुल त्राहि त्राहि सुवीर निज गुहरावहीं ॥ १४ ॥

दोहा–विषमयुद्ध दोउबंधुकरि, जीति सुभटसंग्राम ॥
आयउ पुनि जहँ नृपभरत, सुमिरि विधाता वाम ॥ ५१ ॥

कपि भालुहि घायल सब आवहिं * बाण त्रास मन अति दुख पावहिं ॥
जाम्बवंत कपिराज बुलाये * अंगद हनूमान सुनआये ॥
सब मिलि सहित निशाचर राजा * धरि आनहु दोउ बाल समाजा ॥
आय जुटे कपि भालु भवानी * तिन कछु प्रभु महिमा नहिं जानी ॥
बोले कुश सुन बालिकुमारा * तुव बल विदित जान संसारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Bhopal and eGangotri

पितहि मराय मातु परहेली * सकल लाज आये तुम पेली ॥
सो फल लेहु समर महँ आजू * त्यागहु सकल कलंक समाजू ॥
सुनत क्रोध अंगद उर छावा * गहिगिरि एक ताहि पर धावा ॥

दोहा—आवत शैल विशाललखि, तिलसमशरहति कीन ॥
अंगद गर्व अपार अति, तस प्रभु उत्तर दीन्ह ॥ ५२ ॥

तमकि ताहि कुश बाणचलावा * अंगद नील अकाश उडावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपिभारी * मारा बाण प्रचारि प्रचारी ॥
इतउत जान कतहुँ नहिं पावै * पवन वहै जिमि महि नहिं आवै॥
छिन अकाश छिन भूतल माहीं * बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं ॥
रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना * अग जग नाथ न मैं पहिचाना ॥
पाँच बाण वेधेउ कपि दोऊ * दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ ॥
परे भरतके सन्मुख जाई * दशादेखि कपि दशा भुलाई ॥
जाम्बवंत हनुमान कपीशा * धाये तरु गिरिलै बहु कीशा ॥

दोहा—हँसैं कुमरकुशदेखिकपि, अनुजहि कहेउबुझाय ॥
आज समर जीते भरत, भालुकपिन बिलगाय ॥ ५३ ॥

प्रभु शुभ समर कीन्ह जसकरणी* निगम शेष शारद नहिं वरणी ॥
चरित तासु सुनु शैलकुमारी * मारेउ समर शूर कपिभारी ॥
समर धीर दोउ बाल विराजे *निरखि भालु कपि मन अतिलाजे॥
ऐंचिधनुष गुणछांडेउ सायक * कापिपति आदि हने कपिनायक ॥
मूर्छित सैन परी महि माहीं * वचो न कपि घायल जो नाहीं ॥
देखि भरत सब सैननिपाती * कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
मूर्च्छित विकल परेउ महिमाहीं *अतिहि विकल तनुकी सुधिनाहीं॥
दुखित देखि कुशअमितरिसाना* चाप चढाय बाण संधाना ॥
श्रवण प्रयंत खैंचि धनुवीरा * भरत हृदय मारेउ शत तीरा ॥
भयो युद्ध तहँ विविध प्रकारा * बीर बाँकुरे सुभटअपारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—समर भूमि सोये भरत, लवहिं लीन उरलाय ॥
सुमिर मातु गुरुचरणयुग, रहे समर जय पाय ॥५४॥
आये खबरलेन चरचारी * भरत सैन्य तिन सकल निहारी ॥
शोणित सरिता देखि डराने * हय गय बहे जात रथ जाने ॥
देखी सरित भयंकर भारी * कठिन कराल सुनहु उरगारी ॥
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाईं * चर्म मनहु कच्छपकी नाईं ॥
ग्राह नक्र झख जंतु घनेरे * देख दूरते तिन मन फेरे ॥
लहर तरंग बीर बहे जाहीं * घायल पैर तीर लपटाहीं ॥
फिरे दूत कौशलपुर आये * समाचार सब राम सुनाये ॥
चरवर वचन सुनत दुखपावा * त्यागेउ मख निज कटक बनावा॥
चले सकोप कृपालु उदारा * आये जहँ प्रभु कटक संहारा ॥
मुनिवर बालक देख सुहाये * शिरनवाय प्रभु निकट बुलाये ॥
दोहा—पूंछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ॥
देश ग्राम निज कहहु सब, बड़ जीतेहु संग्राम ॥५५॥
गहहु अस्त्र निज कहहु कहानी * पूछहु सुजन लोग असजानी ॥
समर बात बहु अति कदराई * छांड़ि सोच अब करहु लराई ॥
वंश नाम विनु पूछेहु ताता * हतौ न वाण मनोहर गाता ॥
माता सीय जनककी जाता * बाल्मीकि पाल्यो मुनि ताता ॥
पिता वंश नाहिं जानहिं आजू * लव कुश नाम सुनहु रघुराजू ॥
सुनि सब कथा राखि मनमाहीं * बाल विलोकि वधब भल नाहीं॥
आवत सुभट समूह हमारे * लरिहहिं तुम सन समर सुखारे॥
असकहि अंगद नील उठावा * जाम्बवंत कपिपतिहि बुलावा ॥
छंद—कपिराज अंगद जाम्बवानहिं बोलि निशिचरनायकं ॥
हनुमान द्विविद मयंद नीलहिं सुभट जे अतिलायकं ॥
तब हरण शूलहि पापनाशं कह्यो हँसि रघुनंदनं ॥
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खल मद गंजनं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लंकेश आदिक सुभटमारे वीरजे महिमंडनं ॥
ते आज बालक विप्रसोंरण परे रिपुमद गंजनं ॥
कुलकान अब निजजान सुभटन सुशैलतरु बहुलैचले ॥
दैहूह वानरजूह पर्वत डारि पुनि रण मुरिचले॥ १५ ॥

दोहा—सावधान धनुबाणलै, धायउ लव बलवान ॥
सन्मुख आनि विभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान ॥ ५६ ॥

सुनि शठ बंधुहि समर जुझाई * शत्रुहि मिलेउ निपट कदराई ॥
पिता समान बंधु वड़ तोरा * त्रिया तासु लै घर वर जोरा ॥
पापी मातु कही कईवारा * सोपत्नी यह धर्म तुम्हारा ॥
बूड़ मरहु सागर महँ जाई * मर गर काटि अधम अन्याई ॥
समरभूमि मम सन्मुख आवा * लाज होत नहिं गाल बजावा ॥
आँखिन आगेते हटि जाई * नहिं तौं मृत्यु निकट चलि आई ॥
सुनिखिसियान गदा तेहि लीनी * शर हति खंड खंड लवकीनी ॥
सात बाण मारेउ करि क्रोधा * डगमगात शर लागत योधा ॥
गिरत कोपिकर शूल चलाया * लवतनु ताडित समान समाया ॥

दोहा—दूरि शूलकरि बंधु दोउ, लखि मारेउ करिदाप ॥
जाम्बवंत कपिराज जल, अंगद करहिं विलाप ॥ ५७ ॥

जोगिरि तरु कपि डारहिं आई * रज समान तेहि देहिं उडाई ॥
निजबाणन कपि घायलकीने * जो जेहि उचित सुतस फलदीने ॥
रघुकुल तिलफ प्रचारति पाछे * वीर धुरीन बने सब आछे ॥
अंगद हनूमान भटभारी * ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई * खड़नहने वीर वरिआई ॥
कपिन कोपकरि उर हत तेहीं * जिमि खग मसकचाटि गजदेही॥
हति दोनों कपि भूमि गिराये * जाम्बवंत कपिपति पहँ आये ॥
इहि तनु कोटिक समर लडाई * जीते लडे बहुत हम भाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—ये बालक त्रिभुवन बली, जीतसकै नहिं कोय ॥
चलहु प्राण दीजै समर, अजय जगत नहिं होय ॥ ५८ ॥

आवत भालुबली भट नाना * तानि शरासन शर संधाना ॥
हृदय तानि लव मारेउ सायक * योजन सात गयो कपिनायक ॥
घायल भालु लपेटे जाही * मल्ल युद्ध कुश कीन्ह बनाई ॥
निज बल ऋच्छहि अवनि पछारा * दुइकर चरण बाँधि विकरारा ॥
हनुमंतहि बाँध्यो लव धाई * राखेउ निकट अश्वथल आई ॥
रखवारी छांडेउ लव वीरा * आप गयो रघुनायक तीरा ॥
देखेउ रथपर श्रीपति सोये * फिरेउ बीर निज लाज विगोये ॥
सुभग अस्त्र पट भूषण नाना * लवधारि अश्व ऋच्छ हनुमाना ॥

छंद—शुभ अस्त्र पट भूषण सुमर्कट ऋच्छसंग हयघरचले ॥
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेंट भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपिदोउ निरखिभूषण सहमिसियधरणीपरी ॥
इहिबीच मुनिवरसघन आये सियहि अति विनसीकरी ॥
हनुमान भालुहि छोडि वेगहि त्यागि बहुसमझायऊ ॥
रिपुदमनलछिमन सहित भरतहिं राम समर सुवायऊ ॥
सुतकीन्ह कर्म कलंक कुलमहँ मोहिं विधिविधवाकरी ॥
तजि सोच चंदन अगर आनहु जाउँ पियसंगअबजरी ॥
मुनि धीर दीनेउ तनयलीनेउ संगलै सादर चले ॥
रण देखि बालक चकित चितवहिं बिहँसिमनसशंयभले ॥
रथदेखिकर पहिचानि प्रभु कहँ जाय मुनि चरणनपडे ॥
उठि बैठि कौशलनाथ आतुर तनय तब आगे खडे ॥ १६ ॥

सो०—सुनि मुनिवर वर वैन, जागे रघुपति भयहरन ॥
विहँसि उघारेउ नैन, लीन्हे हृदय लगाय मुनि ॥ ५ ॥

In Public Domain. Gurukul Archives Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने * वार वार निज भाग्य बखाने ॥
जेहि विधि शेष सीय वन आनी *मुनि सो सबही कह्योबखानी ॥
लव कुश कथा सकल मुनि भाखी* शिव विरंचि सूरज कर साखी ॥
मिले तनय दोउ हृदय लगाई * सुधावर्ष सुर सैन्य जिवाई ॥
भरत आदि जागे सब भ्राता * लक्ष्मण चले जहां सिय माता ॥
बहुरि राम लक्ष्मणहि बुलाई * सुनहुतात अस वचन सुनाई ॥
ऐसे वचन मानि मम भाई * सिय सन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा * कुशल कही बहुविधि समझावा ॥
हरिइच्छा सिय मन अस आवा* शेष सहस फणि आनि दिखावा॥

दोहा–जटित मणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढाय ॥
भये अलोप पताल कह, महिमा किमि कहिजाय ॥ ५९ ॥

लक्ष्मण चरित देख सब ठाढे * नयन प्रवाह चले अति गाढे ॥
सकल चरित सुनि कृपानिधाना* चलन हमार सीय मन जाना ॥
तनय सहित निजपुर प्रभु आये* दान दीन शुभ यज्ञ कराये ॥
जेहि जेहि विधि सुर आयसु दीने* कोटि कोटि विधि सोइ प्रभुकीने ॥
कोटिक धेनु धाम धन धरणी * दीन कृपानिधि को सक वरणी॥
भोजन विविध भाँति करवाये * विदा कीन्ह मुनि वृंद बुलाये ॥
जनकहिं पूजि विदा प्रभु कीना * दोउ प्रभु पूजि पयोदकलीना ॥
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई * बैठे प्रभु महिदेव बुलाई ॥

दोहा–लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पायँ ॥
एक एक विप्रन दई, हर्षित कौशलराय ॥ ६० ॥

गे सब मुनि सज्जन निज धामा *पायो अमित अमित सुख रामा ॥
पुरवासी आये सब झारी * सुनहिं पुराण अनंद सुखारी ॥
जे जड़ चेतन जीव घनेरे * सचराचर कौशलपुर केरे ॥
तिन सुख बढ़त सुनत सुरराया* करहिं विनोद विहाय अमाया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहिविधि विपुलकाल चलि गयऊ* निजपुर गवन सु अवसर भयऊ ॥
वीती अवधि ब्रह्म जब जानी * नारद मुनि सन कहा वखानी ॥
निजपुर आवन चहैं खरारी * धर्मराजको कहहु हँकारी ॥
विनती बहु विरंचि भवभाषी * चला धर्म रघुपति उर राखी ॥

दोहा—आयउ यम रघुवीर पुर, मुनिवर भेष बनाय ॥
तेजपुंज सुन्दर तरुण, कटि मृगतुचा सुहाय ॥ ६१ ॥

द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी * बोले तापस अति मृदुवानी ॥
तुरत शेष सब खबर जनाई * सुनत वचन आये रघुराई ॥
मुनिहि निरखि प्रभु कीन प्रणामा * सादर उचित कहेउ विश्रामा ॥
अर्घ्य दीन्ह आसन बैठारी * मुनिवर सुंदर गिरा उचारी ॥
सुनि सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा * आयउँ मैं तापसके भेषा ॥
मैं तुम रहौं अवर नाहिं कोई * तीसर सुनहिं नाश तिहिहोई ॥
सुनै वचन तिहि देहुँ शरापू * शिव विधि हरि आवै जो आपू ॥
सुनहु लषण चलि बैठु दुवारे * नाहिं कोउ आवन गिराउचारे ॥
ममकर वध आवै पुनि कोई * मरिहहि सत्य मृषा नहिहोई ॥

दोहा—बोलेउ तापस वचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ ॥
कहा सकल इतिहास मुनि, कहिपुनि नायउमाथ ॥ ६२ ॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना * दुर्वासा मुनि आय तुलाना ॥
मुनिहि देखि लक्ष्मण चल आगे* गयउ निकट विनती अनुरागे ॥
पूंछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा * जाउँ तहां मैं सुनहु अहीशा ॥
जो प्रति उत्तर करिहौ आजू * भस्म करौं तुव घर पुर राजू ॥
कंपेउ लषण सुनत मुनि वानी * निजबध समुझिसु चलेउभवानी ॥
दोउ कर जोरि कहेहु प्रभु पहँही * दुर्वासा मुनि आवन चहँही ॥
तात कीन्ह अवगुण तुम भारी * काल कर्म गति टरहि न टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुलकेतू * सुन खग अपर कथा करहेतू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ॥
चलहु वेगि मुनि बोलि अब, कहा राम भगवान ॥ ६३ ॥
छंद—अतितेजपुंज विलोकि आवत उचित उठि आसनदियो ॥
जल आनि सादर धोय पद प्रभु सुभग पादोदक लियो ॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेग सोइ सादर करौं ॥
बहुकाल क्षुधित कृपालु दिन बहुगये विनुभोजन मरौं ॥
मन भाव भोजन दीन्ह रघुपति बहुत विधि विनती करी ॥
संतोषपाय मुनीश स्तुति विनयकरि आशिष भरी ॥
करि विदा मुनिवर देख लक्ष्मण हृदय दारुण दुख भये ॥
भरतादि अनुजसमेत पुरजन ताहि छिन देखन गये ॥
पदवंदिठाढे जोरिकर दोउ वदन लखि अति कांपही ॥
भरिनैन पंकजनीर आरत भरत सन प्रभु भाषहीं ॥
अब गुरुहि आनहु वेगि सादर दुखित अतिआतुरचले ॥
सब कथा गुरुहि सुनाय आरत यान चढि आवत भले ॥
आये वशिष्ठ विलोकि रघुपति विकल उठि चरणनपरे ॥
संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागहैं अब तनु हरे ॥
सुनिवचन शेष विचारि निजउर राम विनु धृकजीवनो ॥
गहि चरण सरयूतीर आये देख जल शुभ पीवनो ॥ १७ ॥
दोहा—कटि प्रयंत जल मध्यमहँ, कीन्हेउ ध्यान अखंड ॥
योग यत्न करि राम कहि, फोरो निज ब्रह्मंड ॥ ६४ ॥
राम धाम पहुँचे तुरत, लक्ष्मण चतुरथ भाग ॥
सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटे सकल अनुराग ॥ ६५ ॥
मैंनाहिं तजेउ तजो मोहिं ताता * कर सोइ जतन जुदेखों भ्राता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करहु भरत पुर राज सुखारी * सुनत गिरेउ महिव्याकुळ भारी॥
चलन चहत अब प्राण गुसाँई * प्रभु लक्ष्मण विनु रह नसकाई ॥
तात चलहु कहि तनय बुलाई * कीन्ह तिलक वहु नीति सिखाई॥
भरत सुतनय शील वैनामा * दक्षिण नगर दियो तिहिरामा ॥
दूसर पुष्कर जेहि जग जाना * पुहकर नगर दीनभगवाना ॥
प्रथम दैत्य हति तहां बसाये * दीन कृपानिधि तिन मन भाये ॥
चित्रकेतु अंगद रणधीरा * लक्ष्मण तनय शुभग गंभीरा ॥
दोहा–पश्चिम दिशा पिशाच बहु, जीत हते संग्राम ॥
तहँ राखे सुत सरिस दोउ, विलग विलग कहिनाम ॥ ६६ ॥
अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी * सिखैनीति पुनि कह्यो वहोरी ॥
भ्रातन पर सुत दया करेहू * राजनीति उर माहिं धरेहू ॥
उत्तर नगर सु उत्तर दूरी * सुख संपदा जहां अति भूरी ॥
लवकहँ दीन कृपानिधि सोई * पटतरि अवध नगर नहि कोई ॥
आठसहसरथ तुरँग पचासा * दशसहस्र गज मत्त विलासा ॥
लजहिं इन्द्र गज तिनहि विलोकी* दिगपालन निज प्रभुतारोकी ॥
शक्र कुबेर देखि सकुचाने * तिनकी महिमा कवन बखनो ॥
इक इक सुतन दीन रघुराया * वरणिको सकै सुनौ खगराया ॥
धनद कोटि सम भरे भंडारा * यथा योग्य करि भाग उदारा ॥
दोहा–सकल तनय परितोष करि, विदा कीन्ह रघुवीर ॥
विप्रवृन्द याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर ॥ ६७ ॥
धेनु वसन धरती धन धामा * दिये द्विजन किये पूरण कामा ॥
याचक सबै अवधके दासी * बोले प्रभु सुन अज अविनासी ॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी * अंतकाल अब होत अभागी ॥
जो जनजान लेहु प्रभु साथा * करहु कृपानिधि सकल सनाथा ॥
सुनि सनेह मय वचन सुहाये * चलहु कहेउ प्रभु अति सुखपाये ॥
समय जानि कपिपति तहँ आवा * अंगद राजदीन सुख पावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाम्बवंत लंकापति वीरा * नल अरु नील द्विविद रणधीरा ॥
कोटिनकीश जु सुर अवतारी * आये जहां कृपालु खरारी ॥
सो०—कह प्रभु सुन लंकेश, राजकल्पशत करहु तुम ॥
वचन अचल मम शेस, अंत अमर पुर गवन करु ॥ ६ ॥
जाम्बवंत से कह मृदु वानी * रहु द्वापर भर अस जिय जानी ॥
कृष्ण रूप धरि मिलि हौं तोहीं * समरभूमि तब जानसि मोहीं ॥
सबकहँ सब विधि धीरज दीना * आप गवन सरयू तट कीन्हा ॥
दक्षिण भरत वाम रिपुदमनू * पुरवासी सब निज कुल तरनू ॥
अग्निवेद गायत्री छन्दा * धरि निजरूप चले सुर वृन्दा ॥
पीताम्बर पट सुन्दर धारी * जडचेतन चर अचर सुखारी ॥
प्रथम रूप धरि सुन्दर आई *जस कछु कीन्ह सो सुनिखगराई॥
समय जानि तब पवनकुमारा * बोले वचन कृपा आगारा ॥
दोहा—चिरंजीव सुत रहहु तुम, जब लगि रवि शशि शेष ॥
तोहिं सेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश ॥६८॥
चतुरानन पहँ धर्म सिधाये * सरयूतीर जगतपति आये ॥
चले देव अज भव सनकादी * जो मुनि परम अलौकि अनादी॥
कोटिन रथ वाहन विधिनाना * अरुण अकाश नजाय बखाना ॥
नभ पर जयजयजयधुनिहोई * पावहिं वर सुर याचहिं जोई ॥
देखि नाक रथ मग परछाई * जिमि गिरि कृमि नभपंथ उडाई॥
करि पुर सजग देव तनुधारी * पाइ चतुरभुज रूप सुखारी ॥
चढि विमान प्रभुधाम सिधाये * सकल अमरपति कहँ सकुचाये॥
सुमनवृष्टि नभ होत अपारा * होइनाद विधि वेद उचारा ॥
छंद—उच्चरित वेद मे चकृत भरत कृपालुहँसि सादर लयो ॥
जल परसिकर रिपुदमन सादर पद्मवन राजा भयो ॥
कपि आदि यूथप राखि उर प्रभु सकल निजनिजघरगये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुग्रीव प्रभु पद वंदि बारहिं वार रवि मंडल छये ॥
सुरसहित दिनकर वंश भूषण आय जल आश्रितरहे ॥
तेहिसमयबोलि अनादि प्रभु जू वचन पावन मय कहे ॥
इक मास रहो तुम नीर यह ममपुरी जीवजुआवहीं ॥
तेहि सुभगदेहु विमान पद निर्वान जो मम पावहीं ॥
अतिप्रीति रुचिर सनेह मज्जहिं मम चरण रतिहैसदा ॥
तरि जाय सुरपुर सकल सादर सुनहु ममवाणी मुदा ॥
जे जन्म भरि मम संग वासी रहे निशिवास सदा ॥
ते तुरत आनौ सहित सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
कहि वचन अंतरध्यान प्रभु जिमि दामिनी घनमें धसैं ॥
नभ जयति जय जयकार जय जय जयतिकर लै सुरलसैं ॥
इहि भाँति रघुपति सह चराचर लै गये निज धामको ॥
सो कह्यो उमहि कृपायतन उरराखि सादर रामको॥१८॥

दोहा–गिरिजा संत समागमहिं, सम न लाभ कछु आन॥
विनुहरि कृपा न होयसो, गावहिं वेद पुरान ॥ ६९ ॥
इहि विधि सब संवाद सुनि, प्रफुलित गरुड शरीर ॥
वारवार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर ॥ ७० ॥

मैं कृतकृत्य भयों तुव वानी * सुनि प्रभुकथा भक्ति रससानी ॥
रामचरण नूतन रति भयऊ * बहुविधि नाथ मोहिं सुखदयऊ ॥
मोपर होय न प्रति उपकारा * वन्दों तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी * तुम सम तात नकोउ बड़भागी ॥
मोहिं जलधि बोहित तुमभयऊ * तव प्रदीप संशयसबगयऊ ॥
संत विटप सरिता गिरि धरणी * परहित हेत सबन की करणी ॥
संत हृदय नवनीत समाना * कहाकविन पर कहानजाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निज परिताप द्रवै नवनीता * परदुखद्रवहिंसुसंतपुनीता ॥
जीवनजन्म सफल ममभयऊ * परम पुनीत विबुध सुखदयऊ ॥
जानहु सदा मोहिं निजकिंकर * पुनि पुनि उमा कहेउ विहंगवर ॥

दोहा—तासु चरण शिरनायकरि, हृदय राखि रघुवीर ॥
गयउ गरुड वैकुंठ तब, प्रेम सहित मतिधीर ॥ ७१ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
अविरल भक्तिकर संपादनो नाम अष्टम
लवकुश काण्डं समाप्तम् ।

इति रामाश्वमेध लवकुशकाण्डं सम्पूर्णम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना

बम्बई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीरामचंद्रके चतुर्दशवर्ष वनवासका

तिथिपत्रम् ।

दोहा—सुमिरि रामसिय चरणशुभ, सकल सुमंगल दानि ॥
अग्निवेश मत कहौं कछु, तिथि वनवास वखानि ॥ १ ॥

चैतशुक्लनवमी जगजानी * तेहिदिन जन्म लियो सुखदानी॥
वर्ष चतुर्दश चारहु भाई * बालचरित्र किये सुखदाई ॥
वर्षपंचदश माहिं सुहाये * विश्वामित्र बुलावन आये ॥
पंद्रहदिवस संग मुनिनाथा * काज सँवारे श्रीरघुनाथा ॥
पुनि प्रभु मिथिलापुर जब आये * जनकरायने दर्शन पाये ॥
धनुषभंगकर जय जिमि पाई * पन्द्रहदिवस रहे रघुराई ॥
हिमऋतु अघहनमास सुहावन * शुक्लपक्ष पांचैं तिथि पावन ॥
मीनलग्न वृश्चिकके भानू * भयो व्याह आनंदनिधानू ॥
वर्ष पंचदशके भगवाना * सीय वर्षछःकी जगजाना ॥

दोहा—करि विवाह आये घरहि, मंगल मोद अपार ॥
द्वादशवर्ष विलासयुत, रहे कृपाआगार ॥ २ ॥

वर्ष सताइसमें रघुनाथा * कीन गवन वन लक्ष्मण साथा ॥
तीन दिवस वीते जलपाना * कियो राम सीता जगजाना ॥
चौथे दिवस लषण रघुराई * शृंगवेरपुर फल कछु खाई ॥
पँचयें दिन श्रीकृपानिधाना * सुरसरि उतरि चले भगवाना ॥
भरद्वाज आश्रम सुखदाई * रहे तहां यक दिन रघुराई ॥
वाल्मीकिसे मिल सुखपाई * चित्रकूटमें कुटी बनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँ जयन्त सिखदीन्ह रमेशा * वासकीन्ह कछु दिन अवधेशा ॥
दोहा–चित्रकूटसे चल बहुरि, वध विराध कर कीन्ह ॥
मिल सुतीक्ष्ण शरभंगसे, ऋषि अगस्त्य सुख दीन्ह ॥ ३ ॥
इहिविधि द्वादशवर्ष विताये * पुनि प्रभु पंचवटीमें आये ॥
वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा * खरदूषणवध कीन्ह रमेशा ॥
माघशुक्ल आठैं जब आई * दिन मध्याह्न दशानन जाई ॥
छलकरि हरी सीय महारानी * लेगयो निज लंका रजधानी ॥
पुनि जटायुको कर उद्धारा * दुष्ट कबन्ध निशाचर मारा ॥
शबरिहि गतिदे पंचममासा * मिलि आषाढ सुग्रीव हुलासा ॥
वालिहि मार मास तहँ चारी * रहे प्रवर्षण पर असुरारी ॥
पुनि सीतहि खोजन कहँ वानर* जेहिविधि चले बुद्धिबलआगर ॥
दोहा–मार्गशीर्ष कृष्णा शुभग, हरि वासर हनुमान ॥
सिंधुलांघि लंकहि चले, महाधीर बलवान ॥ ४ ॥
त्रयोदशी ढूंढ हनुमाना * पुनि अशोकवन माहिं समाना ॥
जनकसुताके दर्शन पाई * मुद्री प्रभुकी दीन्ह गहाई ॥
पुनि अशोकवन सकल उजारा * चौदसको अक्षय कहँ मारा ॥
लंक दाहकर सियतट आई * चूडामणिले चले सुहाई ॥
वारिधि लांघ सेननिज आये * समाचार सुन सब हर्षाये ॥
चले तहां ते सब सुखपाई * पांचदिवस मग माहिं बिताई ॥
अघहन शुक्लाछठ सुखदाई * किष्किंधा सब पहुँचे आई ॥
शुक्रवारसप्तमी सुहाई * जनकसुताकी सुधि प्रभु पाई ॥
दोहा–अघहनशुक्ला अष्टमी, सैनसहित भगवान ॥
उत्तर फाल्गुनि नखतमें, लंकहि कीन पयान ॥ ५ ॥
सातीदवस मगमाहिं विताये * पूनोको वारिधितट आये ॥
पौष तृतीयातक सुखरासा * तीनादिवस तहँ कीन निवासा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पौष चतुर्थीकृष्ण सुहाई * आये शरण विभीषण धाई ॥
पौष अष्टमीतक रघुराई * विनय कीन सागर तट आई ॥
नवमी विप्ररूप धरिसागर * आये शरण रामनयनागर ॥
दशमीपौष सेतु दृढ भारी * दशयोजन कपि रच्यो विचारी ॥
एकादशी कहँ योजनवीसा * वारस तीस बंध्यो वारीसा ॥
चालिसयोजन तेरसवासर * रच्यो सेतु नल नील उजागर ॥
दशयोजन आयत रच दन्हि * शतयोजन विशाल कपि कीन्हा ॥

दोहा—चौदशसे द्वितियातलक, उतरे सागर पार ॥
दशमीतक गढ लंक कहँ, घेरचो सहित विचार ॥ ६ ॥

पौषशुक्ल हरिवासर आई * शुकशारन कपिसेन दिखाई ॥
द्वादशिमें प्रभु यह मत भावा * चारि भाग निज कटक बनावा ॥
छत्र मुकुट रावणके जोई * काटे प्रभु ताही दिन सोई ॥
सैन दशानन की दिन तीनी * भइ सन्नद्ध युद्ध रंगभीनी ॥
माघकृष्ण प्रतिपद जब आई * अंगद फिरि आये समझाई ॥
द्वितियासे नवमी तक आई * दोउदल कीन्ह युद्ध हरषाई ॥
नागफांस घननाद चलाई * दशमी गरुड काटगये आई ॥
द्वादशितक कर युद्ध अपारा * मरचो धूम्रलोचन बलभारा ॥

दोहा—मावसतक कपिसैन ने, मारे दैत्यसुधीर ॥
माघशुक्लकी चौथतक, लरचो दशाननवीर ॥ ७ ॥

पंचमीसे आठैं तक जाई * कुम्भकर्ण कहँ दियो जगाई ॥
नवमीसे चौदसतक आई * लरचो मृत्यु रघुपतिसे पाई ॥
माघशुक्ल पूनोदिन पावन * लरचो नशोक ग्रसित रह्यो रावन॥
फाल्गुन पांचैतक भगवाना * कियो नरान्तक वध बलवाना ॥
पुनि आठैंतक दैत्य अपारा * मारे श्रीरघुनाथ उदारा ॥
कुंभ निकुंभ दैत्य बलवाना * तेरसतक मारे भगवाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि शुक्ला द्वितिया जब आई * मारो जमुकदैत्य रघुराई ॥
फागुन शिवतेरस घननादा * मरो भयो देवन अहलादा ॥
चौदसमें शोकित दशभाला * युद्धकियो नहिं दुःख विशाला ॥

दोहा-फाल्गुनशुक्ला पूर्णिमा, लरन चल्यो दशशीश ॥
मारे सब सेनापती, आठैं तक जगदीश ॥ ८ ॥

चैतकृष्ण नवमी जब आई * मारीशक्ति लषणके जाई ॥
पुनि हनुमान सजीवन लाये * मूर्च्छित लषण चेत तब पाये ॥
दशमी दिवस युद्ध अतिभारी * कीनो रावणसे असुरारी ॥
मातलि हरिवासर कहँ आयो * रघुपति को रथ प्रभुहित लायो ॥
द्वादशि रथारूढ भगवाना * आये सेनसहित मैदाना ॥
तेहि दिनसे अष्टादश वासर * रावणसे भयो युद्ध भयंकर ॥
चैत्रशुक्लचौदस जब आई * मरो दशानन जगदुखदाई ॥
पूनोके दिन देह दशानन * दाहविभीषण कियो दुखितमन ॥

दोहा-प्रतिपदकहँ वैशाखकी, इन्द्र अमिय वरषाय ॥
भालु कीश जे रणपरे, तिनको दियो जिवाय ॥ ९ ॥

पुनि द्वितियाके दिन भगवाना * राज्य विभीषण दीन सुजाना ॥
तृतियाको श्रीजनकदुलारी * आय अनलमें प्रविश सुखारी ॥
दिनदश और मास दशचारी * रहीं लंकमें सीय दुखारी ॥
निकसि अनलते अवनिकुमारी * भयो कपिनमन अचरज भारी ॥
चौथ कपिनसंग बैठ विमाना * कीन्ह अवधकहँ राम पयाना ॥
पांचै तिथि प्रयाग अन्हाई * छठको मिले भरतसन आई ॥
इहिविधि वर्ष चतुर्दश बीते * आये राम भये मनचीते ॥
कृष्णसप्तमी माधवमासा * सबके मन अति भयो हुलासा ॥

दोहा-इकतालिसवें वर्षमें, रामचंद्र भगवान ॥
आयुःबत्तिस वर्षकी, जनकसुता गुणखान ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेहि दिन सिंहासन भगवाना * बैठे राजतिलक जगजाना ॥
भादोंकी नवमी जब आई * गर्भवती भइ सीय सुहाई ॥
चैत्र द्वादशी शुक्ल दुखारी * आज्ञा लषण राम उरधारी ॥
जनकसुताको त्यागो जाई * आश्रम वाल्मीकि मुनिराई ॥
वाल्मीकि तहँ रक्षा कीन्ही * पुत्रीसम सीतहि तिन्ह लीन्ही ॥
नवमीमास आषाढ मनोहर * जन्मे लव कुश दोउ सुन्दरवर ॥
नौसे छयासठ वर्ष दुखारी * रहीं विपिनमहँ जनकदुलारी ॥
ग्यारहसहस्र वर्ष भगवाना * कीन्हो राजधर्म विधिनाना ॥
पुनि लव कुश कहँ दीन्हेउ राजू * गये लोक साकेत समाजू ॥

दोहा—अग्नि वेशको सारले, द्विज ज्वालापरसाद ॥
वर्णो रामचरित्र कछु, जेहि सुनि मिटहिं विषाद ॥ ११ ॥
श्रीगुरु ज्वालानाथ के, चरणकमल मनलाय ॥
वर्णी तिथि वनवासकी, सुनि संशय भ्रमजाय ॥ १२ ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज सुखदान ॥
तिनकहँ दीन्ही भेट यह, याहि न छापै आन ॥ १३ ॥

इति श्रीरामचरित्रवनवासातिथिपत्रं श्रीयुतमिश्रसुखानंद
सूनु पंडित ज्वालाप्रसादविरचितं सम्पूर्णम्

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने
निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानामें
छापकर प्रगट की ।
बंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ बरवारामायणप्रारंभः ।

बरवाछंद ।

केशमुकुत सखि मरकत मणिमय होत ॥ हाथलेत पुनि मुक्ता कर उदोत ॥ १ ॥ सम सुबरण सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सियअं सखि कोमळ कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरदकमल जि। किमि कहिजाइ ॥ निशि मलीन बहु निशि दिन यह विगसाइ॥ ३ बडे नयन कट भ्रुकुटी भालविशाल ॥ तुलसी मोहत मनहि मनोह बाल ॥ ४ ॥ चंपकहरवा अँगमिलि अधिक सोहाइ ॥ जानिपै सियहियरे जब कुँभिलाइ ॥ ५ ॥ सिअतुअ अंगरंगमिलि अधिक उदोत ॥ हारवेलि पाहिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरल स्वभाव ॥ रामनीतरत काम कहाँ यह पाव ॥ ७ ॥ कुं कुमतिलक भाल श्रुति कुंडल लोल॥काकपक्ष मिलि सखि कस लस त कपोल ॥ ८ ॥ भालतिलक शर सोहत भौंहकमान ॥ मुख अनु हरिया केवल चंद्रसमान ॥ ९ ॥ तुलसी वंकविलोकनि मृदुमुसका- नि ॥ कस प्रभुनयन कमल अस कहौं बखानि ॥१०॥ कामरूप स- म तुलसी रामस्वरूप ॥ कोकवि सम सर करै परै भवकूप ॥ ११ ॥ चढ़त दशा यह उतरत जात निदान ॥ कहउँ नकबहूं करकश भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्य नेमकृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृपमुख भये मलीन ॥ १३ ॥ कमठपीठ धनु सजनी क- ठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि एतोरिहि कहव महेश ॥ १४ ॥ नृप निराशभये निरखत नगर उदास ॥ धनुषतोरि हरि सबकर हरेउहरास ॥ १५ ॥ काघूँघट मुख मूँदहु नवला नारि ॥ चांदस्व- र्गपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गर्वकरहु रघुनंदन जा- नमाँह ॥ देखहु आपनि सूरति सियकै छाँह ॥ १७ ॥ उठीस-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करि कहि मृदुवैन ॥ सिय रघुवरके भये उनींदे
सीकधनुष हित सिखन सकुचि प्रभु लीन ॥ मुदि-
धनुही नृप हँसि दीन ॥ १९ ॥ इति श्रीबरवै रामाय-
समाप्तः ॥ १ ॥ सात दिवस भये साजत सकल बना-
सुठि राउर सरलस्वभाउ ॥ २० ॥ राजभवनसुख
संग राम ॥ विपिन चले तजिराज्य सुविधिबडवाम
उ कह नरनारायण हरि हर कोउ ॥ कोउकह विहरत ब-
सेज दोउ ॥ २२ ॥ तुलसी भइमति बिथकित करि
राम लषणके रूप न देखेउ आन ॥ २३ ॥ तुलसी जनि
महँ साँच ॥ निगा नांगकरि नितहि नचाइहि नाच
लकठौता करगहि कहत निषाद ॥ चढहु नाथ पगधोइ
द ॥ २५ ॥ कमलकंठकित सजनी कोमल पाइ ॥ नि-
ह प्रफुलित निति दरशाइ ॥ २६ ॥(वाल्मीकिवचन)
रि रघुवर सुंदरखेस ॥ एकजीभकर लछिमन दूसरशेस
ति श्रीवरवैरामायण अयोध्याकांड समाप्त ॥ २ ॥ वेद-
गुरिन खंडि अकास ॥ पठयो शूपणषाहि लषणके पास
मलता सियमूरति मृदु मुसुकाइ ॥ हेमहरिणकहँ दीन्हे-
बाइ ॥ २९ ॥ जटामुकुट करशर धनुसंग मरीच ॥ चि-
कनखियनु आँखियनु खीच ॥ ३० ॥ (रामवाक्य)
कलाशशिदीप शिखाउ ॥तारासिय कहँ लछिमन मोहिं
॥ सीयवरणसम केतकि अति हिय हारि ॥ किहेसि भँवर
य विदारि ॥ ३२ शीतलता शशिकी रहि सबजग छाइ॥
वै हमकहँ संचरत आइ ॥ ३३ ॥ इति श्रीवरवैरामायण
समाप्त ॥ ३ श्यामगौर दोउ मूरति लछिमनराम ॥
कीरति अतिअभिराम ॥ ३४ ॥ कुजनपाल गुण वर्जित
॥ कहहु कृपानिधि राउरकस गुणनाथ ॥ ३५ ॥ इति श्री

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Eicangotri

अथ तुलसीकृत रामायणका गूढार्थ ॥

वस्था४--जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय; इनके विभु ये हैं; जा
तैजस, सुषुप्तिके प्राज्ञ, तुरीयके ब्रह्म--

विद्या--जीवोंकी अल्पज्ञता--

ा--वेदके अंग छःहैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, छंद,
पढनेकी विधिको शिक्षा कहतेहैं, कल्प उसे कहतेहैं जिसमें स
ी रीति लिखीहै, व्याकरण उसे कहतेहैं जिस्से शब्दोंकी शुद्धत
समें वेदके कठिन शब्दोंका अर्थ लिखाहुवाहै उसे निरुक्ति कह
मात्रा वृत्तका ज्ञान हो उसे छंद कहतेहैं--

म--चार आश्रमहैं; ब्रह्मचय, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास--

कर--चारहैं पिंडज अर्थात् जो देहके साथ उत्पन्न होतेहैं जैसे
अंडज जो अंडेसे होतेहैं जैसे पक्षी सांप आदि;स्वेदज जो पसी
जैसे चीलर ढील आदि;उद्भिजजो पृथ्वीको फोडके होतेहैं जैसे

भरण--बारहहैं नूपुर, किंकिणी, हार, चूरी, मुँदरी, कंकन
बेसर, बिरिया, टीका, शिरफूल--

--सामवेदका गन्धर्ववेद अर्थात् संगीतशास्त्र, ऋग्वेदका उ
थर्वक,यजुर्वेदका उपवेद धनुर्वेद, अथर्ववेदका उपवेद, शिल्पवि

तुछःहैं--वसंत चैत, वैशाख । ग्रीष्म-जेठ, आषाढ । पावस-
शरद-क्वार, कार्त्तिक । हेमन्त-अगहन, पुष । शिशिर-माघ फ

ल्प--चारोंयुगको चौकडी कहतेहैं और हजारचौकडीका एकक

ण तीनहैं--सत, रज, तम, राजाके चार गुण साम, दाम दंड

तुरंगिनसेना--जिस सेनाके चार अंगहैं हाथी, घोड़ा, रथ,

त्व--पांचहैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश--

ताप--तीनप्रकारका दुःखं अध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधि

देव--ब्रह्मा, विष्णु, महेश--

विधकर्म--संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण--

क्पाल--पूर्वदिशाके इंद्र, आग्नेयके, अग्नि, इक्षिणके यम, नैऋ
के वरुण, वायव्यके वायु, उत्तरके कुबेर, ईशानके ईश

राण--जिसमें पांचवस्तुओंका वर्णन हो सर्ग। न ॥ ाम प्र

रित--अठारहहैं-- कल्प- ॥ सयोनि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Mob. 9417663617

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

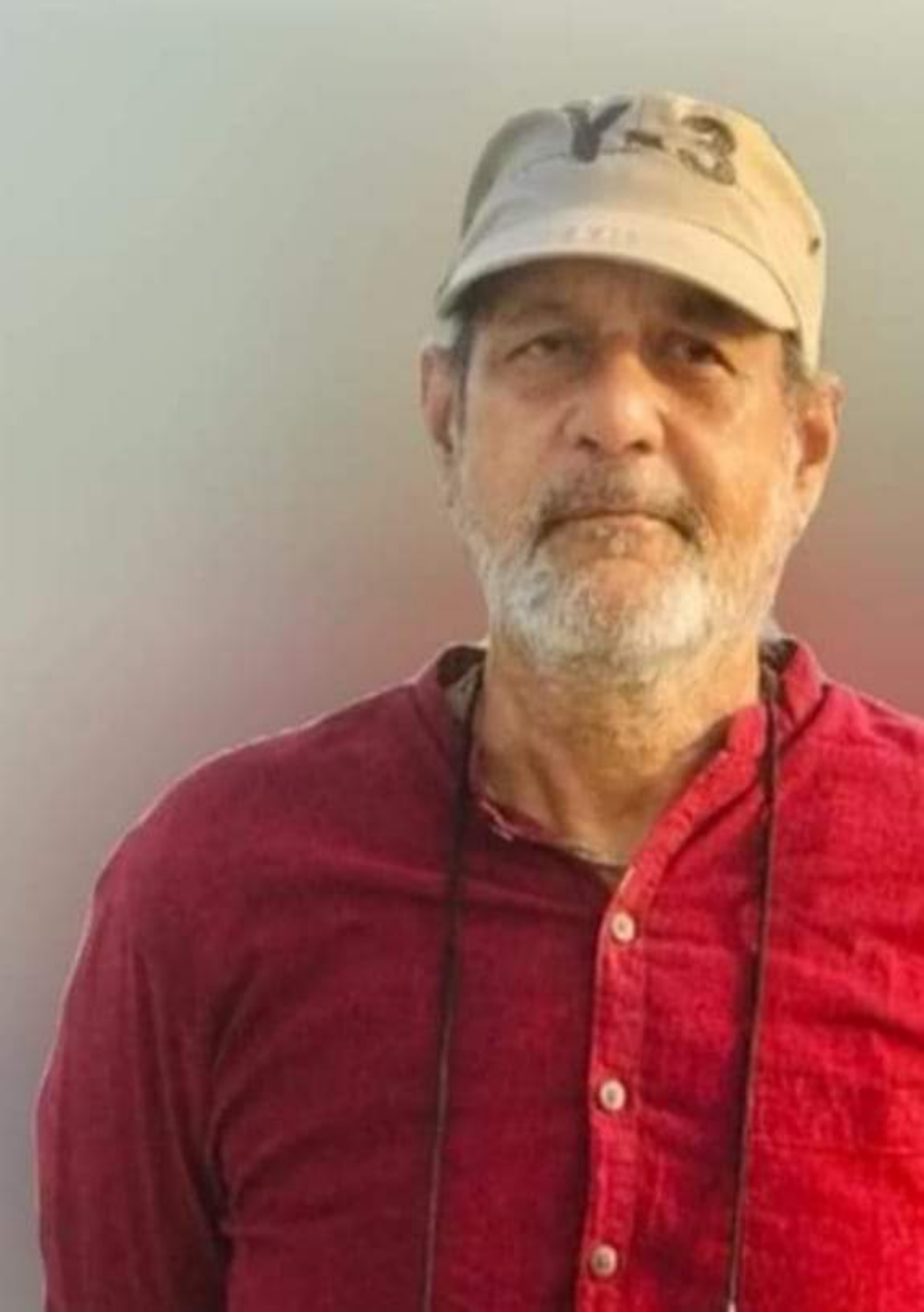
Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital
Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.